॥ श्रीः ॥

...म्बा सुरभारती ग्रन्थमाला
६२

श्रीभट्टनारायणप्रणीतं

...संहार-नाटकम्

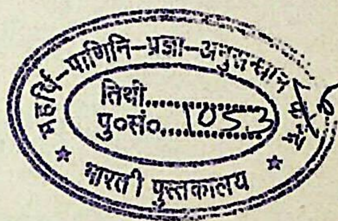
...-संस्कृत-हिन्दीटीकाद्वयोपेतम्

व्याख्याकारः—
पं० श्रीपरमेश्वरदीन पाण्डेय
एम० ए० (संस्कृत-हिन्दी), साहित्याचार्य, साहित्यरत्न
एवम्
अवनिकुमार पाण्डेय
एम० ए० (अंग्रेजी), शास्त्री



चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन
वाराणसी

96



॥ श्रीः ॥

96

चौखम्बा सुरभारती ग्रन्थमाला

६२



श्रीभट्टनारायणप्रणीतं

वेणीसंहार-नाटकम्

'सुधा'-संस्कृत-हिन्दीटीकाद्वयोपेतम्

व्याख्याकारः—

पं० श्रीपरमेश्वरदीन पाण्डेय

एम० ए० (संस्कृत-हिन्दी), साहित्याचार्य, साहित्यरत्न

एवम्

अवनिकुमार पाण्डेय

एम० ए० (अंग्रेजी), शास्त्री



चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन

वाराणसी

प्रकाशक—

चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन

(भारतीय संस्कृति एवं साहित्य के प्रकाशक तथा वितरक)

के० ३७/११७, गोपालमन्दिर लेन

पोस्ट बाक्स नं० १२९

वाराणसी २२१००१

प्रथम संस्करण १९८२

मूल्य २०–००

अन्य प्राप्तिस्थान—

चौखम्बा विद्याभवन

(भारतीय संस्कृति एवं साहित्य के प्रकाशक तथा वितरक)

चौक (बनारस स्टेट बैंक भवन के पीछे)

पोस्ट बाक्स नं० ६९

वाराणसी २२१००१

मुद्रक—

श्रीजी मुद्रणालय

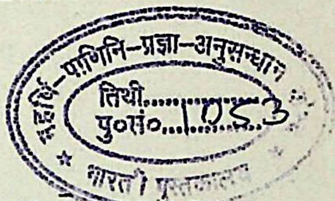
वाराणसी

THE

CHAUKHAMBA SURBHARATI GRANTHAMALA

62





VEṆĪSAṀHĀRA-NĀṬAKA

OF

BHAṬṬANĀRĀYAṆA

Edited With

'SUDHA'-SANSKRIT & HINDI COMMENTARIES

By

Sri Pt. Parameshwardin Pandey

M. A. (Sanskrit-Hindi), Sahityacharya, Sahityartna

&

Awanikumar Pandey

M. A. (Eng.), Shastri



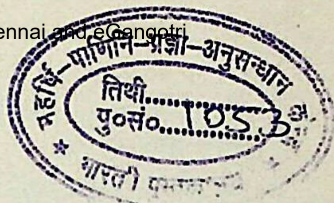
CHAUKHAMBA SURBHARATI PRAKASHAN

VARANASI

(*Oriental Booksellers & Publishers*)
K. 37/117, Gopal Mandir Lane
Post Box No. 129
VARANASI 221001

First Edition
1982

Also can be had of
CHOWKHAMBA VIDYABHAWAN
(*Oriental Booksellers & Publishers*)
CHOWK (Behind The Benares State Bank Building)
Post Box No. 69
VARANASI 221001



प्राक्कथन

महाकवि भट्टनारायण प्रणीत महाभारत की कथा पर आधारित 'वेणी-संहार' नाटक का संस्कृत-नाटकों में प्रमुख स्थान है। यही कारण है कि यह प्रायः समस्त भारतीय विश्वविद्यालयों में स्नातक अथवा स्नातकोत्तर परीक्षाओं में पाठ्य-ग्रन्थ के रूप में निर्धारित किया गया है। अंग्रेजी-प्रभृति अन्यान्य विश्व-प्रसिद्ध भाषाओं में रूपान्तर होना इसकी लोकप्रियता का ज्वलन्त प्रमाण है। कवि ने महाभारत की कतिपय घटनाओं का इस प्रकार सूत्र-रूप में वर्णन, अपने नाटक को सफल बनाने के लिए किया है कि नाटक का वास्तविक आनन्द महाभारत के ज्ञान के बिना अत्यन्त दुरूह हो जाता है। छात्रों तथा रसज्ञ पाठकों की इस कठिनाई को समाप्त करने के लिए नाटक का 'सुधा' टीका युक्त संस्करण तैयार किया गया है। सुधा टीका युक्त रत्नावली, चारुदत्त, अभिषेक (नाटक) किरातार्जुनीय (४ से ८ सर्ग काव्य) शुकनासोपदेश (गद्य, कादम्बरी कथांश) तथा नलचम्पू (चम्पू साहित्य) के समान ही 'वेणी-संहार' का भी यह संस्करण अध्येतृ-वर्ग को उपकृत कर सकेगा, इसका हमें पूर्ण विश्वास है।

हम संस्कृत-साहित्य-मर्मज्ञ प्रेमी पाठकों से उनके बहुमूल्य सुझावों की कामना करते हैं जिससे आगामी संस्करण में उन कमियों का निराकरण कर उसे और भी उपयोगी बनाया जा सके।

नाहिल (शाहजहाँपुर)
मकरसंक्रान्ति २०३७ वि०
(१४ जनवरी, १९८१)

विदुषां वशंवदः
परमेश्वरदीन पाण्डेय
एवम्
अवनि कुमार पाण्डेय

प्रस्तावना

रमणीयार्थप्रतिपादकशब्दात्मक काव्य को दृश्य तथा श्रव्य दो भागों में बाँटा गया है। दृश्य काव्य के अन्तर्गत आने वाले 'नाटक' भेद का साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान है। विश्व की समस्त उपलब्ध भाषाओं में निर्विवाद संस्कृत को सर्व-प्रथम भाषा होने का गौरव प्राप्त है। संस्कृत का आदिम रूप वैदिक भाषा है। सम्पूर्ण वैदिक-वाङ्मय में भी ऋग्वेद अत्यन्त प्राचीन है। काव्य-निर्माण में सर्व-प्रथम गद्य का स्थान रहा होगा। आगे चल कर शिखी एवं कोयल की कूक तथा निर्झर-निनाद से अनुप्राणित होकर पद्यात्मक काव्य का सृजन हुआ होगा।

इस प्रकार वैदिक काल से ही नाटक के अङ्गों—संवाद, संगीत-नृत्य तथा अभिनय के दर्शन किसी न किसी रूप में अवश्यमेव होते हैं। ऋग्वेद में यम-यमी, उर्वशी-पुरूरवा, सरमा-पणि के सम्वादात्मक सूक्तों में नाटकीय तत्व सम्वाद का स्वरूप परिलक्षित होता है। नाटक का संगीत-तत्व तो सामवेद का प्राण ही है। यही सम्वाद कालान्तर में परिमार्जित रूप में नाटक बन गये होंगे, ऐसा आलोचकों का विचार है। रामायण तथा महाभारत-काल में नाटक का इससे और भी अधिक-स्पष्ट रूप देखने को मिलता है। रामायण में 'नट-नर्तक', 'नाटक-रङ्गमञ्च' तथा 'कुशी लव' शब्दों का प्रयोग किया गया है। महाभारत में भी रङ्गशाला का वर्णन मिलता है। विश्वविख्यात वैयाकरणी पाणिनि ने 'पाराशर्य शिलालिभ्यां भिक्षुनटसूत्रयोः' सूत्र में भी 'नट-सूत्र' द्वारा नाट्य-शास्त्र की ओर ही सङ्केत किया है। ईसा की द्वितीय-शताब्दीपूर्व की एक प्राचीन नाट्यशाला 'छोटा नागपुर' की पहाड़ियों में पाई गई है जो कि नाट्य-शास्त्र के प्रेक्षागृह से बिल्कुल मिलती जुलती है।

लौकिक संस्कृत-साहित्य में सर्वप्रथम भरत मुनि ने 'नाटक' पर एक स्वतन्त्र 'नाट्य-शास्त्र' की रचना की। इसमें नाटक के लक्षण-भेद-अङ्ग-प्रत्यङ्ग आदि का विशद-वर्णन मिलता है। तदनुसार दृश्य गुणात्मक पंचमवेद की उत्पत्ति देवताओं की प्रार्थना पर ब्रह्मा द्वारा की गई—

महेन्द्रप्रमुखैर्देवैरुक्तः किल पितामहः। क्रीडनीयकमिच्छामो दृश्यं श्रव्यं च यद्भवेत्॥
न वेदव्यवहारोऽयं संश्राव्यः शूद्रजातिषु। तस्मात्सृजापरं वेदं पञ्चमं सार्ववर्णिकम्॥

इस प्रकार देवताओं की प्रार्थना पर ब्रह्मा जी ने चारो वेदों का समाज का धर्म्य, अर्थ्य, यशस्य, उपदेशात्मक, सर्व-शास्त्रार्थ-दर्शक, सर्व-शिल्प-प्रदर्शक नाटक की रचना की—

"धर्म्यमर्थ्यं यशस्यं च सोपदेशं ससंग्रहम्। भविष्यतश्च लोकस्य सर्वकर्मानुदर्शकम्॥
सर्वशास्त्रार्थसम्पन्नं सर्वशिल्पप्रदर्शकम्। नाट्यसंज्ञमिदं वेदं सेतिहासं करोम्यहम्॥
(नाट्यशास्त्रम्") ॥

इसमें ऋग्वेद से सम्वाद, यजुर्वेद से अभिनय, सामवेद से सङ्गीत तथा अथर्ववेद से रस की अवतारणा की गई है—

"जग्राहपाठमृग्वेदात् सामभ्यो गीतमेवच । यजुर्वेदादभिनयं रसानाथर्वणादपि" ॥
(नाट्यशास्त्रम्) ॥

इस प्रकार देवताओं, ऋषियों, राजाओं तथा कुटुम्बियों के चरित्रों का अनुकरण कर सामाजिकों को दिखलाना नाटक कहलाया। अतः यह निर्विवाद है कि नाटक-साहित्य का परिमार्जित स्वरूप हजारों वर्षों में ही पाया होगा। संस्कृत नाटककारों में अश्वघोष, कालिदास, भास तथा भवभूति के नाम प्रथम पंक्ति में आते हैं। कवि भट्टनारायण का महाभारत पर आधारित वेणी-संहार नाटक यद्यपि कवि की एकमात्र उपलब्ध रचना है तथापि रचना-सौष्ठव की दृष्टि से नाटककार ने अपनी प्रकृत-रचना वेणीसंहार-नाटक से ही शीर्षस्थ स्थान प्राप्त कर लिया है।

जीवनवृत्त—संस्कृत-कवियों में अपने जीवन-वृत्त के सम्बन्ध में कुछ भी न लिखने की परिपाटी अति-प्राचीन काल से बनी रही है। कवि के जीवनवृत्त पर अन्तःसाक्ष्य तथा बहिःसाक्ष्य दो प्रकार से प्रकाश पड़ता है। अतःसाक्ष्य से तात्पर्य कवि-कृति में वर्णित आत्मवृत्त से है। महाकवि भट्टनारायण ने अपनी एकमात्र रचना वेणीसंहार-नाटक में आत्मवृत्त-विषयक—'तदिदं कवेर्मृगराजलक्ष्मणो भट्टनारायणस्य कृतिं वेणीसंहारनाम-नाटकम्' लिख कर मौन धारण कर लिया है। वाह्य-साक्ष्य के अनुसार इनके सम्बन्ध में निम्नाङ्कित बातें प्रसिद्धि हैं—

"भट्टनारायण कान्यकुब्ज (कन्नौज) के रहने वाले शाण्डिल्यगोत्रीय ब्राह्मण थे"। राजवंशावलियों के सम्बन्ध में संस्कृत के—'क्षितीशवंशावलीचरित', 'रागावली' 'वंगराज-घटक' तथा 'दक्षिणाराधीयघटक कारिका' आदि ग्रन्थों में भट्टनारायण के सम्बन्ध में कुछ इतिवृत्त प्राप्त होता है। तदनुसार वंगदेश (बंगाल) में सेनवंश के प्रवर्तक गौड़ाधिपति 'आदिसूर' ने वैदिक अनुष्ठान कराने के लिये कान्यकुब्ज (कन्नौज) से सनातन धर्म की रक्षा-दृष्टि से स्मार्तकर्मानुष्ठाननिष्ठावन्त पाँच ब्राह्मणों को आमन्त्रित किया था। भट्टनारायण उन पाँचों में प्रधान पण्डित थे। 'आदिसूर' ने इन्हें दक्षिणा में पाँच गाँव भी दिये थे तथा इन्हें अपना सभापण्डित बना लिया था। शनैः शनैः सम्पत्ति बढ़ जाने पर आगे चल कर भट्टनारायण स्वयं बंगाल में एक राजवंश के प्रवर्तन बन गये।"

'वंगराजघटक' के अनुसार 'आदिसूर' ऐसा यज्ञ करना चाहता था जिससे भगवान् प्रसन्न हो जायें। उसके राज्य के पण्डित ऐसा उपाय बतलाने में असमर्थ थे, अतः कान्य-कुब्ज देश से उसने सनातन-धर्म-धुरीण प्रख्यात वैदुष्य पंडितराज भट्टनारायण को अन्य चार पंडितों सहित वंगदेश को बुलाया था। तृतीय किंवदन्ती के अनुसार एक बार वंग-राज्य में अकाल पड़ा। तब ऐसा यज्ञ कराने के लिये वंगराज 'आदिसूर' ने अन्य चार ब्राह्मणों सहित पंडितराज भट्टनारायण को बुलाया था जिससे देवराज इन्द्र को प्रसन्न कर वर्षा कराई जा सके। चतुर्थ कथानुसार 'आदिसूर' ने वंगराज्य पर आपत्ति की घटायें मंडराती देखकर आपन्निवारणार्थ पाँच ब्राह्मणों को कन्नौज से बुलाया था, इनमें पंडित-राज भट्टनारायण एक थे। पाँचवी कथा के अनुसार कान्यकुब्ज (कन्नौज) को सनातन-धर्म के उत्पीडन से परित्याग कर भट्टनारायण ने स्वयम् वंगदेश को अपना निवास-स्थान

बनाया। डा० गजेन्द्र गडकर के मतानुसार सम्भवतः उस समय बौद्ध-धर्म का अधिक प्रभाव होने के कारण वैदिक धर्मानुयायी ब्राह्मण धार्मिक उत्पीडन से त्रस्त होकर कान्य-कुब्ज देश का परित्याग का वंगदेश में जाकर बस रहे थे, भट्टनारायण भी उन्हीं में से एक थे।

'क्षितीशवंशावलीचरित' तथा 'वंगराजघटक' आदि कतिपय ग्रन्थों में जिस भट्टनारायण का वर्णन मिलता है वह तथा वेणीसंहारनाटक के रचयिता भट्टनारायण क्या एक ही व्यक्ति थे ? यह एक जटिल प्रश्न है। कवि अपनी कृति में अपने आश्रय-दाता के सम्बन्ध में कुछ न कुछ अवश्यमेव इंगित करता है। परन्तु प्रकृत कवि की एक मात्र रचना वेणी-संहार में 'आदिसूर' अथवा अन्य किसी भी राजा का वर्णन नहीं मिलता है। कोई भी व्यक्ति सरलतया अपनी जन्मभूमि का परित्याग नहीं करता है। यदि वेणीसंहार-नाटक के रचयिता भट्टनारायण वंगराज 'आदिसूर' के आग्रह पर अथवा धार्मिक उत्पीडन से जन्म-स्थान का परित्याग कर बंगाल में जाकर रहा होता तो यह उसकी रचना में अवश्य प्रकट होता किन्तु कवि ने न तो किसी राजा, राज्यपरिषद् की ओर संकेत किया और न धार्मिक उत्पीडन की ओर ही। अर्थात् वेणीसंहार-नाटक उसकी प्रस्तावना के के अनुसार सामान्य-जनों में ही अभिनीत हुआ प्रतीत होता है।

कवि के 'वेणीसंहार' की प्रस्तावना में 'कवेर्मृगराजलक्ष्मणः' लिख देने से लोग भट्ट-नारायण का क्षत्रिय जाति का होने का सन्देह कर बैठते हैं। परन्तु (कवेः मृगराजस्य = कविसिंहस्य लक्ष्म यस्य तथाविधस्य) कविसिंहोपाधिधारी अर्थ करने से यह धारणा निर्मूल सिद्ध हो जाती है। भट्ट शब्द से स्पष्टरूप से कवि का जन्म भट्ट ब्राह्मण-जाति में हुआ था। कवि ने अपने ब्राह्मणत्व की मर्यादा वेणीसंहार में पूर्णरूप से सुरक्षित रखी है। यहाँ तक कि अन्य नाटककारों की भाँति अपने नाटक में किसी भी ब्राह्मण-पात्र की दुर्दशा अथवा मूर्खता का प्रदर्शन नहीं किया है। कर्ण तथा अश्वत्थामा-विवाद में भी ब्राह्मण अश्वत्थामा का प्रबल-समर्थन किया है। तृतीय अंक में राक्षस-राक्षसी-सम्वाद में भी— 'ब्राह्मणशोणितं खल्वेतत्। गलं दहद्दहत्प्रविशति'। कहकर ब्राह्मण की महत्ता का ही समर्थन किया है। अतः वेणीसंहार नाटक के रचयिता कोई अन्य ब्राह्मण भट्टनारायण कवि थे।

गौडाधिपति 'आदिसूर' से वेणीसंहार नाटक के रचयिता कवि भट्टनारायण को पृथक् मान लेने पर सप्तम शती के परवर्ती कवियों पर दृष्टिपात करने से कुछ तथ्य प्रकट होते हैं क्योंकि 'आदिसूर' का शासनकाल इतिहासकारों ने सप्तम शताब्दी खिष्टीय का उत्तरार्द्ध माना है। विश्वविख्यात काव्य-प्रकाशकार आचार्य मम्मट (११०० ई० के आस-पास) ने अपने काव्यप्रकाश में 'वेणी-संहार' के अनेकों श्लोक उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किये हैं। इसी प्रकार अमर-कोश के प्रसिद्ध टीकाकार 'क्षीर स्वामी' ने अपनी टीका तथा भोजराज ने 'सरस्वतीकण्ठाभरण' में भी वेणीसंहार के श्लोक उद्धृत किये हैं। दशम शताब्दी के उत्तरार्द्ध के दशरूपककार आनन्दवर्धनाचार्य ने भी अपनी रचनाओं 'दशरूपक' तथा 'ध्वन्यालोक' में इसके श्लोकों को उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया है। परन्तु सप्तम

शताब्दी के पूर्वार्द्ध में हुये सुप्रसिद्ध कवि बाण तथा हर्ष ने अपनी रचनाओं में इनका उल्लेख नहीं किया है। वेणीसंहार-नाटक से उदाहरण देने वाले सर्वाधिक प्राचीन 'काव्यालङ्कार-सूत्रवृत्ति' के रचयिता आचार्य वामन हैं, जिनको ८०० ईस्वी के उत्तरार्द्ध में होना निश्चित किया गया है। 'वेणीसंहार' के तृतीयाङ्क के ४१ वें श्लोक के 'पतितं वेत्स्यति क्षितौ' वाक्य में 'वेत्स्यति' की इन्होंने व्याकरणानुकूलता सिद्ध की है जिससे वामन की कवि के प्रति श्रद्धा प्रकट होती है। इस प्रकार कवि भट्टनारायण का ईस्वी सप्तम शताब्दी के अन्त तथा अष्टम शताब्दी के आरम्भ में होना निश्चित रूप कहा जा सकता है।

इनके माता-पिता के सम्बन्ध में कुछ भी पता नहीं मिलता है। नाटक की प्रस्तावना में 'हरिचरणयोरञ्जलिरयम्'। तथा 'धूर्जटिः पातु युष्मान्'। स्तुतियों द्वारा कवि का शिव-उपासक होते हुये भी वैष्णव होना ज्ञात होता है। वह लोक तथा परलोक में विश्वास रखते थे। भाग्यवादी होकर भी उन्हें पुरुषार्थ पर विश्वास अधिक था। उन्होंने विभिन्न शास्त्रों का अनुशीलन किया था। योग, सांख्य तथा वैष्णव-दर्शनों का उनका ज्ञान प्रशंसनीय था। वह स्वयम् वैदिक यज्ञ-यागादि के प्रकाण्ड पण्डित थे तथा छन्दःशास्त्र एवम् अलङ्कार विषयक उनका उच्चकोटि का ज्ञान था। यद्यपि 'सुभाषित-संग्रह' में इनके नाम से अनेक श्लोक मिलते हैं तथापि अद्यावधि उपलब्ध इनकी एक मात्र रचना वेणीसंहार नाटक ही है।

वेणीसंहार-नामकरण—किसी भी नाटक का नाम उसमें घटित घटना को लेकर किया जाता है। वेणीसंहार का अर्थ है 'खुली चोटी का बाँधना'। भीमसेन ने प्रस्तुत नाटक के आरम्भ में ही अपनी प्रियतमा द्रौपदी की दुःशासन द्वारा खींची जाने के कारण खुली चोटी को 'उत्तंसयिष्यति कचाँस्तव देवि भीमः' कह कर चोटी सँवारने या बाँधने की प्रतिज्ञा की थी तथा उसको पूर्ण करने के लिए ही नाटक की सम्पूर्ण घटना हुई है। नाटक के अन्त में भी युधिष्ठिर द्वारा भीमसेन से यह पूछने पर कि—किमपरमवशिष्टम् (अब और क्या करना शेष रहा है?) भीमसेन—"संयच्छामि तावदनेन सुयोधनशोणितोक्षितेन पाणिना पाञ्चाल्या दुःशासनावकृष्टं केशहस्तम्"। कह कर द्रौपदी की वेणी (चोटी) का संहार (संयत करने, सँवारने अथवा बाँधने) की बात ही दुहराता है। अतः वेणीसंहार नाम ही अधिक समीचीन है।

नाटक का नायक—किसी भी नाटक का नायक वही प्रधान पात्र होता है जो कि उस नाटक में प्रमुख भूमिका का निर्वाह करता है। यद्यपि इस नाटक में युधिष्ठिरादि पाण्डव तथा दुर्योधन प्रमुख कौरवों को पात्र बनाया गया है तथापि नाटक की सम्पूर्ण घटना का श्रेय भीमसेन को ही मिलता है। भीम ही एक ऐसा महान् योद्धा है जो कि नाटक में साद्यन्त प्रतिज्ञात महान् कार्य को पूर्ण करने में संलग्न रहता है। अतः प्रकृत वेणीसंहार नाटक का धीरोद्धत नायक भीमसेन ही है।

प्रतिनायक—नाटक में नायक की प्रतिद्वन्द्विता करने वाला उसी जैसा प्रतिस्पर्धा करने वाला पात्र प्रतिनायक कहलाता है। प्रतिनायक सदैव नायक का अपकार करने में लगा रहता है, क्षण भर को भी कोई एक दूसरे को सहन नहीं कर सकता है तथा अन्त

लुब्धो धीरोद्धतः स्तब्धः पापकृद् व्यसनी रिपुः

में नायक द्वारा प्रतिनायक पराजित होता है। प्रकृत नाटक में जहाँ एक ओर समस्त घटनाएँ भीम को नायक प्रतिपादित करती हैं तो दूसरी ओर दुर्योधन को प्रतिनायक भी। अतः वेणीसंहार नाटक का प्रतिनायक दुर्योधन है।

नायिका—नाटक में नायक-नायिका का स्त्री-पुरुष-भावात्मक सम्बन्ध होता है। यद्यपि द्रौपदी युधिष्ठिरादि पाँचों पाण्डवों की पत्नी है तथापि उसका स्पृहणीय सम्बन्ध केवल भीमसेन के साथ रहता है। वह एकमात्र भीम को ही 'नाथ' तथा 'आर्यपुत्र' नामों से सम्बोधित करती है। नाटकारम्भ में उसकी चोटी सँवारने के सङ्कल्प से लेकर चोटी सँवारने के अन्त तक भीमसेन (नायक) का सम्बन्ध द्रौपदी से ही रहता है अतः वेणीसंहार नाटक की नायिका स्वीया मुग्धा द्रौपदी ही है।मुग्धा, धीरा शीलार्जवादि गुण

प्रधान रस—वेणीसंहार नाटक में प्रस्तावना से ही—'निर्वाण वैरदहनाः', 'चञ्चद्भुज भ्रमितचण्डगदाभिघात' तथा 'मथ्नामि कौरवशतम्' इत्यादि से लेकर अन्त तक वीर रस का ही प्राधान्य है। वैसे भी नाटक की सफलता के लिए शृङ्गार अथवा वीर रसों में से किसी एक का होना अनिवार्य है—"एक एव भवेदङ्गी शृङ्गारो वीर एव वा" (साहित्य-दर्पण)। इस दृष्टि से भी वेणीसंहार वीररस-प्रधान नाटक है। इसका ओज प्रमुख गुण तथा गौडी रीति एवं आरभटी वृत्ति है।

नाटक का कथास्रोत—महाकवि भट्टनारायण ने अपने नाटक का आधार महाभारत को बनाया है। इसके सभी प्रधान-पात्र महाभारत के पात्र ही है। इस प्रकार नाटककार ने अपने नाटक के छः अङ्कों के पूर्णभाग में महाभारत के कथांश को सफलता से समाविष्ट किया है।

कथावस्तु में परिवर्तन तथा नूतन कल्पनायें—महाभारत में पाँच ग्रामों को लेकर सन्धि का प्रस्ताव सञ्जय द्वारा कराया गया है जिसकी विफलता पर पुनः भगवान् श्रीकृष्ण एतदर्थ प्रयत्न करते हैं परन्तु 'वेणीसंहार' में केवल भगवान् श्रीकृष्ण ही सन्धि का प्रस्ताव लेकर दुर्योधन के समीप जाते हैं। दुर्योधन उन्हें पकड़वाने का षड्यन्त्र करता है। धृतराष्ट्र उसे ऐसा करने से रोक देते हैं। तृतीय अङ्क में द्रोण की मृत्यु के पश्चात् कर्ण द्वारा उनकी निन्दा किये जाने पर अश्वत्थामा तथा कर्ण में कलह होती है पर महाभारत में कृपाचार्य द्वारा कर्ण से कलह देखने को मिलती है। नाटक में चार्वाक राक्षस मुनिवेष धारण कर हस्तिनापुर में युधिष्ठिर के प्रवेश करने के पूर्व ही भेंट करता है पर महाभारत में उनके प्रवेश करने पर। महाभारत में जल में छिपे दुर्योधन को युद्ध करने के लिये फटकारने पर पञ्चपाण्डवों में किसी एक से युद्ध करने की बात आती है पर नाटक में यह एक मात्र भीम के साथ ही। महाभारत में भीम केवल दुर्योधन की जाँघों को तोड़ने की प्रतिज्ञा करता है परन्तु नाटक में उसके रक्त से द्रौपदी के बाल सँवारने की बात भी कही गई है। दुर्योधन की पत्नी भानुमती द्वारा द्रौपदी के केश बाँधने के सम्बन्ध में किया गया प्रश्न कवि की अपनी नूतन कल्पना है। इस प्रकार कवि ने अपने नाटक में महाभारत की कथा-वस्तु में आवश्यकतानुसार साधारण-सा परिवर्तन कर नाटक की रोचकता को और भी बढ़ा दिया है।

नाटकीय पात्र—चरित्र-चित्रण

प्रकृत-नाटक में कवि ने पात्रों को प्रतिद्वन्द्वी के रूप में प्रस्तुत किया है यथा भीम, दुर्योधन, कर्ण तथा अश्वत्थामा द्रौपदी एवम् भानुमती इन युगल-पात्रों के चरित्र प्रायः पारस्परिक रूप से भिन्न प्रदर्शित किये गये हैं।

भीमसेन—नाटक का नायक भीमसेन शारीरिक रूप से अनुपम शक्तिशाली एवम् मानसिक रूप से दृढ़ता का साक्षात् स्वरूप है। उसमें शत्रुओं की विशाल वाहिनी को अकेले ही नष्ट कर देने की क्षमता है। वह कौरवों से शैशवकाल से ही शत्रुता का मूल अपने को मानता है—'प्रवृद्धं यद्वैरं मम खलु शिशोरेव कुरुभिः, न तत्रार्यो हेतुर्न भवति किरीटी न च युवाम् ॥' (वे० सं० अ० १, श्लोक १०)। जब युधिष्ठिर सन्धि के निमित्त प्रयत्नशील होते हैं तब भीम स्पष्ट रूप से अपने को इससे पृथक् बता है—'क्रुधा सन्धिं भीमो विघटयति यूयं घटयत' ॥ दुर्योधन की युधिष्ठिर को जुआ खिला कर राज्य हड़पने, लाक्षागृह में आग लगवाने, विष दिलाने तथा द्रौपदी को भरी सभा में केश पकड़ कर निर्वसना करने आदि की बातों से उसने दृढ़ निश्चय-सा कर लिया था कि धार्तराष्ट्र मेरे जीते जी अब स्वस्थ नहीं रह सकते हैं—'स्वस्था भवन्ति मयि जीवति धार्तराष्ट्राः' ॥ (१-८) ॥ उसकी दृष्टि से शत्रुओं के साथ शान्ति की वार्ता करने वाला क्षत्रिय क्षत्रिय नहीं नपुंसक है। वह स्पष्ट रूप से युधिष्ठिर के पास कहला भेजता है कि आज एक दिन के लिये मैं आपकी बात मानने में असमर्थ हूँ, आज भर के लिये आप न मेरे बड़े भाई हैं और न मैं आपका छोटा भाई—'अद्यैकं दिवसं ममासि न गुरुर्नाहं विधेयस्तव ॥' अपनी प्रेयसी द्रौपदी की दीन दशा देख कर उसकी भुजायें फड़क उठती हैं। वह द्रौपदी को आश्वास देता हुआ कहता है—'मथ्नामि कौरवशतं समरे न कोपाद्, दुःशासनस्य रुधिरं न पिबाम्युरस्तः। सञ्चूर्णयामि गदया न सुयोधनोरू सन्धिं करोतु भवतां नृपतिः पणेन ॥' (१-१५)। भीम अपनी चञ्चल भुजाओं द्वारा गदा घुमा कर दुर्योधन की जंघायें फाड़ कर रक्त से द्रौपदी के केश बँधवाने की अपनी प्रतिज्ञा भी द्रौपदी को सुना देता है—'चञ्चद्-भुजभ्रमित चण्डगदे'त्यादि ॥ (१-२१)। वह अपनी इस प्रतिज्ञा को जब तक पूर्ण नहीं कर कर लेता है, चैन की साँस नहीं लेता। इतना ही नहीं, भीम के अदम्य साहस तथा अपरिमित बल के भय से दुर्योधन भी अपना मानसिक सन्तुलन खोकर भ्रमवश—"स्वबलेन निहन्ति संयुगे न चिरात् पाण्डुसुतः सुयोधनम् ॥" कह बैठता है। भीम अपने बड़े भाई का आदेश पालन करने के लिए ही बड़े से बड़ा कष्ट भी प्रसन्नतापूर्वक सहन कर लेता है यह उसके पूर्ण धैर्य का परिचायक है। वह वीर, वृक-कर्मा शत्रु-संहार करने की सामर्थ्य रखता हुआ भी परमशालीन है। पञ्चम अङ्क में धृतराष्ट्र-गान्धारी के प्रति किया गया उसका व्यवहार केवल अन्याय के प्रति सतर्क करने की सूचना मात्र देता है।

भीम अपने परम सहयोगी अर्जुन सखा श्रीकृष्ण के प्रति भी अतीव श्रद्धावान है। वह उन्हें मित्र ही नहीं अपितु पूर्ण ब्रह्म के रूप में देखता है तथा उनकी मर्यादा के विपरीत कुछ भी सहन नहीं कर सकता है। वास्तव में भीमसेन वेणीसंहार नाटक का एक उत्तम कोटि का धीरोद्धत नायक है।

दुर्योधन—अत्यन्त स्वार्थी, मदान्ध, विलासी दुर्योधन प्रकृत नाटक का प्रतिनायक है। वह अपनी तुलना में समस्त संसार को तृणवत् मानता है। सम्पूर्ण महाभारत उसकी हठ-वादिता एवं स्वेच्छाचारिता का ही प्रतिफल है। कौरवों की विशाल वाहिनी के कर्णधार भीष्म, द्रोण, कृप तथा कर्ण जैसे महारथियों के संग्राम में मारे जाने पर भी वह अपने मार्ग से विचलित नहीं होता है। उसे अपनी स्वार्थ-पूर्ति हेतु विश्व का विनाश करा डालने में भी संकोच नहीं है। अपनी अनुपम वाण-विद्या से विश्व को आश्चर्य में डालने वाले आचार्य द्रोण के युद्ध में मारे जाने पर भी तदर्थ शोक न कर उनकी निन्दा करना उसकी मदान्धता का परिचायक है यहाँ तक कि अपने एक मात्र बहनोई दुःशला-पति जयद्रथ को मारने की अर्जुन प्रतिज्ञा को सुनकर भी वह विशेष चिन्तित नहीं होता है। अपने विवेक से कार्य न कर नीच प्रवृत्ति कर्ण तथा शकुनि के परामर्श को ही गुरु-मन्त्र मानने से उसकी विवेक-शून्यता प्रकट होती है। निरन्तर वल-क्षय देख कर भी वह अपनी प्रियतमा के साथ वाटिका में आमोद-प्रमोद करता है तथा अपनी विलासिता में अन्धा होकर ही वह अपनी प्रेयसी के साथ स्वेच्छया विहार करनें, रास रचाने तथा उसे अपनी जाँघों पर बैठाने की दुष्कामना करता है।

इस प्रकार अवगुणों का सागर होते हुये दुर्योधन में अनेक गुण भी दिखाई पड़ते हैं। वह पक्के इरादे वाला व्यक्ति है। अपने पक्ष के भीष्म-द्रोणादि महारथियों ससित अधिकांश सैन्य-वल युद्ध में समाप्त हो जानें पर भी वह अपना विचार बदलता नहीं हैं। 'सूच्यग्रं न दास्यामि' कह कर अपनी जिद पकड़े रहता है। उसे अपने मित्रों पर अटूट-विश्वास है। द्रोणाचार्य के अभाव में यद्यपि शक्तिशाली पुत्र अश्वत्थामा प्रतिशोध लेने के लिए तैयार होता है परन्तु मित्र कर्ण की बात पर वह उसका तिरस्कार कर देता है। अपने भाईयों तथा अन्य स्वजनों पर उसे अपार स्नेह है। भाइयों के अभाव में उसे विजय तथा राज्य-लाभ एवम् स्वयं जीवित रहने तक की इच्छा नहीं रह जाती है। वह एक अद्वितीय योद्धा तथा कुशल कूटनीतिज्ञ भी है। वास्तव में उसके विनाश का मूल कारण उसके नीच मित्र हैं।

युधिष्ठिर—यह एक सामान्य व्यक्तित्व के पात्र हैं। वास्तव में उनका चरित्र क्षत्रियोचित नहीं कहा जा सकता है। वह नितान्त सरल-शान्त-प्रकृति के राजा हैं। समस्त महाभारत उन्हीं के कर्मों का प्रतिफल है। सन्तुष्ट-नृपति कभी राज-समाज में आदृत नहीं हो पाता है। यद्यपि अपार भ्रातृ-स्नेह के कारण वह यहाँ तक कह बैठते हैं कि मैं एक भी पाण्डव के युद्ध में मारे जाने पर जीवित नहीं रह सकूँगा। अनेक वार 'अश्वप्रस्थं वकप्रस्थम्' इत्यादि पाँच नगर मात्र लेकर सन्तुष्ट रहने के लिये वह सन्धि का भी प्रयत्न करते हैं। सामान्य जनोचित आचरण मात्र करने के कारण उनका चरित्र नाटक में कुछ विशेष महत्वपूर्ण स्थान नहीं बन पाया है। 'क्षतात् किल त्रायत' इत्यादि क्षत्रिय-गुण-वैशिष्ट्य का अभाव युधिष्ठिर के चरित्र में सर्वत्र खटकता है।

अश्वत्थामा—आचार्य गुरुद्रोण का पुत्र अश्वत्थामा अत्यन्त पराक्रमी धनुर्विद्या में पारङ्गत, योग्य पितृ-भक्त तथा आत्माभिमानी व्यक्ति है। उसे अपने पिता के प्रति अपार श्रद्धा तथा उनके शौर्य एवं सामर्थ्य पर अटूट विश्वास है। अपार शक्ति उसके रोम-रोम

में भरी है। वह अपने पिता द्रोणाचार्य के युद्ध में मारे जाने पर अगाध-प्रेम के कारण तत्क्षण प्राण त्याग कर स्वर्ग में उनसे मिलने के लिये भी तैयार हो जाता है। उसे अपने पिता की निन्दा किसी प्रकार भी सह्य नहीं है। जब दुर्योधन के समक्ष कर्ण द्रोणाचार्य की निन्दा करने लगता है तो वह कर्ण पक्षपाती दुर्योधन की नीति के खिन्न होकर अस्त्र-शस्त्र-परित्याग कर बैठता है। यद्यपि दुर्योधन की विजय उसे अभीष्ट है तथापि अपने पिता की निन्दा करने वाले कर्ण को मारा जाता देख कर भी उसे सहयोग नहीं करता है। वह दृढ़ प्रतिज्ञ है। अपने पितृ-हन्ता शत्रुओं का संहार करने की एक मात्र उसकी धारणा बनी हुई है। 'यद्रामेण कृतं तदेव कुरुते द्रोणायनिः निःस्पृहैः।' कहने से इसका निःस्पृह तथा दृढ़निश्चयी होना सिद्ध होता है। वह शास्त्रों में विश्वास रखता है। धर्म तथा स्वर्गादि में उसकी निष्ठा है।

वह सच्चा कर्तव्यनिष्ठ व्यक्ति है। यद्यपि पिता की हत्या के पश्चात् कर्ण से हुये वार्तालाप में अस्त्र-त्याग की प्रतिज्ञा कर लेता है परन्तु जिस समय भीम दुःशासन की छाती फाड़ने के लिये उसे पकड़ लेता है तथा कौरव दल का कोई भी योद्धा उस दशा में अर्जुन के बाणों को विफल करने की सामर्थ्य नहीं रखता है तब क्रुद्ध होकर वह तत्काल शस्त्र उठा लेता है। आकाशवाणी उसे धर्म-विरुद्ध आचरण न करने को प्रेरित करती है। कर्ण की मृत्यु के पश्चात् वह पुनः एक बार अपने अनुपम शौर्य से दुर्योधन की सहायता करने के लिए उद्यत होता है दुरभिमानी दुर्योधन अपनी हठवादिता से उसे अस्वीकार कर देता है। खिन्न होकर अश्वत्थामा सदा-सर्वदा के लिए वहाँ से अज्ञातवास को चला जाता है।

इस प्रकार वेणीसंहार नाटक में अश्वत्थामा का चरित्र उत्तम कोटि का दृष्टिगोचर होता है। वह अनुपम वीर दृढ़प्रतिज्ञ धार्मिक उत्तम-धनुर्वेदज्ञ तथा निःस्पृह ब्राह्मण है। यदि नाटक से इसके चरित्र को हटा दिया जाय तो वह सम्पूर्ण गति-शून्य-सा रह जाता है।

कर्ण—यह नाटक परम वीर, अनुपम उत्साही दृढ़ी तथा दुरभिमानी पात्र है। प्राकृतिक दुष्टता के कारण उसे किसी का भी उत्कर्ष सह्य नहीं है। वह पौरुष पर अधिक विश्वास रखता है। 'दैवायत्तं कुले जन्म मदायत्तं तु पौरुषम्' ॥ कह कर वह अपने बलाभिमान का परिचय देता है। यद्यपि 'राज्यश्री' के शौर्यादि के अनेक गुण कर्ण में कूट-कूट कर भरे पड़े हैं पर उसके दुरभिमान, ईर्ष्या, असहिष्णुता तथा कुमन्त्रणा आदि दुर्गुण दुर्योधन को विनाश के गर्त में धकेलने में अधिक सहायक बन जाते हैं। अश्वत्थामा जैसे वीर निःस्पृही व्यक्ति का दुर्योधन द्वारा तिरस्कार किये जाने का मूल कारण कर्ण ही था। इस प्रकार कर्ण वेणीसंहार नाटक का एक प्रमुख पात्र होकर भी विध्वंसक, नीचाशयी तथा कलुषित चरित्र वाला ही व्यक्ति था।

द्रौपदी—यह वेणीसंहार नाटक की स्वीया मुग्धा नायिका है। वह उच्च क्षत्रिय कुल में जन्मी वीराङ्गना है। उसे पितृ-कुल तथा पति कुल दोनों की मर्यादायें प्राणों से भी प्रिय हैं। इस नाटक के वेणीसंहार नामकरण से ही सम्पूर्ण नाटक की घटनायें द्रौपदी को केन्द्र बनाकर घूमती रहती हैं। युधिष्ठिर द्वारा जुयें में द्रौपदी तक को हार कर धर्मभीरुता से उस पर दुर्योधन द्वारा किये गये अत्याचारों को देखते रहना, उनकी पाँच गाँव माँगने की

सन्धि शर्त को दुर्योधन द्वारा स्वीकार न किये जाने लाक्षागृहाग्नि काण्ड तथा विपदान आदि अनेक घटनाओं के कारण ही महाभारत जैसा भीषण नर-संहार हुआ परन्तु द्रौपदी का केश पकड़ कर दुःशासन द्वारा सभा में खींचा जाना भीम का क्रोधानल बना तथा निरन्तर उसकी 'खुली वेणी' ने उसमें आहुति का कार्य किया। भीमसेन अपनी प्रिया के आँसुओं को पोंछने के लिये, उसके खुले बालों को बँधाने की 'उत्तंसयिष्यति कचांस्तव देवि भीमः'। कह कर भीषण प्रतिज्ञा कर लेते हैं। इसी प्रतिज्ञा का पालन 'वेणी-संहार' है। नायक भीम तथा नायिका द्रौपदी दोनों ही खुली वेणी बँधाने तथा बाँधने की अपनी प्रतिज्ञाओं का निर्वाह करते हैं।

दुर्योधन तथा उसकी पत्नी भानुमती द्वारा किये गये अपमानों से द्रौपदी 'दया मूर्ति' न रह कर 'नागिन' सी बन जाती है। वह अपनी फूत्कार से समस्त कौरव वंश को भस्म कर डालने में लग जाती है। वह भीमसेन को ही वीरता के कारण अपना पति मानती है तथा उसी के समक्ष करुण क्रन्दन भी करती है। उसे विश्वास है कि उसके तिरस्कार का प्रतिशोध केवल भीम ही कर सकेंगे। वह अपने सतीत्व एवम् अभिमान पर सर्वस्व अर्पण कर सकती है। कपटी राक्षस द्वारा मुनिवेष धारण कर युद्ध में भीम तथा अर्जुन को मारे जाने की झूठी सूचना युधिष्ठिर को देता है तब उसका धैर्य टूट जाता है तथा अतिशीघ्र अपने को आग में जला कर भस्म कर देने के लिए व्यग्र हो उठती है। उसे किसी प्रकार शत्रु द्वारा अपना तिरस्कार सह्य नहीं है।

वास्तव में द्रौपदी वीर क्षत्राणी है। उसका चरित्र सम्पूर्ण नाटक में वीर क्षत्राणी के रूप में अङ्कित हुआ है विलासिनी रानी के रूप में नहीं। उसका मुखमण्डल भीषणों संकटों में भी सदा क्षत्रिय तेज से प्रदीप्त रहा है।

भानुमती—यह प्रतिनायक कौरवराज दुर्योधन की पत्नी है। यद्यपि उसका पति उद्धत स्वभाव वाला क्रूर हृदय है पर भानुमती उच्च कोटि की सरल हृदया साध्वी भारतीय नारी का सच्चा स्वरूप है। वह स्वप्न में भी अपने पति का अनिष्ट देख कर उसका निवारण करने में जुट जाती है। 'केनाप्यतिशयितदिव्य रूपिणा नकुलेनाहिसतं व्यापादितम्'। स्वप्न को परिजनों में कहते-कहते अत्यधीर हो उठती है। वह धर्मभीरु है। इस स्वप्न के अनिष्ट निवारणार्थ सखी के अर्घ्यदान हेतु अर्घ्य पात्र मँगाती है। वह अचानक व्रत भंग करने वाले अपने पति दुर्योधन से भी व्रत पूर्ण करने की अनुनयविनय करती है। इस प्रकार नाटक के केवल द्वितीय अङ्क में नाम मात्र को दिखलाई पड़ने वाली भानुमती पति-परायण, धर्मभीरु उत्तम चरित्र वाली क्षत्राणी है।



कथासार

प्रथम-अङ्क

संस्कृत-नाट्यशास्त्र की शैली के अनुसार ही वेणीसंहार नाटक का भी श्रीगणेश सूत्र-धार की श्लिष्टात्मक प्रार्थना श्लोकों द्वारा होता है। वह 'प्रवेशकालः किल तत्र भवतः⋯।' इत्यादि वाक्य द्वारा देवकीसूनु भगवान् चक्रपाणि का 'भरतकुलकाम्यया' स्वयं सन्धि प्रस्ताव लेकर महाराज दुर्योधन के शिविर को जाने की सूचना देता है। यह सुनकर 'लाक्षागृहानल विपान्न सभा प्रवेशा'दि अपकारों को करने वाले कौरव मेरे जीवित रहते कैसे स्वस्थ रह सकते हैं (स्वस्था भवन्तु मयि⋯⋯१–८)। कहते हुए क्रुद्ध भीम मञ्च पर प्रवेश करता है। भीम को किसी भी दशा में सन्धि प्रस्ताव मान्य नहीं है—'क्रुधा सन्धिं भीमो विघटयति यूयं घटयत। (१–११) पाँच गाँव लेकर सन्धि करने के इच्छुक युधिष्ठिर को सहदेव द्वारा वह एक दिन को अग्रज न मानने की बात भी आवेश में वह कह डालता है—'अद्यैकं दिवसं ममासि न गुरुर्नाहं विधेयस्तव' ॥ १–१२। शस्त्रागार को प्रस्थान करता हुआ वह द्रौपदी की चतुःशाला में पहुँच जाता है। वह अतुलनीय शौर्य युक्त एक नहीं पाँच-पाँच पाण्डवों के होते हुये पाञ्चाल राजतनया की हो रही दुर्दशा पर द्रौपदी के समक्ष ही अपने को धिक्कारता भी है—'जीवत्सु पाण्डुपुत्रेषु' इत्यादि। १–१८ ॥ दुर्योधन पत्नी भानुमती के द्वारा भी द्रौपदी को जूड़ा बाँधने के लिये कहकर उसका अपमान करने की बात सुनकर वह अपनी चञ्चल भुजाओं से गदा प्रहार द्वारा सुयोधन के ऊरुयुगल को चूर्ण करने तथा उसके रक्त से द्रौपदी के केशों को बँधाने की प्रतिज्ञा सुनाता है।

तदनन्तर घबराया हुआ कञ्चुकी आकर भीमसेन को दुर्बुद्धि दुर्योधन द्वारा श्री कृष्ण से सन्धि प्रस्ताव को ठुकराने तथा उन्हें बन्दी बनाने का प्रयत्न करने की सूचना देता है। भीमसेन द्रौपदी को बतलाता है कि हम पाण्डव रण यज्ञ करने जा रहे हैं जिसके भीमादि चारों पाण्डव ऋत्विज हैं, कर्मोपदेष्टा भगवान् कृष्ण हैं आदि—'चत्वारो वयमृत्विजः स भगवान्⋯⋯।' १–२५। यह कह कर भीम भाई सहदेव के साथ युद्ध भूमि को जाता है। द्रौपदी उनके लिए मङ्गल कामना करती है।

द्वितीय-अङ्क

यह अङ्क युद्ध घटनाओं से परिपूर्ण है। भीष्म तथा अभिमन्यु सदृश योद्धा मारे जा चुके हैं। दुर्योधनपत्नी भानुमती नकुल द्वारा अहिशत मारने का दुःस्वप्न अपनी सखियों को सुनाकर अनिष्ट निवारणार्थ सूर्य भगवान् का व्रत करने को तत्पर होती है। बीच में दुर्योधन आकर व्रत भङ्ग कर देता है। दुर्योधन पत्नी भानुमती को अनेक प्रकार से ढाढस बँधाता है ग्रहों की काकतालीय गति के अनुसार स्वप्न मात्र से भयभीत न रहने के लिए समझता है 'ग्रहाणां चरितं स्वप्नो⋯⋯' इत्यादि। २–१५। दोनों दारुपर्वत प्रासाद को चले जाते हैं। सहसा–'भग्नं भीमेन भवतो मरुता रथकेतनम्।' आदि २–२४ ॥ द्विरुक्ति द्वारा दुर्योधन के रथ के नष्ट होने की सूचना कञ्चुकी दुर्योधन को देता है। प्रतीहारी सिन्धुराज जयद्रथ की माता तथा पत्नी दुःशला के आने की सूचना देता है। वे दोनों

गाण्डीवी द्वारा सूर्यास्त से पूर्व जयद्रथ को मारे जाने की प्रतिज्ञा रोकर सुनाती हैं तथा उसकी रक्षा हेतु प्रार्थना करती है। दुर्योधन—'दुःशासन हृदयक्षतजाम्बुपाने दुर्योधनस्य च यथा गदयोरुभङ्गे' । इत्यादि २-२८ ॥ कहकर उन दोनों को समझाता है तथा स्वयं युद्ध भूमि को प्रस्थान करता है।

तृतीय-अङ्क

इस तङ्क में घमासान युद्ध होने तथा द्रोणाचार्य के मारे जाने की सूचना राक्षस-राक्षसी द्वारा दी जाती है। पितृवध शोकाकुल अश्वत्थामा प्रवेश करता है कृपाचार्य उसे सान्त्वना देते हैं। इसी मध्य कर्ण तथा दुर्योधन का प्रवेश होता है कर्ण दुर्योधन को आचार्य द्वारा शस्त्र त्याग कर देने के कारण मारे जाने की सूचना देता है तथा वह यह भी समझाता है कि वह तो अपने पुत्र अश्वत्थामा को राजा बनाना चाहते थे पुत्र वध रूपी असत्य समाचार सुनकर निराश मोहान्ध होकर ही उन्होंने शस्त्र त्याग किया था। दुर्योधन कर्ण की बातों पर विश्वास कर लेता है। कृपाचार्य कुरुपति से अश्वत्थामा को सेनापति बनाने का प्रस्ताव करते हैं परन्तु दुर्योधन कर्ण को सेनापति बनाने का निश्चय कर लेता है। कर्ण अश्वत्थामा के समक्ष ही उसके पिता गुरु द्रोण की निन्दा कर और भी दुःखित कर देता है। क्रुद्ध होकर अश्वत्थामा—'शिरसि चरण एष न्यस्यते वारयैनम्' । ३-४० ॥ कह कर कर्ण पर लात मारने का प्रयत्न करता है। अश्वत्थामा को ऐसा करने से कृपाचार्य तथा दुर्योधन—'गुरुपुत्र ! मर्षय मर्षय' । कह कर रोकते हैं। अश्वत्थामा प्रतिज्ञा करता है—'अयं पापो यावन्न निधनमुपेयादरिशरैः' । ३-४९ ॥ अर्थात् जब तक यह दुष्ट कर्ण शत्रु द्वारा मार नहीं डाला जाता तब तक मैं अस्त्रग्रहण नहीं करूँगा। इतने में नेपथ्य में—'सोऽयं मद्भुजपंजरे निपतितः संरक्ष्यतां कौरवाः' ॥ ३-४७ ॥ कौरवों को चुनौती सुनाई पड़ती है। दुर्योधनानुज दुःशासन को संकट में पड़ा सुनकर एक बार पुनः अपनी अस्त्र त्याग की परवाह न कर अश्वत्थामा शस्त्र उठाने का प्रयास करता है परन्तु—'न खलु सत्यवचनमनुल्लंघयितुमर्हसि' । आकाशवाणी सुनाई पड़ती है। अश्वत्थामा पश्चात्ताप कर यह कहता हुआ रुक जाता है कि—'आः पक्षपातिनो देवा अपि पाण्डवानाम्' । देवता भी पाण्डवों का पक्ष करते हैं ॥

चतुर्थ-अङ्क

इस अङ्क में युद्ध में प्रहार मूर्च्छित दुर्योधन को रथ में डाल कर सारथि युद्ध भूमि से बाहर वट वृक्ष के नीचे ले जाता है। मूर्च्छित कुरुराज को देख कर वह सोचने लगता है कि समस्त राजकुमारों के रणभूमि में मारे जाने पर कौरवों में एक मात्र शेष महाराज कुरुराज पर भी अब भाग्य कटाक्ष करने लगा है—'मदकलितकरेणुभज्यमाने······कटाक्षैः' ॥ ४-३ ॥ होश आने पर दुर्योधन बड़बड़ाने लगता है—नहीं-नहीं मेरे जीते जी दुष्ट वृकोदर प्रिय दुःशासन को मारने को अपनी प्रतिज्ञा पूर्ण नहीं कर सकता है—'अक्षतस्य गदापाणेरनारूढस्य······' ॥ ४-७ ॥ उसे दुःशासन के मारे जाने के समाचार से अतीव दुःख होता है। सुन्दरक कर्णपुत्र वृषसेन के मारे जाने की भी सूचना आकर देता है।

पुत्रवध से अत्यन्त निराश दुःखी तथा क्रुद्ध दुर्योधन अनुचर सुन्दरक द्वारा दिये दुःखी कर्ण का सन्देश पत्र पढ़ता है तथा व्याकुल होकर अन्तिम युद्ध करने हेतु रणभूमि को गये कर्ण के समाचार को जान कर उसकी सहायता करने उसी ओर को प्रस्थान करता है इतने में सञ्जयाधिष्ठितरथ पर बैठे धृतराष्ट्र तथा गान्धारी वहीं आ जाते हैं। परन्तु दुःखी दुर्योधन—'किं नाम तातो अम्बा च सम्प्राप्तौ'। कहकर सूत को रथ लाने का आदेश देता है तथा स्वयम् एकान्त में तात-दर्शन छोड़ कर ठहरने की सोचता है। उसे ग्लानि है कि वह माता-पिता के पास जाकर उन्हें अपना मुँह कैसे दिखायेगा—'पार्श्वे पित्रोरपगतघृणः किन्नु वक्ष्यामि गत्वा' ॥ ४–१५ ॥ फिर भी गुरुजन अवश्य वन्दनीय हैं यह कहकर सूत के साथ चला जाता है।

पञ्चम-अङ्क

संजय धृतराष्ट्र तथा गान्धारी के साथ दुःखी दुर्योधन के समीप पहुँचते हैं। दोनों पुत्र दुर्योधन को टटोल कर आलिङ्गन करते हैं। दुर्योधन अपने को पापी, अपनी आँखों के सामने भाइयों की हत्या होते देखने वाला, सुतक्षयकारी तथा माता-पिता को केवल रुलाने वाला पुत्र बता कर ग्लानि करता है—'पापोऽहमप्रतिकृतानुजनाशदर्शी······ इत्यादि'। ५–२ ॥ गान्धारी 'अन्धे की लकड़ी' एक मात्र अवशिष्ट पुत्र दुर्योधन को जीवित रहने के लिए कहती है—'तच्चिरंजीव। किं राज्येन जयेन वा।' परन्तु दुर्योधन अपने भाइयों के वध का प्रतिशोध करने की प्रतिज्ञा करता है। धृतराष्ट्र गुप्त रीति से पाण्डव वध की सलाह देते हैं वह उससे सहमत नहीं होता है। महान् कोलाहल होता है। उसे कर्ण के मारे जाने की सूचना मिलती है। जैसे ही दुर्योधन अकेला रणस्थल को प्रस्थान करना चाहता है कि भीम तथा अर्जुन दोनों ही दुर्योधन को खोजते हुये वहीं आ जाते हैं और आकर भीम धृतराष्ट्र एवं गान्धारी को प्रणाम कर व्यङ्ग्य वचन करता हैं। 'चूर्णिताशेष कौरव्यः क्षीबो दुःशासनासृजा। भंक्ता सुयोधनस्योर्वो भीमोऽयं शिरसाञ्चति ॥ ५–२८ ॥ दुर्योधन भीम को गदा द्वन्द्व युद्ध के लिए ललकारता है परन्तु अर्जुन भीम को ऐसा करने से रोक देता है। इतने में 'अस्तं भास्वान् प्रयातः सह रिपुभिरयं संह्रियन्तां बलानि ॥ ५–३६ ॥ यह युद्ध रोक देने की युधिष्ठिर द्वारा घोषणा कर दी जाती है। उभय पक्षीय सेनायें शिविरों को चली जाती हैं।

द्रोण-पुत्र अश्वत्थामा दुर्योधन के समीप आकर कहता है कि मित्र! अब मैं आ गया हूँ आप को चिन्ता नहीं करनी चाहिये परन्तु दुर्योधन उसकी यह कहकर निन्दा करता है कि कर्ण वध की ही तुमने प्रतीक्षा क्यों की—'मयाप्यन्तं प्रतीक्षस्व कः कर्णः कः सुयोधनः' ॥ ५–३९ ॥ मेरे अन्त की भी प्रतीक्षा कर लो मुझ में और कर्ण में भेद ही क्या है? अश्वत्थामा अपमानित होकर चल देता है। धृतराष्ट्र—'अवसानमिदानीं भरतकुलस्य'। अब भरत कुल का विनाश अवश्यम्भावी है यह कह कर सञ्जय से अश्वत्थामा को समझाने को कहता है तथा अपने बल एवं पौरुष का स्मरण कर दुर्योधन की सहायता करने के लिए सलाह देता है। दुर्योधन रथ तैयार करने को सूत को आदेश देता है धृतराष्ट्र गान्धारी सहित मद्रराज शल्य के शिविर को प्रस्थान करते हैं।

षष्ठ-अङ्क

इस अन्तिम अङ्क में द्रौपदी चेटी सहित युधिष्ठिर प्रवेश कर अनुचर को आज्ञा देते हैं कि सुयोधन की गतिविधियों पर ध्यान रखने वाले भक्त गुप्तचर भीम द्वारा की गई अपने वध की भीषण प्रतिज्ञा को सुन कर छिपे हुये दुर्योधन का पता लगाने के लिए समन्तपञ्चक क्षेत्र के चारों ओर चले जायें तथा पङ्क अथवा रेत में गुप्त पद चिह्नों को पहिचानने वाले दास, लता-कुञ्जों की जानकारी रखने वाले वल्लव, गजव्याघ्रादि युक्त रन्ध्रों एवं श्वपच वस्तियों के जानकार और सिद्ध वेषधारी गुप्तचर मुनियों के आश्रमों पर उसे तलाश करें— 'पंके वा सैकवे वा···' ॥६–२॥ तदनन्तर पाञ्चालक नामक अनुचर आकर दुर्योधन का पता लग जाने तथा भीमसेन का उससे गदा युद्ध करने का समाचार युधिष्ठिर को सुनाता है। वह कहता है कि मुझे भगवान् चक्रपाणि देवकीनन्दन ने आपके पास सन्देश लेकर भेजा है कि अब निःसन्देह अभिषेक सम्बन्धी मङ्गल समारम्भ किये जायें। रत्न कलश जलपूर्ण कराये जायें। कृष्णा क्षण भर में अपने वेणीवन्धन के लिए तैयार रहे। 'पूर्यन्तां सलिलेन रत्नकलशा···' ॥ ६–१२। ज्येष्ठ पाण्डव पुरोहितों एवम् अन्य कर्मचारियों को राज्याभिषेक सम्भार के लिए आज्ञा देते हैं।

इतने में चार्वाक नामक दुर्योधन का राक्षस मित्र कपटमुनि बन कर युधिष्ठिर के पास आता है और अर्जुन दुर्योधन के भयङ्कर गदा युद्ध होने का समाचार सुनाता है। साग्रह पूछने पर वह झूठमूठ कह देता है कि बलराम के संकेत से दुर्योधन ने गदा युद्ध में भीम को मार दिया है। यह दारुण वृत्तान्त सुन सभी अत्यन्त व्याकुल हो उठते हैं। द्रौपदी मूर्च्छित हो जाती है। युधिष्ठिर युद्ध से विरक्त होकर द्रौपदी सहित आग में जल कर मरने को तैयार हो जाते हैं चार्वाक उनके लिए चिता जला कर भाग जाता है। इतने में कोलाहल होता है। दुर्योधन का आना सुन कर सभी भयभीत हो उठते हैं। भयाक्रान्ता द्रौपदी छिपने का प्रयास करती है। इतने में रक्त रञ्जित-काय भीमसेन प्रवेश करता है तथा द्रौपदी की चोटी बाँधने के लिए उसे पकड़ लेता है। भ्रमवश उसे दुर्योधन समझ कर मारने के लिए युधिष्ठिर उठ खड़े होते हैं। 'नाहं रक्षो न भूतो रिपुरुधिरजलप्लाविताङ्गः······॥' ६–३७ ॥ कह कर वह अपने को 'दुर्योधन के रक्त से सना भीम' बतलाता है। प्रसन्न होकर युधिष्ठिर भीम का गाढ आलिंगन करते हैं। "भवति संयम्यतामिदानीं धार्तराष्ट्र कुलकालरात्रिर्दुःशासनविलुलितेयं वेणी"। कह कर भीम द्रौपदी की वेणी (चोटी) खुली हुई का संहार करता अर्थात् बाँधता है। युधिष्ठिर—'सोऽयं बद्धः प्रजानां विरमतु निधनं स्वस्ति राज्ञां कुलेभ्यः ॥ ६–४२ ॥' कह कर अब प्रजा का विनाश बन्द कर राजकुलों के कल्याण की घोषणा करते हैं। इसी बीच कृष्ण तथा अर्जुन प्रवेश करते हैं। 'व्यासोऽयं भगवानमी च मुनयो वाल्मीकिरामादयः······राज्याभिषेकाय ते ॥" ६–४४ ॥ कह कर भगवान् कृष्ण व्यास-वाल्मीकि आदि का राज्याभिषेक करने के लिए उपस्थित होने का शुभ समाचार सुनाते हैं। सभी भगवान् कृष्ण के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हैं। भरत-वाक्य के साथ ही नाटक समाप्त हो जाता है।

पात्र-परिचय



(पुरुष-पात्र)

भीम	:	नायक, मध्यम-पाण्डव ।
युधिष्ठिर	:	ज्येष्ठ पाण्डव ।
अर्जुन	:	युधिष्ठिरानुज, कुन्ती-पुत्र ।
नकुल सहदेव	:	युधिष्ठिर के अन्य युगलानुज, माद्री-सुत ।
कृष्ण	:	अर्जुन-सखा तथा सारथि, विष्णु के अवतार ।
दुर्योधन	:	प्रतिनायक, कौरव श्रेष्ठ ।
धृतराष्ट्र	:	कौरव-जनक, पाण्डव-पितृव्य (चाचा) । कुरु-राज ।
कर्ण	:	दुर्योधन-सखा, अङ्गराज ।
कृपाचार्य	:	दुर्योधनादि-गुरु द्रोण-श्यालक (साला) ।
अश्वत्थामा	:	द्रौणाचार्य-पुत्र, दुर्योधन-सहयोगी ।
सञ्जय	:	धृतराष्ट्र-सारथि ।
सुन्दरक	:	अङ्गराज कर्ण का सेवक ।
जयन्धर	:	युधिष्ठिर का अन्तःपुर-सेवक (कन्चुकी) ।
विनयन्धर	:	दुर्योधन का अन्तःपुर-सेवक (कन्चुकी) ।
चार्वाक	:	दुर्योधन-सखा, कपट-मुनि, राक्षस ।
अश्वसेन	:	द्रोणाचार्य-सारथि ।
रुधिर-प्रिय	:	पाण्डव-पक्षपाती राक्षस ।
सूत	:	दुर्योधन-सारथि ।
बुधक पाञ्चालक	:	युधिष्ठिर के सन्देशवाहक ।

भीष्म–द्रोण–अभिमन्यु–बलराम–धृष्टद्युम्न–दुःशासन–जयद्रथ–विदुर–शल्य आदि कतिपय संकेतित पात्र ।

(स्त्री-पात्र)

द्रौपदी	:	नायिका, पाण्डव-वधू ।
भानुमती	:	दुर्योधन-पत्नी ।
गान्धारी	:	दुर्योधन-माता ।
दुःशला	:	दुर्योधन-भगिनी ।
माता	:	जयद्रथ माता ।
बुद्धिमतिका	:	द्रौपदी-सखी ।
चेटी	:	द्रौपदी-सेविका ।
सुवदना	:	भानुमती-सखी ।
तरलिका	:	भानुमती-सखी ।
विहङ्गिका	:	कौरव-दासी ।
वसागन्धा	:	राक्षसी, रुधिरप्रिय राक्षस की पत्नी ।

॥ श्रीः ॥

वेणीसंहार-नाटकम्

सुधा-टीका-संवलितम्

प्रथमोऽङ्कः

निषिद्धैरप्येभिर्लुलितमकरन्दो मधुकरैः
करैरिन्दोरन्तश्छुरित इव संभिन्नमुकुलः ।
विधत्तां सिद्धिं नो नयनसुभगामस्य सदसः
प्रकीर्णः पुष्पाणां हरिचरणयोरञ्जलिरयम् ॥ १ ॥

❀ सुधा ❀

शरदिन्दु-निभां शुभ्रां शुभ्रवस्त्रैरलङ्कृताम् ।
कलहंस-कृताऽऽवासां वरदां शारदां नुमः ॥

अन्वयः—निषिद्धैः अपि एभिः मधुकरैः लुलितमकरन्दः इन्दोः करैः अन्तश्छुरितः इव सम्भिन्नमुकुलः हरिचरणयोः प्रकीर्णः अयम् पुष्पाणाम् अञ्जलिः अस्य सदसः नयनसुभगाम् सिद्धिम् नः विधत्ताम् ॥ १ ॥

इह तावत्कविकुलभूषणो महाकविर्भट्टनारायणः प्रारिप्सितस्यात्मनो वेणीसंहारनाटकस्य निर्विघ्न-परिसमाप्तिकामनया स्वेष्टदेवता-स्तुतिरूपां नान्दीं निर्दिशति—निषिद्धैरिति । (मुहुर्मुहुः) निषिद्धैः=निवारितैः अपि (हटाये गये भी) । एभिः=एतैः, मधुकरैः=अलिभिः (इन भौंरों के द्वारा) । लुलितमकरन्दः—लुलितः=सञ्चालितः मकरन्दः=पुष्परसः ('मकरन्दः पुष्परसः' इत्यमरः ।)

(बारम्बार) दूर किये गये भी इन भौंरों द्वारा विखेरी गई चन्द्रकिरणों द्वारा मानों मध्यभाग में व्याप्त, खिली हुई कलियों वाली, हरिचरणों में विखेरी गई यह पुष्पों की अञ्जलि इस सभा (के लोगों) की आँखों को आनन्द देने वाली सिद्धि हमें प्रदान करे ॥ १ ॥

अपि च—

कालिन्द्याः पुलिनेषु केलिकुपितामुत्सृज्य रासे रसं
गच्छन्तीमनुगच्छतोऽश्रुकलुषां कंसद्विषो राधिकाम् ।

यस्माद् असौ=लुलितमकरन्दः (विकीर्ण पुष्परस वाला)। इन्दोः=विधोः (चन्द्रमा की) करैः=किरणैः (किरणों द्वारा) अन्तश्छुरित इव—अन्तः=मध्ये छुरितः=व्याप्तः इव (मानों अन्दर व्याप्त)। सम्भिन्नमुकुलः—सम्भिन्नाः=प्रस्फुटिताः मुकुलाः=कुड्मलाः यत्र सः ('कुड्मलो मुकुलेऽस्त्रियाम्' इत्यमरः।) (खिली कलियों वाला)। हरिचरणयोः—हरेः=विष्णोः चरणौ=पादौ, तयोः (विष्णु भगवान् के चरणों में) प्रकीर्णः=विस्तीर्णः समर्पितो वा (समर्पित)। अयम्=एषः (यह)। पुष्पाणाम्=कुसुमानाम्, अञ्जलिः=हस्तसम्पुटः (पुष्पाञ्जलि)। अस्य=एतस्य। सदसः=सभायाः, सभास्थलोकस्येत्यर्थः (इस सभा के लोगों की)। नयनसुभगाम्—नयनयोः=नेत्रयोः सुभगाम्=सुखदाम् (नयनों को सुख देने वाली)। सिद्धिम्=सफलताम् (सफलता को)। नः=अस्माकम् (हमलोगों को)। विधत्ताम्=करोतु (करें)। मधुकरः इति दुर्योधन-परिवारः, सम्भिन्नमुकुलः इति वनवासादि दुःखनिवृत्तः पाण्डवानां सुखप्रकाशः, हरिचरणयोरञ्जलिः इति कृष्णशरणप्राप्तिः प्रदर्शिता। अत्रोत्प्रेक्षाऽलङ्कारः। शिखरिणी वृत्तम्। तद्यथा—'रसैः रुद्रैश्छिन्नाः यमनसभलागः शिखरिणी' इति लक्षणात् ॥ १ ॥

अन्वयः—कालिन्द्याः पुलिनेषु रासे रसम् उत्सृज्य गच्छन्तीम् अश्रुकलुषाम् राधिकाम् अनुगच्छतः तत्पादप्रतिमानिवेशितपदस्य उद्भूतरोमोद्गतैः प्रसन्नदयिताद्दृष्टस्य कंसद्विषः अक्षुण्णः अनुनयः वः पुष्णातु ॥ २ ॥

कालिन्द्या इति। कालिन्द्याः=यमुनायाः ('कालिन्दी सूर्यतनया यमुने'त्यमरः) (यमुना के)। पुलिनेषु=तोयोत्थितसैकतप्रदेशेषु (तोयोत्थितं तत्पुलिनम्)। (जल से उठी बालू वाले प्रदेशों में)। रासे=गोपक्रीडा विशेषे ('रासो विदग्धगोष्ठ्यां च क्रीडायामपि गोदुहाम्' इति विश्वः।) (ग्वालों के रास में)। रसम्=रागम् ('रसः स्वादे जले रागे' इति हैमः) (अनुराग को)। उत्सृज्य=

और भी—

कालिन्दी के कछारों में रास के आनन्द को छोड़कर (क्रुद्ध होकर) जाती हुई केलिकुपिता, अश्रुमुखमलिना राधिका के पीछे २ जाते हुए, उस (राधिका) के चरण-चिह्नों

तत्पादप्रतिमानिवेशितपदस्योद्भूतरोमोद्गते-
रक्षुण्णोऽनुनयः प्रसन्नदयिताहृष्टस्य पुष्णातु वः ॥ २ ॥

अपि च—

दृष्टः सप्रेम देव्या किमिदमिति भयात्सम्भ्रमाच्चासुरीभिः
शान्तान्तस्तत्त्वसारैः सकरुणमृषिभिर्विष्णुना सस्मितेन ।

विहाय (त्यागकर)। गच्छन्तीम् = प्रयान्तीम् (जाती हुई)। केलिकुपिताम्— केल्यां कुपिता, ताम् = क्रीडा-क्रोधवतीम् (खेल में क्रुद्ध हुई)। अश्रुकलुषाम्— अश्रुभिः कलुषा, ताम् = नयनवारिमलिनाम्, रुदतीमित्यर्थः (आँसुओं से मलिन बनी रोती हुई)। राधिकाम् = वृषभानुसुताम् (राधिका को)। अनुगच्छतः— अनु = पश्चात् गच्छतः = प्रस्थितस्य (पीछे-पीछे जाते हुए) तत्पादप्रतिमानिवेशित पदस्य—तस्याः पादौ, तत्पादौ, तयोः प्रतिमाः, तासु निवेशितम् पदं येन, तस्य = तच्चरणचिह्नधृतपदस्य (उस राधिका के चरण-चिह्नों पर पाँव रखने वाले)। उद्भूतरोमोद्गतेः—उद्भूता = उत्पन्ना रोम्णाम् = तनूरुहाणाम् उद्गतिः = ऊर्ध्वा-वस्थानम् यस्य सः, तस्य (उत्पन्न हुये रोमाञ्च वाले)। प्रसन्नदयिताहृष्टस्य— प्रसन्नश्चासौ दयिता, तया दृष्टस्तस्य = आनन्दितया प्रियतमया राधिकया अवलो-कितस्य (प्रसन्न राधिका के द्वारा अवलोकित)। कंसद्विषः—कंसं द्वेष्टीति, तस्य=कंसारेः कृष्णस्य (कंसारि कृष्ण का)। अक्षुण्णः=अखण्डितः (सम्पूर्ण)। अनुनयः = समाराधनम् (प्रार्थना या आराधना)। वः = युष्मान् सामाजिकान् (तुम सबको) पुष्णातु = पुष्टान् करोतु (पुष्ट करे)। अत्र प्रथमार्द्धे श्लोके द्रौपद्याः कोपरोदनेन, उत्तरार्द्धे च भीमकृतानुनय-सूचनया प्रेयोऽलङ्कारः। शार्दूल-विक्रीडितं वृत्तम्। तद्यथा—सूर्याश्वैर्मसजस्ततः सगुरवः शार्दूलविक्रीडितम्' इति लक्षणात् ॥ २ ॥

अन्वयः—मयपुरदहने देव्या सप्रेम दृष्टः आसुरीभिः किम् इदम् इति भयात् सम्भ्रमात् च शान्तान्तस्तत्त्वसारैः ऋषिभिः सकरुणम् विष्णुना सस्मितेन उपश-

---

में पाँव रखकर चलते हुए, रोमाञ्चित शरीर तथा प्रियतमा-राधिका के द्वारा प्रसन्न दृष्टि से देखे जाने वाले, कंस-शत्रु कृष्ण का अक्षुण्ण अनुरोध तुम सब सामाजिकों की पुष्टि करे ॥ २ ॥

और भी—

मय दानव द्वारा निर्मित (त्रिपुरासुर के) नगर को दहन करते समय देवी उमा ने

आकृष्यास्त्रं सगर्वैरुपशमितवधूसंभ्रमैर्दैत्यवीरैः
सानन्दं देवताभिर्मयपुरदहने धूर्जटिः पातु युष्मान् ॥ ३ ॥

मितवधूसम्भ्रमैः सगर्वैः दैत्यवीरैः अस्त्रम् आकृष्य देवताभिः सानन्दम् धूर्जटिः युष्मान् पातु ॥ ३ ॥

दृष्ट इति । मयपुरदहने—मयेन निर्मितं पुरं मयपुरम्, तस्य दहने = मायासुरनगरदाहे (मय नामक दैत्य के नगर को जलाने के अवसर पर)। देव्या = पार्वत्या (देवी पार्वती के द्वारा)। सप्रेम—प्रेम्णा सहितं सप्रेम = सस्नेहम् (सप्रेम)। दृष्टः = अवलोकितः (देखे गये)। असुरीभिः = दैत्यस्त्रीभिः (असुरनारियों द्वारा) किम् इदम्=एतत्किम् इति (यह क्या है—इस प्रकार)। भयात्=त्रासात् (डर से) सम्भ्रमात् च=उद्वेगाच्च (घबराहट से) (दृष्टः)। शान्तान्तस्तत्त्वसारैः—शान्तम् अन्तस्तत्त्वम् एव सारो येषां, तैः = शमितान्तःकरणधनैः वीतरागैः ऋषिभिः = मुनिभिः (शान्त हृदयधन मुनियों के द्वारा) सकरुणम्—करुणया सहितम् = सदयम् (दृष्टः)। विष्णुना = हरिणा (भगवान् विष्णु द्वारा)। सस्मितेन = ईषद्हास्य-सहितेन (मुस्कुराहट से) (दृष्टः)। उपशमितवधूसम्भ्रमैः—उपशमितः = दूरीकृतः वधूनाम्=स्वपत्नीनाम् सम्भ्रमः= उद्वेगो यैः तादृशैः (अपनी स्त्रियों के उद्वेग को शान्त करने वाले)। सगर्वैः = साभिमानैः (अभिमानयुक्त)। दैत्यवीरैः = असुरशूरैः ('शूरो वीरश्च विक्रान्तः' इत्यमरः) (असुरवीरों के द्वारा)। अस्त्रम् = आयुधम् (हथियार)। आकृष्य = उद्यम्य (खींचकर) (दृष्टः)। देवताभिः = सुरैः (देवताओं के द्वारा)। सानन्दम् = सहर्षम् (दृष्टः), धूर्जटिः = शङ्करः ('धूर्जटिर्नीललोहितः। हर स्मरहरः' इत्यमरः) (शिवजी), युष्मान् = सर्वान् सभ्यान् (आप सब सभासदों को)। पातु = रक्षतु (रक्षा करें)। स्रग्धरावृत्तम्। तद्यथा—म्रभ्नैर्यानां त्रयेण त्रिमुनियतियुतं स्रग्धरा कीर्तितेयम् ॥ ३ ॥

जिन धूर्जटि (शिव) को सप्रेम, राक्षसियों ने—यह क्या है !—इस प्रकार भय से, तथा उद्वेग के साथ, शान्त हृदय-धन ऋषियों के द्वारा करुणा सहित, भगवान् विष्णु के द्वारा मुस्कराते हुए, उद्वेग युक्त अपनी पत्नियों को शान्त करने वाले सगर्व दानव वीरों द्वारा अस्त्र खींचकर युद्धोद्यत दृष्टि से तथा देवताओं द्वारा जिन्हें सानन्द देखा गया, वह धूर्जटि शिव आप सभी सामाजिकों की रक्षा करें ॥ ३ ॥

(नान्द्यन्ते)

सूत्रधारः—अलमतिप्रसङ्गेन ।

श्रवणाञ्जलिपुटपेयं विरचितवान्भारताख्यममृतं यः ।
तमहमरागमकृष्णं कृष्णद्वैपायनं वन्दे ॥ ४ ॥

(नान्द्यन्ते = नान्द्याः अवसाने)

सूत्रधारः—अतिप्रसङ्गेन = अतिविस्तरेण । अलम् निषेधोऽव्ययम् । काव्यार्थस्य शीघ्रं कर्तव्यतयाऽन्यानि अप्रयोजनीयानि नाटचाङ्गानि निषिद्धानीत्यर्थः ।

अन्वयः—यः श्रवणाञ्जलिपुटपेयम् भारताख्यम् अमृतम् विरचितवान्, तम् आरागम् अकृष्णम् कृष्णद्वैपायनम् अहम् वन्दे ॥ ४ ॥

श्रवणाञ्जलिरिति । यः = कृष्णद्वैपायनः (जिन कृष्णद्वैपायन ने) । श्रवणाञ्जलिपुटपेयम्—श्रवणे एवाञ्जलिपुटम्, तेन पेयम् = कर्णहस्तसम्पुटश्राव्यम् (कान रूपी अञ्जलि पुट से पीने योग्य) । भारताख्यम् = महाभारतनामकम् (महाभारत संज्ञक) । अमृतम् = सुधासदृशम् (अमृत जैसा) । विरचितवान् = निर्मितवान् (बनाया) तम् = तथाविधम् (उन) । अरागम् = रजोगुणरहितम् (राग, रजोगुण रहित) अकृष्णं—न कृष्णः अकृष्णस्तम् = तमोरहितम् (तमो-

---

(नान्दी पाठ के अनन्तर)

सूत्रधार—बस, अधिक विस्तार की आवश्यकता नहीं है ।

जिन कृष्ण द्वैपायन व्यास ने कर्णछिद्र रूपी अञ्जलि-पुट द्वारा पीने योग्य महाभारत नामक अमृत (ग्रन्थ) की रचना की, उन अनुराग (रजोगुण) रहित तमोगुण रहित (कृष्ण द्वैपायन) वेदव्यास को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ ४ ॥

टिप्पणी—नान्दी—आशीर्वचनसंयुक्ता स्तुतिर्यस्मात्प्रयुज्यते ।
देवद्विज-नृपादीनां तस्मान्नान्दीति संज्ञिता ॥ (साहित्यदर्पण)

अर्थात्, नाटक के जिस आरम्भिक भाग में आशीर्वादात्मक वचनों द्वारा देवताओं ब्राह्मणों तथा राजाओं आदि की स्तुति की जाती है, उसे नाट्यशास्त्र में नान्दी कहा जाता है । इस नान्दी-पाठ का कर्त्ता सूत्रधार कहलाता है ।

सूत्रधार—नाट्योपकरणादीनि सूत्रमित्यभिधीयते ।
सूत्रं धारयतीत्यर्थे सूत्रधारो निगद्यते ॥ (साहित्यदर्पण)

नाटक आरम्भ करने के सम्बन्धित उपकरणों को सूत्र कहा जाता है । इस प्रकार उसको धारण करने (नाटक का आरम्भ करने) वाले व्यक्ति को नाट्यशास्त्र में सूत्रधार संज्ञा दी जाती है । नान्दी पाठ की विधि के विषय में—'सूत्रधारः पठेदेनां मध्यमं स्वरमाश्रितः ।' का विधान है । तदनुसार सूत्रधार को मध्यम स्वर द्वारा नान्दी-पाठ करना चाहिये ।

(समन्तादवलोक्य) तत्र भवतः परिषदग्रेसरान्विज्ञाप्यं नः किंचिदस्ति ।

कुसुमाञ्जलिरपर इव प्रकीर्यते काव्यबन्ध एषोऽत्र ।
मधुलिह इव मधुबिन्दून्विरलानपि भजत गुणलेशान् ॥ ५ ॥

गुण रहित)। अकृष्णद्वैपायनम्—द्वीपम् अयनम् = जन्मभूमिर्यस्य सः द्वीपायनः, द्वीपायन एव द्वैपायनः, कृष्णश्चासौ द्वैपायनस्तम् = व्यासम् । कृष्णवर्णत्वात्कृष्ण इति विशेषणम् (कृष्णद्वैपायनव्यास को)। अहम्=सूत्रधारः (मैं सूत्रधार स्थापक)। वन्दे = नौमि (प्रणाम करता हूँ)। परम्परितरूपकालङ्कारः । आर्यावृत्तम् । तद्यथा—यस्याः पादे प्रथमे द्वादश मात्रा तथा तृतीयेऽपि । अष्टादश द्वितीये चतुर्थे तु पञ्चदश साऽऽर्या ॥ ४ ॥

समन्तात् = परितः (चारों ओर)। अवलोक्य = दृष्ट्वा (देखकर)। तत्र-भवतः = पूज्यान् (आप पूजनीयों को) परिषदग्रेसरान् = संसत्पुरःसरान् (सभासद् महानुभावों को)। नः = अस्मान् (हमें) किञ्चिद् = किमपि (कुछ)। विज्ञाप्यम् = प्रार्थनीयम् (निवेदनीय) अस्ति = वर्तते (है) :—

अन्वयः—एषः काव्यबन्धः अपरः कुसुमाञ्जलिः इव प्रकीर्यते, अत्र मधुलिहः मधुबिन्दून् इव (यूयम्) विरलान् अपि गुणलेशान् भजत ॥ ५ ॥

कुसुमाञ्जलीति । एषः=अयम् (यह) काव्यबन्धः = काव्यरचना वेणीसंहार-नाटकम् (वेणीसंहारनाटक) अपरः = अन्यः (दूसरी)। कुसुमाञ्जलिरिव = पुष्पाञ्जलिः इव (पुष्पाञ्जलि के समान) प्रकीर्यते = विस्तार्यते (बिखेरी जा रही है)। अत्र = अस्मिन् वेणीसंहारनाटके (इसमें)। मधुलिहः = भ्रमराः (भौंरे)। मधुबिन्दून् इव = यथा मधुकणान् (जैसे मधुबिन्दुओं को) (भजन्ति)। यूयम् = अत्रत्याः सभ्याः (आप सभाजन) विरलान् अपि = अल्पान् अपि (स्वल्पों को भी)। गुणलेशान् = गुणकणान् (गुणलेशों को) भजत = सेवध्वम् (सेवन करें)। अत्रोत्प्रेक्षापूर्णोपमयोः संसृष्टिः । आर्या-वृत्तम् ॥ ५ ॥

(चारों ओर देखकर) हमें आप माननीय सभासदों से कुछ निवेदन करना है—

यह वेणीसंहार नामक काव्य (नाटक) रचना दूसरी पुष्पाञ्जलि के समान उपस्थित की जा रही है। जिस प्रकार भौंरे मधुकणों का आस्वादन करते हैं उसी प्रकार आप सब सभाजन उसके लेश मात्र गुणों का आस्वादन करें ॥ ५ ॥

यदिदं कवेर्मृगराजलक्ष्मणो भट्टनारायणस्य कृतिं वेणीसंहारनामकनाटकं प्रयोक्तुमुद्यता वयम्। तदत्र कविपरिश्रमानुरोधाद्वा उदात्तवस्तुकथागौरवाद्वा नवनाटकदर्शनकुतूहलाद्वा भवद्भिरवधानं दीयमानमभ्यर्थये।

यदीति। इदम्=एतत् अग्रे विधास्यमानम् (यह)। मृगराजलक्ष्मणः—मृगेणराजते यः सः, मृगराजः=चन्द्रः, तद्वाचकः द्विजराजशब्दः तत्र द्विजराजोपाह्वः इत्यर्थः। अथवा मृगराज इत्यानुपूर्व्यवच्छिन्नं लक्ष्म=लक्ष्मणं यस्य सः, तस्य=मृगराजोपाधिधारकस्य (मृगराजोपाधिधारक की) भट्टनारायणस्य कवेः भट्टनारायणनाम्नः सूरेः (भट्टनारायण कवि की)। अभिनवाम्=नूतनाम् (नवीन)। कृतिम्=रचनाम् (रचना को) वेणीसंहारं नाम नाटकम्। प्रयोक्तुम्=अभिनेतुम् (अभिनय करने को)। वयम्=सूत्रधारादयः (हम सूत्रधार आदि) उद्यताः=तत्पराः स्म (तैयार हैं)। तत् = अतः, अत्र=अस्मिन्नभिनये (इसमें)। कविपरिश्रमानुरोधाद्वा—कवेः=भट्टनारायणस्य परिश्रमे=नाटकनिर्माणश्रमे (कवि के नाटक निर्माणश्रम में) यो अनुरोधस्तस्मात्=अनुवर्तनात् (अनुरोध से) वा=अथवा। उदात्तकथावस्तुगौरवाद् वा—उदात्तम्=प्रशस्तम् यत् कथावस्तु=प्रबन्ध कथाभागः, तत्र गौरवम्=सम्मानम्, तस्मात् (प्रशंसनीय कथावस्तु के गौरव से)। अथवा। नवनाटकदर्शनकुतूहलात्—नवं यन्नाटकम्, तस्य दर्शनम्, तस्मिन्यत् कुतूहलं तस्मात्=नूतनरूपकावलोकनकौतुकात् (नवीन नाटक देखने में आश्चर्य से)। भवद्भिः=युष्माभिः (आप लोगों द्वारा) अवधानम्=एकचित्तताम् (ध्यान) दीयमानम्=विधीयमानम् (करने को) अभ्यर्थये=प्रार्थये (मैं निवेदन करता हूँ)।

तो मृगराज उपाधिधारी कवि भट्टनारायण की रचना वेणीसंहार नामक नाटक का अभिनय करने के लिए हम सब तैयार हैं। अतः इसमें कवि परिश्रम के अनुरोध से या उदात्त कथावस्तु होने के गौरव से अथवा नवीन नाटक देखने के कौतूहल से आपलोगों के द्वारा ध्यान दिये जाने (सावधान होकर देखने) के लिए प्रार्थना है।

टिप्पणी—नाटक—दृश्य काव्य के अन्तर्गत नाटक का लक्षण साहित्यदर्पणकार कविराज विश्वनाथ ने इस प्रकार लिखा है—

नाटकं ख्यातवृत्तं स्यात्पञ्चसन्धिसमन्वितम्।
पञ्चादिकादशपरास्तत्राङ्काः परिकीर्तिताः॥
प्रख्यातवंशो राजर्षिर्धीरोदात्तः प्रतापवान्।
दिव्योऽथ दिव्यादिव्यो वा गुणवान्नायको मतः॥
एक एव भवेदङ्गी शृङ्गारो वीर एव वा॥

(नेपथ्ये ।)

भाव ! त्वर्यताम्, त्वर्यताम् । एते खल्वार्यविदुराज्ञया पुरुषाः सकलमेव शैलूषजनं व्याहरन्ति—'प्रवर्त्यन्तामपरिहीयमानमातोद्यविन्यासादिका विधयः । प्रवेशकालः किल तत्रभवतः पराशर्यनारदतुम्बुरुजामदग्न्य-प्रभृतिभिर्मुनिवृन्दारकैरनुगन्यमानस्य भरतकुलहितकाम्यया स्वयं प्रति-

नेपथ्ये = वेशरचना-स्थले (नेपथ्य में)। 'नेपथ्यं रङ्गभूमौ स्यान्नैपथ्यं तु प्रसाधने' इति विश्वः ।

भाव इति । भाव = मान्य । त्वर्यताम् = शीघ्रता क्रियताम् । द्विवचनमति-शीघ्रताद्योतकम् (शीघ्रता कीजिये, शीघ्रता कीजिये)। एते = इमे (यह)। खलु = नूनम् (निश्चय ही) आर्यविदुराज्ञया = श्रीमद्विदुरादेशेन (आर्यविदुर की आज्ञा से)। पुरुषाः = जनाः (लोग) सकलम् = सम्पूर्णम् एव शैलूषजनम् = नट समुदायम् (नट समुदाय को) व्याहरन्ति = कथयन्ति (कह रहे हैं)। अप-रिहीयमानम् = अपरित्यज्यमानम् (विना कुछ छोड़े) आतोद्यविन्यासादिकाः— आतोद्यानाम् = वीणादिवाद्यानाम् विन्यासः = सन्निवेशः आदौ येषां ते (वीणा आदि वाद्यों के समावेश वाली)। विधयः=प्रकाराः (विधियाँ) (चतुर्विधमिदं वाद्यं वादित्रातोद्यनामकम्' इत्यमरः), प्रवर्त्यन्ताम्=क्रियन्ताम् (की जायें)। पाराशर्य-नारद-तुम्बरु-जामदग्न्य-प्रभृतिभिः—पाराशर्यः = व्यासः, नारदतुम्बरू = तदभिधौ मुनिविशेषौ जामदग्न्यः = परशुरामः, प्रभृतयो येषां तैः । एभिर्मुनिवृन्दा-

(नेपथ्य में)

हे भाव ! (आदरणीय) शीघ्रता कीजिये, शीघ्रता कीजिये । वास्तव में ये राज-पुरुष (सिपाही) श्रीमान् विदुर की आज्ञा से सभी नाटक पात्रों (नटों) से कह रहे हैं— आतोद्य विन्यासादि चारों प्रकारों की वाद्य वादन की विधियाँ बिना किसी त्रुटि के प्रारम्भ कर दी जायें निश्चित रूप से व्यास-नारद-तुम्बरु-परशुरामादि श्रेष्ठ मुनियों को साथ में लिये

टिप्पणी—नेपथ्य—"कुशीलव कुटुम्बस्य स्थली नेपथ्यमिष्यते" । (अथवा) "नेपथ्यं रङ्गभूमिः स्यात् नेपथ्यं तु प्रसाधने ।" इति विश्वः ।। नेपथ्य रङ्गमञ्च का पर्दे के पीछे का वह भाग कहलाता है जहाँ पर नाटक के पात्र अपना वेश आदि परिवर्तन करते हैं ।

आतोद्यविन्यासादि—बाजों के चार प्रकार के समूह का नाम आतोद्य है। वे चार प्रकार हैं—१. रगड़ कर बजाये जाने वाला वाद्य, यथा—वीणा । २. पीट कर बजाने वाला वाद्य, यथा—ढोल-नगाड़ा । ३. फूँक कर बजाने वाला वाद्य, यथा—वंशी, शहनाई । ४. परस्पर लड़ाकर बजाया जाने वाला वाद्य, यथा—झांझ मजीरा ।

पन्नदौत्यस्य देवकीसूनोश्चक्रपाणेर्महाराजदुर्योधनशिविरसंनिवेशं प्रति प्रस्थातुकामस्य' इति।

सूत्रधारः—(आकर्ण्य सानन्दम्) अहो नु खलु भोः, भगवता सकलजगत्प्रभवस्थितिनिरोधप्रभविष्णुना विष्णुनाद्यानुगृहीतमिदं भरतकुलं सकलं राजचक्रमनयोः कुरुपाण्डवराजपुत्रयोराहवकल्पान्तानलप्रशमहेतुना

रकैः = मुनिसमूहैः (व्यास, नारद, तुम्बुरु, परशुरामादि मुनिवृन्दों द्वारा)। अनुगम्यमानस्य=अनुयातस्य। (पीछे-पीछे चलने वाले) भरतकुलहितकाम्यया=युधिष्ठिरवंशहितेच्छया (युधिष्ठिरादि के वंश की हितकामना से) स्वयम् = आत्मनः (अपने आप) प्रतिपन्नदौत्यस्य—दूतस्य कर्म दौत्यः प्रतिपन्नं दौत्यं येन तस्य (दूतकर्म को अङ्गीकार किये हुये)। देवकीसूनोः = देवकीनन्दनस्य (देवकी नन्दन)। तत्रभवतः = पूज्यस्य (पूजनीय)। देवस्य भगवतः चक्रपाणेः—चक्रं पाणौ यस्य सः, तस्य = चक्रिणः (चक्रधारी भगवान् कृष्ण के)। महाराज-दुर्योधन-शिविर-सन्निवेशं प्रति—महाराजश्चासौ दुर्योधनः, महाराजदुर्योधनः, तस्य शिविरम् = पटगृहम् तस्य सन्निवेशम् = स्थितिस्तं प्रति (महाराज दुर्योधन के शिविर की ओर)। प्रस्थातुकामस्य = प्रयाणेच्छुकस्य (प्रस्थान करने के इच्छुक)। किल = नूनम् (अवश्य ही) प्रवेशकालः = आगमनसमयः (प्रवेश करने का समय है)।

सूत्रधारः—आकर्ण्य = श्रुत्वा (सुनकर)। सानन्दम् = आनन्देन सहितम् (आनन्द सहित)। अहो = आश्चर्यम्। नु खलु=नूनम् (अवश्य ही)। जगत्प्रभव-स्थिति-निरोध-प्रभविष्णुना—जगतः=पूर्णसंसारस्य प्रभवः = उत्पत्तिः स्थितिः = अवस्थानम् निरोधः=संहारश्च तत्र यः प्रभविष्णुस्तेन (संसार के उत्पत्ति रक्षण तथा संहार में समर्थ)। विष्णुना = नारायणेन (भगवान् विष्णु के द्वारा)। अद्य = अस्मिन् काले (आज) इदम्=एतत् (यह)। सकलम्=निखिलम् (सम्पूर्ण)। भरतकुलम्=कुरुकुलम् (कौरव-पाण्डवों का वंश)। तथा। राजचक्रम् = राज-

---

हुए युधिष्ठिर के वंश की हितकामना से स्वयम् दूतकार्य को स्वीकार करने वाले महाराज दुर्योधन के शिविर स्थान के प्रति प्रस्थान करने के इच्छुक श्रीदेवकीनन्दन चक्रपाणि कृष्ण के आने का समय है।

सूत्रधार—(सुनकर, आनन्द सहित) अरे ओ। सम्पूर्ण संसार की उत्पत्ति, पालन तथा संहार करने में समर्थ इन कौरव तथा पाण्डव राजकुमारों के युद्ध-रूपी प्रलयानल के

स्त्रयं सन्धिकारिणा कंसारिणा दूतेन। तत्किमिति पारिपार्श्विक, नारम्भयसि कुशीलवैः सह संगीतमेलकम्।

(प्रविश्य)

पारिपार्श्विकः—भवतु। आरम्भयामि। कतमं समयाश्रित्य गीयताम्।

संघः (राजाओं का समूह)। अनयोः = एतयोः कुरुपाण्डवराजपुत्रयोः = कौरव-पाण्डव-राजकुमारयोः (इन दोनों कौरव तथा पाण्डव राजकुमारों के)। आहव-कल्पान्तानल-प्रशम-हेतुना—आहवः=युद्धम् एव कल्पान्तानलः = प्रलयवह्निः, तस्य प्रशमः=शान्तिः, तस्य हेतुः=कारणम् यः सः, तेन (युद्ध रूपी प्रलयाग्नि को शान्त करने के कारण स्वरूप)। स्वयम् = आत्मनः (अपने आप) सन्धिकारिणा = सन्धिकारकस्य (सन्धि कराने वाले)। कंसारिणा—कंसस्यारिस्तेन = कंस-वैरिणा (कंस के शत्रु कृष्ण)। दूतेन = सन्देशवाहकेन (दूत के द्वारा)। अनुगृहीतम् = कृपायुक्तं कृतम् (कृपा की हैं)। परिपार्श्विक ! = हे सूत्रधार, पार्श्ववर्त्तिन्। तत् = अतः (सो)। कुशीलवैः = नटैः सह = साकम् (नटों के साथ) सङ्गीतमेलकम्=गायनवादनम् (गाना बजाना) किमिति = कथम् (क्यों)। न। आरम्भयसि = प्रारम्भं करोषि (आरम्भ कर रहे हो)।

पारिपार्श्विकः—भवतु = अस्तु (अच्छा)। आरम्भयामि = प्रारम्भं करोमि। (आरम्भ कर रहा हूँ)। कतमम् समयम् = कतममृतुम् (किस मौसम को) आश्रित्य = अवलम्ब्य (सहारा लेकर) गीयताम् = गायनं क्रियताम् (गाया जाय)।

प्रशान्ति के कारण तथा स्वयं सन्धि कराने वाले कंस विनाशक दूत, भगवान् कृष्ण के द्वारा इस भरत कुल तथा राजसमूह को अनुगृहीत किया गया है। अतः हे परिपार्श्विक कुशीलवों (नटों) के साथ गाना बजाना आरम्भ क्यों नहीं करते हो।

(प्रवेशकर)

पारिपार्श्विक—खैर, आरम्भ करता हूँ। कौन सी ऋतु का गीत गाया जाय ?

टिप्पणी—पारिपार्श्विक—'भरतेनाभिनीतं यो भावं नानारसाश्रयम्। परिष्करोति पार्श्वस्थ, स भवेत्परिपार्श्विकः ॥' (श्रीकृष्ण कविः) अथवा "सूत्रधारगुणैश्चैव किञ्चिदूनैः समन्वितः। मध्यम प्रकृति स्तज्ज्ञैर्विज्ञेयः परिपार्श्विकः ॥ (भरतमुनि) ॥

अभिनय में सूत्रधार की सहायता करने वाले दूसरे पात्र (जो कि सदा उसके पास ही बने रहते हैं) परिपार्श्विक कहलाते हैं।

सूत्रधारः—नन्वमुमेव तावच्चन्द्रातपनक्षत्रग्रहक्रौञ्चहंससप्तच्छदकुमुद-कोकनदकाशकुसुमपरागधवलितदिङ्मण्डलं स्वादुजलजलाशयं शरत्-समयमाश्रित्य प्रवर्त्यतां संगीतकम्। तथा ह्यस्यां शरदि—

सत्पक्षा मधुरगिरः प्रसाधिताशा मदोद्धतारम्भाः।
निपतन्ति धार्तराष्ट्राः कालवशान्मेदिनीपृष्ठे ॥ ६ ॥

सूत्रधारः—ननु=खलु (अवश्य ही)। तावत् (तब तो)। चन्द्रातपनक्षत्र-कौञ्च-हंसकुल-सप्तच्छद-कुमुद-पुण्डरीक-काश-कुसुम-पराग-धवलित-गगनदिङ्मण्डलम् चन्द्रस्य=विधोः आतपेन=प्रकाशेन ('प्रकाशो द्योत आतप' इत्यमरः।) नक्षत्रैः =ग्रहैः, क्रौञ्चैः हंसकुलैः=मरालयूथैः सप्तच्छदानाम्=सप्तपर्णानाम् कुमुदानाम्, पुण्डरीकाणाम्=कमलानाम्, काशकुसुमानाम्=काशपुष्पणाम् परागैः=रजोभिः धवलितम्=शुभ्रीकृतं गगनस्य=आकाशस्य दिशाम्=काष्ठानाम् च मण्डलम् =वृत्तम् यस्मिंस्तत् (चन्द्रमा के प्रकाश, नक्षत्रों, क्रौञ्च तथा हंसकुलों से सप्तपर्ण, कुमुदिनी, कमल, व काश पुष्पों की पराग से धवलित आकाश तथा दिशामण्डल वाले)। स्वादु जलजलाशयम्—स्वादु=स्वादिष्टम् जलम्=वारि जला-शयेषु=तड़ागेषु यत्र तथा (मधुरजल के जलाशयों वाले)। शरत्कालम्=शर-दृतुम् (शरत्काल को)। आश्रित्य=अवलम्ब्य (सहारा लेकर)। संगीतकम् =गीतं वाद्यञ्च (गाना बजाना)। प्रवर्त्यताम्=प्रारभताम् (आरम्भ किया जाय)। तथा हि=यतो हि (क्योंकि)। अस्याम्=एतस्याम् (इस) शरदि=शरदृतौ (शरत्काल में)—

अन्वयः—सत्पक्षाः मधुरगिरः प्रसाधिताशाः मदोद्धतारम्भाः धार्तराष्ट्राः कालवशात् मेदिनीपृष्ठे निपतन्ति ॥ ६ ॥

सत्पक्षा इति। (शरत्पक्षे) सत्पक्षाः—सन्तः पक्षा येषां ते=शोभनपक्षयुक्ताः

सूत्रधार—तब तो वास्तव में इसी चन्द्रमा के प्रकाश नक्षत्रों, क्रौंच तथा हंस कुलों से और सप्तपर्ण कुमुद-कमल काशपुष्पों के परागों से धवलित गगन तथा दिशामण्डल वाले स्वादिष्ट जल-जलाशयों वाले शरत्काल का आश्रय लेकर संगीत प्रारम्भ किया जाय। क्योंकि इस शरद ऋतु में—

(शरत्पक्ष मे) सुन्दर पंखों वाले मधुर कलरव करने वाले, दिशाओं को शोभित करने वाले, अत्यन्त मतवाले कार्य करने वाले काली चोंच तथा काले चरणों वाले विशेष प्रकार के हंस धरातल पर उत्तर रहे हैं ॥ ६ ॥

(दुर्योधनादि पक्ष में) भीष्म द्रोणादि उत्तम सहयोगियों वाले, मिष्टभाषी, अपनी

पारिपार्श्विकः—(ससम्भ्रमम्) भाव शान्तं पापम् । प्रतिहतममङ्गलम् ।

सूत्रधारः—(सवैलक्ष्यस्मितम्) मारिष, शरत्समयवर्णनाशंसया हंसा धार्तराष्ट्रा इति व्यपदिश्यन्ते ।

(सुन्दर पंखों वाले) । मधुरगिरः—मधुराः = मृदुलाः गिरः = वाण्यो येषां ते (मृदुवाणीयुक्ताः) (मधुर वाणी वाले) । प्रसाधिताशाः—प्रसाधिताः = अलङ्कृताः आशा = दिशः यैस्ते (दिशाओं को अलङ्कृत करने वाले) । मदोद्धतारम्भाः = मदचञ्चलव्यापाराः (मद से चञ्चल व्यापार वाले) । धार्तराष्ट्राः = कृष्णचञ्चुचरणाः हंसविशेषाः (काली चोंच और काले चरणों वाले विशेष प्रकार के हंस) । कालवशात्—कालस्य = शरदृतोः वशात् (शरद् ऋतु के कारण) । मेदिनीपृष्ठे—मेदिन्याः = पृथिव्याः पृष्ठे = तले (भूतल पर) । निपतन्ति = अवतरन्ति (गिर रहे हैं, उतर रहे हैं) ॥ ६ ॥

(दुर्योधनादि पक्षे) सत्पक्षाः–सत् = श्रेष्ठः पक्षः येषां ते = श्रेष्ठसहाययुक्ताः (उत्तम पक्ष वाले) । मधुरगिरः = श्रवणप्रियाः भाषन्ते इति (मधुर भाषी) । प्रसाधिताशाः = प्रसाधिताः–प्रकर्षेण साधिताः = पूरिताः आशाः = कामनाः यैस्ते (बलात्कामनाओं को पूर्ण करने वाले) । मदोद्धतारम्भाः—मदेन = अहङ्कारेण उद्धताः = अतिशयोद्दण्डतायुक्ताः आरम्भाः = कार्याणि येषां ते, (अहंकार युक्तकार्यों वाले) । धार्तराष्ट्राः—धृतराष्ट्राज्जाताः = धृतराष्ट्र सुताः दुर्योधनादयः (धृतराष्ट्रपुत्र दुर्योधनादि) । कालवशात् = मृत्युवशात् (मृत्यु के वश में आकर) मेदिनी पृष्ठे = भूतले (पृथ्वी पर) निपतन्ति = पतनशीलाः भवन्ति (गिर रहे हैं) । अत्र श्लेषालङ्कारः । आर्यावृत्तम् ॥ ६ ॥

पारिपार्श्विकः—ससंभ्रमम्–भ्रमेण सहितम् (भ्रम के साथ) । भाव = श्रेष्ठ । पापम् = अघम् (पाप) । शान्तम् = समाप्तं भवतु (शान्त हो जाय) । अमङ्गलम् = अभद्रम् (अनिष्ट) प्रतिहतम् = नष्टम् भवतु (अकल्याण मिट जाये) ।

सूत्रधारः—सवैलक्ष्यम् = सविस्मयम् स्मितम्=मृदुहसितञ्च (सलज्ज मुस्करा

इच्छाओं को बलात् पूर्ण करने वाले, अहंकार से उद्दण्ड कार्य करने वाले धृतराष्ट्र के पुत्र दुर्योधनादि मृत्युवश होकर पृथ्वीतल पर गिर रहे हैं ॥ ६ ॥

पारिपार्श्विक—(भ्रमसहित) हे भाव ! पाप शान्त हो, अमङ्गल नष्ट हो ।

सूत्रधार—(विस्मय के साथ मुस्कराते हुये) मारिष (हे परिपार्श्विक !) शरत्काल

पारिपार्श्विकः—न खलु न जाने। किन्त्वमङ्गलाशंसयाऽस्य वो वचनस्य यत्सत्यं कम्पितमिव हृदयम्।

सूत्रधारः—मारिष ! ननु सर्वमेवेदानीं प्रतिहतममङ्गलं स्वयम्प्रतिपन्नदौत्येन सन्धिकारिणा कंसारिणा। यथा हि—

कर) मारिष=सूत्रधार कृत सम्बोधनम् (हे मारिष) शरत्समयवर्णनाशंसया—शरत्समयस्य=शरदृतोः वर्णनस्य=आख्यानस्य आशंसा=इच्छा, तया (शरदृतु के वर्णन की इच्छा से)। हंसाः=मरालाः (हंस) धार्तराष्ट्रा इति=धार्तराष्ट्र पदेन व्यपदिश्यन्ते=व्यवह्रियन्ते (धार्तराष्ट्र के नाम से पुकारे जा रहे हैं।) तत्=अतः। किम्=किमर्थम् (किसलिये)।

पारिपार्श्विकः—न खलु=निश्चयेन, नैव (निश्चय ही, नहीं,) न जाने=न वेद्मि (नहीं जानता हूँ) किन्तु=किञ्च (पर)। अमङ्गलाशंसया=अकल्याणेच्छया (अमंगल की कामना से) वः=युष्माकम् (आपके)। अस्य=एतस्य वचनस्य (इस वचन का) यत् सत्यम्=तथ्यम् (जो सचमुच है) (तो) मे=ममपरिपार्श्विकस्य (मेरा) हृदयम्=चेतः (हृदय) कम्पितमिव=यथा कम्पमानं भवति (मानों काँप-सा रहा है)।

सूत्रधारः—मारिष=अयि परिपार्श्विक ! ननु=खलु (वास्तव में) इदानीम्=साम्प्रतम् (इस समय)। सर्वम् एव=सम्पूर्णम् (समस्त ही) अमङ्गलम्=अभद्रम् (अशुभ) स्वयम्=आत्मनः (अपने आप) प्रतिपन्नदौत्येन=दूतकर्मणो भावो दौत्यम्, प्रतिपन्नं दौत्यम् तेन=सम्पादित-दूतकर्मणा (दूत कर्म करने वाले) सन्धिकारिणा=सौहार्द्रकर्त्रा (सन्धि कराने वाले) कंसारिणा—कंसस्य=कंसाभिधस्य नृपस्यारिः=रिपुस्तेन (कंस के शत्रु कृष्ण के द्वारा) प्रतिहतम्=नाशितम् (नष्ट कर दिया गया)।

के वर्णन की इच्छा से हंसों को 'धार्तराष्ट्र' पद से पुकारा जा रहा है। तो फिर 'पाप शान्त हो,' 'अमङ्गल नष्ट हो' ऐसा क्यों कह रहे हो।

पारिपार्श्विक—भाव ! वास्तव में मैं आपके भाव को नहीं जानता हूँ किन्तु तुम्हारे इस अमङ्गल की कामना से मेरा हृदय काँप सा रहा है।

सूत्रधारः—मारिष ! वास्तव में अब तो सम्पूर्ण अमङ्गल स्वयम् दूतकर्म करने वाले, सन्धि कराने वाले कंसारि-कृष्ण ने नष्ट कर दिया है। फिर भी—

निर्वाणवैरदहनाः प्रशमादरीणां
नन्दन्तु पाण्डुतनयाः सह माधवेन ।
रक्तप्रसाधितभुवः क्षतविग्रहाश्च
स्वस्था भवन्तु कुरुराजसुताः सभृत्याः ॥ ७ ॥

(नेपथ्ये । साधिक्षेपम्)

आः दुरात्मन् वृथामङ्गलपाठक शैलूषापसद—

अन्वयः—अरीणाम् प्रशमात् निर्वाणवैरदहनाः पाण्डुतनयाः माधवेन सह नन्दन्तु रक्तप्रसाधितभुवः क्षतविग्रहाः च सभृत्याः कुरुराजसुताः स्वस्थाः भवन्तु ॥ ७ ॥

निर्वाणेति । अरीणाम् = रिपूणाम् (शत्रुओं के) । प्रशमात् = विनाशात् (विनाश से) । निर्वाणवैरदहनाः—निर्वाणः = शान्तिमापन्नः वैरमेव दहनः = शत्रुतारूपाग्निः येषां ताद्दशाः (शत्रु रूपाग्नि से शान्त) । पाण्डुतनयाः युधिष्ठिरादयः (पाण्डुपुत्र युधिष्ठिर आदि) माधवेन सह = कृष्णेन साकम् (कृष्ण के साथ) । नन्दन्तु = प्रसन्नाः भवन्तु (प्रसन्न होवें) । रक्तप्रसाधितभुवः—रक्तेन = शोणितेन प्रसाधिताः = अलङ्कृताः भूः येषाम् ताद्दशाः (रक्तरञ्जित भूमि वाले) क्षतविग्रहाः = नष्टाकृतयः (नष्टस्वरूप वाले) सभृत्याः = सपरिजनाः (सेवकों सहित) । कुरुराजसुताः = कुरुनन्दनाः दुर्योधनादयः (दुर्योधनादि कौरव) । स्वस्थाः = सकुशलिनः (स्वस्थ, प्रसन्न) भवन्तु = स्युः (होवें) । वसन्ततिलका वृत्तम् । तद्यथा—उक्ता वसन्ततिलका तभजाजगौगः ॥ ७ ॥

साधिक्षेपम्—अधिक्षेपेण सहितं = सतिरस्कारम् (तिरस्कारपूर्वक) । आः पाप = अयि पापिष्ठ ! (अरे पापी) । दुरात्मन्—दुष्ट आत्मा यस्य सः, तत्सम्बोधने (रे दुष्ट) । वृथामङ्गलपाठक = व्यर्थमङ्गलपाठकारक (वेकार मंगल पाठ करने वाले) शैलूषापसद—शैलूषेषु = नटेषु अपसदः = नीचस्तत्सम्बुद्धौ (अरे नीच नट) ।

शत्रुओं के विनाश से समाप्त हुए वैर रूपी अग्नि वाले युधिष्ठिरादि पाण्डव माधव सहित प्रसन्न होवें तथा जिनके रक्त से भूमि अलङ्कृत हुई है ऐसे नष्ट आकार वाले दुर्योधनादि कौरव भृत्य वर्ग सहित स्वस्थ होवें ॥ ७ ॥

(नेपथ्य में तिरस्कार सहित)

अरे पापी ! दुरात्मन् ! व्यर्थ मङ्गलपाठक ! नीच नट !

लाक्षागृहानलविषान्नसभाप्रवेशैः
प्राणेषु वित्तनिचयेषु च नः प्रहृत्य।
आकृष्यपाण्डववधूपरिधानकेशान्
स्वस्था भवन्ति मयि जीवति धार्तराष्ट्राः ॥ ८ ॥

(सूत्रधारपार्श्विकावाकर्णयतः)

पारिपार्श्विकः—भाव, कुत एतत्।

अन्वयः—लाक्षागृहानलविषान्नसभाप्रवेशैः नः प्राणेषु वित्तनिचयेषु च प्रहृत्य पाण्डववधूपरिधानकेशान् आकृष्य धार्तराष्ट्राः मयि जीवति स्वास्थाः भवन्ति ॥ ८ ॥

लाक्षेति। लाक्षागृहाऽनलविषान्नसभाप्रवेशैः—लक्षायाः = लाक्षारसस्य गृहम् = सदनम्, तस्मिन् अनलः (लाक्षागृह में लगी हुई आग) विषान्नम्—विषेण = गरलेन सम्पृक्तम् अन्नम् = भोज्यम् (विष युक्त भोजन) सभाप्रवेशः—सभायां = समितौ प्रवेशश्च, तैः (सभा में प्रवेश आदि कार्यों द्वारा)। नः=अस्माकम् (हमारे) प्राणेषु = जीवेषु, वित्तनिचयेषु–वित्तानां=धनानाम् निचयाः=संग्रहास्तेषु च। धन-संग्रह कार्यों में) प्रहृत्य = प्रकर्षेण हृत्वा = विशेषेण प्रहारं कृत्वा (विशेष रूप से प्रहार करके) पाण्डववधूपरिधानकेशान्—पाण्डववध्वा = द्रौपद्याः परि-धानम् = वस्त्रम् केशाश्च तान् (पाण्डववधू द्रौपदी के वस्त्रों तथा केशों को) आकृष्य = हृत्वा (खींचकर)। धार्तराष्ट्राः = धृतराष्ट्रजाताः दुर्योधनादयः (धृत-राष्ट्रपुत्र दुर्योधनादि)। मयि = भीमे जीवति = जीवनधृते सति (मेरे जीवित रहते)। स्वस्थाः = सकुशलाः। भवन्ति = भविष्यन्ति इति। वसन्ततिलका-वृत्तम् ॥ ८ ॥

आकर्णयतः = शृणुतः (दोनों सुनते हैं)।

पारिपार्श्विकः—भाव = मान्य ! कुतः = कस्मात्स्थानात् (कहाँ से) एतत् = इदम् (यह)।

लाक्षागृह के अग्नि-काण्ड, विषयुक्त भोजन, सभा में द्रौपदी के वस्त्रों व केशों को खींचना आदि भयङ्कर कार्य करके हम लोगों के प्राणों तथा जुआ आदि क्रियाओं द्वारा धन-संग्रह पर आक्रमण करके, मेरे जीवित होते हुए धृतराष्ट्र पुत्र दुर्योधनादि स्वस्थ रह सकेंगे ?

(सूत्रधार और पारिपार्श्विक सुनते हैं)

पारिपार्श्विक—भाई ! यह कहाँ से...।

सूत्रधारः—(पृष्ठतो विलोक्य) अये, एष खलु वासुदेवगमनात्कुरुसन्धानममृष्यमाणः पृथुललाटतटघटितविकटभृकुटिना दृष्टिपातेनापिबन्निव नः सर्वान्सहदेवेनानुगम्यमानः क्रुद्धो भीमसेन इत एवाभिवर्तते । तन्न युक्तमस्य पुरतः स्थातुम् । तदित आवामन्यत्र गच्छावः ।

(इति निष्क्रान्तौ ।)

प्रस्तावना

सूत्रधारः—अये=अयि (अरे)। एषः=अयम् (यह), खलु=नूनम् (निश्चय ही), वासुदेवगमनात्—वासुदेवस्य=कृष्णस्य गमनम्=दौत्यकर्मनिमित्तप्रस्थानम्, तस्मात् (कृष्ण के दूत बनकर जाने से)। कुरुसन्धानम्—कुरुभिः=दुर्योधनादिभिः सन्धानम्=सन्धिकरणम्, अमृष्यमाणः=असहमानः (कौरवों से सन्धि सहन न करते हुये)। पृथुललाटतटघटितविकटभ्रकुटिना—पृथु च तल्ललाटतटम् पृथुललाटतटम्, तत्र घटिता विकटा भ्रकुटिर्यस्मिन् सः, तेन=विशालमस्तकरचितभ्रूभागेण (विस्तृत मस्तक पर खिचो विकट भ्रकुटि वाले) दृष्टिपातेन=अवलोकनेन (देखने से)। सहदेवानुगम्यमानः—सहदेवेन=माद्रीसुतेन अनुगम्यमानः=अनुक्रियमाणः (सहदेव के साथ आते हुए) नः=अस्माकम् सर्वान्=निखिलान् (हम सबको)। आपिबन् इव=आचामन् इव (पीते हुये जैसे)। क्रुद्धः=कुपितः (क्रुद्ध)। भीमसेनः=मध्यमपाण्डवः, इत एव अभिवर्तते=इत एव आगच्छति (इधर ही आ रहे हैं)। तत्=अतः । अस्य=एतस्य भीमस्य, पुरतः=सम्मुखम् (इनके सामने)। स्थातुम्=अवस्थातुम् (ठहरना)। युक्तं न=नोचितमस्ति (ठीक नहीं है)। इति=इत्थम् (इस प्रकार) निष्क्रान्तौ=निर्गतौ सूत्रधारपारिपार्श्विकौ (दोनों निकल जाते हैं)।

सूत्रधार--(पीछे की ओर देखकर) अरे ! यह क्या ! भगवान् श्रीकृष्ण के दौत्यकर्म द्वारा कौरवों से सन्धि को सहन न करते हुए चौड़े ललाट पर खिंची हुई भ्रकुटि वाले देखने मात्र से हम सब को पी जाते हुए जैसे, सहदेव के द्वारा अनुगमन किये जाते हुए क्रुद्ध भीमसेन इधर ही आ रहे हैं। इसलिए इनके सामने रहना उचित नहीं। अतः हम दोनों यहाँ से अन्यत्र जाते हैं।

(यह कहकर दोनों निकल जाते हैं।)

प्रस्तावना।

टिप्पणी—प्रस्तावना—नटी विदूषको वापि परिपार्श्विक एव वा।
सूत्रधारेण सहिताः संलापं यत्र कुर्वते ॥

(ततः प्रविशति सहदेवेनानुगम्यमानः क्रुद्धो भीमसेनः ।)

भीमसेनः—आः दुरात्मन् वृथामङ्गलपाठक शैलूषापसद ('लाक्षागृहानल–' १।८ इत्यादि पुनः पठति ।)

सहदेवः—(सानुनयम् ।) आर्य मर्षय मर्षय । अनुमतमेव नो भरतपुत्रस्यास्य वचनम् । पश्य । ('निर्वाणवैरदहनाः–' १।७ इति पठित्वाऽन्यथाऽभिनयति ।) निर्वाणवैरदहना इति यथार्थमेव। अभूताः कुरवः कज्जालं कृतवसुन्धराः क्षतशरीरास्च स्वर्गस्था भविष्यन्ति ब्रवीति।

तत इति । सहदेवेन = माद्रीसुतेन (माद्रीसुत सहदेव के द्वारा) । अनुगम्यमानः—अनु = पश्चात् गम्यमानः (अनुगमन किये जाते हुये) । क्रुद्धः = रुष्टः (क्रुद्ध) भीमसेनः = वृकोदरः (भीमसेन) प्रविशति = प्रवेशं करोति (प्रवेश करता हैं) ।

सहदेवः—सानुनयम् = नम्रता सहितम् (विनयपूर्वक) । आर्य = श्रेष्ठ मर्षय = क्षमस्व (क्षमा कीजिये) । अस्य भरतपुत्रस्य = एतस्य नटस्य (इस नट का) । वचनम् = कथनम् (वचन) नः = अस्माकम् (हमारे) । अनुमतम् एव = अभिमतम् एव (अनुकूल ही) । पश्य = अवलोकय (देखो) । पठित्वा = वाचयित्वा (पढ़कर) । अन्यथा = अन्यत् (अन्य प्रकार से) अभिनयति = अभिनयं करोति (अभिनय करने लगता है) ।

(तदनन्तर सहदेव के द्वारा अनुसरण किये जाते हुये क्रुद्ध भीमसेन प्रवेश करते हैं ।)

भीमसेन—अरे पापी ! दुरात्मन् ! व्यर्थ मंगलपाठकारी ! नीचनट ! ('लाक्षागृहानल०' इत्यादि पढ़ने लगता है) ।

सहदेव—(नम्रता के साथ) आर्य क्षमा करें, क्षमा करें । इस नट का कथन हम लोगों के अनुकूल ही है । देखो ('निर्वाणवैरदहनाः' इत्यादि पढ़ कर अन्य प्रकार का अभिनय करने लगता है ।)

चित्रैर्वाक्यैः स्वकार्योत्थैः प्रस्तुताक्षेपिभिर्मिथः ।
आमुखं तत्तुविज्ञेयं नाम्ना प्रस्तावनाऽपि सा ॥ (साहित्यदर्पण)

जिस नाटक भाग में नटी, विदूषक अथवा पारिपश्विक आदि विचित्र वाक्यों द्वारा प्रस्तुत नाट्य कार्य का संकेत करते हुये आपस में सूत्रधार सहित वार्तालाप करते हैं उसे आमुख अथवा प्रस्तावना कहा जाता है ।

भीमसेनः—(सोपालम्भम्) न खलु न खल्वमङ्गलानि चिन्तयितुमर्हन्ति भवन्तः कौरवाणाम् । सन्धेयास्ते भ्रातरो युष्माकम् ।

सहदेवः—(संरोषम् ।) आर्य,

धृतराष्ट्रस्य तनयान्कृतवैरान् पदे पदे ।
राजा न चेन्निषेद्धा स्यात्कः क्षमेत तवानुजः ॥ ९ ॥

भीमसेनः—एवमिदम् । अत एवाहमद्यप्रभृति भिन्नो भवद्भ्यः । पश्य ।

भीमसेनः—भवन्तः = यूयम् (आप लोग) । अमङ्गलानि = अभद्राणि (अकल्याणानि) अर्हन्ति=योग्या भवन्ति । ते = कौरवाः, सन्धेयाः=सन्धियोग्या (सन्धि करने योग्य) ।

सहदेवः—सरोषम्—सक्रोधम् (रोष सहित) आर्य,

अन्वयः—चेत् राजा निषेद्धा न स्यात् पदे पदे कृतवैरान् धृतराष्ट्रस्य तनयान् कः तव अनुजः क्षमेत ॥ ९ ॥

धृतराष्ट्रस्येति । चेत् = यदि । राजा = नृपः युधिष्ठिरः । निषेद्धा = निषेधकः (रोकने वाले) न स्यात् = न भवेत् (न होवें) (तर्हि) पदे-पदे = प्रतिपदे (कदम कदम पर) कृतवैरान्—कृतम् = विहितम् वैरम् = शत्रुत्वम् यैस्ते तान् (शत्रुता बनाये हुये) धृतराष्ट्रस्य तनयान् = धृतराष्ट्रसुतान् (धृतराष्ट्र के पुत्रों दुर्योधनादि को) कः = को नु (कौन) तव = ते (तुम्हारा) अनुजः = लघुभ्राता (छोटा भाई) । क्षमेत = सहेत (सह सकता है) । न कोऽपि सहेत इत्यर्थः । काव्यलिङ्गमलङ्कारः । पथ्यावक्त्रं वृत्तम् । तद्यथा—'युजोश्चतुर्थतो येन पथ्यावक्त्रं प्रकीर्तितम्' इति ॥ ९ ॥

भीमसेनः—एवम् = ईदृशम् (ऐसा ही) इदम् = एतत् (यह) । अत एव अहम् = भीमः (मैं भीमसेन) । अद्यप्रभृति = अद्यदिनादारभ्य (आज से) । भवद्भ्यः = अर्जुनादिभ्यः (आप लोगों से) भिन्नः = विपरीतः (अलग) । अस्मि । पश्य = अवलोकय,

---

भीमसेन—(उपालम्भ सहित) नहीं, वास्तव में आप लोगों को कौरवों के अमंगल की बातें नहीं सोचनी चाहिये । तुम्हारे वे भाई तो सन्धि करने के योग्य हैं ।

सहदेव—(रोष सहित) आर्य—

यदि महाराज युधिष्ठिर मना न करें तो आपका पग-पग पर वैर करने वाले धृतराष्ट्र के पुत्रों (दुर्योधनादि) को कौन-सा आपका कनिष्ठ भ्राता क्षमा कर सकता है ॥ ९ ॥

भीमसेन—(रोष के सहित) यह ऐसा ही है । अत एव आज से मैं आप लोगों से पृथक् हूँ । देखो,

प्रवृद्धं यद्वैरं मम खलु शिशोरेव कुरुभि-
र्न तत्रार्यो हेतुर्न भवति किरीटी न च युवाम् ।
जरासंधस्योरःस्थलमिव विरूढं पुनरपि
क्रुधा संधिं भीमो विघटयति यूयं घटयत ॥ १० ॥

सहदेवः—(सानुनयम् ।) आर्य, एवमतिसंभृतक्रोधेषु युष्मासु कदाचित्खिद्यते गुरुः ।

अन्वयः—मम शिशोः एव यत् कुरुभिः वैरम् प्रवृद्धम्, तत्र आर्यः हेतुः न भवति, न किरीटी न च युवाम् । जरासन्धस्य विरूढम् उरुःस्थलम् इव, भीमः क्रुधा पुनः अपि सन्धिम् विघटयति यूयम् घटयत ॥ १० ॥

प्रवृद्धमिति । मम = भीमसेनस्य (मेरा) शिशोः = बाल्यात् (बचपन से) यत् (जो) । कुरुभिः = दुर्योधनादिभिः सह (कौरवों के साथ) । वैरम् = शत्रुत्वम् (शत्रुता) प्रवृद्धम्=अधिकं बभूव (बढ़ा है) तत्र=तद् विषये (उसमें) । आर्यः = ज्येष्ठो युधिष्ठिरः । हेतुः = कारणम् (हेतु) । न भवति = न जायते (नहीं होते हैं) । न किरीटी = अर्जुनोऽपि नैव (अर्जुन भी नहीं हैं) न च युवाम् = नकुलसहदेवावपि नैव हेतुः (आप नकुल सहदेव भी हेतु नहीं हैं) जरासन्धस्य = जरासन्धनाम्नोदैत्यस्य (जरासन्ध के) । विरूढम् = भिन्नम् (विदीर्ण) । उरःस्थलम् = वक्षःस्थलम् इव (वक्षःस्थल के समान) भीमः = वृकोदरोऽहम् (मैं वृकोदर) क्रुधा=रुषा (क्रोध से) । पुनरपि = भूयोऽपि (फिर से) । सन्धिम्=मैत्रीम् (सन्धि को) विघटयति=वियोजयति (तोड़ रहा है) । यूयम्=भवन्तः (आप लोग) । घटयत = योजयत (जोड़ें सन्धि करें) । अत्रोपमालङ्कारः । शिखरिणी वृत्तम् । तद्यथा—रसैः रुद्रैश्छिन्ना यमनसभलागाः शिखरिणी ॥ १० ॥

सहदेवः—सानुनयम्=अनुनयेन-नम्रतया सहितम् (विनम्रता से) । आर्य=

बचपन से ही मेरा कौरवों के साथ जो वैर बढ़ता रहा है उसका कारण न आर्य युधिष्ठिर हैं, न किरीटी अर्जुन हैं और न तुम लोग ही हो । जरासंध के वक्षःस्थल के समान फिर से वियोजित सन्धि को भीमसेन क्रुद्ध होकर तोड़ रहा है, आप लोग इसे जोड़ें ॥१०॥

सहदेव—आर्य ! इस प्रकार अत्यन्त क्रोध करते हुये आप पर बड़े भ्राता जी शायद नाराज हो रहे हैं ।

टिप्पणी—जन्मकाल में जरासंध राक्षस का शरीर दो भागों (टुकड़ों) में था जरा नाम की राक्षसी ने उन दोनों टुकड़ों को जोड़ कर एक रूप बना दिया था । भीमसेन ने पुनः युद्ध में कृष्ण के सङ्केत से जरासन्ध के दो टुकड़े कर दिये थे यह कथा पुराणों में आती है ।

भीमसेनः—किं नाम कदाचित्खिद्यते गुरुः ? गुरुः खेदमपि जानाति। पश्य—

तथाभूतां दृष्ट्वा नृपसदसि पाञ्चालतनयां
वने व्याधैः सार्द्धं सुचिरमुषितं वल्कलधरैः।
विराटस्यावासे स्थितमनुचितारम्भनिभृतं
गुरुः खेदं खिन्ने मयि भजति नाद्यापि कुरुषु॥ ११॥

श्रेष्ठ ! एवम्=इत्थम् (इस प्रकार)। अतिसम्भृतक्रोधेषु—अतिसम्भृतम्=बहुपूरितम् क्रोधम्=कोपम् येषु तेषु (अत्यन्त क्रोधपूर्ण)। युष्मासु = भवत्सु (आप पर) कदाचित्=स्यात् (शायद)। गुरुः = युधिष्ठिरः (बड़े भाई जी)। खिद्यते = खेदं भजते (खेद कर रहे हैं।)

भीमसेनः—गुरुः=ज्येष्ठभ्राता। किम् खिद्यते नाम = खेदमपि जानाति (खेद करने का क्या कहना)।

अन्वयः—नृपसदसि तथाभूताम् पञ्चालतनयाम् दृष्ट्वा वल्कलधरैः व्याधैः सार्धम् वने सुचिरम् उषितम् (दृष्ट्वा) विराटस्य आवासे अनुचितारम्भनिभृतम् स्थितम् (दृष्ट्वा) गुरुः खिन्ने मयि अद्य अपि कुरुषु खेदम् न भजति।

तथेति। नृपसदसि=राजपरिषदि (राजसभा में)। तथाभूताम् = तदवस्थाम् (इस दशा में) पाञ्चालतनयाम् = द्रुपदसुताम् (द्रौपदी को)। दृष्ट्वा = विलोक्य (देखकर)। वल्कलधरैः = वल्कलवस्त्रधारिभिः (वक्लधारी) व्याधैः=किरातैः (भिल्लों से) सार्धम् = समम् (साथ)। वने = अरण्ये (वन में) सुचिरम् = अतिकालम् (बहुत समय तक)। उषितम् = अवस्थितम् (रहना) (दृष्ट्वा)। विराटस्य = विराटनृपतेः (राजा विराट के)। आवासे = निवासस्थाने (निवास में)। अनुचितारम्भनिभृतम्—अनुचितम् = अयुक्तम् य आरम्भः = उद्योगस्तेन

भीमसेन—भ्राता जी का क्रोध करना क्या ? क्या भ्राताजी क्रोध करना भी जानते हैं ? देखो—

भरी राजसभा में उस दशा (रजःस्वला अवस्था) में पाञ्चाली को देख वल्कलधारण किये भीलों के साथ वन में बहुत समय तक रहना, विराट के आवास में कंकादि रूपों में अनुचित उद्योगों को करते हुये गोपनीय ढंग से समय बिताना देख कर भ्राता जी मेरे ऊपर क्रुद्ध होकर अब भी कौरवों पर क्रुद्ध नहीं हो पा रहे हैं॥ ११॥

टिप्पणी—धर्मराज युधिष्ठिर के जुआ खेलते समय हार जाने पर यह शर्त भी निश्चित हुई थी कि द्रौपदी सहित पाण्डवों को १२ वर्ष वनवास करने के उपरान्त एकवर्ष का अज्ञात-

तत्सहदेव, निवर्तस्व। एवं चापि चिरप्रवृद्धामर्षोद्दीपितस्य भीमस्य वचनाद्विज्ञापय राजानम्।

सहदेवः—आर्य, किमिति।

भीमसेनः—एवं विज्ञापय।

निभृतम् = गुप्तं यथा स्यात् तथा, यथा—कङ्कनाम्ना युधिष्ठिरः द्यूतसाहाय्यम्, सूदनाम्ना भीमसेनः पाचनम्, वृहन्नलनाम्ना अर्जुनो गीतादिप्रशिक्षणम्, ग्रन्थिकनाम्ना नकुलोऽश्वपालनम्, अरिष्टनाम्ना सहदेवोगोरक्षणम् तथा सैरन्ध्रीनाम्ना द्रौपदी सेवाकार्यम् (विराट गृहे) अकरोत्। स्थितम् = अवस्थानम् (निवास) (दृष्ट्वा) गुरुः = अग्रजः। खिन्ने मयि = मयि क्रुद्धे सति (मेरे क्रुद्ध होने पर)। अद्यापि = सम्प्रत्यपि (अब भी)। कुरुषु = दुर्योधनादिषु (कौरवों पर)। खेदम् = क्रोधम् (रोष) न भजति = न सेवते (नहीं कर रहे हैं)। अत्र समुच्चयालङ्कारः। शिखरिणी वृत्तम्॥ ११॥

तत् = अतः। हे सहदेव। निवृत्तस्व = परावर्तस्व (लौट जाओ)। च = तथा अतिचिरप्रवृद्धामर्षस्य—अतिचिरात् बहुकालात् प्रवृद्धम् = वर्धमानम् अमर्षम् यस्य तस्य (बहुत समय से बढ़े क्रोध वाले)। भीमस्य = वृकोदरस्य (मुझ भीम के) वचनात् = वाक्यात् (वचन से) एवम् = इत्थम् (इस प्रकार राजानम् = युधिष्ठिरम् (राजाजी को) विज्ञापय = निवेदय (बतला दो)।

अतः हे सहदेव, तुम लौट जाओ एवं बहुत समय से बढ़ते हुये क्रोध वाले भीम के वचनों से राजा (युधिष्ठिर) को इस प्रकार बतला दो।

सहदेव—आर्य! क्या?

भीमसेन—यह कह देना—

वास भी करना होगा था पहिचान लिये जाने पर पुनः १२ वर्ष वनवास करना होगा। तदनुसार ही १२ वर्ष वन में रहने के अनन्तर पाण्डव वेष बदलकर एक वर्ष का अज्ञातवास करने के लिये राजा विराट के यहाँ गये थे। वहाँ युधिष्ठिर ने कङ्क नाम से वेष बदल कर जुआ सिखाने, सूद नाम से भीम ने रोटी बनाने, वृहन्नला नाम से अर्जुन ने सङ्गीत सिखाने, ग्रन्थिक नाम से नकुल ने घोड़ा चलाना सिखाने. अरिष्ट नाम से सहदेव ने गायें चराने तथा सैरन्ध्री नाम से द्रौपदी ने सेविका का काम करने की राजा विराट के यहाँ नौकरी की थी।

युष्मच्छासनलंघनांहसि मया मग्नेन नाम स्थितं
प्राप्ता नाम विगर्हणा स्थितिमतां मध्येऽनुजानामपि ।
क्रोधोल्लासितशोणितारुणगदस्योच्छिन्दतः कौरवा-
नद्यैकं दिवसं ममासि न गुरुर्नाहं विधेयस्तव ॥ १२ ॥

अन्वयः—युष्मच्छासनलंघनाहसि मया मग्नेन स्थितम् नाम, स्थितिमताम् अनुजानाम् अपि मध्ये निगर्हणा प्राप्ता नाम क्रोधोल्लासितशोणितारुणगदस्य कौरवान् उच्छिन्दतः मम अद्य एकम् दिवसम् त्वम् गुरुः न असि, अहम् तव विधेयः न (अस्मि) ॥ १२ ॥

युष्मदिति । युष्मच्छासनलंघनांहसि—युष्माकं यत् शासनम्, युष्मच्छासनम्, तस्य लंघनम्, तदेवांहस्तस्मिन् = भवदाज्ञालंघनमहापातके (आपकी आज्ञा-रूपी महान् पातक में)। मया = भीमेन (मैंने)। मग्नेन = निमग्नेन (डूबे हुये)। स्थितम् नाम सर्वविदितमिति (प्रसिद्ध ही है)। स्थितिमताम्—स्थितिः = मर्यादा अस्ति येषां ते तेषाम् = आज्ञापालनरूपमर्यादावताम् (आज्ञापालन रूपी मर्यादा वाले) अनुजानाम् = कनिष्ठभ्रातृणाम् अपि (छोटे भाइयों के भी)। मध्ये = अन्तरे (बीच में)। विगर्हणा = निन्दा । प्राप्ता नाम अधिगतेति स्वीकरणे (भले ही प्राप्त की गई)। क्रोधोल्लासितशोणितारुणगतदस्य—क्रोधेन = कोपे-नोल्लासिता = प्रहर्त्तुमुच्छ्रिता शोणितेन = रक्तेनारुणा = रक्तवर्णा गदा यस्य स तस्य (क्रोधे से कौरवों पर प्रहार करने को उठाई गई खून से लाल वर्ण की गदा वाले) कौरवान् = दुर्योधनादीन् (कौरवों को)। उच्छ्रितः = उन्मूलयतः (उखाड़ते हुये) मम = भीमस्य (मुझ भीम का)। अद्य = अस्मिन् दिने (आज)। एकं दिवसम् = एकदिनम् यावत् (एक दिन को)। त्वम् = भवान् (आप)। गुरुः = ज्येष्ठः (बड़े) न असि अहं च = भीमश्च (और मैं, भीम)। तव = ते (तुम्हारा)। विधेयः—विधातुं योग्यः = आज्ञापालकः (आज्ञा मानने वाला) न भवामीति शेषः । शार्दूलविक्रीडितम् वृत्तम् ॥ १२ ॥

आपकी आज्ञोल्लंघनं रूपी महापाप में मैं भले ही डूब गया, आज्ञापालन करने वाले अनुजों के भी मध्य मैंने भले ही निन्दा प्राप्त कर ली, क्रोध से कौरवों के ऊपर प्रहार करने को उठाई गई खून से लाल वर्ण वाली गदा वाले, कौरवों को समूल उखाड़ फेंकने वाले मुझ भीम के आज एक दिन के लिए आप बड़े भाई नहीं हैं और मैं भी (आज भर के लिए) आपका आज्ञापालक नहीं हूँ ॥ १२ ॥

(इत्युद्धतं परिक्रामति ।)

सहदेवः—(तमेवानुगच्छन्नात्मगतम् ।) अये, कथमार्यः पाञ्चाल्याश्चतुःशालकं प्रति प्रस्थितः । भवतु तावदहमत्रैव तिष्ठामि (इति स्थितः ।)

भीमसेनः—(प्रतिनिवृत्यावलोक्य च ।) सहदेव, गच्छ त्वं गुरुमनुवर्तस्व । अहमप्यायुधागारं प्रविश्यायुधसहायो भवामि ।

सहदेवः—आर्य नेदमायुधागारम्, पाञ्चाल्याश्चतुःशालकमिदम् ।

उद्धतम् = प्रगल्भम् (अकड़ के साथ)। परिक्रामति = इतस्ततश्चलति (घूमने लगता है)।

सहदेव—तम् = भीमम् (उसको)। अनुगच्छन्—अनु = पश्चात् गच्छन् = चलन् (पीछे-पीछे चलते हुये)। आत्मगतम् = स्वगतम् (मन ही मन)। आर्यः = ज्येष्ठो भीमः (भ्राताजी)। पाञ्चाल्याः = द्रौपद्याः (द्रौपदी की)। चतुःशालकम् = चतस्रः शालाः समाहृताः इति चतुःशालकम्=सञ्जवनम् (चौसर को) प्रविष्टः = संगतः (प्रविष्ट हुये हैं)। भवतु = अस्तु (अच्छा)। तावत्= सम्प्रति (तो अब)। अहम् = सहदेवः (मैं, सहदेव) अत्रैव = इहैव (यहीं)। तिष्ठामि = स्थिरो भवामि (ठहर जाता हूँ)।

भीमसेनः—प्रतिनिवृत्य = परावृत्य (लौटकर)। अवलोक्य = दृष्ट्वा (देखकर)। गच्छ = याहि (जाओ)। त्वम् = सहदेवः (तुम)। गुरुम् = ज्येष्ठभ्रातरम् (बड़े भाई युधिष्ठिर के पास)। अनुवर्त्तस्व = सेवस्व (सेवा करो)। आयुधागारम् = शस्त्रसदनम् (शास्त्रागार को)। आयुध-सहायः—आयुधमेव-सहायो यस्य तथा = अस्त्रद्वितीयः (आयुधयुक्त)।

सहदेवः—इदम् = एतत् (यह)। आयुधागारम् = शस्त्रसदनम् (आयुध-शाला)।

(इस प्रकार अकड़ता हुआ घूमने लगता है ।)

सहदेव—(उन्हीं के पीछे पीछे जाते हुये मन ही मन) अरे ! क्या आर्य भीम द्रौपदी के चौसर में घुस गये हैं ! अस्तु, तब तक मैं यहीं ठहरता हूँ । (रुक जाता है) ।

भीमसेन—(लौटकर तथा देखकर) हे सहदेव ! तुम जाओ तथा भाई (युधिष्ठिर) की आज्ञा पालन करो । मैं भी शास्त्रागार को जाकर शास्त्र ग्रहण करता हूँ ।

सहदेव—आर्य ! यह शस्त्रागार नहीं है । यह पाञ्चाली का चौसर (निवास-स्थान) है ।

टिप्पणी—स्वगतम्—यत्तु श्राव्यं न सर्वस्य स्वगतं तदिहोच्यते । (भरतनाट्यशास्त्रम्) जो दूसरे को सुनाई न पड़े, उसे स्वगत या आत्मगत कहा जाता है ।

भीमसेनः—(सवितर्कम् ।) किं नाम नेदमायुधागारम्, पाञ्चाल्याश्चतुःशालकमिदम् । (विचिन्त्य, सहर्षम् ।) आमन्त्रयितव्यैव मया पाञ्चाली । (सप्रणयं सहदेवं हस्ते गृहीत्वा ।) वत्स आगम्यताम् ।

सहदेवः—यदादिशत्यार्यः ।

भीमसेनः—वत्सः यदार्यं कुरुभिः संधानमिच्छन्नस्मान्पीडयति तद्भवानपि पश्यतु ।

(परिक्रम्य उभौ प्रवेशं नाटयतः । भीमसेनः सक्रोधं भूमावुपविशति ।)

सहदेवः—(ससंभ्रमम् ।) आर्य, इदमासनमास्तीर्णम् । अत्रोपविश्यार्यो मुहूर्त्तं पालयतु कृष्णागमनम् ।

भीमसेनः—सवितर्कम् = ससन्देहम् (सन्देह के साथ) । किं नाम = किमिति विस्मयम् । विचिन्त्य = विचार्य (सोचकर) । सहर्षम् = सानन्दम् (हर्ष के साथ) । आमन्त्रयितव्या = आमन्त्रणीया (बुलाने योग्य) । सप्रणयम् = प्रेम्णा (प्रेम के साथ) हस्ते = करे (हाथ में) गृहीत्वा = अवलम्ब्य (पकड़ कर) । आगम्यताम् = आगच्छतु (आइये) ।

सहदेवः—यद् = यथा (जो) । आदिशति = आज्ञापयति (आज्ञा है) ।

भीमसेनः—कुरुभि=दुर्योधनादिभिः सह (दुर्योधनादि के साथ) । सन्धानम्= सन्धि कर्त्तुम् (मेल करने को) । इच्छन् = अभिलषन् (चाहते हुए) । अस्मान्= भीमादीन् (हमें) । पीडयति = क्लेशं ददाति (पीड़ित करते हैं) ।

उभौ = भीमसहदेवौ (भीम सहदेव दोनों ही) । नाटयतः = अभिनयतः (अभिनय करते हैं) । सरोषम्=सक्रोधम् (क्रोध के साथ) । भूमौ = धरायाम् (भूमि पर) उपविशति = तिष्ठति (बैठता है) ।

सहदेवः—स सम्भ्रमम् = सभमम् (डर के साथ) । आसनम् = विशिष्टम्

भीमसेन—(सन्देह के साथ) क्या कहा ! यह शस्त्रागार नहीं है । पाञ्चाली का चौसर है । (सोचकर, सहर्ष) मुझे पाञ्चाली को बुलाना ही चाहिये (प्रेम से सहदेव को हाथ से पकड़ कर) वत्स ! आओ चलें ।

सहदेव—जो आप की आज्ञा ।

भीमसेन—वत्स ! महाराजा युधिष्ठिर कौरवों से सन्धि करने की इच्छा करते हुये हमें पीड़ित कर रहे हैं, यह तुम भी देख रहे हो ।

(दोनों घूमकर प्रवेश करने का अभिनय करते हैं । भीमसेन क्रोध के साथ भूमि पर बैठ जाते हैं)

सहदेव—(घबड़ा कर) आर्य ! यह आसन बिछा है, इस पर बैठकर थोड़ी देर

भीमसेनः—(उपविश्य स्मृत्वा ।) वत्स, कृष्णागमनमित्यनेनोपोद्घातेन स्मृतम् । अथ भगवान्कृष्णः केन पणेन सन्धिं कर्तुं सुयोधनं प्रति प्रहितः ।

सहदेवः—आर्य, पञ्चभिर्ग्रामैः ।

भीमसेनः—(कर्णौ पिधाय) अहह, देवस्याजातशत्रोरप्ययमीदृशस्तेजोऽपकर्ष इति यत्सत्यं कम्पितमिव मे हृदयम् । (परिवृत्य स्थित्वा ।) तद्वत्स, न त्वया कथितं न च मया भीमेन श्रुतम्—

(बिछौना) मुहूर्त्तम् = क्षणम् (थोड़ी देर) । पालयतु = प्रतीक्षताम् (प्रतीक्षा करें) । कृष्णाऽऽगमनम्—कृष्णायाः = द्रौपद्याः आगमनम्, अथवा कृष्णस्य दुर्योधन शिविरात् परावर्त्य आगमनम् (कृष्णागमन) ।

भीमसेनः—अनेन = एतेन (इस) । उपोद्घातेन = उदाहरणेन (उदाहरण से) । स्मृतम् = बुद्धौ आरूढम् (याद आ गया) । पणेन = मूल्येन ('पणो विराटमाने स्यान्मूल्ये कार्षापणे ग्रहे' इति विश्वः) (मूल्य से) । सुयोधनम् = दुर्योधनम् । प्रहितः = प्रेषितः (भेजे गये हैं) ।

सहदेवः—पञ्चभिः ग्रामैः = पञ्चग्रामान् गृहीत्वासन्धिर्भवितेति ।

भीमसेनः—कर्णौ = श्रोत्रे (कान) पिधाय = आच्छाद्य (वन्द कर) । अहह इति खेदेऽव्ययम् (हाय) अज्ञातशत्रोः—अजातः = अनुत्पन्नः शत्रुः = अरिर्यस्य स, तस्य (जिसका कोई शत्रु ही न जन्मा हो ऐसे) तस्य = एतस्य (उन) देवस्य = नृपस्य युधिष्ठिरस्य (महाराज युधिष्ठिर के) । तेजोऽपकर्षः—तेजसः = प्रतापस्यापकर्षः = हीनता पञ्चग्रामस्वरूपां सन्धि समर्थता (तेज का अपकर्ष) । इति = इत्थम् (यह) यत् सत्यम् = अवितथम् (जो सच है) । कम्पितमिव = कम्पनयुक्तमिव (काँप सा रहा है) । मे = मम (मेरा) । हृदयम् = चेतः (हृदय) । कथितम् = वर्णितम् (कहा है) । श्रुतम् = आकर्णितम् (सुना है) ।

कृष्णागमन की प्रतीक्षा कर लीजिये ।

भीमसेन—(बैठकर, याद करके) वत्स ! 'कृष्णागमन' इस शब्द कथन से याद आ गया । भगवान् कृष्ण किस शर्त से सन्धि करने के लिये दुर्योधन के पास भेजे गये हैं ?

सहदेव—आर्य पाँच गाँव द्वारा ।

भीमसेन—(दोनों कान बन्द कर) हाय, उन अजातशत्रु महाराज युधिष्ठिर के भी तेज का ऐसा अपकर्ष ! (कि पाँच गाँव लेकर ही कौरवों से सन्धि करने को तैयार हैं) यदि यह सच है तो मेरा हृदय वास्तव में काँप उठा है । (घूमकर, रुककर) अतः वत्स ! न तो तुमने यह मुझसे (पाँच गाँव वाला सन्देश) कहा और न मुझ भीम ने सुना ही ।

यत्तदूर्जितमत्युग्रं क्षात्रं तेजोऽस्य भूपतेः ।
दीव्यताऽक्षैस्तदाऽनेन नूनं तदपि हारितम् ॥ १३ ॥

(नेपथ्ये)

समस्सदु समस्ससदु भट्टिणी । [समाश्वसितु समाश्वसितु भट्टिनी ।]

सहदेवः—(कर्णं दत्त्वा, नेपथ्याभिमुखमवलोक्यात्मगतम् ।) अये, कथं याज्ञसेनी मुहुरुपचीयमानवाष्पपटलस्थगितनयना आर्यसमीपमुपसर्पति । तत्कष्टतरमापतितम् ।

अन्वयः—अस्य भूपते यत् तत् अत्युग्रम् ऊर्जितम् क्षात्रम् तेजः, (आसीत्) तत् अपि अक्षैः दीव्यता अनेन तदा नूनम् हारितम् ॥ १३ ॥

यत्तदिति । अस्य=एतस्य (इन) । भूपतेः=नृपतेः (राजा का) यत् तत्=लोकप्रसिद्धम् (वह जो) अत्युग्रम्=अतिप्रचण्डम् (अतिप्रचण्ड) । ऊर्जितम्=बलसम्पन्नम् (शक्तिशाली) । क्षात्रम्–क्षत्रस्येदक्षात्रम्=क्षत्रियोचितम् (क्षत्रिय वंश के योग्य) तेजः=प्रतापः (तेज) . (आसीत्) तत् अपि (वह भी) अक्षैः=पाशकैः (पांसों के द्वारा) । ('अक्षास्तु देवनाः पाशकाश्च ते' इत्यमरः ।) दीव्यता=क्रीडता (खेलते हुये) । अनेन=एतेन नृपतिना (इन महाराज ने) । तदा=द्यूत क्रीडनकाले (उस जुआ खेलने के अवसर पर) नूनम्=खलु (अवश्य ही) हारितम्=पराजितम् (हरा दिया है) । पथ्यावक्त्रवृत्तम् । तल्लक्षणं प्रागुक्तम् ॥ १३ ॥

भट्टिनी=स्वामिनि । समाश्वसितु-धैर्यं धारयतु (धैर्य धारण कीजिये) ।

सहदेव—याज्ञसेनी=द्रौपदी ! मुहुः=बारम्बारम् (बारबार) उपचीयमानवाष्पपटलस्थगितनयना—उपचीयमानेन=वृद्धिं गच्छता वाष्पपटलेन=अश्रु समूहेन स्थगिते=आवृते नयने=चक्षुषी यस्याः सा (बढ़ते हुये अश्रु समूह से

इन महाराज युधिष्ठिर का जो वह अति प्रचण्ड बल युक्त क्षत्रियोचित प्रताप था, वह भी पांसों के द्वारा जुआ खेलते हुये इन्होंने उस समय (द्यूतक्रीड़ा के समय) निश्चित रूप से हरा दिया ॥ १३ ॥

(नेपथ्य में)

स्वामिनि ! धैर्य धारण कीजिये, धैर्य धारण कीजिये ।

सहदेव—(कान लगाकर नेपथ्य की ओर देखकर, मन ही मन) अये ! क्या याज्ञसेनी (द्रौपदी) बारबार बढ़ते हुये अश्रु-समूह से आवृत नयन बनी हुई आर्य भीमसेन के समीप आ रही है । यह तो अत्यन्त कष्ट की बात आ गई है ।

विद्युतो जातम्

यद्वैद्युतमिव ज्योतिरार्ये क्रुद्धेऽद्य संभृतम् ।
तत्प्रावृडिव कृष्णेयं नूनं सम्बर्द्धयिष्यति ॥ १४ ॥

(ततः प्रविशति यथानिर्दिष्टा द्रौपदी चेटी च ।)

(द्रौपदी सास्रं निःश्वसिति ।)

चेटी—समस्ससदु समस्ससदु भट्टिणी । अवणइस्सदि दे मण्णुं णिच्चाणुवद्धकुरुवैरो कुमालो भीमसेणो । [समाश्वसितु समाश्वसितु भट्टिनी । अपनेष्यति ते मन्युं नित्यानुबद्धकुरुवैरः कुमारो भीमसेनः ।]

अच्छादित नयनों वाली)। आर्यसमीपम्=भीमसेनपार्श्वम् (आर्य भीम से समीप) । उपसर्पति=उपागच्छति (आ रही है)। तत्=एतत् (यह) कष्टतरम्= अतिशयेन कष्टम् (अतीव कष्ट)। अपहितम्=आगतम् (आ गया है)।

अन्वयः—अद्य क्रुद्धे आर्ये वैद्युतम् इव यत् ज्योतिः सम्भृतम् तत् इयम् कृष्णा प्रावृट् इव नूनम् सम्वर्द्धयिष्यति ॥ १४ ॥

यदिति । अद्य=अस्मिन् दिने (आज)। क्रुद्धे=कुपिते । आर्ये=भीमसेने (भीमसेन के कुपित होने पर) वैद्युतम् इव—वैद्युतोद्भवं वैद्युतम्=तडित्सम्बन्धि इव (बिजली के समान)। यत् ज्योतिः=यद्दीप्तिः (जो तेज) सम्भृतम्=सञ्चितम् (भरा है) तत् इयम्=एषा (सो यह)। कृष्णा=द्रौपदी । प्रावृट् इव=वर्षाकालमिव (वर्षा काल के समान)। नूनम्=खलु (निश्चय ही) सम्वर्द्धयिष्यति=एधयिष्यति (बढ़ेगा) पथ्यावक्त्रम् वृत्तम् । अत्रोपमालङ्कारः ॥ १४ ॥

सास्रम्=सबाष्पम् (रोती हुई)।

चेटी—ते=तव (तुम्हारा)। मन्युम्=क्रोधम् (क्रोध को)। नित्यानुबद्धकुरुवैरः—नित्यं=सदैवानुबद्धम्=सम्बद्धम् कुरुभिः=दुर्योधनादिभिः सह वैरम्=शत्रुत्वम् यस्य सः (नित्य कौरवों के साथ जिसका वैर बना रहता है ।)

आज आर्य भीम के क्रुद्ध होने पर विजली के समान जो तेज सञ्चित हुआ है उसे यह कृष्णा वर्षा के समान अवश्य बढ़ा देगी अर्थात् भीमसेन के क्रोध को अवश्य भड़का देगी ॥ १४ ॥

(तदनन्तर पूर्ववर्णित अवस्था में द्रौपदी तथा चेटी प्रवेश करती हैं ।)

(द्रौपदी आँसू बहाती हुई निःश्वास लेती है ।)

चेटी—स्वामिनी धैर्य धारण करें, धैर्य धारण करें । तुम्हारा क्रोध नित्य कौरवों से वैर बनाये रखने वाले कुमार भीमसेन अवश्य दूर कर देंगे ।

द्रौपदी—हञ्जे बुद्धिमदिए, होदि एदं जइ महाराओ पडिऊलो ण भवे। ता णाहं पेक्खिदुं तुवरदि मे हिअअं। आदेसेहि मे णाहस्स वासभवणं। [हञ्जे बुद्धिमतिके, भवत्येतद्यदि महाराजः प्रतिकूलो न भवेत्। तन्नाथं प्रेक्षितुं त्वरते मे हृदयम्। तदादेशय मे नाथस्य वासभवनम्]

(इति परिक्रामतः)

चेटी—एदु एदु भट्टिणी एदं वासभवणं। एत्थ पविसदु भट्टिणी। [एत्वेतु भट्टिनी। एतद्वासभवनम्। अत्र प्रविशतु भट्टिनी।]

द्रौपदी—हञ्जे, कहेहि णाहस्स मह आगमणं। [हञ्जे, कथय नाथस्य ममागमनम्]।

चेटी—जं देवी आणवेदि। (इति परिक्रम्योपसृत्य च) जअदु जअदु कुमालो। [यद्देव्याज्ञापयति। जयतु जयतु कुमारः।]

द्रौपदी—हञ्जे बुद्धिमतिके = सखि बुद्धिमतिके (हे सखि बुद्धिमतिके)। महाराजः = युधिष्ठिरः (महाराज युधिष्ठिर)। प्रतिकूलः = विरुद्धः (विपरीत)। नाथम् = स्वामिनम् (स्वामी को)। प्रेक्षितुम् = द्रष्टुम् (देखने को)। मे = मम द्रौपद्याः (मुझ द्रौपदी का) हृदयम् = चेतः (हृदय) त्वरते = शीघ्रतां करोति (शीघ्रता कर रहा है)। आदेशय = निर्दिश (बतलाओ)। नाथस्य = स्वामिनः (भर्ता का)। वासभवनम् = निवासस्थानम् (निवास भवन को)।

इति = इत्युक्त्वा परिक्रामतः = उभौ परिचलतः (दोनों घूमने लगती हैं)।

चेटी—अत्र = अस्मिन् भीमसेन वासभवने (कुमार के भवन में)।

द्रौपदी—कथय = आवेदय (कहो)।

चेटी—उपसृत्य = पार्श्वं गत्वा (समीप जाकर)।

द्रौपदी—सखी बुद्धिमतिके ! यदि महाराज (युधिष्ठिर) प्रतिकूल न होते तो ऐसा ही होता। अतः स्वामी को देखने को मेरा हृदय शीघ्रता कर रहा है। मुझे स्वामी के वास-भवन का मार्ग बतलाओ। (यह कह कर दोनों घूमती हैं)।

चेटी—स्वामिनि ! इधर आइये, इधर। यह वास-भवन है। इसमें प्रवेश करें स्वामिनी।

द्रौपदी—सखि ! स्वामी को मेरे आने की बात बतलाओ।

चेटी—जैसी देवी जी की आज्ञा। (घूमकर तथा पास जाकर) जय हो कुमार की जय हो।

टिप्पणी—नाटक में नीच चेटी के लिये हञ्जे, हण्डे, हला आदि सम्बोधनों का प्रयोग किया जाता है।

(भीमसेनोऽशृण्वन् 'यत्तदूर्जितम्' (१।१३) इति पुनः पठति ।)

चेटी—(परिवृत्य ।) भट्टिणि, पिअं दे णिवेदेमि । परिकुविदो विअ कुमालो लक्खीअदि [भट्टिनि प्रियं ते निवेदयामि । परिकुपित इव कुमारो लक्ष्यते ।]

द्रौपदी—हञ्जे, जइ एवं ता अवहीरणावि एषा मं आभासअदि । ता एअन्ते उववि‍ट्टा भविअ सुणुमो दाव णाहस्स ववसिदं । [हञ्जे, यद्येवं तदवधीरणाप्येषा मामाश्वासयति । तदेकान्त उपविष्टा भूत्वा शृणुमस्तावन्नाथस्य व्यवसितम् ।]

(उभे तथा कुरुतः ।)

भीमसेनः—(सहदेवमधिकृत्यः) किं नाम पञ्चभिर्ग्रामैः सन्धिः ।

चेटी—परिवृत्य = परिक्रम्य (घूम कर) प्रियम् = रुचिकरम् (प्रिय) । निवेदयामि = कथयामि (कह रही हूँ) । परिकुपितः = क्रुद्धः (नाराज) । लक्ष्यते = दृश्यते (दिखलाई पड़ रहे हैं) ।

द्रौपदी—एषा=इयम् (यह) अवधीरणा=अपमानम् (अपमान) एकान्ते= एकानस्थले यत्र स्थितां मां भीमसेनो न पश्येत् (एकान्त में) । व्यवसितम् = अध्यवसायम् (निश्चय) शृणुमः = आकर्णयामः (सुनते हैं) ।

उभे = चेटी द्रौपदी च (दोनों) ।

भीमसेन—अधिकृत्य = उद्दिश्य (लक्ष्य करके) ।

(भीमसेन अनसुनी करते हुये—'यत्तदूर्जित०' इत्यादि पुनः पढ़ने लगता है ।)

चेटी—(घूमकर) स्वामिनि ! आपको खुशखबरी सुनाती हूँ । कुमार (भीमसेन) क्रुद्ध जैसे दिखलाई पड़ रहे हैं ।

द्रौपदी—चेटि ! यदि ऐसा है तो यह अपमान भी मुझे धीरज ही बँधायेगा । अतः एकान्त में बैठकर स्वामी के निश्चय को हम सुन लें ।

(दोनों वैसा ही करती हैं ।)

भीमसेन—(क्रोध के साथ, सहदेव को उद्देश्य कर) क्या कहा ? पाँच गाँव लेकर सन्धि ?

मथ्नामि कौरवशतं समरे न कोपाद्-
दुःशासनस्य रुधिरं न पिबाम्युरस्तः ।
सञ्चूर्णयामि गदया न सुयोधनोरू
सन्धिं करोतु भवतां नृपतिः पणेन ॥ १५ ॥

द्रौपदी—(सहर्षम् । जनान्तिकम् ।) णाह, अस्सुदपुव्वं खु दे एदिसं वअणं । ता पुणो पुणो दाव भणाहि । [नाथ, अश्रुतपूर्वं खलु त ईदृशं वचनम् । तत्पुनः पुनस्तावद्भण ।]

अन्वयः—समरे कोपात् कौरवशतं न मथ्नामि ? दुःशासनस्य उरस्तः रुधिरम् न पिबामि ? गदया सुयोधनोरू न सञ्चूर्णयामि ? भवताम् नृपतिः पणेन सन्धिम् करोतु ॥ १५ ॥

मथ्नामीति । समरे = युद्धे (युद्ध में) कोपात् = क्रोधात् (क्रोध से) कौरवशतम्—कौरवाणां शतम् = कुरुवंशीयानां दुर्योधनादीनां शतम् (सौ कौरवों को) न मथ्नामि = न मर्दयिष्यामि किमिति (नहीं मार डालूँगा क्या ?) दुःशासनस्य =दुर्योधनस्य (दुर्योधन के) उरस्तः=वक्षसः (वक्षःस्थल से) रुधिरम्=शोणितम् (रक्त) न पिबामि = न पास्यामि किमिति (क्या नहीं पिऊँगा) । गदया = गदाऽऽघातेन (गदा के प्रहार से) सुयोधनोरु—सुयोधनस्योरु = सुयोधनसक्थिनी (सुयोधन की दोनों जाघें) न सञ्चूर्णयामि = न त्रोटयिष्यामि किमिति (क्या चकनाचूर नहीं कर डालूँगा ?) भवताम् = युष्माकम् (आपके) नृपतिः = नृपो युधिष्ठिरः (महाराज युधिष्ठिर) । पणेन = पञ्चग्राममूल्येन (पाँच गाँव लेकर) सन्धिम् = मैत्रीम् (सन्धि) करोतु = विदधातु (कर लें) । वसन्ततिलकावृत्तम् । तद्यथा—उक्ता वसन्त-तिलका तभजाजगौगः ॥ १५ ॥

द्रौपदी—जनान्तिकम् = अन्योन्यामन्त्रणम् (आपस की गुप्त बातचीत) ।

क्या मैं संग्राम में क्रोध में आकर दुर्योधनादि सौ कौरवों का विनाश नहीं कर डालूँगा ? क्या दुःशासन के वक्षःस्थल से मैं रक्तपान नहीं कर सकूँगा ? क्या अपनी गदा के प्रहार से सुयोधन की दोनों जाँघें चकनाचूर नहीं कर डालूँगा (जो) आपके नृपति (युधिष्ठिर) पाँच गाँव के मूल्य से कौरवों के साथ सन्धि करेंगे ॥ १५ ॥

द्रौपदी—(प्रसन्नता से, बहुत धीरे से) नाथ ! आपके मुँख से ऐसे वचन इससे पूर्व कभी नहीं सुने हैं । अतः पुनः पुनः वैसा ही कहिये ।

टिप्पणी—जनान्तिकम्-जो बात दो पात्रों के बीच इस प्रकार से अभिनय में कही जाय जो और लोग न सुन सकें, उसे जनान्तिकम् कहा जाता है । "त्रिपताककरेणान्यान-पवार्यान्तरां कथाम् । अन्योन्यामन्त्रणं यत्स्यात्तज्जनान्ते जनान्तिकम् ।" (भरतनाट्यशास्त्र)

(भीमसेनोऽशृण्वन्नेव 'मथ्नामि कौरवशतम्' (१।१५) इति पुनः पठति ।)

सहदेवः—आर्य, किं महाराजस्य सन्देशोऽयमार्येणाव्युत्पन्न इव गृहीतः ।

भीमसेनः—का पुनरत्र व्युत्पत्तिः ।

सहदेवः—आर्य एवं गुरुणा सन्दिष्टम् ।

भीमसेनः—कस्य ।

सहदेवः—सुयोधनस्य ।

भीमसेनः—किमिति ।

सहदेवः—इन्द्रप्रस्थं वृकप्रस्थं जयन्तं वारणावतम् ।
प्रयच्छ चतुरो ग्रामान्कञ्चिदेकं च पञ्चमम् ॥ १६ ॥

अश्रुतपूर्वम् = न श्रुतं पूर्वं यद् वचनं तदश्रुतपूर्वम् = अनाकर्णितं प्राक् (जो इससे पहले कभी न सुना हो) । भण = कथय (कहो) ।

अशृण्वन् = अनाकर्णयन् (अनसुनी करते हुये) ! पठति = भणति (कहने, पढ़ने लगते हैं) ।

सहदेवः—सन्देशः = समाचारः (सन्देश) । आर्येण = कुमारभीमेन (कुमार भीमसेन ने) अव्युत्पन्न इव=अविस्पष्ट इव (अभिप्राय विना समझे हों) । गृहीतः= अवगतः (ग्रहण कर लिया है) ।

भीमसेनः—व्युत्पत्तिः = गूढोऽभिप्रायः (गूढ मतलव) ।

सहदेवः—सन्दिष्टम् = सन्दिष्टं प्रहितम् (सन्देश भेजा है) ।

अन्वयः—इन्द्र प्रस्थम् वृकप्रस्थम् जयन्तम् वारणावतम् एतान् चतुरः तु कञ्चिद् एकं पञ्चमम् ग्रामम् प्रयच्छत ॥ १६ ॥

इन्द्रप्रस्थमिति । इन्द्रप्रस्थम् = साम्प्रतं दिल्लीनामनगरम्, यतः पाण्डवाः

(भीमसेन अनसुनी करते हुये—'मथ्नामि कौरवशतम्' इत्यादि पुनः पढ़ते हैं ।)

सहदेव—आर्य ! क्या महाराज का यह सन्देश आपने अभिप्राय समझे विना ही ग्रहण कर लिया है ?

भीमसेन—इसमें गूढ अभिप्राय क्या है ?

सहदेव—आर्य ! महाराज ने इस प्रकार सन्देश भेजा है ।

भीमसेन—किसको ।

सहदेव—दुर्योधन को ।

भीमसेन—क्या ?

सहदेव—इन्द्र प्रस्थ, वृकप्रस्थ, जयन्त, वारणावत यह चार गाँव तथा पाँचवा कोई (स्वेच्छया) अन्य गाँव हमें दे दो ॥ १६ ॥

भीमसेनः—ततः किम् ।

सहदेवः—तदेवमनया प्रतिनामग्रामप्रार्थनया पञ्चमस्य चाकीर्तनाद्विष-भोजनजतुगृहदाहद्यूतसभाद्यपकारस्थानोद्घाटनमेवेदं मन्ये ।

भीमसेनः—(साटोपम् ।) वत्स, एवं कृते किं भवति ?

सहदेवः—आर्य, एवं कृते लोके तावत्स्वगोत्रक्षयाशङ्कि हृदयमाविष्कृतं भवति, कुरुराजस्य तावदसन्धेयता तदैव प्रतिपादिता भवति ।

निर्वासिता आसन् । वृकप्रस्थम् = यत्र भीमाय विषप्रयोगः कृतस्तन्नगरम् । जयन्तम् = राज्यापहरण कलत्रघर्षण वनवासाद्यपकाराणां स्मारकस्थानम् । वारणावतम् = यत्र जातुगृहदाहः कृतस्तत्स्थानम् । एतान् = इमान् (इन) चतुरः = चतुः-संख्याकान् ग्रामान् नामग्रहस्थानानि । देहि = समर्पय (दे दो) तु = तथैव पञ्चमम् = पञ्चमसंख्यकं कश्चित् = स्वेच्छया कमपिग्रामम् प्रयच्छ = देहि (दे दो) पथ्यावक्त्रं वृत्तम् ॥ १६ ॥

भीमसेनः—ततः = तदनन्तरम् (तत्पश्चात्)

सहदेवः—अनया = एतया (इस) प्रतिनामग्रामप्रार्थनया—नाम्ना नाम्ना प्रतिनाम = नामगृहीत्वा । ग्रामाणां प्रार्थना, तया = ग्रामयाचनया (नाम ले लेकर गाँवों की याचना द्वारा अकीर्तनात् = ग्रामनाम्नोऽकथनात् (गाँव का नाम न लेते हुए) विषभोजन-जातुगृहदाह-द्यूतसभाद्यपकारस्थानोद्घाटनम् एव विष भोजनम् = विषप्रदानापकारः, जातुगृहदाहः = लाक्षागृहदाहापकारः, द्यूतसभाद्यप-काराणाम् = द्यूतक्रीडाकपटेन राज्यापहरणादि विविधापकारणाम् स्थानानि, तेषा-मुद्घाटनम् = प्रकाशनम् (विषभोजनलाक्षागृहदाह तथा द्यूतसभा आदि अप-कारस्थानों को प्रकट करना ही) । इदम् = एतत् (यह) मन्ये = सम्भावयामि (समझता हूँ) ।

भीमसेनः—साटोपम् = सक्रोधम् (क्रोध के साथ) । एवं कृते = एतत् सन्धौ (ऐसा करने पर) ।

सहदेवः—लोके = संसारे (लोक में) । स्वगोत्रक्षयाशङ्कि—स्वस्य =

भीमसेन—फिर क्या हुआ ?

सहदेव—अतः इस प्रकार नाम ले लेकर गाँवों की प्रार्थना करने से और पाँचवें गाँव का नाम न लेने से तो मेरे विचार से विष देने, लाक्षागृह-दाह, द्यूतसभा आदि अपकार स्थान वाले कौरवों को उनके चार स्थानों से चार अपकारों की याद दिलाना ही है ।

भीमसेन—(क्रोध के साथ) वत्स ! ऐसा करने से क्या होता है ?

सहदेव—आर्य ! ऐसा करने पर संसार में सबसे प्रथम अपने कुल के नाश की आशंका

भीमसेनः—मूढ, सर्वमप्येतदनर्थकम् । कुरुराजस्य तावदसन्धेयता तदैव प्रतिपादिता यदैवाऽस्माभिरितो वनं गच्छद्भिः सर्वैरेव कुरुकुलस्य निधनं प्रतिज्ञातम् । लोकेऽपि च धार्तराष्ट्रकुलक्षयः किं लज्जाकरो भवताम् । अपि च, रे मूर्ख—

युष्मान्ह्रेपयति क्रोधाल्लोके शत्रुकुलक्षयः ।
न लज्जयति दाराणां सभायां केशकर्षणम् ॥ १७ ॥

आत्मनः गोत्रस्य = कुलस्य क्षयम् = विनाशम् आशङ्कत इति तया (अपने कुल के विनाश की आशंका वाला) । हृदयम् = चेतः (हृदय) । आविष्कृतं भवति = प्रकटितं भवति (प्रकट हो रहा है) । कुरुराजस्य=दुर्योधनस्य (कुरुराज की) । असन्धेयता = असन्धानविषयता (सन्धि न करना) । प्रतिपादिता = प्रामाणिता (प्रमाणित) ।

भीमसेनः—मूढ = अयि मूर्ख ! एतत् = इदम् (यह) सर्वम् अपि=निखिलमपि (सभी) अनर्थकम्=अनर्गलम् (अनर्थक है) । कुरुषु=दुर्योधनादिषु (दुर्योधन आदि में) असन्धेयता = असन्धानम् (सन्धि न करने की बात) । इतः = अस्मात्स्थानात् (यहाँ से) वनम् = काननम् (वन को) । गच्छद्भिः = चलद्भिः (जाते हुये) सर्वैः एव = निखिलैरेव (सभी ने) कुरुकुलस्य = कुरुवंशस्य (कुरुवंश का) निधनम्=मरणम् (नाश) प्रतिज्ञातम्=संकल्पितम् (प्रतिज्ञा कर ली) धार्तराष्ट्रकुलक्षयः—धृतराष्ट्रस्यापत्यानि धार्तराष्ट्राः, तेषां कुलस्य क्षयः = कुरुवंशविनाशः (कौरव वंश का विनाश) । लज्जाकरः = लज्जाजनकः (शर्मिन्दा करने वाला) ।

अन्वयः—लोके क्रोधात् शत्रु कुलक्षयः युष्मान् ह्रेपयति । सभायाम् दाराणाम् केशकर्षणम् न लज्जयति ॥ १७ ॥

युष्मानीति । लोके = संसारे (संसार में) क्रोधात् = कोपात् (क्रोध से) ।

वाला हृदय होना ज्ञात होता है तथा कौरवराज (दुर्योधन) के साथ सन्धि न करना भी प्रकट हो जाता है ।

भीमसेन—मूर्ख ! यह सब अनर्थक है । कौरवों के साथ सन्धि न करना तो उसी समय सिद्ध हो गया था जब वन में जाते हुये हम सब लोगों ने ही कौरव वंश के विनाश की प्रतिज्ञा की थी तथा संसार में भी धृतराष्ट्र-पुत्रों के वंश का विनाश क्या आप सबको लज्जित कर रहा है ? फिर अरे मूर्ख !

संसार में क्रोध से शत्रु-कुल का विनाश तुम लोगों को लज्जित कर रहा है (परन्तु) भरी सभा में स्त्री (द्रौपदी) को बाल पकड़ कर खींचना लज्जित नहीं कर रहा है ॥१७॥

द्रौपदी—(जनान्तिकम् ।) णाह, ण लज्जन्ति एदे । तुमं वि दाव मा विसुमरेहि । [नाथ, न लज्जन्त एते । त्वमपि तावन्मा विस्मार्षीः ।]

भीमसेनः—(सस्मरणम् ।) वत्स, कथं चिरयति पाञ्चाली । त्वरते मे मनः सङ्ग्रामावतरणाय ।

सहदेवः—आर्य ! का खलु वेलाऽत्रभवत्याः प्राप्तायाः । किन्तु रोषावेशवशादार्याऽऽगताऽप्यार्येण नोपलक्षिता ।

भीमसेनः—(दृष्ट्वा सादरम्) देवि, समुद्धतामर्षैरस्माभिरागताऽपि भवती नोपलक्षिता । अतो न मन्युमर्हसि ।

शत्रुकुलक्षयः=अरिवंशविनाशः (शत्रुकुल का विनाश) । युष्मान्=भवतः (आप लोगों को) ह्लेपयति=लज्जयति (लज्जित करता है) । सभायाम्=राजसमाजे (सभा में) दाराणाम्=द्रौपदादिनारीणाम् (द्रौपदी आदि का) । केशकर्षणम्=कचकर्षणम् (बाल पकड़ कर खींचना) न लज्जयति=लज्जां नोत्पादयति (लज्जित नहीं कर रहा है) । पथ्यावक्त्रं वृत्तम् ॥ १७ ॥

द्रौपदी—लज्जन्ते=लज्जिताः भवन्ति (लज्जित होते हैं) । एते=इमे पाण्डवाः (यह) । मा निषेधेऽव्ययम् (मत) । विस्मार्षीः=विस्मर (भूल जाना) ।

भीमसेनः—चिरयति=विलम्बते (देर कर रही है) । त्वरते=शीघ्रतां करोति (शीघ्रता कर रहा है) । संग्रामावतरणाय—सङ्ग्रामे=युद्धे अवतरणम्=उत्तरणम्, तस्मै (युद्ध में उतरने के लिए) ।

सहदेवः—वेला=कालः (देर, समय) । प्राप्तायाः=आगतायाः (आई हुई को) । रोषावेशवशात्—रोषस्य=क्रोधस्यावेशः=आवेगस्तस्य वशात् (क्रोध के जोश में आकर) नोपलक्षिता=नावलोकिता (नहीं देखी) ।

भीमसेनः—समुद्धतामर्षैः—समुद्धतः=वर्धितः अमर्षः=कोपो येषां ते तैः ।

द्रौपदी—(एकान्त में) हे स्वामिन् ! यह लज्जित नहीं होते हैं । आप भी तो मुझे न भुला देना ।

भीमसेन—(याद करके) वत्स ! पञ्चाली देर क्यों कर रही है ? मेरा मन युद्ध में उतरने के लिए शीघ्रता कर रहा है ।

सहदेव—आर्य ! यहाँ द्रौपदी जी को आये कितनी देर हो गई है । किन्तु क्रोध के आवेशवश आई हुई भी आर्या (द्रौपदी) को आप नहीं देख पा रहे हैं ।

भीमसेन—(देखकर, सादर) देवि ! बढ़े हुये क्रोध वाले हम लोगों द्वारा आई हुई भी आप नहीं देखी जा रही हैं । अतः तुम्हें क्रोध नहीं करना चाहिये ।

द्रौपदी—णाह, उदासीणेषु तुम्हेसु मह मण्णु, ण उण कुविदेसु। [नाथ, उदासीनेषु युष्मासु मम मन्युः, न पुनः कुपितेषु।]

भीमसेनः—यद्येवमपगतपरिभवमात्मानं समर्थयस्व।

(द्रौपदी सखेदं निःश्वसिति।)

भीमसेनः—(हस्ते गृहीत्वा पार्श्वे समुपवेश्य, मुखमवलोक्य।) किं पुनरत्र-भवतीमुद्विग्नामिवोपलक्षयामि।

द्रौपदी—णाह, किं बि उव्वेअकालणं तुम्हेसु सण्णिहिदेसु। [नाथ, किमप्युद्वेगकारणं युष्माषु सन्निहितेषु।]

भीमसेनः—किमिति नावेदयसि। (केशानवलोक्य, निःश्वस्य) अथवा किमावेदितेन।

(बढ़े हुये क्रोधवाले) अस्माभिः = पाण्डवैः (हम पाण्डवों के द्वारा)। भवती= श्रीमती (देवीजी)। मन्युम् = क्रोधम् (रोष)।

द्रौपदी—उदासीनेषु = तटस्थवत्स्थितेषु (उदासीनदशा वालों में) मम = मे द्रौपद्याः (मेरा) न कुपितेषु = क्रुद्धेषु (क्रुद्ध जनों पर नहीं)।

भीमसेनः—अपगतपरिभवम्—अपगतः = दूरीभूतः परिभवः = तिरस्कारो यस्य तम् (अपगत तिरस्कार वाले को)! आत्मानम् = स्वम् (अपने को)। समर्थयस्व = जानीहि (समझो)। पार्श्वे = समीपे (पास में)। उद्विग्नाम् = खिन्नाम् इव (व्याकुल जैसी)। उपलक्षयामि = अवलोकयामि (देख रहा हूँ)।

द्रौपदी—उद्वेगकारणम् = खिन्नता हेतुः (व्याकुलता का कारण)। सन्नि-हितेषु = पार्श्वस्थितेषु (समीप में होने पर)।

भीमसेनः—आवेदयसि = कथयसि (बतला रही हो)। आवेदितेन = निवे-दितेन (कहने से)।

द्रौपदी—नाथ! आप लोगों के उदासीन होने पर मुझे क्रोध आता है (शत्रुओं पर) क्रुद्ध होने पर नहीं।

भीमसेन—यदि ऐसा है तो अपने अपमान को दूर हुआ समझ लो।

(द्रौपदी खेद के साथ श्वास छोड़ती है)।

भीमसेन—(हाथ पकड़ कर समीप बैठाकर तथा मुख देखकर) इस समय मैं आपको घबड़ाई हुई क्यों देख रहा हूँ?

द्रौपदी—नाथ! आपके समीप होने पर उद्वेग का कारण ही क्या?

भीमसेन—बतला क्यों नहीं रही हो। (बालों को खुला देखकर निःश्वास लेकर)। अथवा निवेदन करने से क्या—

जीवत्सु पाण्डुपुत्रेषु दूरमप्रोषितेषु च।
पाञ्चालराजतनया वहते यदिमां दशाम्॥ १८॥

द्रौपदी—हञ्जे बुद्धिमदिए! कहेहि दाव णाहस्स सव्वं ववसिदं। को अण्णो मह परिहवेण खिज्जइ। [हञ्जे बुद्धिमतिके! कथय तावन्नाथस्य सर्वं व्यवसितम्। कोऽन्यो मम परिभवेण खिद्यते।]

चेटी—जं देवी आणवेदि। (भीममुपसृत्य। अञ्जलिं बद्ध्वा) सुणादु कुमालो। इदो वि अहिअदरं अज्ज उव्वेअकालणं आसी देवीए। [यद्देव्याज्ञापयति। शृणोतु कुमारः। इतोऽप्यधिकतरमद्योद्वेगकारणमासीद्देव्याः।]

भीमसेनः—किं नामाऽस्मादप्यधिकतरम्। बुद्धिमतिके, तत्कथय कथय?

अन्वयः—पाण्डुपुत्रेषु जीवत्सु दूरम् अप्रोषितेषु च पाञ्चालराजतनया इमाम् दशाम् यत् वहते॥ १८॥

जीवत्स्विति। पाण्डुपुत्रेषु=युधिष्ठिरादिषु (युधिष्ठिरादि पाण्डवों के) जीवत्सु =जीवनं धारयत्सु (जीवित रहते हुये) दूरम्=विप्रकृष्टम् (दूर) अप्रोषितेषु= अप्रयातेषु (न जानेपर) च=तथा पाञ्चालराजतनया=पाञ्चाली (द्रौपदी)। इमाम्=ईदृशीम् (ऐसी) दशाम्=अवस्थाम् (दशा को)। यद् वहते= धारयति (वहन कर रही है) पथ्यावक्त्रं वृत्तम्॥ १८॥

द्रौपदी—सर्वम्=निखिलम् (सम्पूर्ण)। व्यवसितम्=निश्चितम् (यदद्य भानुमत्या सह सञ्जातम्, यतोऽयमेकाकी ईदृशो वर्तते यो मम परिभवेण खिद्यते नान्यः इति सर्वम्)। अन्यः=अपरः (दूसरा)। परिभवेण=तिरस्कारेण (अपमान से)।

चेटी—कुमारः=भीमसेनः। शृणोतु=आकर्णयतु (सुनें)। इतः अपि= अस्मात् अपि (इससे भी)। अधिकतरम्=बहुतरम्। उद्वेगकारणम्=खेदहेतुम् (खिन्नता का कारण)। देव्याः=द्रौपद्याः (देवी द्रौपदी का)।

पाण्डुपुत्रों के जीवित रहते हुए तथा दूर देश न जाने पर भी पाञ्चालराजतनया द्रौपदी इस दशा को जो प्राप्त हो रही है॥ १८॥

द्रौपदी—हञ्जे बुद्धिमतिके! स्वामी को सब कुछ (मेरे दुःखी होने का कारण) बतला दो। और दूसरा कौन मेरे अपमान से दुःखी होगा।

चेटी—देवी की जो आज्ञा (भीमसेन के समीप जाकर हाथ जोड़कर) कुमार सुन लें। इससे भी अधिक देवी द्रौपदी के उद्वेग का आज कारण क्या था?

भीमसेन—क्या कहा—इससे भी अधिक! तो कहो, कहो।

कौरव्यवंशदावेऽस्मिन्क एष शलभायते।
मुक्तवेणीं स्पृशन्नेनां कृष्णां धूमशिखामिव ॥ १९ ॥

चेटी—सुणादु कुमालो। अज्ज क्खु देवी अम्बासहिदा सुभद्दाप्पमुहेण सवत्तिवग्गेण परिवुदा अज्जाए गन्धालीए पादवन्दणं कादुं गदा आसी। [शृणोतु कुमारः। अद्य खलु देव्याम्बासहिता सुभद्राप्रमुखेन सपत्नीवर्गेण परिवृता आर्याया गान्धार्याः पादवन्दनं कर्तुं गता आसीत्।]

भीमसेनः—युक्तमेतत्। वन्द्याः खलु गुरवः। ततस्ततः।

अन्वयः—कौरव्यवंशदावे अस्मिन् मुक्तवेणीम् धूमशिखाम् इव एनाम् कृष्णाम् स्पृशन् कः एषः शलभायते ॥ १९ ॥

कौरव्येति। कौरव्यवंशदावे—कुरूणांराजा कौरव्यः, कौरव्ये साधवः कौरव्यास्तेषां वंशस्तस्यदावे=कुरुवंशवनाग्नौ (कुरुवंश की दावानल में) अस्मिन्=एतस्मिन् (इसमें)। मुक्तवेणीम्—मुक्ता=निर्बन्धा वेणी=केशवेशः यस्यास्ताम् (खुले जूड़े वाली)। धूमशिखाम् इव=धूमवेणीमिव श्यामलाम् (धुयें की शिखा के समान काली) एनाम् (इस) कृष्णाम्=द्रौपदीम् (कृष्णा को) स्पृशन्=संस्पृशन् (छूते हुये)। क एषः=कोऽयं जनः (यह कौन) शलभायते=शलभवदग्निमुखौ पतति (पतङ्गे के समान आग में गिर रहा है)। अत्रोपमालङ्कारः पथ्यावक्त्रं वृत्तम् ॥ १९ ॥

चेटी—अम्बासहिता=कुन्तीद्वितीया (माता कुन्ती के साथ)। सुभद्राप्रमुखेण—सुभद्रा=अर्जुनपत्नी प्रमुखे=प्रधाने स्थाने यस्य तेन (सुभद्राप्रमुख) सपत्नीवर्गेण—सपत्नीनाम्=समानभार्याणाम् वर्गः=समूहस्तेन (सपत्नियों के समुदाय के साथ)। परिवृता=आवृता (घिरी हुई)। आर्यायाः=देव्याः गान्धार्याः=दुर्योधनजनन्याः (गान्धारी देवी के) पादवन्दनम्=चरणाभिवादनम् (पाँव छूने)। कर्त्तुम्=विधातुम् (करने को) गता आसीत्=प्रस्थिता आसीत् (गईं थीं)।

भीमसेनः—एतत्=इदम् (यह)। युक्तम्=उचितम् (ठीक है)। खलु=

कौरवों के वंश (बाँस) के लिए इस दावानल में खुले जूड़े वाली धुयें की शिखा के समान काली, कृष्णा (द्रौपदी) को छूते हुये यह कौन पतङ्गा बनकर अपने को नष्ट किये दे रहा है ? ॥ १९ ॥

चेटी—कुमार सुनें। आज माता कुन्ती के साथ देवी द्रौपदी सुभद्रा आदि सपत्नीवर्ग को साथ लेकर आर्या गान्धारी के पादबन्दन के लिए गईं थीं।

भीमसेन—यह उचित ही है। वास्तव में गुरुजन वन्दनीय हैं। फिर क्या हुआ ?

चेटी—तदो पडिणिवुत्तमाणा भाणुमदीए देवी दिट्ठा । [ततः प्रतिनिवर्तमाना भानुमत्या देवी दृष्टा ।]

भीमसेनः—(सक्रोधम्) आः, शत्रोर्भार्यया दृष्टा । हन्त ! स्थानं क्रोधस्य साम्प्रतं देव्याः । ततस्ततः ।

चेटी—तदो ताए देवीं पेक्खिअ सहीजणदिण्णदिट्ठिए सगव्वं ईसि विहसिअ भणिअं । [ततस्तया देवीं प्रेक्ष्य सखीजनदत्तदृष्ट्या सगर्वमीषद्विहस्य भणितम् ।]

भीमसेनः—न केवलं दृष्टा । उक्ता च । अहो ? किं कुर्मः ? ततस्ततः ।

किल (वास्तवमें) गुरवः = गुरुजनाः (गुरुजन) । वन्द्याः = वन्दनीयाः (पूजनीय हैं) । ततस्ततः = तदनन्तरम् (तत्पश्चात्) ।

चेटी—ततः = तदन्तरम् । प्रतिनिवृत्तमाना=परावर्तमाना (लौट कर आती हुई) देवी=द्रौपदी । भानुमत्या = दुर्योधनपत्न्या (दुर्योधन की पत्नी भानुमती के द्वारा) दृष्टा = अवलोकिता (देखी गई) ।

भीमसेनः—सक्रोधम् = सरोषम् (क्रोध के साथ) । आः इति आक्षेपे । शत्रोः = रिपो (शत्रु की) भार्यया = पत्न्या (पत्नी के द्वारा) । दृष्टा = अवलोकिता (देखी गई) । हन्त इति खेदे । साम्प्रतम् = इदानीम् (अब) । देव्याः = द्रौपद्याः (देवी द्रौपदी के) क्रोधस्य = कोपस्य (क्रोध का) । स्थानम् = अवसरः (अवसर था) ।

चेटी—तया=देव्या (उन्होंने) । देवीम् = द्रौपदीम् (देवी को) प्रेक्ष्य = अवलोक्य (देखकर) सखीजनदत्तदृष्ट्या—सखीजने = वयस्या वर्गे दत्ता = प्रक्षिप्ता दृष्टिः=अक्षि यया सा तया (सखियों की ओर देखकर) । सगर्वम् = साभिमानम् (घमण्ड के साथ) ईषद् = किञ्चित् (थोड़ा सा) विहस्य = हसित्वा (हँसकर) । भणितम् = कथितम् (कहा) ।

भीमसेनः—किं कुर्मः = किं विधास्यामः (क्या करें) ।

चेटी—वहाँ से वापस लौटती हुई द्रौपदी को भानुमती ने देखा ।

भीमसेन—(क्रोध के साथ) अरे ! शत्रु की पत्नी ने देखा । हाय ! तब तो देवी का क्रोध करना उचित ही था । तदन्तर—

चेटी—तदनन्तर उन्होंने (भानुमती ने) देवी द्रौपदी को देखकर सखियों की ओर देखते हुये अभिमान के साथ कुछ हँस कर कहा ।

भीमसेन—केवल देखा ही नहीं, कहा भी । अहा, क्या करें । तदनन्तर ?

चेटी—अइ जण्णसेणि ! पञ्चगामा पत्थीअन्ति त्ति सुणीअदि । ता कीस दाणीं वि दे केसा ण संजमीअन्ति । [अयि याज्ञसेनि । पञ्चग्रामाः प्रार्थ्यन्त इति श्रूयते । तत् कस्मादिदानीमपि ते केशा न संयम्यन्ते ।]

भीमसेन—सहदेव, श्रुतम् !

सहदेवः—आर्य, उचितमेवैतत्तस्याः । दुर्योधनकलत्रं हि सा । पश्य—

स्त्रीणां हि साहचर्याद्भवन्ति चेतांसि भर्तृसदृशानि ।
मधुराऽपि हि मूर्च्छयते विषविटपिसमाश्रिता वल्ली ॥ २० ॥

चेटी—अयि यज्ञसेनि = हे द्रौपदि ! पञ्चग्रामाः = पञ्चग्रामप्रदानेन सन्धि कर्त्तुमिति (पाँच गाँव की शर्त्त से सन्धि) इति = एवम् (इस प्रकार) प्रार्थ्यन्ते =याच्यन्ते (माँगे जा रहे हैं)। श्रूयते = आकर्ण्यते (सुना जाता है) । तत = अतः कस्मात् = कस्माद्धेतोः (किस कारण से) इदानीमपि = सम्प्रत्यपि (अब भी) ते=तव (तुम्हारे) केशाः = कचानि (बाल) न संयम्यन्ते = न नियम्यन्ते (नहीं बाँधे जा रहे हैं) ।

भीमसेनः—सहदेव = भोः अनुज सहदेव ! श्रुतम् = आकर्णितम् (सुना) !

सहदेवः—आर्य ! = भ्रातः भीम ! एतस्याः = अस्याः भानुमत्याः (इस भानुमती के) उचितमेव = उपयुक्तमेव (उचित ही है) । हि = यतः (क्योंकि) सा = असौ (वह) । दुर्योधनकलत्रम्—दुर्योधनस्य कलत्रम् = भार्या (दुर्योधन की पत्नी) अस्तीति । पश्य = अवलोकय (देखिये)—

अन्वयः—हि साहचर्यात् स्त्रीणाम् चेतांसि भर्तृसदृशानि भवन्ति । हि विषविटपितसमाश्रिता वल्ली मधुरा अपि मूर्च्छयते ॥ २० ॥

स्त्रीणामिति । हि = यतः (क्योंकि) । साहचर्यात् = सहवासभावात् (साथ होने के कारण) । स्त्रीणाम् = नारीणाम् (स्त्रियों के) । चेतांसि = मनांसि

चेटी—(भानुमती ने कहा), हे याज्ञसेनि ! सुनते हैं—पाँच गाँव माँगे जा रहे हैं । तो फिर अब भी तुम्हारे बाल क्यों नहीं बाँधे जा रहे हैं ?

भीमसेन—अरे सहदेव ! सुना ?

सहदेव—आर्य ! उस (भानुमती) के लिये तो (इस प्रकार कहना) उचित ही है । क्योंकि वह तो दुर्योधन (दुष्ट) की पत्नी है । देखिये—

पतियों के साहचर्य से स्त्रियों के चित्त भी पतियों के समान ही हो जाते हैं क्योंकि विष के पेड़ पर आश्रित (पौंडो हुई) लता (बेल) मधुर होने पर भी लोगों को मूच्छित ही कर देती है ॥ २० ॥

भीमसेनः—बुद्धिमतिके ! ततो देव्या किमभिहितम् ।

चेटी—कुमाल, जइ परिजणहीणा भवे तदो देवी भणादि । [कुमार, यदि परिजनहीना भवेत्तदा देवी भणति ।]

भीमसेनः—किं पुनरभिहितं भवत्या ।

चेटी—कुमाल ! तदो मए भणिअं—'अइ भाणुमदि ! तुम्हाणं अमुक्केसु केसहत्थेसु कधं अह्माणं देवीए केसा संजमीअन्ति'त्ति । [कुमार ततो मया भणितम्—'अयि भानुमति ! युष्माकममुक्तेषु केशहस्तेषु कथमस्माकं देव्याः केशाः संयम्यन्त' इति ।]

(चित्त) । भर्तृसदृशानि—भर्त्तुः=पत्युः सदृशानि=अनुकूलानि (पति के समान ही) । भवन्ति=सन्ति (होते हैं) । हि=यस्मात् कारणात् (यही कारण है कि) विषविटपितसमाश्रिता—विटपोऽस्त्यस्येति विटपी, विषस्य विटपी, तं समाश्रिता=विषवृक्षाश्रिता (विषैले पेड़ पर फैली हुई) वल्ली=लता ('वल्ली तु व्रततिर्लता' इत्यमरः) । मधुरा अपि=मनोहराऽपि मधुर गुणापि (मधुर होने पर भी) । मूर्च्छयते=मूर्च्छितमेव करोति (बेहोश कर देती है) । अर्थान्तरालङ्कारः । आर्यावृत्तम् । तद्यथा—यस्याः पादे प्रथमे द्वादश मात्रा तथा तृतीयेऽपि । अष्टादश द्वितीये चतुर्थके पञ्चदशसाऽऽर्या ।। २० ।।

भीमसेनः—देव्या=द्रौपद्या (द्रौपदी ने) । अभिहितम्=कथितम् (कहा) ।

चेटी—यदि=चेत् (यदि) । परिजनहीना—परिजनेन हीना=दासीरहिता (दासियों से रहित) । भवेत्=स्यात् (होती) । तदा=तर्हि (तो) । भणति=कथयति (कहती) ।

भीमसेनः—भवत्या=त्वया चेट्या (तुमने) किमभिहितम्=किमुक्तम् (क्या कहा) ।

चेटी—अयि भानुमति=हे कुरुराजपत्नि ! युष्माकम्=वः (तुम्हारे) अमुक्तेषु=अनिर्बन्धेषु (खुले विना) केशेषु=कचेषु (बालों में) भर्तृवधाभावादिति भावः । अस्माकम्=नः (हमारी) देव्याः=महाराज्ञ्याः (महारानी के)

भीमसेन—बुद्धिमतिके ! तब देवी (द्रौपदी) ने क्या कहा ?

चेटी—हे कुमार ! यदि परिजनों से हीन देवी होती तो वह कहतीं ।

भीमसेन—तो फिर तुमने क्या कहा ?

चेटी—हे कुमार ! मैंने इस प्रकार कहा—हे भानुमति ! जब तक तुम्हारे बाल न खुल जायें, हमारी देवी अपने बाल कैसे बाँध लेंगी ।

भीमसेनः—(सपरितोषम् ।) साधु बुद्धिमतिके, साधु । तदभिहितं यदस्मत्परिजनोचितम् । (सावष्टम्भमासनादुत्तिष्ठन्) अयि पाञ्चालराजतनये ! अलं विषादेन । किं बहुना, यत्करिष्ये तच्छ्रूयताम् । अचिरेणैव कालेन—

चञ्चद्भुजभ्रमितचण्डगदाऽभिघात-
सञ्चूर्णितोरुयुगलस्य सुयोधनस्य ।
स्त्यानाऽवनद्धघनशोणितशोणपाणि-
रुत्तंसयिष्यति कचांस्तव देवि ! भीमः ॥ २१ ॥

केशाः = कचानिः (वाल) । कथम्=केन प्रकारेण (कैसे) । संयम्यन्ते=वध्यन्ते (वँध सकेंगे) ।

भीमसेनः—सपरितोषम् = ससन्तोषम् (सन्तोष के साथ) । साधु=शोभनम् (शावाश) त्वया=बुद्धिमतिकया (तुमने) । तत् = तथा (वैसा) । अभिहितम् =भणितम् (कह दिया) । यत्=यथा (जैसा) । अस्मत् परिजनोचितम्=अस्माकम् परिजनानाम् = दासीजनानाम् (परिजनों के) उचितम् = अनुकूलम् (योग्य) सावष्टम्भम् = सगर्वम् (अभिमान के साथ) । आसनात् = विष्टरात् (आसन से) उत्तिष्ठन् = उच्चलन् (उठते हुये) । पाञ्चालराजतनये=हे द्रौपदि ! विषादेनालम् = दुःखं मा कुरु (विषाद मत करो) । किं बहुना = किमधिकेन (अधिक क्या कहें) । यत् = यत् कार्यम् (जो) । करिष्ये = विधास्यामि (करूँगा) । तत् श्रूयताम् = आकर्ण्यताम् (सुनिये) । अचिरेण एव = शीघ्रेणैव कालेन = समयेन (शीघ्र ही) ।

अन्वयः—हे देवि ! चञ्चद्भुजभ्रमितचण्डगदाऽभिघातसञ्चूर्णितोरुयुगलस्य सुयोधनस्य स्त्यानावनद्धघनशोणितशोणपाणिः भीमः तव कचान् उत्तंसयिष्यति ॥ २१ ॥

चञ्चदिति । हे देवि = अयि द्रौपदि ! चञ्चद्भुजभ्रमितचण्डगदाभिघातसञ्चूर्णि

भीमसेन—(सन्तोष के साथ) शावास बुद्धिमतिके ! शावास । तुमने वह बात कह दी जो कि हमारे परिजनों के कहने योग्य थी । (अहंकार के साथ आसन से उठते हुए) हे पाञ्चालतनये ! विषाद मत करो । अधिक क्या कहें, मैं जो करूँगा सो सुन लो । थोड़े ही समय में—

हे देवि ! चञ्चल भुजाओं द्वारा घुमाई गई प्रचण्ड गदा के प्रहार से भग्न हुई दोनों जाँघों वाले दुर्योधन के चिकने तथा चिपके हुये घने रुधिर से लाल वर्ण के हाथों वाला (यह) भीमसेन तुम्हारे बालों को अलंकृत करेगा ॥ २१ ॥

द्रौपदी—किं णाह, दुक्करं तुए परिकुविदेण। सव्वहा अणुगेह्लन्तु एदं ववसिदं दे भादरो। [किं नाथ, दुष्करं त्वया परिकुपितेन। सर्वथाऽनुगृह्णन्त्वेतद् व्यवसितं ते भ्रातरः।]

सहदेवः—अनुगृहीतमेतदस्माभिः।

(नेपथ्ये महान्कलकलः। सर्वे सविस्मयमाकर्णयन्ति।)

भीमसेनः—(सानन्दम्।) आः किमेतत् ?

तोरुयुगलस्य—चञ्चद्भ्याम् = चलद्भ्याम् भुजाभ्याम् = बाहुभ्याम् भ्रमिता = प्रेरिता या चण्डा = भीमा गदा, तस्या अभिघातेन = प्रहारेण सञ्चूर्णितम् = भग्नम् उरुयुगलम् = जघनद्वयम् यस्य सः तस्य (चञ्चल भुजाओं के द्वारा घुमाते हुये प्रचण्ड गदाप्रहार से भंग किये गये जघनस्थलों वाले)। सुयोधनस्य = दुर्योधनस्य (दुर्योधन के) स्त्यानावनद्धघनशोणितशोणपाणिः—स्त्यानम् = स्निग्धम् अवनद्धम् = संसक्तम् घनञ्च = निविडञ्च यत् शोणितम् = रुधिरम् तेन शोणः = रक्तवर्णः पाणिः = करो यस्य सः (चिकने, चिपके हुये घने रक्त से लाल बने हाथों वाला) भीमः = भीमसेनोऽयम् (यह भीमसेन)। तव = ते (तुम्हारे)। कचान् = केशान् (बालों को)। उत्तंसयिष्यति = अलङ्करिष्यति। वसन्ततिलकावृत्तम्। तद्यथा—उक्ता वसन्ततिलका तभजाजगौगः ॥ २१ ॥

द्रौपदी—दुष्करम् = कठिनम् (कठिन)। त्वया = भीमेन (भीमसेन द्वारा) परिकुपितेन = क्रुद्धेन (क्रोध किये हुये)। सर्वथा = नितान्तम् (सब प्रकार से)। ते = तव (तुम्हारे) भ्रातरः = बान्धवाः (भाई)। एतत् = इदम् (यह)। व्यवसितम् = निश्चितम् (निश्चय को)। अनुगृह्णन्तु = स्वीकुर्वन्तु (स्वीकार कर लें)।

सहदेवः—अनुगृहीतम् = स्वीकृतम् युष्मत् कथितं सर्वमस्माभिः = पाण्डवैः (आपका कहा हुआ हम सबने)।

द्रौपदी—हे स्वामिन्! क्रुद्ध हुये आपके लिए कुछ भी कठिन नहीं है। आपके इस निश्चय को सर्वथा आपके भाइयों को भी मानना चाहिये।

सहदेव—आपका कहा हुआ हमने स्वीकार किया।

(पर्दे के पीछे अत्यन्त कोलाहल होता है। सभी विस्मय से सुनने लगते हैं)

भीमसेन—(आनन्द के साथ) अरे! यह क्या है—

मन्थायस्तार्णवाम्भःप्लुतकुहरचलन्मन्दरध्वानधीरः
कोणाघातेषु गर्जत्प्रलयघनघटाऽन्योन्यसंघट्टचण्डः।
कृष्णाक्रोधाग्रदूतः कुरुकुलनिधनोत्पातनिर्घातवातः
केनास्मत्सिंहनादप्रतिरसितसखो दुन्दुभिस्ताडितोऽयम् ॥ २२ ॥

अन्वयः—मन्थायस्तार्णवाम्भः प्लुतकुहरचलन्मन्दरध्वानधीरः कोणाघातेषु, गर्जत्प्रलयघनघटाऽन्योन्यसंघट्टचण्डः कृष्णाक्रोधाग्रदूतः, कुरुकुलनिधनोत्पातनिर्घातवातः, अस्मत्सिंहनाद प्रतिरसितसखः अयम् दुन्दुभिः केन ताडितः ॥ २२ ॥

मन्थायेति। मन्थायस्तार्णवाम्भःप्लुतकुराचलन्मन्दरध्वानधीरः—मन्थे=मन्थन-क्रियायाम् आयस्तः=क्षुब्धः यः अर्णवः=सिन्धुः, तस्य यदम्भः=जलम् तेन प्लुतम्=व्याप्तम् कुहरम्=छिद्रम् यस्य तथाभूतस्य चलतः=भ्रमतः मन्दरस्य =मन्दराचलस्य ध्वानः=ध्वनिरिव धीरः=गम्भीरः (मन्थन काल से क्षुब्ध सागर के जल से व्याप्त कुहर (गड्ढा) वाले हिलते हुये मन्दराचल की ध्वनि के समान गम्भीर)। कोणाघातेषु=भेरीणां दशसहस्रेषु एककाल कृत प्रहारेषु (बहुत जोर के प्रहारों में)। गर्जत्प्रलयघनघटाऽन्योन्यसंघट्टचण्डः—गर्जन्त्यः=शब्दाय-मानाः प्रलयघनानाम्=प्रलयकालीन मेघानाम् याः घटाः=पंक्तयस्तासामन्योन्य

मन्थन-काल मे क्षुब्ध समुद्र के जल से व्याप्त कुहर (गड्ढे) वाले घूमते हुये मन्दरा-चल की ध्वनि के समान गम्भीर कोणाघातों (भयङ्कर प्रहारों) में गर्जन करते हुये प्रलय-कालीन मेघ घटाओं के आपस में टकराने से भयङ्कर, द्रौपदी के क्रोध की आगे-आगे चलकर उद्घोषणा करने वाले कौरववंश के विनाश के अशुभसूचक प्रचण्ड पवन के समान, हमारे सिंहनाद की प्रतिध्वनि के समान ध्वनि वाला यह दुन्दुभि (भेरी बाजा) किसने बजा दिया है ॥ २२ ॥

टिप्पणी—कोणाघात—एक लाख डमरू तथा दश हजार नगाड़ों के एक साथ बजने से जितने जोर का धमाका होता है उतनी जोर की चोट (आघात) करना कोणाघात कहलाता है। भरतमुनि ने नाट्यशास्त्र में कहा है—ढक्काशतसहस्राणि भेरीदशशतानि च, एकदा यत्र हन्यन्ते कोणाघातः स उच्यते॥

निर्घातवात—आकाश में तीव्र वायु का वायु से टकरा कर पृथ्वी की ओर को तेजी के साथ चलना। यथा—यदान्तरीक्षे बलवान् मारुतो मारुताहतः। पतत्यधः सनिर्घातो जायते वायुसंभवः॥

मन्दरध्वानधीर—प्राचीनकाल में अमृतप्राप्ति के लिए देवताओं तथा दानवों ने समुद्र-मन्थन किया जिसमें मन्दराचल को मथानी (रई) तथा वासुकि नाग को मथने की रस्सी बनाया था। उसके मन्थन-काल में घोर ध्वनि हुई थी। उसी की ओर यहाँ इंगित किया गया है।

(प्रविश्य सम्भ्रान्तः ।)

कञ्चुकी—कुमार, एष खलु भगवान्वासुदेवः ।

(सर्वे कृताञ्जलयः समुत्तिष्ठन्ति ।)

भीमसेनः—(ससम्भ्रमम् ।) क्वासौ क्वासौ, भगवान् ?

संघट्टः = पारस्परिक संघर्षणम् तद्वच्चण्डः=भीमः (गर्जती हुई प्रलय घनघटाओं) के पारस्परिक संघर्षण के समान भयङ्कर)। कृष्णाक्रोधाग्रदूतः—कृष्णायाः = द्रौपद्याः क्रोधस्य = रोषस्याग्रदूतः = पुरोवर्त्युद्घोषकः (द्रौपदी के क्रोध के आगे आग चलने वाला दूत)। कुरुकुलनिधनोत्पातनिर्घातवातः—कुरुकुलस्य = कौरव-वंशस्य निधनम् = विनाशः, तस्योत्पातभूतः=अशुभसूचकः यः निर्घातवातः प्रचण्डा-निल इव (कौरव वंश के विनाश के अशुभसूचक प्रचण्ड पवन के समान) अस्मत्-सिंहनादप्रतिरसितसखः—अस्माकं सिंहनादस्य = गर्जनस्य प्रतिरसितम् = प्रति-ध्वनिः तस्य सखा = मित्रम् इव (हमारे गर्जन की प्रतिध्वनि के समान ध्वनि वाला) अयम् = एषः (यह)। दुन्दुभिः=भेरी ('भेर्यानक दुन्दुभिः' इत्यमरः)। केन = केन जनेन (किसने)। ताडितः = आहतः (बजा दिया)। अत्रोत्प्रेक्षा-लङ्कारः। स्रग्धरावृत्तम्। तद्यथा—म्रभ्नैर्याणां त्रयेण त्रिमुनियतियुतं स्रग्धरा कीर्तितेयम् ॥ २२ ॥

सम्भ्रान्तः = सभीतः (भय के साथ)।

कञ्चुकी—कुमार = भीम ! (हे कुमार भीम)। एष = अयम् (यह) खलु = नूनम् (निश्चय ही) भगवान् वासुदेवः=भगवान् कृष्णः (इत्यर्द्धोक्ते साक्षात् भगवन्तं कृष्णं समुपस्थितं मत्वा)।

सर्वे = सर्वे जनाः (सबलोग) कृताञ्जलयः—कृताः अञ्जलियो यैस्ते (हाथ जोड़े हुए)। समुत्तिष्ठन्ति = स्वासनेभ्य उत्थिताः भवन्ति (उठ खड़े होते हैं)।

भीमसेनः—क्व = कुत्र (कहा हैं)। असौ = सः (वह)।

(प्रवेश करके, भयभीत होकर)

कञ्चुकी—हे कुमार ! यह भगवान् वासुदेव…… ।

(सभी लोग हाथ जोड़कर खड़े हो जाते हैं।)

भीमसेन—(घबड़ाकर) वह कहाँ हैं, कहाँ है भगवान् ?

टिप्पणी—कञ्चुकी—राजमहलों (अन्तःपुर) में रहने वाला वृद्ध कुशल नपुंसक सेवक नाट्यशास्त्र में कञ्चुकी कहलाता है। यह प्रायः ब्राह्मण जाति का ही होता है। यथा—अन्तःपुरचरो वृद्धो विप्रो गुणगणान्वितः। सर्वकार्यार्थकुशलः कञ्चुकीत्यभिधीयते ॥ (साहि०)

कञ्चुकी—पाण्डवपक्षपातामर्षितेन सुयोधनेन संयमितुमारब्धः ।

(सर्वे सम्भ्रमं नाटयन्ति ।)

भीमसेनः—किं संयतः ।

कञ्चुकी—नहि नहि, संयमितुमारब्धः ।

भीमसेनः—किं कृतं देवेन ।

कञ्चुकी—ततः स महात्मा दर्शितविश्वरूपतेजःसम्पातमूर्च्छितमवधूय कुरुकुलमस्मच्छिबिरसन्निवेशमनुप्राप्तः कुमारमविलम्बितं द्रष्टुमिच्छति ।

कञ्चुकी—पाण्डवपक्षपातामर्षितेन—पाण्डवानां पक्षे=युधिष्ठिराद्यनुकूले पातः =पतनम् तेन अमर्षितः =क्रुद्धस्तेन (पाण्डव के पक्षपात से क्रुद्ध) । सुयोधनेन = दुर्योधनेन (दुर्योधन के द्वारा) । समयितुम् = वद्धुम् (बाँधने को) । आरब्धः= प्रारब्धः (आरम्भ किया) ।

(नाटयन्ति = अभिनयन्ति) ।

भीमसेनः—संयतः = वद्धः (बाँध लिये गये) ।

भीमसेनः—देवेन = भगवता कृष्णेन (भगवान् वासुदेव ने) । किं कृतम् = विहितम् (क्या किया ?)

कञ्चुकी—महात्मा—महांश्चासावात्मा = महापुरुषः (महापुरुष) । दर्शित-विश्वरूपतेजःसम्पातमूर्च्छितम्—दर्शितस्य = प्रदर्शितस्य विश्वरूपस्य = विराट् स्व-रूपस्य तेजसः = प्रकाशस्य सम्पात = अभिघातस्तेन मूर्च्छितम् (दिखलाये गये विराट रूप के प्रकाश के अभिघात से मूर्च्छित) । कुरुकुलम् = कौरव समूहम् (कौरव कुल को) । अवधूय = तिरस्कृत्य (तिरस्कार कर) । अस्मच्छिविर-सन्निवेशम्—अकस्माकं = पाण्डवानाम् शिविरस्य = सैन्यविन्यासस्थलस्य सन्नि-वेशम् = निकटम् (हमारे शिविर के समीप) । अनुप्राप्तः = समायातः (आ गये

कञ्चुकी—पाण्डवों का पक्षपात करने से क्रुद्ध सुयोधन ने (कृष्ण को) बाँधने का प्रयत्न किया ।

(सभी भयभीत होने का अभिनय करते हैं ।)

भीमसेन—क्या पकड़ लिया ?

कञ्चुकी—नहीं, नहीं, पकड़ना प्रारम्भ किया ।

भीमसेन—भगवान् वासुदेव ने क्या किया ?

कञ्चुकी—तब वह महापुरुष अपने विराट् रूप तेज के प्रहार से समस्त कौरवों को मूर्च्छित कर तिरस्कार करके हमारे शिविर के निकट आ गये और आपको शीघ्र देखना चाहते हैं ।

भीमसेनः—(सोपहासम् ।) किं नाम दुरात्मा सुयोधनो भगवन्तं संयमितुमिच्छति । (आकाशे दत्तदृष्टिः ।) आः ! दुरात्मन्कुरुकुलपांसुल ! एवमतिक्रान्तमर्यादे त्वयि निमित्तमात्रेण पाण्डवक्रोधेन भवितव्यम् ।

सहदेवः—आर्य, किमसौ दुरात्मा सुयोधनहतको वासुदेवमपि भगवन्तं स्वरूपेण न जानाति ।

भीमसेनः—वत्स, मूढः खल्वयं दुरात्मा कथं जानातु ! पश्य—

हैं)। कुमारम् = राजकुमारं भीमसेनम् (कुमार को) अविलम्बितम् = द्रुतम् (शीघ्र) । दृष्टुम् = अवलोकितम् (देखने को) । इच्छति = अभिलषति (चाहते हैं) ।

भीमसेन—सोपहासम् = अट्टहाससहितम् (अपहास के साथ) । दुरात्मा = दुष्टः आत्मा यस्य सः दुरात्मा=नीचः (नीच) । संयमितुम् = बद्धुम् (बाँधना) इच्छति=वाञ्छति (चाहता है) आकासे=नभसि (आकाश में) दत्तदृष्टिः—दत्ता दृष्टिर्येन सः = कृतेक्षणः (देखते हुये) । आः दुरात्मन् = अयि दुष्ट ! कुरुकुलपांसुल = कुरुकुले पांसुलः = पापकर्त्ता (कौरव वंश में पाप करने वाले) । एवम् = इत्थम् (इस प्रकार) । अतिक्रान्तमर्यादे—अतिक्रान्ता = उल्लंघिता मर्यादा = सीमा येन स तादृशि (मर्यादा का उल्लंघन किये हुये) । त्वयि = दुर्योधने (तुझ पर) । निमित्तमात्रेण = कारणमात्रेणः (नाम मात्र को) । पाण्डवक्रोधेन— पाण्डवानां क्रोधस्तेन = पाण्डव रोषेण (पाण्डवों के क्रोध से) भवितव्यम् अर्थात् कौरवानां विनाशस्तु निश्चितमेव, पाण्डवास्तत्र कारणं भविष्यति इत्याशयः ।

सहदेवः—आर्य ! = भ्रातः (हे भाई) । असौ = सः (वह) । दुरात्मा = दुष्टः सुयोधन. कौरवज्येष्ठः (दुर्योधन) । वासुदेवम् अपि = भगवन्तं कृष्णमपि (भगवान् वासुदेव को भी) स्वरूपेण = तत्त्वतः (वास्तविक रूप से) । न जानाति = नावगच्छति (नहीं जानता है) ।

भीमसेन—(अपहास के साथ) क्या दुष्ट सुयोधन भगवान् को बाँधना चाहता है । (आकाश की ओर टकटकी बाँधकर) अरे दुष्ट ! कुरुकुल में पापकर्त्ता ! इस प्रकार मर्यादाहीन तुझ पर क्रोध करने में पाण्डव कारणमात्र ही होंगे (तेरा विनाश तो निश्चित ही है) ।

सहदेव—हे आर्य ! क्या यह दुरात्मा सुयोधन भगवान् के स्वरूप को भी नहीं जान रहा है ?

भीमसेन—वत्स ! मूढ यह दुष्टात्मा (दुर्योधन) कैसे जान पाये । देखो—

आत्मारामा विहितरतयो निर्विकल्पे समाधौ
ज्ञानोत्सेकाद्विघटिततमोग्रन्थयः सत्त्वनिष्ठाः ।
यं वीक्षन्ते कमपि तमसां ज्योतिषां वा परस्तात्
तं मोहान्धः कथमयममुं वेत्तु देवं पुराणम् ॥ २३ ॥

अवन्यः—आत्मारामाः निर्विकल्पे समाधौ विहितरतयः ज्ञानोद्रेकात् विघटित-तमोग्रन्थयः सत्वनिष्ठाः, तमसाम् वा ज्योतिषाम् परस्तात् यम् कम्, अपि वीक्षन्ते, तम् अमुम् पुराणाम् देवम् मोहान्धः अयम्, कथम् वेत्तु ॥ २३ ॥

आत्मारामा इति । आत्मारामाः—आत्मनः आनन्दस्थानत्वात् स एव आरामः =उद्यानम् येषां ते । (आत्मारूपी उद्यान वाले अर्थात् आत्मारूपी उद्यान में विचरण करने वाले) निर्विकल्पे=ज्ञातृज्ञेयादिविभेदरहिते (ज्ञाता तथा ज्ञेय का भेद-रहित) समाधौ=नियमविशेषे (समाधि में)। विहितरतयः—विहिता= प्रेरिता रतिः=तल्लीनता येषां ते (की गई तल्लीनता वाले)। ज्ञानोद्रेकात्—ज्ञानस्य=प्रकाशस्योद्रेकः आधिक्यम् तस्मात् (ज्ञान के उद्रेक से)। विघटित-तमोग्रन्थयः—तमसोग्रन्थिः विघटिता तमोग्रन्थिर्यैस्ते=विच्छिन्नाज्ञानबन्धाः (नष्ट हुये अज्ञान वन्धनों वाले)। सत्त्वनिष्ठाः—सत्वे=सत्वगुणे निष्ठा=प्रीतिर्येषां ते= सात्विकभावयुक्ताः (सात्विक भावों से सम्पन्न)। तमसाम्=अन्धकाराणाम् (मिथ्याज्ञान रूपी अन्धकारों के) वा=अथवा ज्योतिषाम्=तेजसाम् (तेज, तत्त्वज्ञान के)। परस्तात्=परम् (बढ़कर) यम् कम् अपि=यादृशम-निर्वचनीयमपि (जिस किसी अनिर्वचनीय को)। वीक्षन्ते=अवलोकयन्ति (देखते हैं) तम्=तादृशम् (वैसे)। अमुम्=एतम् (उसको)। पुराणम्=सनातनम् देवम्=ईशम् (पुराण पुरुष परमात्मा को)। मोहान्धः—मोहेनान्धः=अज्ञानमूढः (अज्ञान के कारण मूर्ख)। अयम्=एषः दुर्योधनः (यह दुर्योधन)। कथम्= केन प्रकारेण (कैसे)। वेत्तु=जानातु (जान सके)। मन्दाक्रान्ता वृत्तम्। तद्यथा—मन्दाऽम्बुधिरसनगैर्मोभनौगौय युग्मम् ॥ २३ ॥

आत्मारूपी उपवन में रमण करने वाले, निर्विकल्पक (ज्ञाता-ज्ञान-ज्ञेय को न जानने वाली) समाधि में प्रीति रखने वाले ज्ञान के बाहुल्य से नष्ट हुई अज्ञानरूपी मोहग्रन्थि वाले, सात्विक भावों से युक्त मुनिजन अज्ञानान्धकार अथवा ज्ञानज्योति के आगे (बढ़कर) जिस किसी को भी देखते हैं, उन पुराणपुरुष परमात्मा को मोहान्ध यह दुर्योधन कैसे समझ पाये ॥ २३ ॥

आर्य जयन्धर, किमिदानीमध्यवस्यति गुरुः ।

कञ्चुकी—स्वयमेव गत्वा महाराजस्याऽध्यवसितं ज्ञास्यति कुमारः । (इति निष्क्रान्तः ।)

(नेपथ्ये कलकलानन्तरम् !)

भो ! भो ! द्रुपद-विराट-वृष्ण्यन्धक-सहदेव-प्रभृतयोऽस्मदक्षौहिणीपतयः कौरवचमूप्रधानयोधाश्च, शृण्वन्तु भवन्तः ।

यत्सत्यव्रतभङ्गभीरुमनसा यत्नेन मन्दीकृतं
यद्विस्मर्तुमपीहितं शमवता शान्तिं कुलस्येच्छता ।

गुरुः = युधिष्ठिरः (भाई युधिष्ठिर) । इदानीम् = साम्प्रतम् (अब) । अध्यवस्यति = निश्चयं करिष्यति (निश्चय कर रहे हैं) ।

कञ्चुकी—अध्यवसितम् = निश्चयम् (निश्चय) स्वयमेव = आत्मनैव (अपने आप ही) गत्वा = एत्य (जाकर) । ज्ञास्यति = वेत्स्यति (जान लेंगे) । निष्क्रान्तः = निर्गत. (निकल गया) ।

भोः भोः द्रुपद-विराट-वृष्ण्यन्धकप्रभृतयः = अये द्रुपद-विराट-वृष्ण्यन्धकादयः (अरे द्रुपद-विराट-वृष्ण्यन्धक इत्यादि) । अस्मदक्षौहिणीपतयः = अस्माकम् अक्षौहिणीपतयः=सेनापतयः (हमारे सेनापतियों) । कौरवचमूप्रधानयोधाः—कौरवाणां चमू, तस्याः प्रधानाः=प्रमुखाः योधाः=सैनिकाः (हे कौरव सेना के प्रमुख सैनिकों) भवन्तः = श्रीमन्तः (आप लोग) । शृण्वन्तु = आकर्णयन्तु (सुनो) ।

अन्वयः—सत्यव्रतभङ्गभीरुमनसा (युधिष्ठिरेण) यत् यत्नेन मन्दीकृतम् कुलस्य शान्तिम् इच्छता शमवता (तेन) यत् विस्मर्तुम् अपि ईहितम् द्युतारणिसम्भृतम् तत् यौधिष्ठिरम्, क्रोधज्योतिः नृपसुताकेशाम्बराकर्षणैः महत् इदम् कुरुवने जृम्भते ।। २४ ।।

सत्यव्रतेति । सत्यव्रतभङ्गभीरुमनसा—सत्यम् = तथ्यम् एव व्रतम् = नियमः,

---

आर्य जयन्धर ! अब भ्राता जी क्या निश्चय कर रहे हैं ?

कञ्चुकी—अपने आप ही जाकर कुमार महाराज का निश्चय जान लेंगे। (इस प्रकार निकल जाता है) ।

(नेपथ्य में कोलाहल के अनन्तर)

हे हे द्रुपद विराट वृष्ण्यन्धक आदि हमारी सेना के सेनापतियों तथा कौरव सेना के प्रमुख योद्धाओं ! आप सुन लें ।

सत्य प्रतिज्ञा के भङ्ग होने के डर से व्याकुल मन युधिष्ठिर ने जो क्रोधाग्नि प्रयत्न करके मन्द कर दी थी, वंश का कल्याण चाहते हुये शान्त धर्मराज ने जिसे भुलाने की भी

तद्द्यूतारणिसम्भृतं नृपसुताकेशाम्बराकर्षणैः
क्रोधज्योतिरिदं महत्कुरुवने यौधिष्ठिरं जृम्भते ॥ २४ ॥

भीमसेनः—(आकर्ण्य । सहर्षाऽमर्षम्) जृम्भतां जृम्भतामप्रतिहतप्रसरमार्यस्य क्रोधज्योतिः ।

तस्य भङ्गः = विच्छेदः, तस्मात् भीरुः = भीतम् मनः = चेतः यस्य, तेन (सत्यव्रत के भङ्ग होने से भयभीत मन से) (युधिष्ठिरेण)। यत् क्रोधज्योतिः (जो) यत्नेन = प्रयत्नेन (प्रयत्न से)। मन्दीकृतम् = शिथिलीकृतम् (मन्द बना रखा था)। कुलस्य=वंशस्य (वंश की)। शान्तिम्=शम् (शान्ति को)। इच्छता = अभिलषता (चाहते हुये) शमवता = शान्तेन (तेन युधिष्ठिरेण)। यत् = क्रोधज्योतिः (जो क्रोध ज्योति)। विस्मर्त्तुम् अपि = स्मृतिपथादपसारयितुमपि (भुलाने को भी)। ईहितम् = चेष्टितम् (चेष्टा की)। द्यूतारणिसम्भृतम्—द्यूतमेवारणिः = कैतवरूपयज्ञकाष्ठभेदः, तत्र सम्भृतम् = समुपचितम् तत् (जुआ रूपी अरणी में भरी हुई) 'कैतवं तु छले द्यूते' इति मेदिनी। तत्=तथा यौधिष्ठिरम् = युधिष्ठिरे जातम् (युधिष्ठिर में उत्पन्न हुई)। क्रोधज्योतिः=क्रोधाग्निः (क्रोधाग्नि) नृपसुताकेशाम्बराकर्षणैः—नृपसुतायाः = द्रौपद्याः, केशाम्बराणाम्=कचवस्त्राणाम्, आकर्षणैः=आहरणैः (नृपसुता द्रौपदी के केश तथा वस्त्रों को खींचने से)। महत्= अधिकम् (बहुत)। इदम् = एतत् (यह) कुरुवने = कुरुकुले (कौरवों के वंश रूपी वन में) जृम्भते = वर्धते (बढ़ रही है)। अत्रोपमाकाव्यलिङ्गञ्च। शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम् ॥ २४ ॥

भीमसेनः—आकर्ण्य = श्रुत्वा (सुनकर)। सहर्षाऽमर्षम्—हर्षेणामर्षेण च सहितम् = सानन्दकोपम् (आनन्द तथा क्रोध के साथ)। आर्यस्य = ज्येष्ठभ्रातुः (पूजनीय भ्राता जी का)। अप्रतिहतप्रसरम्—अप्रतिहतः = अनिवारितः प्रसरः = वेगः यस्य तत् (किसी द्वारा वेग न रोका जा सकने वाला)। क्रोधज्योतिः = कोपानलः (क्रोधानल)। जृम्भताम् = परिस्फुरताम् (और बढ़े)।

चेष्टा की थी, जुआ रूपी अरणि में भरी हुई युधिष्ठिर के हृदय की यह क्रोधाग्नि नृपसुता द्रौपदी के केश तथा वस्त्र खींचे जाने के कारण अत्यधिक कौरवों के वंश रूपी वन में प्रकाशित होने (चमकने) जा रही है ॥ २४ ॥

भीमसेन—(सुनकर हर्ष तथा क्रोध के साथ) महाराज युधिष्ठिर का अनिवारित वेग वाला क्रोधानल अधिकता से बढ़े।

द्रौपदी—(सविस्मयम्) णाह, किं दाणीं एसो पलअजलहरत्थणिदमंसलोद्घनसो क्खणे क्खणे समरदुन्दुही ताडीअदि। [नाथ, किमिदानीमेष प्रलयजलधरघनस्तनितमांसलोद्घोषः क्षणे क्षणे समरदुन्दुभिरताडच्यते ।]

भीमसेनः—देवि, किमन्यत् । यज्ञः प्रवर्तते ।

द्रौपदी—(सविस्मयम् ।) को एसो जण्णो । [क एष यज्ञः ।]

भीमसेनः—रणयज्ञः । तथा हि—

चत्वारो वयमृत्विजः स भगवान् कर्मोपदेष्टा हरिः,
सङ्ग्रामाध्वरदीक्षितो नरपतिः पत्नी गृहीतव्रता ।

द्रौपदी—नाथ ! = हे स्वामिन् ! इदानीम् = साम्प्रतम् (अब) । एषः = अयम् (यह) । चण्डघोषदारुणः—चण्डश्चासौ घोषः = तीव्रनादः, स च दारुणस्तथा = कठिनः इति (तीव्र एवं कठोर शब्द वाला) प्रलयजलधरघनस्तनितमांसलोद्घोषः—प्रलयस्य = लोकविनाशस्य ये जलधराः = मेघाः, तेषां घनस्तनितम् = सघनगर्जनम् इव मांसलः = गम्भीरः उद्घोषो यत्र तथा भूतः (प्रलयकालीन मेघों के घने गर्जन के समान गम्भीर उद्घोष वाला) । समरदुन्दुभिः = युद्धभेरी । क्षणे क्षणे (प्रति पल में) । किम् = किमर्थम् (क्यों) । ताडच्यते = आहन्यते (पीटा, बजाया जा रहा है) ।

भीमसेनः—देवि = द्रौपदि ! अन्यत् = अपरम् किम् (और क्या ?) । यज्ञः = रणमखः (युद्धरूपी यज्ञ) । प्रवर्तते = प्रवृत्तो भवति (प्रारम्भ किया जा रहा है) ।

द्रौपदी—सविस्मयम् = साश्चर्यम् । एषः = असौ (यह) कः यज्ञः = किं नाम मखः (कौन-सा यज्ञ है) ।

भीमसेनः—रण-यज्ञः = रणरूपः यज्ञः ।

अन्वयः—वयम् चत्वारः ऋत्विजः सः भगवान् हरिः कर्मोपदेष्टा । नरपतिः

द्रौपदी—(आश्चर्य सहित) नाथ ! इस समय यह प्रचण्ड तथा दारुण ध्वनि वाला, प्रलयकालीन घने मेघ-गर्जन के समान गम्भीर उद्घोष वाला युद्ध का भेरी बाजा क्यों बजाया जा रहा है ?

भीमसेन—देवि ! और क्या । यज्ञ आरम्भ किया जा रहा है ।

द्रौपदी—(विस्मय सहित) यह कौन-सा यज्ञ है ?

भीमसेन—रण-यज्ञ ।

क्योंकि—हम (भीमादि) चार लोग ऋत्विक् (हवन करने वाले) हैं, तथा भगवान्

कौरव्याः पशवः प्रियापरिभवक्लेशोपशान्तिः फलं,
राजन्योपनिमन्त्रणाय रसति स्फीतं यशोदुन्दुभिः ॥ २५ ॥

सहदेवः—आर्य ! गच्छामो वयमिदानीं गुरुजनानुज्ञाता विक्रमानुरूपमाचरितुम् ।

संग्रामाध्वरदीक्षितः पत्नी गृहीतव्रता कौरव्याः पशवः प्रियापरिभवक्लेशोपशान्तिः फलं राजन्योपनिमन्त्रणाय यशोदुन्दुभिः स्फीतं रसति ॥ २५ ॥

चत्वार इति । वयम् = भीमार्जुनादयः (हम भीमादि) । चत्वारः = चतुःसङ्ख्यकाः (चार) । ऋत्विजः = याजकाः (पुरोहित) । सः = तथाविधः भगवान् हरिः = विष्णुदेवः कृष्णः । कर्मोपदेष्टा = कर्मणः उपदेष्टा = कर्तव्यस्य निर्देष्टा (कार्य को बतलाने वाले) । नरपतिः = भूपतिर्युधिष्ठिरः (महाराज युधिष्ठिर) । सङ्ग्रामाध्वरदीक्षितः—सङ्ग्राम एवाध्वरस्तस्मिन् दीक्षितः=रणयज्ञव्रती । पत्नी = भार्या (द्रौपदी) । गृहीतव्रता = गृहीतमङ्गीकृतं व्रतम् = नियमः, केशसंस्कारश्रृङ्गारादिविहाय धृतसात्विकवेषा (व्रत ग्रहण किये हुई) कौरव्याः = दुर्योधनादयः । पशवः = यज्ञार्थं वलिपशवः (वलि पशु) । प्रियापरिभवक्लेशोपशान्तिः—प्रियायाः = प्रियतमायाः (द्रौपदी के) परिभवः = तिरस्कारः, तज्जनितः क्लेशः = दुःखम्, तस्योपशान्तिः = उपशमनम् (प्रियतमा के तिरस्कार से उत्पन्न दुःख की शान्ति) । फलम् = परिणामः वर्तते । (अयम्) यशोदुन्दुभिः = कीर्तिपटहः (कीर्ति फैलाने वाली दुन्दुभि) ('पटहो ढक्का भेर्यामानक दुन्दुभिः' इत्यमरः) । राजन्योपनिमन्त्रणाय—राजन्यानाम्=राजसमूहानाम्, उपनिमन्त्रणाय = आह्वानाय (राजवर्गों को वुलाने के लिए) । स्फीतम् = प्रवृद्धम् यथा स्यात्तथा (जोर से) । रसति = शब्दायते (बज रही है) । अत्र रूपकालङ्कारः शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम् ॥ २५ ॥

सहदेवः—गुरुजनानुज्ञाता—गुरुजनेन = युधिष्ठिरेण, अनुज्ञाताः = आदिष्टाः

कृष्ण कर्मोपदेष्टा हैं । (स्वयम्) धर्मराज युधिष्ठिर संग्रामरूपी यज्ञ को करने का संकल्प लिये हुये हैं । (इनकी) पत्नी द्रौपदी ने यज्ञ (रण) का व्रत ग्रहण (श्रृङ्गारादि करना छोड़े हुये) कर रखा है । कुरुवंशी (दुर्योधनादि) इस यज्ञ में वलिदान किये जाने वाले पशुओं के समान हैं । प्रियतमा के पराभव दुःख का शान्त होना ही इस रणयज्ञ का फल है (अत एव) यह कीर्ति-दुन्दुभि राजाओं को निमन्त्रित करने के लिए गम्भीर रूप से बजाया जा रहा है ॥ २५ ॥

सहदेव—आर्य ! अब हम महाराज युधिष्ठिर की आज्ञा लेकर पराक्रम के अनुरूप कार्य करने जा रहे हैं ।

भीमसेनः—वत्स, एते वयमुद्यता आर्यस्यानुज्ञामनुष्ठातुमेव (उत्थाय ।) तत्पाञ्चालि, गच्छामो वयमिदानीं कुरुकुलक्षयाय ।

द्रौपदी—(बाष्पं धारयन्ती ।) णाह, असुरसमराहिमुहस्स हरिणो विअ मंगलं तुम्हाणं हादु । जं च अम्बा कुन्दी आसासदि तं तुम्हाणं होदु । [नाथ असुरसमराभिमुखस्य हरेरिव मङ्गलं युष्माकं भवतु । यच्चाम्बा कुन्त्याशास्ते तद्युष्माकं भवतु ।]

उभौ—प्रतिगृहीतं मङ्गलवचनमस्माभिः ।

(महाराज युधिष्ठिर ने आज्ञा दी है) । विक्रमानुरूपम्—विक्रमस्य = पराक्रमस्य अनुरूपम् = अनुकूलम् (पराक्रम के अनुरूप) । आचरितुम् = व्यवहर्तुम् (आचरण करने को) ।

भीमसेनः—एते=इमे (ये) वयम्=भीमादयः (हम भीम आदि) । आर्यस्य= युधिष्ठिरस्य (महाराज की) । अनुज्ञाम् = आज्ञाम् (आदेश को) अनुष्ठातुम् = पालयितुम् (पालन करने को), उद्यताः एव = सन्नद्धा एव (तैयार ही हैं) । पाञ्चालि = भो द्रौपदि ! इदानीम् = सम्प्रति (अब) कुरुकुलक्षयाय—कुरूणाम् कुलम्, तस्य क्षयाय = कौरववंशनाशाय (कुरुवंश का नाश करने के लिए) । गच्छामः = प्रयामः (जा रहे हैं) ।

द्रौपदी—वाष्पम् = अश्रु (आँसू) धारयन्ती = रोधयन्ती (रोकती हुई) । असुरसमराभिमुखस्य—असुरैः = दानवैः सह समराभिमुखस्य युद्धं कर्तुमुद्यतस्य (असुरों से युद्ध करने को उद्यत) । हरेः इव = विष्णोरिव (भगवान् विष्णु के समान) । मङ्गलम्=कल्याणम् (शुभ) । आशास्ते = अभिलषति (चाहती हैं) । तत् = तन्मङ्गलम् (वह) ।

उभौ—उभौ = भीम-सहदेवौ । अस्माभिः = भीमादिभिः (हम भीम आदि ने) प्रतिगृहीतम् = स्वीकृतम् ।

भीमसेन—वत्स ! यह हम लोग आर्य (महाराज) की आज्ञा पालन करने को तैयार ही हैं । (उठकर) हे पाञ्चालि ! अब हम कुरुकुल का विनाश करने के लिए जा रहे हैं ।

द्रौपदी—(आँसू रोकती हुई) हे स्वामिन् ! असुरों के साथ युद्ध करने को उद्यत भगवान् विष्णु के समान आपका मङ्गल हो तथा जो माता कुन्ती कामना करती हैं वह मङ्गल भी आप को प्राप्त हो ।

दोनों—हम लोगों ने मङ्गलवचन स्वीकार कर लिया ।

चेटी—अण्णं च देवी भणादि। णाह पुणो वि तुम्हेहि समरादो आअच्छिअ समास्सासइदव्वा। [अन्यच्च देवी भणति। नाथ पुनरपि युष्माभिः समरादागत्याऽहं समाश्वासयितव्या।]

भीमसेनः—ननु पाञ्चालराजतनये! किमद्याप्यलीकाश्वासनया।

भूयः परिभवक्लान्तिलज्जाविधुरिताननम्।
अनिःशेषितकौरव्यं न पश्यसि वृकोदरम्॥ २६॥

द्रौपदी—अन्यत् = अपरम् (और)। देवी = पाञ्चाली। भणति = वदति (कहती है) पुनरपि = भूयोऽपि। समरात् = युद्धात् (युद्ध से) आगत्य = परावृत्य (लौटकर)। आश्वासयितव्या = धैर्यमासादनीया (धीरज बँधाना चाहिये)।

भीमसेनः—हे पाञ्चालराजतनये = आर्यं पाञ्चालराजपुत्रि!। अद्यापि = सम्प्रत्यपि (अब भी) अलीकाश्वासनया—अलीकम् = मिथ्याऽऽश्वासनम् = धैर्यधारणम् तस्य भावस्तया (असत्य ढाढस बँधाने से) किम् = को लाभः (क्या लाभ है ?)।

अन्वयः—परिभवक्लान्तिलज्जाविधुरिताननम् अनिःशेषितकौरव्यं वृकोदरम् भूयः न पश्यसि॥ २६॥

भूय इति। परिभवक्लान्तिलज्जाविधुरिताननम्—परिभवस्य = तिरस्कारस्य क्लान्त्या = क्लेशेन, लज्जया = त्रपया च विधुरितम् = विवर्णम् आननम् = मुखं यस्य सः, तम् (तिरस्कार के क्लेश तथा लज्जा से दीन = विवर्ण मुखवाले) अनिःशेषितकौरव्यम्—अनिःशेषिताः = अविनाशिताः कौरव्याः = कुरुपुत्राः येन तथाविधम् (कौरवों को बिना नष्ट किये हुये)। वृकोदरम्—वृकः उदरे यस्य सः तम् = भीमसेनम् (भीमसेन को) भूयः = पुनः। न पश्यसि = नावलोकयिष्यसि (नहीं देखोगी)। अनुष्टुप् वृत्तम्॥ २६॥

चेटी—देवी और भी कह रहीं हैं, नाथ! युद्ध से लौट कर आप मुझे पुनः धीरज बंधाने आयें।

भीमसेन—हे पाञ्चालराजपुत्रि! अब भी झूठ-मूठ आश्वासन देने से क्या लाभ। तिरस्कार के दुःख तथा लज्जा से विवर्ण मुख वाले, कौरवों का विनाश किये बिना भीमसेन को तुम फिर (जीवित) नहीं देख सकोगी॥ २६॥

टिप्पणी—वृकोदरः—यस्य तीक्ष्णो वृको नाम जठरे हव्यवाहनः। मया दत्तः स धर्मात्मा तेन चासौ वृकोदरः॥ अर्थात् जिसके पेट में वृक नामक तीक्ष्ण अनल हो, जिससे खाया हुआ पदार्थ शीघ्र पच जाता हो, उसे वृकोदर कहते हैं।

द्रौपदी—णाह, मा क्खु जण्णसेणी परिहवुद्दीविदकोबाणला अणवेक्खिदसरीरा संचरिस्सध। जदो अप्पमत्तसंचरणिज्जाइं रिउबलाइं सुणीअन्ति। [नाथ ! मा खलु याज्ञसेनीपरिभवोद्दीपितकोपानला अनपेक्षितशरीराः सञ्चरिष्यथ। यतोऽप्रमत्तसञ्चरणीयानि रिपुबलानि श्रूयन्ते।]

भीमसेनः—अयि सुक्षत्रिये ! समर्था वयमस्मिन् रणे परिक्रमितुम्।

अन्योन्यास्फालभिन्नद्विपरुधिरवसामांसमस्तिष्कपङ्के
मग्नानां स्यन्दनानामुपरिकृतपदन्यासविक्रान्तपत्तौ।

द्रौपदी—नाथ ! स्वामिन् !, याज्ञसेनीपरिभवोद्दीपितकोपानला—याज्ञसेन्याः=द्रौपद्याः, परिभवेन=तिरस्कारेण, उद्दीपिताः=सन्दीपिताः, कोपानलाः=क्रोधाग्नयो येषां ते तथाभूताः (मुझ द्रौपदी के तिरस्कार से उद्दीपित क्रोधानल वाले)। अनपेक्षितशरीराः—अनपेक्षितम्=अचिन्तितम्, शरीरम्=देहः यैस्ते=उपेक्षितविग्रहाः (उपेक्षित शरीरों वाले) मा खलु=मा इति निषेधे (निश्चित रूप से मत)। सञ्चरिष्यथ=सञ्चरत (चलना)। यतः=हि (क्योंकि)। अप्रमत्तसञ्चरणीयानि—न प्रमत्तं यस्मिन् कर्मणि यथा तथा सञ्चरणीयानि=अप्रमादसञ्चारयोग्यानि (विना लापरवाही के संचार योग्य)। रिपुबलानि=शत्रुसैन्यानि (शत्रुओं की सेनायें)। श्रूयन्ते=आकर्ण्यन्ते (सुनी जाती हैं)।

भीमसेनः—अयि सुक्षत्रिये=हे क्षत्रियपुत्रि !, वयम्=पाण्डवाः (हम पाण्डव) अस्मिन्=एतस्मिन् (इस) रणे=सङ्गरे (युद्ध में)। परिक्रमितुम्=विचरितुम् (घूमने को) समर्थाः=सक्षमाः (समर्थ) स्मः (हैं)।

अन्वयः—अन्योन्यास्फालभिन्नद्विपरुधिरवसामांसमस्तिष्कपङ्के मग्नानां स्यन्दनानाम् उपरिकृतपदन्यासविक्रान्तपत्तौ, स्फीतासृक्पानगोष्ठीरसदशिवशिवातूर्यनृत्यत्कबन्धे सङ्ग्रामैकार्णवान्तःपयसि विचरितुम् पाण्डुपुत्राः पण्डिताः।

अन्योन्येति। अन्योन्यास्फालभिन्नद्विपरुधिरवसामांसमस्तिष्कपङ्के—अन्योन्यम्=परस्परम्, आस्फालः=सङ्घट्टः तेन भिन्नाः=विदीर्णाः ये द्विपाः=गजाः, तेषां

द्रौपदी—नाथ ! याज्ञसेनी के तिरस्कार से उद्दीपित कोपानल वाले आप लोग अपने शरीर की लापरवाही करके विचरण न करें। क्योंकि शत्रुसैन्य प्रमादरहित होकर विचरण योग्य सुने जाते हैं (अर्थात् शत्रुसैन्य में प्रमादहीन होकर ही विचरण करना चाहिये)।

भीमसेन—हे क्षत्रिय पुत्रि ! इस युद्ध में विचरण करने में हम लोग समर्थ हैं।

आपस में टकराने से विदीर्ण हुये हाथियों के रुधिर, मेद, मांस तथा कपाल आदि के कीचड़ में डूबे हुये, रथों के ऊपर पैर रखकर चलने का पराक्रम दिखलाने वाली पैदल

स्फीतासृक्पानगोष्ठीरसदशिवशिवातूर्यनृत्यत्कबन्धे
सङ्ग्रामैकार्णवान्तःपयसि विचरितुं पण्डिताः पाण्डुपुत्राः ॥ २७ ॥

(इति निष्क्रान्ताः सर्वे ।)

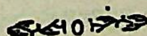
इति प्रथमोऽङ्कः ।



रुधिरम् = रक्तम् वसा = मेदश्च मांसश्च = पललञ्च, मस्तिष्कञ्च = कपालञ्चेति तेषां पङ्के = कर्दमे (परस्पर संघर्ष से विदीर्ण हाथियों के रुधिर, वसा तथा मांस व मस्तिष्कों के कीचड़ में)। मग्नानाम् = निमग्नानाम् (डूबे हुये) । स्यन्दनानाम् = रथानाम् (रथों के) । उपरिकृतपदन्यासविक्रान्तपत्तौ—उपरिकृताः = उपरिविहिताः ये पदन्यासाः = चरणविन्यासाः यैस्तादृशाः विक्रान्ताः = दर्शितपराक्रमाः पत्तयः = पदातयः यत्र तस्मिन् (ऊपर किये गये पदन्यासों से पराक्रम दिखलाने वाली पैदल सेना वाले) । स्फीतासृक्पानगोष्ठीरसदशिवशिवातूर्यनृत्यत् कबन्धे—स्फीतम् = समृद्धम् यत् असृक् = रक्तम्, तस्य पानगोष्ठीसु = पानसभासु रसन्त्यः = आरटन्त्यः अशिवाः = अमङ्गलरूपाः याः शिवाः = शृगाल्यः, ता एव तूर्याणि = वाद्यविशेषाः तुरहीतिप्रसिद्धाः तैः नृत्यन्तः = उच्छलन्तः कबन्धाः = अपमूर्धकलेवराणि ('कबन्धोऽस्त्री क्रियायुक्तमपमूर्धकलेवरम्' । इत्यमरः) । यस्मिन् तस्मिन् (गाढे रक्त की पानगोष्ठी में चिल्लाती हुई अमङ्गलसूचक शृगालिनरूपी तुरहियों पर नाचते हुये धड़ों वाले) । सङ्ग्रामैकार्णवान्तःपयसि—सङ्ग्राम एव एकार्णवस्तस्यान्तःपयसि = युद्धप्रधानसागरान्तर्जले ('उदन्वान् उदधिः सिन्धुः सरस्वान् सागरोऽर्णवः' । इत्यमरः । (संग्रामरूपी सागर के जल-मध्य) । विचरितुम् = परिक्रमितुम् (विचरण करने को) । पाण्डुपुत्राः = पाण्डवाः भीमादयो वयम् (हम पाण्डव) । पण्डिताः = दक्षाः (कुशल हैं) । अत्रोपमालङ्कारः । स्रग्धरावृत्तम् । लक्षणं तु प्रागुक्तम् ॥ २७ ॥

सेना वाले, विपुल रुधिर पान करने की गोष्ठियों में चिल्लाती हुई अमङ्गलसूचक शृगालिन रूपी तुरहियों द्वारा उछलते हुये धड़ों वाले संग्राम रूपी प्रमुख सागर के जल-मध्य विचरण करने के लिए (हम) पाण्डव प्रवीण हैं ॥ २७ ॥

(सभी लोग निकल जाते हैं ।)



द्वितीयोऽङ्कः

(ततः प्रविशति कञ्चुकी ।)

कञ्चुकी—आज्ञापितोऽस्मि महाराजदुर्योधनेन—'विनयन्धर, सत्वरं गच्छ-त्वम् । अन्विष्यतां देवी भानुमती । अपि निवृत्ता अम्बायाः पादवन्दन-समयान्न वेति । यतस्तां विलोक्य निहताभिमन्यवो राधेयजयद्रथप्रभृ-तयोऽस्मत् सेनापतयः समरभूमिं गत्वा सभाजयितव्याः' इति । यन्मया द्रुततरं गन्तव्यमिति । अहो प्रभविष्णुता महाराजस्य, यन्मम जरसाभि-

---

ततः = द्रौपदी-भीमादि निर्गमनानन्तरम् । (तदनन्तर) ।

कञ्चुकी—आज्ञापितः=आदिष्टः (आदेश दिया है) । विनयन्धर=हे विनय-न्धराभिध ! सत्वरम्=द्रुतम् (शीघ्रं) । गच्छ = प्रयाहि (जाओ) । देवीभानु-मती = कुरुराजपत्नी राज्ञी (रानी भानुमती) । अन्विष्यताम् = अनुसन्धीयताम् (ढूंढो) । अम्बायाः = मातुः गान्धार्याः (मां गांधारी के) पादवन्दनसमयात् = पादयोः वन्दनम् = चरणवन्दनम्, तस्य समयात् = कालात् (चरणवन्दन करने से) । निवृत्ता = परावृत्ता (निपट गई हैं) न वा = अथवा नैव निवृत्ता (या नहीं) । यतः = हि (क्योंकि) । ताम् = भानुमतीम् (उन भानुमती को) । विलोक्य = अवलोक्य (देखकर, मिलकर) । निहिताभिमन्यवः—निहताः = मारितः अभिमन्युः = अर्जुनपुत्रः यैस्ते (अभिमन्यु का संहार करने वाले) । राधेयजयद्रथप्रभृतयः = कर्णजयद्रथादयः (कर्ण जयद्रथ आदि) । अस्मत्सेना-पतयः = अस्माकम् बलाधीशाः (हमारे सेनापति) । समरभूमिम् = युद्धभुवम् (रणभूमि को) । गत्वा = एत्य (जाकर) सभाजयितव्याः = सम्माननीयाः (सम्मानित किये जाने चाहिये) । इति । तत् = अतः । मया = दुर्योधनेन (मुझे) द्रुततरम् = अतिशयेन द्रुतम् (अतिशीघ्र) । गन्तव्यम् = यातव्यम् (जाना चाहिये) । महाराजस्य = भूपतेः (महाराज की) । प्रभविष्णुता = प्रभावशालिता (प्रभाव-

---

(तदनन्तर कञ्चुकी प्रवेश करता है ।)

कञ्चुकी—मुझे महाराज दुर्योधन ने आदेश दिया है कि हे विनयन्धर ! तुम शीघ्र जाओ (तथा) देवी भानुमती को तलाश करो । (वह) माता जी के चरण-वन्दन कार्य से निवृत्त हो गई हैं अथवा नहीं । क्योंकि उनके दर्शन कर युद्ध-भूमि में जाकर मुझे अभि-मन्यु का संहार करने वाले कर्ण-जयद्रथ इत्यादि सेनापतियों का सम्मान करना चाहिये । अतः मुझे अति शीघ्र जाना चाहिये । महाराज के प्रभाव को धन्य है जो कि बुढ़ापे से युक्त

भूतस्य मर्यादामात्रमेवावरोधव्यापारः अथवा किमिति जरामुपालभेय, यतः सर्वान्तःपुरिकाणामयमेव व्यावहारिको वेषश्चेष्टा च । तथाहि—

नोच्चैः सत्यपि चक्षुषीक्षितुमलं श्रुत्वापि नाकर्णितं
शक्तेनाप्यधिकार इत्यधिकृता यष्टिः समालम्ब्यते ।
सर्वत्र स्खलितेषु दत्तमनसा जातं तथा नोद्धतं
सेवास्वीकृतजीवितस्य जरसा किं नाम यन्मे कृतम् ॥ १ ॥

शाली होना) अहो = आश्चर्यम् (धन्य है) । यत् = यतः (जो कि) जरसा = वृद्धत्वेन (बुढ़ापे से) अभिभूतस्य = आक्रान्तस्य (ग्रस्त) । मम = दुर्योधनस्य (मेरा) मर्यादामात्रम्=आचारमात्रम् (केवल मर्यादा भर) । अवरोधव्यापारः— अवरोधे=अन्तःपुरे वासः व्यापारः = कर्म (अन्तःपुर में रहना) । अथवा = किमुत (या) जराम् = वृद्धत्वम् (बुढ़ापे को) किम् = किमर्थम् (क्यों) उपालभामहे = आक्षिपामः (उलाहना दें) । यतः = यस्मात् कारणात् (क्योंकि) । सर्वान्तःपुरिकाणाम्—सर्वेषाम् = निखिलानाम् अन्तःपुरिकाणाम् = अन्तःपुरेऽधिकृतानाम् एव (अन्तःपुर में रहने वाले सभी लोगों का ही) । वेषः = नेपथ्य (वेष) चेष्टा च = शरीरव्यापारश्च (चेष्टायें) व्यावहारिकः = व्यवहारे भवः = निर्वहणयोग्यः (निर्वाह योग्य) भवति ।

अन्वयः—चक्षुषि सति अपि उच्चैः ईक्षितुं न अलं श्रुत्वा अपि न आकर्णितं शक्तेन अपि अधिकार इति अधिकृता यष्टिः समालम्ब्यते सर्वत्र स्खलितेषु दत्तमनसा मया उद्धतं न यातं सेवास्वीकृतजीवितस्य मे किं नाम जरसा कृतम् ॥ १ ॥

नोच्चैरिति—चक्षुषि = नयने सत्यपि = वर्तमानेऽपि (नेत्र होते हुये भी) उच्चैः = ऊर्ध्वम् (ऊपर) । ईक्षितुम्=अवलोकितुम् (देखने को) न अलम् = नैव समर्थः (समर्थ नहीं) । श्रुत्वा अपि=आकर्ण्यापि (सुनकर भी) न आकर्णितम्=

मुझ अन्तःपुर में ठहरना केवल आचार मात्र रह गया है । अथवा बुढ़ापे को उलाहना देने से क्या लाभ । क्योंकि अन्तःपुर में रहने वाले सभी लोगों का यही व्यावहारिक वेष तथा चेष्टा होती है ।

क्योंकि—रनिवास में आंख होने पर भी सिर ऊपर उठा कर नहीं देख सकता, सदा आंखें नीची करके ही देखना पड़ता है । वहाँ सब कुछ सुनते हुए भी अनसुनी करनी पड़ती है । समर्थ होते हुये भी (युवा व्यक्ति के समान निर्द्वन्द्वता से न चलकर) छड़ी का आश्रय लेकर चलना पड़ता है । सर्वत्र त्रुटियों में ध्यान रखते हुये भी मुझे उद्दण्डता से नहीं चलना हुआ है । (इस प्रकार) सेवा करने मात्र के लिए उत्पन्न हुये मुझ कञ्चुकी को

(परिक्रम्य दृष्ट्वा आकाशे ।) विहङ्गिके, अपि श्वश्रूजनपादवन्दनं कृत्वा प्रतिनिवृत्ता भानुमती । (कर्णं दत्त्वा ।) किं कथयसि—आर्य ! एषा भानुमती देवी पत्युः समरविजयाशंसया निर्वर्तितगुरुदेवपादवन्दनाऽद्य-

---

न श्रुतम् (नहीं सुना) । शक्तेन=समर्थेन अपि (समर्थ होने पर भी) अधिकारः=कञ्चुकिनो यष्टिधारणाधिकारः इति=एवम्, अधिकृता=गृहीता यष्टिः=लगुडम्, समालम्ब्यते=आश्रियते (कञ्चुकी को लकड़ी अवश्य धारण करनी चाहिये इस कारण से समर्थ होते हुये भी लाठी का आश्रय लिया जाता है)। सर्वत्र=सर्वस्थानेषु (सभी स्थानों पर) स्खलितेषु=स्खलनेषु, व्यापारप्रत्ययवेषु (लापरवाही से किये गये कार्यों में त्रुटि होने पर)। दत्तमनसा=दत्तं मनो येन तादृशा=सावधानेन मया=कञ्चुकिना (सावधान मन मेरे द्वारा)। उद्धतम्=साभिमानम् (अभिमान के साथ) न यातम्=तरुणवत्तथागमनं न भवति (चलना नहीं पड़ता है)। सेवास्वीकृतजीवितस्य=सेवार्थमेव स्वीकृतं जीवितं येन तस्य=सेवाकार्यनिमित्तम् अधिकृतजीवनस्य (सेवा करने लिये ही जीवित रहने वाले)। मे=मम कञ्चुकिनः (मुझ कञ्चुकी का) किं नाम्=किमिति। जरसा=वृद्धत्वेन कृतम्=विहितम् (वृद्धावस्था ने क्या किया)। अतः जटानैवोपालम्भनीयेति । अत्र विशेषोक्तिरलंकारः । शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम् । तद्यथा—सूर्याश्वैर्मसजास्ततः स गुरवः शार्दूलविक्रीडितम् इति ॥ १ ॥

श्वश्रूजनपादवन्दनम्—श्वश्रूजनानाम्=गान्धार्यादीनाम्, पादवन्दनम्=चरणप्रणतिम् (गान्धारी आदि के चरणवन्दन को) कृत्वा=विधाय (करके) भानुमती=राज्ञी, प्रतिनिवृत्ता=परावृता (लौट आई हैं) अपि इति प्रश्ने । कर्णं दत्वा=श्रवणमभिनीय कथयसि=वदसि (कहती हो)। पत्युः=भर्तुः (पति की)। समरविजयाशंसया—समरे=रणे विजयस्य=जयस्य, आशंसया=कामनया (युद्ध में पति की विजय कामना से)। निर्वर्तितगुरुदेवपादवन्दना—निर्वर्तितम्=सम्पादितम्, गुरूणां देवानाञ्च पादवन्दनं यया सा (गुरुजनों तथा देवताओं के पादवन्दन से निवृत्त हुई)। अद्यप्रभृति=अद्य दिनादारभ्य (आज से) आरब्ध-

---

वृद्धावस्था ने क्या किया, यह सब कुछ नई बात नहीं है। राजसेवा में तो ऐसा ही करना पड़ता है ॥ १ ॥

(घूमकर, देखकर, आकाश की ओर) हे विहङ्गिके ! गान्धारी आदि की चरणवन्दना करके भानुमती जी क्या लौट आई हैं ? (कान लगाकर) क्या कहती हो। आर्य ! यह भानुमती देवी पति की युद्ध-विजय की कामना से गुरुजनों तथा देवताओं के पादवंदन से

प्रभृत्यारब्धनियमा देवगृहे बालोद्याने तिष्ठतीति। तद्भद्रे, गच्छ त्वमात्मव्यापाराय यावदहमप्यत्रस्थां देवीं महाराजस्य निवेदयामीति। (परिक्रम्य।) साधु पतिव्रते, साधु, स्त्रीभावेऽपि वर्तमाना वरं भवती न पुनर्महाराजः। योऽयमुद्यतेषु बलवत्सु अथवा किं बलवत्सु वासुदेवसहायेषु पाण्डुपुत्रेष्वरिष्वद्याप्यन्तःपुरविहारसुखमनुभवति। (विचिन्त्य।) इदमपरमयथातथं स्वामिनश्चेष्टितम्। कुतः—

नियमा = आरब्धः नियमः = व्रतादिः यया सा (व्रतादि नियम आरम्भ की हुई)। देवगृहे यत्र तस्मिन् = देवालययुक्ते (देवालय वाले) बालोद्याने = बालवाटिकायाम् (बालोद्यान में)। तिष्ठति = अवस्थिताऽस्ति (ठहरी हुई है)। तद् = अतः। भद्रे = हे कल्याणि। त्वम् (तुम) आत्मव्यापाराय—आत्मनः व्यापारस्तस्मै = स्वकार्यमनुष्ठातुम् (अपना कार्य करने के लिए)। अत्रस्थाम् = अत्रस्थिताम् (यहाँ ठहरी हुई) देवीम् = भानुमतीम् (रानी भानुमती को)। महाराजस्य = नृपतेः दुर्योधनस्य (महाराज को)। निवेदयामि = कथयामि (बतलाता हूँ)। परिक्रम्य = परावृत्य (घूमकर)। साधु = प्रशंसायाम् (शाबास) स्त्रीभावे = स्वभावतः सांसारिकसुखोपभोगप्रवणे (स्त्री भाव में)। वर्तमाना = विद्यमाना भवती = श्रीमती (आप), वरम् = श्रेष्ठम्, मनागिष्टा। महाराजः = दुर्योधनः पुनः न वरं यः अयं दुर्योधनः। उद्यतेषु = योद्धुं सन्नद्धेषु (उद्यत) बलवत्सु = बलिषु (बलवानों पर)। वासुदेवसहायेषु—वासुदेवः = भगवान् कृष्णः सहायः = सहयोगी येषां ते तेषु (वासुदेव सहायक हैं जिनके)। पाण्डुपुत्रेषु = पाण्डवेषु (पाण्डवों में)। अन्तःपुरविहारसुखम् = अन्तःपुरविहरणम् (अन्तःपुर में विहार करना) तस्य सुखम् = आनन्दम्। अनुभवति = अनुभवं करोति (अनुभव कर रहे हैं) विचिन्त्य = विचारयित्वा (सोचकर)। इदम् = एतत् (यह) अपरम् = अन्यत् (और) अयथातथम् = न यथातथम् = असमीचीनम् (अनुचित)। स्वामिनः = महाराजस्य (महाराज का) चेष्टितम् = व्यापारः (कार्य)।

निवृत्त होकर आज से व्रतादि नियमों का पालन करना आरम्भ कर देवगृह वाले बालोद्यान में स्थित है? तो भद्र! तुम अपना कार्य करने के लिये जाओ। तब तक मैं यहाँ महारानी के स्थित होने की सूचना महाराज दुर्योधन को देता हूँ। (घूमकर) शाबास पतिव्रते, शाबास। स्त्री होती हुई भी तुम अच्छी हो, महाराज अच्छे नहीं हैं जो कि यह बलवानों अथवा निर्बलों, कृष्ण का सहयोग पाने वाले पाण्डुपुत्रों से युद्ध के लिये उद्यत होने पर भी अन्तःपुर में विहार करने के सुख का अनुभव कर रहे हैं। (सोचकर) यह एक और भी कार्य महाराज का अनुचित है—

आशस्त्रग्रहणादकुण्ठपरशोस्तस्याऽपि जेता मुने-
स्तापायास्य न पाण्डुसूनुभिरयं भीष्मः शरैः शायितः ।
प्रौढानेकधनुर्धरारिविजयश्रान्तस्य चैकाकिनो
बालस्यायमरातिलूनधनुषः प्रीतोऽभिमन्योर्वधात् ॥ २ ॥

अन्वयः—आशस्त्रग्रहणात् अकुण्ठपरशोः तस्य अपि मुनेः जेता अयम् भीष्मः पाण्डुसूनुभिः शरैः शायितः तत् अस्य तापाय न, प्रौढानेकधनुर्धरारिविजयश्रान्तस्य एकाकिनः अरातिलूनधनुषः बालस्य अभिमन्योः वधात् अयम् प्रीतः ॥ २ ॥

आशस्त्रेति । आशस्त्रग्रहणात् = शस्त्रग्रहणमारभ्य (शस्त्र ग्रहण करने से लेकर) अकुण्ठपरशोः = अकुण्ठः परशुर्यस्य सः तस्य = अव्यर्थपरशोः (फरसा कुण्ठित न होने वाले) तस्य = लोकप्रसिद्धस्यापि मुनेः = परशुरामस्य जेता = विजेता (उन परशुराम को जीतने वाले) अयम् = एषः भीष्मः = पितामहः गांगेयः (यह भीष्मपितामह) । पाण्डुसूनुभिः = पाण्डुपुत्रैः (पाण्डवों के द्वारा) शरैः = बाणैः (बाणों से) । शायितः=स्वापितः, पातितः इत्याशयः (शरशय्या पर सुला दिये गये) । तत् अस्य = दुर्योधनस्य (इन दुर्योधन के) । तापाय = सन्तापाय (सन्ताप के लिए) न = न जातम् (नहीं हुआ) । प्रौढानेकधनुर्धरारि-विजयश्रान्तस्य = प्रौढाः = विख्याताः, अनेके = बहवः, ये धनुर्धराः=कोदण्डधारिणः अरयः = शत्रवः, तेषां विजयेन, परिश्रान्तस्य = श्लथस्य (विख्यात अनेक धनुर्धारी शत्रुओं की विजय से थके हुये) । एकाकिनः = असहायस्य (असहाय) । अरातिलूनधनुषः—अरातिभिः = शत्रुभिः लूनम् = छिन्नम् धनुः = शरासनं यस्य सः तस्य (शत्रुओं द्वारा काटे गये धनुष वाले) बालस्य = अवयस्कस्यार्जुनसुतस्य (बालक अर्जुन पुत्र) । अभिमन्योः (अभिमन्यु के) । वधात् = विनाशात् (वध से) । अयम् = एष, दुर्योधनः (यह महाराज दुर्योधन) प्रीतः = प्रसन्नः, वर्तते (प्रसन्न हो रहे हैं) । अत्र विशेषोक्तिविभावनाऽलङ्कारयोः सङ्करः । शार्दूल-विक्रीडितं वृत्तम् ॥ २ ॥

क्योंकि—शस्त्र ग्रहण करने के दिन से लेकर जिनका परशु कभी कुण्ठित नहीं हुआ है ऐसे पराक्रमी मुनि (परशुराम) को विजय करने वाले यह भीष्म पाण्डुपुत्रों द्वारा बाणों से शरशय्या पर सुला दिये गये, यह भी इनके सन्ताप का कारण नहीं बन सका । (पर) विख्यात अनेक धनुर्धारी वीरों को रणभूमि में हटा कर थके हुये, अकेले (असहाय) शत्रुओं द्वारा छिन्न धनुष वाले बालक अभिमन्यु के वध से ये महाराज प्रसन्न हो रहे हैं ॥ २ ॥

सर्वथा दैवं नः स्वस्ति करिष्यति तद्यावदत्रस्थां देवीं महाराजस्य निवेदयामि । (इति निष्क्रान्तः ।)

विष्कम्भकः

(ततः प्रविशत्यासनस्था देवी भानुमती, सखी चेटी च ।)

सखी—सहि भाणुमदि, कीस दाणिं तुमं सिविण अदंसणमेत्तस्स किदे अहिमाणिणो महाराअदुज्जोहणस्स महिसी अविअ एव्वं विअलिअधीर-भावा अतिमेत्तं शंतप्पसि ! [सखि भानुमति, कस्मादिदानीं त्वं स्वप्नदर्शनमात्रस्य कृतेऽभिमानिनो महाराजदुर्योधनस्य महिषी भूत्वैवं विगलितधीरभावातिमात्रं सन्तप्यसे]

सर्वथा = सर्वप्रकारेण (सब प्रकार से)। दैवतम् = भाग्यम् (भाग्य)। नः अस्माकम् (हमलोगों का) स्वस्ति = कल्याणम् (कुशल) करिष्यति = विधास्यति (करेगा) तत्=अतः । अत्रस्थाम्=इह स्थिताम् (यहां ठहरी हुई) देवीम् = भानुमतीम् (देवी को) महाराजस्य = नृपस्य दुर्योधनस्य (महाराज को)। निवेदयामि = आवेदयामि (बतलाता हूँ)। इति (इस प्रकार)। निष्क्रान्तः = निःसृतः (निकल जाता है)।

सखी—कस्मात् = कस्माद् हेतोः (किस कारण से)। इदानीम् = साम्प्रतम् (अब) स्वप्नदर्शनमात्रस्य कृते = स्वप्नदर्शनमात्रेणैव (केवल स्वप्न देखने से) अभिमानिनः = गर्वयुक्तस्य (अभिमानी)। महिषी = राज्ञी (रानी) भूत्वा = सम्भूय (होकर) एवम् = इत्थम् (इस प्रकार) विगलितधीरभावा—विगलितः= विनष्टः धैर्यभावः धीरत्वं यस्याः सा (नष्ट हुये धैर्य भाव वाली)। अतिमात्रम् = अत्यधिकम् (अत्यन्त)। सन्तप्यसे = आकुलिता भवसि (व्याकुल हो रही हो)।

सब प्रकार से भाग्य हमारा कल्याण करेगा। अतः तब तक यहाँ स्थित देवी भानुमती की सूचना महाराज को देता हूँ। (यह कहकर निकल जाता है।)

विष्कम्भक

(तदनन्तर आसन पर बैठी देवी भानुमती, सखी तथा चेटी प्रवेश करती हैं)

सखी—हे सखी भानुमती ! तुम इस समय स्वप्न देखने मात्र से अभिमानी महाराज दुर्योधन की रानी होकर भी इस प्रकार धैर्य हीन होकर अत्यन्त सन्ताप क्यों कर रही हो ?

टिप्पणी—विष्कम्भक—व्यतीत हुई तथा भावी कथाओं (घटनाओं) की सूचना करने वाले संक्षिप्त अर्थवाला, अङ्क के आदि में प्रयुक्त अंश नाट्यशास्त्र में विष्कम्भक कहलाता है—

वृत्तवर्तिष्यमाणानां कथांशानां निदर्शकः ।
संक्षिप्तार्थस्तु विष्कम्भ आदावङ्कस्य दर्शितः ॥ (साहित्यदर्पण)

चेटी—भट्टिणि, सोहणं भणादि सुवअणा। सिविणअन्तो जणो किं ण क्खु प्पलवृदि। [भट्टिनि, शोभनं भणति सुवदना। स्वपञ्जनः किं न खलु प्रलपति।]

भानुमती—हञ्जे, एव्वं णेदं। किणु एदं सिविणअं अकुसलदंसणं मे पडिभादि। [हञ्जे, एवं न्विदं किन्तु एष स्वप्नोऽकुशलदर्शनं मे प्रतिभाति।]

सखी—पियसहि ! जइ एव्वं ता कधेहि सिविणअं जं अम्हेवि पडिट्ठाव अन्तीओ धमप्पसंसाए देवदाणं संकीत्तणेण दूवादिपडिग्गहेण अ पडिहडिस्सामो [प्रियसखि ! यद्येवं तत् कथय स्वप्नं येन आवामपि प्रतिष्ठापयन्त्यौ धर्म्मप्रशंसया देवतानां सङ्कीर्तनेन दूर्वादिपरिग्रहेण च परिहरिष्यामः।]

चेटी—भट्टिनि = स्वामिनि (हे स्वामिनि)। सुवदना–शोभनं वदनं यस्याः सा = सुमुखी (सुन्दर वदन वाली)। शोभनम् = सुन्दरम् (अच्छा)। भणति = वदति (कह रही है)। स्वपन् = शयानः (सोता हुआ)। जनः = लोकः (लोग) किं न खलु प्रलपति = उचितमनुचितं वा सर्वमेव प्रलपति, तत्तु याथार्थ्येन न गृह्यते।

भानुमती—हञ्जे = हे चेटि (अरी चेटी) एवं नु इदम् = निश्चितम् एतदेव (निःसन्देह ऐसा ही है)। मे = मम (मेरा) अकुशलदर्शनम्—अकुशलम् = अमङ्गलं दर्शयति, इत्यकुशलदर्शनम् = अशुभसूचकम् (अशुभ सूचना वाला)। प्रतिभाति = प्रतीयते (मालूम पड़ता है)।

सखी—प्रतिष्ठापयन्त्यः = अशुभस्वप्नं शुभं सम्पादयन्त्यः (अशुभ स्वप्न को शुभ बनाती हुई)। धर्मप्रशंसया—धार्मिकस्तोत्रादिपाठेन (धर्म-चर्चा द्वारा)। देवतानाम् = सुराणाम् (देवताओं के)। सङ्कीर्तनेन = देवकीर्तनेन (कीर्तन द्वारा)। दूर्वादिपरिग्रहणेन = दधिदूर्वाङ्कुरादिमाङ्गलिकवस्तुधारणेन (दूब आदि माङ्गलिक वस्तुएँ धारण करने से)। परिहरिष्यामः = दूरीकरिष्यामः (दूर कर देंगी)।

चेटी—हे स्वामिनि ! सुवदना ठीक कह रही है, स्वप्न में मनुष्य क्या क्या नहीं कहने लगता है।

भानुमती—अरी चेटी ! ऐसा ही है (पर) मुझे तो यह स्वप्न अशुभसूचक मालूम होता है।

सखी—हे प्रिय सखि ! यदि ऐसा है तो स्वप्न सुनाओ, जिससे हम भी धार्मिक चर्चाओं द्वारा, देवताओं के कीर्तन आदि से तथा दूर्वा आदि मांगलिक वस्तुओं को धारण करने से (उस अमङ्गल को) दूर कर देंगी।

चेटी—सोहणं क्खु भणदि सुवअणा ! अकुसलदंसणावि। सिविण-आप्पसंसाए कुशलपरिणामा होन्ति त्ति सुणीअदि। [शोभनं खलु भणति सुवदना ! अकुशलदर्शना अपि स्वप्ना प्रशंसया कुशलपरिणामा भवन्तीति श्रूयते ।]

भानुमती—जइ एव्वं ता कहइस्सं। अवहिदा दाव होध [यद्येवं तत्कथयिष्ये । अवहिते तावद् भवतम् ।]

सखी—कहेदु पिअसही (कथयतु प्रियसखी ।)

भानुमती—हला ! भएण विसुमरिदह्मि, ता चिट्ठ जाव सव्वं सुमरिअ कहइस्सं (इति चिन्तां नाटयति ।) [सखि ! भयेन विस्मृताऽस्मि, तत्तिष्ठ यावत्सर्वं स्मृत्वा कथयिष्ये ।]

(ततः प्रविशति दुर्योधनः कञ्चुकी च ।)

दुर्योधनः—सूक्तमिदं कस्यचित् ।

गुप्त्या साक्षान्महानल्पः स्वयमन्येन वा कृतः ।
करोति महतीं प्रीतिमपकारोऽपकारिषु ॥ ३ ॥

चेटी—अकुशलदर्शनाः—अकुशलम्=अशुभं दर्शनं येषां ते (अशुभ सूचक)। कुशलपरिणामाः—कुशलम् = मङ्गलम् परिणामः = फलं येषां ते (माङ्गलिक फल वाले)। भवन्ति = जायन्ते (हो जाते हैं)। इति = एवं श्रूयते = आकर्ण्यते (ऐसा सुना जाता है)।

भानुमती—कथयिष्यामि:=भणिष्यामि (कहूँगी)। अवहिता = सावधाना ।

भानुमती—भयेन=भिया (डर से) विस्मृता=विगतस्मरणा (भूल गई हूँ) सर्वम् = सम्पूर्णम् (सब) स्मृत्वा = स्मृतिं कृत्वा (याद कर)।

चेटी—सुवदना निःसन्देह ठीक कह रही है। अशुभसूचक स्वप्न भी देवताओं के कीर्तनादि से माङ्गलिक फल वाले बन जाते हैं, ऐसा सुना जाता है।

भानुमती—यदि ऐसा है तो कहूँगी, तो सावधान हो जाओ।

सखी—मैं सावधान हूँ। प्रिय सखी कहें।

भानुमती—हे सखि ! भय के कारण भूल गई हूँ, अत एव ठहरो। तब तक सब कुछ याद कर कहती (सुनाती) हूँ। (इस प्रकार सोचने का अभिनय करती है)।

(तदनन्तर दुर्योधन तथा कञ्चुकी प्रवेश करते हैं)

दुर्योधन—यह सूक्त (कहावत) किसी का है—

अपकार करने वाले शत्रुओं पर गुप्त रूप से या प्रत्यक्ष रूप से बड़ा अथवा छोटा अपने आप अथवा दूसरे द्वारा किया गया अपवाद बड़ा सन्तोष उत्पन्न करता है ॥ ३ ॥

येनाद्य द्रोण-कर्ण-जयद्रथादिभिर्हतमभिमन्युमुपश्रुत्य समुच्छ्वसितमिव नश्चेतसा ।

कञ्चुकी—देव, नेदमतिदुष्करमाचार्यशस्त्रप्रभावात् । कर्णजयद्रथयोर्वा का नामात्र श्लाघा ।

अन्वयः—अपकारिषु गुप्त्या साक्षात् वा महान् अल्पः वा स्वयम् अन्येन वा कृतः अपकारः महतीम् प्रीतिम् करोति ॥ ३ ॥

गुप्त्येति । अपकारिषु = शत्रुषु (अपकार करने वाले शत्रुओं में) गुप्त्या = गुप्तरूपेण (गोपनीय ढंग से) साक्षात् = प्रत्यक्षम् । वा=अथवा । महान्=अधिकः अल्पः = लघुः वा (बड़ा अथवा छोटा) स्वयम् = आत्मना (अपने आप) अन्येन वा = अथवा अपरेण (अथवा दूसरे द्वारा) कृतः = विहितः (किया गया) अपकारः = अहितम् (अपकार) । महतीम् = गुर्वीम् (बहुत बड़ी) प्रीतिम् = प्रेम करोति = विदधाति । अनुष्टुब्वृत्तम् ॥ ३ ॥

येन = येन कारणेन (जिससे) अद्य = अत्राह्नि (आज) द्रोणकर्णजयद्रथादिभिः = द्रोणादिमहारथिभिः (द्रोण-कर्णादि महारथियों द्वारा) हतम् = घातितम् (मारे गये) । अभिमन्युम् = अर्जुनसुतम् (अभिमन्यु को) । उपश्रुत्य = आकर्ण्य (सुनकर) नः = अस्माकम् (हमारा) । चेतसा = हृदयेन (चित्त-हृदय से) उच्छ्वसितम् इव = पुनरुज्जीवितमिव (प्रफुल्लित-सा) ।

कञ्चुकी—देव !=महाराज ! इदम्=एतत् (यह) आचार्यशस्त्रप्रभावाणाम्—आचार्यस्य = द्रोणस्य, शस्त्राणाम् = आयुधानाम् प्रभावाः = सामर्थ्यानि, तेषाम् (आचार्य द्रोण के शस्त्रों के प्रभाव वालों का) । अतिदुष्करम्=महत्कठिनम् न=नास्ति । कर्ण-जयद्रथयोः—कर्णस्य = राधेयस्य, जयद्रथस्य च (कर्ण तथा जयद्रथ की) अत्र = अस्मिन् कार्ये (इसमें) का श्लाघा = का प्रशंसा (कुछ भी प्रशंसा नहीं है) ।

जिसके कारण आज द्रोण, कर्ण, जयद्रथ आदि द्वारा अभिमन्यु का मारा जाना सुनकर मेरा हृदय प्रफुल्लित-सा हो उठा है ।

कञ्चुकी—महाराज ! द्रोणाचार्य जैसे शस्त्र प्रभाव वालों का यह (अभिमन्यु को मारना) अति दुष्कर कार्य नहीं है । अथवा कर्ण तथा जयद्रथ की इस (अभिमन्यु-वध) में प्रशंसा की क्या बात है ?

राजा—विनयन्धर किमाह भवान्? एकाकी बहुभिर्बालो लूनशरासनश्च निहत इत्यत्र का श्लाघा कुरुपुङ्गवानाम्। मूढ, पश्य—

हते जरति गाङ्गेये पुरस्कृत्य शिखण्डिनम्।
या श्लाघा पाण्डुपुत्राणां सैवास्माकं भविष्यति॥ ४॥

कञ्चुकी—(सवैलक्ष्यम्।) देव, नैवदं कल्पयितुमर्हसि। यतस्तव वः पौरुषप्रतिघातोऽस्माभिर्नानलोकितपूर्व इत्यत एवं विज्ञापयामि।

राजा—एकाकी = असहायः। वहुभिः = अनेकैः (वहुत लोगों द्वारा)। वालः = शिशुरभिमन्युः। लूनशरासनः—लूनम् = छिन्नम्। शरासनम् = कोदण्डं यस्य सः (छिन्न धनुष वाला) निहतः = मारितः (मार डाला)। अत्र = अस्य घाते (इसे मारने में)। श्लाघा = प्रशंसा। कुरुपुङ्गवानाम्—कुरुषु पुङ्गवास्तेषाम् = कौरववीराणाम् (कौरव-वीरों की)।

अन्वयः—शिखण्डिनं पुरस्कृत्य जरति गाङ्गेये हते (सति) पाण्डुपुत्राणाम् या श्लाघा सा एव अस्माकं भविष्यति॥ ४॥

हत इति। शिखण्डिनम् = शिखण्डिनामानं द्रुपदपुत्रम्। पुरस्कृत्य = अग्रे कृत्वा (आगे करके) जरति = वृद्धे गाङ्गेये = गङ्गासुते भीष्मे। हते = घातिते (भीष्म के मारे जानेपर) पाण्डुपुत्राणाम् = पाण्डवानाम् (पाण्डवों की) या = यादृशी (जो) श्लाघा = प्रशंसा सा = तथा एव (वैसी ही)। अस्माकम् = कौरवाणाम् (हमारी) भविष्यति। अनुष्टुप् वृत्तम्॥ ४॥

कञ्चुकी—सवैलक्ष्यम् = साश्चर्यम् (आश्चर्यसहित)। कल्पयितुम् = अनुमातुम् (कल्पना करने को) तव = ते (तुम्हारा) पौरुषप्रतिघातः—पौरुषस्य=

राजा—हे विनयन्धर ? आपने क्या कहा कि 'एकाकी धनुषहीन बालक को बहुतों ने मिलकर मार डाला' इसमें कौरववीरों की क्या प्रशंसा है।

अरे मूर्ख ! शिखण्डी को सामने करके वृद्ध भीष्मपितामह को मारने में जो प्रशंसा पाण्डवों की हुई वैसी ही प्रशंसा हमारी भी होगी॥ ४॥

कञ्चुकी (आश्चर्यसहित) महाराज ! ऐसी कल्पना नहीं करनी चाहिये क्योंकि ऐसा आप का पौरुष हम लोगों ने इससे पूर्व नहीं देखा, अत एव ऐसा कह रहा हूँ।

टिप्पणी—द्रुपद-पुत्र—शिखण्डी जन्म से स्त्री तथा तपस्या द्वारा पुरुष बन गया था। भीष्म पितामह उसे सदैव स्त्री ही मानते थे। महाभारत युद्ध में भीष्म के घमासान युद्ध करते समय अर्जुन ने शिखण्डी को आगे कर दिया। स्त्री मानकर उन्होंने धर्मशास्त्रानुसार उस पर बाण प्रहार नहीं किया। इसी बीच अन्य सैनिकों ने भीष्मपितामह को घायल कर दिया था (यह कार्य भी निन्दनीय ही था)।

राजा—एवमिदम् ।

सहभृत्यगणं सबान्धवं सहमित्रं ससुतं सहानुजम् ।
स्वबलेन निहन्ति संयुगे न चिरात्पाण्डुसुतः सुयोधनम् ॥ ५ ॥

कञ्चुकी—(कर्णौ पिधाय । सभयम् ।) शान्तं पापम् । प्रतिहतममङ्गलम् ।

राजा—विनयन्धर ! किं मयोक्तम् ?

कञ्चुकी—

सहभृत्यगणं सबान्धवं सहमित्रं ससुतं सहानुजम् ।
स्वबलेन निहन्ति संयुगे न चिरात्पाण्डुसुतं सुयोधनः ॥ ६ ॥

पुरुषार्थस्य प्रतिघातः = व्याघातः (पौरुष की कुण्ठा)। अस्माभिः = कर्मकरैः (हम लोगों ने)। अवलोकितपूर्वः—अवलोकितः पूर्वं यः सः = दृष्टपूर्वः (पहले देखा हुआ)। विज्ञापयामि = निवेदयामि (कह रहा हूँ)।

अन्वयः—पाण्डुसुतः स्वबलेन सहभृत्यगणं सबान्धवं सहमित्रं ससुतं सहानुजं सुयोधनम् संयुगे, न चिरात् निहन्ति ॥ ५ ॥

सहभृत्येति । पाण्डुसुतः = पाण्डुपुत्रः । स्वबलेन = आत्मशक्त्या (अपने बल से) सहभृत्यगणम् = सेवकगणैः सह (सेवक वर्ग सहित)। सबान्धवम्—बान्धवैः सहितम् (बान्धवों सहित)। सहमित्रम् = मित्रवर्गैः सह (मित्रों सहित)। ससुतम् = सुतैः सह (पुत्रों सहित) सहानुजम् = अनुजैः साकम् (छोटे भाइयों सहित) सुयोधनम् = दुर्योधनम् (सुयोधन को)। संयुगे = सङ्गरे (युद्ध में) न चिरात् = अचिरात् = शीघ्रं । निहन्ति = मारयति । ललितावृत्तम् । तद्यथा—ससजा विषमे यदा गुरुः सभरास्याल्ललिता समे लगौ ॥ ५ ॥

कञ्चुकी—पापम् = अशिवमभिहितजन्यमघम् (अमंगल पाप)। शान्तम् = शान्ति यातु (शान्त हो जाये)। अमङ्गलम् = अशुभम् । प्रतिहतम् = विनष्टं भवतु (नष्ट हो जाये)।

राजा—उक्तम् = कथितम् (कहा)। मया = दुर्योधनेन ।

राजा—ऐसा ही है—पाण्डुसुत अपने बल से भृत्यवर्ग, बान्धव-वर्ग, मित्रमण्डल-पुत्रों तथा छोटे भाइयों सहित सुयोधन को युद्ध में शीघ्र ही मार देंगे ॥ ५ ॥

कञ्चुकी—(दोनों कान बन्द करके भय सहित) पाप शान्त हो, अमङ्गल नष्ट हो।

राजा—विनयन्धर ! मैंने क्या कहा ?

कञ्चुकी—सुयोधन अपने बल से भृत्य-वर्ग, बान्धव-वर्ग, मित्रमण्डल-पुत्रों तथा छोटे भाइयों सहित पाण्डु-पुत्र को युद्ध में शीघ्र ही मार देंगे ॥ ६ ॥

एतद्विपरीतमभिहितं देवेन ।

राजा—विनयन्धर, अद्य खलु भानुमती यथापूर्वं मामनामन्त्र्य वासभवनात्प्रातरेव निष्क्रान्तेति व्याक्षिप्तमिव मे मनः। तदादेशय तमुद्देशं यत्रस्था भानुमती ।

कञ्चुकी—इत इतो देवः ।

(उभौ परिक्रामतः)

कञ्चुकी—(पुरोऽवलोक्य । समन्ततो गन्धमाघ्राय ।) देव, पश्य, पश्य, एतत्तुहिनकणशिशिरसमीरणोद्वेल्लितवृन्तबन्धुरशेफालिकाविरचितकुसुम–

सहभृत्येति । पाण्डुसुतम् = पाण्डुपुत्रम् (पाण्डुपुत्र को) सुयोधनः = धृतराष्ट्रसुतः (इति विपरीतं पठित्वा) शेषं तु पूर्वं व्याख्यातम् ।

विपरीतम् = विरुद्धम् । अभिहितम् = कथितम् । देवेन = भवता ।

राजा—भानुमती = दुर्योधनपत्नी । यथापूर्वम्=पूर्वनियमानुसारम् (पहले की भांति) माम् = दुर्योधनम् (मुझे) । अनामन्त्र्य = अनापृच्छ्य (बिना पूछे) । वासभवनात्—आवासगृहात् (निवास भवन से) । प्रातरेव = प्रत्यूष एव (सवेरे ही) निष्क्रान्ता = निर्गता (निकल गई) । इति = एवम् । मे = मम (मेरा) मनः = चेतः (मन) । व्याक्षिप्तम् इव = व्याकुलमिव (बेचैन-सा हो रहा है) । आदेशय = निर्दिश (बतलाओ) । तम् उद्देशम् = तत्स्थानम् (वह स्थान) । यत्रस्था = यस्मिन्स्थाने स्थिता (जहां वह स्थित है) ।

कञ्चुकी—एतु = आगच्छतु (आयें) । देवः = महाराजः (देव) ।

उभौ = कञ्चुकीदुर्योधनौ ।

कञ्चुकी—पुरः=समक्षम् (सामने) । अवलोक्य = दृष्ट्वा (देखकर) । समन्ततः=अभितः (चारों ओर) गन्धम्=आघ्राणम् (महक) । आघ्राय=गन्धग्रहणमभिनीय (सूंघने का अभिनय कर) तुहिनकणशिशिरसमीरणोद्वेल्लितवृन्तबन्धुर-

---

इसके विपरीत आपने कहा है ।

राजा—हे विनयन्धर ! वास्तव में आज भानुमती पूर्ववत् मुझसे बिना पूछे ही निवासगृह से प्रातःकाल ही निकल गई है, इससे मेरा हृदय व्याकुल-सा हो रहा है । अतः वह स्थान बतलाओ जहां भानुमती है ।

कञ्चुकी—महाराज इधर से आयें, इधर से ।

(दोनों घूमते हैं ।)

कञ्चुकी—(सामने देखकर, चारों ओर महक सूँघकर) महाराज ! देखें, यह

प्रकरम्, ईषदालोहितमुग्धवधूकपोलपाटललोध्रप्रसूनविजितश्यामलतासौभाग्यम्, उन्मीलितबहुलकुन्दकुसुमसुरभिशीतलं प्रभातकालरमणीयमग्रतस्ते बालोद्यानम् । तदवलोकयतु देवः । तथाहि—

प्रालेयमिश्रमकरन्दकरालकोशैः
पुष्पैः समं निपतिता रजनीप्रबुद्धैः ।

शेफालिकाविरचितकुसुमप्रकरम्—तुहिनस्य कणैः = हिमकणैः । शिशिरः = शीतलः यः समीरणः = पवनस्तेनोद्वेल्लितम् = आन्दोलितम् । यद् वृन्तम्, तेन वन्धुरा = उन्नतावनताः याः शेफालिकाः = निर्गुण्डीलताः ताभिर्विरचितः कुसुमप्रकरः = पुष्पसमूहः यस्मिंस्तथा (ओस कणों से शीतल पवन द्वारा कम्पित डण्ठलों से ऊंची नीची शेफालिकाओं द्वारा बना फूलों का समुदाय) ईषत् = किञ्चित् (कुछ, थोड़ा) आलोहितमुग्धवधूकपोलपाटललोध्रप्रसूनविजितश्यामलतासौभाग्यम्—आलोहिताः = ध्वारक्ताः ये मुग्धवधूनाम् = सलज्जनारीणाम् । कपोलाः = गण्डस्थलानि, तद्वत्-पाटलानि = शुभ्राणि, लोध्रप्रसूनानि = लोध्रकुसुमानि, तैः विजितम् = पराजितम् श्यामलतानाम् = प्रियङ्गुलतानाम्, सौभाग्यम् = सौन्दर्यम्, यत्र तादृशम् (रक्त वर्ण हुये सलज्ज नारियों के कपोलों के समान शुभ्र लोध्रपुष्पों से पराजित हुई प्रियङ्गु-लताओं के सौन्दर्य के समान सुन्दर)। उन्मीलितवकुलकुन्दकुसुमसुरभिशीतलम्—उन्मीलितानि = विकसितानि बकुलानाम् = चिरपुष्पाणां, कुन्दानां च कुसुमानि = प्रसूनानि, तैः सुरभिः = सुगन्धितम्, शीतलम् = शिशिरम् च (खिली हुई मौलिश्री तथा कुन्द के फूलों से सुगन्धित तथा शीतल)। प्रभातकालरमणीयम् प्रभातकाले = प्रात.समये रमणीयम् = मनोरमम् (प्रातःकालीन रमणीक), बालोद्यानम् = नूतनोद्यानम् (नवीन वाटिका) ते = तव (आपके) अग्रतः = पुरतः (सामने) अवलोकयतु = पश्यतु (देखें) ।

अन्वयः—प्रालेयमिश्रमकरन्दकरालकोशैः रजनीप्रबुद्धैः पुष्पैः समं निपतिताः अलयः अर्कांशुभिन्नमुकुलोदरसान्द्रगन्धसंसूचितानि कमलानि पतन्ति ॥ ७ ॥

प्रालेयेति । प्रालेयमिश्रमकरन्दकरालकोशैः—प्रालेयेन मिश्रः यः मकरन्दः

ओसकणों से शीतल पवन द्वारा कंपाये गये डंठलों से ऊँची नीची शेफालिकाओं द्वारा बना पुष्पसमूह, थोड़े-थोड़े गुलाबी सलज्ज नारियों के गालों के समान श्वेत लोध्रपुष्पों से पराजित प्रियंगुलता के सौन्दर्य वाली, विकसित मौलिश्री तथा कुन्दकुसुमों से सुगन्धित तथा शीतल प्रातःकालीन रमणीयता से युक्त बालोद्यान आपके सामने है । इसे महाराज (तो) देख लें ।

क्योंकि—ओस कणों से मिश्रित मकरन्द से मुकुलित रात्रि में खिले हुये पुष्पों के साथ

अर्कांशुभिन्नमुकुलोदरसान्द्रगन्ध-
संसूचितानि कमलान्यलयः पतन्ति ॥ ७ ॥

राजा—(समन्तादवलोक्य ।) विनयन्धर, इदमपरममुष्मिन्नुषसि रमणीयतरम् पश्य—

जृम्भारम्भप्रविततदलोपान्तजालप्रविष्टै-
र्हस्तैर्भानोर्नृपतय इव स्पृश्यमाना विबुद्धाः ।

तेन करालाः कोशाः येषां ते तैः = हिमसंहतिमिलितपुष्परसदन्तुरितमध्यमागैः (ओस से युक्त मकरन्द से मुकुलित कोश वाले)। रजनीप्रबुद्धैः—रजन्यां = निशीथे प्रबुद्धानि = विकसितानि, तैः (रात्रि में खिले हुये) पुष्पैः = कुसुमैः समम् = साकम् (साथ) । निपतिताः = च्युताः (गिरे हुये)। अलयः = भ्रमराः (भौंरे)। अर्कांशुभिन्नमुकुलोदरसान्द्रगन्धसंसूचितानि—अर्कस्य = सूर्यस्य अंशुभिः = किरणैः भिन्नानाम् = विकसितानाम्, मुकुलानाम् = कलिकानाम्, यान्युदराणि = मध्यभागानि, तेषां यः सान्द्रः = निविडः, तीव्रो वा गन्धः = सुरभिः, तेन संसूचितानि=सम्यक् ज्ञातानि (सूर्य की किरणों से विकसित हुई कलियों की तीव्र गंध से सम्यक् ज्ञात)। कमलानि=अरविन्दानि (कमलों पर)। पतन्ति = आश्रयन्ति । अत्र तात्पर्यालङ्कारः । वसन्ततिलकावृत्तम् । तद्यथा—उक्ता वसन्ततिलका तभजा जगौ गः' इति ॥ ७ ॥

राजा—समन्तात् = अभितः (चारों ओर) अवलोक्य = दृष्ट्वा (देखकर)। इदम् = एतत् (यह) अपरम् = अन्यत् (दूसरा)। अमुष्मिन् = एतस्मिन् (इस) उषसि = प्रभाते (प्रभात में) रमणीयतरम् = अतिमनोरमम् (अधिक सुन्दर)।

अन्वयः—जृम्भारम्भप्रविततदलोपान्तजालप्रविष्टैः भानोः हस्तैः स्पृश्यमानाः विबुद्धाः नृपतयः इव एते द्विरेफाः घनपरिमलस्तोकलक्ष्याङ्गरागाः स्त्रीभिः सार्धम् विकचनलिनीगर्भशय्याम् मुञ्चन्ति ॥ ८ ॥

जृम्भारम्भेति । जृम्भारम्भप्रविततदलोपान्तजालप्रविष्टैः—जृम्भायाः = विकासस्य आरम्भः = उपक्रमः, तेन प्रकृष्टेन वितताः = विस्तृताः ये दलानाम् =

गिरे हुये भौंरे सूर्य की किरणों से विकसित कलियों की तीव्र गंध के कारण ठीक प्रकार ज्ञात होने वाले कमलों पर गिर रहे हैं (आश्रय ले रहे हैं)॥ ७ ॥

राजा—(चारों ओर देखकर) हे विनयन्धर ! इस प्रभात में यह दूसरी मनोरमता है । देखो—

विकसित होना प्रारम्भ होने पर खिली हुई पंखुड़ियों के छोरों रूपी झरोखों से प्रविष्ट

स्त्रीभिः सार्धं घनपरिमलस्तोकलक्ष्याङ्गरागा
मुञ्चन्त्येते विकचनलिनीगर्भशय्यां द्विरेफाः ॥ ८ ॥

कञ्चुकी—देव, नन्वेषा भानुमती सुवदनया तरलिकया च पर्युपास्यमाना तिष्ठति । तदुपसर्पतु देवः ।

पत्राणाम् उपान्ताः = प्रान्तभागाः, त एव जालानि = छिद्राणि, तैः प्रविष्टास्तैः (खिलना प्रारम्भ होने पर विकसित पंखुड़ियों के छोर रूपी छिद्रों से प्रविष्ट हुयी) भानोः = सूर्यस्य (सूर्य की), हस्तैः = करैः, किरणैर्वा (किरणों से)। स्पृश्यमानाः = संस्पृश्यमानाः (छूते हुये)। विबुद्धाः=लब्धबोधाः, नृपतयः इव = राजान इव (जगे हुये राजाओं के समान) एते = इमे (ये) द्विरेफाः = भ्रमराः (भौंरे), घनपरिमलस्तोकलक्ष्याङ्गरागाः—घनेन = सान्द्रेण तीव्रेण वा परिमलेन= गन्धेन, स्तोकम् = किञ्चित्, लक्ष्यः = दृश्यः, अङ्गरागः = विलेपनम्, येषां ते तथाः (तीव्र गन्ध के कारण थोड़ा-थोड़ा अङ्गराग दिखलाई पड़ती हुई)। स्त्रीभिः= वनिताभिः (स्त्रियों, भ्रमरियों के) सार्धम् = समम् (साथ)। विकचनलिनीगर्भशय्याम्—विकचायाः=विकसितायाः, नलिन्याः=कमलिन्याः, गर्भः=मध्यभागः, स एव शय्या ताम् (विकसित कमलिनी के मध्यभागरूपी शय्या को)। मुञ्चन्ति= त्यजन्ति। अत्रोपमालङ्कारः। मन्दाक्रान्तावृत्तम्। तद्यथा—'मन्दाक्रान्ताम्बुधिरसनगैर्मो भनौ गौ ययुग्मम्' इति ॥ ८ ॥

कञ्चुकी—देव !=राजन् (हे महाराज) ननु=किल (निश्चय ही) एषा= इयम् (यह)। भानुमती = राज्ञी (रानी भानुमती) सुवदनया = 'सुवदना' नाम्न्या तरलिकया च = तरलिका नाम्न्या च तया (सुवदना तथा तरलिका दासियों से) पर्य्युपास्यमाना = सेव्यमाना (सेवा की जाती हुई) तिष्ठति = वर्तते (बैठी है) तत् = अतः। देव = भवान् (आप) उपसर्पतु = अग्रे गच्छतु (उनके समीप जायें)।

हुई सूर्य की किरणों से स्पृश्यमान (छूते) हुये राजाओं के समान ये भौंरे तीव्र गन्ध के कारण थोड़ा थोड़ा दिखलाई पड़ने वाले अंगरागों से युक्त स्त्रियों (भ्रमरियों) के साथ विकसित कमलिनी के मध्य-भाग रूपी शय्या को छोड़ रहे हैं (अर्थात् प्रभात होने के कारण कमल में बन्द भौंरे कमलों से निकल रहे हैं) ॥ ८ ॥

कञ्चुकी—महाराज ! यह भानुमती सुवदना तथा तरलिका द्वारा सेवा की जाती हुई बैठी हैं, अतः आप (इनके) समीप चलें।

राजा—(दृष्ट्वा ।) आर्य विनयन्धर, गच्छ त्वं साङ्ग्रामिकं मे रथमुपकल्पयितुम् । अहमप्येष देवीं दृष्ट्वाऽनुपदमागत एव ।

कञ्चुकी—एष कृतो देवादेशः । (इति निष्क्रान्तः ।)

सखी—पिअसहि, अवि सुमरिदं तुए । [प्रियसखी, अपि स्मृतं त्वया ।]

भानुमती—सहि ! सुमरिदम् । [सखी स्मृतम् ।]

सखी—कहेदु पियसही । [कथयतु प्रियसखी ।]

भानुमती—अज्ज किल पमदवणे आसीणाए मम अग्गदो एव्व केण वि अदिसइददिव्वरूवेण णउलेन अहिसदं वावादिदम् । [अद्य किल प्रमदवने आसीनाया ममाग्रत एव केनाऽप्यतिशयितदिव्यरूपेण नकुलेनाहिशतं व्यापादितम् ।]

राजा—त्वम् = विनयन्धर (तुम) साङ्ग्रामिकम्=युद्धसम्बन्धिनम् (लड़ाकू) रथम् = स्यन्दनम् (रथ को) । उपकल्पयितुम् = सज्जीकर्त्तुम् (तैयार करने को) गच्छ = प्रयाहि (जाओ) । अनुपदम् = त्वदनन्तरमेव (तुम्हारे पीछे ही, अभी) आगतः एव = आयात एव (आ ही गया) ।

कञ्चुकी—देवादेशः = प्रभोराज्ञा (महाराज का आदेश) । एषः = अयम् (यह) कृतः = विहितः (किया) । इति = इति कथयित्वा, निष्क्रान्तः = निर्गतः (निकल गया) ।

सखी—स्मृतम् = स्मृतिपथं नीतम् (याद कर लिया) । त्वया = देव्या (महारानी ने) ।

सखी—कथयतु = भणतु (कहें) । प्रियसखी = सखी भानुमती ।

भानुमती—अद्य = अस्मिन् दिने (आज) । किल = खलु । प्रमदवने=प्रमदोद्याने (प्रमदवन में) । आसीनायाः = गृहीतासनायाः (बैठी हुई) मम = मे, भानुमत्याः (मेरे), अग्रत एव = समक्षमेव (सामने ही) । अतिशयितदिव्यरूपेण—अतिशयितम् = अत्यन्तम् दिव्यम् = मनोरमम्, रूपम्=आकृतिः यस्य तादृ-

---

राजा—(देखकर) आर्य विनयन्धर ! जाओ तुम युद्ध वाला रथ तैयार करो, मैं भी रानी को देखकर अभी आ रहा हूँ ।

कञ्चुकी—महाराज का आदेश-पालन अभी कर रहा हूँ (निकल जाता है ।)

सखी—हे प्रिय सखि ! क्या आपको याद आया ?

भानुमती—हे सखि ! याद आ गया ।

सखी—(तो) प्रियसखी कहिये ।

भानुमती—आज प्रमदवन में उपस्थित मेरे सामने ही किसी अतिशय मनोरम रूप वाले नेवले ने सौ साँपों को मार डाला ।

उभे—(अपवार्य ! आत्मगतम्) सान्तं पावम् । पडिहदं अमंगलं । (प्रकाशम् ।) तदो तदो । [शान्तं पापम् । प्रतिहतममङ्गलम् । ततस्ततः ।]

भानुमती—सन्दावावगहीदहिअआए विसुमरिदं मए । ता पुणोवि सुमरिअ कहइस्सम् । [सन्तापावगृहीतहृदयया विस्मृतं मया । तत्पुनरपि स्मृत्वा कथयिष्ये ।]

राजा—(अवलोक्य) अहो, देवी भानुमती सुवदनातरलिकाभ्यां सह किमपि मन्त्रयमाणा तिष्ठति । भवतु । अनेन लताजालेनान्तरितः शृणोमि तावदासां विश्रम्भालापम् । (इति तथा कृत्वा स्थितः ।)

शेन (अति सुन्दर आकृति वाले) केनापि (किसी) नकुलेन = नकुलप्रसिद्ध-जन्तुना (नेवले ने) अहिशतम्—अहीनाम् = सर्पाणाम् शतम् = शतसङ्ख्याकम् (सौ साँपों को) व्यापादितम् = मारितम् (मार डाला) ।

उभे—अपवार्य = निषिध्य (रोक कर) । आत्मगतम् = स्वगतम (मन ही मन), शान्तम् पापम् = कलुषं शान्तिं प्रयातु (पाप शान्त हो), अमङ्गलम् = अशुभम् (अशुभ), प्रतिहतम्=नष्टम् भवतु (अमंगल नष्ट हो जाय) । ततस्ततः= तदनन्तरं, किमभूत् (फिर क्या हुआ) ।

भानुमती—सन्तापावगृहीतहृदयया—सन्तापेन = दु:खेन अवगृहीतम् = अवशी-कृतम्, हृदयम् = चेतो यस्याः सा तया (मानसिक दु:ख से अधीर हृदय) । पुनः अपि = भूयोऽपि (फिर से) विस्मृतम् = विस्मरणं नीतम् (भूल गई) ।

राजा—अहो ! = आश्चर्यम् (अहा) । मन्त्रयमाणा = विचारं कुर्वाणा (मन्त्रणा करती हुई) । भवतु = अस्तु (अच्छा) । अनेन = एतेन (इस) लताजालेन = लतासमूहेन (लताओं के झुरमुट से) । अन्तरितः = प्रच्छन्नो भूत्वा (छिप कर) । आसाम् = सुवदनातरलिकाभानुमतीनाम् (इनका) । विश्रम्भा-लापम् = विश्वस्तवार्तालापम् (विश्वास के साथ की गई बातचीत) । शृणोमि = आकर्णयामि (सुनता हूँ) ।

दोनों—(दूसरी ओर मुँह करके, अपने आप) पाप शान्त हो, अमङ्गल नष्ट हो (प्रकट में) तदनन्तर क्या हुआ ?

भानुमती—मानसिक दुःख के कारण बेचैन हृदया मैं पुनः स्वप्न भूल गई हूँ ।

राजा—(देखकर) अहो ! देवी भानुमती सुवदना तथा तरलिका के साथ कुछ विचार सलाह कर रही हैं । अच्छा, तबतक इस लता समूह से छिपकर इनका विश्वस्त वार्तालाप सुन लूँ । (इस प्रकार छिप कर खड़ा हो जाता है) ।

सखी—सहि अलं संदावेण। कहेदु पिअसही। [सखि, अलं सन्तापेन। कथयतु प्रियसखी।]

राजा—किं नु खल्वस्याः सन्तापकारणम्। अथवाऽनामन्त्र्य मामियमद्य वासभवनान्निष्क्रान्तेति समर्थित एवास्या मया कोपः। अयि भानुमति! अविषयः खलु दुर्योधनो भवत्याः कोपस्य। पश्य—

किं कण्ठे शिथिलीकृतो भुजलतापाशः प्रमादान्मया
निद्राच्छेदविवर्तनेष्वभिमुखी नाद्यासि सम्भाविता।
अन्यस्त्रीजनसङ्कथालघुरहं स्वप्ने त्वया लक्षितो
दोषं पश्यसि कं प्रिये परिजनोपालम्भयोग्ये मयि॥ ९॥

सखी—अयि = भोः (अरे) अलं सन्तापेन = सन्तापं न करणीयम् (आप संताप न करें)।

राजा—अस्याः = एतस्या भानुमत्याः (इनका)। सन्तापकारणम् = दुःख-हेतुः (सन्ताप का कारण)। अनामन्त्र्य = कथनं न कृत्वा (बिना कहे)। वास-भवनात् = निवाससदनात् (निवास-गृह से)। निष्क्रान्ता = निर्गता (निकल आई हैं) अनया = एतया (इसने)। मम = मे (मेरा) कोपः = क्रोधः (क्रोध)। अविषयः = अपात्रम्।

अन्वयः—मया कण्ठे प्रमादात् भुजलतापाशः शिथिलीकृतः किम्? अद्य निद्राच्छेदविवर्तनेषु अभिमुखी त्वम् सम्भाविता न असि? अन्यस्त्रीजनसङ्कथालघुः अहम् स्वप्ने अपि त्वया न उपलक्षितः किम्? हे प्रिये! परिजनोपालम्भयोग्ये मयि कं दोषम् पश्यसि॥ ९॥

किं कण्ठ इति। मया = दुर्योधनेन (मैंने)। कण्ठे = गलदेशे (गले में)। प्रमादात् = अनवधानतया (लापरवाही से)। भुजलतापाशः—भुजे = बाहूलते = वल्लयौं इव इति, तयोः पाशः = जालम्, बन्धनं वा (बाहुरूपी लताजाल)।

सखी—हे प्रिय सखि! सन्ताप मत करो, कहो।

राजा—वास्तव में इनके सन्ताप का क्या कारण है? अथवा यह मुझ से कहे बिना आज निवास-भवन से निकल आई थीं। मैं इस निमित्त क्रुद्ध होऊँगा, यह इन्होंने सिद्ध कर दिया है। हे भानुमति! वास्तव में यह दुर्योधन (मैं) तुम्हारे क्रोध योग्य नहीं है।

देखो—क्या मैंने तुम्हारे गले में डाली हुई अपनी बाहुलताओं के पाश को लापरवाही से ढीला करने का अपराध कर डाला? क्या आज नींद भंग होने पर करवटें बदलते समय आमने-सामने होने पर आलिंगनादि न करने का अपराध कर दिया। अथवा किसी दूसरी

(विचिन्त्य ।) अथवा ।

इयमस्मदुपाश्रयैकचित्ता मनसा प्रेमनिबद्धमत्सरेण ।
नियतं कुपितातिवल्लभत्वात्स्वयमुत्प्रेक्ष्य ममापराधलेशम् ॥ १० ॥

शिथिलीकृत: = श्लथीकृत: किम् (क्या ढीला कर दिया)। अद्य = अस्मिन् दिने (आज)। निद्राच्छेदविवर्तनेषु = निद्राया: छेदा: = स्वप्नभङ्गा: तेषु विवर्तनानि = परिवर्तनानि, तेषु (नींद भंग होने पर करवटें लेने में)। अभिमुखी = सम्मुखीना 'त्वम्' (सामने होती हुई तुम)। सम्भाविता न असि = सत्कृता नासि किम् ? (क्या आलिंगनादि से सन्तुष्ट नहीं की गई हो)। अन्यस्त्रीजनसङ्कथालघु:— अन्येन = परेण स्त्रीजनेन = नार्या सङ्कथया = सङ्कीर्तनेन लघु: = क्षुद्र: (अन्य स्त्री के साथ बात-चीत करने के कारण तुम्हारी दृष्टि से ओछा)। अहम् = दुर्योधन: (मैं) स्वप्नेऽपि = स्वप्नदशायामपि अन्यत्र तु वार्तैव का (स्वप्न में भी) त्वया = देव्या (तुमने) न उपलक्षित: किम् = नावलोकित: किम् (क्या देख तो नहीं लिया)। हे प्रिये ! = अयि प्रेयसि (हे प्रियतमे)। परिजनोपालम्भयोग्ये— परिजन इव = परिचारकवद् उपालम्भयोग्ये = भर्त्सनापात्रे (सेवकों के समान उलाहने के योग्य)। मयि = प्रियतमे (मुझमें) कं दोषम् = कमपराधम् (कौन-सा दोष-अपराध) पश्यसि = अवलोकयसि (देख रही हो)। शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम् । तद्यथा—सूर्याश्वैर्मसजस्तत: सगुरव: शार्दूलविक्रीडितम् ॥ ९ ॥

अन्वय:—अस्मदुपाश्रयैकचित्ता इयम् प्रेमनिबद्धमत्सरेण मनसा अतिवल्लभत्वात् मम अपराधलेशम् स्वयम् उत्प्रेक्ष्य नियतम् कुपिता ॥ १० ॥

इयमिति । अस्मदुपाश्रयैकचित्ता—अहमेव उपाश्रय:—अवलम्बनं यस्या: तादृशम्, एकचित्तम् = अभिन्नहृदयं यस्या: सा (एकमात्र मुझमें ही चित्त लगाने वाली) इयम् = एषा भानुमती (यह)। प्रेमनिबद्धमत्सरेण—प्रेम्णा निबद्ध: मत्सरो यस्मिन् तादृशि = स्नेहजनितक्रोधेन (प्रेम के कारण उत्पन्न हुये क्रोध से युक्त) मनसा = चेतसा (मन से)। अतिवल्लभत्वात् = अतिप्रियत्वात् (अत्यन्त

स्त्री के साथ प्रेमालाप करते हुए तुमने मुझे स्वप्न में भी देख लिया जिससे मैं तुम्हारी दृष्टि से उतर गया ? हे प्रिये ! दासवत् उलहना देने योग्य मुझ में तुम कौन-सा दोष-अपराध देख रही हो ॥ ९ ॥

(सोचकर) अथवा—

एक मात्र मुझ में ही अनुरक्त चित्त वाली यह प्रेमजनित क्रोधी मन से अत्यन्त प्रेम होने के कारण मेरा थोड़ा-सा अपराध स्वयं देखकर निश्चित रूप से नाराज हो गई है ॥१०॥

तत्रापि शृणुमस्तावत् किन्नु वक्ष्यतीति ।

भानुमती—हला ! तदो अहं तस्स अदिसइददिव्वरुविणो णउलस्य दंसणेण उच्छुआ जादा हिदहिअआ अ । तदो उज्झिअ तं आसणट्ठाणं लदामंडवं पविसिदुं आरद्धा । [ततोऽहं तस्यातिशयितदिव्यरूपिणो नकुलस्य दर्शनेनोत्सुका जाता हृतहृदया च । तत उज्झित्वा तदासनस्थानं लतामण्डपं प्रवेष्टुमारब्धा ।]

राजा—(सवैलक्ष्यम् आत्मगतं) किं नामातिशयितदिव्यरूपिणो नकुलस्य दर्शनेनोत्सुका जाता हृतहृदया च । तत्किमनया पापया माद्रीसुताऽनु-

---

प्रिय होने से) मम = मे (मेरा) अपराधलेशम्—अपराधस्य = दोषस्य लेशम् = कणम् (थोड़े से अपराध को) ! स्वयम् = आत्मना (अपने आप) उत्प्रेक्ष्य = समीक्ष्य (देखकर) । नियतम् = नूनमेव (निश्चय ही) । कुपिता = क्रुद्धाजाता (नाराज हो गई है) । अत्रोत्प्रेक्षालङ्कारः । औपच्छन्दसिकं वृत्तम् । तद्यथा—षड् विषमेऽष्टौ समे कलास्ताश्च समे स्युर्नो निरन्तराः । न समात्र पराश्रिता कला वैतालीयेऽन्ते रलौ गुरुः ॥ १० ॥

तथापि = एतत्कृतेऽपि (इतने पर भी) । वक्ष्यति = कथयति (कहती है) । शृणुमः = आकर्णयामः (सुनते हैं) ।

भानुमती—ततः = तदनन्तरम् (इसके बाद) । तस्य = कथितस्य (उस) अतिशयितदिव्यरूपिणः = अत्यन्तमनोरमाकारस्य (अतीव सुन्दर रूप वाले) नकुलस्य = जन्तुविशेषस्य, भ्रान्त्या कनिष्ठपाण्डवस्य (नकुल का) दर्शनेन = अवलोकनेन (देखने से) उत्सुका = कामोत्सुका, जाता = भूता (कामोत्सुक बनी हुई) । हृतहृदया = वशीकृतचित्ता (पराधीन चित्तवाली) । उज्झित्य = परित्यज्य (छोड़कर) । लतामण्डम् = वल्लरीमण्डपम् (लताओं के झुरमुट में) प्रवेष्टुम् = यातुम्, प्रारब्धा = प्रारेभे (घुसना प्रारम्भ किया) ।

राजा—सवैलक्ष्यम् = सविस्मयम् (आश्चर्य के साथ) । अनया = एतया । पापया = दुराचारिण्या (इस दुराचारिणी से) । माद्रीसुतानुरक्तया—माद्रीसुते = नकुले

फिर भी देखते हैं कि यह क्या कह रही है ।

भानुमती—हे सखि ! उस समय में उस अतिशय सुन्दर रूप वाले नकुल के दर्शन से उत्सुक होकर पराधीन चित्त हो गई, तथा उस स्थान को छोड़कर लतामण्डप में घुसने लगी ।

राजा—(आश्चर्य से, मन ही मन) अत्यन्त मनोरम रूपवाले नकुल के दर्शन से क्या उत्कण्ठित बन गई तथा उस पर मुग्ध हो गई तथा फिर इस पापिन माद्री पुत्र पर अनुरक्ति

रक्तया वयमेवं विप्रलब्धाः। (सोत्प्रेक्षम्, 'इयमस्मत्–' (२।१०) इत्यादि पठित्वा।) मूढ दुर्योधन, कुलटाविप्रलभ्यमानमात्मानं बहुमन्यमानोऽधुना किं वक्ष्यसि। (किं 'कण्ठे' (२।९) इत्यादि पठित्वा, दिशोऽवलोक्य।) अहो, एतदर्थमेवास्याः प्रातरेव विविक्तस्थानाभिलाषः सखीजनसङ्कथासु च पक्षपातः। दुर्योधनस्तु मोहादविज्ञातबन्धकीहृदयसारः क्वापि परिभ्रान्तः। आः पापे ! मत्परिग्रहपांसुले।

अनुरक्ता = मुग्धा, तया (माद्री पुत्र नकुल पर मुग्ध)। विप्रलब्धाः = प्रतारिताः (ठगे गये), सोत्प्रेक्षम् = सोपहासम् (उपहास कर)। कुलटाविप्रलभ्यमानम्— कुलटया=स्वैरिण्या, विप्रलभ्यमानम्=प्रतार्यमाणम् (बदमाश द्वारा ठगे जाते हुये)। आत्मानम् = निजम् (अपने को)। बहुमन्यमानः = धन्यं मन्यमानः (धन्य मानते हुये)। अधुना = सम्प्रति (अब), किं वक्ष्यसि = किं वदिष्यसि परसमक्षम् (दूसरों के सामने क्या कहोगे)। एतदर्थम् एव = एतन्निमित्तमेव (इसी कारण) अस्याः = एतस्याः, भानुमत्याः (इसका) प्रातरेव = प्रभात एव (सवेरे ही)। विविक्तस्थानाभिलापः—विविक्ते=एकान्ते स्थाने अभिलाषः=आकाङ्क्षा (एकान्त स्थान पर जाने की इच्छा)। च = तथा, सखीजनसङ्कथासु—सखीजनैः = वयस्याजनैः सह सङ्कथासु = वार्तालापेषु (सखियों के साथ बातचीत करने में)। पक्षपातः = आग्रहः (आग्रह करना)। मोहात् = अज्ञानात् (मोह से) अविज्ञातबन्धकीहृदयसारः—अविज्ञातः = अविदितः बन्धक्याः = कुलटायाः हृदयस्य = चेतसः सारः = तत्वम् येन सः (कुलटा के हृदय की बात न समझने वाला)। क्वापि = कुत्रापि (कहीं)। परिभ्रान्तः = भ्रान्ति गतः (भ्रम में पड़ गया हूँ)। आः पापे = अयि दुष्टे (अरे पापिन) मत्परिग्रहपांसुले = मत्स्त्रीजनकुलटे (मेरी स्त्रियों में दुराचारिणी)।

द्वारा हम छले गये, धोखा दिया गया। (उपहास के साथ 'इयमस्मात्' इत्यादि श्लोक पढ़कर) मूर्ख दुर्योधन ! कुलटा द्वारा धोखा दिये जाने पर अपने को धन्य समझता हुआ तू अब (दूसरों के सामने) क्या कहेगा ! ('किं कण्ठे' इत्यादि श्लोक पढ़ते हुए, इधर-उधर देखकर) अहा ! इसीलिये प्रातःकाल ही इसकी एकान्त स्थान पर जाने की इच्छा और सखियों के साथ बातचीत करने का आग्रह था। दुर्योधन तो मोह के कारण कुलटा के मन की बात न जान कर भ्रम में ही पड़ा रहा। अरी पापिन ! मेरी नीच पत्नी !

तद्भीरुत्वं तव मम: पुर: साहसानीदृशानि
श्लाघा साऽस्मद्वपुषि विनयव्युत्क्रमेऽप्येष राग: ।
तच्चौदार्यं मयि जडमतौ चापले कोऽपि पन्था:
ख्याते तस्मिन्वितमसि कुले जन्म कौलीनमेतत् ॥ ११ ॥

सखी—तदो तदो । [ततस्तत: ।]

अन्वय:—मम पुर: तव तद् भीरुत्वम् ईदृशानि साहसानि अस्मद् वपुषि सा श्लाघा विनयव्युत्क्रमे अपि एष: राग: जडमतौ मयि तच्च औदार्यं चापले क: अपि पन्था: तस्मिन् ख्याते, वितमसि कुले जन्म एतत् कौलीनम् ॥ ११ ॥

तद्भीरुत्वमिति । मम = मे (मेरे) । पुर: = समक्षम् (सामने), तव = ते (तुम्हारा) तद् = तथाविधम् (वैसा) । भीरुत्वम् = भीरुता (डरपोक बनना) ईदृशानि = एतादृशानि (इस प्रकार के) । साहसानि=परपुरुषरूपाणि साहसिक-कार्याणि (साहस) । अस्मद्वपुषि = अस्मद्देहे (हमारे शरीर में) सा = तादृशी (उस प्रकार की अत्यन्त प्रगाढ़) । श्लाघा = प्रशंसा । विनयव्युत्क्रमेऽपि—विनयस्य = पातिव्रतरूपस्य सदाचारस्य व्युत्क्रमे = उल्लङ्घने अपि (पातिव्रत का उल्लंघन करने में भी) एष: = अयम्, एतादृश: (यह इस प्रकार का) राग: = अनुराग:, जडमतौ = मूर्खे मयि = दुर्योधने (मूर्ख मुझ पर) तत् = तादृक् (उस प्रकार का) औदार्यम् = उदारत्वम् (उदारता) । चापले = चाञ्चल्ये (चपलता में) क: अपि = कोऽपि विलक्षण: (कोई, विचित्र) पन्था: = मार्ग: । तस्मिन् तादृशे ख्याते = प्रसिद्धे (उस प्रकार विख्यात) वितमसि = विगतं तमो यस्मात् स: तस्मिन् = दोषरहिते (निर्दोष) कुले = वंशे (वंश में) जन्म = उत्पत्ति: एतत् = इदम् (यह) । कौलीनम् = लोकवाद: 'स्यात् कौलीनं लोकवाद:' इत्यमर: । स्वेच्छया कुलटारीतिस्त्वया गृह्यत इत्याशय: । अत्र विरुद्धयो: सङ्घट-नात् विषमालङ्कार: । मन्दाक्रान्ता वृत्तम् ॥ ११ ॥

मेरे सामने उस प्रकार तेरा भीरुतापन दिखलाना (और अब) इस प्रकार (लता के झुरमुट में अकेले जाने का) साहस करना, हमारे शरीर की वैसी प्रशंसा करना (तथा) इस प्रकार पातिव्रतधर्म का परित्याग कर पर-पुरुष में अनुराग करना, जड़मति मुझ में इस प्रकार की उदारता दिखलाना (और अब इस प्रकार कुलटाओं का मार्ग अपनाना), उस निर्दोष प्रसिद्ध कुल में जन्म लेना तथा इस प्रकार नीचकुल की स्त्रियों का कर्म करना ! (यह दोनों प्रकार के कार्य एक दूसरे से नितांत विरुद्ध हैं) ॥ ११ ॥

सखी—उसके बाद (क्या हुआ) ।

भानुमती—तदो सोवि मं अणुसरन्तो एव्व लदामंडवं पविट्ठो। [ततः सोऽपि मामनुसरन्नेव लतामण्डपं प्रविष्टः।]

राजा—(आत्मगतम्) अहो, कुलटोचितमस्याः पापाया अशालीनत्वम्।

यस्मिंश्चिरप्रणयनिर्भरबद्धभाव-
मावेदितो रहसि मत्सुरतोपभोगः।
तत्रैव दुश्चरितमद्य निवेदयन्ती
ह्रीणासि पापहृदये न सखीजनेऽस्मिन् ॥ १२ ॥

भानुमती—सः = नकुलः (नकुल) माम्=भानुमतीम् (मुझे)। अनुसरन्= अनुगच्छन् (पीछा करता हुआ)।

राजा—अहो=आश्चर्यम्। अस्याः=एतस्याः (इस) पापायाः=दुराचारिण्याः (पापिन का), अशालीनत्वम् = अशिष्टत्वम् (असभ्यता)। कुलटोचितम् = कुलटानाम् उचितम् = दुराचारिण्यनुकूलम् (कुलटाओं के अनुरूप)।

अन्वयः—पापहृदये यस्मिन् सखीजने रहसि मत्सुरतोपभोगः चिरप्रणयनिर्भर-बद्धभावम् आवेदितः तत्र एव अस्मिन् अद्य दुश्चरितम् निवेदयन्ती न ह्रीणासि किम् ॥ १२ ॥

यस्मिन्निति। पापहृदये = अयि पुंश्चलि (हे पापिन), रहसि=एकान्ते (अलग), मत्सुरतोपभोगः—मम = स्वपत्युः सुरतस्य = कामक्रीडनस्योपभोगः = आनन्दम् (मेरी कामक्रीडा)। चिरप्रणयनिर्भरबद्धभावम्—चिरम्=बहुकालम् यः प्रणयः प्रीतिः तेन निर्भरम् = अत्यन्तम्, बद्धः = बद्धभावः = चित्ताभिप्रायः यस्मिन् कर्मणि तत् (चिरकाल से प्रीति के अत्यन्त बद्ध भाव को) आवेदितः = कथितः (कहा करती थी) तत्र एव = तस्मिन् एव (वहीं), अस्मिन् = एतस्मिन् सखीजने (इस सखीसमूह में)। अद्य = इदानीम् (आज, अब)। दुश्चरितम् = दुराचरणम् (दुराचार को), निवेदयन्ती = कथयन्ती (कहती हुई) न ह्रीणासि किम् = न लज्जसे (लजा नहीं रही हो)। वसन्ततिलकावृत्तम् ॥ १२ ॥

भानुमती—तदनन्तर वह भी मेरा अनुसरण करता हुआ लतामण्डप में घुस गया।

राजा—(मन ही मन) इस पापिन का कुलटाओं के योग्य अशिष्टत्व विचित्र है। हे दुराचारिणि ! जिस सखी समाज में एकान्त में मेरा रतिक्रीडा व्यापार चिरकाल से प्रणय निर्भर उत्पन्न भाव से बड़े चाव से कहा करती थी वहीं (उसी सखी समुदाय में) आज (अपना) दुराचार निवेदन करती (तुम) लज्जित नहीं हो रही हो ॥ १२ ॥

उभे—तदो तदो । [ततस्ततः ।]

भानुमती—तदो तेण सप्पगब्भं प्पसारिअकरेण अवहिदं मे त्थणं सुअम् । [ततस्तेन सप्रगल्भं प्रसारितकरेणाऽपहृतं मे स्तनांशुकम् ।]

राजा—(सक्रोधम्) अलमिदानीमतः परमाकर्णनेन । भवतु, तावत्तस्य परवनितावस्कन्दनप्रगल्भस्य माद्रीसुतहतकस्य जीवितमपहरामि । (किंचिद्-गत्वा । विचिन्त्य) अथवा इयमेव तावत्पापशीला प्रथममनुशासनीया । (इति निवर्तते ।)

उभे—तदो तदो । [ततस्ततः ।]

उभे—तदो तदो ! (ततस्ततः) ।

भानुमती—तेन = नकुलेन (नकुल ने) । सप्रगल्भम्=सधार्ष्ट्यम् (उद्दण्डता के साथ) । प्रसारितकरेण = प्रसारितौ हस्तौ येन तेन हस्तौ प्रसार्य (हाथ फैलाकर) । मे = मम (मेरा) । स्तनांशुकम् = स्तनाच्छादनम् (वक्षःस्थल का वस्त्र) । अपहृतम् = आकर्षितम् (खींच लिया) ।

राजा—अतः परम्=अस्मादप्यधिकम् (इससे अधिक) । आकर्णनेन=श्रवणेनालम् व्यर्थम् (सुनना बेकार है) । परवनितावस्कन्दनप्रगल्भस्य—परवनितासु=अन्यस्त्रीषु यदवस्कन्दनम् = बलात्कारः, तत्र प्रगल्भस्य = धृष्टस्य दुष्टमाद्रीसुतस्य (पराई स्त्री के साथ बलात्कार करने वाले दुष्ट माद्रीपुत्र के) जीवितम्=जीवनम् (जीवन का) । अपहरामि = नाशयामि (अपहरण किये देता हूँ) । विचिन्त्य = विचार्य (सोचकर) पापशीलाः = पापं शीलं यस्याः सा दुराचारिणी । प्रथमम् = प्राक् (सबसे पहले), अनुशासनीया = दण्डनीया (दण्ड देने योग्य हैं) ।

दोनों—तदनन्तर (क्या हुआ) ।

भानुमती—फिर उसने धृष्टता से हाथ फैला कर मेरा स्तनांशुक खींच लिया ।

राजा—(**क्रोध के साथ**) इसके बाद अब और सुनना व्यर्थ है । अच्छा, तब तो उस पराई स्त्री के साथ बलात्कार करने में धृष्ट दुष्ट माद्री सुत (नकुल) के प्राण ही लिये लेता हूँ । (**थोड़ी दूर जाकर, सोचकर**) अथवा सबसे पहले इसी पापाचारिणी को दण्ड देना चाहिये । (**यह कहकर लौट आता है**) ।

दोनों—इसके बाद (क्या हुआ) ।



भानुमती—तदो अज्ज उत्तस्स पभादमंगलतूररवमिस्सेण वारविलासिणीजणसंगीदरवेण पडिबोधिदह्मि। [तत आर्यपुत्रस्य प्रभातमङ्गलतूर्यरवमिश्रेण वारविलासिनीजनसङ्गीतरवेण प्रतिबोधिताऽस्मि ।]

राजा—(सवितर्कम्) किं नाम प्रतिबोधितास्मीति स्वप्नदर्शनमनया वर्णितं भवेत् । (विचिन्त्य) अथवा सखीवचनादेव व्यक्तिर्भविष्यति ।

(उभे सविषादमन्योन्यं पश्यतः ।)

सुवदना—जं किम्पि अच्चाहिदं तं भाईरहीप्पमुहाणं णइणं सलिलेण अवहारिअदु। बह्मणाणं वि आसीसाए आहुदिहुदेण पज्जलिणेण भअवदा हुदासणेण अ अन्तरीअदु हारिअदु। [यत्किमपि आहितं तद्भागीरथीप्रमुखानां नदीनां सलिलेनापह्रियताम् । ब्राह्मणानामप्याशिषा आहुतिहुतेन प्रज्वलितेन भगवता हुताशनेन च अन्तर्यताम् ।]

भानुमती—आर्यपुत्रस्य = पत्युः (आर्यपुत्र, दुर्योधन के) । प्रभातमङ्गलतूर्यरवमिश्रेण—प्रभाते = प्रातःकाले मङ्गलानि = शुभानि यानि तूर्याणि = वाद्यानि, तेषां रवेण = शब्देन, मिश्रः = युक्तः, तेन (प्रातःकालीन मांगलिक तूर्य वाद्य ध्वनि मिश्रित) । वारविलासिनीजनसङ्गीतशब्देन = वेश्याजनसंगीतरवेण (वेश्याजनों के संगीत-शब्द द्वारा) प्रतिबोधिताऽस्मि = जागरिताऽस्मि (जगा दी गई) ।

राजा—सवितर्कम् = वितर्क्य (तर्क करके) । अनया = एतया (इसने) । वर्णितम् = कथितम् (वर्णन किया) । विचिन्त्य = विचार्य (सोचकर) । सखीवचनात् = वयस्याकथनात् (सखी की बात से ही) व्यक्तिः = अभिव्यक्तिः (प्रकट, स्पष्ट) । सविषादम् = सखेदम् (खेद के साथ) अन्योन्यम् = परस्परम् (एक दूसरे को) । पश्यतः = अवलोकयतः (देखते हैं) ।

सुवदना—आहितम् = अनिष्टम् (अनिष्ट) । भागीरथीप्रमुखाणाम् = गङ्गादीनां नदीनाम् = सरिताम् (गङ्गा आदि नदियों के) । सलिलेन = जलेन

भानुमती—हे सखि ! फिर आर्य-पुत्र के प्रातःकालीन मंगलवाद्यों की ध्वनि युक्त वारविलासिनियों (वेश्याओं) के संगीत शब्द से मैं जाग गई ।

राजा—(तर्क के साथ) क्या कहा 'जाग गई' ? क्या वास्तव में इसने स्वप्न देखने का ही वर्णन किया ? (सोचकर) अच्छा, सखियों के कहने से ही प्रकट हो जायेगा ।

(दोनों खेद के साथ एक दूसरे को देखने लगते हैं ।)

सुवदना—(इस स्वप्न में) जो कुछ अमङ्गल है वह गंगाजी आदि नदियों के जल के स्पर्श से दूर हो जाय तथा ब्राह्मणों के आशीर्वाद से तथा हवन द्वारा प्रज्वलित अग्निदेव से भस्म हो जाय ।

राजा—अलं विकल्पेन। स्वप्नदर्शनमेवैतदनया वर्णितम्। मया पुनर्मन्दधियाऽन्यथैव सम्भावितम्।

दिष्ट्यार्धश्रुतविप्रलम्भजनितक्रोधादहं नो गतो
दिष्ट्या नो परुषं रुषाऽर्धकथने किञ्चिन्मया व्याहृतम्।
मां प्रत्याययितुं विमूढहृदयं दिष्ट्या कथान्तं गता।
मिथ्यादूषितयाऽनया विरहितं दिष्ट्या न जातञ्जगत्॥ १३॥

(जल से) अपहृयताम्=दूरीक्रियताम् (दूर हो जाय)। आशिषा = आशीर्वादेन (आशीर्वाद से)। आहुतिहुतेन = आहुतिदानेन (आहुति देकर) भगवता हुताशनेन = अग्निदेवेन (भगवान् हुताशन के द्वारा)। अन्तर्यताम् = अलक्ष्यीक्रियताम् (गायब कर दिया जाय)।

राजा—विकल्पेन = सन्देहेन (सन्देह करने से)। मन्दधिया—मन्दा = मन्थरा धीः = बुद्धिः यस्य सः, तेन (मन्द बुद्धि वाले) मया = दुर्योधनेन (मुझ दुर्योधन ने) अन्यथा=विपरीतम् एव (कुछ और ही)। सम्भावितम् = कल्पितम् (सम्भावना कर ली)।

अन्वयः—दिष्ट्या अहम् अर्द्धश्रुतविप्रलम्भजनितक्रोधात् नो गतः। दिष्ट्या अर्द्धकथने रुषा किञ्चित् परुषं मया नो व्याहृतम्। दिष्ट्या विमूढहृदयं मां प्रत्याययितुं कथा अन्तं गता। दिष्ट्या मिथ्या दूषितया अनया जगत् विरहितं न जातम्॥ १३॥

दिष्ट्येति। दिष्ट्या = सौभाग्येन (सौभाग्य से)। अर्द्धश्रुतविप्रलम्भजनितक्रोधात्—अर्द्धम् = अपूर्णम् यथा तथा श्रुतः=आकर्णितः यः विप्रलम्भः=विसंवादः, तेन जनितः = उत्पन्नः यः क्रोधस्तस्मात् (अधसुनी विरुद्ध बात से उत्पन्न हुये क्रोध से) नो गतः = अहं माद्रीसुतं हन्तुं नागाम् (नहीं गया)। अर्द्धकथने = अपूर्णकथने (अधूरी बात में)। रुषा = क्रोधात् (रोष के कारण) मया = दुर्योधनेन किञ्चित् = किमपि (कुछ भी) नो व्याहृतम्=न कथितम् (नहीं कहा)। विमूढ-

---

राजा—सन्देह करना व्यर्थ है। इसने स्वप्न में देखने की बात ही बतलाई है, परन्तु मन्द बुद्धि वाले मैंने कुछ और ही समझ लिया।

सौभाग्य से आधी सुनी विपरीत बात से उत्पन्न हुये क्रोध से मैं (माद्रीसुत नकुल को मारने) नहीं चला गया। अच्छा हुआ कि अपूर्ण बात में आकर मैंने क्रुद्ध होकर अपशब्द नहीं कह डाले। यह भी अच्छा ही हुआ कि मुझ मूर्ख हृदय को समझाने, विश्वास दिलाने के लिए कथा का अन्त भी हो गया (बात पूर्ण हो गई) तथा सौभाग्य है कि झूठा दोष

भानुमती—हला, कहेहि किं एत्थ पसत्थं किं वा असुहसूअअं त्ति। [हला, कथय किमत्र प्रशस्तं किं वाऽशुभसूचकमिति।]

सखी चेटी च—(अन्योन्यमवलोक्य। अपवार्य।) एत्थ णत्थि त्थोअं वि सुहसुअअम्। तदो अलीअं कधअन्ती पिअसहीए अवराहिणी भविस्सम्। सो दाणीं सिणिद्धो जणो जो पुच्छिदो परुसं वि हिदं भणादि। (प्रकाशम्) सहि, सव्वं एव्व एदं असुहणिवेदणम्। ता देवदाणं पणामेण दुव्वादि-पडिग्गहेण अ अन्तरीअदु। ण हु दाढिणो णउलस्स वा दंसणं अहि-सदवहं अ सिविणए पसंसन्ति विअक्खणाओ। [अत्र नास्ति स्तोकमपि शुभसूचकम्। ततोऽलीकं कथयन्ती प्रियसख्या अपराधिनी भविष्यामि। स इदानीं स्निग्धो जनो यः पृष्टः परुषमपि हितं भणति। सखि, सर्वमेवैतदशुभनिवेदनम्। तद्देवतानां प्रणामेन दूर्वादिप्रतिग्रहेण चान्तर्यताम्। न खलु दंष्ट्रिणो नकुलस्य वा दर्शनमहिशतवधं च स्वप्ने प्रशंसन्ति विचक्षणाः।]

हृदयम्—विमूढम् = जडम् हृदयम् = चेतो यस्य सः, तम् (विमूढ हृदय वाले) माम् = मा (मुझको)। प्रत्याययितुम् = बोधयितुम् (समझाने के लिए) कथा = वार्ता (बात)। अन्तम् = समाप्तिम् गता = याता (समाप्त हो गई)। मिथ्या = मृषा (झूठ)। दूषितया = सम्भावितकलङ्कितया (होने वाले कलङ्क से) अनया = एतया (इससे)। जगत् = लोकम् (संसार)। विरहितम् = शून्यम् (रहित) न जातम् = न समभवत् (नहीं हो गया)। शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम्॥ १३॥

भानुमती—अशुभसूचकम् = अमङ्गलसूचकम् (अनिष्ट बतलाने वाला)।

सखी चेटी च। अन्योऽन्यम् = परस्परम् (एक दूसरे को) अपवार्य = निषिध्य (रोककर)। स्तोकम् = अल्पम् अपि (थोड़ा भी)। अलीकम् = असत्यम् (झूठ) 'अलीकं त्वप्रियेऽनृते' इत्यमरः। कथयन्ती = वदन्ती (कहती हुई)। प्रिय-सख्याः = देव्याः भानुमत्याः (प्रिय सखी की)। अपराधिनी = अपराधकर्त्री (अपराध करने वाली)। इदानीम् = साम्प्रतम् (इस समय) स्निग्धः = प्रियः।

(पर पुरुषगमन विषयक) लगाने से इस (भानुमती) से संसार विहीन नहीं हो गया (अर्थात् मैंने उसे मार नहीं डाला)॥ १३॥

भानुमती—हे सखि! कहो, इसमें क्या प्रशंशसनीय अथवा क्या अशुभसूचक है।

सखी व चेटी—(एक दूसरी को देखकर, आड़ में) इसमें थोड़ा भी शुभसूचक नहीं है। अतः असत्य कह कर प्रिय सखी की अपराधिनी बनूँगी। अत एव अब स्नेहीजन यदि पूछा जाता है तो पुरुष कथन भी हितकर ही कहता है (प्रकट रूप में) सखि!

राजा—अवितथमाह सुवदना। नकुलेन पन्नगशतवधः स्तनांशुकापहरणं च नियतमनिष्टोदर्कमस्माकं तर्कयामि।

प्रायेणैव हि दृश्यन्ते स्वप्नाः कामं शुभाशुभाः।
शतसंख्या पुनरियं सानुजं स्पृशतीव माम्॥ १४॥

परुषम्=कठोरम् (कड़वी) हितम् = कल्याणकरम् (लाभ करने वाली) भणति= कथयति (कहता है)। देवतानां = सुराणाम् (देवताओं के) प्रणामेन = प्रणत्या (प्रमाण द्वारा) दूर्वादिप्रतिग्रहेण = दधिदूर्वादिमांगलिकवस्तुस्पर्शेण (दूब आदि शुभ वस्तुएँ छूने से)। अन्तर्यताम् = अन्तरीक्रियताम्। दंष्ट्रिणः = दंष्ट्राधारिणः नकुलस्य = नकुलजन्तोः (नेवले के) अन्यस्य=परस्य (दूसरे के)। विचक्षणाः= विद्वांसः (विद्वान्)। अहिशतवधं = शतसर्पनाशं (१०० साँपों का मारना) प्रशंसन्ति = प्रशंसां कुर्वन्ति (प्रशंसा करते हैं)।

राजा—अवितथम् = सत्यम् (सच)। पन्नगशतवधः = शतसर्पमारणम् (१०० साँपों का मारा जाना)। नियतम् = निश्चितम् (निश्चय ही)। अनिष्टोदर्कम्—अनिष्टम् उदर्के यस्य तत् = अशुभानन्तरम् (अशुभ सूचक)।

अन्वयः—कामं शुभाशुभाः स्वप्नाः प्रायेण दृश्यन्ते, इयम्, पुनः शतसंख्या सानुजं मां स्पृशति इव॥ १४॥

प्रायेणेति। कामम्=पर्याप्तम् (पर्याप्त) शुभाशुभाः—शुभाश्च अशुभाश्च=मंगलामङ्गलपरिणामाः (शुभ तथा अशुभ) स्वप्नाः (स्वप्न) प्रायेणः = प्रायशः (अधिकतर) दृश्यन्ते = अवलोक्यन्ते (देखे जाते हैं)। इयम् = एषा (यह) शतसंख्या = शताहिवधः (१०० की संख्या)। सानुजम् = अनुजैः सहितम् (भाइयों सहित) माम् = दुर्योधनम् (मुझ बड़े भाई दुर्योधन को) स्पृशति इव = संकेतयति इव (संकेत-सी कर रही है)। पथ्यावक्त्रं वृत्तम्॥ १४॥

यह सभी अशुभ कथन है अतः देवताओं के प्रणाम से एवं दधि-दूर्वा आदि मङ्गल वस्तुओं के स्पर्श से (अमंगल को) दूर करें। वास्तव में दाढ़ों वाले नेवले अथवा अन्य का (स्वप्न में) देखना अथवा सौ साँपों का स्वप्न में मारना भी विद्वान् पुरुष अच्छा नहीं बतलाते हैं।

राजा—सुवदना ने सच कहा, "नकुल के द्वारा १०० साँपों का मारा जाना, तथा वक्षःस्थल का वस्त्र खींचना निश्चित रूप से अशुभ सूचक है" ऐसा मुझे लगता है।

लोग यद्यपि शुभ तथा अशुभ बहुतेरे स्वप्न देखते हैं। परन्तु सौ की गिनती अनुजों सहित मुझे छू-सी रही है॥ १४॥

(वामाक्षिस्पन्दनं सूचयित्वा ।) आः ! कथं ममापि नाम दुर्योधनस्यानिमित्तानि हृदयक्षोभमावेदयन्ति (सावष्टम्भम् ।) अथवा भीरुजनहृदयप्रकम्पनेषु का गणना दुर्योधनस्यैवंविधेषु विषयेषु ? गीतश्चायमर्थोऽङ्गिरसा—

ग्रहाणां चरितं स्वप्नोऽनिमित्तान्युपयाचितम् ।
फलन्ति काकतालीयं तेभ्यः प्राज्ञा न बिभ्यति ॥ १५ ॥

अनिमित्तानि=अपशकुनानि (अशुभसूचक) । हृदयक्षोभम्—हृदयस्य=चेतसः क्षोभम् = दुःखम् (हृदय के क्षोभ को) । आवेदयन्ति = प्रकटयन्ति (प्रकट करते हैं) । सावष्टम्भम् = सगर्वम् (साभिमान) । भीरुजनहृदयप्रकम्पनेषु = कातरजनचेतःस्पन्दनेषु (डरपोक लोगों के हृदय की धड़कनों में) । एवंविधेषु = एतादृशेषु (इस प्रकार के) विषयेषु = भयस्थानेषु (भय के मामलों में) । अर्थः = आशयः । गीतः = स्फुटीकृतः (स्पष्ट किया) अङ्गिरसा = अङ्गिरा महर्षिणा (अङ्गिरा नामक ऋषि ने) ।

अन्वयः—ग्रहाणां चरितं स्वप्नः अनिमित्तानि उपयाचितं (च) काकतालीयं फलन्ति तेभ्यः प्राज्ञाः न बिभ्यति ॥ १५ ॥

ग्रहाणामिति । ग्रहाणाम् = सूर्यादिग्रहाणाम् (ग्रहों की) । चरितम् = गतिः (गति) स्वप्नः = स्वप्नदर्शनम् अनिमित्तानि = अहेतुकानि उत्पातानि (अकारण उत्पात, अपशकुन) उपयाचितं च = दिव्यदोहनं च (यद्दीयते च देवेभ्यो मनो राज्यस्य सिद्धये । उपयाचितकं दिव्यदोहदं तद्विदुर्बुधा । (इति होरावली) । (अलौकिक दुःख) । काकतालीयम्—काक इव तालमिव च काकतालम्, तद्वत्काकतालीयम् = अनिश्चितम् । (कौवे का आना और ताड़ के फल का गिरना

(बायीं आँख का फड़कना सूचित कर) अरे ! मुझ दुर्योधन को भी क्या असगुन हृदय में क्षोभ बतला रहे हैं (सगर्व) अथवा डरपोक लोगों के हृदय को धड़काने वाले असगुन आदि की गिनती ही दुर्योधन के लिये क्या अर्थ रखती है । महर्षि अंगिरा ने स्पष्ट किया है—

ग्रहों की गति, स्वप्न, अपशकुन तथा दिव्य उत्पात काकतालीयन्याय के अनुसार फल देते भी हैं और नहीं भी देते हैं । बुद्धिमान् पुरुष इनसे भयभीत नहीं होते हैं ॥ १५ ॥

टिप्पणी—काकतालीय—(कहावत) कौवे का बैठना और ताड़-फल का गिरना, दोनों कार्य अनिश्चित हैं अर्थात् यह आवश्यक नहीं है कि जब जब कौवा बैठे तो हर बार ताड़-फल उस पर गिरे ही । इसी प्रकार अनिश्चित फल वाले कार्यों के लिए काकतालीयन्याय की संज्ञा दी जाती है ।

तद्भ्रानुमत्या स्त्रीस्वभावसुलभामलीकाशङ्कामपनयामि ।

भानुमती—हला सुवअणे, पेक्ख दाव उदअगिरिसिहरन्तरविमुक्करहं-वरो विअलिअसंझाराअप्पसण्णदुरालोअमण्डलो जादो भअवं दिवहणाहो। [हला सुवदने, पश्य तावदुदयगिरिशिखरान्तरविमुक्तरथवरो विगलितसन्ध्याराग-प्रसन्नदूरालोकमण्डलो जातो भगवान् दिवसनाथः ।]

सखी—सहि रोसाण्णिअकण्णकन्तिसरिसेण लदाजालन्तरापडिदकिरण-निवहेण पिञ्जरिदोज्जाणभूमिभाओ पूरिदपदिण्णो विअरिउदुप्पेक्खणिज्जो

अर्थात् कभी होना कभी न होना) फलन्ति=फलितानि भवन्ति (फलित होते हैं)। तेभ्यः = स्वप्नादिभ्यः (स्वप्नादि से) प्राज्ञाः = बुद्धिमन्तः (बुद्धिमान् पुरुष) न बिभ्यति = भयं न कुर्वन्ति (नहीं डरते हैं)। अत्र दीपकालङ्कारः । पथ्यावक्त्र वृत्तम् ॥ १५ ॥

स्त्रीस्वभावसुलभाम् = नारीत्वसुलभाम् (स्त्री-जाति-सुलभ)। अलीकाम् = मिथ्याम् (झूठी) आशङ्काम् = सन्देहम् । अपनयामि = अपहरामि (दूर किये देता हूँ)।

भानुमती—उदयगिरिशिखरान्तरविमुक्तरथवरः—उदयगिरेः = उदयाचलस्य यच्छिखरं = शृङ्गम्, तेन यद् अन्तरम् = व्यवधानम्, तेन विमुक्तः रथवरः = स्यन्दनश्रेष्ठो यस्य तथाभूतः (उदयाचल के शिखर के मध्य निकला हुआ सुन्दर रथ)। विगलितसन्ध्यारागप्रसन्नतरालोकमण्डलः—विगलितः = निर्गतः यः सन्ध्यायाः = सन्ध्याकालस्य रागः = अरुणत्वम्, तेन प्रसन्नतरम् = अतिनिर्मलम् आलोकमण्डलम् = प्रभाबिम्बम् यस्य सः (सान्ध्य अरुणिमा के दूर हो जाने पर अत्यन्त निर्मल आलोक मण्डल वाले) भगवान् = ऐश्वर्ययुक्तः दिवसनाथः=दिनेशः (सूर्यभगवान्) जातः = सम्भूतः (हो गये हैं)।

सखी—रोषानीतकनककान्तिसदृशेन—रोषेणानीता = अरुणत्वं प्रापिता या

स्त्रीजन सुलभ झूठी आशङ्का को दूर किये देता हूँ ।

भानुमति—हे सखि सुवदने। देख तो उदयाचल शिखरमध्य छोड़े गये सुन्दर रथ वाले, विगलित सान्ध्य लालिमा के कारण अतीव निर्मल प्रकाश मण्डल वाले भगवान दिवस-नाथ हो गये हैं ।

सखी—हे सखि ! कनक कान्ति सदृश अरुणिमायुक्त लतासमूह के मध्य पड़ने वाले रश्मिजाल से उद्यान भूमि को शुभ्र बनाने वाले, शत्रुओं द्वारा दुष्प्रेक्ष्य, सहस्ररश्मि भगवान्

ज़ादो भअवं सहस्सकिरणो । ता समओ दे कुसुमचन्दणगब्भेण अग्घेण पज्जुवट्ठादुम् । [सखि, रोषानीतकनककान्तिसदृशेन लताजालान्तरापतितकिरण-निवहेन पिञ्जरितोद्यानभूमिभागः पूरितप्रतिज्ञ इव रिपुदुष्प्रेक्षणीयो जातो भग-वान्सहस्रकिरणः । तत्समयस्ते कुसुमचन्दनगर्भेणाऽर्घेण पर्युपस्थातुम् ।]

भानुमती—हञ्जे तरलिए ! उवणेहि मे अग्घभाअणं जाव भअवदो सहस्सरस्सिणो सबरिअं णिव्वट्ठेमि । [हञ्जे तरलिके ! उपनय मेऽर्घ्यभाजनं यावद्भगवतः सहस्ररश्मेः सपर्यां निर्वर्तयामि ।]

कनककान्तिः = स्वर्णदीप्तिः, तस्या सदृशेन (अरुणिमायुक्त स्वर्ण कान्ति सदृश) । लताजालान्तरापतितकिरणनिवहेन—लताजालान्तरेभ्यः = वल्लरीसमूहान्तरेभ्यः आ-पतितः = आगतः यः किरण-निवहः = रश्मि-समूहः, तेन (लता समूह से आये हुये किरण समूह द्वारा) । पिञ्जरितोद्यानभूमिभागः—पिञ्जरितः = पिङ्गली-कृतः उद्यानस्य = उपवनस्य भूमिभागः = भूप्रदेशः येन तथाभूतः (उद्यान के भू-भाग को शुभ्र बनाने वाला) । पूरितप्रदक्षिणः इव = पूर्णतां नीता प्रदक्षिणा = भूपरिक्रमा येन तथा, तद्वत् (मानो पृथ्वी की परिक्रमा पूरी कर चुका हो) । रिपुर्दुष्प्रेक्षणीयः—रिपुभिः = शत्रुभिः उलूकान्धकारादिभिः दुष्प्रेक्षणीयः = कष्टेन दृष्टव्यः (शत्रु—उलूक अन्धकार आदि द्वारा कठिनता से देखा जा सकने वाला) । सहस्रकिरणः = सूर्यः । ते = तव (तुम्हारा) । कुसुमचन्दनगर्भेण—कुसुमानि = पुष्पाणि चन्दनश्च गर्भे = मध्ये यस्य तथाविधेन (पुष्प चन्दन से पूर्ण) । अर्घेण अर्घदानेन (अर्घ द्वारा) पर्युपस्थातुम्—परितः उपस्थातुम् = पूजयितुम् (पूजा करने का) समयः = कालः (सञ्जातः) ।

भानुमती—मे = मम (मेरा) अर्घ्यभाजनम् = अर्घ्यपात्रम् (अर्घ्य देने का पात्र) उपनय = आहर (ले आओ) । सपर्याम् = पूजाम् । निर्वर्तयामि = सम्पादयामि (करती हूँ) ।

सूर्य मानो अपनी परिक्रमा पूर्ण कर चुके हैं । अतः पुष्पचन्दन युक्त अर्घ द्वारा तुम्हारे पूजन करने का समय हो गया है ।

भानुमती—हे सखि तरलिके । मेरा अर्घ्यभाजन ले आओ, जिससे भगवान् सहस्र-रश्मि की पूजा कर लूँ ।

चेटी—जं देवी आणवेदि। (इति निष्क्रम्य, पुनः प्रविश्य) भट्टिनि! एदं अग्घभाअणं। ता णिव्वट्टीअदु भअवदो सहस्सरस्सिणो सवरिआ। [यद्देवी आज्ञापयति। देवि एतदर्घभाजनम्। तन्निवर्तयतु भगवतः सहस्ररश्मेः सपर्याम्।]

राजा—अयमेव साधुतरोऽत्रसरः प्रियासमीपमुपगन्तुम्।

(इत्युपसर्पति)

सखी—(विलोक्यात्मगतम्।) कहं महाराओ समाअदो। हन्त! किदो से पिअसहीए णिअमभङ्गो रण्णा। [कथं महाराजः समागतः। हन्त! कृतोऽस्याः प्रियसख्या नियमभङ्गो राज्ञा।]

भानुमती—(दिनकराभिमुखीभूय) भअवं! अंबरमहासरेक्कसहस्सपत्त! पुव्वदिसावहूमुहमण्डणकुंकुमविसेसअ, सअलभुवणेक्करअणप्पदीव एत्थ सिविणअदंसणे जं किं वि अच्चाहिदं तं भअवदो पणामेण सभादुअस्स

चेटी—आज्ञापयति = आदिशति (आज्ञा है)। भट्टिनि = स्वामिनि! निवर्तयतु = सम्पादयतु।

राजा—अयम् = एषः एव (यही) प्रियासमीपम् = प्रेयसीपार्श्वम् (प्रिया के निकट) उपगन्तुम् = प्रयातुम् (जाने को) साधुतरः = अतिश्रेष्ठः (अत्युत्तम) अवसरः = कालः।

सखी—प्रियसख्याः = भानुमत्याः (प्रिय सखी का) नियमभङ्गः = व्रत-भङ्गः (ब्रह्मचर्यव्रतलोप)।

भानुमती—दिनकरम् = सूर्यं (सूर्य के)। अभिमुखीभूय = सम्मुखीभूत्वा (सामने होकर) अम्बरमहासर-एकसहस्रपत्र!—अम्बरमेवमहासरः = आकाश-विशालजलाशयः, तस्मिन् एकम् = मुख्यम् सहस्रपत्रम् = कमलम्, तत्सम्बुद्धौ।

चेटी—जो देवी की आज्ञा। (यह कह कर निकल जाती है, पुनः प्रवेशकर) हे स्वामिनि! यह अर्घ्य-पात्र है, अतः भगवान् सहस्रकिरण (सूर्य) की पूजा कीजिये।

राजा—यही प्रिया के समीप जाने का सबसे अच्छा समय है।

(इस प्रकार आगे बढ़ता है)

सखी—(देखकर, मन ही मन) क्या महाराज आ गये हैं। हाय! तब तो प्रिय सखी का व्रत इन्होंने भङ्ग कर दिया।

भानुमती—(सूर्य की ओर मुख कर) हे भगवान्! आकाशरूपी विशाल जलाशय के प्रमुख कमल! पूर्व दिशा रूपी वधू के मुख को सजाने वाले कुङ्कुम तिलक! सकल-

अज्जउत्तस्स कुसलपरिणामि होदु। (अर्घ्यं दत्त्वा।) हञ्जे तरलिए! उवणेहि मे कुसुमाइं जाव अवराणं वि देवदाणं सवरिअं णिब्बट्टेमि। (इति हस्तौ प्रसारयति।) [भगवन्, अम्बरमहासर-एकसहस्रपत्र, पूर्वदिशावधू-मुखमण्डनकुङ्कुमविशेषक, सकलभुवनैकरत्नप्रदीप! अत्र स्वप्नदर्शने यत्किमप्यत्याहितं तद्भगवतः प्रणामेन सभ्रातृकस्याऽऽर्यपुत्रस्य कुशलपरिणामि भवतु। हञ्जे तरलिके! उपनय मे कुसुमानि यावदपरासामपि देवतानां सपर्यां निर्वर्तयामि।]

(राजा संज्ञया परिजनमुत्सार्य पुष्पाणि स्वयमुपनयति, स्पर्शसुखमभिनीय कुसुमानि भूमौ पातयति च।)

(हे आकाशरूपी विशालजलाशय में प्रमुख कमल)। पूर्वदिशावधूमुखमण्डन-कुङ्कुमविशेषक—पूर्वदिशा एव वधूः, तस्याः मुखमण्डनस्य कुङ्कुमविशेषः, तत्-सम्बुद्धौ = हे प्राचीदिग्वनितामुखालङ्करणकुङ्कुमतिलक! (हे पूर्वदिशारूपी वधू के मुख को सजाने वाले कुङ्कुमतिलक)। सकलभुवनैकरत्नप्रदीप!—सकलस्य भुवनस्य = सम्पूर्णलोकस्य एकः = अद्वितीयः रत्नप्रदीपः = मणिदीपस्तत्सम्बुद्धौ (हे समस्तभुवन के अद्वितीय रत्नप्रदीप) स्वप्नदर्शने = स्वप्नावलोकने (स्वप्न देखने में) अत्याहितम् = अशुभम् (अमङ्गल)। भगवतः = देवस्य सवितुः (सूर्यभगवान् के) प्रणामेन = प्रणत्या (प्रमाणद्वारा)। सभ्रातृकस्य = भ्रातृ-सहितस्य (भइयों सहित) आर्यपुत्रस्य = स्वामिनः (पतिदेव के) कुशलपरि-णामि—कुशलश्चासौ परिणामश्चास्ति अस्य तत् (कुशलपरिमाणवाला)। अपरा-साम् = अन्यासाम् (दूसरी) देवतानाम् = देवीनाम् (देवियों की)।

संज्ञया = सङ्केतेन (इशारे से)। परिजनम् = दासीवर्गम् (परिजनों को) उत्सार्य = अपसार्य (हटा कर)। उपनयति = आहरति (ले आता है)। सुख-स्पर्शम् = आनन्दस्पर्शम् (सुखदस्पर्श)। अभिनीय = अभिनयं कृत्वा (अभिनय करके)। कुसुमानि = पुष्पाणि (फूल)। भूमौ = पृथिव्याम् (भूमिपर)। पातयति = विकिरति (गिरा देता है)।

भुवन के अद्वितीय रत्नप्रदीप! इस स्वप्नदर्शन में जो अमङ्गल हो, उसे अपने प्रणाम द्वारा भाइयों सहित आर्य-पुत्र के लिए कुशल परिणाम (मङ्गलमय) वाला बना दीजिये। (अर्घ्य देकर) हञ्जे तरलिके! मेरे लिए फूल ले आ, जिससे दूसरी देवियों की पूजा भी कर लूँ। (यह कह कर हाथ फैलाती है।)

(राजा इशारे से परिजनों को हटाकर फूल स्वयं ले लेता है। सुख के स्पर्श का अभिनय करके फूल भूमि पर गिरा देता है।)

भानुमती—(सरोषम्) अह्वो प्पमादो परिजनस्स । (परिवृत्य राजानमवलोक्य ससाध्वसं लज्जां नाटयति) [अहो ! प्रमादः परिजनस्य ।]

राजा—देवि ! अनिपुणः परिजनोऽयमेवंविधे सेवावकाशे । तत्प्रभवत्यनुशासने देवी । अयि प्रिये ।

विकिर धवलदीर्घापाङ्गसंसर्पि चक्षुः-
परिजनपथवर्तिन्यत्र किं सम्भ्रमेण ।
स्मितमधुरमुदारं देवि ! मामालपोच्चैः
प्रभवति मम पाण्योरञ्जलिः सेवितुं त्वाम् ॥ १६ ॥

भानुमती—सरोषं = सक्रोधं (क्रोध से) । प्रमादः = असावधानता । परिजनस्य = दासीजनस्य । परिवृत्य = परावृत्य (घूम कर) । ससाध्वसं = सभयं (डर के साथ) । लज्जां = त्रपाम् ।

राजा—अनिपुणः = सकुशलः । अयं = एषः दुर्योधनः । एवंविधसेवावकाशे = ईदृशसेवासमये (ऐसे सेवा के अवसर पर) अनुशासने = दण्डदाने (सजा देने में) प्रभवति = समर्थोऽस्ति (समर्थ हैं) ।

अन्वयः—किं सम्भ्रमेण, परिजनपथवर्त्तिनि अत्र धवलदीर्घापाङ्गसंसर्पि चक्षुः विकिर । देवि ! मां स्मितमधुरम् उदारम् उच्चैः आलप । मम पाण्योः त्वां सेवितुम् अञ्जलिः प्रभवति ॥ १६ ॥

विकिरेति । किम् = किमर्थम्, सम्भ्रमेण = भ्रान्तिकरणेन (भ्रम करने से क्या) परिजनपथवर्तिनि—परिजनस्य = सेवकस्य पथः = मार्गः, तस्मिन् वर्तितुं शीलं यस्य तादृशी (सेवक के मार्ग पर चलने वाले) । अत्र = अस्मिन्, मयि = दुर्योधने (यहाँ मेरी ओर) । धवलदीर्घापाङ्गसंसर्पि—धवलः = निर्मलः दीर्घश्च = विशालश्च यः अपाङ्गः = नयनप्रान्तभागः, तत्र संसर्पि = गमनशीलं (काजल रहित विशाल वरौनियों तक व्याप्त) चक्षुः = नेत्रम् । विकिर = निक्षिप (डालो) ।

भानुमती—(क्रोध में आकर) अरे ! दासीवर्ग की कैसी लापरवाही है ।
(घूमकर राजा को देखकर लज्जा का अभिनय करती है) ।

राजा—हे देवि ! यह सेवक इस प्रकार सेवा कर पाने में कुशल नहीं है । अतः देवी इसे दण्ड दे सकती हैं । हे प्रिये !

भ्रम क्यों कर रही हो । सेवकों के मार्ग पर चलने वाले धवल विशाल वरौनियों तक फैले नेत्रों को मेरी ओर डालो । हे देवि ! मुझसे मन्द मुस्कान युक्त उदार स्पष्ट वार्तालाप करो । मेरे हाथों की अञ्जलि तुम्हारी सेवा के लिए तैयार है । (अर्थात् मैं सर्वदा तुम्हारी सेवा करने को हाथ जोड़े तैयार रहता हूँ) ॥ १६ ॥

भानुमती—अज्जउत्त, अब्भणुण्णादाए तुए अत्थि मे कस्सि बि णिअमे अहिलासो। [आर्यपुत्र, अभ्यनुज्ञातायास्त्वयास्ति मे कस्मिन्नपि नियमेऽभिलाषः।]

राजा—श्रुतविस्तार एवास्मि भवत्याः स्वप्नवृत्तान्तं प्रति। तदलमेवं प्रकृतिसुकुमारमात्मानं खेदयितुम्।

भानुमती—अज्जउत्त, अदिमात्तं मे सङ्का बाहेइ। ता अणुमण्णदु मं अज्जउत्तो। [आर्यपुत्र, अतिमात्रं मां शङ्का बाधते। तदनुमन्यतां मामार्यपुत्रः।]

देवि = अयि प्रिये! माम् = मा (मुझे)। स्मितमधुरम्—स्मितेन = ईषद्हासेन मधुरम् = सुखदम् (मन्द मुसकान से मृदु)। उदारम् = मनोहरम् (मनोरम को)। उच्चैः = तीव्रम् (जोर से)। आलप = वार्तां कुरु (बातचीत करो)। मम = मे (मेरे)। पाण्योः = करयोः (दोनों हाथों में) त्वां = देवीं भानुमतीं (तुम्हें)। सेवितुम् = अर्चितुम् (सेवा करने को) अञ्जलिः = करसम्पुटः (हाथ जोड़ना) प्रभवति = समर्थो भवति (समर्थ है)। अत्र दीपकालङ्कारः। मालिनी वृत्तम्। तद्यथा = ननमयययुतेयं मालिनी भोगिलोके॥ १६॥

भानुमती—आर्यपुत्र = हे देव! अभ्यनुज्ञातायाः = प्राप्ताज्ञायाः (आज्ञा पाई हुई) त्वया = भवता (आपके द्वारा)। मे = मम (मेरी)। नियमे = व्रते पूजने वा (नियम, पूजन में) अभिलाषः = इच्छा। अस्ति = वर्तते (है)।

राजा—श्रुतविस्तार एव—श्रुतः = आकर्णितः विस्तारेण येन सः (विस्तार पूर्वक सुन लिया है)। भवत्याः = देव्याः (महारानी जी का)। स्वप्नवृत्तान्तम् = स्वप्नदर्शनवृत्तम् (स्वप्न वृत्तान्त)। प्रकृतिसुकुमारम्—प्रकृत्या = स्वभावेन सुकुमारम् = कोमलम्। आत्मानम् = स्वम् (स्वभाव से कोमल अपने को)। खेदयितुम् = दुःखितुम् (दुःखी करने को)।

भानुमती—अतिमात्रम् = अत्यन्तम्। मे = मह्यम् (मेरे लिए)। शङ्का = सन्देहः। बाधते = पीडयति (व्याकुल कर रहा है)। अनुमन्यताम् = अनुमतिं ददातु (आज्ञा दीजिये)।

भानुमती—आर्यपुत्र! आपसे आज्ञा लेकर मुझे कोई व्रत (पूजा) करने की अभिलाषा है।

राजा—मैं विस्तार से आपका स्वप्न वृत्तान्त सुन चुका हूँ। अतः एव स्वभाव से कोमल अपने को आप खिन्न मत करें।

भानुमती—आर्यपुत्र! मुझे अत्यधिक शङ्का व्याकुल कर रही है। अत एव आप मुझे (व्रत करने के लिए) अनुमति दे दीजिये।

राजा—(सगर्वम् ।) देवि, अलमनया शङ्कया । पश्य—

किं नो व्याप्तदिशां प्रकम्पितभुवामक्षौहिणीनां फलं
किं द्रोणेन किमङ्गराजविशिखैरेवं यदि क्लाम्यसि ।
भीरु ! भ्रातृशतस्य मे भुजवनच्छायासुखोपस्थिता
त्वं दुर्योधनकेसरीन्द्रगृहिणी शङ्कास्पदं किं तव ॥ १७ ॥

राजा—अनया = एतया (इस) । शङ्कया = सन्देहेन (सन्देह से) । अलम् = निषेधे ।

अन्वयः—यदि एवं क्लाम्यसि (तर्हि) नः व्याप्तदिशां प्रकम्पितभुवाम् अक्षौहिणीनां किं फलं द्रोणेन (वा) किं, अङ्गराज-विशिखैः किं ? हे भीरु ! त्वं मे भ्रातृशतस्य भुजवनच्छायासुखोपस्थिता दुर्योधन-केसरीन्द्र-गृहिणी । तव किं शङ्कास्पदम् ॥ १७ ॥

किं नो व्याप्तेति । यदि = चेत् । एवम् = अनेन प्रकारेण (इस प्रकार) क्लाम्यसि = खिद्यसे (दुःखी होती हो) (तर्हि) नः = अस्माकं कौरवाणां (हमारी) व्याप्तदिशाम् व्याप्ताः = व्यापृताः दिक्षु यास्तासाम् (दिशस्तु ककुभः काष्ठाः इत्यमरः) । प्रकम्पितभुवाम्—प्रकम्पा भूः याभिस्ताः, तासाम् = प्रचलितधराणाम् (भूमि को कंपा देने वाली) । अक्षौहिणीनाम्=चतुरङ्गिणी सेनानाम् (चतुरंगिणी सेनाओं का) किं फलम् = को लाभः (क्या फल है) । द्रोणेन = द्रोणाचार्येण (वा) किम् = कः लाभः । अङ्गराज-विशिखैः—अङ्गराजस्य = अङ्गदेशाधिपतेः कर्णस्य विशिखैः = शरैः (कर्ण के पैने बाणों से) किम् = कोऽर्थः । हे भीरु, अयि भयशीले (हे डरपोक !) त्वं = भानुमती । मे = मम । भ्रातृशतस्य =

राजा—(अभिमान के साथ) हे देवि ! (तुम्हारा) शङ्का करना व्यर्थ है । देखो—

यदि तुम इस प्रकार दुःखी होती हो तो दिशाओं में व्याप्त, भूमि को कँपा देने वाली, अक्षौहिणी सेनाओं का क्या फल है ? आचार्य द्रोण से क्या लाभ ? अङ्गराज कर्ण के (विनाशकारी) बाणों से क्या लाभ है ? हे भीरु ! सौ भाइयों वाले मुझ दुर्योधन केसरीन्द्र की बाहु वन की छाया में सुख से रहने वाली भार्या हो । तुम्हें शङ्का किस बात की है !

टिप्पणी—अक्षौहिणी २१८७०० सैनिकों की एक अक्षौहिणी सेना मानी जाती है—
एकेभैकरथस्त्र्यश्वाः पत्तिः पञ्चपदातिका । सेना सेनामुखं गुल्मो वाहिनी पृतना चमूः ॥
अनीकिनी च पतिः स्यादिभाद्यैस्त्रिगुणैः क्रमात् । दशानीकिन्योऽक्षौहिणी इति ॥
(चिन्तामणि)

भानुमती—अज्जउत्त, ण हि किं बि मे सङ्काकालणं तुम्हेसु सण्णिहिदेसु। किन्तु अज्जउत्तस्स एव्व मणोरहसंपत्तिं अहिणंदामि। [आर्यपुत्र, नहि किमपि मे शंकाकारणं युष्मासु सन्निहितेषु। किन्त्वार्यपुत्रस्यैव मनोरथसम्पत्तिमभिनन्दामि।]

राजा—अयि सुन्दरि ! एतावन्त एव मनोरथा यदहं दयितया सङ्गतः स्वेच्छया विहरामीति। पश्य—

बन्धुशतस्य (सौ भाइयों वाले की)। भुजवनच्छायासुखोपस्थिता—भुजाः=बाहवः एव वनम्, तस्य छायायां=प्रच्छाये (छाँह में) सुखेन=आनन्देन उपस्थिता=वर्तमाना (बाहुवन की छाया में सुख से रहने वाली)। दुर्योधनकेसरीन्द्रगृहिणी दुर्योधन एव केसरीन्द्रः=सिंहराजः, तस्य गृहिणी=भार्या (असि)। तव=ते (तुम्हें) किं शङ्कास्पदम्=किं भीत-स्थानम् (डर की बात क्या है)? शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम् ॥ १७ ॥

भानुमती—शङ्काकारणम्=सन्देहहेतुः। सन्निहितेषु=सन्निकटेषु (समीप होने पर)। मनोरथसम्पत्तिम्—मनोरथस्य=कामनायाः सम्पत्तिम्=सम्पन्नताम् (मनोरथ की सफलता को)। अभिनन्दामि=स्वागतं करोमि (अभिनन्दन करती हूँ)।

राजा—अयि सुन्दरि=हे सुवदने। मनोरथाः=कामनाः। दयितया=

भानुमती—हे आर्यपुत्र ! आपके सन्निकट होने पर मुझे कोई शङ्का का कारण नहीं है। मैं आर्यपुत्र के मनोरथ की सफलता का अभिनन्दन कर रही हूँ।

राजा—हे सुन्दरि ! इतनी ही कामनायें हैं कि मैं प्रिया के साथ स्वेच्छा से विहार करूँ। देखो—

पत्ति=एक हाथी, एक रथ तथा तीन घुड़सवार व पाँच पैदल सेना।

सेना	= ३	हाथी,	३	रथ,	९	घुड़सवार,	१५	पैदल।	
सेनामुख	= ९	,,	९	,,	२७	,,	४५	,,	
गुल्म	= २७	,,	२७	,,	८१	,,	१३५	,,	
वाहिनी	= ८१	,,	८१	,,	२४३	,,	४०५	,,	
पृतना	= २४३	,,	२४३	,,	७२९	,,	१२१५	,,	
चमू	= ७२९	,,	७२९	,,	२१८७	,,	३६४५	,,	
अनीकिनी	=२१८७	,,	२१८७	,,	६५६१	,,	१०९३५	,,	

अक्षौहिणी=२१८७० हाथी+२१८७० रथ+ ६५६१० घुड़सवार+१०९३५० पैदल = २१८७०० कुल सैनिक।

प्रेमाऽऽबद्धस्तिमितनयनाऽऽपीयमानाब्जशोभं
लज्जायोगादविशदकथं मन्दमन्दस्मितं वा।
वक्त्रेन्दुं ते नियममुषितालक्तकाग्राधरं वा
पातुं वाञ्छा परमसुलभं किं नु दुर्योधनस्य ॥ १८ ॥

(नेपथ्ये महान् कलकलः ! सर्वे आकर्णयन्ति ।)

पत्न्या (पत्नी से) सङ्गतः = सह यातः । स्वेच्छया = यथाभिलाषः । विरहामि = विचरामि (विहार कर रहा हूँ) ।

अन्वयः—प्रेमाबद्धस्तिमितनयनापीयमानाब्जशोभं लज्जायोगात् अविशदकथं वा मन्दस्मितं वा नियममुषितालक्तकाग्राधरं असुलभं ते वक्त्रेन्दुं, पातुं वाञ्छा (अस्ति) दुर्योधनस्य अपरं किं नु ॥ १८ ॥

प्रेमाबद्धेति । प्रेमाऽबद्धस्तिमितनयनाऽऽपीयमानाब्जशोभम्—प्रेम्णा = रागेण आबद्धे = सम्बद्धे स्तिमिते = निश्चले ये नयने = नेत्रे, ताभ्यामापीयमाना = अधरीक्रियमाणा अब्जस्य = कमलस्य शोभा = सौन्दर्यम् येन तम् (प्रेमबद्ध निश्चल नेत्रों की शोभा से कमल की सुन्दरता को हरने वाले) । लज्जायोगात् = त्रपासम्बन्धात् (लज्जा के सम्बन्ध से) । अविशदकथम्—अविशदा-कथा यत्र तम् = अस्पष्टकथनं (अस्फुट कहना) । मन्दमन्दस्मितम् = अतिमन्दहसितम् (अति मन्द मुस्कुराना) वा । नियममुषितालक्तकाङ्काधरम्—नियमेन = व्रतेन मुषितम् = अपहृतम् अलक्तकम् = यावकरसम्, तस्याङ्को यस्य तादृशोऽधरो यस्मिन् तत् (व्रतादि के द्वारा मिटाये गये ओठों से अलक्तक रस—लाली, लिपिस्टिक वाले) ते = तव (तुम्हारे) । वक्त्रेन्दुम् = मुखचन्द्रम् (चन्द्रमा जैसे मुख को) । असुलभम् = दुष्प्राप्यम् । पातुम् = चुम्बितम् (चूमने को) । वाञ्छा = कामना (अस्ति) । दुर्योधनस्य = मम । अपरम् = अन्यत् किं नु वाञ्छनीयमस्ति । मन्दाक्रान्तावृत्तम् ।

कलकलः = कलकलध्वनिः (कोलाहल) । आकर्णयन्ति = शृण्वन्ति (सुनते हैं) ।

प्रेम के बंधे निश्चल नेत्रों से कमल की शोभा का पान करने वाले, लज्जा के कारण स्पष्ट बातचीत करने वाले अथवा मन्द-मन्द मुस्कराने वाले या व्रत पालन करने के कारण अलक्तक रस (लिपिस्टिक) हीन अधरों वाले दुर्लभ तुम्हारे मुखचन्द्र को चूमने की (मेरी) इच्छा है । मुझ दुर्योधन को (इसके अतिरिक्त) दूसरी क्या इच्छा हो सकती है जो कि दुर्लभ हो ॥ १८ ॥

(नेपथ्य में कलकल ध्वनि होती है । सभी लोग सुनने लगते हैं ।)

भानुमती—(सभयं राजानं परिष्वज्य ।) परित्ताअदु परित्ताअदु अज्जउत्तो । [परित्रायताम् परित्रायतामार्यपुत्रः ।]

राजा—(समन्तादवलोक्य ।) प्रिये, अलं सम्भ्रमेण । पश्य—

दिक्षु व्यूढाङ्घ्रिपाङ्गस्तृणजटिलचलत्पांसुदण्डोऽन्तरिक्षे
झाङ्कारी शर्करालः पथिषु विटपिनां स्कन्धकाषैः सधूमः ।
प्रासादानां निकुञ्जेष्वभिनवजलदोद्गारगम्भीरधीर-
श्चण्डारम्भः समीरो वहति परिदिशं भीरु ! किं सम्भ्रमेण ॥ १९ ॥

भानुमती—सभयम् = सभीतम् (डर कर)। राजानम् = नृपं दुर्योधनम् (राजा को)। परिष्वज्य = आलिंग्य (चिपट कर)। परित्रायताम् = रक्षतु (बचाओ)।

राजा—समन्तात्=परितः (चारों ओर)। अवलोक्य=दृष्ट्वा (देख कर)।

अन्वयः—हे भीरु ! दिक्षु व्यूढांघ्रिपाङ्गः अन्तरिक्षे, तृणजटिलचलत्पांशुदण्डः, पथिषु झाङ्कारी शर्करालः विटपिनाम् स्कन्धकाषैः सधूमः प्रासादानां निकुञ्जेषु अभिनव-जलदोद्गार-गम्भीर-धीरः चण्डारम्भः समीरः परिदिशम् वहति सम्भ्रमेण किम् ॥ १९ ॥

दिक्ष्विति । हे भीरु = अयि कातरे ! दिक्षु = दिशासु (दिशाओं में) व्यूढाङ्घ्रिपाङ्गः—व्यूढानि = प्रक्षिप्तानि अङ्घ्रिपाणाम् = पादपानाम् अङ्गानि=शाखाः येन तादृशः (जिसने वृक्षों की शाखाओं को इधर-उधर फैला दिया है)। अन्तरिक्षे = आकाशे (गगन में)। तृणजटिलचलत्पांशुदण्डः—तृणैः = घासैः जटिलः = व्याप्तः, चलश्च = ऊर्ध्वंगच्छश्च पांशूनाम् = धूलीनाम् दण्डः = दण्डकारः समूहः यस्मात् सः (घास आदि से जटिल ऊपर को दण्डाकार उड़ती हुई धूल वाला)। पथिषु=मार्गेषु (मार्गों में)। झाङ्कारी=शङ्कारवान् (झाँय झाँय करने वाला)। शर्करालः = शर्करायुक्तः (कंकड़ों वाला)। विटपिनाम् = वृक्षाणाम् (पादपों

भानुमती—(डरकर राजा को आलिंगन करके) आर्यपुत्र बचायें, बचायें ।

राजा—(चारों ओर देखकर) प्रिये ! भय मत करो ।

हे भीरु ! चारों ओर वृक्षों की शाखाओं को फैला देने वाला आकाश में घास फूस से युक्त दण्ड के आकार धूल को उड़ाने वाला, झाँय झाँय करता हुआ, मार्गों में रेत कंकड़ों से युक्त, वृक्षों के तनों से रगड़ने के कारण निकलते हुये धुँये वाला, ऊँचे-ऊँचे भवनों की कुञ्जों में नवीन मेघ के समान धीर गम्भीर ध्वनि करने वाला प्रचण्ड पवन चारों ओर चल रहा है । भय करने की क्या आवश्यकता है ॥ १९ ॥

सखी—महाराअ, पविसदु एदं दारुपव्वअप्पासादम् । उव्वेअकारी क्खु अअं उत्थिदपरुसरअ कलुसीकिदणअणो उन्मूलिदतरुवरसद्दवित्तत्थमन्दुरा-परिब्भट्टवल्लहतुलङ्गमपज्जाउलीकिदजणपद्धई भीसणो ससीरणासाओ ।
[महाराज, प्रविशतु एनं दारुपर्वतप्रासादम् । उद्वेगकारी खल्वयमुत्थितपरुषरजः कलुषीकृतनयन विदलित-तरुवर-शब्द-वित्रस्त-मन्दुरापरिभ्रष्टवल्लभ-तुरङ्गम-पर्याकुलीकृत-जन-पद्धतिर्भीषणः समीरणाऽऽसारः ।]

का) । स्कन्धकाषैः—स्कन्धानाम् = शाखानाम् काषैः = घर्षणैः (तनों के रगड़ने से) । संधूमः = धूमयुक्तः (धूयें वाला) । प्रासादानां = देवमन्दिराणां नृपभवनानाञ्च (महलों के) निकुञ्जेषु = लताभवनेषु (लता झुरमुटों में) । अभिनवजलदोद्गारगम्भीरधीरः—अभिनवः = नूतनः यः जलदः = घनः तस्य उद्गार इव = ध्वनिरिव गम्भीरः धीरश्च (नवीन मेघ गर्जन के समान गम्भीर तथा धीर) । चण्डारम्भः—चण्डः = तीव्रः भयङ्करो वा आरम्भः = आदिर्यस्य तथाभूतः (प्रचण्ड वेगवाला) । समीरः = पवनः (वायु) । परिदिशम्—दिशि दिशि इति परिदिशम् (सभी ओर) वहति = चलति (चल रहा है) । सम्भ्रमेण = भयेन । किम् = निषेधे । स्रग्धरावृत्तम् ॥ १९ ॥

सखी—एनम् = इमम् (इस) । दारुपर्वतप्रासादम्—दारुपर्वते = काष्ठनिर्मिते पर्वते, कृत्रिमगिरौ निर्मितम् प्रासादम् = भवनम् (लकड़ी के बनाये गये पहाड़ पर स्थित महल को) । उद्वेगकारी = आकुलकारी । उत्थितपरुषरजः कलुषीकृतनयनः—उत्थितैः = ऊर्ध्वंगतैः परुषरजोभिः = कुटिलधूलकणैः कलुषीकृतानि = व्याकुलीकृतानि नयनानि = नेत्राणि येन तथाविधः (उड़ी हुई कुटिल धूल से आँखों को व्याकुल कर देने वाला) । विदलिततरुवरशब्दवित्रस्तमन्दुरापरिभ्रष्टवल्लभतुरङ्गमपर्याकुलीकृतजनपद्धतिः—विदलितानां = उन्मूलितानाम् तरुवराणाम् = पादपश्रेष्ठानाम् शब्देन = ध्वनिना वित्रस्ताः = भीताः मन्दुरायाः = वाजिशालायाः परिभ्रष्टाः = उन्मुक्ताः ये वल्लभाः = उत्तमाः तुरङ्गमाः = अश्वाः, तैः पर्याकुलीकृताः = व्याकुलीकृताः जनपद्धतयः = लोकमार्गाः येन सः (उखाड़े गये

सखी—महाराज ! इस दारुपर्वत वाले प्रसाद में प्रवेश कर लें (क्योंकि) यह उद्वेगकारी कुटिल धूल को उड़ाकर आँखों को व्याकुल कर देने वाला, उखाड़े गये विशाल वृक्षों के शब्द से व्याकुल घुड़साल के श्रेष्ठ घोड़ों के इधर-उधर भागने से जन-मार्गों को आकुलित करने वाला तेज वायु का यह वेग उठ खड़ा हुआ है ।

राजा—(सहर्षम्) उपकारि खल्विदं वात्याचक्रं सुयोधनस्य। यस्य प्रसादादयत्नपरित्यक्तनियमया देव्या सम्पादितोऽस्मन्मनोरथः। कथमिति।

न्यस्ता न भ्रुकुटिर्न बाष्पसलिलैराच्छादिते लोचने
नीतं नाननमन्यतः सशपथं नाहं स्पृशन्वारितः।
तन्व्या मग्नपयोधरं भयवशादाबद्धमालिङ्गितं
भङ्क्ताऽस्या नियमस्य भीषणमरुन्नायं वयस्यो नु मे ॥ २० ॥

बड़े-बड़े वृक्षों के शब्द से भयभीत घुड़सालों से भाग खड़े हुए श्रेष्ठ घोड़ों द्वारा जनमार्गों को आकुलित कर देने वाला)। भीषणः=प्रचण्डः (भीषण) समीरणाऽऽसारः—समीरणस्य=वायोः आसारः=वेगः।

राजा—इदम्=एतत् (यह)। खलु=किल (वास्तव में)। वात्याचक्रम् =वातमण्डलम् (आँधी)। उपकारि=लाभप्रदं (उपकार करने वाला है)। प्रसादात्=कृपया। अयत्नपरित्यक्तनियमया—अयत्नेन=प्रयासेन विनैव परित्यक्तः= मुक्तः नियमः=व्रतो यया सा तया (विना प्रयत्न के ही व्रत छोड़ देने वाली)। देव्या=भानुमत्या (रानी ने) अस्मन्मनोरथः=ममाभिलाषः (मेरी इच्छा)। सम्पादितः=संपूरितः (पूर्ण कर दी) कथमिति=यतः (क्योंकि)।

अन्वयः—तन्व्या भ्रुकुटिः न न्यस्ता वाष्पसलिलैः लोचने न आच्छादिते, आननम् अन्यतः न नीतं स्पृशन् अहं सशपथं न वारितः, भयवशात् मग्नपयोधरम् आलिङ्गितं आरब्धम् अस्याः नियमस्य भङ्क्ता अयं भीषणमरुत् मम वयस्यः ॥२०॥

न्यस्ता इति। तन्व्या=कृशोदर्या (पतले शरीर वाली ने) भ्रुकुटिः= भ्रकुटिः (भ्रुकुटि भ्रकुरित्यमरः) (भौंह)। न न्यस्ता=न कृता (टेढ़ी नहीं की)। वाष्पसलिलैः—अश्रुभिः (आसुओं से)। लोचने=नयने (दोनों आँखें)। न आच्छादिते=नैवच्छन्ने (बन्द नहीं किये)। आननम्=मुखम् (मुँह)। अन्यतः=अन्यत्र (दूसरी ओर) न नीतम्=न परावृत्तम् (नहीं घुमाया)।

राजा—(सहर्ष) यह अंधड़ वास्तव में मुझ सुयोधन का उपकारी है जिसकी कृपा से विना प्रयत्न किये ही अपने व्रत नियम को छोड़कर देवी (भानुमती) ने मेरा मनोरथ पूर्ण कर दिया है। क्योंकि—

इस तन्वङ्गी ने न भौंहे टेढ़ी की, न आँसुओं को ढका, मुँह को दूसरी ओर नहीं घुमाया तथा मेरे स्पर्श करते हुए शपथ दिला कर ऐसा करने से मना भी नहीं किया। भयवश पयोधर गड़ा कर आलिंगन करना आरम्भ किया। इसके व्रत को तोड़ने वाला यह भीषण पवन मेरा मित्र नहीं है क्या? ॥ २० ॥

तत्सम्पूर्णमनोरथस्य मे कामचारः सम्प्रति विहारेषु। तदितो दारुपर्वतप्रासादमेव गच्छामः।

(सर्वे वात्यावाधां रूपयन्तः यत्नतः परिक्रामन्ति।)

राजा—

कुरु घनोरु पदानि शनैः शनैरयि ! विमुञ्च गतिं परिवेपिनीम्।
सुतनु ! बाहुलतोपनिबन्धनं मम निपीडय गाढमुरःस्थलम्॥ २१॥

स्पृशन् = स्पर्शं कुर्वन् (छूते समय) अहम् = दुर्योधनः (मैं)। सशपथम् = ससौगन्धम् (कसम खिला कर) न वारितः = न निवारितः (नहीं हटाया)। भयवशात् = भिया (डर से)। मग्नपयोधरम्—मग्नौ=व्रुडितौ पयोधरौ = उरोजौ यस्मिन् कर्मणि तत् (स्तन गड़ा कर)। आलिङ्गितम् = आबद्धुम् (चिपटा लेने को)। आरब्धम् = प्रारभत (आरम्भ किया)। अस्याः = एतस्याः (इसका) नियमस्य = व्रतस्य, भंक्ता=त्रोटकः (नियम तोड़ने वाला) अयम् = एषः (यह) भीषणमरुत् = प्रचण्डः पवनः (तीव्र वायु)। मम = मे (मेरा) वयस्यः=मित्रम् न किम् ? अत्र काव्यलिङ्गालङ्कारः। शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम्॥ २०॥

सम्पूर्णमनोरथस्य—सम्पूर्णः मनोरथो यस्य सः, तस्य = पूर्णकामस्य (पूर्ण मनोरथ वाले) कामाचारः = स्वेच्छाचारः (स्वच्छन्द व्यवहार)। सम्प्रति = साम्प्रतम् (अब) विहारेषु = क्रीडासु (रति क्रिडाओं में)। इतः = अस्मात् स्थानात् (इस स्थान से)। वात्यावाधाम् = वात्याकष्टम् रूपयन्तः = नाटयन्तः (अभिनय करते हुये)। यत्नतः = प्रयत्नात् (यत्न करके)।

अन्वयः—हे घनोरु ! पदानि शनैः शनैः कुरु, अयि ! परिवेपिनीं गतिं विमुञ्च। सुतनु ! बाहुलतोपनिबन्धनं मम उरःस्थलं गाढं निपीडय॥ २१॥

कुर्विति। हे घनोरु—घनौ = स्थूलौ उरु = जघने यस्यास्तत्सम्बुद्धौ = अयि स्थूलजघने (हे स्थूल जंघाओं वाली)। पदानि = चरणविन्यासानि (कदम)। शनैः शनैः = मन्दं मन्दम् (धीरे-धीरे) कुरु = विधेहि (करो)। अयि = भोः

इसलिए मेरा मनोरथ पूर्ण हो गया है, अब विहार करने में स्वतंत्र हूँ। अतः यहाँ दारु पर्वत वाले महल को ही चलते हैं।

(सब आँधी की पीड़ा का अभिनय करते हुये प्रयत्न करके घूमते हैं।)

राजा—हे घनी जंघाओं वाली ! कदम धीरे-धीरे रखो, तथा कम्पित गति को छोड़ दो। हे सुन्दरि ! बाहुलताओं से गलवहियाँ डालने वाले मेरे वक्षःस्थल को जोर से आलिंगन कर लो॥ २१॥

(प्रवेशं रूपयित्वा ।) प्रिये, अलब्धावकाशः समीरणः संवृतत्वाद् गर्भगृहस्य । विश्रब्धमुन्मीलय चक्षुरुन्मृष्टरेणुनिकरम् ।

भानुमती—(सहर्षम् ।) दिट्ठिआ उप्पादसमीरणासारो ण बाधेइ । [दिष्ट्योत्पातसमीरणसारो न बाधते ।]

सखी—महाराअ ! आरोहणसंभमणिस्सहं पिअसहीए ऊरुजुअलं । ता कीस दाणीं महाराओ आसणवेदीं ण भूसेदि । [महाराज ! आरोहणसम्भ्रमनिःसहं प्रियसख्याः ऊरुयुगलम् । तत्कस्मादिदानीं महाराज आसनवेदीं न भूषयति !]

(अरी) । परिवेपिनीं=कम्पमानाम् गतिम्=गमनम् (काँपती हुई चाल को) । विमुञ्च=त्यज (छोड़ दो) । हे सुतनु=हे सुवदने बाहुलतोपनिबन्धनम्—बाहुलताभ्याम्=भुजलताभ्याम् उप=उपरि निबन्धनम्=बलाद् ग्रहणम् यस्मिन् कर्मणि-तद्यथा स्यात्तथा (भुजलता से गले में गोफा डालने वाला) । मम=मे (मेरा) उरःस्थलम्=वक्षःस्थलम् (वक्ष) गाढम्=दृढम् निपीडय=आलिङ्ग (जोर से आलिंगन कर लो) । अत्रोपमालङ्कारः । द्रुतविलम्बितं वृत्तम् । तद्यथा—'द्रुतविलम्बितमाह नभौ भरौ' इति ॥ २१ ॥

अलब्धावकाशः—अलब्धः=नैव प्राप्तः प्रवेशाय अवकाशः=अवसरो येन सः (जिसे घुसने का मौका ही नहीं मिल सका हो) । समीरणः=पवनः (वायु) संवृतत्वात्=भित्यादिना आवृतत्वात् (दीवार आदि से घिरे होने के कारण) । गर्भगृहस्य=अन्तर्गृहस्य (भीतरी कोठरी के) । विश्रब्धम्=विश्वासपूर्वकम् । उन्मृष्टरेणुनिकरम्—उन्मृष्टः=प्रोञ्छितः रेणुनिकरः=धूलिसमूहो यस्मात् तत् तथा (धूल पुँछी हुई) । चक्षुः=अक्षि (आँख) उन्मीलय=उद्घाटय (खोलो) ।

भानुमती—दिष्ट्या=सौभाग्येन । उत्पातसमीरणः=प्रभञ्जनः (आँधी) न बाधते=नैव पीडयति ।

सखी—महाराज=हे राजन् ! आरोहण-सम्भ्रमनि.सहम्—आरोहणस्य=दारुपर्वतप्रासादे आगमनस्य सम्भ्रमेण=त्वरया निःसहम्=असमर्थम् (दारुपर्वत

(प्रवेश करने का अभिनय कर) हे प्रिये ! दीवार आदि से घिरे होने के कारण भीतरी प्रकोष्ठ में वायु के प्रवेश का नाम तक नहीं है । विश्वास पूर्वक धूल पोंछ कर आँखें खोलो ।

भानुमती—सौभाग्य से कष्टदायी वायु (आँधी की गति) पीडित नहीं कर रही है ।

सखी—महाराज ! दारु पर्वत पर आरोहण के कारण प्रिय सखी की जांघें थक गई हैं अतः आप आसनवेदी को शोभित क्यों नहीं करते !

राजा—(देवीमवलोक्य ।) भवति ! अनल्पमेवाऽपक्रुतं वात्यासम्भ्रमेण ।
तथाहि—

रेणुर्बाधां विधत्ते तनुरपि महतीं नेत्रयोरायतत्त्वा-
दुत्कम्पोऽल्पोऽपि पीनस्तनभरितमुरः क्षिप्तहारं दुनोति ।
ऊर्वोर्मन्देऽपि याते पृथुजघनभराद्वेपथुर्वर्धतेऽस्या
वात्याखेदं मृगाक्ष्याः सुचिरमवयवैर्दत्तहस्ताकरोति ॥ २२ ॥

पर आने के कारण शीघ्रता से थकी) प्रियसख्याः = देव्याः (रानी के) । उरु-युगलम् = जघनद्वयम् (दोनों जांघें) । तत्=तस्मात् (इससे) कस्मात् = कस्मात् कारणात् (किसलिए) इदानीम् = सम्प्रति आसनवेदीम्=आसनार्थं निर्मितां वेदीम् (आसनवेदी को) । न भूषयति=नालंकरोति (शोभित क्यों नहीं कर रहे हैं) ।

राजा—भवति ! = देवि ! अनल्पं = अधिकम् । वात्यासम्भ्रमेण = वातचक्रेण (आँधी ने) ।

अन्वयः—तनुः अपि रेणु अस्या नयनयोः आयतत्वात् महतीं बाधां विधत्ते, अल्प अपि उत्कम्पः पीनस्तनभरितं उरः क्षिप्तहारं दुनोति, मन्दे अपि याते पृथुजघनभारात् ऊर्वोः वेपथुः वर्द्धते, मृगाक्ष्याः अवयवैः दत्तहस्ता वात्या सुचिरं खेदं करोति ॥ २२ ॥

रेणुरिति । तनुः = स्वल्पः अपि रेणुः = धूलिः (अल्प होती हुई भी धूल) अस्याः = एतस्याः राज्ञ्याः (इसके) नयनयोः = चक्षुषोः । आयतत्वात् = विस्तृत-त्वात् (बढ़े होने के कारण) । महतीम् = अधिकाम् (बहुत) बाधाम् = पीडाम् विधत्ते = करोति (करती है) । अल्पः अपि = क्षीणः अपि उत्कम्प = कम्पनम् (काँपना) । पीनस्तनभरितम्—पीनाभ्याम्=परिपुष्टाभ्याम् स्तनाभ्याम्=पयोधराभ्याम् भरितम् = सञ्जातभारम् (बोझिल बना हुआ) । उरः = वक्षःस्थलम् (वक्ष) क्षिप्तहारम्—क्षिप्तः हारः यस्मिन् कर्मणि तद्यथा स्यात्तथा (हार पहनने पर) । दुनोति = पीडयति (कष्ट देता है) । मन्दे अपि = क्षीणे अपि याते = गमने सति (धीरे-धीरे चलने पर भी) । पृथुजघनभरात्—पृथुनः = पीनस्य जघनस्य =

राजा—(रानी की ओर देखकर) देवि ! इस आँधी ने (आपको) कम कष्ट नहीं दिया । क्योंकि—

छोटी धूल भी इसके बड़े-बड़े नयन होने के कारण बड़ी बाधा कर रही है धीमी-धीमी धड़कन भी स्थूल स्तनों से बोझिल वक्षःस्थल को हार पहनने पर कष्ट पहुँचाती है । धीरे-धीरे चलने पर भी स्थूल जघन भार से जाँघों का काँपना पीड़ित कर रहा है । मृगनयनी के अङ्गों द्वारा सहारा पाई हुई आँधी बहुत समय तक खेद कर रही है ॥ २२ ॥

(सर्वे उपविशन्ति ।)

राजा—तत्किमित्यनास्तीर्णं कठिनशिलातलमध्यास्ते देवी । यतः—

लोलांशुकस्य पवनाकुलितांशुकान्तं
त्वद्दृष्टिहारि मम लोचनबान्धवस्य ।
अध्यासितुं तव चिरं जघनस्थलस्य
पर्याप्तमेव करभोरु ! ममोरुयुग्मम् ॥ २३ ॥

जंघाभागस्य भरात् = भारात् (स्थूल जघन भार के कारण) । उर्वोः = सक्थ्नोः (जाँघों का) वेपथुः = कम्पनम् (काँपना) वर्द्धते = एधते (बढ़ जाता है) । मृगाक्ष्याः = हरिणाक्ष्याः (मृगनयनी के) अवयवैः = शरीराङ्गैः (अङ्गों से) दत्तहस्तः—दत्तः = समर्पितः हस्तः = करः साहाय्यम् यस्याः सा = कृतसहाया (सहारा दी गई) । वात्या = वातचक्रम् (आँधी) । सुंचिरम् = वहुकालम् (बहुत देर तक) खेदम् = दुःखम् करोति = विदधाति (करती है) । काव्यलिङ्गमलङ्कारः । स्रग्धरावृत्तम् ॥ २२ ॥

राजा—अनास्तीर्णम् = अनाच्छादितम् (बिना विछे) कठिनशिलातलम् = कठोरप्रस्तरतलम् (कठोर शिलातल पर) अध्यास्ते = अधितिष्ठति (बैठी हैं) ।

अन्वयः—करभोरु ! पवनाकुलितांशुकान्तं त्वद् दृष्टिहारि मम उरुयुग्मं लोलांशुकस्य मम लोचनबान्धवस्य तव जघनस्थलस्य चिरं अध्यासितुं पर्याप्तम् एव ॥ २३ ॥

लोलांशुकस्येति । हे करभोरु—करभौ इव ऊरू यस्यास्तत्सम्बुद्धौ = अयि सुवृत्तोरु (मणिबन्धादाकनिष्ठं करस्थः करभो बहिः । इत्यमरः ।) (हे कलाई से हथेली तक भाग के समान जांघों वाली) पवनाकुलितांशुकान्तम्—पवनेन = वायुना आकुलितः = कम्पितः अंशुकस्य = वस्त्रस्य अन्तः = प्रान्तभागो यस्य तत् (वायु द्वारा हिलाये हुये आंचल वाला) त्वद्दृष्टिहारि—त्वत् = तव दृष्टिः = लोचनम् हर्तुम् = वशीकर्तुम् शीलं यस्य तत् (तुम्हारी दृष्टि को आकृष्ट करने वाला) । मम = मे (मेरा) उरुयुगलम् = जघनद्वयम् (दोनों जंघा भाग) लोलांशुकस्य =

(सब बैठ जाते हैं) ।

राजा—तो क्या देवी भानुमती कठोर शिला तल पर बिना विछे ही बैठ गई हैं । क्योंकि—

हे करभोरु ! वायु से हिलते हुये वस्त्र के छोर वाली, तुम्हारी दृष्टि को आकृष्ट करने वाली मेरी दोनों जाँघें चञ्चल वस्त्र वाले मेरे नयनों को आकर्षक तुम्हारे जघन स्थल का चिरकाल तक सेवन करने के लिए पर्याप्त ही है ॥ २३ ॥

(प्रविश्य पटाक्षेपेण सम्भ्रान्तः ।)

कञ्चुकी—देव, भग्नं भग्नम् ।

(सर्वे साकूतं पश्यन्ति ।)

राजा—केन ?

कञ्चुकी—देव ! भीमेन ।

राजा—कस्य ।

कञ्चुकी—भवतः ।

राजा—आः, किं प्रलपसि ?

भानुमती—अज्ज, किं अणत्थं मन्तेसि । [आर्य, किमनर्थं मन्त्रयसे ।]

राजा—धिक्प्रलापिन् ! वृद्धापसद ! कोऽयमद्य ते व्यामोहः ?

चञ्चलवस्त्रस्य (हिल रहे वस्त्र का) । लोचनबान्धवस्य—लोचनयोः = नयनयोः बध्नाति इति बन्धुः स एव बान्धवस्तस्य = नयनाकर्षकस्य (आँखों को आकृष्ट करने वाले) । तव = ते जघनस्थलस्य = जंघाभागस्य (जाँघ का) चिरम् = बहुकालम् (बहुत समय तक) अध्यासितुम् = आश्रयितुम् (आश्रय लेने के लिये) । पर्याप्तम् = अलम् एव । अत्र समालङ्कारः । वसन्ततिलकावृत्तम् ॥२३॥

कञ्चुकी—भग्नम् = छिन्नम् (टूट गया) ।

साकूतम् = सभयम् (डर के साथ) ।

कञ्चुकी—भीमेन = भयंकरेण (भयंकर) ।

राजा—प्रलपसि = जल्पसि (बकवाद कर रहा है) ।

भानुमती—अनर्थम् = अमङ्गलम् (अमङ्गल) । मन्त्रयसे = चिन्तयसि (सोच रहे हो) ।

राजा—वृद्धापसद = नीच जठर ! व्यामोहः = मतिभ्रमः (बुद्धि का भ्रम) ।

(पर्दा हटाकर प्रवेश करके, सभय)

कञ्चुकी—महाराज ! तोड़ डाला, तोड़ डाला ।

(सभी लोग भयभीत होकर देखने लगते हैं)

राजा—किसने ?

कञ्चुकी—देव ! भीम ने ।

राजा—किसका ?

कञ्चुकी—आपका ।

राजा—अरे ! क्या बकवाद कर रहा है ?

भानुमती—आर्य ! क्या अनिष्ट सोच रहें हो !

राजा—अरे बकवादी ! तुझे धिक्कार है । नीच वृद्ध ! आज तेरा यह बुद्धिनाश कैसा है ?

कञ्चुकी—देव ! न खलु कश्चिद्व्यामोहः । सत्यमेव ब्रवीमि ।

भग्नं भीमेन भवतो मरुता रथकेतनम् ।
पतितं किङ्किणीक्वाणबद्धाक्रन्दमिव क्षितौ ॥ २४ ॥

राजा—यदि बलवत्समीरणवेगात्कम्पिते भुवने भग्नः स्यन्दनकेतुः । तत्किमित्युद्धतं प्रलपसि 'भग्नं भग्नमि'ति ।

कञ्चुकी—देव ! न किञ्चित् । किन्तु 'शमनार्थमस्याऽनिमित्तस्य विज्ञापयितव्यो देवं इति स्वामिभक्तिर्मां मुखरयति ।

कञ्चुकी—सत्यम् = अवितथम् (सच) ।

अन्वयः—भीमेन मरुता भवतः रथकेतनं भग्नम्, किङ्किणीक्वाणबद्धाक्रन्दम् इव क्षितौ पतितम् ॥ २४ ॥

भग्नमिति । भीमेन=भयङ्करेण (भयंकर) । मरुता = वायुना (पवन ने) । भवतः = देवस्य (आपका) । रथकेतनम् = स्यन्दनध्वजम् (रथ की ध्वजा को) । भग्नम् = छिन्नम् (तोड़ दिया) । किङ्किणीक्वाणबद्धाक्रन्दम् इव—किङ्किणीनाम् क्वाणः = क्षुद्रघंटिकाध्वनिः तेन बद्धः आक्रन्दः = क्रन्दनम् तद्वत् (छोटी-छोटी घंटियों की आवाज से होने वाले शोर के समान) । क्षितौ = भूमौ (पृथ्वी पर) । पतितम् = च्युतम् (गिर पड़ा) । पथ्यावक्त्रं वृत्तम् ॥ २४ ॥

राजा—बलवत्समीरणवेगात्—बलवतः = वेगवतः समीरणस्य = वातस्य वेगात्=गतेः (प्रबल वायु के वेग से) । भुवने = लोके कम्पिते = कम्पमाने सति (संसार को कंपा देने पर) । स्यन्दनकेतुः—स्यन्दनस्य = रथस्य केतुः = ध्वजम् (रथ की पताका) अत्युद्धतम् = अति अनुचितम् (अत्यन्त खराब) । प्रलपसि= निरर्थकं वदसि (व्यर्थं बकवाद करता है) ।

कञ्चुकी—शमनार्थम् = शान्त्यर्थम् (शान्त करने के लिए) । अनिमित्तस्य =अकारणस्य (अहेतुक का) । विज्ञापयितव्यः = सूचयितव्यः (सूचित कर देना चाहिये) । मुखरयति = वाचालयति (कहने के लिये चञ्चल कर रहा है) ।

कञ्चुकी—महाराज ! कोई बुद्धि नाश नहीं है । सत्य ही कह रहा हूँ ।

भीषण पवन ने आपके रथ की ध्वजा तोड़ डाली । (वह) बजती हुई छोटी-छोटी घंटियों की ध्वनि के समान क्रन्दन करती हुई भूमि पर गिर पड़ी ॥ २४ ॥

राजा—यदि तीव्र वायु वेग से त्रिभुवन कंपा देने पर रथ का ध्वज भग्न हो गया हो, तो तू यह उद्धत प्रलाप क्यों कर रहा है कि 'भग्न हो गया, भग्न हो गया' ।

कञ्चुकी—देव ! और कुछ नहीं किन्तु 'इस अपशकुन के शमन के लिए आपको मुझे बता देना चाहिये' यह स्वामिभक्ति मुझे कहने के लिये प्रेरित कर रही है ।

भानुमतीः—अज्जउत्त ! पडिहरीअदु एदं अणिमित्तं पस्सण्णबह्मणवेआणुघोसेण होमेण अ। [आर्यपुत्र ! परिहार्यतामेतदनिमित्तं प्रसन्नब्राह्मणवेदानुघोषेण होमेन च ।]

राजा—(सावज्ञम् ।) ननु गच्छ । पुरोहितसुमित्राय निवेदय !

कञ्चुकी—यदाज्ञापयति देवः । (इति निष्क्रान्तः ।)

(प्रविश्य)

प्रतीहारी—(सोद्वेगमुपसृत्य ।) जअदु जअदु महाराओ । महाराअ ! एसा क्खु जामादुणो सिन्धुराअस्स मादा दुस्सला अ पडिहारभूमीए चिट्ठदि । [जयतु जयतु महाराजः । महाराज ! एषा खलु जामातुः सिन्धुराजस्य माता दुःशला च प्रतीहारभूमौ तिष्ठतः ।]

भानुमती—परिहार्यताम् = त्यज्यताम् (दूर कर दीजिये) । अनिमित्तम् = अमङ्गलम् । प्रसन्नब्राह्मणवेदानुघोषेण—प्रसन्नैः ब्राह्मणैः=आनन्दितद्विजैः वेदानाम् उद्घोषेण = वेदपाठेन (ब्राह्मणों को दक्षिणा देने से वेद पाठ के द्वारा)। होमेन = हवनेन (हवन के द्वारा) ।

राजा—सावज्ञम् = सतिरस्कारम् (तिरस्कार के साथ) । पुरोहितसुमित्राय = सुमित्रनाम्ने पुरोहिताय (पुरोहित सुमित्र के लिए) । निवेदय = आवेदय (निवेदन करो) ।

प्रतीहारी—सोद्वेगम् = सभयम् (डर के सहित) जामातुः = पुत्रिकापत्युः सिन्धुराजस्य = जयद्रथस्य (दामाद सिन्धुराज जयद्रथ की) । माता = जननी । दुःशला = दुर्योधनभगिनी (दुःशला) प्रतिहारभूमौ=प्रमुखद्वारि (फाटक पर) । तिष्ठतः = वर्तते (उपस्थित हैं) ।

भानुमती—आर्यपुत्र ! यह अपशकुन ब्राह्मणों को दानादि देकर प्रसन्न करके वेदपाठादि द्वारा तथा होम के द्वारा दूर कर दीजिये ।

राजा—(तिरस्कार के साथ) वास्तव में जाओ, पुरोहित सुमित्र को बतलाओ ।

कञ्चुकी—जो महाराज की आज्ञा । (यह कहकर निकल जाता है) ।

(प्रवेश कर)

प्रतीहारी—(डरकर आगे बढ़कर) महाराज की जय हो, जय हो । महाराज ! यह दामाद सिन्धुराज (जयद्रथ) की माता तथा दुःशला सिंहद्वार पर उपस्थित हैं ।

राजा—(किंचिद्विचिन्त्यात्मगतम् ।) किं 'जयद्रथमाता दुःशला चे'ति । कच्चिदभिमन्युवधामर्षितैः पाण्डुपुत्रैर्नं किञ्चिदत्याहितमाचेष्टितं भवेत् । (प्रकाशम्) गच्छ, प्रवेशय शीघ्रम् ।

प्रतीहारी—जं महाराओ आणवेदि । (इति निष्क्रान्ता ।) [यन्महाराज आज्ञापयति ।]

(ततः प्रविशति सम्भ्रान्ता जयद्रथमाता दुःशला च ।)

(उभे सास्रं दुर्योधनस्य पादयोः पततः ।)

माता—पडित्ताअदु पडित्ताअदु कुलुणाहो [परित्रायतां परित्रायतां कुरुनाथः ।]

(दुःशला रोदिति ।)

राजा—(ससम्भ्रममुत्थाप्य ।) अम्ब ! समाश्वसिहि, समाश्वसिहि । किमत्याहितम् । अपि कुशलं समराङ्गणेष्वप्रतिरथस्य जयद्रथस्य ।

राजा—अभिमन्युवधामर्षितैः—अभिमन्योः = द्रौपदीसुतस्य वधात् = घातात् मर्षितैः = क्रुद्धैः (अभिमन्यु की हत्या से क्रुद्ध) । पाण्डुपुत्रैः = युधिष्ठिरादिभिः (पाण्डवों द्वारा) । अत्याहितम् = प्राणिहानिशङ्काकरम् (अत्याहितं महाभीति कर्म जीवानपेक्षि च' इत्यमरः) (अतिप्राणनाशक कार्य) आचेष्टितम् = विहितम् (कर डाला हो) ।

माता—परित्रायताम् = रक्षताम् (बचाइये) । कुरुनाथः = कौरवाधिपतिः (राजा दुर्योधन) ।

राजा—समाश्वसिहि = धैर्यं धारय (धीरज रखो) । समराङ्गणेषु = युद्ध-

---

राजा—(कुछ सोचकर मन ही मन) क्या जयद्रथ माता और दुःशला आई है ? कहीं अभिमन्यु के वध के कारण क्रुद्ध पाण्डवों ने कोई अनर्थ तो नहीं कर डाला । (प्रकट रूप में) जाओ, शीघ्र ले आओ ।

प्रतीहारी—जो महाराज की आज्ञा । (यह कहकर निकल जाती है) ।

(तदन्तर भयभीत जयद्रथ की माता तथा दुःशला प्रवेश करती हैं)

(दोनों रोती हुई दुर्योधन के पैरों पर गिर पड़ती हैं)

माता—हे कौरवराज ! रक्षा कीजिये, बचाइये ।

(दुःशला रोती है)

राजा—(भय के सहित, उठकर) हे मातः । धीरज रखो, धीरज रखो । क्या अनिष्ट कर डाला ! युद्ध के मैदान में अद्वितीय पराक्रमी जयद्रथ की कुशल तो है ?

माता—जाद, कुदो कुसलम् । [जात, कुतः कुशलम् ।]

राजा—कथमिव ।

माता—(साशङ्कम् ।) अज्ज क्खु पुत्तवहामरिसुद्दीबिदेण गाण्डीविणा अणत्थमिदे दिवहणाहे तस्स वहो पडिण्णादो । [अद्य खलु पुत्रवधामर्षोद्दीपितेन गाण्डीविनाऽनस्तमिते दिवसनाथे तस्य वधः प्रतिज्ञातः ।]

राजा—(सस्मितम् ।) इदं तदश्रुकारणमम्बाया दुःशलायाश्च । पुत्रशोकादुत्तप्तस्य किरीटिनः प्रलपितैरेवमवस्था । अहो मुग्धत्वमबलानां नाम । अम्ब, कृतं विषादेन । वत्से दुःशले ! अलमश्रुपातेन । कुतश्चाऽयं तस्य धन-

---

क्षेत्रेषु (युद्ध में) अप्रतिरथस्य—न विद्यते प्रतिरथः = शत्रुस्यन्दनं यस्य सः, तस्य (अद्वितीय वीर) ।

माता—जात = हे पुत्र ! कुतः = कस्मात् (कहाँ से) । कुशलम् = क्षेमम् (कुशल) ।

माता—पुत्रवधामर्षितोद्दीपितेन—पुत्रवधस्य = सुतवधस्य आमर्षः = क्रोधः तेनोद्दीपितः = प्रज्वलितः, तेन (पुत्रवध के क्रोध से उद्दीप्त) गाण्डीविना—गाण्डीवं धनुः अस्ति यस्य स गाण्डीवी तेन=अर्जुनेन (अर्जुन ने) । अनस्तमिते= अस्तमप्राप्ते दिवसनाथे=सूर्ये (सूर्यास्त से पूर्व) । तस्य = जयद्रथस्य (उसका) । वधः = घातः (वध करना) । प्रतिज्ञातः = संकल्पितः (प्रतिज्ञा की है) ।

राजा—सस्मितम् = समन्दहास्यम् (मुस्कराते हुये) । इदम्=एतत् (यह) । तत् = तादृक् । अम्बायाः = भवत्याः मातुः (माताजी का) अश्रुकारणम्=रोदन-हेतुः (रोने का कारण) । पुत्रशोकात्=सुतशोकात् (पुत्र शोक से) उत्तप्तस्य= व्याकुलस्य किरीटिनः=अर्जुनस्य (दुःखी अर्जुन के) । प्रलपितैः = प्रलापैः (प्रलाप के कारण) एषा = इयम् (यह) अवस्था = दशा । अहो = आश्चर्यम् ! अबलानाम् = नारीणाम् मुग्धत्वम् = अज्ञानता । कृतं विषादेन = विषादं मा कुरु

माता—हे पुत्र ! कुशल कहाँ से ।

राजा—किस प्रकार ?

माता—(शङ्कित होकर) आज तो पुत्रवध से क्रुद्ध होकर गाण्डीवी अर्जुन ने सूर्यास्त होने से पूर्व उसके (जयद्रथ के) वध करने की प्रतिज्ञा की है ।

राजा—(मन्द मुस्कराते हुये) यही इस प्रकार माता जी के तथा दुःशला के आँसू बहाने का कारण है ! पुत्रशोक से व्याकुल (पागल) किरीटी के प्रलापों से ही यह दशा है । अबलाओं की मूर्खता धन्य है । हे माता जी ! दुःख मत करो । वत्से दुःशले ! मत

ञ्जयस्य प्रभावो दुर्योधनबाहुपरिघरक्षितस्य महारथजयद्रथस्य विपत्तिमुत्पादयितुम् ।

माता—जाद, जाद ! दे हि पुत्तबन्धुवहामरिसुद्दीविदकोबाणला अणपेक्खिदसरीरा वीरा परिक्कामन्ति । [जात, जात ! ते हि पुत्रबन्धुवधामर्षोद्दीपितकोपानला अनपेक्षितशरीरा वीराः परिक्रामन्ति ।]

राजा—(सोपहासम्) एवमेतत् । सर्वजनप्रसिद्धैवामर्षिता पाण्डवानाम् । पश्य—

(दुःखी मत होओ) । अश्रुपातेन=रुदितेन अलम् = निषेधेऽव्ययम् (मत रोओ) । धनञ्जयस्य = अर्जुनस्य । प्रभावः = सामर्थ्यम् दुर्योधनबाहुपरिघरक्षितस्य—दुर्योधनस्य = मम बाहुः = भुजा परिघः = अर्गला इव इति तेन (मेरी भुजा रूपी परिघा से) रक्षितस्य = प्राप्तसंरक्षणस्य (रक्षित) । महारथजयद्रथस्य—महारथस्य = परमवीरस्य (अति पराक्रमी) जयद्रथस्य = सिन्धुराजस्य (जयद्रथ की) । विपत्तिम् = संकटम् । उत्पादयितुम् = जनयितुम् (उत्पन्न करना) ।

माता—जात = हे पुत्र ! ते = पाण्डवाः (पाण्डव) पुत्रबन्धुवधामर्शोद्दीपितकोपानलाः—पुत्रस्य = सुतस्य बन्धुनाम् = बान्धवानाम् वधः, तस्यामर्षः, तस्मात् उद्दीपितः = प्रज्ज्वलितः कोपानलः = क्रोधाग्निर्येषां ते (पुत्र-बान्धवों के वध से उद्दीप्त क्रोधानल वाले) अनपेक्षितशरीराः—अनपेक्षितम् = अगणितम् शरीरम् = देहो यैस्ते (अगणित शरीर वाले) परिक्रामन्ति = युद्धे विचरन्ति (युद्ध के मैदान में घूम रहे हैं) ।

राजा—सर्वजनप्रसिद्धा—सर्वेषां जनानां प्रसिद्धा = निखिललोक-विख्याता (सब लोगों में प्रसिद्ध) । अमर्षिता = क्रोधत्वम् (क्रोधी होना) ।

रोओ । यह इस धनञ्जय की सामर्थ्य दुर्योधन की बाहुरूपा कृपाण से रक्षित जयद्रथ के लिये विपत्ति पैदा करने की कहाँ से हो सकती है ।

माता—हे पुत्र ! क्योंकि वे पाण्डव वीर पुत्र तथा बांधवों के मारे जाने के कारण उद्दीप्त क्रोधानल वाले अपने शरीरों की परवाह किये बिना युद्ध के मैदान में इधर-उधर घूम रहे हैं ।

राजा—(मजाक बनाकर) ऐसा ही है । पाण्डवों का क्रोध करना तो सभी लोगों में प्रसिद्ध ही है देखो—

टिप्पणी—महारथ—अति पराक्रमी । शास्त्रों में महारथ का लक्षण इस प्रकार है:—
एको दशसहस्राणि योधयेद्यस्तु धन्विनाम् । शस्त्रास्त्रप्रवीणश्च स महारथ उच्यते ॥

हस्ताकृष्टविलोलकेशवसना दुःशासनेनाज्ञया
पाञ्चाली मम राजचक्रपुरतो गौर्गौरिति व्याहृता ।
तस्मिन्नेव स किं नु गाण्डिवधरो नासीत्पृथानन्दनो
यूनः क्षत्रियवंशजस्य कृतिनः क्रोधास्पदं किं न तत् ॥ २५ ॥

माता—असमत्तपडिण्णाभरेण अप्पवहो तेण पडिण्णादो। [असमाप्तप्रतिज्ञाभरेणात्मवधस्तेन प्रतिज्ञातः ।]

अन्वयः—मम आज्ञया दुःशासनेन हस्ताकृष्टविलोलकेशवसना पाञ्चाली राजचक्रपुरतः गौः गौः इति व्याहृता तस्मिन् गाण्डिवधरः पृथनन्दनः किं नु न आसीत् । यूनः कृतिनः क्षत्रियवंशजस्य तत् क्रोधास्पदं न किम् ॥ २५ ॥

हस्तेति । मम = दुर्योधनस्य (मेरी) आज्ञया=आदेशेन (आज्ञा से) दुःशासनेन = दुर्योधनभ्राता । हस्ताकृष्ट-विलोल-केशवसना—हस्ताभ्याम् = कराभ्याम् आकृष्टम् अत एव विलोलम् = विस्रष्टम् केशाश्च वसनश्चेति केशवसनम् = कचवस्त्रम् यस्या सा (दोनों हाथों से जिसके खुले केश तथा वस्त्रों को खींचा था ऐसी द्रौपदी) पाञ्चाली = द्रौपदी राजचक्रपुरतः = नृपसमूहाग्रतः (राजवर्ग के सामने से) गौः गौः इति = गौ सदृशी किलाहमवध्येति (मैं तुम्हारी गाय हूँ, मुझे छोड़ दो, इस प्रकार) व्याहृता = कथितवती (पुकारी) । तस्मिन् = तत्समये गाण्डीवधरः = अर्जुनः । पृथानन्दनः = कुन्तीसुतः । किं नु न आसीत् = नैवासीत् किन्त्विवतिप्रश्ने (क्या नहीं थे) यूनः=तरुणस्य (युवा) क्षत्रियवंशजस्य=क्षत्रियकुमारस्य (क्षत्रिय कुमार के) तत्=तत्कार्यम् (वह कार्य) । क्रोधास्पदम् = कोपस्थानम् (रोष का स्थान) किम् न = नैव किम् (क्या नहीं था) । शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम् ॥ २५ ॥

माता—असमाप्त-प्रतिज्ञाभरेण—असमाप्तः = अपूर्णः प्रतिज्ञायाः = संकल्पस्य भरः=भारः यस्य स तेन (प्रतिज्ञा पूर्ण न होने पर उसके द्वारा) आत्मवधः= निजवधः (आत्महत्या) तेन = अर्जुनेन । प्रतिज्ञातः = संकल्पितः (प्रतिज्ञा की है) ।

मेरे अनुज दुःशासन ने मेरी आज्ञा से (जब) दोनों हाथों से द्रौपदी के खुले हुये केश तथा वस्त्रों को खींचा था एवं राजसमूह के सामने 'मैं गाय हूँ', 'गाय हूँ' यह कहकर वह चिल्लाई । उस समय क्या गाण्डीव धनुर्धारी पृथापुत्र अर्जुन क्या नहीं थे ? युवक क्षत्रिय-पुत्र के क्रोध के लिए इतना बहुत नहीं था ? (अर्थात् ऐसे अवसर पर जब वह अपना पराक्रम नहीं दिखा सके तो अब क्या कर सकेंगे) ॥ २५ ॥

माता—प्रतिज्ञा पूर्ण न कर पाने पर उसने आत्मवध करने का संकल्प किया है ।

राजा—यद्येवमलमानन्दस्थानेऽपि ते विषादेन । ननु वक्तव्यमुत्सन्नः सानुजो युधिष्ठिर इति । अन्यच्च मातः ! का शक्तिरस्ति धनञ्जयस्याऽन्यस्य वा कुरुशतपरिवारवर्धितमहिम्नः कृप-कर्ण-द्रोणाश्वत्थामादिमहारथपराक्रम-द्विगुणीकृतनिरावरणविक्रमस्य नामाऽपि ग्रहीतुं ते तनयस्य । अयि सुतपरा-क्रमाऽनभिज्ञे !

राजा—यदि = चेत् एवम् = इत्थं प्रतिज्ञातम् (यदि ऐसी प्रतिज्ञा की है तो) आनन्दस्थानेऽपि—आनन्दस्य = हर्षस्य स्थाने = अवसरेऽपि (प्रसन्नता के अवसर पर भी) ते = तव । विषादेन = खेदेन अलम् = निषेधेऽव्ययम् (तुम्हें खेद नहीं करना चाहिये) । ननु=नूनम् (वास्तव में) व्यक्तम्=स्पष्टम् (साफ-साफ) वक्तव्यम् = कथनीयम् (कहना चाहिये) उत्सन्नः = नष्टः (नष्ट हो गया) सानुजः =अनुजैः सहितः (छोटे भाइयों सहित) युधिष्ठिरः = पाण्डवाग्रजः (युधिष्ठिर) । अन्यत् = अपि च (और भी) का शक्तिः = किं सामर्थ्यम् (क्या शक्ति है) धनञ्जस्य = अर्जुनस्य (अर्जुन की) । अन्यस्य=अपरस्य वा (अथवा दूसरे की) कुरुशतपरिवारवर्द्धितमहिम्नः—कुरुशतपरिवारैः = शतसंख्याकैरस्माभिः कौरवैः वर्द्धितः महिमा = महत्त्वम् यस्य तस्य (सौ संख्या वाले हम कौरवों द्वारा बढ़ाई गई महिमा वाले) । कृप-कर्ण-द्रोणाश्वत्थामादिमहारथपराक्रमद्विगुणकृतनिरावरण-विक्रमस्य—कृपकर्णद्रोणादि-महारथानाम् = वीराणाम् पराक्रमेण=पौरुषेण द्विगुणी-कृतः = अधिकं वर्द्धितः निरावरणः = आवरणरहितः विक्रमः = पराक्रमः यस्य तथाविधस्य (जिसके पराक्रम को कृपकर्णद्रोणादि महारथियों के विक्रम ने और भी अधिक बढ़ा दिया है) । नामापिग्रहीतुम्=नामग्रहणमपि (मारना तो दूर—नाम लेने को भी) । ते=तव । तनयस्य=सुतस्य जयद्रथस्य (तुम्हारे पुत्र जयद्रथ का) । सुतपराक्रमानभिज्ञे !—सुतस्य = पुत्रस्य पराक्रमः= विक्रमः, तस्य अनभिज्ञा तत्सम्बुद्धौ = हे पुत्रविक्रमाज्ञातशीले (हे अपने पुत्र का पराक्रम न जाननेवाली) ।

राजा—यदि ऐसा है तब तो आनन्द के स्थान पर भी तुम्हें खेद नहीं करना चाहिये । वास्तव में कहना चाहिये कि अपने अनुजों सहित युधिष्ठिर नष्ट हो गये हैं । हे माता ! दूसरी बात यह है कि १०० कौरव परिवार वालों से जिसकी महिमा वृद्धि की गई है ऐसे कृपाचार्य, कर्ण, द्रोणाचार्यादि महारथियों के पराक्रम से दुगनी बढ़ी शक्ति द्वारा पराक्रम का पर्दा फाड़ देने वाले तुम्हारे पुत्र जयद्रथ का नाम तक ले पाने में समर्थ नहीं हैं । मारने की तो बात ही क्या ! हे अपने पुत्र के पराक्रम को न जानने वाली !

धर्मात्मजं प्रति यमौ च कथैव नास्ति
मध्ये वृकोदरकिरीटभृतोर्बलेन ।
एकोऽपि विस्फुरितमण्डलचापचक्रं
कः सिन्धुराजमभिषेणयितुं समर्थः ॥ २६ ॥

भानुमती—अज्ज उत्त, जइबि एव्वं तहवि 'गुरुकिदपडिण्णाभारोट्ठाणं' क्खु सङ्काए [आर्यपुत्र, यद्यप्येवं तथापि 'गुरुकृतप्रतिज्ञाभार' इति स्थानं खलु शङ्कायाः ।]

अन्वयः—धर्मात्मजम्, यमौ च प्रति कथा एव नास्ति, वृकोदरकिरीटभृतोः मध्ये एकः अपि कः विस्फुरतमण्डलचापक्रम् सिन्धुराजम् बलेन अभिषेणयितुम् समर्थः ॥ २६ ॥

धर्मात्मजमिति । धर्मात्मजम् प्रति = युधिष्ठिरं प्रति, यमौ प्रति = नकुल-सहदेवौ प्रति च (युधिष्ठिर और नकुल सहदेव की) कथा एव = वार्ता एव नास्ति (कहना ही नहीं है) वृकोदरकिरीटभृतोः—वृकोदरश्च किरीटभृच्च, तयोः = भीमार्जुनयोः (भीम तथा अर्जुन के) मध्ये = अन्तरे (बीच में) एकः अपि कः = नास्ति कोऽपि (एक भी नहीं है) विस्फुरितमण्डलचापचक्रम्—विस्फुरितम् = चञ्चलम् मण्डलम् = वर्तुलाकारम् चापचक्रम् = धनुर्वृत्तम् यस्य स तम् (चञ्चल मण्डलाकारधनुर्वृत्त वाले) सिन्धुराजम् = सिन्धुनृपं जयद्रथम् (सिन्धु-राज को) बलेन = शक्त्या (बल से) अभिषेणयितुम् = अभिमुख्येन योद्धुम् (सामने होकर लड़ने को) समर्थः = शक्तः (समर्थ हो) अपितु नैव कश्चित्समर्थः । वसन्ततिलका वृत्तम् ॥ २६ ॥

भानुमती—गुरुकृतप्रतिज्ञाभारः—गुरुः = दृढः कृतः = विहितः प्रतिज्ञायाः = संकल्पस्य भारः येन तथा (दृढ़ प्रतिज्ञा किये हुये) । खलु = नूनम् (अवश्य) । शङ्कायाः स्थानम् = सन्देहास्पदम् (सन्देह के योग्य) ।

युधिष्ठिर, नकुल और सहदेव का तो कहना ही क्या, वृकोदर (भीम) तथा किरीटी (अर्जुन) के मध्य भी कोई ऐसा समर्थ नहीं है जो चञ्चल वर्तुलाकार चापवृत्त वाले सिन्धुराज जयद्रथ को बल में आमने-सामने युद्ध कर सके ॥ २६ ॥

भानुमती—हे आर्यपुत्र ! यद्यपि ऐसा है फिर भी दृढ प्रतिज्ञा करने वाले धनञ्जय सन्देह करने योग्य हैं ।

माता—जादे साहु, कालोइदं तुए मंदिदं। [जाते ! साधु, कालोचितं त्वया मन्त्रितम्।]

राजा—आः ममाऽपि नाम दुर्योधनस्य शङ्कास्थानं पाण्डवाः। पश्य—

कोदण्डज्याकिणाङ्कैरगणितरिपुभिः कङ्कटोन्मुक्तदेहैः
श्लिष्टान्योन्यातपत्रैः सितकमलवनभ्रान्तिमुत्पादयद्भिः।
रेणुग्रस्तार्कभासां प्रचलदसिलतादन्तुराणां चमूना-
माक्रान्ता भ्रातृभिर्मे दिशि दिशि समरे कोटयः सम्पतन्ति ॥ २७ ॥

माता—जाते = पुत्रि (हे बेटी)। कालोचितम् = समयानुकूलम् (समयोचित) त्वया = भानुमत्या (तुमने) मन्त्रितम् = विचारितं कथितं वा। (कहा)।

राजा—मम = मे दुर्योधनस्य = ज्येष्ठकौरवस्य (मुझ दुर्योधन के) पाण्डवाः = युधिष्ठिरादयः। शङ्कास्थानम् किम् = सन्देहस्थानम् किम् (क्या सन्देहास्पद हैं)।

अन्वयः—कोदण्डज्याकिणाङ्कैः अगणितरिपुभिः कङ्कटोन्मुक्तदेहैः श्लिष्टान्योन्यातपत्रैः सितकमलवनभ्रान्तिम् उत्पादयद्भिः, मे भ्रातृभिः रेणुग्रस्तार्कभासां प्रचलदसिलता दन्तुराणां चमूनां कोटयः आक्रान्ताः दिशि पतन्ति ॥ २७ ॥

कोदण्डेति। कोदण्डज्याकिणाङ्कैः—कोदण्डस्य = धनुषः ज्यया = प्रत्यञ्चायाः किणः = व्रणस्थानम्, तस्य अङ्कः = चिह्नम् येषां तैः (धनुष की डोरी के पड़े ढट्ठी वाले)। अगणितरिपुभिः—अगणितैः = असंख्यैः रिपुभिः = अरिभिः (असंख्य शत्रुओं द्वारा) कङ्कटोन्मुक्तदेहैः—कङ्कटैः उन्मुक्ताः देहाः येषां ते तैः = कवचपिहित-शरीरैः (कवचों से आच्छादित शरीरों वाले)। श्लिष्टान्योन्यातपत्रैः—श्लिष्टानि = संजुष्टानि अन्योन्येषाम् = परस्परेषाम् आतपत्राणि = छत्राणि येषां ते तैः (आपस में एक दूसरे से जुड़े हुये छत्रों द्वारा) सितकमलवनभ्रान्तिम्—

माता—हे पुत्रि ! शाबास, तुमने समयोचित कहा।

राजा—आह ! क्या मुझ दुर्योधन को भी पाण्डव शङ्का के स्थान हैं ? देखो—

युद्ध करते रहने के कारण धनुष की डोरी खींचते रहने से जिनके ढट्ठे पड़ गये हैं, जो असंख्य शत्रुओं का भय नहीं करते, जो कवच से शरीर आच्छादित किये हुये हैं, युद्ध यात्रा में जिनके राजछत्र आपस में भिड़ जाने के कारण शुभ्र कमलवन होने का भ्रम उत्पन्न कर देते हैं, ऐसे मेरे भाइयों से युक्त, उठी धूल से सूर्य की कान्ति को ढक लेने वाली चलती हुई असिलताओं से ऊँची-नीची अर्थात् भयंकर लगने वाली सेनाओं की कोटियाँ घिरी हुई होकर भी चारों ओर गिर रही हैं अर्थात् शत्रुओं पर आक्रमण कर रहीं हैं ॥ २७ ॥

अपि च भानुमति ! विज्ञातपाण्डवप्रभावे, किन्त्वमप्येवमाशङ्कसे । पश्य—

दुःशासनस्य हृदयक्षतजाऽम्बुपाने
दुर्योधनस्य च यथा गदयोरुभङ्गे ।
तेजस्विनां समरमूर्धनि पाण्डवानां
ज्ञेया जयद्रथवधेऽपि तथा प्रतिज्ञा ॥ २८ ॥

सितस्य=शुभ्रस्य कमलवनस्य=सरसिजकाननस्य भ्रान्तिः=भ्रमः, ताम् (श्वेत कमल वन के सन्देह को) । उत्पादयद्भिः=जनयद्भिः (पैदा करते हुये) मे=मम भ्रातृभिः=बन्धुभिः (भाइयों द्वारा) । रेणुग्रस्तार्कभासाम्—रेणुभिः=धूलिभिः । ग्रस्ताः=आच्छन्नाः अर्कस्य=रवेः भाः=कान्तिः याभिस्ताः तासाम् (धूलिग्रस्त सूर्य कान्ति वाली) प्रचलदसिलतादन्तुराणाम्—प्रचलन्त्यः=गच्छन्त्यः असि-लताः=खड्गवल्लर्यः, ताभिः दन्तुराणि=निम्नोन्नतानि, तेषाम् चमूनाम्=सेनानाम् कोटयः=कोटिसंख्याः (खड्गलताओं से ऊँची-नीची अर्थात् भयङ्कर सेनाओं की कोटियाँ) । आक्रान्ताः=अधिष्ठिताः (अक्रान्त) (सत्यः) दिशि दिशि=सर्वासु दिक्षु (दिशाओं में) पतन्ति=स्खलन्ति (गिर रही हैं) । स्रग्धरावृत्तम् ॥ २७ ॥

विज्ञातपाण्डवप्रभावे—विज्ञातः = अभिज्ञातः पाण्डवानां=युधिष्ठिरादीनां प्रभावः=महिमा यया सा तत्सम्बुद्धौ (हे पाण्डवों का प्रभाव जानने वाली) ।

अन्वयः—तेजस्विनां पाण्डवानां समरमूर्द्धनि, दुःशासनस्य हृदयक्षतजाम्बु-पाने गदया दुर्योधनस्य च उरुभङ्गे यथा प्रतिज्ञा, तथा एव जयद्रथवधे अपि ज्ञेया ॥ २८ ॥

दुःशासनस्येति । तेजस्विनाम् = तेजोयुक्तानाम् (तेजस्वी) पाण्डवानाम् (पाण्डवों का) समरमूर्द्धनि=रणाङ्गणे (युद्ध में) । दुःशासनस्य=ममानुजस्य द्रौपदीकेशवस्त्राकर्षकस्य (दुःशासन के) हृदयक्षतजाम्बुपाने—हृदयस्य=वक्षः-स्थलस्य क्षतात् जातस्य अम्बोः=रक्ताम्बोः पानम्=आचमनम् तस्मिन् (वक्ष को

और भी—हे पाण्डवों का प्रभाव जानने वाली भानुमति ! देखो—

तेजस्वी पाण्डवों की युद्धभूमि में दुःशासन के वक्षःस्थल को फाड़कर रक्त पीने तथा गदा द्वारा दुर्योधन को जाँघ फाड़ने में जैसी प्रतिज्ञा थी वैसी ही जयद्रथ वध में भी तुम्हें जाननी चाहिये ॥ २८ ॥

कः कोऽत्र भोः ! जैत्रं मे रथमुपकल्पय तावत् । यावदहमपि तस्य प्रगल्भपाण्डवस्य जयद्रथपरिरक्षणेनैव मिथ्याप्रतिज्ञावैलक्ष्यसम्पादितमशस्त्रपूतं मरणमुपदिशामि ।

(प्रविश्य)

कञ्चुकी—देव

उद्घातक्वणितबिलोलहेमघण्टः
प्रालम्बद्विगुणितचामरप्रहासः ।

फाड़ने से निकले रुधिर जल को पीने में)। गदया = गदानामास्त्रविशेषण (गदा द्वारा)। दुर्योधनस्य = मम (मुझ दुर्योधन के) ऊरुभङ्गे = जङ्घनाशे (जांघ फाड़ने की) यथा = यादृशी प्रतिज्ञा = संकल्पः (आसीत्) तथा = तादृश्येव प्रतिज्ञा जयद्रथवधे अपि = सिन्धुराजविनाशे अपि (जयद्रथ के मारने में भी) ज्ञेया = बोद्धव्या (समझनी चाहिये)। वसन्ततिलका वृत्तम् ॥ २८ ॥

जैत्रम् = जयशीलम् (विजयी) रथम् = स्यन्दनम् (रथ को) उपकल्पय = सज्जय (तैयार करो)। अहम्=दुर्योधनः अपि (मैं भी)। तस्य = कृतप्रतिज्ञस्य (उस, प्रतिज्ञा करने वाले) प्रगल्भपाण्डवस्य—प्रगल्भः = धृष्टश्चासौ पाण्डवः = पाण्डुपुत्रस्तस्य (दुष्ट पाण्डव का)। जयद्रथपरिरक्षणेन—जयद्रथस्य परि = सर्वतः रक्षणम् = रक्षा, तेन (जयद्रथ की सभी ओर से रक्षा के द्वारा) मिथ्याप्रतिज्ञा-वैलक्ष्यसम्पादितम्—मिथ्यया = असत्यया प्रतिज्ञया=प्रणेन यद् वैलक्ष्यम् = लज्जा, तेन सम्पादितम् = कृतम् (झूठी प्रतिज्ञा के कारण लज्जा से किये गये) अशस्त्र-पूतम्—शस्त्रेण = आयुधेन, प्रहरणेन वा पूतम्=पवित्रम् शास्त्रपूतम् न शस्त्रपूतम-शस्त्रपूतम् = अशस्त्रकृतात्मवधादिकर्म (पवित्र हथियारों के बिना) मरणम् = मृत्युम् (मरने को)। उपदिशामि = शिक्षयामि (कहता हूँ)।

अन्वयः—उद्घातक्वणितविलोलहेमघण्टः प्रालम्बद्विगुणित चामरप्रहासः नियमित वल्गिताकुलाश्वः शत्रूणाम् क्षपितमनोरथः अयम् ते रथः सज्जः ॥ २९ ॥

उद्घातेति । उद्घातक्वणितविलोलहेमघण्टः—उद्घातैः = आघातैः क्वणिताः

अरे यहाँ कौन है ? (शीघ्र) मेरा विजयी रथ तैयार करो। तब तक मैं भी उस धृष्ट पाण्डव (अर्जुन) की जयद्रथ से रक्षा करके ही प्रतिज्ञा झूठ हो जाने पर लज्जा से किये गये अस्त्रहीन मृत्यु के लिये कहूँ।

(प्रवेश करके)

कञ्चुकी—महाराज ! आघातों के कारण बज रही चञ्चल स्वर्ण क्षुद्र घंटियों से युक्त

सज्जोऽयं नियमितवल्गिताकुलाश्वः
शत्रूणां क्षपितमनोरथो रथस्ते ॥ २९ ॥

राजा—देवि ! प्रविश त्वमभ्यन्तरमेव । ('यावदहमपि तस्य प्रगल्भस्य पाण्डवस्य'—इत्यादि पठन् परिक्रामति ।)

(इति निष्क्रान्ताः सर्वे ।)

इति द्वितीयोऽङ्कः ।

शब्दायमानाः विलोलाः = चञ्चालाः हेम्नः = सुवर्णस्य घंटा = क्षुद्रघण्टिकाः यस्य सः (आघातों से बज रही चञ्चल स्वर्ण क्षुद्रघण्टियों वाले) प्रालम्बद्विगुणित चामरप्रहासः—प्रालम्बेन = अवलम्बमानेन द्विगुणितः = वर्द्धितः चामराणाम् = प्रकीर्णकानाम् ('चामरं तु प्रकीर्णकम्' इत्यमरः) (लटकने के कारण दुगुनी चामरों के) प्रहासो यत्र तथाभूतः (हँसी वाला)। नियमितवल्गिताकुलाश्वः—नियमिताः = नियन्त्रिताः वल्गितेन=गतिविशिष्टेन आकुलाः=भयाकुलाः अश्वाः= घोटकाः यत्र सः (रोकने के कारण विशेष प्रकार की चाल से व्याकुल घोड़ों वाला) शत्रूणाम् = अरिणाम् (शत्रुओं के) क्षपितमनोरथः—क्षपिताः=नाशिताः मनोरथाः=अभिलाषाः येन सः (मनोरथों को नष्ट कर देने वाला) अयम्=एषः (यह) ते=तव रथः=स्यन्दनम् (रथ) सज्जः = सन्नद्धो वर्तते (तैयार है) । प्रहर्षिणी वृत्तम् । तद्यथा—त्र्याशाभिर्मनजरगाः प्रहर्षिणीयम् ॥ २९ ॥

राजा—देवि ! = हे भानुमति ! त्वम् = भवती (तुम) अभ्यन्तरम् = मध्यम् एव (अन्दर ही) प्रविश = प्रवेशं कुरु (प्रविष्ट हो जाओ) ।

इति 'सुधा'-संस्कृत-हिन्दीटीकाद्वयोपेतस्य वेणीसंहार-
नाटकस्य द्वितीयोऽङ्कः ॥

लटकने के कारण दुगुने चमर के प्रकाश वाला, नियन्त्रित होने से विशेष चाल के कारण व्याकुल घोड़ों वाला शत्रुओं के मनोरथों को नष्ट करने वाला यह आपका रथ तैयार हो गया है ॥ २९ ॥

राजा—हे देवि ! तुम अन्दर ही चली जाओ । ('यावदहमपि तस्य प्रगल्भस्य पाण्डवस्य'—इत्यादि पूर्वोक्त वाक्य पढ़ते हुए घूमता है ।)

(सभी निकल जाते हैं)

द्वितीय अङ्क समाप्त ।

तृतीयोऽङ्कः

(ततः प्रविशति विकृतवेषा राक्षसी ।)

राक्षसी—(विकृतं विहस्य । सपरितोषम् ।)

हदमाणुशमंशशोणिदेहिं कुम्भशहश्शं वशाहिं शंचिदम् ।
अणिशं अ पिबामि शोणिअं शमलं वलिशशदं हुबीअदु ॥ १ ॥

[हतमानुषमांसशोणितैः कुम्भसहस्रं वसाभिः सञ्चितम् ।
अनिशं च पिबामि शोणितं समरं वर्षशतं भवतु ॥ १ ॥]

(नृत्यन्ती सपरितोषम् ।) जइ सिन्धुलाअवहदिअहे विअ दिअहे दिअहे शमलकम्म पडिवज्जइ अज्जुणो तदो पज्जत्तभलिदकोट्ठागाले मंशशोणिएहिं मे गेहे हुबीअदि । (परिक्रम्य दिशोऽवलोक्य ।) अह कहिं क्खु गदे मे लुहिल-

---

राक्षसी—विकृतम्=असदृशम् (विकृत, राक्षसोचित) । सपरितोषम् = सन्तोषेण सह (ससन्तोष) ।

अन्वयः—हतमानुषमांसशोणितैः वसाभिः सञ्चितं कुम्भसहस्रम् अनिशं शोणितं पिबामि समरं च वर्षशतं भवतु ॥ १ ॥

हतेति । हतमानुषमांसशोणितैः—हतानाम् = घातितानाम् मानुषाणाम् = नराणाम् मांसैः = पललैः शौणितैः = रक्तैः (युद्ध में मारे गये मनुष्यों के मांस तथा रक्त से) वसाभिः = मेदोभिश्च (चर्बी से) । सञ्चितम् = एकत्रीकृतम् (इकट्ठा किया हुआ) कुम्भसहस्रम्—कुम्भानाम् = घटानाम् सहस्रम् = दशशतम् (एक हजार घड़ा भर) अनिशम् = निरन्तरम् (निरन्तर) शोणितम् = रक्तम् (रक्त) पिबामि=पानं करोमि (पी रही हूँ) समरम्=युद्धम् च वर्षशतम्—वर्षाणां शतम्= शतसंख्याकमितानि वर्षाणि यावत् (सौ वर्षों तक) भवतु = अस्तु (होवे) ॥ १ ॥

नृत्यन्ती = लास्यं कुर्वन्ती (नाचती हुई) । सपरितोषम् = ससन्तोषम् (सन्तोष से) सिन्धुराजवधदिवस इव—सिन्धुराजस्य = जयद्रथस्य वधस्य = मारणस्य दिवसः = दिनम् तस्मिन् इव (सिन्धुराज के वध वाले दिन की भाँति) दिवसे दिवसे = प्रतिदिनम् (नित्य) समरकर्म—समरस्य कर्म=युद्धकार्यम् (युद्ध

(तदनन्तर विकृत वेषवाली राक्षसी प्रवेश करती है)

राक्षसी—संग्राम में मारे गये मनुष्यों के मांस, रक्त तथा मज्जा से हजारों घड़े भर गये हैं। मैं निरन्तर (दिन रात) रूधिर पी रही हूँ। युद्ध सैकड़ों वर्षों तक चलता रहे ॥१॥

(नाचती हुई सन्तोष के साथ) यदि सिन्धुराज के वध वाले दिन के समान अर्जुन युद्ध कर्म प्रतिदिन करने लगें, तब तो मांस तथा रुधिर से परिपूर्ण कोष्ठागार

प्पिए हुवीअदि। ता जाव इमस्सि शमले पिअभत्तालं लुहिलप्पिअं अण्णे-शामि। (परिक्रम्य) होदु। शद्दावइश्शं दाव। अले लुहिलप्पिआ लुहि-लप्पिआ, इदो एहि। [यदि सिन्धुराजवधदिवस इव दिवसे दिवसे समरकर्म प्रति-पद्यतेऽर्जुनस्ततः पर्याप्तभरितकोष्ठागारं मांसशोणितैर्मे गृहं भविष्यति। अथ क्व खलु गतो मे रुधिरप्रियो भविष्यति। तद्यावदस्मिन् समरे प्रिय भर्त्तारं रुधिरप्रियमन्विष्ये। भवतु। शब्दापयिष्ये तावत्। अरे रुधिरप्रिय! रुधिरप्रिय! इत एहि।]

(ततः प्रविशति तथाविधो राक्षसः)

राक्षसः—(भ्रमणं नाटयन्।)

पच्चग्गहदाणं मंशए जइ उण्हे लुहिले अ लब्भइ।
ता एशे मह पलिश्शमे क्खणमेत्तं एव्व लहु णश्शइ॥ २॥
[प्रत्यग्रहतानां मांसं यद्युष्णं रुधिरं च लभ्येत।
तदेष मम परिश्रमः क्षणमात्रमेव लघु नश्येत्॥ २॥]

कार्यं)। प्रतिपद्यते = करोति (करते हैं)। पर्याप्तभरितकोष्ठागारम्—पर्याप्तम् = यथेष्टम् भरितम् = पूरितम् कोष्ठागारम् = कुशूलगृहम् यत्र तत् (पूर्ण भरे कोष्ठागार वाला) मे = मम राक्षस्याः (मेरा) गृहम् = गेहम् (घर)। दिशः= सर्वतः (चारों ओर) अवलोक्य = दृष्ट्वा (देख कर) क्व = कुत्र (कहाँ) रुधिर-प्रियः—रुधिरम् = रक्तम् प्रियं यस्य सः (रक्तप्रिय)। समरे = युद्धे (युद्ध में) प्रियभर्तारम्—प्रियश्चासौ भर्ता तम् (प्रियतम को)। अन्वेषयामि = अन्वेषणं करोमि (ढूँढती हूँ) शब्दापयिष्ये = आह्वयिष्यामि (पुकारूँगी)। इत एहि = अत्रागच्छ (इधर आओ)।

अन्वयः—यदि प्रत्यग्रहतानां मांसं च उष्णं रुधिरं लभ्येत तदा मम एषः परिश्रमः क्षणमात्रम् एव लघु नश्येत्॥ २॥

प्रत्यग्रेति। यदि = चेत्। प्रत्यग्रहतानाम्—प्रत्यग्रम् = सद्यः हताः = मारिताः

(कुठिलों) वाला मेरा घर हो जायेगा। (घूमकर चारों ओर देखकर) न जाने रुधिर-प्रिय कहाँ होगा? अच्छा इस युद्ध में प्रिय भर्ता रुधिरप्रिय को ढूँढती हूँ। (घूमकर) अस्तु, पुकारती हूँ। अरे रुधिरप्रिय! इधर आओ, इधर आओ।

(इसके बाद पूर्वोक्त प्रकार के राक्षस का प्रवेश)

राक्षस—(घूमने का अभिनय करता हुआ)

यदि तत्काल (ताजे) मारे गये लोगों का मांस और गरम खून मिल जाये तो मेरी यह थकावट क्षणमात्र में ही दूर हो जाये॥ २॥

(राक्षसी पुनर्व्याहरति ।)

राक्षसः—(आकर्ण्य) अले के मं शद्दावेदि । (विलोक्य ।) कहं पिआ मे वशागन्धा । (उपसृत्य ।) वशागन्धे, कीश मं शद्दावेशि । [अरे का मां शब्दायते । कथं प्रिया मे वसागन्धा । वसागन्धे, कस्मान्मां शब्दायसे ।]

लुहिलाशवपाणमत्तिए लणहिण्डन्तखलन्तगत्तिए ।
शद्दाअशि कीश मं पिए ! पुलिशशहश्शं हदं शुणीअदि ॥ ३ ॥

[रुधिरासवपानमत्तिके रणहिण्डनस्खलद्गात्रिके ।
शब्दायसे कस्मान्मां प्रिये पुरुषसहस्रं हतं श्रूयते ॥ ३ ॥]

तेषाम् (तत्काल मारे गये लोगों का) । मांसम् = पललम् (मांस) च = तथा । उष्णम् = तप्तम् रुधिरम् = रक्तम् (गर्म खून) । लभ्येत = प्राप्येत (प्राप्त हो सके) । तदा = तस्मिन्नवसरे (उस समय) मम = मे एषः = अयम् परिश्रमः = श्रान्तिः (मेरी यह थकावट) क्षणमात्रम् एव = अल्पेनैव कालेन (क्षण भर में) । लघु = द्रुतम् (शीघ्र) नश्येत् = नष्टो भवेत् (नष्ट हो जाये) ॥ २ ॥

अन्वयः—रुधिरासवपानमत्तिके ! रणहिण्डनस्खलद्गात्रिके ! प्रिये ! कस्मात् मां शब्दायसे पुरुषसहस्रं हतं श्रूयते ॥ ३ ॥

रुधिरेति । रुधिरासवपानमत्तिके—रुधिरमेवासवः तस्य पानेन मत्ता तत्सम्बुद्धौ = अयि-लोहित-मद्य-पानोन्मत्ते (हे रुधिर रूपी मदिरा पान करने के कारण मतवाली) रणहिण्डनस्खलद्गात्रिके !—रणे = समरे हिण्डनेन = चिरं भ्रमणेन स्खलत् गात्रम् = शरीरं यस्याः सा तत्सम्बुद्धौ (अयि युद्ध में बहुत देर तक घूमने से शिथिल शरीर वाली) प्रिये = प्रेयसि ! कस्मात्=कस्मात् कारणात् (किसलिये) माम् = प्रियं (मुझे) शब्दायसे = आह्वयसि (पुकार रही हो) । पुरुष सहस्रस्य —पुरुषाणाम् = मानवानाम् सहस्रम्=दशशतसंख्याकः समुदायः (हजारों पुरुष) (युद्धे) हतम् = मारितम् (मारे गये) श्रुयते = आकर्ण्यते (सुने जाते हैं) ॥३॥

(राक्षसी फिर पुकारती है ।)

राक्षस—(सुनकर) अरे यह कौन मुझे पुकार रही है । (देखकर) क्या प्रिया वसागन्धा है । (पास जाकर) वसागन्धे ! मुझे क्यों पुकार रही है ।

हे रुधिर रूपी मदिरा का पान करने में मत्त, युद्ध में पर्याप्त समय तक विचरण करने वाली प्रिये ! मुझे किसलिए पुकार रही हो ? हजारों लोग युद्ध में मारे गये सुने जाते हैं ॥ ३ ॥

राक्षसी—अले लुहिलप्पिआ ! एदं क्खु मए तुह कालणादो पच्चग्गहदश्श कश्शवि लाएसिणो शलीलावयवहुदं प्पहूदवशाशिणिग्घं कोण्हं णवलुहिलं अग्गमंशं अ आणीदम् । ता पिवाहि णम् । [अरे रुधिरप्रिय ! इदं खलु मया तवकारणात्प्रत्यग्रहतस्य कस्यापि राजर्षेः शरीरावयवहृतं प्रभूतवसास्निग्धं कोष्णं नवरुधिरमग्रमासं चाऽऽनीतम् । तत्पिबैतत् ।]

राक्षसः—(सपरितोषम् ।) शाहु वशागन्धे, शाहु ! शुट्ठु शोहणं तुए किदम्, जं कोशिणं कोशिणं लुहिलं आणीदम् । वलिअह्मि पिवाशिए । ता उवणेहि । [साधु, वसागन्धे, साधु ! सुष्ठुं शोभनं त्वया कृतम्, यत्कोष्णं कोष्णं रुधिरमानीतम् । बलवदस्मि पिपासितः । तदुपनय ।]

राक्षसी—अले लुहिलप्पिआ, एदिशे वि णाम हदणलगअतुलंगमशोणिअवशाशमुद्ददुश्शंचले शमलांगणे पडिब्भमन्ते तुमं पिवाशिएशित्ति अच्चलिअम् । [अरे रुधिरप्रिय ! इदृशेऽपि नाम हतनरगजतुरङ्गमशोणितवसासमुद्रदुःसञ्चरे समराङ्गणे परिभ्रमंस्त्वं पिपासितोऽसीत्याश्चर्यम्] !

राक्षसी—मया = राक्षस्या (मैंने) तव = ते प्रियस्य कारणात् = हेतोः (तुम्हारे कारण से) प्रत्यग्रहतस्य = सद्यः मारितस्य (ताजे मारे हुए) । राजर्षेः (राजर्षि के) शरीरावयवहृतम्=शरीराङ्गैः हृतम् (शरीराङ्गों से निकाला हुआ) प्रभूतवसास्निग्धं—प्रभूताभिः वसाभिः=बहुमज्जाभिः स्निग्धम् = चिक्कणम् (अधिक मज्जा के कारण चिकने) कोष्णम् = तप्तम् नवरुधिरम् = नूतनलोहितम् (नया खून) अग्रमांसम् = मुख्यभक्ष्यमांसम् (बढ़िया मांस) आनीतम् = आहृतम् (लाया हूँ) पिब = पानं कुरु (पियो) ।

राक्षसः—शोभनम् = समीचीनम् (अच्छा) त्वया = प्रियया (तुमने) कृतम् = विहितम् (किया है) । पिपासितः = पिपासापीडितः (प्यासा) उपनय = आनय (ले आ) ।

राक्षसी—हतनरगजतुरङ्गमः—हताः = मारिताः नराः = मानवाः, गजाः =

राक्षसी—अरे रुधिरप्रिय ! वास्तव में मैं यह तुम्हारे कारण तत्काल मारे हुये किसी राजर्षि के शरीरावयवों से निकाला गया, अधिक वसा के कारण स्निग्ध थोड़ा-थोड़ा गरम नया रुधिर लाई हूँ । सो इसे पी लो ।

राक्षस—(सन्तोष के साथ) शाबास वसागन्धे शाबास । तुमने बड़ा अच्छा किया जो थोड़ा गरम रुधिर ले आई । मुझे जोर की प्यास लगी है । अतः ले आओ ।

राक्षसी—अरे रुधिर प्रिय ! इस प्रकार के नर-गज-घोटकों के रुधिर वसा सागर से कठिनता से संचरण योग्य समराङ्गण में भी तुम प्यासे हो, यह तो अत्यन्त आश्चर्य है ।

राक्षसः—(सक्रोधम्) अले वशागंधे ! णं पुत्तघडुक्कअशोअशन्तत्तहिअअं शामिणीं हिडिम्बादेवीं पेक्खिदुं गदह्मि । [अरे वसागन्धे ! ननु पुत्रघटोत्कचशोकसन्तप्तहृदयां स्वामिनीं हिडिम्बादेवीं प्रेक्षितुं गतोऽस्मि ।]

राक्षसी—लुहिलप्पिआ ! अज्जवि शामिणीए हिडिम्बादेवीए घडुक्कअशोए ण उपशम्मइ । [रुधिरप्रिय ! अद्यापि स्वामिन्या हिडिम्बादेव्या घटोत्कचशोको नोपशाम्यति ।]

राक्षसः—वशागन्धे, कुदो शे उवशमे केवलं अहिमण्णुशोअशमाणदुक्खाए शुभद्दादेवीए जण्णशेणीए अ कधं कधं वि शमाश्शाशीअदि । [वसागन्धे, कुतोऽस्या उपशमः ? केवलमभिमन्युशोकसमानदुःखया सुभद्रादेव्या याज्ञसेन्या च कथं कथमपि समाश्वास्यते ।]

करिणः तुरङ्गमाः अश्वाश्च, तेषां शोणितं=रुधिरम् वसा च = मेदा च, तयोः समुद्रः =सागरस्तेन दुःसञ्चरे=दुःखेन सञ्चरितुं शक्ये (मानव-गज-तुरगों के रुधिर तथा वसा के सागर में कठिनता से संचरण योग्य) समराङ्गणे = युद्ध प्रांगणे (युद्ध के मैदान में) । परिभ्रमन् = इतस्ततो गच्छन् (इधर उधर घूमते हुये) पिपासितः= तृषार्तः (प्यासे) आश्चर्यम् = अतिविस्मयकरम् (आश्चर्य) ।

राक्षसः—सक्रोधम् = सरोषम् (नाराज होकर) पुत्रघटोत्कचशोकसन्तप्तहृदयम्—पुत्रस्य = सुतस्य घटोत्कचस्य = तन्नाम्नो हिडिम्बाजातस्य शोकेन = वधदुःखेन सन्तप्तम्=दग्धम् हृदयम्=चेतो यस्याः सा ताम् (पुत्र घटोत्कच के शोक से व्याकुल हृदय) स्वामिनीम् = भट्टिनीं हिडिम्बादेवीम्=भीमपत्नीम् (हिडिम्बा देवी को) प्रेक्षितुम् = द्रष्टुम् (देखने को) गतोऽस्मि = प्रस्थितोऽस्मि (चला गया था) ।

राक्षसी—अद्यापि = अद्यदिनमपि (अब तक भी) । न उपशाम्यति = शान्तिं नैव गच्छति (शान्त नहीं हो रहा है) ।

राक्षसः—अस्याः = देव्या हिडिम्बायाः (इनका) उपशमः = उपशान्तिः (शान्ति) कुतः = कस्मात् (कहाँ से) । अभिमन्युशोकसमानदुःखया—अभि-

---

राक्षस—(सक्रोध) अरी वसागन्धे ! वास्तव में मैं पुत्र घटोत्कच के शोक से व्याकुल हृदय वाली स्वामिनी हिडिम्बा देवी को देखने चला गया था ।

राक्षसी—हे रुधिर प्रिय ! क्या अब भी स्वामिनी हिडिम्बा देवी का घटोत्कच शोक शान्त नहीं हो रहा है ।

राक्षस—हे वसागन्धे ! उन्हें शान्ति कैसी ? केवल अभिमन्यु शोक से समान दुःखवाली सुभद्रा देवी तथा याज्ञसेनी (द्रौपदी) द्वारा किसी प्रकार धैर्य दिलाया जा रहा है ।

राक्षसी—लुहिलप्पिआ। गेण्ह एदं हत्थिशिलक्कवालशंचिअ अग्गमंशोवदंशम्। पिवाहि शोणिआशवम्। [रुधिरप्रिय ! गृहाणैतद्धस्तिशिरःकपालसञ्चितमग्रमांसोपदंशम्। पिबाहि शोणितासवम्।]

राक्षसः—(तथा कृत्वा) वशागन्धे, अह किअप्पहूदं दुए शंचिअं लुहिलं अग्गमंशं अ ? [वसागन्धे, अथ कियत्प्रभूतं त्वया सञ्चितं रुधिरमग्रमांसं च।]

राक्षसी—अले लुहिलप्पिआ, पुव्वशंचिअं तुमं वि जाणाशि जेव्व। णवशंचिअं शिणु दाव। भअदत्तशोणिएहिं कुम्भं, शिन्धुलाअवशाहिं कुम्भे दुवे, दुवदमच्छाहिवभूलिश्शवशोमदत्तबह्लिअप्पमुहाणं णलिन्दाणं अण्णाणं वि पाकिदपुलिशाणं लुहिलवशामंशस्स घटा अविणद्धमुहा सहस्सशंखा शन्ति मे गेहे। [अरे रुधिरप्रिय, पूर्वसञ्चितं त्वमपि जानास्येव। नवसञ्चितं शृणु तावत्। भगवदत्तशोणितैः कुम्भः सिन्धुराजवसाभिः कुम्भौ द्वौ द्रुपदमत्स्याधिपभूरिश्रवः-

---

मन्योः शोकेन समानम् दुःखं यस्याः सा तया = द्रोपदोसुतदुःखसमखिन्नया (अभिमन्यु के शोक से समान दुःखी) सुभद्रा देव्याः = राज्याः सुभद्रया, (रानी सुभद्रा द्वारा)। याज्ञसेन्या = द्रौपद्या (द्रौपदी द्वारा) कथं कथमपि = केनापि प्रकारेण (किसी तरह) समाश्वायस्ते = आश्वासनं दीयते (धैर्य बँधाया जा रहा है)।

राक्षसी—एतत् = इदम् (यह)। हस्तिशिर.कपालसंचितम्—हस्तीनाम् = करिणाम् शिरांसि एव कपालम् तस्मिन् सञ्चितम् = एकत्रितम् (हाथियों के शिर रूपी कपाल में सञ्चित) अग्रमांसोपदंशम्—अग्रमांसम् = श्रेष्ठमांसम् एव उपदंशम् = मद्यपानरोचकं भक्ष्यम् (उत्तम मांसरूपी व्यञ्जन) शोणितासवम् = रुधिरमद्यम् (रक्त मदिरा)।

राक्षसः—कियत्प्रभूतम् = कियत्प्रमाणम् (कितना अधिक)। सञ्चितम् = एकत्रितम् (इकट्ठा किया)।

राक्षसी—पूर्वसञ्चितम् = प्राक्संगृहीतम् (पहले का इकट्ठा किया हुआ)। जानासि = वेत्सि (जानते हो)। नवसञ्चितम् = नूतनसंग्रोतम् (नया इकट्ठा किया हुआ)। शृणु = आकर्णय (सुनो) भगदत्तशोणितैः—भगदत्तस्य = तन्नाम्नः

राक्षसी—हे रुधिर प्रिय ! यह हाथी के शिर रूपी कपाल में संचित उत्तम मांस को लो तथा रुधिरासव को पियो।

राक्षस—वसागन्धे ! तुमने कितना रुधिर और श्रेष्ठमांस जमा किया है ?

राक्षसी—अरे रुधिरप्रिय ! पूर्वसंचित तो तुम जानते ही हो। नये इकट्ठे किये हुये सुन लो—भगदत्त के रक्त से एक घड़ा, सिन्धुराज की चर्बी से दो घड़े, द्रुपद मत्स्यराज

सोमदत्तवाह्लीकप्रमुखाणां नरेन्द्राणामन्येषामपि प्राकृतपुरुषाणां रुधिरमांसस्य घटा अपिनद्धमुखाः सहस्रसंख्याः सन्ति मे गेहे ।]

राक्षसः—(सपरितोषमालिङ्ग्य ।) शाहु शुग्घलिणीए, शाहु । इमिणा दे शुग्घलिणीत्तणेण अज्ज शामिणीए हिडिम्बादेवीए शम्बिहाणेण प्पणट्टं मे जम्मदालिद्दम् । [साधु सुगृहिणि, साधु । अनेन ते सुगृहिणीत्वेनाद्य स्वामिन्या हिडिम्बादेव्याः संविधानेन प्रनष्टं मे जन्मदारिद्रचम् ।]

राक्षसी—लुहिलप्पिआ, केलिशे शामिणीए शविहाणए किदे । [रुधिर-प्रिय, कीदृशं स्वामिन्या संविधानं कृतम् ।]

राज्ञः शोणितैः = रुधिरैः (भगदत्त के रुधिर से) कुम्भम् = एककुम्भमात्रम् (घड़ा भर)। सिन्धुराजवसाभिः–सिन्धुराजस्य = जयद्रथस्य वसाभिः = मेदाभिः (सिन्धु राज की चर्वी से) कुम्भे द्वे = द्विघटम् (दो घड़े)। द्रुपदमत्स्याधिपभूरिश्रवः-सोमदत्तवाह्लीकप्रमुखाणाम्—द्रुपदश्च = विराट्नृपतिः, मत्स्याधिपश्च = मत्स्यराजश्च भूरिश्रवश्च सोमदत्तश्च वाह्लीकश्च प्रमुखाः यत्र तेषाम् (द्रुपद-मत्स्यराज-भूरिश्रवा-सोमदत्तवाह्लीक आदि के) नरेन्द्राणाम् = नरेशाणाम् (राजाओं के) अन्येषाम् अपि = अपरेषामपि (दूसरों के भी) प्राकृतपुरुषाणाम् = सामान्य-वीराणाम् (सामान्य वीरों के) रुधिरवसाभिः = रक्तमज्जाभिः (रक्त तथा मज्जा से)। अपिनद्धमुखाः—अपिनद्धानि = अनाच्छादितानि मुखानि = ऊर्ध्वभागाः येषां ते (खुले मोहडे वाले) सहस्रसंख्या = दशशतसंख्यकाः घटाः = कुम्भाः (एक हजार घड़े) मे = मम (मेरे) गेहे = गृहे (घर में) सन्ति = वर्तन्ते (विद्यमान हैं)।

राक्षस.—आलिङ्ग्य = आलिङ्गनं कृत्वा (आलिंगन करके) सुगृहिणि—शोभना गृहिणी तत्संबुद्धौ=हे सुपत्नि ! सम्बिधानेन = उपायेन (तरीके से) जन्म-दारिद्रचम्–जन्मनः दारिद्रयम् = दरिद्रता (जन्म भर की दरिद्रता)। नष्टम् = समाप्तम् (नष्ट हो गई)।

राक्षसी—स्वामिन्या = देव्या हिडिम्बया (हिडिम्बा देवी ने) सम्बिधानम् = नियोगः (विधान)।

भूरिस्रवा सोमदत्त बाह्लीक आदि राजाओं के रुधिर तथा चर्बी से खुले मोहड़े वाले एक हजार भरे घड़े मेरे घर में हैं।

राक्षस—(सन्तोष के साथ आलिंगन करके) शाबास ! सुगृणिणी शाबास। तुम्हारे इस सुगृहिणी भाव से और स्वामिनी हिडिम्बा देवी के उपाय से आज मेरा जन्म भर का दारिद्रय दूर हो गया है।

राक्षसी—हे रुधिरप्रिय ! स्वामिनी ने कैसा उपाय बताया ?

राक्षसः—वशागन्धे, अज्ज अहं शामिणीए हिडिम्बादेवीए शवहुमाणं शद्दावलि आणत्ते जहा—लुहिलप्पिआ, अज्जप्पहुदि तुए अज्जउत्तभीमशेणश्श पिट्ठदोऽणुपिट्ठं शमले आहिण्डिदव्वं त्ति। ता तश्श अणुमग्गगामिणो हअ-माणुशशोणिअणइदश्शणप्पणट्ठबुभुक्खापिवाशश्श इव एव्व मे शग्गलोआ हुविअदि। तुमं वि वीशद्धा भविअ लुहिलवशाहि कुम्भशहश्शं शञ्चेहि। [वसागन्धे, अद्याऽहं स्वामिन्या हिडिम्बादेव्या सबहुमानमाहूयाऽऽज्ञप्तः यथा—रुधिर-प्रिय, अद्यप्रभृति त्वया आर्यपुत्रभीमसेनस्य पृष्ठतोऽनुपृष्ठं समरे आहिण्डितव्यमिति। तत्तस्यानुमार्गगामिनो हतमानुषशोणितनदीदर्शनप्रणष्टबुभुक्षापिपासस्येहैव मे स्वर्ग-लोको भविष्यति। त्वमपि विस्रब्धा भूत्वा रुधिरवसाभिः कुम्भसहस्रं सञ्चिनु।]

राक्षसी—लुहिलप्पिआ, किंणिमित्तं कुमालभीमशेणश्श पिट्ठदो आहि-ण्डीअदि। [रुधिरप्रिय, किन्निमित्तं कुमारभीमसेनस्य पृष्ठत आहिण्डयते।]

राक्षसः—सबहुमानम्=ससम्मानम् (आदर के साथ) आहूय=आकार्य (बुलाकर) आज्ञप्तः=आदिष्टः (आदेश दिया) अद्यप्रभृति=अद्यदिनादारभ्य (आज से) आर्यस्य=स्वामिनः भीमसेनस्य=वृकोदरस्य (आर्य भीमसेन के) पृष्ठात्पृष्ठम्=पश्चाद्गामी (पीछे-पीछे) समरे=रणे (युद्ध में) आहिण्डितव्यम्= भ्रमितव्यम् (घूमते रहना चाहिये)। तस्य=भीमस्य (उनके) अनुमार्गगामिनः— अनु=पश्चात् मार्गगामिनः=पथिकस्य (पीछे-पीछे रहने वाले) हतमानुष-शोणित-नदीदर्शनप्रणष्टबुभुक्षापिपासस्य—हतानाम् मानुषाणां शोणितस्य या नदी तस्या दर्शनेन प्रणष्टे बुभुक्षापिपासे यस्य सः तस्य=मारितनररक्तसरिदवलोकन नष्टे बुभुक्षा तृष्णे यस्य सः तस्य (युद्ध में मारे गये मनुष्यों की रक्त नदी को देखने से नष्ट हुई भूख प्यास वाले) एवम्=इत्थम् (इस प्रकार) स्वर्गलोकः=नाकलोकः विस्रब्धा=निश्चिन्तिता (निश्चिन्त) सञ्चिनु=संग्रहं कुरु (सञ्चय करो)।

राक्षसी—पृष्ठतः=पश्चात् भागात् (पीछे-पीछे)। आहिण्डयते=परिभ्राम्यते (घूमा जा रहा है)।

राक्षस—वसागन्धे ! आज मुझे स्वामिनी हिडिम्बा देवी ने बड़े सम्मान से बुलाकर कहा कि हे रुधिर प्रिय ! आज से तुम्हें आर्यपुत्र भीमसेन के पीछे-पीछे युद्ध में घूमना चाहिये। अतः उनके पीछे-पीछे रहने पर मारे गये मनुष्यों की रक्त नदी के देखने से नष्ट हुई भूख प्यास वाले व्यक्ति के समान यहीं मुझे स्वर्ग लोक का आनन्द मिल जायेगा। तुम भी निश्चिन्त होकर रक्त-मज्जा से हजारों घड़े भर लो।

राक्षसी—रुधिरप्रिय ! किस निमित्त कुमार भीमसेन के पीछे-पीछे घूमते रहते हो ?

राक्षसः—वशागन्धे ! तेण हि शामिणा विओदलेण दुश्शाशणश्श लुहिलं पादुं पडिण्णादम्। तं च अम्हेहिं लक्खशेहिं अणुप्पवशिअ पादव्वम्। [वसागन्धे ! तेन हि स्वामिना वृकोदरेण दुःशासनस्य रुधिरं पातुं प्रतिज्ञातम्। तच्चास्माभिः राक्षसैरनुप्रविश्य पातव्यम्।]

राक्षसी—(सहर्षम्।) शाहु, शामिणीए ! शाहु। शुशंविहाणे मे भत्ता तुए किदे। [साधु स्वामिनि, साधु। सुसंविधानो मे भर्ता त्वया कृतः।]

(नेपथ्ये महान्कलकलः। उभावाकर्णयतः)

राक्षसी—(आकर्ण्य, ससम्भ्रमम्।) अले लुहिलप्पिआ ! किं णु क्खु एशे महन्ते कलअले शुणीअदि। [अरे रुधिरप्रिय ! किं नु खल्वेष महान्कलकलः श्रूयते।]

राक्षसः—स्वामिना = महाराजेन वृकोदरेण = भीमसेनेन (वृकोदर महाराज ने) वक्ष.स्थलात् = वक्षभागात् (वक्षःस्थल से) रुधिरम् = लोहितम् (रक्त) पातुम् = पानं कर्त्तुम् (पीने को) प्रतिज्ञातम् = संकल्पितम् (प्रतिज्ञा कर ली) राक्षसैः = दानवैः (दानवों द्वारा) अनुप्रविश्य—अनु = पश्चात् प्रविश्य = प्रवेशं कृत्वा (प्रवेश करके) पातव्यम् = पेयम् (पीना चाहिये)।

राक्षसी—सुसंविधानः कृतः = शोभनकार्ये नियुक्तः (अच्छे कार्य में लगाया है)।

कलकलध्वनिः = कलकलरवः (कोलाहल)। आकर्णयतः = शृणुतः (दोनों सुनते हैं)।

राक्षसी—ससम्भ्रमम् = सभयम् (डरकर) एषः = अयम्। महान् = उच्चैः (जोर-जोर से) श्रूयते = आकर्ण्यते (सुनाई पड़ रहा है)।

राक्षस—हे वसागन्धे ! उन स्वामी वृकोदर के द्वारा वक्षःस्थल से दुःशासन का रक्त पीने की प्रतिज्ञा की गई है। जिससे हम राक्षसों को उसके शरीर में प्रवेश कर रक्त पान करना होगा।

राक्षसी—(प्रसन्नता के साथ) धन्य है स्वामिनी धन्य है। तुमने मेरे पति को शुभकार्य में लगा दिया है।

(नेपथ्य में महान् कलकलध्वनि होती है। दोनों सुनते हैं)।

राक्षसी—(सुनकर, डर के साथ) अरे रुधिरप्रिय ! यह महान् कलरव कैसा सुनाई पड़ रहा है ?

राक्षसः—(दृष्ट्वा) वशागन्धे, एशे क्खु धिट्ठज्जुण्णेण दोणे केशेशु आकट्ठिअ अशिवत्तेण वावादीअदि । [वसागन्धे ! एष खलु धृष्टद्युम्नेन द्रोणः केशेष्वाकृष्यासिपत्रेण व्यापाद्यते ।]

राक्षसी—(सहर्षम् ।) लुहिलप्पिअ ! एहि । अम्हे वि गच्छिअ दोणश्श लुहिलं पिबम्ह । [रुधिरप्रिय ! एहि । वयमपि गत्वा द्रोणस्य रुधिरं पिबामः ।]

राक्षसः—(सभयम् ।) वशागन्धे, बह्मणशोणिअं क्खु एदं गलअं दहन्ते दहन्ते पविशदि । ता किं एदिणा । [वसागन्धे, ब्राह्मणशोणितं खल्वेतत् गलं दहद्दहत् प्रविशति । तत्किमेतेन ?]

(नेपथ्ये पुनः कलकलः ।)

राक्षसी—लुहिलप्पिआ ! पुणोवि एशे महन्ते कलअले शुणीअदि । [रुधिरप्रिय, पुनरप्येष महान्कलकलः श्रूयते ।]

राक्षसः—दृष्ट्वा = अवलोक्य (देखकर) । धृष्टद्युम्नेन = द्रुपदपुत्रेण (धृष्टद्युम्न के द्वारा) द्रोणः = द्रोणाचार्यः (द्रोणाचार्य) केशेषु = कचेषु आकृष्य = गृहीत्वा (वाल खींचकर) असिपत्रेण = खड्गेन (तलवार से) व्यापाद्यते = हन्यते (मारे जा रहे हैं) ।

राक्षसी—पिबामः = पानं कुर्मः । (पीते हैं) ।

राक्षसः—ब्राह्मणशोणितम्—ब्राह्मणस्य = विप्रस्य शोणितम् = रुधिरम् (ब्राह्मण का रक्त) गलम् = कण्ठम् (गले को) दहत् = ज्वलयन् (जलाता हुआ) ।

राक्षसी—पुनः अपि = भूयोऽपि (फिर भी) ।

राक्षस—(देखकर) हे वसागन्धे ! यह धृष्टद्युम्न के द्वारा द्रोणाचार्य बाल पकड़ कर खींच कर तलवार द्वारा मारे जा रहे हैं ।

राक्षसी—(हर्ष के साथ) रुधिरप्रिय ! चलो ! हम भी चलकर द्रोणाचार्य का रुधिर पीते हैं ।

राक्षस—(डरकर) वसागन्धे ! यह ब्राह्मणरक्त गले को जलाता हुआ ही उतरेगा । अतः इससे क्या लाभ है ।

(नेपथ्य में पुनः कलकल ध्वनि होती है) ।

राक्षसी—हे रुधिरप्रिय ! फिर से यह महान कोलाहल सुनाई दे रहा है ।

राक्षसः—(नेपथ्याभिमुखमवलोक्य ।) वशागन्धे ! एशे क्खु अश्शत्थामे आकड्डिदाशिवत्ते इदो एव्व आअच्छदि । कदावि दुवदशुदलोशेण अम्हे वि वावादइश्शइ । ता एहि शामिणीए हिडिम्बादेवीए आणत्ति कलेम्हि । [वसागन्धे, एष खल्वश्वत्थामाकृष्टासिपत्र इत एवागच्छति । कदाचिद् द्रुपदसुत-रोषेणावामपि व्यापादयिष्यति । तदेहि स्वामिन्या हिडिम्बादेव्या आज्ञप्तिं कुर्मः]

राक्षसी—एवं करेम्ह । [एवं करवाव ।]

(इति निष्क्रान्तौ ।)

प्रवेशकः ।

(ततः प्रविशत्याकृष्टखड्गः कलकलमाकर्णयन्नश्वत्थामा ।)

राक्षसः—अश्वत्थामा = द्रोणाचार्यपुत्रः (अश्वत्थामा) आकृष्टासिपत्रः—आकृष्टम् असिपत्रं येन सः (तलवार खींचे हुए)। इत एव = एतत्स्थानमेव (इधर को ही) आगच्छति = आयाति (आ रहा है) । द्रुपदसुतरोषेण—द्रुपद-सुतस्य = धृष्टद्युम्नस्य रोषेण = क्रोधेन (धृष्टद्युम्न के क्रोध से) । आज्ञप्तिम् = आज्ञाम् कुर्मः = पालयामः (आदेश पालन करें) ।

राक्षसी—एवम् = एत्तद्विधम् एव (ऐसा ही) करवाव = आवां विदधाव (हम दोनों करते हैं) ।

राक्षस—(नेपथ्य की ओर देखकर) हे वसागन्धे ! यह अश्वत्थामा तलवार खींच कर इधर ही आ रहा है। कदाचित् धृष्टद्युम्न के क्रोध से हम लोगों को ही न मार बैठे । अतः चलो । देवी हिडिम्बा के आदेश का पालन करें ।

राक्षसी—हम दोनों ऐसा ही करते हैं ।

(यह कहकर दोनों निकल जाते हैं)।

प्रवेशक समाप्त होता है ।

(तदनन्तर तलवार खींचे हुये कलकल ध्वनि सुनते हुये अश्वत्थामा का प्रवेश होता है ।)

टिप्पणी—प्रवेशकोऽनुदात्तोक्त्या नीचपात्रप्रयोजितः । अङ्कद्वयान्तर्विज्ञेयः शेषं विष्कम्भके यथा ॥ (साहित्यदर्पण) । विष्कम्भक के समान ही दो अङ्कों के मध्य नीच पात्रों (विट चेटक राक्षसादि) द्वारा अनुदात्त रीति से प्रयुक्त नाटक भाग प्रवेशक कहलाता है । आगे की घटना (अप्रस्तुत) की पूर्व जानकारी दिये जाने के कारण प्रवेशक को परिचायक भी कहा जाता है । उसके पात्रों की भाषा भी संस्कृत न होकर प्राकृत शौरसेनी आदि ही होती है ।

अश्वत्थामा—

महाप्रलयमारुतक्षुभितपुष्करावर्तक-
प्रचण्डघनगर्जितप्रतिरवानुकारी मुहुः।
रवः श्रवणभैरवः स्थगितरोदसीकन्दरः
कुतोऽद्य समरोदधेरयमभूतपूर्वः पुरः॥ ३॥

(विचिन्त्य।) ध्रुवं गाण्डीविना सात्यकिना वृकोदरेण वा यौवनदर्पा-

---

अन्वयः——महाप्रलयमारुतक्षुभित-पुष्करावर्तक-प्रचण्डघनगर्जित-प्रतिरवानुकारी-स्थगितरोदसीकन्दरः श्रवणभैरवः समरोदधेः अभूतपूर्वः पुरः अयं रवः अद्य कुतः॥ ४॥

महाप्रलयेति। महाप्रलयमारुतक्षुभित-पुष्करावर्तक-प्रचण्डघनगर्जित-प्रतिरवानुकारी—महाप्रलयेन = महाप्रलयङ्करेण मारुतेन = वायुना क्षुभितौ = इतस्ततः सञ्चालितौ यौ पुष्करावर्तकौ = प्रलयकालिक-मेघविशेषौ, तयोः प्रचण्डम् = भीषणम् यद् घनगर्जितम् मेघगर्जनम्, तस्य प्रतिरवस्य = प्रतिध्वनेः अनुकारी = अनुकरः (महाप्रलय के पवन से क्षुभित पुष्करावर्तक नामक प्रलयकालीन प्रचण्ड मेघों की गर्जन के समान ध्वनि करने वाला) स्थगितरोदसी—स्थगितं = व्याप्तम् रोदस्योः = द्यावापृथिव्योः कन्दरम् = गह्वरम् येन तथा (आकाश तथा पृथ्वी की कन्दराओं में व्याप्त) श्रवणभैरवः—श्रवणयोः = कर्णयोः भैरवः = भयङ्करः (कानों को भयभीत करने वाला)। समरोदधेः—समर एव उदधिस्तस्मात् = युद्ध रूपी सागर से) अभूतपूर्वः—न भूतः पूर्वम् = प्राक् इत्यभूतपूर्वः = अश्रुतपूर्वः (अद्भुत) पुरः = समक्षम् (सामने) अयम् = एषः (यह) रवः = ध्वनिः (गर्जन) अद्य = अस्मिन् दिने (आज) कुतः = कस्मात् स्थानात् उत्थित इति। उपमालङ्कारः। पृथ्वी वृत्तम्। तद्यथा—जसौ जसयला वसुग्रहयतिश्च-पृथ्वीगुरुः॥ ४॥

विचिन्त्य = विचार्य (सोचकर) ध्रुवम् = नूनम् (अवश्य)। गाण्डीविना = गाण्डीवधनुर्धारिणाऽर्जुनेन (गाण्डीवी अर्जुन ने) वा सात्यकिना = सत्यकपुत्रेण

अश्वत्थामा—महाप्रलयङ्कार पवन से क्षुमित पुष्करावर्तक नामक प्रलयकारी मेघों के गर्जन का अनुकरण करने वाला, पृथ्वी तथा आकाश की कन्दराओं में गूँजने वाला कानों को भयङ्कर लगने वाला, युद्ध सागर से अभूतपूर्व यह कोलाहल सामने ही आज कहाँ से उठ रहा है॥ ४॥

(सोंचकर) निश्चय ही गाण्डीवी अर्जुन सात्यकि अथवा वृकोदर ने यौवनाभिमान

दतिक्रान्तमर्यादेन परिकोपितस्तातः। यतः समुल्लङ्घ्यशिष्यप्रियतामात्मप्रभावसदृशमाचेष्टते। तथाहि—

यद्दुर्योधनपक्षपातसदृशं युक्तं यदस्त्रग्रहे
रामाल्लब्धसमस्तहेतिगुरुणो वीर्यस्य यत्साम्प्रतम्।
लोके सर्वधनुष्मतामधिपतेर्यच्चानुरूपं रुषः
प्रारब्धं रिपुघस्मरेण नियतं तत्कर्म तातेन मे॥ ५॥

(सात्यकि ने) वा वृकोदरेण = भीमेन (भीम ने) यौवनदर्पात् = यौवनस्य दर्पः तस्मात् = तारुण्याभिमानात् (यौवनमद से)। अतिक्रान्तमर्यादेन = अतिक्रान्ता मर्यादा येन स तेन = उल्लंघितसीम्ना (मर्यादा का उल्लंघन करने वाले ने) तातः = जनकः (पिताजी)। परिकोपितः = क्रोधं प्रापितः (क्रुद्ध कर दिया है)। यतः = हि (क्योंकि) शिष्यप्रियताम् = शिष्यस्नेहम् (शिष्यप्रियता को)। समुल्लंघ्य = तिरस्कृत्य (तिरस्कार कर, उल्लंघन कर)। आत्मप्रभावसदृशम्—आत्मनः = स्वस्य प्रभावस्य = महिम्ना सदृशम् = समम् (अपनी महिमा के अनुरूप)। आचेष्टते = करोति (कर रहे हैं)।

अन्वयः—यत् दुर्योधनपक्षपातसदृशं, यद् अस्त्रग्रहे च युक्तं, यत् रामात् लब्धसमस्तहेतिगुरुणः वीर्यस्य साम्प्रतं, यत् लोके सर्वधनुष्मताम् अधिपतेः रुषः अनुरूपं रिपुघस्मरेण मे तातेन तत् कर्म नियतं प्रारब्धम्॥ ५॥

यदिति। यत् = यत् कर्म (जो) दुर्योधनपक्षपातसदृशम्—दुर्योधनस्य = कौरवराजस्य (विषये) पक्षपातः = पक्षावलम्बनम्, तत्सदृशम् = तथाविधम् (कौरव राजा के पक्षपात के अनुकूल)। यत् अस्त्रगृहे—अस्त्रस्य = आयुधस्य ग्रहे = ग्रहणे (अस्त्रग्रहण करने में) युक्तम् = उचितम् (ठीक है)। यत् रामात् = परशुरामात् लब्धसमस्तहेतिगुरुणः—लब्धाः समस्तहेतयः, ताभिः गुरुस्तस्य = प्राप्तनिखिलशस्त्रविद्यागौरवस्य (पूर्णशस्त्र विद्या से गौरव को प्राप्त किये हुये) वीर्यस्य = पराक्रमस्य साम्प्रतम् = युक्तम्, यत् श्लोके = जगति

से अपनी मर्यादा त्याग कर पिताजी को क्रुद्ध कर दिया है। क्योंकि (वह) शिष्यप्रियता का उल्लंघन कर अपने प्रभाव के अनुकूल कार्य कर रहे हैं।

क्योंकि—जो दुर्योधन के पक्षपात के अनुकूल है; और जो अस्त्र ग्रहण करने पर उचित है, जो परशुराम से प्राप्त की गई समस्त शस्त्रविद्या के गौरव के योग्य है जो संसार में समस्त धनुर्धारियों के स्वामी के क्रोध के अनुरूप है वही कर्म शत्रुओं का संहार करने वाले मेरे पिताजी ने निश्चय ही आरम्भ कर दिया है॥ ५॥

(पृष्ठतो विलोक्य ।) तत्कोऽत्र । रथमुपनयतु । अथवाऽलमिदानीं मम रथप्रतीक्षया अनया । सशस्त्र एवास्मि, सजलजलधरप्रभाभासुरेण सुप्रग्रह-विमल-कलधौतत्सरुणाऽमुना खड्गेन । यावत्समरभुवमवतरामि । (परिक्रम्य वामाक्षिस्पन्दनं सूचयित्वा ।) आ ! कथं ममापि नामाऽश्वत्थाम्नः समरमहोत्सवप्रमोदनिर्भरस्य तातविक्रमदर्शनलालसस्यानिमित्तानि समर-

---

(संसार में) सर्वधनुष्मताम् = सर्वधनुर्धारिणाम् (समस्त धनुर्धारियों के) अधिपतेः = स्वामिनः (अधिपति के) रुषः = क्रोधस्य (क्रोध के) अनुरूपम् = अनुकूलम् (अनुसार है) रिपुघस्मरेण = रिपुनाशकेन ('भक्षको घस्मरोऽधरः' इत्यमरः) (शत्रुनाशक) मे = मम अश्वत्थाम्नः (मेरे) तातेन = जनकेन (पिताजी ने) तत् = तादृग्भयङ्करम् (वैसा) कर्म = शत्रुनाशनम् (कर्म, शत्रु-विनाश) नियतम् = निश्चितम् (निश्चय ही)। प्रारब्धम् = आरब्धम् (आरम्भ कर दिया है)। उत्प्रेक्षालङ्कारः । शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम् ॥ ५ ॥

पृष्ठतः = पश्चात् (पीछे की ओर) रथम्=स्यन्दनम् (रथ को)। उपनयतु= आहरतु (ले आये) मम = मे (मेरा) इदानीम् = सम्प्रति (अब) अनया = एतया रथप्रतीक्षया = स्यन्दनार्थं प्रतीक्षाकरणेन (रथ की प्रतीक्षा करना) अलम्= निषेधेऽव्ययम् । सशस्त्रः—शस्त्रैः=आयुधैः सहित एव (शस्त्र सहित ही)। सजल-जलधरप्रभाभासुरेण—सजलस्य = जलयुतस्य जलधरस्य=घनस्य प्रभा=कान्तिः तया भासुरः = दीप्तस्तेन (सजलजलदकान्ति से उदीप्त)। सुप्रग्रहविमलकलधौ-तत्सरुणा—सुखेन प्रग्रहणं कर्त्तुं योग्यः विमलम् = निर्मलम् यत्कलधौतम् = सुवर्णम् तस्य त्सरुः = मुष्टिस्थानम् (मूँठ) यस्य तादृशेन (आसानी से पकड़ने योग्य निर्मल स्वर्ण मूँठ वाले) अमुना = अनेन (इस) खड्गेन = असिना (तलवार से)। समरभुवम् = युद्धभूमिम् (युद्ध भूमि पर) अवतरामि = अवतरणं करोमि (उतर रहा हूँ) वामाक्षिस्पन्दनम्—वामस्याक्ष्णः स्पन्दनम् = वामनेत्रस्पन्दनाप-शकुनम् (बाँई आँख फड़कना) सूचयित्वा=विज्ञाय (जानकर)। समरमहोत्सव-प्रमोदनिर्भरस्य—समर एव महोत्सवः तस्य प्रमोदे = आनन्दे निर्भरः = नियतस्तस्य

(पीछे की ओर देखकर) अरे यहाँ कौन है ? रथ ले आये। अथवा अब मुझे रथ की प्रतीक्षा करना बेकार है। सशस्त्र सजल जलद की कान्ति के समान प्रदीप्त सुख से पकड़े जा सकने वाले चमचमाते हुए सुनहली मूँठ वाले इस खड्ग से युक्त तो हूँ ही। युद्ध भूमि में मैं उतर रहा हूँ (घूम कर बाँई आँख का फड़कना सूचित कर) अहा—क्या युद्ध रूपी महोत्सव के आनन्द में निर्भर रहनेवाले पिता जी के पराक्रम को देखने के इच्छुक

गमनविघ्नमुत्पादयन्ति । भवतु । गच्छामि । (सावष्टम्भं परिक्रम्याग्रतो विलोक्य ।) कथमवधीरितक्षात्रधर्माणामुज्झितसत्पुरुषोचितलज्जावगुण्ठनानां विस्मृतस्वामिसत्कारलघुचेतसां द्विरदतुरङ्गमचरणचारिणामगणितकुलयशः-सदृशपराक्रमव्रतानां रणभूमेः समन्तादपक्रामतामयं महान्नादो बलानाम्

(युद्ध रूपी महोत्सव के आनन्द पर निर्भर रहने वाले) । तातविक्रमदर्शनलालसस्य—तातस्य = पितुर्द्रोणस्य विक्रमः = पराक्रमः तस्य दर्शने = अवलोकने लालसा = अभिलाषः यस्य सः तस्य (पिताजी से पराक्रम देखने को इच्छुक मुझे) । अनिमित्तानि = अमङ्गलानि (अशुभसूचक) समरगमनविघ्नम्—समरे = युद्धे गमनाय = प्रयाणाय विघ्नम् = बाधाम् (युद्ध में जाने को विघ्न) उत्पादयन्ति = जनयन्ति (उत्पन्न कर रहे हैं) सावष्टम्भम् = सगर्वम् (अभिमान के साथ) अवधीरितसकलक्षात्रधर्माणाम्—अवधीरितः = तिरस्कृतः सकलः = निखिलः क्षात्रधर्मः = क्षत्रियोचितधर्मः यैस्तादृशानाम् (समस्त क्षत्रिय धर्म का तिरस्कार किये हुये) उज्झितसत्पुरुषोचितलज्जावगुण्ठनानाम्—उज्झितम् = परित्यक्तम् सत्पुरुषोचितम् = साधुजनानुरूपम् लज्जा = व्रीडा एव अवगुण्ठनम् = आवरणं यैस्तेषाम् (सज्जनों के अनुकूल लज्जारूपी घूँघट को छोड़—हटाये हुये) विस्मृतस्वामिसत्कारलघुचेतसाम्—विस्मृतः = विस्मृतिपथं नीतः स्वामिनः = अधिपतेः सत्कारः = सम्मानम् यैस्तादृशां लघुचेतसाम् = नीचपुरुषाणाम् (स्वामी से प्राप्त सम्मान को भुलाने वाले नीच पुरुषों के) द्विरदतुरङ्गमचरणचारिणाम्—द्विरदचारिणाम् = हस्तिचारिणाम् तुरङ्गमचारिणाम् = अश्वचारिणाञ्चरणचारिणाम् = पदातिचारिणाञ्च (गजारोही अश्वारोही तथा पैदलों का) अगणितकुलयशःसदृशपराक्रमव्रतानाम्—अगणितम् = अविचारितम् कुलयशःसदृशम् = वंशकीर्त्यनुकूलम् पराक्रमव्रतम् = विक्रमव्रतम् यैस्तेषाम् (कुलकीर्ति के अनुकूल पराक्रम व्रत को न विचारने वाले) । रणभूमेः = युद्धक्षेत्रात् (युद्ध भूमि से) समन्तात् = परितः (चारों ओर) अपक्रामताम् = पलायमानानाम् (पलायन करते हुये लोगों की) बलानाम् = सैन्यानाम् (सेनाओं का) अयम् = एषः (यह) महान्नादः =

मुझ अश्वत्थामा को भी अपशकुन युद्ध भूमि में जाने पर विघ्न उत्पन्न कर सकते हैं ? अच्छा, जाता हूँ । (अभिमान के साथ घूमकर, सामने देखकर) यह क्या ? क्षत्रिय धर्म का परित्याग कर, साधुजनोचित लज्जारूपी आवरण (अवगुंठन) को हटाकर, स्वामिसत्कार को भुलाये हुई नीच, गजारोही, अश्वारोही, पैदल, कुल कीर्ति के सदृश पराक्रम व्रत को न मानने वाले, रणभूमि से चारों ओर भागने वाले सैन्य का यह महान् कोलाहल है ।

(निरूप्य) हा हा धिक्कष्टम् । कथमेते महारथाः कर्णादयोऽपि समरात्परा-ङ्मुखा भवन्ति । (साशङ्कम्) कथं नु ताताधिष्ठितानामपि बलानामियम-वस्था भवेत् । भवतु सस्तम्भयामि । भो भोः कौरवसेनासमुद्रवेलापरि-पालनमहामहीधरा नरपतयः, कृतं कृतममुना समरपरित्यागसाहसेन ।

यदि समरमपास्य नास्ति मृत्यो-
र्भयमिति युक्तमितोऽन्यतः प्रयातुम् ।

महत्कलरवः (महान् कोलाहल) (अस्ति) निरूप्य = सम्यग् दृष्ट्वा (भली-भाँति देखकर) धिक् इति निन्दायामव्ययम् (धिक्कार है)। एते = इमे (ये) महारथाः = वीराः (वीर) कर्णादयः, अपि = कर्णप्रमुखाः अपि (कर्णादि भी) समरात् = युद्धात् (युद्ध से) पराङ्मुखाः—पराङ् = पश्चात् कृतानि मुखानि यैः ते = विमुखाः, भवन्ति, पलायन्ते (भागे जा रहे हैं)। साशङ्कम् = ससन्देहम् (शङ्का के साथ)। ताताधिष्ठितानाम्—तातेन = पित्रा, द्रोणाचार्येण अधिष्ठिताः = परिरक्षिताः, तेषाम् (पिताजी के द्वारा रक्षित) बलानाम् = सैन्यानाम् अपि (सेनाओं की भी) इयम् = एषा (यह) अवस्था = दशा भवेत् = स्यात् (यह दशा कैसे हो सकती है)। संस्तम्भयामि = पलायन-कर्मणा निवारयामि (रोकता हूँ) कौरसेनासमुद्रवेलापरिपालनमहामहीधराः—कौरवाणाम् सेनासमुद्रः = कौरपक्षीय सैन्यसागरः, तस्य या वेला = सीमा, तस्याः परिपालने = रक्षणे महान्तः महीधराः इव = विशालपर्वतसदृशाः नर-पतयः = राजानः तत्सम्बुद्धौ (हे कौरव सैन्यसागर की सीमा की रक्षा करने वाले विशाल पर्वतों के समान राजाओ !) कृतम् कृतम् = अलमलम् (बस हो चुका) अमुना समरपरित्यागसाहसेन—समरस्य = रणस्य परित्यागः = त्यागः एव साहसम् तत् तेन (इस युद्ध छोड़ने का साहस करने से)।

अन्वयः—यदि समरम् अपास्य मृत्योः भयं न अस्ति (तर्हि) इतः अन्यतः

(अच्छी तरह देखकर) हाय हाय ! कष्ट है, धिक्कार है। यह कर्ण आदि महारथी भी युद्ध से भागे जा रहे हैं ? (सन्देह के साथ) पिताजी से संरक्षित सेना की भी यह दशा कैसे हो सकती है ? अस्तु रोकता हूँ। अरे कौरवसेना रूपी सागर की सीमा रक्षा करने वाले महान् महीधरों जैसे नरपतियो ! इस प्रकार युद्ध भूमि का परित्याग करने का साहस करना ठीक नहीं है।

यदि युद्धक्षेत्र से भाग कर मृत्यु का भय नहीं होगा तब तो यहाँ से अन्यत्र भागना

अथ मरणमवश्यमेव जन्तोः
किमिति मुधा मलिनं यशः कुरुध्वे ॥ ६ ॥

अपि च

अस्त्रज्वालाऽवलीढप्रतिबलजलधेरन्तरौर्वायमाणे,
सेनानाथे स्थितेऽस्मिन्मम पितरि गुरौ सर्वधन्वोश्वराणाम् ।
कर्णाऽलं सम्भ्रमेण व्रज कृप समरं मुञ्च हार्दिक्यशङ्कां
ताते चापद्वितीये वहति रणधुरं को भयस्याऽवकाशः ॥ ७ ॥

प्रयातुं युक्तम् । अथ जन्तोः मरणम् अवश्यम् एव (तदा) यशः युधा किम् इति मलिनं कुरुध्वे ।

यदीति । यदि = चेत् । समरम् = युद्धम् । अपास्य = त्यक्त्वा (छोड़कर) मृत्योः = मरणस्य (मरने का) भयम् = भीतिः (भय) न अस्ति = नैव भवति (तर्हि) इतः = अस्मात् रणाङ्गणात् (इस युद्ध से) अन्यतः = अन्यत्र । प्रयातुम् = गन्तुम् (जाने को) युक्तम् = उचितम् (ठीक है) । अथ = पक्षान्तरे जन्तोः = जीवस्य । मरणम् = निधनम् (मृत्युः) अवश्यम् = अनिवार्यम् एव । (तदा) यशः = कीर्तिः । मुधा = मृषा (झूठमूठ) किमिति = किमर्थम् (किस लिए) मलिनम् = कलङ्कितम् (मलिन) कुरुध्वे = विदधासि (कर रहे हो) । पुष्पिताग्रा वृत्तम् । तद्यथा—अयुजि नयुगरेफतो यकारो युजि च नजौ जरगाश्च पुष्पिताग्रा ॥ ६ ॥

अन्वयः—अस्त्रज्वालावलीढप्रतिबलजलधेः अन्तः और्वायमाणे, अस्मिन् सर्वधन्वीश्वराणां गुरौ मम पितरि सेनानाथे स्थिते, कर्ण ! अलं संभ्रमेण । कृप ! समरं व्रज । हार्दिक्य ! शङ्कां मुञ्च । चापद्वितीये ताते रणधुरं वहति कः भयस्य अवकाशः ॥ ७ ॥

अस्त्रज्वालेति । अस्त्रज्वालावलीढप्रतिबलजलधेः—अस्त्राणि = आयुधानि

ठीक है । किन्तु जब जन्तु का निधन होना अनिवार्य है तो फिर व्यर्थ में अपनी कीर्ति को मलिन क्यों कर रहे हो ? ॥ ६ ॥

अस्त्र रूपी ज्वालाओं से व्याप्त, शत्रुसैन्यरूपी सागर के मध्य वड़वानल की भाँति विचरण

टिप्पणी—जिस जीव का संसार में जन्म होता है उसकी मृत्यु निश्चित ही है । यही श्रीमद्भगवद्गीता में भी भगवान् कृष्ण ने कहा है—जातस्य हि ध्रुवं मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च ॥ इसी को श्रीमद्भागवत में भी कहा गया है—मृत्युर्जन्मवतां धीर देहेन सह जायते । अद्य वाब्दशतान्ते वा मृत्युर्वै प्राणिनां ध्रुवम् ॥

(नेपथ्ये ।) कुतोऽद्यापि ते तातः ।

अश्वत्थामा—(श्रुत्वा) किं ब्रूथ—'कुतोऽद्यापि ते तातः' इति । (सरोषम्) आः क्षुद्राः समरभीरवः, कथमेवं प्रलपतां वः सहस्रधा न दीर्ण-मनया जिह्वया ।

ज्वालाः = अग्नयः, ताभिः अवलीढम् = व्याप्तम् प्रतिबलम् = शत्रुसैन्यम् जलधिः = सिन्धुरिव तस्यान्तः = मध्ये औौर्वायमाणे—और्वः = वडवानलः ('और्वस्तु वाडवो वड़वानलः' इत्यमरः ।) इव आचरन् और्वायमाणः तस्मिन् = शत्रुबलोत्साहनाशके (शत्रुसैन्य का विध्वंस करने वाले पर) सर्वधन्वीश्वराणाम्—सर्वेषाम् धन्वीश्वराणाम् = धनुर्धारिणाम् (सब धनुर्धारियों का) गुरौ = श्रेष्ठे । सेनानाथे = सेनापतौ मम = मे अश्वत्थाम्नः । पितरि = जनके स्थिते = अवस्थिते (मेरे पिताजीके सेनापति होने पर) कर्ण = हे सूर्यपुत्र ! सम्भ्रमेण अलम् = सन्देहं मा कुरु (सन्देह करना व्यर्थ है) कृप = हे कृपाचार्य ! समरम् = युद्धभूमिम् व्रज = गच्छ (युद्ध के मैदान को जाओ) । हार्दिक्य = हृदिकापुत्र कृतवर्मन् ! शङ्काम् = सन्देहम् (सन्देह) मुञ्च = त्यज (छोड़ दो) । चापद्वितीये—चापम् = धनुः द्वितीयम् = सहायं यस्य सः तस्मिन् । ताते = पितरि (धनुर्धारी पिताजी में) रणधुरम् = युद्धभारम् । वहति = धारयति (ढोते हुए) कः भयस्य = भीतेः अवकाशः = स्थानम् (भय का अवसर ही कौन है) । अत्रोपमालङ्कारः । स्रग्धरा-वृत्तम् ॥ ७ ॥

अद्यापि = सम्प्रत्यपि (आज भी) । तातः = जनक (पिता) ।

अश्वत्थामा—आः क्षुद्राः = रे पामराः । समरभीरवः = युद्धकातराः (हे समरभीरु पुरुषो) एवम् = अनेक प्रकारेण (इस प्रकार) प्रलपताम् = प्रलाप-कारिणाम् (अपलाप करने वालों की) वः = युष्माकम् (तुम लोगों की) । सह-

---

करने वाले, सभी धनुर्धारियों के गुरु सेनापति होकर मेरे पिता के इस युद्ध में अवस्थित होते हुए, हे कर्ण ! तुम्हारा सन्देह करना व्यर्थ है । हे कृपाचार्य ! युद्ध भूमि को जाओ । हे हृदिकापुत्र कृतवर्मन् ! शङ्का छोड़ दो । धनुर्मात्र सहायक मेरे पिताजी के रणभार को धारण कर लेने पर (अब) भय करने का अवसर ही कैसा ? ॥ ७ ॥

(नेपथ्य में) आज भी तुम्हारे पिता जी कहाँ हैं ?

अश्वत्थामा—(सुनकर) क्या कह रहे हो—'अब भी तुम्हारे पिता जी कहाँ हैं ?' (रोष के साथ) अरे नीचो ! युद्धकातरो ! इस प्रकार अपलाप करने वाले तुम लोगों की इस जीभ के हजारों टुकड़े क्यों नहीं हो जाते हैं !

दग्धुं विश्वं दहनकिरणैर्नोदिता द्वादशार्काः,
वाता वाता दिशि दिशि न वा सप्तधा सप्त भिन्नाः ।
छन्नं मेघैर्न गगनतलं पुष्करावर्तकाद्यैः,
पापं पापाः ! कथयत कथं ? शौर्यराशेः पितुर्मे ॥ ८ ॥

(प्रविश्य सम्भ्रान्तः सप्रहारः ।)

स्रधा = दशशतभागेषु (हजारों भाग) । अनया = एतया जिह्वया = रसनया (इस जीभ के) ।

अन्वयः—द्वादशार्काः दहनकिरणैः विश्वम् दग्धुं न उदिताः । सप्तधाभिन्नाः वाताः दिशि दिशि न वाता ? पुष्करावर्तकाद्यैः मेघैः गगनतलं न छन्नम् ? पापाः ! शौर्यराशेः मे पितुः पापं कथं कथयत ॥ ८ ॥

दग्धुमिति । द्वादशार्काः—द्वादश संख्याकाः सूर्याः (बारहों सूर्य) । दहन-किरणैः = दाहकरश्मिभिः (अपनी दाहक किरणों से) । विश्वम्=जगत् । दग्धुम्= ज्वालयितुम् (भस्म कर देने को) न उदिताः=न निःसृताः (नहीं निकल आये) । सप्तधा भिन्नाः=सप्तधा विभक्ताः (सात भागों में बँटी हुई) सप्तवाताः=सप्तपवनाः (सातों पवन) दिशि दिशि = सर्वासु दिक्षु (चारों ओर) न वाताः = न प्रच-लिताः = (नहीं चलने लगे) पुष्करावर्तकाद्यैः = पुष्करावर्तकादिनामधेयैः प्रलय-ङ्करैः (पुष्कर तथा आवर्तक आदि प्रलयकारी) मेघैः = घनैः (बादलों से) गगनतलम् = नभोमण्डलम् (आकाशतल) न छन्नम् = नाच्छादितं जातम् (आच्छन्न नहीं हो गया) । पापाः = अयि पापशीलाः (हे पापियों) । शौर्य-राशेः—शौर्यस्य = पराक्रमस्य राशिः = आकरः, तस्य (शौर्यराशि) मे = मम, अश्वत्थाम्नः (मेरे) पितुः = जनकस्य (पिता जी के) पापम् = अघम्, मरणम् (मृत्यु रूपी पाप को) कथम् = किमर्थम् (कैसे) कथयत = वदत (कह रहे हो) । अत्र विभावनाऽलङ्कारः । मन्दाक्रान्ता वृत्तम् ॥ ८ ॥

सम्भ्रान्तः = सभीतः (डरा हुआ) सप्रहारः=प्रहारचिह्नयुक्तः (चुटहिल) ।

द्वादश सूर्य अपनी भस्म करने वाली किरणों से विश्व को भस्म करने के लिए उदित नहीं हो गये ? सात भागों में बँटी हुई सात वायु चारों ओर प्रवाहित नहीं होने लगी ? आकाश तल पुष्करावर्तक आदि प्रलयङ्कर मेघों से आच्छादित नहीं हो गया ? अरे पापियो, शौर्यराशि मेरे पिताजी के सम्बन्ध में पाप (मृत्यु की बात) कैसे कह रहे हो ॥ ८ ॥

(प्रवेश कर, भयभीत होकर चोट खाया हुआ)

सूत—परित्रायतां, परित्रायतां कुमारः। (इति पादयोः पतति।)

अश्वत्थामा—(विलोक्य।) अये, कथं तातस्य सारथिरश्वसेनः ! आर्य ! आर्य ! ननु त्रैलोक्यत्राणक्षमस्य सारथिरसि। किं मत्तः शिशुजनात् परित्राणमिच्छसि ?

सूतः—(उत्थाय. सकरुणम्।) कुतोऽद्यापि ते तातः !

अश्वत्थामा—(सावेगम्) किं तातो नामाऽस्तमुपगतः ?

सूतः—अथ किम्।

अश्वत्थामा—हा तात ! हा तात ! (इति मोहमुपगम्य पतितः।)

सूतः—परित्रायताम् = परिरक्षतु (बचाइये)। पादयोः = चरणयोः (दोनों पाँवों पर)।

अश्वत्थामा—तातस्यः = पितुः द्रोणस्य (पिताजी का) सारथिः = रथवाहकः (रथ हाँकने वाला) अश्वसेनः = अश्वसेनाभिधः। आर्य ! = श्रेष्ठ ! (सम्भ्रमे द्विरुक्तिः)। त्रैलोक्यत्राणक्षमस्य—त्रैलोक्यस्य = त्रिभुवनस्य त्राणे = रक्षणे क्षमा= सामर्थ्यं यस्य सः, तस्य (तीनों लोकों की रक्षा करने में समर्थं)। तातस्य=पितुः (पिताजी के) मत्तः = मत्पार्श्वात् (मुझसे)। शिशुजनात् = बालात् (बालक से)। परित्राणम् = रक्षणम् (रक्षा) इच्छसि = अभिलषसि (चाहते हो)।

सूतः—सकरुणम् = सदुःखम्।

अश्वत्थामा—सावेगम् = सोद्वेगम् (जोश के साथ)। अस्तमुपगतः = समाप्तिमगात् (दिवंगत हो गये)।

सूतः—अथ किम् = एतमेव (और क्या)।

अश्वत्थामा—हा तात ! = हा पितः (हे पिता जी)। उपगम्य = पार्श्वं गत्वा (निकट जाकर)।

सूत—बचाइये कुमार ! बचाइये। (यह कहकर पैरों पर गिर पड़ता है)।

अश्वत्थामा—(देखकर) अरे ! क्या पिताजी के सारथी अश्वसेन हैं ? आर्य ! आर्य !! तीनों लोकों की रक्षा करने में समर्थ पिताजी के सारथी हो। मुझ बालक से क्या रक्षा चाहते हो ?

सूत—(उठकर, दुःखी होकर) हे कुमार ! कहाँ अब भी तुम्हारे पिताजी।

अश्वत्थामा—(उद्वेग के साथ) क्या पिताजी नहीं रहे ?

सूत—और क्या ?

अश्वत्थामा—हा तात ! हा तात !! (यह कहकर मूर्च्छित होकर गिर पड़ता है)।

सूतः—कुमार, समाश्वसिहि, समाश्वसिहि।

अश्वत्थामा—(लब्धसंज्ञः उत्थाय, सास्रम्।) हा तात, सुतवत्सल! हा लोकत्रयैकधनुर्धर! हा जामदग्न्याऽस्त्रसर्वस्वप्रतिग्रहप्रणयिन्! क्वासि? प्रयच्छ मे प्रतिवचनम्।

सूतः—आयुष्मन्! अलमत्यन्तशोकावेगेन। वीरपुरुषोचितां विपत्तिमुपगते पितरि त्वमपि तदनुरूपेणैव वीर्येण शोकसागरमुत्तीर्य सुखी भव।

सूतः—समाश्वसिहि = धैर्यं धारय (धीरज रखो)।

अश्वत्थामा—लब्धसंज्ञः—लब्धा = प्राप्ता संज्ञा = चेतना येन सः (होश में आकर) सास्रम्=साश्रुः (आँख में आँसू भरकर) हा सुतवत्सल !=हा सुतप्रिय! (हे पुत्र को प्रेम करने वाले) लोकत्रयैकधनुर्धर—लोकानां त्रयाणां समाहारः लोकत्रयम्, तस्मिन् एकः = अद्वितीयः धनुर्धरः = धनुर्धारी, तत्सम्बुद्धौ (हे त्रिभुवन में अद्वितीय धनुर्धारी) हा जामदग्न्यास्त्रसर्वस्वप्रतिग्रहप्रणयिन्!—जामदग्न्यस्य= जमदग्निपुत्रस्य परशुरामस्य अस्त्राणि एव सर्वस्वम् = आयुधसर्वस्वम्, तस्य प्रतिग्रहे = प्रतिग्रहणे प्रणयः=प्रीतिः अस्यास्तीति तत्सम्बुद्धौ (हा परशुराम की समस्त-अस्त्रविद्या को ग्रहण करने के प्रेमी) क्व=कुत्र (कहाँ)। प्रयच्छ = देहि (दो) मे = मम (मेरा) प्रतिवचनम् = प्रत्युत्तरम् (प्रत्युत्तर)।

सूतः—आयुष्मन् = हे दीर्घजीविन् (हे चिरजीविन्) अतिशोकावेन = महद्दुःखकृतेन (अधिक शोकावेग करने से)। वीरपुरुषोचितानाम्=वीरजनयोग्यानाम् (वीरजनोचितों के) विपत्तिम् = विपदाम् उपगते = प्राप्ते (विपद्ग्रस्त) पितरि = जनके (पिता में)। तदनुरूपेण एव—तस्य = द्रोणस्यानुरूपेण = अनुकूलेनैव (उनके अनुकूल ही)। वीर्येण = पराक्रमेण (पराक्रम से)। शोकसागरम् = दुःखसिन्धुम् (दुःख सागर को)। उत्तीर्य = पारं गत्वा (उतर कर)।

सूत—हे कुमार! धीरज रखो! धीरज रखो!!

अश्वत्थामा—(होश में आकर, उठकर, आँखों में आँसू भरकर) हा तात! हा सुतवत्सल! हा तीनों लोकों में एक मात्र धनुर्धारी! हा परशुराम की समस्त अस्त्र विद्या को ग्रहण करने के प्रेमी! कहाँ हो! मेरे वचनों का उत्तर दो।

सूत—हे आयुष्मन्! अत्यन्त शोकोद्वेग करना व्यर्थ है। वीर पुरुषों के योग्य विपत्ति में पिताजी के पड़ने पर (दिवंगत होने पर) तुम भी उनके अनुसार ही पराक्रम करके शोक सागर पार कर सुखी बन जाओ।

अश्वत्थामा—(अश्रूणि प्रमृज्य ।) आर्य, कथय कथय, कथं तादृग्भुज-वीर्यसागरस्तातोऽपि नामास्तमुपगतः ?

किं शिष्यात् गुरुदक्षिणां गुरुगदां भीमप्रियः प्राप्तवान् ।

सूतः—शान्तं पापम्, शान्तं पापम् ।

अश्वत्थामा—

अन्तेवासिदयालुरुज्झितनयेनाऽऽसादितो जिष्णुना ।

सूतः—कथमेवं भविष्यति ।

अश्वत्थामा—प्रमृज्य = दूरीकृत्य (पोंछकर) । तादृग्भुजवीर्यसागरः—तादृशः = तथाविधः भुजयोः = बाह्वोः वीर्यस्य = पराक्रमस्य सागरः = सिन्धुः (उस प्रकार बाहुबल के सागर) ।

किमिति । भीमप्रियः—भीमः = भीमसेनः प्रियः = रुचिरो यस्य सः (भीम-प्रेमी) शिष्यात् = भीमशिष्यात् (भीम से) गुरुगदाम्—गुर्वी = महती गदा ताम् एव गुरुदक्षिणाम् (गरुहं गदारूपी गुरुदक्षिणा) । प्राप्तवान् = लब्धवान् (प्राप्त किया) ।

सूतः—शान्तम् पापम् = अमङ्गलमघं शमनं यातु (पाप शान्त होवे) ।

अश्वत्थामा—अन्तेवासिदयालु—अन्तेवासिषु = शिष्यजनेषु दयालुः = दयिता मे पिता (शिष्यों पर दया रखने वाले पिताजी) (किम्) उज्झितनयेन = त्यक्त नीतिना (गुरुनीति का परित्याग करने वाले) जिष्णुना = अर्जुनेन (अर्जुन द्वारा) आसादितः = मृत्युं प्राप्तः (दिवंगत हुए) ।

सूतः—एवम् = इत्थम् (ऐसा) कथम् = केन प्रकारेण भविष्यति = भवितुमर्हति (कैसे हो सकता है) ।

अश्वत्थामा—(आँसू पोंछकर) आर्य अश्वसेन ! कहिये, कहिये । कैसे ऐसे बाहु-पराक्रम के समुद्र पिताजी भी अस्त हो गये ?

क्या भीमप्रिय पिताजी ने अपने प्रिय शिष्य भीम की भारी गदा से गुरुदक्षिणा लेकर स्वर्ग प्राप्त किया ?

सूत—पाप शान्त हो, पाप शान्त हो ।

अश्वत्थामा—क्या अपने शिष्यों पर दया करने वाले पिताजी गुरुमर्यादा का त्याग करके अर्जुन के द्वारा मारे गये ?

सूत—ऐसा कैसे हो सकता है ?

अश्वत्थामा—

गोविन्देन सुदर्शनस्य निशितं धारापथं प्रापितः।

सूतः—एतदपि नास्ति।

अश्वत्थामा—

शङ्के नापदमन्यतः खलु गुरोरेभ्यश्चतुर्थादहम् ॥ ९ ॥

सूतः—कुमार,

एतेऽपि तस्य कुपितस्य महास्त्रपाणेः,
किं धूर्जटेरिव तुलामुपयान्ति सङ्ख्ये।
शोकोपरुद्धहृदयेन यदा तु शस्त्रं
त्यक्तं तदाऽस्य विहितं रिपुणाऽतिघोरम् ॥ १० ॥

अश्वत्थामा—गोविन्देन = माधवेन (कृष्ण ने)। सुदर्शनस्य = स्वचक्रस्य (सुदर्शनचक्र की) निशितम् = तीक्ष्णम् (पैनी)। धारापथम्—धारायाः = धारा-भागस्य पथम् = मार्गम् (धार के रास्ते को) प्रापितः = गमितः (पहुँचा दिया)।

अश्वत्थामा—अहम् = अश्वत्थामा खलु = नूनम् (निश्चय ही)। एभ्यः अन्यतः—एतद्भिः भीमार्जुनवासुदेवैर्भिन्नात् चतुर्थात् पुरुषात् (इनके अतिरिक्त चौथे व्यक्ति द्वारा) गुरोः = पितुः (पिताजी की) आपदम् = मृत्यु-विपत्तिम् (मृत्युरूपी-सङ्कट के सम्बन्ध में) शङ्के = सन्देहं करोमि (मुझे सन्देह है) ॥ ९ ॥

अन्वयः—एते अपि कुपितस्य धूर्जटेः इव महास्त्रपाणेः तस्य संख्ये तुलाम् उपयन्ति किम् ? यदा तु शोकोपरुद्धहृदयेन शस्त्रं त्यक्तं तदा रिपुणा अस्य अतिघोरं विहितम् ॥ १० ॥

एतेऽपीति। एते अपि = इमेऽपि (यह भी) कुपितस्य = क्रुद्धस्य (क्रोधी) धूर्जटेः इव = शिवस्येव (शिव सदृश) महास्त्रपाणेः—महास्त्रं पाणौ यस्य सः,

---

अश्वत्थामा—क्या गोविन्द ने अपने सुदर्शन की पैनी धार के मार्ग पर (पिताजी को) पहुँचा दिया ?

सूत—यह भी नहीं हुआ ?

अश्वत्थामा—इन तीनों के अतिरिक्त चौथे व्यक्ति से तो पिताजी के मृत्यु संकट उत्पन्न होने में मुझे सन्देह है ॥ ९ ॥

सूत—कुमार ! यह लोग (भीम अर्जुनादि) भी क्या क्रुद्ध शिव के समान धनुर्धारी आचार्य जी के सामने युद्ध में समता पा सकते थे ? जिस समय शोक से व्याकुल हृदय गुरुजी ने शस्त्र त्याग किया, तभी शत्रु ने उनका संहार कर दिया ॥ १० ॥

अश्वत्थामा—किं पुनः कारणं शोकस्याऽस्त्रपरित्यागस्य वा।

सूतः—ननु कुमार एव कारणम्।

अश्वत्थामा—कथमहमेव नाम।

सूतः—(अश्रूणि विमुच्य।) श्रूयताम्।

'अश्वात्थामा हत' इति पृथासूनुना स्पष्टमुक्त्वा
स्वैरं शेषे 'गज' इति किल व्याहृतं सत्यवाचा।
तच्छ्रुत्वाऽसौ दयिततनयः प्रत्ययात्तस्य राज्ञः
शस्त्राण्याजौ नयनसलिलं चापि तुल्यं मुमोच॥ ११॥

तस्य = महास्त्रधारिणः (महास्त्रधारी) तस्य = ते पितुर्द्रोणाचार्यस्य (आचार्य जी के) संख्ये = युद्धे (युद्ध में) तुलाम् = समताम् (तुलना को) उपयान्ति= उपगच्छन्ति किम्? इति प्रश्ने (क्या पहुँच पाते हैं?) यदा=यस्मिन् समये (जिस समय) तु शोकोपरुद्धहृदयेन—शोकेन = दुःखेन उपरुद्धम् = व्याप्तम् हृदयम् = चेतः यस्य सः तेन (शोक से व्याप्त हृदय वाले) शस्त्रम् = आयुधम् (शस्त्र) त्यक्तम् = परित्यक्तम् (छोड़ा) तदा = तत्काल एव (तभी) रिपुणा= शत्रुणा (शत्रु ने) अस्य=एतस्य गुरोः (तात का) अतिघोरम् = अतिभयङ्करम्-मारणम् (अतिघोर मृत्युकार्य)। विहितम् = कृतम् (कर डाला)। वसन्त-तिलकावृत्तम्। तद्यथा—उक्तावसन्ततिलका तभजाजगौगः॥ १०॥

सूतः—ननु = नूनम् (वास्तव में) कुमारः = अश्वत्थामा एव (कुमार ही) कारणम् = हेतुः।

सूतः—अश्रूणि = नयनजलानि (आँसू) विमुच्य = विसृज्य (गिरा कर)।

अन्वयः—'अश्वत्थामा हतः' इति सत्यवाचा पृथासुनुना स्पष्टम् उक्त्वा शेषे स्वैरं 'गज' इति व्याहृतं किल, दयिततनयः असौ तत् श्रुत्वा तस्य राज्ञः प्रत्ययात् आजौ शस्त्राणि नयनसलिलं च अपि तुल्यं मुमोच॥ ११॥

अश्वत्थामेति। अश्वत्थामा = गुरुपुत्रः (अश्वत्थामा) हतः = मारितः (मार

अश्वत्थामा—पुनः शोक अथवा अस्त्र परित्याग का कारण क्या था?

सूत—निःसन्देह, कुमार ही कारण थे।

अश्वत्थामा—क्या मैं ही (उनके शोक या अस्त्रत्याग का) कारण बना?

सूत—(आँसू बहाकर) सुनिये—

'अश्वत्थामा मारा गया' इस प्रकार सत्यवादी पृथापुत्र युधिष्ठिर द्वारा स्पष्ट (जोर से) कह कर शेष 'हाथी' (वाक्य) धीरे से कह दिया गया। निश्चय ही पुत्र प्रेमी वह

अश्वत्थामा—हा तात ! हा सुतवत्सल ! हा वृथा मदर्थपरित्यक्तजीवित ! हा शौर्यराशे ! हा शिष्यप्रिय ! हा युधिष्ठिरपक्षपातिन् । (इति रोदिति)

सूतः—कुमार, अलमत्यन्तपरिदेवनकार्पण्येन ।

डाला गया) इति = एवम् (इस प्रकार) सत्यवाचा—सत्यम् = अवितथम् वाक् = वाणी यस्य सः, तेन = सत्यवादिना (सत्यवादी) पृथासूनुना = पृथा-पुत्रेण युधिष्ठिरेण (पृथापुत्र धर्मराज द्वारा) स्पष्टम् = उच्चैः (साफ-साफ, जोर से) उक्त्वा = कथयित्वा (कह कर) शेषे = अवशिष्टे वाक्ये (शेष वाक्य में) स्वैरम्=मन्दम् (धीरे से) गज इति = हस्ती इति ('हाथी'—इस प्रकार) व्याहृतम् = कथितम् (कह दिया) । किल = नूनम् (निश्चय ही) दयिततनयः—दयिता=दयालुस्तनये = पुत्रे यः सः (पुत्र को अधिक प्रेम करने वाले) असौ = सः तातः (वह गुरुजी) । तत् = अश्वत्थामा हतः इति (अश्वत्थामा के मारे जाने की बात) । श्रुत्वा = आकर्ण्य (सुनकर) । तस्य = सत्यवादिनः राज्ञः = नृपस्य युधिष्ठिरस्य (उन नृपति के) प्रत्ययात्=विश्वासात् (विश्वास से) आजौ = समरे (युद्ध में) । शस्त्राणि = आयुधानि (हथियार) नयनसलिलं चापि = (तथा आँखों से आँसू भी) तुल्यम् = समम् (एक साथ) मुमोच = परित्यक्त-वान् (छोड़, बहाये) । मन्दाक्रान्ता वृत्तम् ॥ ११ ॥

अश्वत्थामा—हा सुतवत्सल = हा पुत्रप्रिय ! वृथा = व्यर्थं (व्यर्थ) मदर्थ-परित्यक्तजीवितम्—मदर्थम् = मन्निमित्तम् परित्यक्तम् = निःसारितम् जीवितम् = जीवनम् येन सः, तत्सम्बुद्धौ (मेरे लिये जीवन त्याग कर देनेवाले) । शौर्यराशे—शौर्यस्य = पराक्रमस्य राशिः = आकरः यस्तत्सम्बुद्धौ (हे पराक्रम की राशि) । युधिष्ठिरपक्षपातिन्—युधिष्ठिरस्य = पृथापुत्रस्य पक्षे पततीति तत्सम्बुद्धौ (हे युधि-ष्ठिर का पक्षपात करने वाले) । रोदिति=अश्रूणि मुञ्चति (रोने लगता है) ।

सूतः—अत्यन्तपरिदेवेनकार्पण्येन—अत्यन्तम्=अत्यधिकम् परिदेवनम्=विलापः ('विलापः परिदेवनम्' इत्यमरः) एव कार्पण्यम् = कातर्यम्, तेन (अत्यधिक रोने चिल्लाने की कातरता से) अलम् = निषेधेऽव्ययम् ।

(आचार्य जी) यह सुनकर उस राजा युधिष्ठिर के (सत्यवादिता के) विश्वास से युद्ध में अस्त्र चलाना छोड़ कर आँखों से आँसू बहाने लगे ॥ ११ ॥

अश्वत्थामा—हा तात ! सुतवत्सल ! हा मेरे लिए व्यर्थ जीवन त्याग करने वाले ! हा शौर्यराशे ! हा शिष्यप्रिय ! हा युधिष्ठिर का पक्षपात करने वाले ! (यह कहकर रोने लगता है) ।

सूत—हे कुमार ! अत्यधिक विलाप रूपी कातरता करना व्यर्थ है ।

अश्वत्थामा—

श्रुत्वा वधं मम मृषा सुतवत्सलेन,
तात ! त्वया सह शरैरसवो विमुक्ताः ।
जीवाम्यहं पुनरहो भवता विनाऽपि,
क्रूरेऽपि तन्मयि मुधा तव पक्षपातः ॥ १२ ॥

(इति मोहमुपगतः)

सूतः—समाश्वसितु, समाश्वसितु कुमारः ।

(ततः प्रविशति कृपः)

अन्वयः—तात ! सुतवत्सलेन त्वया मम मृषा वधम् श्रुत्वा शरैः सह असवः (अपि) विमुक्ताः अहं पुनः भवता विना अपि जीवामि अहो, तत् क्रूरे अपि मयि तव पक्षपातः मुधा ॥ १२ ॥

श्रुत्वेति । हे तात ! = हा पितः (हे पिताजी) सुतवत्सलेन—सुते = पुत्रे वत्सलः = प्रियः, तेन (पुत्रवत्सल) त्वया = भवता (आपने) मम = मेऽश्वत्थाम्नः (मेरा) मृषा = मिथ्या (झूठ) वधम् = मृत्युम् (वध को) श्रुत्वा = आकर्ण्य (सुनकर) शरैः = बाणैः सह = साकम् (बाणों के साथ) असवः = प्राणाः (प्राण) विमुक्ताः=परित्यक्ताः (छोड़ दिये) । अहम्=अश्वत्थामा पुनः= भूयः (फिर भी) भवता विनाऽपि=तातेन विनाऽपि (आपके बिना भी) जीवामि = जीवनं धारयामि (जीवित हूँ) । अहो = आश्चर्यम् (आश्चर्य है कि) । तत्= तथाविधे (इस प्रकार) क्रूरे अपि मयि = निष्ठुरेऽपि मयि पुत्रे (मुझ निष्ठुर पर भी) तव = ते (आपका) पक्षपातः = स्नेहत्वम् (स्नेह करना) मुधा = व्यर्थम् (बेकार है) । वसन्ततिलका वृत्तम् ॥ १२ ॥

मोहम् = कृच्छाम् (बेहोशी) उपगतः = प्राप्तः ।

सूतः—समाश्वसितु = धैर्यं धारयतु (धैर्य धारण करें) ।

कृपः = कृपाचार्यः, अश्वत्थाम्नो मातुलः ।

अश्वत्थामा—हे तात ! सुतवत्सल ! आपने मेरे वध की झूठी बात सुनकर बाण छोड़ने के साथ ही अपने प्राण तक छोड़ दिये किन्तु मैं आपके बिना भी जीवित हूँ नहीं मर सका । आश्चर्य है कि इतने क्रूर मुझ व्यक्ति पर भी आप व्यर्थ स्नेह करते थे ॥ १२ ॥

(यह कहकर मूर्च्छित हो जाता है) ।

सूत—कुमार ! धैर्य धारण करें, धैर्य धारण करें ।

(तदनन्तर कृपाचार्य प्रवेश करते हैं)

कृपः—(सोद्वेगं निःश्वस्य ।)

धिक्सानुजं कुरुपतिं धिगजातशत्रुं
धिग्भूपतीन्विफलशस्त्रभृतो धिगस्मान् ।
केशग्रहः खलु तदा द्रुपदात्मजाया
द्रोणस्य चाद्य लिखितैरिव वीक्षितो यैः ॥ १३ ॥

तत्कथं नु खलु वत्समद्य द्रक्ष्याम्यश्वत्थामानम् । अथवा हिमवत्सार-

---

अन्वयः—सानुजम् कुरुपतिम् धिक्, अजातशत्रुम् धिक्, विफलशस्त्रभृतः भूपतीन् धिक्, अस्मान् धिक्, यैः तदा द्रुपदात्मजायाः द्रोणस्य च केशग्रहः लिखितैः इव वीक्षितः, अद्य खलु (तान् अपि) धिक् ॥ १३ ॥

धिगिति । सानुजम्—अनुजैः सहितम् (भाइयों सहित) । कुरुपतिम् = दुर्योधनम् (कुरुराज को) धिक्=धिक्कारोऽस्ति (धिक्कार है) । अजातशत्रुम्—न जातः शत्रुर्यस्य तम् = अनुत्पन्नरिपुम् युधिष्ठिरम् (अजातशत्रु युधिष्ठिर को) धिक् । विफलशस्त्रभृतः—विफलानि = असफलानि शस्त्राणि=आयुधानि बिभ्रति= धारयन्ति इति तान् (व्यर्थ अस्त्रधारण करनेवाले) भूपतीन्=नृपतीन् (राजाओं को) धिक् । अस्मान् = अश्वत्थामादिवीरान् (हम सबको) धिक् । यैः = वीरैः (जिन वीरों ने) । तदा = कौरवसभायां युद्धक्षेत्रे च (भरी सभा में तथा युद्ध भूमि में) द्रुपदात्मजायाः= द्रौपद्याः (द्रौपदी के) द्रोणस्य=आचार्यस्य च (और द्रोणाचार्य के) । केशग्रहः—केशेषु ग्रहः = कचग्रहणम् (बाल पकड़ कर खींचा जाना) । लिखितैः=चित्राङ्कितैः इव (चित्रलिखितवत्) वीक्षितः—अवलोकितः (देखा) । अद्य = अस्मिन् दिने (आज) खलु = किल (निश्चय ही) तान् अपि धिक् इति शेषः । अत्र काव्यलिङ्गमलङ्कारः । वसन्ततिलका वृत्तम् ॥ १३ ॥

वत्सम् = भागिनेयमश्वत्थामानम् (बेटे अश्वत्थामा को) द्रक्ष्यामि = अवलोकयिष्यामि (देखूँगा) हिमवत्सारगुरुचेतसि—हिमवतः = हिमालयस्य सार इव सारो यस्य तथाभूतम् गुरुचेतः = विशालहृदयम् यस्य सः, तस्मिन् (हिमालय

कृप—(क्रोध के साथ, लम्बी साँस छोड़कर) अनुजों सहित कुरुराज दुर्योधन को धिक्कार है, अजातशत्रु युधिष्ठिर को, भी धिक्कार है, विफल शस्त्रोंवाले राजाओं को धिक्कार है, आज हम सब महारथियों को भी धिक्कार है जो कि भरी सभा में द्रौपदी का तथा युद्ध में द्रोणाचार्य का केश पकड़ कर खींचा जाना (चुपचाप) देखते रहे, विरोध न कर सके ॥ १३ ॥

तो (अब) अश्वत्थामा को मैं कैसे देख सकूँगा । अथवा हिमालय के सार जैसे गम्भीर

गुरुचेतसि ज्ञातलोकस्थितौ तस्मिन्न खलु शोकावेगमहमाशङ्के । किन्त्वसदृशं पितुः पराभवमुपश्रुत्य न जाने किं व्यवस्यतीति । अथवा—

एकस्य तावत्पाकोऽयं दारुणो भुवि वर्तते ।
केशग्रहे द्वितीयेऽस्मिन् नूनं निःशेषिताः प्रजाः ॥ १४ ॥

(विभाव्य ।) तदयं वत्सस्तिष्ठति । यावदुपसर्पामि (उपसृत्य, ससम्भ्रमम् ।) वत्स, समाश्वसिहि समाश्वसिहि ।

के समान धैर्यशाली विशाल हृदय वाले)। ज्ञातलोकस्थितौ—ज्ञाता = अवगता लोकस्थितिः = लोकदशा येन (लोक स्थिति को जानने वाले) तस्मिन् = वत्सेऽश्वत्थाम्नि (उस अश्वत्थामा पर) शोकावेगम्—शोकस्य = दुःखस्यावेगम् (शोकावेग की) आशङ्के=सन्दिग्धो भवामि (मैं सन्देह कर रहा हूँ)। किन्तु= परम् (पर) असदृशम् = अनुचितम् (अनुचित) पितुः=जनकस्य (पिता के)। पराभवम् = निधनम् (निधन को) उपश्रुत्य = आकर्ण्य (सुनकर) किं व्यवस्यति=किं करिष्यति इति न जाने = न वेद्मि (नहीं जानता, क्या कर बैठे)।

अन्वयः—एकस्य तावत् अयं दारुणः पाकः भुवि वर्तते, अस्मिन् द्वितीये केशग्रहे नूनं प्रजाः निःशेषिताः ॥ १४ ॥

एकस्येति । एकस्य = एकवारमेव द्रौपद्या केशग्रहस्य (एक द्रौपदी के ही वाल पकड़ने का) तावत् = तु । अयम् = एषः (यह) दारुणः = कठोर (दुःखदायी) पाकः = परिणामः । भुवि = पृथिव्याम् (भूमि पर) (महाभारतयुद्धरूपः) वर्तते = विद्यते (उपस्थित है)। अस्मिन् = एतस्मिन् (इस) द्वितीये = अपरे (दूसरे) केशग्रहे = कचग्रहणे तातस्य द्रोणाचार्यस्येति (दूसरे द्रोणाचार्य के केश पकड़ने पर) नूनम् = खलु (निश्चय ही) प्रजाः = जनता निःशेषिताः = विनष्टाः भविष्यन्ति । पथ्यावक्त्रं वृत्तम् ॥ १४ ॥

विभाव्य = सम्यग्विचार्य (ठीक प्रकार देखकर)। वत्सः = अश्वत्थामा ।

हृदय वाले तथा लोकस्थिति के ज्ञाता उस वत्स अश्वत्थामा में शोकोद्वेग की मैं आशङ्का कर रहा हूँ ! परन्तु अनुचित पितृ-वध सुनकर वह न जाने क्या कर डालेगा ? अथवा—

एक केश ग्रहण (द्रौपदी के बाल पकड़ कर खींचने) का तो दारुण-परिणाम संसार में यह महाभारत हो रहा है (अब) दूसरे केश ग्रहण (द्रोणाचार्य को बाल खींचकर हत्या) करने पर, तो प्रजा का विनाश ही हो जायेगा ॥ १४ ॥

(भलीभाँति देखकर) यह वत्स तो यहीं है। उनके पास चलता हूँ (पास जाकर सभ्रंम) हे वत्स ! धीरज रखो, धीरज रखो ।

अश्वत्थामा—(संज्ञां लब्ध्वा, सास्त्रम्) हा तात, सकलभुवनैकगुरो ! (आकाशे ।) युधिष्ठिर ! युधिष्ठिर !

आजन्मनो न वितथं भवता किलोक्तं
न द्वेक्षि यज्जनमतस्त्वमजातशत्रुः ।
ताते गुरौ द्विजवरे मम भाग्यदोषात्
सर्वं तदेकपद एव कथं निरस्तम् ॥ १५ ॥

तिष्ठति = स्थितः । उपसर्पामि = उपगच्छामि (समीप चलता हूँ) । सम्भ्रमम् = सभयम् (डर के साथ) ।

अश्वत्थामा—संज्ञाम् = विमूर्च्छनम् (चेतना) लब्ध्वा = प्राप्य (प्राप्तकर) सास्त्रम् = साश्रुः (आँखों में आँसू भरकर) सकलभुवनैकगुरो—सकलस्य = सम्पूर्णस्य भुवनस्य = लोकस्यैको गुरुस्तत्सम्बुद्धौ (हे सम्पूर्ण संसार के एक मात्र गुरु) । आकाशे = नभसि ।

अन्वयः—भवता आजन्मनः वितथं न उक्तं किल यत् जनं न द्वेक्षि (अतः) त्वम् अजातशत्रुः गुरौ द्विजवरे मम ताते भाग्यदोषात् एकपदे एव सर्वं कथं निरस्तम् ॥ १५ ॥

अजन्मन इति । भवता = श्रीमता (आपके द्वारा) आजन्मनः = जन्म-कालादारभ्य (जन्म से लेकर) वितथम् = असत्यम् (झूठ) न उक्तम् = न भाषितम् (नहीं बोला गया) किल = खलु । यत् त्वम् जनम् = प्राणिनम् (प्राणी मात्र से) न द्वेक्षि = द्वेषं न करोषि (द्वेष नहीं करते हो) । अतः त्वम् अजात-शत्रुः—अनुत्पन्नरिपुः (अजातशत्रु होकर) गुरौ = आचार्ये (गुरु) द्विजवरे = विप्रवर्ये (श्रेष्ठ ब्राह्मण में) मम = मेऽश्वत्थाम्नः (मेरे) ताते = पितरि (पिताजी पर) भाग्यदोषात्—भाग्यस्य = अदृष्टस्य दोषात् = अपराधात् (भाग्य के दोष से) । एक पदे एव = युगपदेव (एक साथ ही) तत् सर्वम् = अवितथभाषणं, गुरुविप्रवधात्मकम् सर्वम् (अमिथ्याभाषण, गुरु तथा विप्रवर का वध विषयक

अश्वत्थामा—(होश में आकर, आँखों में आँसू भर कर) हा पिताजी ! हे संसार के एकमात्र गुरु ! (आकाश की ओर देखकर) अरे युधिष्ठिर, युधिष्ठिर !

आपने आजन्म कभी असत्य भाषण नहीं किया, (और) किसी से द्वेष भी कभी नहीं किया (अतः) आप अजातशत्रु होकर भी आचार्य एवम् उत्तम ब्राह्मण मेरे पिता के लिये अपना सत्यवादन गुरुसम्मान तथा ब्राह्मण का अवध्य विषयक ज्ञान यह सब कुछ एक साथ ही भाग्यदोष से कैसे छोड़ बैठे ॥ १५ ॥

सूतः—कुमार ! एष ते मातुलः पार्श्वे शारद्वतस्तिष्ठति !

अश्वत्थामा—(पार्श्वे विलोक्य, सवाष्पम्) मातुल,

गतो येनाद्य त्वं सह रणभुवं सैन्यपतिना
य एकः शूराणां गुरुसमरकण्डूनिकषणः।
परीहासाश्चित्राः सततमभवन्येन भवतः
स्वसुः श्लाघ्यो भर्ता क्व नु खलु स ते मातुल गतः ॥ १६ ॥

ज्ञान कर्म) कथम् = केन प्रकारेण (कैसे) निरस्तम् = परित्यक्तम् । परिकरा-लङ्कारः । वसन्ततिलका वृत्तम् ॥ १५ ॥

सूतः—हे कुमार ! = अयि वत्स (हे कुमार) ते = तवाश्वत्थाम्नः (तुम्हारे) मातुलः = मातुः भ्राताः (मामा) शारद्वतः = कृपाचार्यः (कृपाचार्य) । पार्श्वे = निकटे (समीप) तिष्ठति = अवस्थितोऽस्ति (खड़े हैं) ।

अन्वयः—मातुल ! येन सैन्यपतिना सह त्वम् अद्य रणभुवं गतः, यः एकः (एव) शूराणां गुरुसमरकण्डूनिकषणः, येन (सह) भवतः सततम् चित्राः परिहासाः अभवन्, सः ते स्वसुः श्लाघ्यः भर्ता क्व नु खलु गतः ॥ १६ ॥

गत इति । हे मातुल ! येन सैन्यपतिना सह = येन सेनापतिना साकम् (जिस सेनापति के साथ) त्वम् = भवान् (आप) अद्य = अस्मिन् दिवसे (आज) । रणभुवम् = युद्धभूमिम् (युद्ध भूमि को) गतः = प्रस्थितः (गये) । यः एकः = एकाकी एव (अकेले ही) शूराणाम् = वीराणाम् (वीरों के) गुरुसमरकण्डूनिकषणः = उत्कृष्टयुद्धरूप खर्जनस्य निवारकः (उत्तम युद्ध रूपी खुजली को दूर करने वाले) येन सह भवतः = श्रीमतः (आपके) सततम् = निरन्तरम् (सदैव) चित्राः विचित्राः (विचित्र) परिहासाः = हास्यवार्ताः (हँसी मजाकें) अभवन् = भवन्ति स्म (हुआ करतीं थीं) सः = तथाविधः (वह) ते = तव मातुलस्य शारद्वतः (तुम्हारी) स्वसुः = भगिन्याः (बहिन के) श्लाघ्यः = पूज्यः (पूजनीय) भर्ता = पतिः (स्वामी) क्व = कुत्र (कहाँ) नु खलु = किल । गतः = प्रयातः (चले

सूत—हे कुमार ! यह तुम्हारे पास मामा शारद्वत खड़े हैं ।

अश्वत्थामा—(समीप देखकर, आँखों में आँसू भरकर) मामा, मामा—

जिन सेनापति के साथ आज आप युद्ध भूमि को गये, जो एकाकी ही वीरों की उत्कृष्ट युद्ध रूपी खुजली को दूर करने वाले थे, जिनके साथ आप की सदैव विचित्र प्रकार की हँसी मजाकें होती रहती थीं, वह आप के भगिनी-पति (बहनोई) श्लाघ्य आचार्य जी आज कहाँ चले गये ? ॥ १६ ॥

कृपः—परिगतपरिगन्तव्य एव भवान् । तदलमत्यन्तशोकावेगेन ।

अश्वत्थामा—मातुल ! परित्यक्तमेव मया परिदेवनम् । एषोऽहं सुतवत्सलं तातमेवाऽनुगच्छामि ।

कृपः—वत्स ! अनुपपन्नमीदृशं व्यवसितं भवद्विधानाम् ।

सूतः—कुमार, अलमतिसाहसेन ।

अश्वत्थामा—आर्य ! किमुच्यते ?

गये) । अत्रोल्लेखालङ्कारः । शिखरिणीवृत्तम् । तद्यथा—रसैः रुद्रैश्छिन्नाः यमनसभलागः शिखरिणी ।। १६ ।।

कृपः—परिगतपरिगन्तव्यः—परिगतः = सम्यग् ज्ञातः परिगन्तव्यः = वेदनीयः विषयः येन सः (पीडा को भलीभाँति समझने वाले) भवान् = कृपाचार्यः (आप) ।

अश्वत्थामा—मया = अश्वत्थाम्ना (मैंने) परिदेवनम् = विलापः (विलाप करना) परित्यक्तम् = विसृष्टम् (छोड़ दिया है) । सुतवत्सलम् = पुत्रप्रियम् (पुत्र-प्रेमी) तातम् = पितरम् एव (पिता जी को ही) । अनुगच्छामि—अनु = पश्चात् गच्छामि = चलामि (अनुसरण करता हूँ) ।

कृपः—ईदृशम् = एतत्प्रकारम् (ऐसा) व्यवसितम् = निश्चितं कर्तुम् (निश्चय करना) भवद्विधानाम् = त्वत्सदृशानाम् ज्ञानिनां वीराणाञ्च (तुम्हारे जैसे लोगों को) अनुपपन्नम् = अनुपयुक्तम् (ठीक नहीं है) ।

सूतः—अतिसाहसेन = आत्महत्याविषयकेन साहसेन (इस प्रकार आत्महत्या का साहस करना) ।

कृपाचार्य—पीड़ा विषयक बात तो तुम जानते ही हो । अतः अत्यन्त शोकोद्वेग करना व्यर्थ है ।

अश्वत्थामा—हे मामा जी ! मैंने विलाप करना तो छोड़ ही दिया है । अब मैं तो सुत-वत्सल पिता जी का ही अनुसरण करने जा रहा हूँ ।

कृपाचार्य—वत्स ! इस प्रकार (आत्महत्या) का निश्चय करना आप जैसे लोगों के लिए अनुचित है ।

सूत—हे कुमार (आत्महत्या करने का) दुःसाहस करना व्यर्थ है ।

अश्वत्थामा—हे आर्य ! क्या कह रहे हो ?

मद्वियोगभयात्तातः परलोकमितो गतः ।
सहिष्ये विरहं तस्य वत्सलस्य कथं पितुः ॥ १७ ॥

कृपः—वत्स, यावदयं संसारस्तावत्प्रसिद्धैवेयं लोकयात्रा यत्पुत्रैः पितरो लोकद्वयेऽप्यनुवर्तनीया इति । पश्य—

निवापाञ्जलिदानेन केतनैः श्राद्धकर्मभिः ।
तस्योपकारे शक्तस्त्वं किं जीवन्किमुतान्यथा ॥ १८ ॥

अन्वयः—मद्वियोगात् तातः इतः परलोकं गतः अहं वत्सलस्य तस्य पितुः विहरम् कथं सहिष्ये ? ॥ १७ ॥

मद्वियोगादिति । मद्वियोगात्—मत्तः वियोगात् = विश्लेषात् (मेरे वियोग से) तातः = जनकः (पिता जी) इतः = संसारात् (यहाँ से) परलोकम् = दिवम् गतः = प्रयातः (परलोक को चले गये) । अहम् = तत्पुत्रोऽश्वत्थामा (मैं) वत्सलस्य = मयि स्निग्धस्य (मुझ पर प्रेम करने वाले) तस्य = तथाविधस्य (इस प्रकार के) पितुः = जनकस्य (पिता जी के) विरहम् = वियोगम् (विरह को) कथम् = केन प्रकारेण (कैसे) सहिष्ये = सहनं करिष्यामि (सहन कर सकूँगा) । अतः प्राणान् परित्यज्य तत्पार्श्वमेव गच्छामि इति भावः । अत्र काव्यालिङ्गमलङ्कारः । पथ्यावक्त्रं वृत्तम् ॥ १७ ॥

कृपः—यावत् = यावत्कालम् (जब तक) अयम् = एषः (यह) संसारः = लोको वर्तते (संसार है) । तावत्कालम्, इयम् = एषा (यह) लोकयात्रा = लोक पद्धतिः (लोकप्रथा) प्रसिद्धा एव = ख्यातैव (प्रसिद्ध ही है) यत् = हि (कि) पुत्रैः = सुतैः (पुत्रों द्वारा) पितरः = मृतपूर्वजाः (पितर) लोकद्वये = संसारे परलोके च (लोक और परलोक दोनों स्थानों पर भी) अनुवर्तनीयाः—अनु = पश्चात् वर्तनीयाः = स्थातव्याः (बने रहना चाहिये) ।

अन्वयः—निवापाञ्जलिदानेन केतनैः श्राद्धकर्मभिः तस्य उपकारे त्वं किं जीवन् (शक्तः) किं उत ? अन्यथा शक्तः ॥ १८ ॥

निवापाञ्जलीति । निवापाञ्जलिदानेन—निवापः = पितृदानम्, तर्पणादिकम्

मेरे विरह से व्याकुल पिता जी इस संसार से परलोक को प्रस्थान कर गये हैं । मैं वत्सल उन पिता जी का वियोग किस प्रकार सहन कर पाऊँगा ? ॥ १७ ॥

कृपाचार्य—हे वत्स ! जब तक यह संसार है तब तक यही लोकाचार प्रसिद्ध बना रहेगा कि—"पुत्रों द्वारा इस लोक तथा परलोक दोनों में ही पितरों का अनुवर्तन करना चाहिये" । देखो—

जलाञ्जलिदान इत्यादि कर्मों द्वारा तथा श्राद्ध आदि के द्वारा उनका (मृत-पिता का)

सूतः—आयुष्मन्, यथैव मातुलस्ते शारद्वतः कथयति तत्तथा।

अश्वत्थामा—आर्य ! सत्यमेवेदम् । किन्त्वतिदुर्वहत्वाच्छोकभारस्य न शक्नोमि तातविरहितः क्षणमपि प्राणान्धारयितुम्। तद्गच्छामि तमेवोद्देशं यत्र तथाविधमपि पितरं द्रक्ष्यामि। (इत्युत्तिष्ठन्खड्गमालोक्य, विचिन्त्य) कृतमद्याऽपि शस्त्रग्रहणविडम्बनया। (सास्रमञ्जलिं वद्ध्वा) भगवन् शस्त्र !

तस्याञ्जलिः=जलाञ्जलिः, तस्य दानम्=प्रदानम्, तेन (पितरों को श्राद्ध तर्पणाञ्जलि आदि के दान द्वारा) केतनैः श्राद्धकर्मभिः =श्राद्धाङ्गभूतब्राह्मणभोजनादिभिः (श्राद्ध सम्बन्धी ब्राह्मणभोज आदि कर्मों से)। तस्य=मृतात्मनः (उस मृतात्मा पितर को) उपकारे=कल्याणे (उपकार करने में) (श्राद्धाभावे मृतात्मा बुभुक्षितः पिपासितश्चेतस्ततो भ्रमतीति भावः।) त्वम्=भवान् (तुम) जीवन् शक्तः=जीवितुं धारयन् समर्थः। (जीवित रहते हुये, समर्थ) किम् उत=अथवा। मृतः सन् शक्तः=समर्थः असि ? जीवान्नेव श्राद्धादिक कर्म कर्तुं समर्थः, न च मृतः सन्निति भावः। पथ्यावक्त्रं वृत्तम् ॥ १८ ॥

सूतः—यथा एव=यद्विधम् एव (जैसा)। शारद्वतः=कृपाचार्यः। कथयति=वदति।

अश्वत्थामा—शोकभारस्य=दुःखभारस्य (शोकभार के) अतिदुर्वहत्वात्=अतिकष्टेन वहनकारणात् (अत्यन्त कठिनता से वहन करने योग्य होने से)। न शक्नोमि=असमर्थोऽस्मि (समर्थ नहीं हूँ) तातविरहितः—तातेन=पित्रा विरहितः =वियुक्तः (पिता जी से विरहित)। क्षणम् अपि=निमिषमपि (क्षण भर भी)। प्राणान्=जीवान् (प्राणों को) धारयितुम्=स्थापयितुम् (बनाये रखने को)। तम एवोद्देशम्=तत्स्थानमेव (उसी स्थान को) तथाविधम्=तादृशम् अपि (उस दशा को प्राप्त हुये) पितरम्=जनकम् (पिता जी को) द्रक्ष्यामि= अवलोकयिष्यामि (देखूँगा)। खड्गम्=असिम् (तलवार को)। आलोक्य=

उपकार करने में तुम जीवित रह कर अथवा आत्महत्या द्वारा (मर कर करने में) समर्थ हो ? ॥ १८ ॥

सूत—आयुष्मन् ! जैसा तुम्हारे मामा जो कह रहे हैं तुम्हें वही करना चाहिये।

अश्वत्थामा—आर्य ! यह सच ही है, पर शोकभार अत्यन्त दुर्वह होने के कारण पिताजी से बिछुड़ कर मैं क्षण भर भी जीवित नहीं रह सकता हूँ। अतः उसी स्थान को जा रहा हूँ जहाँ उस अवस्था में पिताजी को देख सकूँगा। (इस प्रकार कह कर उठता हुआ खड्ग देखकर, सोचकर) शस्त्र धारण करने का आडम्बर करना व्यर्थ है। (रोता हुआ हाथ जोड़कर) भगवन् शस्त्र !

गृहीतं येनासीः परिभवभयान्नोचितमपि,
प्रभावाद्यस्याऽसोन्न खलु तव कश्चिन्नविषयः।
परित्यक्तं येन त्वमसि सुतशोकान्न तु भयाद्,
विमोक्ष्ये शस्त्र त्वामहमपि यतः स्वस्ति भवते ॥ १९ ॥

दृष्ट्वा (देखकर)। चिचिन्त्य = विचार्यः (सोचकर) शस्त्रगृहणविडम्बनया—शस्त्रग्रहणे = आयुधधारणे विडम्बना = आडम्बरम् तथा (शस्त्र धारण करने का आडम्बर करने से) कृतम् = अलम् (बस)। भगवन् शस्त्र ! = हे आयुधदेव !

अन्वयः—येन परिभवभयात् न उचितम् अपि (त्वं) गृहीतम् आसीः, यस्य प्रभावात् कश्चित् तव विषयः न आसीत् इति न खलु, येन त्वं सुतशोकात् न तु भयात् परित्यक्तम् असि। हे शस्त्र ! अहम् अपि त्वां विमोक्ष्ये, यतः भवते स्वस्ति ॥ १९ ॥

गृहीतमिति। येन = पित्रा (जिन पिता जी ने)। परिभवभयात्—परिभवस्य = तिरस्कारस्य भयम् = भीतिस्तस्मात् (तिरस्कार के भय से) न उचितम् = अयुक्तम् अपि त्वम् = शस्त्रम् (अनुचित होने पर भी तुम)। गृहीतम् = अधिकृतम् आसीः, ब्राह्मणत्वात् क्षत्रियग्रहणोचितमतित्वं ग्रहणकृतमासीः (अनुचित होते हुये भी तुम ग्रहण किये गये थे)। यस्य प्रभावात् = यस्य सामर्थ्यात् (जिनके प्रभाव से)। कश्चित् = कोऽपि (कोई भी) तव = ते (तुम्हारा) विषयः = लक्ष्यः न आसीत् इति = एतत् न खलु = नूनं नैव (लक्ष्य नहीं था ऐसी बात नहीं है)। तेन = तथाविधेन बलिना पित्रा (ऐसे बली पिता जी के द्वारा) त्वम् = शस्त्रम् (तुम) सुतशोकात् = पुत्रवियोगदुःखात् (सुत शोक से) न तु भयात् = भयात् तु नैव (भय से नहीं) परित्यक्तम् असि = विसृष्टमसि (छोड़ दिये गये हो)। हे शस्त्र = अयि आयुध ! अहम् = अश्वत्थामाऽपि। त्वाम् = शस्त्रम् (तुम्हें) विमोक्ष्ये = परित्यजामि (छोड़ रहा हूँ)। यतः = यस्मात् (जिससे) भवते = ते (आपका) स्वस्ति = कल्याणं भवतु (कल्याण होवे)। अत्र परिसंख्या अलङ्कारः। शिखरिणी वृत्तम् ॥ १९ ॥

जिन पिता जी के द्वारा शत्रु तिरस्कार के भय से अनुचित (ब्राह्मणों को शस्त्र धारण करना अनुपयुक्त) होते हुये भी तुम ग्रहण किये गये थे, जिनके प्रभाव से कोई भी तुम्हारा लक्ष्य न बन सकता हो वास्तव में ऐसा नहीं था (समस्त संसार तुम्हारा अचूक निशाना बना हुआ था)। उन्हीं के द्वारा सुत (मेरे) शोक के कारण छोड़ दिये गये हो शत्रु भय से नहीं। (अतः) हे शस्त्र ! मैं भी तुम्हें त्याग रहा हूँ जिससे तुम्हारा कल्याण होवे ॥१९॥

(इत्युत्सृजति ।)

(नेपथ्ये) भो भो राजानः! कथमिह भवन्तः सर्वे क्षत्रियगुरोर्भारद्वाजस्याऽसदृशं परिभवममुना नृशंसेन प्रयुक्तमुपेक्षन्ते।

अश्वत्थामा—(आकर्ण्य, सक्रोधं शनैः शनैः शस्त्रं स्पृशन्) किं गुरोर्भारद्वाजस्य परिभवः ?

(पुनर्नेपथ्ये ।)

आचार्यस्य त्रिभुवनगुरोर्न्यस्तशस्त्रस्य शोकाद्
द्रोणस्याऽऽजौ नयनसलिलक्षालिताऽऽर्द्राननस्य ।
मौलौ पाणिं पलितधवले न्यस्य कृत्वा नृशंसं
धृष्टद्युम्नः स्वशिबिरमयं याति सर्वे सहध्वम् ॥ २० ॥

क्षत्रियगुरोः—क्षत्रियाणां गुरुस्तस्य (क्षत्रिय गुरु के) भारद्वाजस्य = द्रोणाचार्यस्य (द्रोण का)। असदृशम् परिभवम् = तिरस्कारम् (अयोग्य तिरस्कार—बाल खींचकर मारना) अमुना = एतेन नृशंसेन = क्रूरेण ('नृशंसो घातकः क्रूरः' इत्यमरः) (इस क्रूर धृष्टद्युम्न द्वारा) प्रयुक्तम् = विहितम् (प्रयुक्त) उपेक्षन्ते = उपेक्षां कुर्वन्ति (आप लोग उपेक्षा कर रहे हैं)। किमिति शेषः ।

अश्वत्थामा—आकर्ण्य = श्रुत्वा (सुनकर)। सक्रोधम् = सरोषम् (क्रोध से) शनैः शनैः = मन्दं मन्दम्, शस्त्रम् = आयुधम् स्पृशन् = स्पर्शं कुर्वन् । किं किम् = किमिति ससम्भ्रमम् (क्या, क्या) गुरोः = आचार्यस्य भारद्वाजस्य = द्रोणस्य (गुरु द्रोण का) परिभवः = तिरस्कारम् ।

अन्वयः—आजौ शोकात् न्यस्तशस्त्रस्य नयनसलिलक्षालिताऽऽर्द्राननस्य त्रिभुवनगुरोः आचार्यस्य द्रोणस्य पलितधवले मौलौ पाणिं न्यस्य नृशंसं कृत्वा, अयं धृष्टद्युम्नः स्वशिबिरं याति, (कथं) सर्वे सहध्वम् ? २० ॥

आचार्यस्येति । आजौ = युद्धे (युद्ध में) शोकात् = दुःखात् (शोक से)

(यह कहकर छोड़ना चाहता है)

(नेपथ्य में) अरे राजाओ ! आप लोग क्षत्रियगुरु भारद्वाज (द्रोण) के इस क्रूर (धृष्टद्युम्न) द्वारा किये गये अनुचित तिरस्कार को (कैसे) सहन कर रहे हैं ?

अश्वत्थामा—(सुनकर, सक्रोध धीरे-धीरे शस्त्र छूते हुये) क्या-क्या गुरु भारद्वाज का तिरस्कार ?

(नेपथ्य में पुनः)

युद्ध में शोक से शस्त्र त्याग किये, नयन जल (आँसुओं) से भींगे हुये मुख, त्रिभुवन

अश्वत्थामा—(सक्रोधं सकम्पं च कृपसूतौ दृष्ट्वा ।) किं नामेदम् !

प्रत्यक्षमात्तधनुषां मनुजेश्वराणां,
प्रायोपवेशसदृशं व्रतमास्थितस्य ।
तातस्य मे पलितमौलिनिरस्तकाशे,
व्यापारितं शिरसि शस्त्रमशस्त्रपाणेः ॥ २१ ॥

न्यस्तशस्त्रस्य—न्यस्तम् = परित्यक्तम् शस्त्रम् = आयुधम् येन स यस्य (शस्त्र-त्याग किये हुये) नयनसलिलक्षाक्षालितार्द्राननस्य—नयनसलिलेन = नेत्राम्बुना क्षालितम्=धौतम् आननम् मुखम् यस्य सः, तस्य (नयनजल से धोये गये मुखवाले) आचार्यस्य = गुरोः द्रोणस्य=भारद्वाजस्य (गुरु द्रोण के) पलितधवले—पलितेन = जरसा धवले = शुभ्रे (बुढ़ापे के कारण सफेद) मौलौ = माले शिरसि वा (शिर-पर) पाणिम् = हस्तम् (हाथ को) न्यस्य = स्थाप्य (डाल कर) नृशंसम् = क्रूरकर्म कृत्वा=विधाय (करके) अयम् = एषः धृष्टद्युम्नः = द्रुपदसुतः । स्वशिवि-रम् = आत्मसैन्यस्थलम् (अपने शिविर को) याति = गच्छति (जा रहा है) । कथम् सर्वे = यूयम् सर्वेऽपि (आप सब) सहध्वम् = सहनं कुरुथ (सहन कर रहे हो)। मन्दाक्रान्तावृत्तम् । तद्यथा—मन्दाक्रान्ताम्बुधिरसनगैर्मोभनौगौ य युग्मम् ॥ २० ॥

अश्वत्थामा—कृपसूतौ = कृपं च सूतं च (कृपाचार्य तथा सूत को) । दृष्ट्वा = अवलोक्य किं नाम इदम् = किं सत्यमेतत् (क्या यह सच है) ।

अन्वयः—आत्तधनुषां मनुजेश्वराणां प्रत्यक्षं प्रायोपवेषसदृशं व्रतं आस्थितस्य अशस्त्रपाणेः मे तातस्य पलितमौलिनिरस्तकाशे शिरसि शस्त्रं व्यापारितम् ॥२१॥

प्रत्यक्षेति । आत्तधनुषाम्—आत्तम् = गृहीतम् धनुः = कोदण्डम् यैस्तेषाम् (धनुर्धारी) मनुजेश्वराणाम् = नृपेश्वराणाम् (राजाओं के) प्रत्यक्षम् = समक्षम् (सामने) प्रायोपवेशसदृशम्—प्रायेण = प्रायः उपवेशम् = मरणायोपवेशनम्

गुरु आचार्य द्रोण के बुढ़ापे से श्वेत शिर पर हाथ डालकर (शिरश्छेद कर) क्रूर कर्म (हत्या) करके यह धृष्टद्युम्न अपने शिविर को (सकुशल) जा रहा है, तुम सब यह कैसे सहन कर रहे हो ? ॥ २० ॥

अश्वत्थामा—(क्रोध सहित, काँपते हुये कृपाचार्य तथा सूत को देख कर) क्या यह सच है कि—

धनुर्धारी नरपतियों के समक्ष प्रायः भूखे ही व्रत धारण किये हुये अस्त्रशस्त्रहीन मेरे पिताजी के पके (सफेद) बाल वाले शिर पर शस्त्र का प्रहार किया ॥ २१ ॥

कृपः—वत्स ! एवं किल जनः कथयति ।

अश्वत्थामा—(सूतं प्रति) किं तातस्य दुरात्मना परिमृष्टमभूच्छिरः ।

सूतः—(सभयम् ।) कुमार ! आसीदयं तस्य तेजोराशेर्देवस्य नवः परिभवावतारः ।

अश्वत्थामा—हा तात ! हा पुत्रप्रिय ! मम मन्दभागधेयस्य कृते शस्त्र-परित्यागात्तथाविधेन क्षुद्रेणाऽऽत्मा परिभावितः । (विचिन्त्य) अथवा—

(भूखेमात्र) तेन सदृशम् = समम् व्रतम् = नियमम् आस्थितस्य = विद्यमानस्य (व्रत धारण किये हुए) तस्य = तादृशस्य अस्त्रपाणेः = अस्त्रं पाणौ यस्य सः, तस्य = गृहीतशस्त्रस्य (अस्त्र पकड़े हुए) मे = मम (मेरे) तातस्य = पितुः (पिताजी के) पलितमौलिनिरस्तकाशे—पलितेन = धवलितेन मौलिना = शिरसा "चूडा किरीटं केशाश्च संयता मौलयस्त्रयः" इत्यमरः । निरस्तः = अभिभूतः काशः = काशसमूहो येन तस्मिन् (धवल शिर से काश कुसुम समूह को तिरस्कृव करने वाले) शिरसि = मौलौ (शिर पर) शस्त्रम् = आयुधम् व्यापारितम् = प्रयुक्तम् किमिति । अत्रोपमालङ्कारः । वसन्ततिलका वृत्तम् ।। २१ ।।

कृपः—वत्स ! = हे पुत्र । एवम् = इत्थम् (ऐसा) । जनः=लोकः (लोग) कथयति = वदति ।

अश्वत्थामा—तातस्य = पितुः (पिताजी का) शिरः=उत्तमाङ्गम् (शिर) दुरात्मना = दुष्टेन धृष्टद्युम्नेन (दुष्टद्वारा) परिमृष्टम् = स्पृष्टम् अभूत् = अभवत् (छुआ गया) ।

सूतः—तेजोराशेः = तेजसः राशिर्यस्तस्य = तेजस्विनः देवस्य = गुरोः (तेजो राशि आचार्यजी का) नवः = नूतनः (नवीन) । परिभवावतारः—परिभवः = अनादरः ('परिभावस्तिरस्क्रिया' इत्यमरः) । तस्यावतारः=प्रसङ्गः (तिर-स्कार का प्रसंग) ।

अश्वत्थामा—मन्दभागधेयस्य—मन्दम् = श्लथम् भाग्यम् यस्य सः, तस्य

कृपाचार्य—वत्स ! ऐसा ही लोग कहते हैं ।

अश्वत्थामा—(सूत से) क्या पिता जी का दुष्ट ने स्पर्श भी किया ?

सूत—(डरकर) कुमार ! यह उन उन तेजोराशि आचार्य जी का नवीन (प्रथम) पराभव था ।

अश्वत्थामा—हा तात ! हा पुत्रप्रिय ! मुझ मन्दभाग्य के कारण शस्त्रपरित्याग करने से उस प्रकार नीच से आत्मा को तिरस्कार को पहुँचाया । (सोचकर) अथवा—

परित्यक्ते देहे रणशिरसि शोकार्तमनसा,
शिरः श्वा काको वा द्रुपदतनयो वा परिमृशेत् ।
स्फुरद्दिव्यास्त्रौघद्रविणमदमत्तस्य च रिपो-
र्मयैवाऽयं पादः शिरसि निहितस्तस्य सहसा ॥ २२ ॥

आः दुरात्मन्पाञ्चालाऽपसद !

(मन्द भाग्य वाले) कृते = निमित्तम् । तथाविधेन तादृशेन (उस प्रकार से) क्षुद्रेण = नीचेन (नीच ने) आत्मा = जीवः । परिभावितः = तिरस्कारं प्रापितः ।

अन्वयः—रणशिरसि शोकर्तमनसा देहे परित्यक्ते श्वा काकः वा द्रुपदतनयः वा शिरः परिमृशेत् स्फुरद्दिव्यास्त्रौघद्रविणमदमत्तस्य तस्य रिपोः शिरसि सहसा मया एव अयम् पादः निहितः ॥ २२ ॥

परित्यक्त इति । रणशिरसि = युद्धमूर्ध्नि (युद्ध में) । शोकार्तमनसा—शोकेनार्त्तं मनः यस्य सः तेन = दुःखोद्विग्नचेतसा (दुःख से व्याकुल हृदय) देहे = शरीरे परित्यक्ते = विसृष्टे (शरीर छोड़ने पर) श्वा = कुक्कुरः (कुत्ता) वा काकः = ध्वांक्षः (कौवा) वा = अथवा द्रुपदतनयः = धृष्टद्युम्नः शिरः = उत्तमाङ्गम् परिमृशेत् = स्पृशेत् (छुँये) । स्फुरद्दिव्यास्त्रौघद्रविणमदमत्तस्य—स्फुरन्ति = प्रकाशमानानि दिव्यानि = श्रेष्ठानि, अस्त्राणि = आयुधानि, तेषामोघः = समूहः, एव द्रविणम् = द्रव्यम्, तस्य मदेन = अहंकारेण मत्तस्य = प्रमत्तस्य (चमचमाते दिव्य अस्त्र समूह रूपी धनमद से पागल) । तस्य = मत्तस्य रिपोः = शत्रोः धृष्टद्युम्नस्य (उस शत्रु धृष्टद्युम्न के) शिरसि = उत्तमाङ्गे (शिर पर) सहसा = वेगेन मम = द्रोणसुतस्य (मेरे ऊपर) अयम् = एषः (यह) पादः = चरणम् । निहितः = धृतः (पाँव रखा गया है) । अत्र रूपकालङ्कारः । शिखरिणी वृत्तम् ॥ २२ ॥

आः दुरात्मन् ! = अयि दुष्ट ! पाञ्चालापसद ! = नीच पाञ्चाल !

युद्ध में शोकाकुल देहत्याग ने पर कुत्ता या कौवा अथवा द्रुपदपुत्र कोई भी शिर को छूले, चकाचौंध करते हुये दिव्य अस्त्र समूह रूपी धनमद से पागल बने उस शत्रु धृष्टद्युम्न ने पिताजी के शिर को नहीं छुआ बल्कि मेरे शिर पर पैर रखा है ॥ २२ ॥

रे दुष्ट ! नीच पाञ्चाल !

तातं शस्त्रग्रहणविमुखं निश्चयेनोपलभ्य
त्यक्त्वा शङ्कां खलु विदधतः पाणिमस्योत्तमाङ्गे ।
अश्वत्थामा करधृतधनुः पाण्डुपाञ्चालसेना-
तूलोत्क्षेपप्रलयपवनः किं न यातः स्मृतिं ते ॥ २३ ॥

युधिष्ठिर ! युधिष्ठिर ! अजातशत्रो ! अमिथ्यावादिन् ! धर्मपुत्र ! सानुजस्य ते किमनेनापकृतम् । अथवा किमनेनाऽलीकप्रकृतिजिह्मचेतसा ।

अन्वयः—तातं शस्त्रग्रहणविमुखं निश्चयेन उपलभ्य शङ्कां त्यक्त्वा अस्य उत्तमाङ्गे पाणिं विदधतः खलु ते करधृतधनुः पाण्डु-पाञ्चालसेना-तूलोत्क्षेपप्रलय-पवनः अश्वत्थामा किं स्मृतिं न यातः ॥ २३ ॥

तातमिति । तातम् = पितरम् (पिताजी को) शस्त्रग्रहणविमुखम्—शस्त्र-ग्रहणे = आयुधधारणे विमुखम् = पराङ्मुखम् (अस्त्र धारण करने में विमुख) निश्चयेन = संकल्पेन (निश्चय से) उपलभ्य = प्राप्य (पाकर) शङ्काम् = सन्देहम् त्यक्त्वा = परित्यज्य निःशङ्को भूत्वा (निडर होकर) अस्य = एतस्य पितुः (इनके) उत्तमाङ्गे = शिरसि (शिर पर) पाणिम् = हस्तम् (हाथ को) विदधतः = व्यापारयतः (चलाने, रखने से) खलु = किल । ते = तव (तेरा) करधृत-धनुः—करे = हस्ते धृतम् = गृहीतम् धनुः = आज्यम् येन सः (हाथ में धनुप पकड़े) पाण्डुपाञ्चाल-सेना-तूलोत्क्षेपप्रलय-पवनः—पाण्डूनां = पाण्डुपुत्राणाम् पाण्डवानाम् पाञ्चालानाम् = पाञ्चालनृपतीणाम् च सेना = चमूः एव तूलान् = कार्पासः, तस्योत्क्षेपे = उपमर्दने प्रलयपवनः = प्रलयकालमारुतः यथा तथा (पाण्डवों तथा पाञ्चाल राजाओं की सेना रूपी रुई उड़ा देने में प्रलय पवन के समान) अश्वत्थामा = अहं द्रोणसुतः (मैं अश्वत्थामा) किम् = किमर्थम् (क्यों) स्मृतिम् = स्मरणम् न यातः = न गतः (याद क्यों नहीं आया) अत्र रूपका-लङ्कारः । मन्दाक्रान्तावृत्तम् ॥ २३ ॥

हे युधिष्ठिर = हे कुन्तीपुत्र ! अजातशत्रो = हे अनुत्पन्नरिपो ! अमिथ्यावादिन्

पिता जी को शस्त्र धारण करने से विमुख निश्चय वाला पाकर निःशङ्क होकर इनके शिर पर हाथ रखते हुये वास्तव में तुझे हाथ में धनुष पकड़े, पाण्डवों तथा पाञ्चाल राजाओं की सेना रूपी रुई को उड़ा देने वाला प्रलय कालीन पवन अश्वत्थामा क्या तुम्हें याद नहीं आया ? ॥ २३ ॥

अरे युधिष्ठिर ! युधिष्ठिर ! अजातशत्रो ! असत्य न बोलने वाले ! धर्मराज के पुत्र !

अर्जुन ! सात्यके ! बाहुशालिन्वृकोदर ! माधव ! युक्तं नाम भवतां सुराऽसुर-मनुजलोकैकधनुर्धरस्य द्विजन्मनः परिणतवयसः सर्वाचार्यस्य विशेषतो मम पितुरमुना द्रुपदकुलकलङ्केन मनुजपशुना स्पृश्यमानमुत्तमाङ्गमुपेक्षितुम् । अथवा सर्व एवैते पातकिनः । किमेतैः—

=हे सत्यवादिन् ! धर्मपुत्र=हे धर्मसुत ! सानुजस्य—अनुजैः=लघुभ्रातृभिः सहितः तस्य (भाइयों सहित) ते=तव (तुम्हारा) अनेन=एतेन गुरुणा (इन्होंने) किम् अपकृतम्=किमपराद्धम् (क्या विगाड़ा था)? अलीकप्रकृति-जिह्मचेतसा—अलीका=मिथ्या प्रकृतिः=स्वभावः, तया जिह्मम्=कुटिलम् चेतः =मनो यस्य सः तेन (झूठी प्रकृति तथा कुटिल मन वाले)। बाहुशालिन्= भुजपराक्रमिन् (हे बाहुवली), माधव=मधुदैत्यघातिन् कृष्ण ! भवताम्=भवा-दृशाणां महापुरुषाणाम् (आप जैसों के) सुरासुरमनुजलोकैकधनुर्धरस्य—सुराणाम् =देवानाम्, असुराणाम्=राक्षसानाम् मनुजानाम्=मानवानाञ्च लोकेषु=जगत्सु एकः=अद्वितीयः धनुर्धरः=धनुर्धारी यस्तस्य (देव दानव तथा मानव लोकों में अद्वितीय धनुर्धारी) द्विजन्मनः=ब्राह्मणस्य । परिणतवयसः—परिणतं वयो यस्य तस्य=वृद्धस्य (वृद्ध) सर्वाचार्यस्य—सर्वेषाम् आचार्यः=गुरुस्तस्य (सबके गुरु) विशेषतः=वैशिष्ठ्येन (विशेष कर) मम=अश्वत्थाम्नः (मुझ अश्वत्थामा के) पितुः=जनकस्य (पिताजी का) अमुना=एतेन । द्रुपदकुलकलंकेन=द्रुपदवंश-पांसुलेन (द्रुपद कुल के कलङ्क) मनुजपशुना—मनुजः=मानवरूपः पशुः= चतुष्पदः, तादृशेन धृष्टद्युम्नेन उमत्तमाङ्गः=शिरः उपेक्षितुम्=तिरस्कारकर्तुम् (उपेक्षा करने को)। एते=इमे सर्व एव=निखिला एव (यह सभी) पापिनः =पापात्मानः (पापी हैं)।

भाइयों सहित तुम्हारा इन्होंने क्या अपकार किया था ? अथवा—मिथ्या प्रकृति तथा कुटिल चित्त वाले इस (युधिष्ठिर) से क्या कहना । अरे अर्जुन, सात्यकि ! बाहुबली भीम ! माधव ! देवताओं, दानवों तथा मानवों के लोक में अद्वितीय धनुर्धर, ब्राह्मण, परिणत अवस्था वाले तथा सभी के आचार्य और विशेष रूप से मेरे पिताजी का इस द्रुपदकुल कलङ्क, मनुज पशु धृष्टद्युम्न के द्वारा आप सबके देखते-देखते शिर को स्पर्श कर उपेक्षा किया जाना उचित था ? अथवा यह सभी पापी हैं । इनसे क्या कहना !

कृतमनुमतं दृष्टं वा यैरिदं गुरुपातकं,
मनुजपशुभिर्निर्मर्यादैर्भवद्भिरुदायुधैः ।
नरकरिपुणा सार्धं तेषां सभीमकिरीटिना-
मयमहमसृङ्मेदोमांसैः करोमि दिशां बलिम् ॥ २४ ॥

कृपः—वत्स ! किं न सम्भाव्यते भारद्वाजतुल्ये बाहुशालिनि दिव्यास्त्र-ग्रामकोविदे भवति ।

अन्वयः—यैः निर्मर्यादैः मनुजपशुभिः उदायुधैः भवद्भिः इदं गुरुपातकं कृतम् अनुमतं दृष्टं वा, नरकरिपुणा सार्धं सभीमकिरीटिनां तेषाम् असृङ्मेदो-मांसैः अयम् अहं दिशां बलिं करोमि ॥ २४ ॥

कृतमिति । निर्मर्यादैः—निर्गता मर्यादा येभ्यस्तैः = मर्यादारहितैः यैः जनैः (जिन अमर्यादितों ने) मनुजपशुभिः = नीचपुरुषैः (नीचों ने) उदायुधैः—उद् = ऊर्ध्वं कृतानि आयुधानि यैस्तैः = उद्यतशस्त्रैः (शस्त्र उठाये हुए) भवद्भिः = युष्माभिः (आप लोगों ने) इदम् = एतत् (यह) गुरुपातकम् = महदघम् (भारी पाप, ब्राह्मणवध) कृतम् = विहितम् (किया) अनुमतम् = समर्थितम् (समर्थन किया) दृष्टम् = अवलोकितम् वा (अथवा देखा भी है) । नरकरिपुणा नरकस्य—रिपुस्तेन = माधवेन सार्धम् = समम् (नरकरिपु कृष्ण सहित) सभीम-किरीटिनाम् = भीमसेनार्जुनसहितानाम् तेषाम् = पापात्मनाम् (उन पापियों के) असृङ्मेदोमांसैः—असृञ्जि = रुधिराणि, मेदांसि = वसाः मांसानि = पललानि च तैः (रुधिर वसा मांस द्वारा) अयम् = एषः (यह) अहम् = अश्वत्थामा (मैं) दिशाम् = काष्ठानाम् (दिशाओं की) बलिम् = दिग्देवताबलिम् उपहारम् । करोमि = विदधामि (कर रहा हूँ) । हरिणीवृत्तम् । तद्यथा—न समर सलागाः षड् वेदैर्हयैर्हरिणी स्मृता ॥ २४ ॥

कृपः—भारद्वाजतुल्ये = द्रोणाचार्यसदृशे (भारद्वाज के समान) बाहु-शालिनि = भुजपराक्रमे (बाहुशाली) दिव्यास्त्रग्रामकोविदे—दिव्यास्त्राणाम् =

अमर्यादित, नराधम, शस्त्रधारी जिन आप लोगों के द्वारा यह भीषण (गुरु-ब्राह्मण वध) पातक किया गया, समर्थन किया गया अथवा देखा भी गया है, उन नरकरिपु कृष्ण सहित भीम अर्जुन आदि सभी (पापियों) के रक्त-मज्जा-मांस से यह मैं (अश्वत्थामा) दिग्बलि कर रहा हूँ ॥ २४ ॥

कृपाचार्य—हे वत्स ! भारद्वाज सदृश, बाहुशाली, दिव्यास्त्र समूह में दक्ष आप में सब कुछ सम्भव है ।

अश्वत्थामा—भो भोः पाण्डवमत्स्यसोमकमागधाद्याः क्षत्रियापसदाः !

पितुर्मूर्ध्नि स्पृष्टे ज्वलदनलभास्वत्परशुना,
कृतं यद्रामेण श्रुतिमुपगतं तन्न भवताम् ।
किमद्याऽश्वत्थामा तदरिरुधिरासारविघसं,
न कर्म क्रोधान्धः प्रभवति विधातुं रणमुखे ।। २५ ।।

ब्रह्मास्त्राद्यायुधानाम् ग्रामे = समूहे कोविदः = कुशलः, तस्मिन् (दिव्यास्त्र समूह में दक्ष) भवति = श्रीमति (आप में) किं न सम्भाव्यते = का सम्भावना न क्रियते (क्या सम्भव नहीं है) ।

अन्वयः—पितुः मूर्ध्नि स्पृष्टे ज्वलदनलभास्वत्परशुना रामेण यत् कृतम्, तद् भवतां श्रुतिं न उपगतम् ? क्रोधान्धः अश्वत्थामा अद्य रणमुखे अरिरुधिरासार-विघसं तत् कर्म विधातुं न प्रभवति किम् ? ।। २५ ।।

पितुरिति । पितुः = तातस्य ! मूर्ध्नि = शिरसि स्पृष्टे = स्पर्शं कुर्वति (छुये जाने पर) ज्वलदनलभास्वत्परशुना—ज्वलतः = दहतः अनलस्य = पावकस्येव भास्वान् = दीप्यमान् परशुः = कुठारो यस्य सः, तेन (जलती हुई आग के समान चमचमाते फरसे वाले) रामेण = परशुरामेण (परशुराम ने) यत् कर्म = एक-विंशतिवारं निश्छत्रियत्वम् कृतम् = विहितम् (जो कार्य किया) तत् = तथा-विधम् (वह) भवताम् = युष्माकम् सर्वेषाम् (आपके) श्रुतिम् = कर्णपथम् (कान में) न उपगतम् = न प्राप्तम् (नहीं पहुँचा) । क्रोधान्धः—क्रोधनान्धः = विचारशून्यः (क्रोधान्ध) अश्वत्थामा = अहम् (मैं) अद्य = सम्प्रति (आज, अब) रणमुखे = रणाङ्गणे (युद्ध भूमि में) अरिरुधिरासारविघसम्—अरीणाम् = शत्रूणाम् रुधिरस्य = रक्तस्य आसारः = निरन्तरवर्षणम् एव विघसः = पितृतर्पण-रूपं कर्म (शत्रुओं की रुधिर वर्षारूपी पितृतर्पण कर्म को) विधातुम् = कर्तुम् (करने को) न प्रभवति किम् = न समर्थो भवति किम् (क्या समर्थ नहीं है) । शिखरिणी वृत्तम् ।। २५ ।।

अश्वत्थामा—अरे अरे पाण्डव-मत्स्य सोमक मागध आदि नीच क्षत्रियो !

पिता के शिर को स्पर्श करने पर (सहस्रबाहु के प्रति) जलती हुई अग्नि के समान दीप्त परशु वाले जामदग्नि ने जो (इक्कीस वार निश्छत्रिय भूमि) कर्म किया, वह क्या आप लोगों ने नहीं सुना है ? आज क्रोधान्ध अश्वत्थामा युद्ध भूमि में शत्रुओं के रुधिरवर्षण रूपी पितृतर्पण कर्म करने के लिए क्या वह समर्थ नहीं है ? ।। २५ ।।

(सूतमुद्दिश्य) सूतः ! गच्छ त्वं सर्वोपकरणैः साङ्ग्रामिकैः सर्वायुधैरुपेतं महाहवलक्षणं नामाऽस्मत्स्यन्दनमुपनयः ।

सूतः—यदाज्ञापयति कुमारः (इति निष्क्रान्तः ।)

कृपः—वत्स ! अवश्यप्रतिकर्तव्येऽस्मिन्दारुणे निकाराग्नौ सर्वेषामस्माकं कोऽन्यस्त्वामन्तरेण शक्तः प्रतिकर्तुम् । किन्तु—

अश्वत्थामा—किमतः परम् ।

कृपः—सैनापत्येऽभिषिच्य भवन्तमिच्छामि समरभुवमवतारयितुम् ।

सर्वोपकरणैः—सर्वैः = समस्तैः उपकरणैः = वस्तुभिः (सभी वस्तुओं से) । सांग्रामिकैः = संग्रामसम्वन्धिभिः (युद्ध सम्वन्धी) सर्वायुधैः = सर्वास्त्रैः उपेतम् = युक्तम् (सभी आयुधों से युक्त) । महाहवलक्षणम्—महाहवस्य = भीषणयुद्धस्य लक्षणानि = चिह्नानि यस्मिन्स्तत् (भीषण युद्ध के चिह्नों वाला) । अस्मत्स्यन्दनम् = मम रथम् उपनय = आनय (ले जाओ) ।

सूतः—आज्ञापयति = आदिशति ।

कृपः—अवश्यप्रतिकर्तव्ये—अवश्यम् = नूनम् प्रतिकर्त्तव्ये = प्रतिविधातव्ये (अनिवार्य रूप से प्रतीकार करने योग्य) । दारुणे = कठिने । निकाराग्नौ = पराजयवह्नौ ('निकारः स्यात् परिभवेः' इत्यमरः) । अन्यः = अपरः । त्वामन्तरेण = त्वया विना (तुम्हारे अतिरिक्त) । प्रतिकर्त्तुम् = प्रतिविधातुम् (बदला ले पाने को) । शक्तः = समर्थः ।

अश्वत्थामा—अतः परम् = अस्मादधिकम् (इससे बढ़ कर) ।

कृपः—सैनापत्ये = सैन्याधिपतिपदे । अभिषिच्य = अभिषकं कृत्वा, नियुज्य (अभिषिक्त कर) समरभुवम् = युद्धभूमिम् (युद्ध भूमि को) अवतारयितुम् = प्रापयितुम् (उतारने को) । इच्छामि = अभिलषामि (चाहता हूँ) ।

(सूत को उद्देश्य कर) हे सूत ! जाओ, तुम समस्त उपकरणों तथा युद्ध सम्बन्धी सभी आयुधों से युक्त भयङ्कर युद्ध लक्षणों वाला हमारा रथ ले आओ ।

सूत—जो कुमार की आज्ञा । (यह कह कर निकल जाता है) ।

कृपाचार्य—वत्स ! अनिवार्य रूप से बदला लिये जाने योग्य इस परिभव रूपी अग्नि में हम सब लोगों में तुम्हारे सिवाय प्रतिकार करने में कौन दूसरा समर्थ है किन्तु—

अश्वत्थामा—इससे अधिक क्या ?

कृपाचार्य—सेनापति पद पर आपको अभिषिक्त कर युद्ध भूमि में उतारना चाहता हूँ ।

अश्वत्थामा—मातुल ! परतन्त्रमिदमकिञ्चित्करं च ।

कृपः—वत्स ! न खलु परतन्त्रं नाकिञ्चित्करं च । पश्य—

भवेदभीष्ममद्रोणं धार्तराष्ट्रबलं कथम् ।
यदि तत्तुल्यकक्षोऽत्र भवान्धुरि न युज्यते ॥ २६ ॥

कृतपरिकरस्य भवादृशस्य त्रैलोक्यमपि न क्षमं परिपन्थीभवितुं किं पुनर्युधिष्ठिरबलम् । तदेवं मन्ये परिकल्पिताभिषेकोपकरणः कौरवराजो नचिरात्त्वामेवाभ्युदीक्षमाणस्तिष्ठतीति ।

अश्वत्थामा—परतन्त्रम् = पराधीनम् । अकिञ्चित्करम् = व्यर्थम् ।

अन्वयः—यदि अत्र तत्तुल्यकक्ष्यः भवान् धुरि न युज्यते (तदा) अभीष्मम् अद्रोणं धार्तराष्ट्रबलं (बलम्) कथम् भवेत् ॥ २६ ॥

भवेदिति । यदि = चेत् । अत्र = अस्मिन् विषये । तत्तुल्यकक्ष्यः—तयोः = भीष्मद्रोणयोः तुल्या = समा कक्ष्या = श्रेणी यस्य तादृशः (उन दोनों की बराबरी करने वाले) भवान् = अश्वत्थामा (आप) । धुरि = अग्रे, सेनाधिपतौ (सेनापति पद पर) न युज्यते = नैव नियुज्यते (नहीं नियुक्त किये जाते हो) तदा, अभीष्मम् = भीष्मेण विना अद्रोणम् = द्रोणेन विना च धार्तराष्ट्रबलम् = कौरवबलम् (कौरवों की शक्ति) बलम् = सैन्यम् । कथं भवेत् = कथं स्यात् । पथ्यावक्त्रं वृत्तम् ॥ २६ ॥

कृतपरिकरस्य—कृतः = विहितः परिकरः = योद्धुं कटिबन्धनं येन सः (युद्ध के लिए सन्नद्ध) । त्रैलोक्यम् = त्रिभुवनम् परिपन्थीभवितुम् = शत्रुभवितुम् (रिपु बनने को) । युधिष्ठिरबलम् = कुन्तीपुत्र-सैन्यम् (युधिष्ठिर की सेना) एवं मन्ये = एवमनुमीये (ऐसा अनुमान करता हूँ) परिकल्पिताभिषेकोपकरणः—परिकल्पितानि = सज्जीकृतानि अभिषेकस्योपकरणानि = अभिषेकयोग्यवस्तूनि येन

अश्वत्थामा—हे मातुल ! यह पराधीन तथा व्यर्थ है ।

कृपाचार्य—वत्स ! यह न पराधीनता है और न व्यर्थ ही है । देखो—

यदि भीष्म तथा द्रोणाचार्य की श्रेणी वाले आप इस युद्ध में सेनापति पद पर अभिषिक्त नहीं किये जाते हैं तो भीष्म तथा द्रोण-हीन कौरव सेना वास्तविक सेना कैसे हो सकेगी ॥ २६ ॥

युद्ध करने के लिए सन्नद्ध आप जैसे वीर के विपरीत त्रैलोक्य भी समर्थ नहीं है युधिष्ठिर की सेना का तो कहना ही क्या । अतः मैं यह समझता हूँ कि अभिषेक करने की सामग्री तैयार किये हुये कौरवराज अविलम्ब तुम्हारी ही प्रतीक्षा कर रहे हैं ।

अश्वत्थामा—यद्येवं त्वरते मे परिभवाऽनलदह्यमानमिदं चेतस्तत्प्रतीकारजलावगाहनाय। तदहं गत्वा तातवधविषण्णमानसं कुरुपतिं सैनापत्यस्वयंग्रहणप्रणयसमाश्वासनया मन्दसन्तापं करोमि।

कृपः—वत्स ! एवमिदम्। अतस्तमेवोद्देशं गच्छावः।

(इति परिक्रामतः।)

(ततः प्रविशतः कर्णदुर्योधनौ।)

तथा (अभिषेकोपकरण से सज्जित)। कौरवराजः = कुरुनृपतिः। न चिरात् = अचिरात् (शीघ्र) त्वाम् = अश्वत्थामानम्। अभ्युदीक्षमाणः = प्रतीक्षमाणः (प्रतीक्षा करये हुये)।

अश्वत्थामा—त्वरते = शीघ्रतां करोति। मे = ममाश्वत्थाम्नः। परिभवानलदह्यमानम्—परिभव एवानलस्तेन दह्यमानम् = पराभववह्निज्वाल्यमानम् (पराभव रूपी अग्नि से दह्यमान)। इदम् = एतत्। चेतः=हृदयम् (यह हृदय)। तत्प्रतीकारजलावगाहनाय—तस्य=पितृवधस्य प्रतिकारः = प्रतिशोधः एव जलम् = पानीयम् तस्मिन् अवगाहनाय = निमज्जनाय (उसके बदला रूपी जल में अवगाहन के लिए)। तातवधविषण्णमानसम्—तातस्य = पितुः, वधः = हत्या, तेन विषण्णम् = व्याकुलम् मनो यस्य सः, तम् (आचार्य के वध से व्याकुल हृदय)। कुरुपतिम् = दुर्योधनम् (कुरुपति को) सैनापत्यस्वयंग्रहणप्रणयसमाश्वासनया—सैनापत्यस्य = सेनापति-पदस्य यत् स्वयमेव ग्रहणम् = स्वीकरणम्, तत्र यः प्रणयः = प्रीतिः, तेन या समाश्वासना = सान्त्वना, तया (सेनापति पद स्वयं ग्रहण करने के आग्रह द्वारा प्रिय सान्त्वना देकर)। मन्दसन्तापम्—मन्दः = अल्पः सन्तापः= मनस्तापः यस्य तम् (मनस्ताप हल्का) करोमि = विदधामि (करता हूँ)।

कृपः—उद्देशम् = स्थानम् (स्थान को)। गच्छावः = चलावः (हम दोनों चलते हैं)।

अश्वत्थामा—यदि ऐसा है तब तो मेरा पराभव रूपी अनल से व्याकुल हृदय उससे बदला लेने के लिये शीघ्रता कर रहा है। (अतः) पिताजी के वध से विषण्ण हृदय कुरुपति के सेनापति पद को स्वयं ग्रहण करने का आग्रह करने की प्रणय सान्त्वना द्वारा सन्ताप को हल्का करता हूँ।

कृपाचार्य—वत्स ! ऐसा ही है। अतः हम दोनों वहीं चलते हैं।

(यह कह कर दोनों घूमते हैं)।

(तदनन्तर कर्ण तथा दुर्योधन प्रवेश करते हैं)

दुर्योधनः—अङ्गराज !

तेजस्वी रिपुहतबन्धुदुःखपारं,
बाहुभ्यां व्रजति धृतायुधप्लवाभ्याम् ।
आचार्यः सुतनिधनं निशम्य सङ्ख्ये,
किं शस्त्रग्रहसमये विशस्त्र आसीत् ॥ २७ ॥

अथवा सूक्तमिदमभियुक्तैः 'प्रकृतिर्दुस्त्यजेति'। यतः शोकान्धमनसा तेन विमुच्य क्षत्रधर्मकार्कश्यं द्विजातिधर्मसुलभो दैन्यपरिग्रहः कृतः ।

अन्वयः—तेजस्वी धृतायुधप्लवाभ्यां बाहुभ्यां रिपुहतबन्धुदुःखपारं व्रजति । आचार्यः संख्ये सुतनिधनं निशम्य शस्त्रग्रहणसमये विशस्त्रः किम् आसीत् ॥ २७ ॥

तेजस्वीति । हे अङ्गराज = अयि कर्ण ! तेजस्वी = ओजस्वी । धृतायुधप्लवाभ्याम्—धृतौ = गृहीतौ आयुधान्येव प्लवौ = अस्त्रोडुपौ याभ्याम् तौ ताभ्याम् (अस्त्र रूपी उडुप पकड़े हुये) ('उडुपं तु प्लवः कोलः' इत्यमरः) । बाहुभ्याम् = भुजाभ्याम् (बाहों से) । रिपुहतबन्धुदुःखपारम्—रिपुणा हतो यो बन्धुः, तस्य यद्दुःखम्, तस्यपारम् = शत्रुमारितबन्धुशोकतटम् (शत्रु द्वारा मारे गये बन्धुशोक रूपी तट पर) । व्रजति = गच्छति (पहुँचता है) । आचार्यः = गुरुद्रोणः । संख्ये = युद्धे (युद्ध में) । सुतनिधनम् = पुत्रमरणम् । निशम्य = श्रुत्वा (सुन कर) शस्त्रग्रहणसमये—शस्त्रस्य = आयुधस्य ग्रहणसमये = ग्रहणकाले (अस्त्र ग्रहण के समय) । विशस्त्र—वि = विगतम् शस्त्रं येन सः = त्यक्तायुधः (शस्त्र रहित) किम् = किमर्थम् । आसीत् = अभवत् । अत्र रूपकालङ्कारः । प्रहर्षिणी वृत्तम् ॥ २७ ॥

अभियुक्तैः = नीतिज्ञैः (नीतिज्ञ लोगों द्वारा) सूक्तम् = शोभनं कथितम् (ठीक ही कहा गया है) । प्रकृतिः = स्वभावः । दुस्त्यजा = दुःखेन त्याज्या भवति (स्वभाव बड़ी कठिनता से बदलता है) । यतः = यस्मात्कारणात् (क्योंकि) शोकान्धमनसा—शोकेन = दुःखेन (पुत्रवधकृतम्) अन्धम् मनः = चेतो यस्य तेन (शोकान्ध मन वाले) तेन = द्रोणेन (उन्होंने) । क्षत्रधर्मकार्क-

---

दुर्योधन—हे अङ्गराज ! तेजस्वी (आचार्य जैसे) आयुध रूपी प्लव (घन्नई) हाथों में लेकर शत्रु द्वारा मारे गये गये बन्धुओं के शोक तट पर पहुँचता है । परन्तु आचार्य जी युद्ध में पुत्र-निधन सुन कर शस्त्र धारण के समय पर शस्त्र हीन क्यों थे ॥२७॥

अथवा नीतिज्ञ पुरुषों ने ठीक ही कहा है मनुष्य अपने स्वभाव को बड़ी कठिनता से छोड़ पाता है । यही कारण है कि शोकान्ध हृदय आचार्य जी ने क्षत्रिय धर्मोचित कर्कशता को छोड़कर ब्राह्मण सुलभ दीनता ग्रहण कर ली ।

कर्णः—राजन् ! कौरवेश्वर ! न खल्विदमेवम् ।

दुर्योधनः—कथं तर्हि ।

कर्णः—एवं किल द्रोणस्याऽभिप्राय आसीत्—यथाऽश्वत्थामा मया पृथिवीराज्येऽभिषेक्तव्य इति । तस्याभावाद् वृद्धस्य मे ब्राह्मणस्य वृथा शस्त्रग्रहणमिति तथा कृतवान् ।

दुर्योधनः—(सशिरःकम्पम् ।) एवमिदम् ।

कर्णः—एतदर्थं च कौरवपाण्डवपक्षपातप्रवृत्तमहासङ्ग्रामस्य राजकस्य परस्परक्षयमपेक्षमाणेन तेन प्रधानपुरुषवध उपेक्षा कृता ।

श्यम्—क्षत्रधर्मस्य = क्षत्रियत्वस्य कार्कश्यम् = कर्कशताम् (क्षत्रिय धर्म की कठोरता को) । विमुच्य = त्यक्त्वा (छोड़ कर) । द्विजातिसुलभः—द्विजातीनाम् = ब्राह्मणानाम् सुलभः = सरलः (ब्राह्मण सुलभ) दैन्यपरिग्रहः = दीनताग्रहणम् । कृतः = विहितः (किया) ।

कर्णः—कौरवेश्वर = हे कौरवराज ।

दुर्योधनः—तर्हि = तस्मात् (तो) ।

कर्णः—अभिप्रायः = आशयः (अभिप्राय) यया = द्रोणेन । पृथ्वीराज्ये = भूपतिपदे (नृपतिपद पर) अभिषेक्तव्यः = नियोक्तव्यः (अभिषिक्त करना चाहिये) । तस्य = सुतस्य (पुत्र अश्वत्थामा के) अभावात् = हानित्वात् (अभाव के कारण) । वृद्धस्य = जठरस्य । मे = मम द्रोणस्य (मुझ वृद्धका) ब्राह्मणस्य = विप्रस्य । शास्त्रग्रहणम् = आयुधधारणम् । वृथा = व्यर्थम् (वेकार है) तथा कृतवान् = शास्त्रं त्यक्तवान् (शस्त्रत्याग किया) ।

दुर्योधनः—सशिरःकम्पम् = शिरश्चालयित्वा स्वीकार्य (शिर हिलाकर, स्वीकार करके) एवम् इदम् = एतदुचितम् (यही बात ठीक है) ।

कर्णः—कौरवपाण्डवपक्षपातप्रवृत्तमहासंग्रामस्य—कौरवपाण्डवयोर्यः पक्ष-

---

कर्ण—राजन् ! कौरवेश्वर ! वास्तव में ऐसा नहीं है ।

दुर्योधन—तो फिर क्या है ?

कर्ण—वास्तव में द्रोण का अभिप्राय था—"मुझे अश्वत्थामा को भूपतिपद पर अभिषिक्त करना था । उसके न रहने से मुझ वृद्ध ब्राह्मण का शस्त्र-धारण करना व्यर्थ है" । इसीलिये अस्त्र त्याग किया ।

दुर्योधन—(शिर हिलाते हुए) ऐसा ही यह है ।

कर्ण—और इसीलिये कौरव पाण्डवों के पक्षपात में लगे राजसमूह के महासंग्राम में परस्पर क्षय की अपेक्षा करते हुये उन्होंने प्रमुख वीरों के वध में उदासीनता की ।

दुर्योधनः—उपपन्नमिदम् ।

कर्णः—अन्यच्च राजन् ! द्रुपदेनाऽप्यस्य बाल्यात्प्रभृत्यभिप्रायवेदिना न स्वराष्ट्रे वासो दत्तः ।

दुर्योधनः—साधु, अङ्गराज ! साधु । निपुणमभिहितम् ।

कर्णः—न चाऽयं ममैकस्याऽभिप्रायः । अन्येऽभियुक्ता अपि नैवेदमन्यथा मन्यन्ते ।

पातः = समर्थनम्, तेन प्रवृत्तः = प्रारब्धः महासंग्रामः = महाभारतयुद्धम्, तस्य (कौरव-पाण्डवों के पक्षपात से होने वाले महासंग्राम के) राजकस्य = नृप-समूहस्य (राज-समूह के) । परस्परम् = अन्योन्यम् क्षयम् = विनाशम् अपेक्ष-माणेन = अपेक्षा क्रियमाणेन (अपेक्षा करते हुए) तेन = द्रोणेन (उन्होंने) प्रधानपुरुषवधे—प्रधान-पुरुषाणाम् = प्रमुखवीराणाम् वधे = मारणकार्ये (मुख्य जनों—वीरों के मारे जाने में) । उपेक्षा = उदासीनता (लापरवाही) कृता = विहिता ।

दुर्योधनः—उपपन्नम् = युक्तियुक्तम् (युक्ति-संगत) ।

कर्णः—अन्यत् = अपरम् च (और भी) । द्रुपदेन = विराट्राजेनापि (द्रुपद ने भी) बाल्यात्प्रभृत्यभिप्रायवेदिना = आबाल्यज्ञाताभिप्रायेण (बचपन से लेकर अभिप्राय समझने वाले ने) । स्वराष्ट्रे = विराट्राज्ये (अपने राज्य में) । वासः = निवासः न दत्तः = नैव प्रदत्तः (निवास नहीं दिया था) ।

दुर्योधनः—निपुणम् = अतियुक्तम् (बहुत ठीक) । अभिहितम् = कथितम् (कहा है) ।

कर्णः—अयम् = एषः (यह) मम = मे कर्णस्य (मेरा) एकस्य = एका-किनः (अकेले का) अभिप्रायः = आशयः । अन्ये=अपरे । अभियुक्ताः=नीतिज्ञाः अपि । इदम् = एतत् अन्यथा = विरुद्धम् (विपरीत) । मन्यन्ते = जानन्ति (मानते हैं) ।

दुर्योधन—यह युक्ति-संगत है ।

कर्ण—हे राजन् ! और भी—बचपन से ही इनके अभिप्राय को समझने वाले द्रुपद ने भी (इसीलिये) अपने राष्ट्र में इन्हें रहने नहीं दिया ।

दुर्योधन—धन्य है अङ्गराज ! धन्य है । तुमने बिल्कुल ठीक कहा ।

कर्ण—यह मुझ अकेले का ही विचार नहीं है । दूसरे नीतिज्ञ पुरुष भी इस विचार को अन्यथा (विपरीत) नहीं मानते हैं ।

दुर्योधनः—एवमेतत् । कः सन्देहः ?

दत्त्वाऽभयं सोऽतिरथो बध्यमानं किरीटिना ।
सिन्धुराजमुपेक्षेत नैवं चेत्कथमन्यथा ॥ २८ ॥

कृपः—(विलोक्य ।) वत्स ! एष दुर्योधनः सूतपुत्रेण सहास्यां न्यग्रोधच्छायायामुपविष्टस्तिष्ठति । तदुपसर्पावः । (तथा कृत्वा ।)

उभौ—विजयतां विजयतां कौरवेश्वरः ।

दुर्योधनः—(दृष्ट्वा ।) अये ! कथं कृपोऽश्वत्थामा च । (आसनादवतीर्य कृपं प्रति ।) गुरो ! अभिवादये । (अश्वत्थामानमुद्दिश्य ।)

दुर्योधनः—कः सन्देहः = नास्त्यत्र संशयः (इसमें क्या संदेह) ।

अन्वयः—एवं न चेत् अन्यथा कथम्, अतिरथः सः अभयं दत्वा किरीटिना वध्यमानं सिन्धुराजम् उपेक्षेत ॥ २८ ॥

दत्वेति । एवम् = इत्थम् । न चेत् = यदि नास्ति । अन्यथा = एकप्रकारेण (एक प्रकार से) कथम् = केन प्रकारेण (कैसे) । अतिरथः = महारथः सः = द्रोणः । अभयम् दत्वा = निर्भयं कृत्वा (निडर वनाकर) । किरीटिना = अर्जुनेन (अर्जुन द्वारा) वध्यमानम् = हन्यमानम् (मारे जाते हुये) । सिन्धुराजम् = जयद्रथम् (सिन्धुराज को) कथम् = किमर्थम् । उपेक्षेत = तिरस्कुर्यात् (उपेक्षा करते) । पथ्यावक्त्रं वृत्तम् ॥ २८ ॥

कृपः—विलोक्य = अवलोक्य (देखकर) । सूतपुत्रेण = कर्णेन सह = साकम् (कर्ण के साथ) अस्याम् = एतस्याम् (इस) न्यग्रोधच्छायायाम्—न्यग्रोधस्य= वटवृक्षस्य छायायाम् = प्रतिच्छाये (बरगद की छाँह में) । उपसर्पावः = पार्श्वं चलावः । तथा कृत्वा = उपगम्य (समीप जाकर) ।

उभौ—विजयताम् = जयतु (जय हो) ।

दुर्योधनः—आसनात् = विष्टरात् (आसन से) अवतीर्य = अवतरणं कृत्वा

दुर्योधन—ऐसा ही है । (इसमें) क्या सन्देह ।

यदि ऐसा न होता तो अतिरथी द्रोण जयद्रथ को निर्भय बना कर अर्जुन द्वारा मारे जाते हुये उसकी उपेक्षा क्यों करते ? ॥ २८ ॥

कृपाचार्य—(देखकर) वत्स ! यह दुर्योधन सूतपुत्र कर्ण के साथ इस बरगद की छाया में बैठे हैं । अतः उनके पास चलें । (समीप जाकर)

दोनों—कुरुराज की जय हो, जय हो ।

दुर्योधन—(देख कर) अहा—कृपाचार्य और अश्वत्थामा हैं । (आसन से उतर कर कृपाचार्य से) हे गुरो ! मैं प्रणाम करता हूँ । (अश्वत्थामा को लक्ष्य कर)

आचार्यपुत्र !

एह्यस्मदर्थंहततात ! परिष्वजस्व,
क्लान्तैरिदं मम निरन्तरमङ्गमङ्गैः ।
स्पर्शस्तवैष भुजयोः सदृशः पितुस्ते,
शोकेऽपि यो महति निर्वृत्तिमादधाति ॥ २९ ॥

(आलिङ्ग्य पार्श्वं उपवेशयति ।)

(अश्वत्थामा वाष्पमुत्सृजति ।)

कर्णः—द्रौणायने ! अलमत्यर्थमात्मानं शोकानले प्रक्षेप्तुम् ।

(उतर कर) गुरो = हे आचार्य ! अभिवादये = प्रणयामि (मैं प्रणाम करता हूँ) । उद्दिश्य = अभिलक्ष्य (लक्ष्य करके) ।

अन्वयः—हे अस्मदर्थंहततात ! एहि । क्लान्तैः अङ्गैः इदं मम अङ्गं निरन्तरं परिष्वजस्व । तव भुजयोः एषः स्पर्शः ते पितुः सदृशः यः महति शोके अपि निर्वृत्तिम् आदधाति ॥ २९ ॥

एहीति । हे अस्मदर्थंहततात—अस्मदर्थम् = अस्माकं हेतोः हतः = मारितः तातः = जनको यस्य तत्सम्बुद्धौ (हे हमारे लिए मारे गये पिता वाले द्रोणपुत्र !) एहि = आगच्छ (आओ) । क्लान्तैः = दुःखितैः, अङ्गैः = शरीरावयवैः (दुःखी अंगों से) । इदम् = एतत् (यह) मम = मे (मेरा) अङ्गम् = शरीरम् । निरन्तरम् = अनवरतम् (निरन्तर) परिष्वजस्व = आलिङ्ग (आलिङ्गन करो) । तव = तेऽश्वत्थाम्नः (तुम्हारी) भुजयोः = बाह्वोः (भुजाओं का) एषः = अयम् स्पर्शः = आलिङ्गनम् (स्पर्श) । ते = तव पितुः = जनकस्य द्रोणस्य, सदृशः = समः (अस्ति) यः = स्पर्शः (जो) महतिशोके = घोरदुःखे अपि । निर्वृतिम् = शान्तिम् आदधाति = करोति । अत्रोपमालङ्कारः । वसन्ततिलका वृत्तम् ॥ २९ ॥

कर्णः—हे द्रोणायने—द्रोणस्यापत्यं पुमान् द्रौणायनिस्तत्सम्बुद्धौ = अयि-द्रोणजात ! अत्यर्थम् = अत्यन्तम् । आत्मानम् = स्वम् (अपने को) शोकानले—

हे आचार्य पुत्र ! हमारे लिये पितृवध सहने वाले ! आओ, क्लेशयुक्त अङ्गों से इस मेरे शरीर का निरन्तर आलिङ्गन करो । तुम्हारी भुजाओं का यह स्पर्श तुम्हारे पिता के समान ही है जो कि महान् शोक में भी शान्ति प्रदान करता है ॥ २९ ॥

(आलिंगन करके, समीप बिठला लेता है)

(अश्वत्थामा आँसू बहाते हैं)

कर्ण—हे द्रोणायने ! अपने को अत्यन्त शोकानल में मत डालो ।

दुर्योधनः—आचार्यपुत्र ! को विशेष आवयोरस्मिन्व्यसनमहार्णवे । पश्य—

तातस्तव प्रणयवान्स पितुः सखा मे,
शस्त्रे यथा तव गुरुः स तथा ममापि ।
किं तस्य देहनिधने कथयामि दुःखं
जानीहि तद् गुरुशुचा मनसा त्वमेव ॥ ३० ॥

शोक एवानलः तस्मिन् = शोकवह्नौ (शोकाग्नि में) । प्रक्षेप्तुम् = पातयितुम् (डालने को) अलम् = निषेधेऽव्ययम् ।

दुर्योधनः—आवयोः = मम दुर्योधनस्य, तेऽश्वत्थाम्नश्च (हम दोनों के) । अस्मिन् = एतस्मिन् व्यसनमहार्णवे—व्यसने = पितृवधात्मके दुःखे एव महार्णवे = महासागरे (पितृवध रूपी महासागर में) । कः विशेषः = कः विशिष्टः (कौन विशेष है) । पश्य = अवलोकय (देखो) ।

अन्वयः—सः तव तातः मे पितुः प्रणयवान् सखा । सः यथा शस्त्रे तव गुरुः तथा मम अपि । तस्य देह-निधने किं दुःखं कथयामि, गुरुशुचा मनसा तत् त्वम् एव जानीहि ॥ ३० ॥

तात इति । सः = असौ, तव = ते अश्वत्थाम्नः । तातः = जनकः (पिता) मे = मम दुर्योधनस्य पितुः = जनकस्य । प्रणयवान् = प्रियः सखा = मित्रम् (आसीत्) । सः = आचार्यः । यथा = यादृशः शस्त्रे = आयुधशिक्षणे । तव गुरुः = त आचार्यः (तुम्हारे गुरु थे) तथा = तादृशः ममापि आचार्यः (आसीत्) । तस्य = गुरोः (उनके) देह-निधने = मरणे (मृत्यु पर) किं दुखं कथयामि = किं शोकं वर्णयामि (शोक को क्या कहूँ) । गुरुशुचा = महता दुःखिना । मनसा = हृदयेन (अत्यन्त दुःखी हृदय से) । तत् = दुःखम् त्वमेव = आत्मनैव (अपने आप ही) जानीहि = अवेहि (जानते हो) । वसन्ततिलका वृत्तम् ॥ ३० ॥

दुर्योधन—हे आचार्यपुत्र ! (आचार्य जी के वध रूपी) इस महाविपत्ति का सागर, हम दोनों को एक-सा ही है । देखो—

वे तुम्हारे पिता जी हमारे पिताजी के प्रणयवान् मित्र थे । यह शस्त्रविद्या में जैसे तुम्हारे गुरु थे वैसे ही मेरे भी थे । उनके निधन पर कितना दुःख है यह मैं क्या कहूँ, आप अपने अत्यन्त दुःखी मन से ही समझ लें ॥ ३० ॥

कृपः—वत्स ! यथाह कुरुपतिस्तथैवैतत् ।

अश्वत्थामा—राजन् ! एवं पक्षपातिनि त्वयि युक्तमेव शोकभारं लघूकर्तुम् । किन्तु—

मयि जीवति मत्तातः केशग्रहमवाप्तवान् ।
कथमन्ये करिष्यन्ति पुत्रेभ्योऽपुत्रिणः स्पृहाम् ॥ ३१ ॥

कर्णः—द्रौणायने ! किमत्र क्रियते यदनेनैव सर्वपरिभवपरित्राणहेतुना शस्त्रमुत्सृजता तादृशीमवस्थामात्मा नीतः ।

कृपः—यथा = यादृशम् (जैसा) । आह = उक्तवान् (कहा) कुरुपतिः = कौरवाधिपः ।

अश्वत्थामा—शोकभारम् = दुःखभारम् (दुःख के बोझ को) लघूकर्त्तुम् = मन्दयितुम् (हल्का करने को) ।

अन्वयः—मयि जीवति मत्तातः केशग्रहम् अवाप्तवान् । अन्ये अपुत्रिणः पुत्रेभ्यः स्पृहां कथं करिष्यन्ति ॥ ३१ ॥

मयीति । मयि जीवति = अश्वत्थाम्नि सजीवे सति (मेरे जीवित रहते) मत्तातः = मम जनकः (मेरे पिताजी) (यदा) केशग्रहम् = केशेषु गृहीत्वा वधम् (केशग्रहण को) । अवाप्तवान् = प्राप्तवान् । (तदा) अन्ये = अपरे अपुत्रिणः = अपुत्राः जनाः (पुत्रहीन) । पुत्रेभ्यः = सुतेभ्यः (पुत्र होने के लिए) स्पृहाम् = अभिलाषाम् (चाह) कथं करिष्यति = केन प्रकारेण विधास्यन्ति (कैसे करेंगे) । ते पुत्रोत्पादनाद्विमुखाः भविष्यन्ति, इत्याशयः । पथ्यावक्त्रं वृत्तम् ॥ ३१ ॥

कर्णः—हे द्रौणायने = अयि द्रोणपुत्र ! अत्र = एतत्प्रतीकारे (इसके बदले में) किं क्रियते = किं विधीयते (क्या किया जा सकता है) सर्वपरिभवत्राणहेतुना—सर्वेषाम् = समस्तानाम् परिभवेभ्यः = परामवेभ्य स्त्राणे = रक्षणे हेतुः = कारणम् यस्तेन (सब की पराभवों से रक्षा के कारण हेतु) । शस्त्रम् = आयुधम् उत्सृ-

---

कृपाचार्य—वत्स ! जैसा कुरुराज कहते हैं, वैसा ही है ।

अश्वत्थामा—राजन् ! इस प्रकार के पक्षपाती आप में शोक-भार हल्का करना उचित ही है । किन्तु—

मेरे जीवित रहते हुए मेरे पिता जी केश खींच कर मारे गये (मैं उन्हें न बचा सका), (अब) अन्य पुत्रहीन व्यक्ति पुत्र होने के लिये कामना क्यों किया करेंगे ।

कर्ण—हे द्रोणपुत्र ! इस विषय में क्या किया जाय । जब कि सबको आपत्तियों से बचाने के हेतु भूत आपके पिताजी ने स्वयम् अस्त्र त्याग कर अपने को इस दशा को पहुँचा लिया ।

अश्वत्थामा—अङ्गराज ! किमाह भवान्किमत्र क्रियत इति । श्रूयतां यत्क्रियते ।

यो यः शस्त्रं बिभर्ति स्वभुजगुरुमदः पाण्डवीनां चमूनां
यो यः पाञ्चालगोत्रे शिशुरधिकवया गर्भशय्यां गतो वा ।
यो यस्तत्कर्मसाक्षी चरति मयि रणे यश्च यश्च प्रतीपः
क्रोधान्धस्तस्य तस्य स्वयमपि जगतामन्तकस्याऽन्तकोऽहम् ॥ ३२ ॥

जता = परित्यजता (परित्याग करते हुये) तादृशीम् = तथाविधाम् शोचनीयाम् अवस्थाम् = दशाम् । आत्मा = जीवः नीतः = प्रापितः ।

अश्वत्थामा—अङ्गराज = हे कर्ण । श्रूयताम् = आकर्ण्यताम् (सुनो) । यत्क्रियते = यद्विधीयते ।

अन्वयः—पाण्डवीनां चमूनां स्वभुजगुरुमदः यः यः शस्त्रं बिभर्ति । पाञ्चाल-गोत्रे यः यः शिशुः, अधिकवयाः, गर्भशय्यां गतः वा, यः यः तत्कर्मसाक्षी, मयि रणे चरति, यः च यः च प्रतीपः, क्रोधान्धः अहं जगताम् अन्तकस्य अपि इह तस्य तस्य स्वयम् अन्तकः अस्मि ॥ ३२ ॥

यो य इति । पाण्डवीनाम् = पाण्डवसम्बन्धिनीनाम् । चमूनाम् = सैन्यानाम् (मध्ये) स्वभुजगुरुमदः—स्वस्य भुजौ स्वभुजौ, तयोः गुरुः मदो यस्य स = आत्म-बाहुबलाभिमानः, यः यः = यो यो वीरः । शस्त्रम् = आयुधम् । बिभर्ति = धारयति (शस्त्र धारण करता है) पाञ्चालगोत्रे = पाञ्चालवंशे । यः यः शिशुः = यो यो बालः, अधिकवयाः = वयस्काः वा = अथवा गर्भशय्याम् = गर्भे गतः = प्रविष्टः । यः यः = यो यो वीरः । तत्कर्मसाक्षी—तत्कर्मणः = गुरुवधकर्मणः साक्षी = साक्ष्यरूपः । मयि = अश्वत्थामनि । रणे = युद्धे । चरति = विचरति (विचरण करता है) । यः यः = यो यो वीरः । प्रतीपः = विपरीतकारी (विरुद्ध कार्य करने वाला) क्रोधान्धः = रोषविचारशून्यः । अहम् = अश्वत्थामा । जगताम् = लोकानाम्

अश्वत्थामा—हे अङ्गराज ! आपने क्या कहा—'इसमें क्या किया जाय' ? सुनो, मेरे द्वारा (जो) किया जा सकता है ।

पाण्डवों के पक्ष की सेनाओं के मध्य अपनी भुजाओं के गुरु मद वाले जो-जो वीर शस्त्र धारण करने वाले हैं, पाञ्चालवंश में जो जो बालक, युवक अथवा गर्भस्थ हैं तथा जिस जिसने पिता जी के वध-कर्म को देखा है, मेरे रणभूमि में पराक्रम करने पर जो जो विपरीत युद्ध करने वाले हैं, क्रोध विमूढ मैं इस युद्ध में यमराज का भी (उन सबों का) अन्त करने वाला हूँ ॥ ३२ ॥

अपि च। भो जामदग्न्यशिष्य कर्ण !

देशः सोऽयमरातिशोणितजलैर्यस्मिन्ह्रदाः पूरिताः
क्षत्रादेव तथाविधः परिभवस्तातस्य केशग्रहः।
तान्येवाऽहितशस्त्रघस्मरगुरूण्यस्त्राणि भास्वन्ति मे,
यद्रामेण कृतं तदेव कुरुते द्रौणायनिः क्रोधनः ॥ ३३ ॥

अन्तकस्य = विनाशकस्य यमस्यापि (लोक संहारक यम का भी) इह = अत्र। तस्य तस्य = सर्वविधस्य। स्वयम् = आत्मना (अपने आप)। अन्तकः = नाशकः अहमस्मि। अत्र रूपकालङ्कारः। स्रग्धरा वृत्तम् ॥ ३२ ॥

जामदग्न्यशिष्य—जमदग्नेः पुत्रः जामदग्न्य = परशुरामः, तस्य शिष्यः = अन्तेवासी, तत्सम्बुद्धौ।

अन्वयः—यस्मिन् ह्रदाः अरातिशोणितजलैः पूरिताः सः अयं देशः, तथाविधः तातस्य केशग्रहः परिभवः क्षत्रात् एव, तानि अहितशस्त्रघस्मरगुरूणि भास्वन्ति मे अस्त्राणि। यत् रामेण कृतं तदेव क्रोधनः द्रौणायनिः कुरुते ॥ ३३ ॥

देश इति। यस्मिन् = यत्र। ह्रदाः = जलाशयाः। अरातिशोणितजलैः—अरातीनाम् = शत्रूणाम् शोणितम् एव = रुधिरमेव जलानि तैः (शत्रुओं के रुधिर रूपी जल से) पूरिताः = भृताः (सन्ति)। सः = तथाविधः। अयम् = एषः देशः = कुरुक्षेत्रदेशः वर्तते। तथाविधः = तादृशः। तातस्य = पितुः। केशग्रहः = केशग्रहण-रूपवधः परिभवः = पराभवः (केश ग्रहण रूप वध वाला पराभव)। क्षत्रात् = क्षत्रियादेव (क्षत्रिय पुरुष से ही)। तानि = तादृशानि। अहितशस्त्रघस्मरगुरूणि—अहितानाम् = शत्रूणाम् यानि शस्त्राणि = आयुधानि, तेषां घस्मराणि = भक्षकाणि, अत एव गुरूणि=प्रचण्डानि (शत्रुओं के शस्त्रों के घातक और प्रचण्ड)। भास्वन्ति = प्रदीप्तानि (चमचमाने वाले) मे=मम। अस्त्राणि = प्रहरणानि (वर्तन्ते)। (अन्यत् किम्) यत् = एकविंशतिवारं निःक्षत्रियत्वम् कर्म। रामेण = परशुरामेण। कृतम् = विहितम्। तदेव = तत्क्षत्रियविना-

---

और भी—हे जामदग्न्यशिष्य कर्ण !

यह वही देश है जिसमें शत्रुओं के रुधिर जल से जलाशय भरे गये थे। जमदग्नि के समान ही मेरे पिताजी का केश-ग्रहण (बाल खींच कर वध) क्षत्रिय (धृष्टद्युम्न) द्वारा ही किया गया है। जामदग्न्यास्त्रों के समान ही शत्रुओं के शस्त्रों को खा जाने वाले प्रचण्ड देदीप्यमान मेरे अस्त्र भी हैं। (और अधिक क्या कहूँ) जो (पितृवध के प्रतिकार में) जामदग्न्य परशुराम ने कर्म (२१ बार क्षत्रियविहीन भूमि) किया था वैसा ही (क्रूर) कर्म द्रोणपुत्र (अश्वत्थामा) भी अब करने जा रहा है ॥ ३३ ॥

दुर्योधनः—आचार्यपुत्र! तस्य तथाविधस्याऽनन्यसाधारणस्य ते वीरभावस्य किमन्यत्सदृशम्।

कृपः—राजन्! सुमहान्खलु द्रोणपुत्रेण वोढुमध्यवसितः समरभरः। तदहमेवं मन्ये भवता कृतपरिकरोऽयमुच्छेत्तुं लोकत्रयमपि समर्थः। किं पुनर्यौधिष्ठिरबलम्। अतोऽभिषिच्यतां सैनापत्ये।

दुर्योधनः—सुष्ठु युज्यमानमभिहितं युष्माभिः, किन्तु प्राक्प्रतिपन्नोऽयमर्थोऽङ्गराजस्य।

शकमेव कर्म। क्रोधनः = क्रोधान्धः द्रौणायनिः = द्रोणपुत्रोऽश्वत्थामा। कुरुते = विदधाति। अत्र निदर्शनाऽलङ्कारः। शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम्॥ ३३॥

दुर्योधनः—तथाविधस्य = तादृशस्य। अनन्यसाधारणस्य—न अन्यः साधारणः, अनन्यसाधारणः, तस्य = अलौकिकस्य तस्य वीरभावस्य = वीररूपस्य ते = तवाश्वत्थाम्नः (असाधारण वीर रूप आपके) सदृशम् = समम् (समान) अन्यत् किम् = अपरं किं सम्भवति (और क्या सम्भव है)।

कृपः—द्रोणपुत्रेण = द्रौणायनिना। सुमहान् = अतिमहान्। वोढुम् = धातुम् (वहन करने को)। अध्यवसितः = निश्चितः (निश्चय किया है)। समरभारः = युद्धभारः। तत् = अतः। अहम् = कृपः। एवं मन्ये = एवमनुमीये (मैं ऐसा समझता हूँ) भवता = कुरुपतिना। कृतपरिकरः = विहितसन्नाहः (तैयार किया हुआ)। अयम् = एषः (यह अश्वत्थामा) लोकत्रयम्—त्रयाणां लोकानां समाहारः इति लोकत्रयम् (तीनों लोकों को)। उच्छेत्तुम् = विनाशयितुम् (नष्ट कर देने को)। समर्थः = सक्षमः। पुनः = भूयः। यौधिष्ठिरबलम् = युधिष्ठिरसम्बन्धिसैन्यम् किम् (युधिष्ठिर के पक्ष की सेनाओं की क्या)। अभिषिच्यताम् = अभिषेकं करोतु। सैनापत्ये = सेनापति पदे।

दुर्योधनः—सुष्ठु = शोभनम् (अच्छा)। युज्यमानम् = उपयुक्तम् (ठीक)।

दुर्योधन—हे आचार्य पुत्र! इस प्रकार अनन्य साधारण वीर रूप तुम्हारे लिए और क्या योग्य हो सकता है।

कृपाचार्य—हे राजन्! वास्तव में द्रोण पुत्र के द्वारा निश्चित किया गया यह समरभार अत्यन्त महान् है। अतः मैं ऐसा अनुमान करता हूँ कि आपके द्वारा सज्जीकृत (सन्नद्ध) यह युधिष्ठिर सम्बन्धी सैन्य बल क्या त्रिभुवन को नष्ट करने के भी समर्थ है। अतएव आप इन्हें सेनापति पद पर अभिषिक्त कर दें।

दुर्योधन—ठीक, आपने बहुत ठीक कहा। किन्तु यह पद पूर्व अङ्गराज कर्ण के लिए निश्चित किया जा चुका है।

कृपः—राजन् ! असदृशपरिभवशोकसागरे निमज्जन्तमेनमङ्गराजस्याऽर्थे नैवोपेक्षितुं युक्तम् । अस्याऽपि तदेवाऽरिकुलमनुशासनीयम् । अतः किमस्य पीडा न भविष्यति ।

अश्वत्थामा—राजन् कौरवेश्वर ! किमद्यापि युक्ताऽयुक्तविचारणया ।

प्रयत्नपरिबोधितः स्तुतिभिरद्य शेषे निशा-
मकेशवमपाण्डवं भुवनमद्य निःसोमकम् ।

अभिहितम् = कथितम् (कहा है) । युष्माभिः = भवद्भिः (आपने) । किन्तु = किञ्च । प्राक् = पूर्वम् (पहले) अयमर्थः = एषोऽभिषेकः (यह सेनापति बनाया जाना) अङ्गराजस्य = कर्णस्य (कर्ण का) प्रतिपन्नः = निश्चितः (निश्चित क़िया है) ।

कृपः—असदृशपरिभवशोकसागरे—असदृशः = अनुचितः यः परिभवः = पराभवः, पितृवधरूपः, तेन शोकः = दुःखम् एव सागरः=सिन्धुः, तस्मिन् (अनुचित पितृवध रूप शोक सागर में) । निमज्जन्तम् = ब्रूडमानम् (डूबते हुए) । एनम् = एतमश्वत्थामानम् (इन्हें) । अङ्गराजस्य = कर्णस्य अर्थे = हेतोः (कर्ण के कारण) । उपेक्षितुम् = उपेक्षां कर्त्तुम् । नैव युक्तम् = नोचितम् (उचित नहीं है) । तदेव = पूर्वोक्तमेव । अरिकुलम् = शत्रुकुलम् । अस्यापि = एतस्यापि । अनुशासनीयम् = दण्डनीयम् (दण्डनीय है) । पीडा = दुःखम् ।

अश्वत्थामा—अद्य = अस्मिन् काले अपि (अब भी) । युक्ताऽयुक्त विचारणया—युक्तम् = उचितम्, अयुक्तम् = अनुचितम् वेति विचारिणा = विमर्शना तया (उचित अनुचित का विचार करने से) ।

अन्वयः—अद्य स्तुतिभिः प्रयत्नपरिबोधितः निशां शेषे, अद्य भुवनम् अकेशवम् अपाण्डवं निःसोमकं च । अद्य दोःशालिनाम् इयम् रणकथा परिसमाप्यते । अद्य नृपकाननातिगुरुः भुवः भारः अपैतु ॥ ३४ ॥

प्रयत्नेति । अद्य = सम्प्रति (अब) । स्तुतिभिः = स्तवैः (बन्दी जनों द्वारा

कृपाचार्य--राजन् ! अनुचित पितृवध रूप शोक सागर में डूब रहे इन अश्वत्थामा को अङ्गराज के कारण उपेक्षा करना ठीक नहीं है । इनके द्वारा भी तो विनाश उन्हीं शत्रुओं का होगा । अतः क्या (सेनापति न बनाये जाने पर) इन्हें पीड़ा नहीं होगी ?

अश्वत्थामा--राजन् ! हे कौरवेश्वर ! क्या अब भी युक्तायुक्त विचार करना है ?

आज ही आप सूत मागधों द्वारा स्तुतिगानकर जगाये जाने के लिए सोयेंगे । आज संसार केशवहीन, पाण्डवशून्य तथा सोमवंश रहित हो जायेगा । आज बाहु-वीरों की

इयं परिसमाप्यते रणकथाऽद्य दोःशालिना-
मपैतु नृपकाननातिगुरुरद्य भारो भुवः ॥ ३४ ॥

कर्णः—(विहस्य) द्रौणात्मज ! वक्तुं सुकरमिदं दुष्करमध्यवसितुम् । बहवः कौरवबलेऽस्य कर्मणः शक्ताः ।

अश्वत्थामा—अङ्गराज ! एवमिदम् । बहवः कौरवबलेऽत्र शक्ताः, किंतु दुःखोपहतः शोकावेगवशाद् ब्रवीमि न पुनर्वीरजनाधिक्षेपेण ।

की जानेवाली स्तुतियों से)। प्रयत्नपरिबोधितः—प्रयत्नैः = विविधोपायैः परिबोधितः=जागरितः (निद्रा भङ्ग किया गया)। निशाम्=यामिनीम् (रात्रि के) शेषे = शयनं करोषि (सो रहे हो) अद्य = अस्मिन् दिने (आज)। भुवनम् = लोकम् (संसार को) अकेशवम्—नास्ति केशवो यस्मिस्तत् = केशवशून्यम् (कृष्ण से रहित)। अपाण्डवम् = पाण्डवहीनम् (पाण्डवों से हीन) निःसोमकम् =सोमवंश-वियुक्तम् च (तथा सोम वंश से वियुक्त) करिष्यामि। अद्य दोःशालिनाम् = भुजशालिनाम् (भुज पराक्रमियों की)। इयम् = एषा, रणकथा = युद्धवार्ता (युद्ध की कहानी)। परिसमाप्यते—परितः = सर्वतः समाप्यते = समाप्ता भविष्यति (समाप्त हो जायेगी)। अद्य नृपकाननातिगुरुः = राजकाननातिदुर्भरः (राज कानन का दुर्वह) भुवः = पृथिव्याः (भूमि का) भारः अपैतु = व्यपगच्छतु (दूर हो जाये)। पृथ्वीवृत्तम् ॥ ३४ ॥

कर्णः—वक्तुम् = कथयितुम् (कहने को)। सुकरम् = सहजम् (सहज)। अध्यवसितुम् = कर्त्तुम् (करने को)। दुष्करम् = कठिनम्। अस्य = कुरुराजस्य। कौरवबले = कौरवसैन्ये (कौरवों की सेना में)। बहवः = अनेकाः। शक्ताः = समर्थाः (समर्थ हैं)।

अश्वत्थामा—दुःखोपहतः—दुःखेन = शोकेन उपहतः = आहतः (शोक पीड़ित)। वीरजनाधिक्षेपेण—वीरजनानाम् = वीरपुरुषाणाम् अधिक्षेपेण=आक्षेपेण (वीरों के ऊपर आक्षेप से)।

यह युद्ध कथा समाप्त हो जायेगी। आज नृपवन का पृथ्वी का अत्यन्त दुर्वह भार दूर हो जायेगा ॥ ३४ ॥

कर्ण—(हँस कर) हे द्रोणपुत्र ! कहना सरल है (पर) यह कर पाना दुष्कर है। कौरव दल में बहुत से लोग इस काम (शत्रु-विनाश) को करने में समर्थ हैं।

अश्वत्थामा—हे अङ्गराज ! ऐसा ही है। इस कौरव-दल में बहुत से पुरुष शक्तिशाली हैं किन्तु दुःख से पीड़ित शोकावेगवशात् कह रहा हूँ वीरों पर आक्षेप नहीं कर रहा हूँ।

कर्णः—मूढ ! दुःखितस्याऽश्रुपातः कुपितस्य चाऽऽयुधद्वितीयस्य सङ्ग्रामाऽवतरणमुचितं, नैवंविधाः प्रलापाः ।

अश्वत्थामा—(सक्रोधम्) अरे रे राधागर्भभारभूत ! सूतापसद ! ममापि नामाश्वत्थाम्नो दुःखितस्याश्रुभिः प्रतिक्रियामुपदिशसि न शस्त्रेण । पश्य—

निर्वीर्यं गुरुशापभाषितवशात्किं मे तवेवाऽऽयुधं,
सम्प्रत्येव भयाद्विहाय समरं प्राप्तोऽस्मि किं त्वं यथा ।

कर्णः—मूढ = हे मूर्ख ! दुःखितस्य = शोकाकुलस्य (दुःखी व्यक्ति का) अश्रुपातः = रोदनम् (रोना) । कुपितस्य=क्रुद्धस्य (क्रुद्ध व्यक्ति का) । आयुधद्वितीयस्य—आयुधम् = शस्त्रम् द्वितीयः=सहायः यस्य, तस्य (शस्त्रधारी का) । संग्रामावतरणम्—संग्रामे = रणे अवतरणम् = उत्तरणम् (युद्ध में उतरना) । उचितम् = उपयुक्तम् (उचित है) । एवं विधाः = ईदृशाः (इस प्रकार के) । प्रलापाः = आलापाः (प्रलाप) नैवोचिताः ।

अश्वत्थामा—राधागर्भभारभूत—राधायाः = तन्नाम्न्याः वर्धक्याः गर्भे = उदरे भारभूतः = भारस्वरूपः, तत्सम्बुद्धौ (हे राधा के गर्भ में बोझ बने हुये !) । सूतापसद = नीच सूत ! प्रतिक्रियाम् = प्रतीकारम् (बदला लेने को) । उपदिशसि = शिक्षयसि (सीख दे रहा है) ।

अन्वयः—मे आयुधं तव इव गुरुशापभाषितवशात् किं निर्वीर्यम् ? यथा त्वं सम्प्रति एव भयात् समरं विहाय (प्राप्तः) । तथा किं प्राप्तः अस्मि । स्तुतिवंशकीर्तनविदां सारथीनां कुले अहं जातः किम् ? यत् क्षुद्रारातिकृताप्रियम् अस्त्रेण करोमि अस्त्रेण न ।। ३५ ।।

निर्वीर्यमिति । मे = मम । आयुधम् = अस्त्रम् (मेरा अस्त्र) तव इव =

कर्ण—मूर्ख ! दुःखी व्यक्ति का आँसू बहाना, क्रुद्ध और शस्त्रधारी का युद्ध में उतरना ठीक होता है, इस प्रकार प्रलाप करना नहीं ।

अश्वत्थामा—(सक्रोध) अरे नीच ! राधा के गर्भ का बोझ बना नीच सूत ! मुझ दुःखी अश्वत्थामा को आँसू बहा कर प्रतिक्रिया की शिक्षा दे रहा है, शस्त्र के द्वारा नहीं ?

देखो—

मेरा आयुध क्या तुम्हारे आयुध के समान गुरुशापवश शक्तिहीन हो गया है ? जिस

टिप्पणी—कुन्ती की कुमार्यवस्था में सूर्य के द्वारा उत्पन्न कर्ण को जन्मते ही काष्ठ के सन्दूक में रख कर (लोकलाज-वश) नदी में बहा दिया गया । उस सन्दूक को किसी सूत-दम्पति ने पाया । उसकी पत्नी राधा या राधिका द्वारा कर्ण का पालन-पोषण किये जाने के कारण ही कर्ण राधा-पुत्र अथवा राधेय कहलाये ।

जातोऽहं स्तुतिवंशकीर्तनविदां किं सारथीनां कुले
क्षुद्राऽरातिकृताऽप्रियं प्रतिकरोम्यस्त्रेण नास्त्रेण यत् ॥ ३५ ॥

त्वत्समम् (तुम्हारे अस्त्र जैसा) गुरुशापभाषितवशात्—गुरोः = परशुरामस्य शापभाषितम्=कथितशापम् तद् वशात् (गुरु परशुराम द्वारा दिये गये शाप के कारण) किम् निर्वीर्यम् = सामर्थ्यरहितं जातम् किम् (क्या सामर्थ्यहीन हो गया है)। यथा = येन प्रकारेण (जैसे) त्वम्=कर्णः (तुम कर्ण) सम्प्रत्येव=इदानीमेव (इसी समय) भयात् = भीत्या (डर से)। समरम् = रणम् (युद्धभूमि को) विहाय=त्यक्त्वा (छोड़ कर) (प्राप्तोऽसि)। तथा=पुनः किम् (अहम्) प्राप्तः अस्मि = समागतोऽस्मि। स्तुतिवंशकीर्तनविदाम्—स्तुत्यै = स्तवनाय यद् वंशकीर्तनम्, कुलपूर्वजानाम् नामगुणादि-कथनम् तद्विदन्तीति तेषाम् (वंश के पूर्वजों का नाम गुण आदि वर्णन करना जानने वाले) सारथीनाम् = सूतानाम् (सूत मागधों के) कुले=वंशे (वंश में) अहम् = अश्वत्थामा खलु अहम्। जातः = उत्पन्नः किम् (क्या मैं उत्पन्न हुआ हूँ)। यत् = हि (जो)। क्षुद्रारातिकृताऽप्रियम्—क्षुद्राः = नीचाः ये अरातयः = शत्रवः भीमार्जुनादयः, तैः कृतम् = विहितम् यद् अप्रियम् मम पितृवध-रूपं कर्म, तत् (नीच शत्रुओं—भीमार्जुनादि द्वारा किया गया पितृ-वध रूप अप्रिय कर्म)। अस्रेण = नयनवारिणा (आँसुओं द्वारा) करोमि = विदधामि अस्त्रेण न = आयुधेन न प्रतिकरोमि। "त्वत्समाः

प्रकार तुम अभी डर कर युद्ध छोड़ कर भाग आये हो, क्या मैं भी तुम्हारे जैसा कायर हूँ? क्या मैं वंशजों की स्तुतिगान करने वाले सूत-मागधों के वंश में (तुम्हारे समान) पैदा हुआ हूँ (?) जो कि नीच शत्रुओं (पाण्डवों आदि) द्वारा किये गये अप्रियकर्म (पितृ वध) के लिए आँसू बहाऊँ, उसका प्रतिकार अस्त्र से न करूँ ॥ ३५ ॥

टिप्पणी—गुरुशापभाषित—बाल्यावस्था में कर्ण ने परशुराम के पास (सूत पुत्र होने से द्रोणाचार्य द्वारा शिक्षा देने के लिये मनाकर देने पर) जाकर अपने को क्षत्रियेतरवंशी बताकर बाण-विद्या सीखनी आरम्भ की। एक दिन परशुराम जब कर्ण की जाँघ पर अपना शिर रखे गाढ निद्रा में पड़े सो रहे थे कि कर्ण की जाँघ में किसी कीट ने काट लिया। अत्यन्त पीड़ा होने पर भी गुरुजी के निद्राभङ्गापराध होने के भय से असह्य वेदना को किसी प्रकार सहन करते हुए कर्ण पूर्ववत् बैठे रहे। कर्ण की जाँघ से रक्त बहने लगा। कुछ देर बाद जब परशुराम की नींद टूटी और रक्तस्राव देखकर कर्ण के ब्राह्मणत्व पर उन्होंने सन्देह किया तो उसका क्षत्रिय होने का रहस्य खुल गया। क्रुद्ध होकर परशुराम ने—'छल करके सीखी हुई सम्पूर्ण अस्त्रविद्या विफल हो जाये' कहकर कर्ण को शाप दे दिया था, ऐसा पौराणिक कथानक है।

कर्णः—(सक्रोधम् ।) अरे रे वाचाट ! वृथाशस्त्रग्रहणदुर्विदग्ध ! वटो !

निर्वीर्यं वा सवीर्यं वा मया नोत्सृष्टमायुधम् ।
यथा पाञ्चालभीतेन पित्रा ते बाहुशालिना ॥ ३६ ॥

अपि च—

सूतो वा सूतपुत्रो वा यो वा को वा भवाम्यहम् ।
दैवायत्तं कुले जन्म मदायत्तं तु पौरुषम् ॥ ३७ ॥

नीचाः एवारातिकृताप्रियं नयनवारिणा प्रतिकुर्वन्ति, न तु मादृशाः कुलीनाः वीराः" । इत्यभिप्रायः । शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम् ॥ ३५ ॥

कर्णः—रे वाचाट=अरे बहुवादिन् (अरे बकवादी) । वृथाशस्त्रग्रहण-दुर्विदग्ध—वृथा=व्यर्थम् शस्त्रग्रहणे=आयुधधारणे दुर्विदग्धः=कुपण्डितः, तत्सम्बुद्धौ (रे व्यर्थ शस्त्र-धारण के कारण मूर्ख)। वटो=रे बालक ।

अन्वयः—निर्वीर्यं वा सवीर्यं वा मया आयुधं न उत्सृष्टं यथा पाञ्चालभीतेन बाहुशालिना ते पित्रा (उत्सृष्टम्) ॥ ३६ ॥

निर्वीर्यमिति । निर्वीर्यम्=निर्बलम् (भवतु) वा=अथवा सवीर्यम्= सबलम् (भवतु) मया=कर्णेन । आयुधम्=शस्त्रम् । न उत्सृष्टम्=नैव परि-त्यक्तम् (परित्याग नहीं किया) यथा=यत्प्रकारम् (जैसा कि) पाञ्चालभीतेन—पाञ्चालेन=द्रुपदसुतेन भीतः=त्रस्तः तेन (धृष्टद्युम्न से भयभीत)। बाहु-शालिना=भुजपराक्रमिणा (बाहुबली) । ते=तव पित्रा=जनकेन (तुम्हारे पिता ने) उत्सृष्टम् । अत्रोपमालङ्कारः । पथ्यावक्त्रं वृत्तम् ॥ ३६ ॥

अन्वयः—सूतः वा सूतपुत्रः वा यः वा कः वा अहं भवामि । कुले जन्म दैवायत्तं पौरुषं तु मदायत्तम् ॥ ३७ ॥

सूतो वेति । सूतः=सारथिः । वा=अथवा सूतपुत्रः=सारथिसुतः वा । यो वा को वा=यः कोऽपि (जो कोई भी) अहम्=कर्णः भवामि=अस्मि ।

कर्ण—(क्रोध के साथ) अरे बकवादी ! व्यर्थ शस्त्र ग्रहण करने के कारण मूर्ख ! बालक !

बलहीन हो अथवा बलयुक्त हो, मैंने आयुध का परित्याग नहीं किया, जैसा कि धृष्ट-द्युम्न से डरकर बाहुशाली तुम्हारे पिता (द्रोण) ने किया ॥ ३६ ॥

और भी—

सूत हूँ अथवा सूत पुत्र हूँ जो कुछ भी मैं हूँ । कुल में जन्म होना भाग्य के अधीन होता है (पर) पौरुष तो मुझ पर ही निर्भर है ॥ ३७ ॥

अश्वत्थामा—(सक्रोधम् ।) अरे रे रथकारकुलकलङ्क ! अरे राधागर्भ-भारभूत ! आयुधानभिज्ञ ! तातमप्यधिक्षिपसि । अथवा—

स भीरुः शूरो वा प्रथितऽभुजसारस्त्रिभुवने
कृतं यत्तेनाऽऽजौ प्रतिदिनमियं वेत्ति वसुधा ।
'परित्यक्तं शस्त्रं कथमि'ति स शस्त्रव्रतधरः
पृथासूनुः साक्षी त्वमसि रणभीरो ! क्व नु तदा ॥ ३८ ॥

कुले = वंशे (वंश में) जन्म = उत्पत्तिः । दैवायत्तम् = भाग्याधीनम् (भाग्य के अधीन है) पौरुषं तु = पराक्रमस्तु । मदायत्तम् = मदधीनम् (अस्ति) । पथ्या-वक्त्रं वृत्तम् ॥ ३७ ॥

अश्वत्थामा—रथकारकुलकलङ्क !—रथकारकुले = वर्द्धकिवंशे कलङ्कम् इव तत्सम्बुद्धौ (हे रथकारकुल में कलङ्क बने हुये) । आयुधानभिज्ञ—आयुधैः = शस्त्रैः अनभिज्ञः = अपरिचितः तत्सम्बुद्धौ (हे शस्त्रों से अपरिचित) । तातम् = पितरम् । अधिक्षिपसि = आक्षेपं करोषि । ।

अन्वयः—सः भीरुः शूरः वा (किन्तु) त्रिभुवने प्रथितभुजसारः । येन आजौ प्रतिदिनं यत् कृतं इयं वसुधा वेत्ति । (तेन) शस्त्रम् कथं परित्यक्तम् इति सः शस्त्रव्रतधरः पृथासूनुः साक्षी । हे रणभीरो ! तदा त्वम् क्व नु असि ॥ ३८ ॥

सः भीरुरिति । सः = असौ द्रोणः (वह) भीरुः = कातरः (भीरु थे) वा शूरः = वीरः । (किन्तु) त्रिभुवने = त्रैलोक्ये (त्रिभुवन में) । प्रथितभुजसारः = प्रथितः = प्रसिद्धः भुजसारः = बाहुबलम् यस्य सः (प्रख्यात भुजबल वाले) । तेन = अमुना (उन्होंने) । आजौ = रणे (युद्ध में) । प्रतिदिनम् = प्रतिवासरम् (नित्य) यत् = यत्पौरुषम् (जो पराक्रम) कृतम् = विहितम् (किया) (तत्) इयम् = एषा वसुधा = पृथ्वी (सर्वे जनाः) वेत्ति = जानाति (जानती है) । (तेन) शस्त्रम् = आयुधम् (हथियार) कथम् परित्यक्तम् = कथं विसृष्टम् (क्यों त्यागा) इति = एतदर्थम् (उसके लिए) सः = असौ शस्त्रव्रतधरः = आयुधव्रती पृथासूनुः = युधिष्ठिरः । साक्षी = साक्ष्यभूतः (अस्ति) । हे रणभीरो

अश्वत्थामा—(सक्रोध) अरे रथकार वंश के कलङ्क ! राधा गर्भ के भारभूत ! शस्त्रों से अनभिज्ञ ! पिता जी पर आक्षेप कर रहे हो ! अथवा—

वह भीरु थे अथवा वीर, किन्तु तीनों लोकों में उनका भुजबल विख्यात था । उन्होंने युद्ध में नित्य जो पराक्रम किया उसे यह पृथ्वी जानती है । उन्होंने (पिता जी ने) शस्त्र त्याग कैसे किया, इस बात के साक्षी शस्त्र-व्रती पृथापुत्र हैं । हे युद्ध कातर ! (जब पिताजी ने शस्त्र त्याग किया) उस समय तुम कहाँ थे ! ॥ ३८ ॥

कर्णः—(विहस्य ।) एवं भीरुरहम् । त्वं पुनर्विक्रमैकरसः स्वपितरमनुस्मृत्य न जाने किं करिष्यसीति महान्मे संशयो जातः । अपि च रे मूढ !

यदि शस्त्रमुज्झितमशस्त्रपाणयो
न निवारयन्ति किमरीनुदायुधान् ।
यदनेन मौलिदलनेऽप्युदासितं
सुचिरं स्त्रियेव नृपचक्रसन्निधौ ॥ ३९ ॥

=अयि युद्धकातर ! तदा = शस्त्रत्यागकाले । त्वम् = कर्णः क्व नु असि = कुत्र आसीः (कहाँ थे ?) । शिखरिणी वृत्तम् ॥ ३८ ॥

कर्णः—विहस्य = हसित्वा (हँस कर) । अहम् = कर्णः एवं भीरुः=तादृशः कातरः (अस्मि) पुनः = भूयः । त्वम् = अश्वत्थामा (तुम) । विक्रमैकरसः—विक्रमः = पराक्रमः एवैकरसः = एकोऽनुरागः यस्य, सः (एक मात्र विक्रमानुरागी) स्वपितरम् = निजजनकम् (अपने पिता को) । अनुस्मृत्य = स्मृत्वा (यादकर) न जाने = न वेद्मि (नहीं जानता हूँ) किं करिष्यसि = किं विधास्यसि (क्या करोगे) इति = इत्थम् । मे = मम (मुझे) महान् संशयः = अतिसन्देहः (महान् संशय) । जातः = उत्पन्नः (उत्पन्न हो गया है) ।

अन्वयः—यदि शस्त्रम् उज्झितं तेन किम् अशस्त्रपाणयः उदायुधान् अरीन् न निवारयन्ति किम् ? यद् अनेन नृपचक्रसन्निधौ मौलिदलने अपि स्त्रियाः इव सुचिरम् उदासितम् ॥ ३९ ॥

यदि शस्त्रमिति । यदि = चेत् । शस्त्रम्=आयुधम् । उज्झितम्=परित्यक्तम् । तेन किम् = ततः किम् (तो इससे क्या ?) । उदायुधान् = उद्यतशस्त्रान् (हथियार उठाये हुओं को) अशस्त्रपाणयः = न सन्ति शस्त्राणि पाणिषु येषां ते = त्यक्तशस्त्राः (शस्त्रहीन) अरीन् = शत्रून् (शत्रुओं को) न निवारयन्ति किम् = वारयन्त्येव (क्या रोकते नहीं हैं ?) यत् नृपचक्रसन्निधौ = राजसमूहसमीपे (नृप वर्ग के पास) । मौलिदलने अपि= शिरोमर्दने अपि (शिर पर वार

कर्ण—(हँसकर) ऐसा ही है, मैं डरपोक हूँ और तुम विक्रमानुरागी हो । अपने पिता को याद कर.न जाने तुम क्या कर डालोगे ? यह महान् संशय मेरे मन में उत्पन्न हो गया है ।

और भी, अरे मूढ !

यदि उन्होंने शस्त्र त्याग भी दिया था तो क्या निःशस्त्र व्यक्ति शस्त्र उठाने (चलाने) वाले शत्रुओं के आक्रमण को रोकते नहीं हैं ? जैसा कि इन्होंने नृपवर्ग के सामने शिर काटे जाने पर भी अबला के समान बड़ी देर तक उदासीनता ही दिखलाई ॥ ३९ ॥

अश्वत्थामा—(सक्रोधं सकम्पं च ।) दुरात्मन् ! राजवल्लभप्रगल्भ ! सूतापसद ! असम्बद्धप्रलापिन् !

कथमपि न निषिद्धो दुःखिना भीरुणा वा
द्रुपदतनयपाणिस्तेन पित्रा ममाद्य ।
तव भुजबलदर्पाध्मायमानस्य वामः
शिरसि चरण एष न्यस्यते वारयैनम् ॥ ४० ॥

होने पर भी) स्त्रियाः इव = नार्याः इव (स्त्री के समान) सुचिरम् = वहुकालम् (वड़ी देर तक)। उदासितम् = उदासीनतामकरोत् । मंजुभाषिणी वृत्तम् । तद्यथा—सजसा जगौ च यदि मञ्जुभाषिणी ॥ ३९ ॥

अश्वत्थामा—दुरात्मन्—दुष्ट आत्मा यस्य तत्सम्बुद्धौ (हे दुष्ट) ! राजवल्लभप्रगल्भ = नृपप्रियचतुर (रे राजाओं के मुँह लगे)। सूतापसद=नीच सूत ! अनर्गलवादिन् ।

अन्वयः—तेन मम पित्रा दुःखिना भीरुणा वा कथम् अपि द्रुपदतनयपाणिः न निषिद्धः । अद्य भुजबलदर्पाध्मायमानस्य तव शिरसि एषः वामः चरणः न्यस्यते एनम् वारय ॥ ४० ॥

कथमपीति । तेन = अमुना मम पित्रा = मम जनकेन (मेरे पिताजी ने) दुःखिना = शोकाकुलितेन (दुःखी) वा = अथवा भीरुणा = कातरेण (डरपोक) कथम् अपि = केनापि प्रकारेण (किसी प्रकार के भी) द्रुपदतनयपाणिः—द्रुपदतनयस्य=धृष्टद्युम्नस्य पाणिः=करः (द्रुपद सुत का हाथ) न निषिद्धः=न वारितः । (नहीं मना किया)। अद्य = अस्मिन् दिने (आज)। भुजवलदर्पाध्मायमानस्य भुजयोः बलम् भुजवलम् तस्य यो दर्पस्तेनाध्मायमानस्य = फुल्लमानस्य (बाहुवल के अभिमान से फूले हुये) तव = ते (तुम्हारे) शिरसि = मौलौ (शिर पर) एषः = अयम् (यह) वामः = दक्षिणेतरः (बायाँ) चरणः = पादः (बायाँ पैर)। न्यस्यते = स्थाप्यते (रखा जा रहा है) एनम् = एतं चरणम् (इसको) वारय = निवारय (बचाओ)। मालिनी वृत्तम् ॥ ४० ॥

अश्वत्थामा—(क्रोध के सहित काँपते हुए) हे दुरात्मन् ! राजाओं के मुँह लगे ! नीच सूत ! अनर्गल वकवाद करने वाले !

मेरे उन पिता जी ने दुःखी होकर अथवा डर कर कैसे भी द्रुपद सुत का हाथ नहीं रोका । आज (अब) बाहुबल के अभिमान से फूले तेरे सिर पर मैं यह बायाँ पैर (लात) मार रहा हूँ, इसे रोक ॥ ४० ॥

(इति तथा कर्तुमुत्तिष्ठति ।)

कृप-दुर्योधनौ—वत्स ! मर्षय, मर्षय । (इति निवारयतः ।)

(अश्वत्थामा चरणप्रहारं नाटयति ।)

कर्णः—(सक्रोधमुत्थाय, खड्गमाकृष्य ।) अरे दुरात्मन् ! वाचाट ! ब्रह्मबन्धो ! आत्मश्लाघिन् !

जात्या काममवध्योऽसि चरणं त्विममुद्धृतम् ।
अनेन लूनं खड्गेन पतितं द्रक्ष्यसि क्षितौ ॥ ४१ ॥

कृप-दुर्योधनौ—मर्षय = क्षमस्व (क्षमा करो)। निवारयतः = वारयतः (दोनों रोकते हैं)।

चरणप्रहारम् = पदाघातम् (लात मारने को)।

कर्णः—सक्रोधम् = सरोषम् । खड्गम्=असिम् (तलवार को)। आकृष्य = आहृत्य (खींच कर)। वाचाट = रे प्रलापिन् (अरे वाचाल)! ब्रह्मबन्धो = नीचब्राह्मण (व्यञ्जनया)। आत्मश्लाघिन् = आत्मप्रशंसक !

अन्वयः—जात्या कामम् अवध्यः असि इमम् उद्धृतं चरणं तु अनेन खड्गेन लूनं क्षितौ पतितं द्रक्ष्यसि ॥ ४१ ॥

जात्येति । जात्या = ब्राह्मणवंशेन (ब्राह्मण होने के कारण)। कामम् = भृशम् (नितान्त) अवध्यः = अमारणीयः (अवध्य) असि । इमम् = एतम् (इस) उद्धृतम्=उत्तोलितम् (उठाये गये)। चरणम् = पादम् तु (पैर को तो)। अनेन = एतेन (इस) खड्गेन = असिना (तलवार से)। लूनम् = छिन्नम् (कटा हुआ) क्षितौ = भूमौ (भूमि पर) पतितम् = च्युतम् (पड़ा हुआ)। द्रक्ष्यसि = अवलोकयिष्यसि (देखोगे)। पथ्यावक्त्रं वृत्तम् ॥ ४१ ॥

(ऐसा कहकर लात मारने के लिए उठता है)

कृपाचार्य और दुर्योधन—वत्स ! क्षमा करो, क्षमा करो। **(यह कहकर दोनों रोकते हैं)।**

(अश्वत्थामा लात मारने का अभिनय करता है)

कर्ण—(सक्रोध उठकर, तलवार खींचकर) अरे दुरात्मन् ! वाचाल ! नीच ब्राह्मण ! आत्मप्रशंसक !

जाति (ब्राह्मणत्व) से (तू) नितान्त अवध्य है। इस उठाये हुए पाँव को तो तू इस खड्ग से कटा भूमि पर पड़ा हुआ देखेगा ॥ ४१ ॥

अश्वत्थामा—अरे मूढ ! किं नाम 'जात्या काममवध्योऽहम्' । इयं सा जातिः परित्यक्ता । (इति यज्ञोपवीतं छिनत्ति । पुनश्च सक्रोधम् ।)

अद्य मिथ्याप्रतिज्ञोऽसौ किरीटी क्रियते मया ।
शस्त्रं गृहाण वा त्यक्त्वा मौलौ वा रचयाञ्जलिम् ॥ ४२ ॥

(उभावपि खड्गमाकृष्याऽन्योन्यं प्रहर्तुमुद्यतौ । कृप-दूर्योधनौ निवारयतः)

दुर्योधनः—सखे ! आचार्यपुत्र ! शस्त्रग्रहणेनाऽलम् ।

अश्वत्थामा—किं नाम जात्या = यदि जात्यैवाहमवध्योऽस्मि तर्हि किमनया जात्या । इयम् = एषा जातिः = ब्राह्मणत्वम् । मया = अश्वत्थाम्ना । परित्यक्ता = विमुक्ता (छोड़ दी है) । यज्ञोपवीतम् = ब्रह्मसूत्रम् (जनेऊ) । छिनत्ति = त्रोटयति (तोड़ देता है) ।

अन्वयः—अद्य असौ किरीटी मया मिथ्याप्रतिज्ञः क्रियते । शस्त्रं गृहाण वा त्यक्त्वा वा मौलौ अञ्जलिं रचय ॥ ४२ ॥

अद्येति । अद्य = सम्प्रति (आज, अब) । असौ = एषः (यह) किरीटी = अर्जुनः । मया = द्रोणसुतेन । मिथ्याप्रतिज्ञः = विफलप्रतिज्ञः (प्रतिज्ञा झूठ कर देने वाला) क्रियते = विधीयते (किया जा रहा है) । शस्त्रम् = आयुधम् । गृहाण = धारय (ग्रहण करो) । वा = अथवा । (शस्त्रम्) त्यक्त्वा = परित्यज्य (परित्याग कर) मौलौ = शिरसि । अञ्जलिम् = प्रणामाञ्जलिम् । रचय = विधेहि (हाथ जोड़ो) । पथ्यावक्त्रं वृत्तम् ॥ ४२ ॥

खड्गम्=असिम् । आकृष्य = उत्तोल्य (तलवार खींच कर) । प्रहर्त्तुम् = प्रहारं कर्त्तुम् (प्रहार करने को) । उद्यतौ=सन्नद्धौ (उद्यत हो जाते हैं) ।

दुर्योधनः—शस्त्रग्रहणेनालम् = आयुधग्रहणं मा कुरुतम् ।

अश्वत्थामा—अरे मूढ ! क्या मैं जाति के कारण अवध्य हूँ ! (तब तो) यह मैंने वह जाति छोड़ दी । (यह कह कर यज्ञोपवीत तोड़ देता है, और पुनः क्रोध के साथ) ।

आज उस अर्जुन की तुझे मारने वाली प्रतिज्ञा मैं स्वयं तुझे मार कर झूठी कर रहा हूँ । (युद्ध करने के लिए) शस्त्र पकड़ो अथवा उसे त्याग कर हाथ जोड़ो—क्षमा याचना करो ॥ ४२ ॥

(दोनों ही खड्ग खींच कर एक दूसरे पर प्रहार करने को उद्यत होते हैं । कृपाचार्य तथा दुर्योधन रोक देते हैं) ।

दुर्योधन—हे मित्र ! हे आचार्यपुत्र ! शस्त्र उठाना व्यर्थ है ।

कृपः—वत्स ! सूतपुत्र ! शस्त्रग्रहणेनाऽलम् ।

अश्वत्थामा—मातुल, मातुल ! किं निवारयसि ? अयमपि तातनिन्दाप्रगल्भः सूतापसदो धृष्टद्युम्नपक्षपात्येव ।

कर्णः—राजन् ! न खल्वहं निवारयितव्यः ।

उपेक्षितानां मन्दानां धीरसत्त्वैरवज्ञया ।
अत्रासितानां क्रोधान्धैर्भवत्येषा विकत्थना ॥ ४३ ॥

अश्वत्थामा—राजन् ! मुञ्च, मुञ्चैनम् । आसादयतु मद्भुजान्तरनिष्पेषसुलभमसूनामवसादनम् । अन्यच्च राजन् ! स्नेहेन वा कार्येण वा यत्त्वमेनं

अश्वत्थामा—तातनिन्दाप्रगल्भः—तातस्य = पितुः निन्दायाम् = विकत्थनायाम् प्रगल्भः = पण्डितः (पिताजी की निन्दा करने में पटु) । सूतापसदः = नीचसूतपुत्रः कर्णः । पक्षपाती = पक्षधरः ।

कर्णः—खलु = किल । अहम् = कर्णः । न निवारयितव्यः = न वारणीयः (अस्मि) ।

अन्वयः—धीरसत्वैः क्रोधान्धैः अत्रासितानाम् अवज्ञया उपेक्षितानां मन्दानाम् एषा विकत्थना भवति ॥ ४३ ॥

उपेक्षितेति । धीरसत्वैः = गंभीरहृदयैः (धैर्यवानों द्वारा) । क्रोधान्धैः—क्रोधेन = रोषेण अन्धैः = कोपाविष्टैः (क्रुद्ध) । अत्रासितानाम् = अदण्डितानाम् अवज्ञया = उपेक्षया (अवज्ञा से) उपेक्षितानाम् = तिरस्कृतानाम् (तिरस्कृत किये गये) मन्दानाम् = नीचानाम् (नीच पुरुषों की) एषा = इयम् (यह) विकत्थना = जल्पना (बकवाद) भवति । अनुष्टुप् वृत्तम् ॥ ४३ ॥

अश्वत्थामा—एनम् = कर्णम् । मुञ्च = त्यज (छोड़ो) । मद्भुजान्तरनिष्पेषसुलभम्—मदीययोः भुजयोः अन्तरे = मद्बाहुमध्ये यः निष्पेषः = यन्त्रम्, मर्दनम्,

---

कृपाचार्य—वत्स ! हे सूतपुत्र ! शस्त्र ग्रहण करना व्यर्थ है ।

अश्वत्थामा—मामा ! मामा ! मना क्यों कर रहे हो ? यह भी पिताजी की निन्दा करने में निपुण नीचसूत धृष्टद्युम्न का ही पक्षपाती है ।

कर्ण—हे राजन् ! मुझे वास्तव में आपको रोकना नहीं चाहिये ।

धीरहृदय पुरुषों द्वारा उपेक्षा से (हीनता की दृष्टि से) यदि क्रोध से पागल बने लोगों के द्वारा भयभीत (दण्डित) नहीं कराया जाता है तो यह नीचों को बढ़ावा देने का कार्य होता है ॥ ४३ ॥

अश्वत्थामा—हे राजन् ! छोड़ो, इसे छोड़ दो । (यह) मेरी भुजाओं के मध्य पिसकर

ताताधिक्षेपकारिणं दुरात्मानं मत्तः परिरक्षितुमिच्छसि तदुभयमपि व्यर्थमेव ते । पश्य—

पापप्रियस्तव कथं गुणिनः सखाऽयं
सूतान्वयः शशधराऽन्वयसम्भवस्य ।
हन्ता किरीटिनमहं नृप ! मुञ्च कुर्यां
क्रोधादकर्णमपृथात्मजमद्य लोकम् ॥ ४४ ॥

तेन सुलभम् = सरलम् (मेरी भुजाओं के बीच पिसने में सुलभ)। असूनाम् = प्राणानाम् (प्राणों के) अवसादनम्=विनाशनम् (विनाश को) आसादयतु=प्राप्नोतु (प्राप्त कर ले)। स्नेहेन = प्रेम्णा वा = अथवा कार्येण = कृत्येन (कार्य से)। एनम् = कर्णम् । ताताधिक्षेपकारिणं = पितृनिन्दकम् (पिताजी की निन्दा करने वाले को)। दुरात्मानम् = दुष्टम् (दुष्ट को) मत्तः = मत्पार्श्वात् (मुझसे) परिरक्षितुम् = अवतुम् (बचाने को)। इच्छसि = वाञ्छसि (चाहते हो)। उभयम् = स्नेहः वा कार्यम् वा द्वावपि । ते = तव । व्यर्थम्=विफलम् (बेकार)।

अन्वयः—हे नृप ! गुणिनः शशधरान्वयसम्भवस्य तव पापप्रियः सूतान्वयः अयं कथं सखा ? अहं किरीटिनं हन्ता (एनं) मुञ्च । अद्य क्रोधात् लोकम् अकर्णम् अपृथात्मजं कुर्याम् ॥ ४४ ॥

पापप्रिय इति । हे नृप=राजन् । गुणिनः=गुणवतः । शशधरान्वयसम्भवस्य—शशधरस्य = चन्द्रस्यान्वये = वंशे सम्भवः = उत्पत्तिर्यस्य तस्य (चन्द्र वंश में जन्मे) तव = भवतः (आपका)। पापप्रियः—पापम् = पापकर्म प्रियम् = रुचिकरम् यस्य सः (पाप कर्म करने वाला) सूतान्वयः—सूतस्य = रथकारस्य अन्वयः = वंशः यस्य सः (सूत वंश में जन्मा) अयम् = एषः (यह) कथम् सखा = मित्रम् कथम् (मित्र कैसे हो सकता)। अहम्=द्रोणसुतः (मैं) किरीटिनम्=अर्जुनम् (किरीटी को) हन्ता = मारयिता अस्मि (मारने को समर्थ हूँ)। अद्य = अस्मिन् दिने (आज) क्रोधात् = कोपात् (क्रोध से) लोकम् = जगत्

सरलता से प्राणों का अन्त पा सके। दूसरे—आप स्नेहवश अथवा स्वार्थ से जो इस पिता जी के निन्दक, दुष्ट को मुझसे बचाना चाहते हैं सो यह दोनों ही आपकी बातें व्यर्थ ही हैं। देखो—

राजन् ! गुणों से सम्पन्न चन्द्रवंश में जन्मे हुए आप का यह पापप्रिय सूतवंश में जन्मा कर्ण मित्र कैसा ? किरीटी (अर्जुन) का वध करने में समर्थ मैं हूँ (यह नहीं)। मुझे छोड़ दो आज क्रुद्ध होकर मैं इस संसार को कर्ण तथा अर्जुन से रहित कर दूँगा ॥ ४४ ॥

(इति प्रहर्तुमिच्छति ।)

कर्णः—(खड्गमुद्यम्य ।) अरे वाचाट ! ब्राह्मणाधम ! अयं न भवति । राजन् ! मुञ्च, मुञ्च । न खल्वहं वारयितव्यः । (इति हन्तुमिच्छति ।)

(दुर्योधन-कृपौ निवारयतः ।)

दुर्योधनः—कर्ण ! गुरुपुत्र ! कोऽयमद्य युवयोर्व्यामोहः ।

कृपः—वत्स ! अन्यदेव प्रस्तुतमन्यत्राऽऽवेग इति कोऽयं व्यामोहः । स्वबलव्यसनं चेदमस्मिन्काले राजकुलस्याऽस्य युष्मत्त एव भवतीति वामः पन्थाः ।

(संसार को) । अकर्णम् = कर्ण-रहितम् अपृथात्मजम् = पृथापुत्रार्जुनशून्यम् च (कर्ण तथा अर्जुन से रहित) । कुर्याम् = विदध्याम् (कर डालूँ) । वसन्ततिलका वृत्तम् ॥ ४४ ॥

कर्णः—खड्गम् = असिम् । उद्यम्य = उत्तोल्य (तलवार खींचकर) । ब्राह्मणाधम—ब्राह्मणेष्वधमः, तत्सम्बुद्धौ (रे नीच ब्राह्मण) । मुञ्च = त्यज (छोड़ दो) न वारयितव्यः = न निषेधव्यः हन्तुम् = प्रहर्तुम् (मारने को) ।

दुर्योधनः—युवयोः = तव कर्णस्य द्रोणसुतस्य च (तुम दोनों का) अयम् = एषः (यह) । व्यामोहः = आसक्तिः ।

कृपः—कः = कीदृशः (कैसा) । अन्यत्र = अन्यस्मिन् शत्रुपक्षे करणीयः । आवेग = क्रोधः । अन्यद् एव = पारस्परिक-विनाश एव (आपस में मर मिटने में ही) । स्वबलव्यसनम् = आत्मबलविनाशव्यसनम् (अपने बल का नाश करने का व्यसन) । अस्मिन् काले = सम्प्रति । युष्मत्तः = युष्मभ्यः (तुम सबसे) अस्य = एतस्य राजकुलस्य = कुरुवंशस्य एव (इस कुरुवंश का ही) । वामः = विपरीतः पन्थाः = मार्गम् भवति । इति ।

(यह कहकर प्रहार करना चाहता है) ।

कर्ण—(तलवार उठाकर) अरे वाचाट ! नीच ब्राह्मण ! यह नहीं होगा । राजन् ! छोड़ दो, छोड़ दो । मुझे मना मत करो । (मारना चाहता है)

(दुर्योधन और कृपाचार्य मना करते हैं)

दुर्योधन—हे कर्ण ! हे गुरुपुत्र ! आज तुम दोनों का यह कैसा व्यामोह है ?

कृपाचार्य—वत्स अश्वत्थामा ! अन्यत्र (दूसरों, शत्रुओं पर) किया जानेवाला यह आवेश अन्यत्र (अपने दल पर ही) करने का तुम्हारा पागलपन कैसा ? यदि अपनी शक्ति का विनाश करने का ही व्यसन है तब तो आज तुम दोनों से कुरुकुल का भाग्य ही विरुद्ध है ।

अश्वत्थामा—मातुल ! न लभ्यतेऽस्य कटुप्रलापिनो रथकारकुलकलङ्कस्य दर्पः शान्तयितुम् ।

कृपः—वत्स ! अकालः खलु स्वबलप्रधानविरोधस्य ।

अश्वत्थामा—मातुल, यद्येवम् ।

अयं पापो यावन्न निधनमुपेयादरिशरैः
परित्यक्तं तावत्प्रियमपि मयाऽस्त्रं रणमुखे ।
बलानां नाथेऽस्मिन्परिकुपितभीमार्जुनभये
समुत्पन्ने राजा प्रियसखबलं वेत्तु समरे ॥ ४५ ॥

अश्वत्थामा—मातुल = हे मातृभ्रातः (हे मामा) । कटुप्रलापिनः = कटुजल्पाकस्य (कटु बकवादी) अस्य = कर्णस्य (इस कर्ण का) । रथकारकुलकलङ्कस्य = नीचसूतपुत्रस्य । दर्पः = अहङ्कारः । शान्तयितुम् = शान्तं कर्तुम् (मिटाने को) न लभ्यते = न प्राप्यते ।

कृपः—अकालः = असमयः (बेमौका) । स्वबलप्रधानविरोधस्य—स्वबलस्य = आत्मसैन्यस्य ये प्रधानाः = प्रमुखाः वीराः, तेषां विरोधस्य (अपनी सेना के प्रमुख वीरों से विरोध करने का) ।

अन्वयः—यावत् अयं पापः अरिशरैः निधनं न उपेयात्, तावत् रणमुखे मया प्रियम् अपि अस्त्रं परित्यक्तम् । अस्मिन् बलानां नाथे समरे परिकुपितभीमार्जुनभये समुत्पन्ने राजा प्रियसखबलं वेत्तु ॥ ४५ ॥

अयं पाप इति । यावत् = यावत्कालम् (जब तक) । अयम् = एषः पापः = पापात्मा अरिशरैः—अरीणाम् = शत्रूणाम् शरैः = बाणैः (शत्रुओं के बाणों से) निधनम् = मरणम् न उपेयात् = नोपगच्छेत् (न पहुँच जाये) । तावत् (तब तक) । रणमुखे = युद्धे मया = द्रौणायनिना (मैंने) प्रियम् अपि = रुचिकरमपि

अश्वत्थामा—हे मामा ! इस कटुप्रलापी सूतकुलकलङ्क कर्ण के दर्प को चकनाचूर करने (मिटाने) का तो अवसर ही नहीं मिलेगा ।

कृपाचार्य—वत्स ! वास्तव में यह अपनी सेना के प्रमुख वीरों से विरोध करने का समय नहीं है ।

अश्वत्थामा—हे मातुल ! यदि ऐसा है तो—

जब तक यह पापी शत्रुओं के बाणों द्वारा मार नहीं दिया जाता है तब तक मैंने युद्ध में अपने प्रिय अस्त्र का भी परित्याग कर दिया । इस कर्ण के नेतृत्व वाले संग्राम में क्रुद्ध भीम तथा अर्जुन के द्वारा भय उत्पन्न किये जाने के अवसर पर राजा अपने प्रियमित्र (कर्ण) के बल को समझ लें ॥ ४५ ॥

(इति खड्गमुत्सृजति ।)

कर्णः—(विहस्य) कुलक्रमागतमेवैतद्भवादृशां यदस्त्रपरित्यागो नाम ।

अश्वत्थामा—ननु रे अपरित्यक्तमपि भवादृशेरायुधं चिरपरित्यक्तमेव निष्फलत्वात् ।

कर्णः—अरे मूढ !

धृतायुधो यावदहं तावदन्यैः किमायुधैः ।
यद्वा न सिद्धमस्त्रेण मम तत्केन सेत्स्यति ॥ ४६ ॥

अस्त्रम् = आयुधम् (प्रिय अस्त्र को भी) । परित्यक्तम् = विसृष्टम् (त्याग दिया है) । अस्मिन् बलानां नाथे समरे = एतस्मिन् कर्णसेनापति-युद्धे (इस कर्ण के सेनापतित्व वाले युद्ध में) । परिकुपितभीमार्जुनभये—परिकुपिताभ्यां = क्रुद्धाभ्याम् भीमार्जुनाभ्याम् = वृकोदरकिरीटिभ्याम् भये = त्रासे समुत्पन्ने = जाते (क्रुद्ध भीम तथा अर्जुन के द्वारा भयभीत किये जाने के समय) । राजा = नृपः दुर्योधनः (राजा) प्रियसखबलम्—प्रियसखस्य = कर्णस्य बलम् = सामर्थ्यम् (अपने प्रिय मित्र कर्ण का बल) । वेत्तु = जानातु (समझ लें) । शिखरिणी वृत्तम् ॥ ४५ ॥

कर्णः—कुलक्रमागतम्—कुलक्रमात् = वंशपरिपाटचा, आगतम् = आयातम् (कुलक्रम से आया हुआ ही) । भवादृशाम् = भवत्सदृशानाम् (आप जैसे लोगों का) अस्त्रपरित्यागो नाम = आयुधमोचनकर्म ।

अश्वत्थामा—अपरित्यक्तम् अपि = अमुक्तमपि (कभी न छोड़ा गया भी) भवादृशैः = भवत्समैः शापितैः (आप जैसे शापयुक्त लोगों द्वारा) । आयुधम् = शस्त्रम् । चिरपरित्यक्तम् एव = सर्वदापरित्यक्तसदृशमेव (सदा के छूटे हुए जैसा ही) । निष्फलत्वात् = परशुरामशापेन विफलत्वात् (निष्फल होने के कारण) ।

अन्वयः—अहं यावत् धृतायुधः, तावत् अन्यैः आयुधैः किम् । वा यत् मम अस्त्रेण न सिद्धं, तत् केन सेत्स्यति ॥ ४६ ॥

धृतायुध इति । अहम् = कर्णः । यावत् = यावत्कालम् (जब तक) । धृता-

---

(यह कहकर तलवार छोड़ देता है)

कर्ण—(हँसकर) यह अस्त्र-त्याग करना तो आपके कुलक्रम से ही चला आरहा है ।

अश्वत्थामा—अरे नीच ! तेरे जैसे लोगों का सदैव शस्त्रधारण किये रहना भी नितान्त शस्त्र-परित्याग जैसा ही है क्योंकि (गुरु-शाप से) वह निष्फल रहेगा ।

कर्ण—अरे मूर्ख ! जब तक मैं शस्त्र धारण किये हुये हूँ उस समय तक किसी दूसरे शस्त्रधारी की कोई आवश्यकता नहीं है । अथवा जो कार्य मेरे अस्त्र से सिद्ध नहीं हो सका वह किसी से भी सिद्ध नहीं होगा ॥ ४६ ॥

(नेपथ्ये) आः दुरात्मन्, द्रौपदीकेशाम्बराकर्षणमहापातकिन्, धार्तराष्ट्रापसद, चिरस्य खलु कालस्य मत्सम्मुखीनमागतोऽसि । क्षुद्रपशो ! क्वेदानीं गम्यते । अपि च । भो भो ! राधेयदुर्योधनसौबलप्रभृतयः पाण्डवविद्वेषिणश्चापपाणयो मानधनाः ! शृण्वन्तु भवन्तः ।

कृष्टा येन शिरोरुहे नृपशुना पाञ्चालराजात्मजा
येनाऽस्याः परिधानमप्यपहृतं राज्ञां गुरूणां पुरः ।

युधः—धृतम् = गृहीतमायुधम् येन सः (शस्त्रधारण किया हुआ)। तावत् = तावत्कालम् (तब तक)। अन्यैः = अपरैः (दूसरे) आयुधैः = धृतायुधैः (शास्त्रधारियों से) किम् = किं प्रयोजनम् । वा = अथवा । यत् = यत्कार्यं । मम = मे कर्णस्य । अस्त्रेण = आयुधेन । न सिद्धम् = न सफलं जातम् (सिद्ध नहीं हुआ)। तत् (वह)। केन = न केनापि । सेत्स्यति = सम्पन्नं भविष्यति । अनुष्टुप् वृत्तम् ॥ ४६ ॥

आः दुरात्मन् ! = रे दुष्ट । द्रौपदीकेशाम्बराकर्षणमहापातकिन्—द्रौपद्याः = पाञ्चाल्याः केशानाम् = कचानाम् अम्बरस्य = वस्त्रस्य चाकर्षणमेव महापातकम्, तदस्यास्तीति तत्सम्बुद्धौ (द्रौपदी के केश तथा वस्त्रों के खींचने का महान् पातक करने वाले)। धार्तराष्ट्रापसद != नीचधृतराष्ट्रसुत ! दुःशासन ! चिरस्य कालस्य = बहुसमयान्तरात् (बहुत समय बाद)। मत्सम्मुखीनम्=मत्समक्षम् (मेरे सामने) आगतः = आयातः असि । अरे क्षुद्रपशो ! = रे तुच्छपशो । इदानीम् = अधुना (अब) क्व गम्यते = कुत्र गच्छसि (कहाँ जा रहा है)। राधेयदुर्योधनसौबलप्रभृतयः = कर्णदुर्योधनशकुन्यादयः । पाण्डवविद्वेषिणः = पाण्डवशात्रवः । चापपाणयः—चापानि पाणिषु येषां ते, तत्सम्बुद्धौ=रे धनुर्धारिणः । भवन्तः=श्रीमन्तः (आप लोग) शृण्वन्तु = आकर्णयन्तु (सुन लें)।

अन्वयः—नृपशुना येन पाञ्चालराजात्मजा शिरोरुहे कृष्टा । येन अस्याः परिधानम् अपि राज्ञां गुरूणां (च) पुरः अपहृतम् । यस्य उरःस्थलशोणितासवं

(नेपथ्य में) अरे दुरात्मन् ! द्रौपदी के केश तथा वस्त्र खींचने का महापातक करने वाले ! नीच धृतराष्ट्र सुत ! निःसन्देह बहुत समय बाद मेरे सामने पड़ा है (दिखाई दिया है)। अरे नीच-पशु, अब कहाँ जा रहा है ? और भी—अरे कर्ण-दुर्योधन शकुनि आदि पाण्डव द्रोहियो तथा मानधनी धनुर्धारियो ! आप लोग सुन लें—

पशु जैसे नीच जिसके द्वारा पाञ्चाल-राजपुत्री बाल पकड़ कर खींची गई, जिसने इस (द्रौपदी) का परिधान भी राजाओं एवं गुरुजनों के समक्ष खींचा। जिसके वक्षःस्थल की

यस्योरःस्थलशोणितासवमहं पातुं प्रतिज्ञातवान्,
सोऽयं मद्भुजपञ्जरे निपतितः संरक्ष्यतां कौरवाः ॥ ४७ ॥
(सर्वे आकर्णयन्ति ।)

अश्वत्थामा—(सोत्प्रासम् ।) अङ्गराज ! सेनापते ! जामदग्न्यशिष्य ! द्रोणोपहासिन् ! भुजबलपरिरक्षितसकललोक ! (धृतायुधः (३।४६) इति पठित्वा ।) इदं तदासन्नतरमेव संवृत्तम् । रक्षैनं साम्प्रतं भीमाद् दुःशासनम् ।

पातुं अहं प्रतिज्ञातवान् । सः अयं मद्भुजपञ्जरे निपतितः । कौरवाः ! संरक्ष्यताम् ॥ ४७ ॥ मुखसन्धि का सम्भ्रम नामक अंग ।

कृष्टेति । नृपशुना=नरपशुना (मनुष्यरूपी पशु) येन=येन नीचेन । पाञ्चालराजात्मजा—पाञ्चालराजस्य = द्रुपदस्यात्मजा = पुत्री द्रौपदी । शिरोरुहे = केशे । कृष्टा = आकृष्टा (बाल पकड़ कर खींची गई) । येन = येन दुष्टेन (जिसने) परिधानं वस्त्रम् अपि (उसके वस्त्र भी) । राज्ञाम् = नृपाणाम् । गुरूणाम् = भीष्मादिवृद्धजनानाम् च । पुरः = समक्षम् (सामने) । अपहृतम् = आकृष्टम् (खींचा) । यस्य = यस्य दुरात्मनः (जिसका) । उरःस्थलशोणितासवम्—उरःस्थलस्य=वक्षसः शोणितमेवासवम्, तत् (वक्षःस्थल से रुधिरासव के) । पातुम् = पानं कर्त्तुम् (पीने को) अहम् = भीमः । प्रतिज्ञातवान् = संकल्पितवान् (प्रतिज्ञा की थी) । सः =असौ अयम् = एषः दुःशासनः । मद्भुजपञ्जरे—मम भुजयोः = बाह्वोः पञ्जरे = जाले (मेरी बाहों के पंजर में) । निपतितः = आपतितः (पड़ गया है) कौरवाः = हे धार्तराष्ट्राः (कौरवो) ! संरक्ष्यताम् = त्रायताम् (बचाओ) । शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम् ॥ ४७ ॥

अश्वत्थामा—सोत्प्रासाम् = सोपहासम् (उपहास के साथ) । भुजबलपरिरक्षित-सकललोक—भुजबलेन = बाहुबलेन परिरक्षितम् = सुरक्षितम् सकलम् = समस्तम् लोकः = संसारम् येन तत्सम्बुद्धौ (हे अपने बाहुबल से सम्पूर्ण संसार की रक्षा करने वाले) । इदम् = एतत् (यह) आसन्नतरम् = निकटतरम् (अधिक निकट) सम्वृत्तम् = सम्प्राप्तम् (आ चुका है) ।

रुधिर रूपी मदिरा पीने के लिये मैंने प्रतिज्ञा की थी । वही यह (दुःशासन) मेरे भुजपञ्जर में पड़ा हुआ है । हे कौरवो ! इसे बचाओ ॥ ४७ ॥

(सभी सुनते हैं ।)

अश्वत्थामा—(उपहास के साथ) अङ्गराज । हे सेनापते ! परशुराम-शिष्य ! द्रोण का उपहास करने वाले ! भुजबल से सकल संसार के रक्षक ! ('धृतायुधः यावदहं—' (३।४६) आदि कर्णोक्त वाक्य पढ़कर) यह वही अवसर आ गया है । अब भीम से इस दुःशासन को बचाओ ।

कर्णः—आः, का शक्तिर्वृकोदरस्य मयि जीवति दुःशासनस्य छाया-मप्याक्रमितुम्। युवराज! न भेतव्यं, न भेतव्यम्। अयमहमागतोऽस्मि। (इति निष्क्रान्तः।)

अश्वत्थामा—राजन् कौरवनाथ! अभीष्ममद्रोणं सम्पति कौरवबल-मालोडयन्तौ भीमार्जुनौ राधेयेनैवंविधेनान्येन वा न शक्यते निवारयितुम्। अतः स्वयमेव भ्रातुः प्रतीकारपरो भव।

दुर्योधनः—आः! का शक्तिरस्ति दुरात्मनः पवनतनयस्याऽन्यस्य वा मयि जीवति शस्त्रपाणौ वत्सस्य छायामप्याक्रमितुम्। वत्स! न भेतव्यं न भेत-व्यम्। कः कोऽत्र भोः! रथमुपनय। (इति निष्क्रान्तः)

कर्णः—न भेत्तव्यम्=भयं न करणीयम् (डरना नहीं चाहिए)। आगतः= आयातः।

अश्वत्थामा—अभीष्मम् = भीष्मरहितम्। अद्रोणम् = द्रोणरहितञ्च। कौरव-बलम् = कुरुसैन्यम् आलोडयन्तौ = मथ्नन्तौ (मन्थन करते हुए) भीमार्जुनौ—भीमश्चार्जुनश्च, तौ (भीम तथा अर्जुन) राधेयेन = सूतपुत्रेण कर्णेन (राधापुत्र द्वारा)। एवं विधेन = ईदृशेन। अन्येन वा = अपरेण वा (अथवा इसी प्रकार के दूसरे व्यक्ति द्वारा)। वारियतुम् = निवारयितुम् (रोकने को)। न शक्यते = न शक्येते (समर्थ नहीं हो सकते हैं) स्वयमेव = आत्मनैव (अपने आप ही) प्रतीकारपरः = प्रतीकारसंलग्नः (बदला लेने में युक्त)।

दुर्योधनः—दुरात्मनः = दुष्टस्य। पवनतनयस्य = वायुनन्दनस्य भीमस्य। वा अन्यस्य = अपरस्य (या दूसरे की)। शस्त्रपाणौ—शस्त्रं पाणौ यस्य तस्मिन् (शास्त्र धारण किये) मयि = दुर्योधने जीवति = जीवनं धारयति सति (मेरे

कर्ण—अरे! मेरे जीवित रहते वृकोदर की क्या शक्ति है कि वह युवराज की छाया तक छू सके। हे युवराज! डरो मत, डरो मत। यह मैं आ गया हूँ। (यह कहकर निकल जाता है)।

अश्वत्थामा—राजन्! कौरवनाथ! भीष्म तथा द्रोण से रहित अब कौरव दल को मथते हुए भीम तथा अर्जुन, राधेय कर्ण अथवा ऐसे ही किसी अन्य द्वारा नहीं रोके जा सकते हैं, अतः अपने आप ही भाई को बचाओ।

दुर्योधन—अरे दुष्ट वायुनन्दन भीम की या किसी अन्य की क्या शक्ति है जो शस्त्र धारण किये हुये मेरे जीवित रहते भाई की परछाई भी छू सके। वत्स! डरो मत, डरो मत। अरे यहाँ कौन है। रथ ले आओ। (यह कहकर निकल जाता है)।

(नेपथ्ये कलकलः)

अश्वत्थामा—(अग्रतो विलोक्य, ससम्भ्रमम्) मातुल ! हा धिक्, कष्टं कष्टम् । एष भ्रातुः प्रतिज्ञाभङ्गभीरुः किरीटी समं दुर्योधनराधेयौ शरवर्षैर्दुर्वारैरभिद्रवति । हा कष्टं कष्टम् । सर्वथा पीतं दुःशासनशोणितं भीमसेनेन । न खलु विषहे दुर्योधनाऽनुजस्यैनां विपत्तिमवलोकयितुम् । अनृतमनुमतं नाम । मातुल ! शस्त्रं शस्त्रम् ।

जीवित होते हुये)। वत्सस्य = प्रियदुःशासनस्य (प्रियभाई की) छायाम् अपि = प्रतिच्छायमपि (परछाईं भी) आक्रमितुम् = स्पृष्टुम् (छूने की)। रथम् = स्यन्दनम् । उपनय = आनय (ले आओ)।

अश्वत्थामा—अग्रतः = पुरतः (सामने)। विलोक्य = दृष्ट्वा (देखकर) ससम्भ्रमम् = सहसा । भ्रातुः = वान्धवस्य भीमस्य । प्रतिज्ञाभङ्गभीरुः—प्रतिज्ञायाः = संकल्पस्य भङ्गात् = नाशहेतोः भीरुः = कातरः (दुःशासन-वध करने की भीम की प्रतिज्ञा कहीं टूट न जाय इससे डरने वाले) किरीटी = अर्जुनः । दुर्योधनराधेयौ = कुरुपतिकर्णौ । समम् = साकम् (साथ) शरवर्षैः = बाणप्रहारैः (वाण वर्षा से)। दुर्वारैः = कठिनैः अभिद्रवति = अभिक्रामति (जोर से आक्रमण कर रहा है)। दुःशासनशोणितम् = दुःशासनस्य रुधिरम् । भीमसेनेन = वृकोदरेण । सर्वथा = नितान्तम् । पीतम् = पानं कृतम् (सर्वथा पी लिया है)। न विषहे = सोढुं न शक्नोमि (नहीं सह सकता हूँ)। दुर्योधनानुजस्य = दुःशासनस्य । एनाम् = एताम् । विपत्तिम् = विपदाम् (इस विपत्ति को) अवलोकयितुम् = द्रष्टुम् (देखने को)। अनृतम् = असत्यम् (झूठ)। अनुमतम् नाम = प्रतिज्ञातम् नाम (प्रतिज्ञा भले ही झूठी पड़ जाये)।

(नेपथ्य में कलकल की ध्वनि)

अश्वत्थामा—(सामने देखकर, वेग से) मातुल ! हा धिक्कार है ! हा कष्ट है । यह 'भाई की प्रतिज्ञा कहीं भङ्ग न हो जाये' इससे डर कर अर्जुन दुर्योधन तथा कर्ण को ही भयङ्कर बाण वर्षा कर रोक रहा है । हाय कष्ट है, कष्ट है । भीम ने तो दुःशासन का रुधिर पी लिया । निःसन्देह दुर्योधनानुज दुःशासन की इस विपत्ति को देखना मैं नहीं सह सकता हूँ । प्रतिज्ञा (कर्ण-वध तक शस्त्र त्याग) भले ही झूठी पड़ जाये । हे मामा ! शस्त्र (दीजिये), शस्त्र लाइये ।

सत्यादप्यनृतं श्रेयो धिक्स्वर्गं नरकोऽस्तु मे।
भीमाद् दुःशासनं त्रातुं त्यक्तमत्यक्तमायुधम् ॥ ४८ ॥

(इति खड्गं ग्रहीतुमिच्छति ।)

(नेपथ्ये ।) महात्मन्! भारद्वाजसूनो! न खलु सत्यवचनमनुल्लङ्घित-पूर्वमुल्लङ्घयितुमर्हसि।

कृपः—वत्स! अशरीरिणी भारती भवन्तमनृतादभिरक्षति।

अन्वयः—सत्यात् अपि अनृतं श्रेयः। स्वर्गं धिक्। मे नरकः अस्तु। त्यक्तम् (अपि) आयुधं भीमात् दुःशासनं त्रातुम् अत्यक्तम् ॥ ४८ ॥

सत्यादिति। सत्यात् = तथ्यात् अपि। अनृतम् = असत्यम्। श्रेयः = कल्याण-करम्। स्वर्गम् = सुरलोकम्। धिक् = धिक्कारोऽस्तु (स्वर्ग को भी धिक्कार है)। (प्रतिज्ञामिथ्याकारणात्) मे = मह्यम् (मुझे) नरकः = यमलोकः (नरक)। अस्तु = स्यात्। (कर्णवधपर्यन्तम्) त्यक्तम् = परित्यक्तम् अपि। आयुधम् = शस्त्रम् (त्यागा हुआ आयुध भी)। भीमात् = वृकोदरात्। दुःशासनम् = दुर्योधनानुजम्। त्रातुम् = रक्षितुम् (दुःशासन की रक्षा करने को)। अत्यक्तम् = अपरित्यक्तम्, गृहीतम् (भवतु)। पथ्यावक्त्रं वृत्तम् ॥ ४८ ॥

हे महात्मन् = हे महापुरुष! भारद्वाजसूनो—भारद्वाजस्य = द्रोणस्य सूनुः = सुतः, तत्सम्बुद्धौ (हे द्रोणपुत्र) सत्यवचनम् = अवितथवाक्यम् (सत्यवचन को) उल्लंघयितुम् = लंघयितुम् (उल्लंघन करने को)। अनुल्लंघितपूर्वम्—अनुल्लंघितम् = न उल्लंघितम् पूर्वं = प्राक् यत् तत् (जिसका कि इससे पूर्व कभी उल्लंघन नहीं किया)। न अर्हसि = नोचितोऽसि (ठीक नहीं हो)।

कृपः—अशरीरिणी = दिव्या। भारती = वाणी। भवन्तम् = श्रीमन्तम् (आपको)। अनृतात् = असत्यभाषणात् (झूठ बोलने से) अभिरक्षति = निवारयति (रोकती है)।

सत्य से असत्य ही श्रेयस्कर है। स्वर्ग को धिक्कार है। मुझे (भले ही) नरक ही मिले (परन्तु कर्ण-वध तक) त्यक्त आयुध भी भीम से दुःशासन को बचाने के लिए (अब) अत्यक्त (ग्रहण किया हुआ ही) है। ४८ ॥

(यह कहकर खड्ग उठाना चाहता है)

(नेपथ्य में) हे महात्मन्! भारद्वाजसूनो! वास्तव में आपने इससे पूर्व कभी अपने प्रतिज्ञा का उल्लंघन नहीं किया है (अतः अब भी) उसका उल्लंघन नहीं करना चाहिये।

कृपाचार्य—वत्स! दिव्य वाणी आपको असत्य बोलने से रोक रही है।

अश्वत्थामा—कथमियममानुषी वाङ्नानुमनुते सङ्ग्रामावतरणं मम। आः, सर्वथा पाण्डवपक्षपातिनो देवाः। सर्वथा पीतं दुःशासनशोणितं भीमेन। भोः कष्टं कष्टम्।

दुःशासनस्य रुधिरे पीयमानेऽप्युदासितम्।
दुर्योधनस्य कर्ताऽस्मि किमन्यत्प्रियमाहवे॥ ४९॥

मातुल! राधेयक्रोधवशादनार्यमस्माभिराचरितम्। अतस्त्वमपि तावदस्य राज्ञः पार्श्ववर्ती भव।

अश्वत्थामा—इयम् = एषा। अमानुषी = दिव्या। वाक् = वाणी। कथम् = किमिव (कैसे) न अनुमनुते = अनुमतिं न ददाति (अनुमति नहीं दे रही है)। संङ्ग्रामवतरणम्—संग्रामे = युद्धे अवतरणम् = गमनम् (युद्ध में उतरने को)। सर्वथा = नितान्तम्। देवाः = सुराः। पाण्डवपक्षपातिनः—पाण्डवानां पक्षपातकारिणः (पाण्डवों का पक्षपात करने वाले)। शोणितम् = रुधिरम्। पीतम् = पानं कृतम्।

अन्वयः—दुःशासनस्य रुधिरे पीयमाने अपि (मया) उदासितम्। आहवे दुर्योधनस्य अन्यत् किं प्रियं कर्ता अस्मि॥ ४९॥

दुःशासनस्येति। दुःशासनस्य = दुर्योधनानुजस्य (दुःशासन का) रुधिरे = रक्ते पीयमाने = पानं कुर्वंति, अपि (पिये जाने पर भी)। (मया) उदासितम् = उदासीनता धारिता (उदासीन रहा) आहवे = रणे (युद्ध में)। दुर्योधनस्य = कुरुपतेः (अधुना) अन्यत् = अपरम् किं प्रियम् = किं प्रियकार्यम्। कर्त्ता = कारकः अस्मि। यदि मया तद्भ्रातृवधेऽपि सहायता न कृता तर्हि अन्यस्यां कस्यां विपत्तौ साहाय्यं करणीयमिति भावः। अनुष्टुप् वृत्तम्॥ ४९॥

राधेयक्रोधवशात्—राधेये = राधिकापुत्रे कर्णे क्रोधवशात् = कोपहेतोः (कर्णं

अश्वत्थामा—यह दिव्य वाणी मुझे युद्ध में जाने की अनुमति क्यों नहीं दे रही है (क्यों रोक रही है ?) आः देवता भी सर्वथा पाण्डवों के पक्षपाती हैं। भीम ने दुःशासन का रुधिर पी लिया है। हाय! दुःख है।

दुःशासन का रुधिर पान किये जाने पर भी जब मैं उदासीन बना रहा, तो युद्ध में दुर्योधन का और दूसरा क्या प्रिय कार्य कर पाऊँगा॥ ४९॥

हे मातुल! राधेय (कर्ण) पर क्रुद्ध होने के कारण हमने अनुचित कर डाला। अतः आप भी अब इन राजा दुर्योधन की सहायता के लिए चले जाइये।

कृपः—गच्छाम्यहमत्र प्रतिविधातुम्। भवानपि शिविरसन्निवेशमेव प्रतिष्ठताम्।

(उभौ परिक्रम्य निष्क्रान्तौ)

इति तृतीयोऽङ्कः।



पर क्रुद्ध होने के कारण)। अनाचरितम् = अनुचितं कृतम् (अनाचार किया है)। अस्य = एतस्य राज्ञः = नृपस्य दुर्योधनस्य। पार्श्ववर्ती = सहायकः।

कृपः—अत्र = रणे। प्रतिविधातुम् = प्रतीकारं विधातुम् (बदला लेने को)। शिविरसन्निवेशम् एव = सैन्यागारनिकटमेव (शिविर के समीप ही) प्रतिष्ठताम् = स्थीयताम् (बने रहो)। उभौ = कृप-द्रोणसुतौ।

इति 'सुधा'-संस्कृत-हिन्दीटीका-द्वयोपेतस्य वेणीसंहार-
नाटकस्य तृतीयोऽङ्कः।



कृपाचार्य—मैं युद्ध में बदला लेने के लिए जा रहा हूँ। तुम भी शिविर के निकट ही बने रहना।

(दोनों घूम कर निकल जाते हैं)।

तृतीय अङ्क समाप्त।



चतुर्थोऽङ्कः

(ततः प्रविशति प्रहारमूर्च्छितं रथस्थं दुर्योधनमपहरन्सूतः)

(सूतः ससम्भ्रमं परिक्रामति ।)

(नेपथ्ये) भो भोः, बाहुबलाऽवलेपप्रवर्तितमहासमरदोहदाः कौरवपक्षपातपणीकृतप्राणद्रविणसंचयाः नरपतयः ! संस्तभ्यन्तां संस्तभ्यन्ताम्, निहतदुःशासनपीतावशेषशोणितस्नपितबीभत्सवेषवृकोदरदर्शनभयपरिस्खलत्प्रहरणानि रणात्प्रद्रवन्ति बलानि ।

ततः = तदनन्तरम् । प्रहारमूर्च्छितम्—प्रहारेण = आघातेन मूर्च्छितः = विसंज्ञस्तम् । (प्रहार से मूर्च्छित) रथस्थम्—रथे = स्यन्दने स्थितम् (रथपर स्थित) । दुर्योधनम् = धार्तराष्ट्रम् (दुर्योधन को) अपहरन् = अपहरणं कुर्वन् । ससम्भ्रमम् = सभयम् (डरकर) ।

बाहुबलाऽवलेप-प्रवर्तित-महासमरदोहदाः—बाहुबलस्य = भुजबलस्यावलेपेन = गर्वेण प्रवर्तित यो महासमरस्य = भीषणरणस्य दोहदः = अभिलाषः ('दोहदम् इच्छा आकांक्षा' इत्यमरः ।) (बाहुबल के गर्व से प्रारम्भ की गयी महासमर की इच्छा) यैस्ते तत्सम्बुद्धौ । कौरवपक्षपातपणीकृतप्राणद्रविणसञ्चयाः—कौरवाणाम् = दुर्योधनादीनाम् पक्षपातेन = स्नेहेन पणीकृताः = मूल्यीकृताः प्राणा एव = असवः एव द्रविणसंचयः = वित्तराशिर्यैस्ते तत्सम्बुद्धौ (हे कौरवों के पक्षपात से अपने प्राणरूपी धनराशि की कीमत चुकाने वालो) । नरपतयः = राजानः (राजाओ !) संस्तभ्यताम् = स्थिरीक्रियन्ताम् (स्थिर करो) । निहतदुःशासनपीतावशेष-शोणितस्नपितवीभत्स-वेषवृकोदरदर्शनभयपरिस्खलत्प्रहरणानि—निहतस्य = मारितस्य दुःशासनस्य = दुर्योधनभ्रातुः पीतावशेषं = पानावशिष्टम् यत् शोणि-

---

(इसके बाद प्रहार से मूर्च्छित, रथ में स्थित दुर्योधन को लिये हुए सूत प्रवेश करता है ।)

(सूत घबड़ाहट के साथ घूमता है ।)

(नेपथ्य में) अरे, रे ! बाहुबल के अभिमान से प्रारम्भ किये गये महासमर के अभिलाषी कौरवों के पक्षपात के कारण अपने प्राण-धनराशि का दाँव लगा देने वाले नृपतियो ! मारे गये दुःशासन के पीतावशेष रुधिर से सराबोर भयङ्कर वेषधारी वृकोदर को देखने से उत्पन्न भय के कारण परिस्खलित आयुधों वाली रण से भाग रही सेनाओं को रोकिये, रोकिये ।

सूतः—(विलोक्य ।) कथमेष धवलचपलचारुचामरचुम्बितकनककमण्डुलना शिखरावबद्धवैजयन्तीसूचितेन हतगजवाजिनरकलेवरसहस्रसम्मर्दविषमोद्घातकृतकलकलकिङ्किणीजालमालिना रथेन शरवर्षस्तम्भितपरचक्रपराक्रमप्रसरः प्रद्रुतमात्मबलमाश्वासयन्कृपः किरीटिनाऽभियुक्तमङ्गराजमनुसरति । हन्त ! जातमस्मद्बलानामवलम्बनम् ।

तम् = रुधिरम्, तेन स्नपितः = कृतस्नानः अत एव बीभत्सः = भयङ्करः वेषः यस्य सः वृकोदरः = भीमसेनस्तस्य दर्शनाद् यद्भय, तेन परिस्खलन्ति = पतन्ति प्रहरणानि = आयुधानि येषां तथाविधानि (मारे गये दुःशासन के पीने से बचे रुधिर से नहाये हुए भयंकर वेष वाले वृकोदर को देखने से उत्पन्न भय से गिरते हुये हथियारों वाली) रणात् प्रद्रवन्ति = युद्धात् पलायमानानि (रणक्षेत्र से भागती हुई) । बलानि = सैन्यानि (सेनायें) ।

सूतः—विलोक्य = दृष्ट्वा (देखकर) । धवलचपलचारुचामरचुम्बितकनककमण्डलुना—धवलैः = शुभ्रैः चपलैः = चञ्चलैश्च चारुचामरैः = रुचिर-प्रकीर्णकैश्चुम्बिताः = स्पृष्टाः कनकस्य = स्वर्णस्य कमण्डलवः = कलशाः यत्र, तेन (शुभ्रचंचल चारु चामरों से चुम्बित कनक कमण्डलु वाले) । शिखरावबद्धवैजयन्तीसूचितेन—शिखरे = उपरिभागे अवबद्धाः = संलग्ना या वैजयन्ती = पताका तया सूचितेन अवबोधितेन (ऊपर बँधी हुई पताका से सूचित) । हतगजवाजिनरकलेवरसहस्रसम्मर्दविषमोद्घातकृतकलकलकिंकिणीजालमालिना—हतानाम् = मारितानाम् गजवाजिनराणाम् = हस्तिघोटकनृणाम् यानि कलेवराणि = शरीराणि, तेषां यत् सहस्रम्, तस्य सम्मर्दनेन = संघट्टनेन विषमे = उच्चावचे प्रदेशे उत्खातेषु = उच्छ्वलनेषु कृतः कलकलः = कलकलध्वनिः याभिस्तादृशीणाम् किङ्किणीनाम् = क्षुद्रघंटिकानाम्, जालेन = समूहेन मालते = शोभते यस्तथाविधेन (हाथी घोड़ों व मनुष्यों के हजारों शरीरों की रगड़ से ऊँचे-नीचे रण भाग में चलने के कारण कलकल ध्वनि करती हुई क्षुद्रघंटिकाओं के समूह से शोभित) । रथेन = स्यन्दनेन

सूत—(देखकर) शुभ्रचपल रुचिरचामरों से युक्त स्वर्ण कमण्डुलों वाले, शिखर पर फहराती विजयपताका से सूचित हजारों गज, बाजि तथा नर शरीरों के रगड़ने के कारण ऊँचे नीचे गड्ढे पड़ जाने से बजती हुई क्षुद्र घंटिकाओं के समूह से शोभित रथ में बैठे, बाणवर्षा से शत्रुदल के बलवेग को निरुद्ध किये, भाग रही अपनी सेना को ढाढस बँधाते हुए कृपाचार्य अर्जुन के द्वारा घेरे गये अङ्गराज कर्ण का अनुसरण कर रहे हैं। हन्त ! हमारी सेनाओं के लिए सहारा हो गया ।

(नेपथ्ये कलकलानन्तरम् ।)

भो भोः अस्मद्दर्शनभयस्खलितकार्मुककृपाणतोमरशक्तयः, कौरवचमूभटाः ! पाण्डवपक्षपातिनश्च योद्धाः, न भेतव्यं न भेतव्यम् । अयमहं निहत-दुःशासनपीवरोरःस्थलक्षतजासवपानमदोद्धतो रभसगामी स्तोकावशिष्ट-प्रतिज्ञामहोत्सवः कौरवराजस्य द्यूतनिर्जितो दासः पार्थमध्यमो भीमसेनः सर्वान्भवतः साक्षीकरोमि । श्रूयताम्—

(रथ से) । शरवर्षस्तम्भित-परचक्रपराक्रमप्रसरः—शरवर्षेण = वाणवृष्ट्या स्तम्भितः = निरुद्धः परचक्रस्य = शत्रुसमूहस्य पराक्रमप्रसरः = विक्रमवेगः येन सः (वाण-वर्षा से अवरुद्ध शत्रुदल के पराक्रम वेग वाले) । प्रद्रुतम् = पलायितम् (भागे हुये) आत्मवलम् = स्वसैन्यम् (अपनी सेना को) आश्वासयन् = धैर्यं धारयन् (धीरज बँधाते हुये) कृपः = द्रौणायनिमातुलः (कृपाचार्य) । किरीटिना = अर्जुनेन (अर्जुन के द्वारा) । अभियुक्तम् = अभितः आक्रान्तम् (चारों ओर से घेरे गये) । अङ्गराजम् = कर्णम् । अनुसरति = अनुगच्छति (अनुसरण कर रहे हैं) । हन्त=हर्षेऽव्ययम् (अहा) । अस्मद्बलानाम् = अस्मदीय सैन्यानाम् (हमारी सेना का) । अवलम्वनम् = साहाय्यम् (सहारा) । जातम् = सम्पन्नम् (हो गया) ।

अस्मद्दर्शनभयस्खलितकार्मुककृपाणतोमरशक्तयः—अस्माकम् = पाण्डवानाम् दर्शनेन = अवलोकनेन यद्भयम् तेन स्खलिताः = श्लथिताः कार्मुकश्च = धनुश्च कृपाणश्च = खड्गश्च तोमरश्च = शल्याग्रास्त्रविशेषश्च शक्तयश्च येषां तत्सम्बुद्धौ (हमें देखने के डर से जिनके धनुष, कृपाण तोमर तथा शक्तियाँ ढीले पड़ गये हैं, ऐसे) कौरवचमूभटाः = कुरुसैन्यवीराः (हे कौरव सेना के वीरो) पाण्डवपक्ष-पतिनश्च=पाण्डवस्नेहिनश्च (तथा पाण्डव-पक्षपाती) योद्धाः=सैनिकाः (सैनिको) । न भेतव्यम् = भयं न करणीयम् (डरो मत) । निहतदुःशासनपीवरोरःस्थल-क्षतजासवपानमदोद्धतः—निहतस्य = घातितस्य दुःशासनस्य पीवरम् = स्थूलम् यद् उरःस्थलम् = वक्षःस्थलम्, तस्य क्षतजम् = रुधिरम् एव आसवम् = मद्यम् तस्य

(नेपथ्य में कोलाहल के अनन्तर)

हे हे, हमें देखने से उत्पन्न भय से धनुष कृपाण तोमर तथा शक्तियाँ जिनकी गिर रही हैं, ऐसे कौरवसेना के वीरो तथा पाण्डव-पक्षपाती योद्धाओ ! डर मत करो, डर मत करो । यह मारे गये दुःशासन के पुष्ट वक्षःस्थल के रूधिरासव का पान करने से मतवाला बना हुआ, शीघ्रगामी, कुछ अवशिष्ट प्रतिज्ञा (दुर्योधन को मारने की) महोत्सव वाला, कौरव-राज का जुए में जीता हुआ सेवक मध्यम-पाण्डव मैं भीमसेन आप सबको साक्षी बना रहा हूँ सुनिये—

राज्ञो मानधनस्य कार्मुकभृतो दुर्योधनस्याऽग्रतः
प्रत्यक्षं कुरुबान्धवस्य मिषतः कर्णस्य शल्यस्य च।
पीतं तस्य मयाऽद्य पाण्डववधूकेशाम्बराकर्षिणः
कोष्णं जीवत एव तीक्ष्णकरजक्षुण्णादसृग्वक्षसः ॥ १ ॥

पानेन मदेन उद्धतः = मदमत्तः (मारे गये दुःशासन के रक्त रूपी आसव का पान करने से मतवाला बना हुआ)। रभसगामी = द्रुतगामी (शीघ्रता से जाने वाला) स्तोकावशिष्टप्रतिज्ञामहोत्सवः—स्तोकम् = किञ्चित् अवशिष्टः = उर्वरितः प्रतिज्ञामहोत्सवः=दुर्योधनोरुभङ्गरूपमहोत्सवः यस्य तादृशः (दुर्योधन के उरुभङ्ग रूपी प्रतिज्ञामहोत्सव जिसका थोड़ा सा अवशिष्ट रह गया है, ऐसा)। कौरव-राजस्य = कुरुनृपतेर्दुर्योधनस्य द्यूतनिर्जितः—द्यूते = कितवे निर्जितः = पराजितः यस्तादृशः दासः = सेवकः (जुयें में हारकर दास बना हुआ) पार्थमध्यमः = भीमसेनोऽहम्। सर्वान् = निखिलान् भवतः = श्रीमतः (आप सबको) साक्षी करोमि = साक्षिरूपं विदधामि (साक्षी कर रहा हूँ।) श्रूयताम् = आकर्ण्यताम् (सुनो)।

अन्वयः—मानधनस्य कार्मुकभृतः राज्ञः दुर्योधनस्य अग्रतः कुरुबान्धवस्य प्रत्यक्षं कर्णस्य शल्यस्य च मिषतः पाण्डववधूकेशाम्बराकर्षिणः तस्य जीवतः एव मया अद्य तीक्ष्णकरजक्षुण्णात् वक्षसः कोष्णम् असृक् पीतम् ॥ १ ॥

राज्ञ इति। मानधनस्य—मानमेव धनं यस्य तस्य (मानधनी)। कार्मुक-भृतः—कार्मुकं=धनुः बिभ्रतीति तस्य = धनुर्धारिणः (धनुर्धारी) राज्ञः = नृपस्य (राजा) दुर्योधनस्य = कुरुराजस्य अग्रतः = समक्षम् (सामने) कुरुबान्धवस्य = कौरवपक्षपातिनः प्रत्यक्षम् = समक्षम्। कर्णस्य=अङ्गराजस्य शल्यस्य=शल्यनृपस्य च। मिषतः = पश्यतः (देखते-देखते)। पाण्डववधूकेशाम्बराकर्षिणः—पाण्डव-वध्वाः = द्रौपद्याः केशानाम् = कचानाम् अम्बरस्य=वस्त्रस्य च आकर्षिणः = आक-र्षकस्य (पाण्डव-वधू द्रौपदी के केश तथा वस्त्र खींचने वाले) तस्य जीवतः = प्राणान्धारयत एव (उसके जीवित रहते ही)। मया=भीमेन (मेरे द्वारा) अद्य

मानधनी धनुर्धारी राजा दुर्योधन के सामने, कौरव-पक्षपाती कर्ण तथा शल्य के (सामने) देखते हुए पाण्डव वधू द्रौपदी के केश तथा वस्त्र खींचने वाले (दुःशासन का) उसके जीते जी ही मैंने आज पैने नाखूनों से फाड़े गये वक्षःस्थल से कुछ-कुछ गर्म रुधिर पी लिया है ॥ १ ॥

सूतः—(श्रुत्वा, सभयम् ।) अये ! कथमासन्न एवाऽसौ दुरात्मा कौरव-राजपुत्रमहावनोत्पातमारुतो मारुतिः । अनुपलब्धसंज्ञश्च महाराजः । भवतु । सुदूरमपहरामि स्यन्दनम् । कदाचिद् दुःशासन इवाऽस्मिन्नप्यनार्योऽनार्यमाचरिष्यति ।

(त्वरितं परिक्रम्यावलोक्य च ।) अये ! अयमसौ सरसीसरोजविलोलन-सुरभिशीतलमातरिश्वसंवाहितसान्द्रकिसलयो न्यग्रोधपादपः । उचिता

=अस्मिन् दिने (आज) तीक्ष्णकरजक्षुण्णात्—तीक्ष्णम्=क्षुरम् (पैने) करजक्षुण्णात्=नखविदारितात् (नाखूनों से फाड़े गये) वक्षसः=वक्षःस्थलात् (वक्षःस्थल से)। कोष्णम्=कवोष्णम् (थोड़ा-थोड़ा गर्म) असृक्=रुधिरम् पीतम्=पानम् कृतम् (पी लिया है)। अत्र परिकरालङ्कारः । शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम् ॥ १ ॥

सूतः—आसन्नः=सन्निकटम् एव (समीप ही) असौः=सः दुरात्मा=दुष्टः । कौरवराजपुत्रमहावनोत्पातमारुतः—कौरवराजपुत्राः=धार्तराष्ट्रा एव महावनम्=महदरण्यम्, तस्मिन् उत्पातमारुतः=प्रलयवायुरिव (कौरव-राजपुत्ररूपी महावन में प्रलयवायु के समान)। मारुतिः=पवनात्मजः भीमसेनः । अनुपलब्धसंज्ञः—अनुपलब्धा=अप्राप्ता संज्ञा=चेतना येन सः (वेहोश)। महाराजः=नृपः । सुदूरम्=दूरस्थानम् । स्यन्दनम्=रथम् । अपहरामि=नयामि (लिये जाता हूँ)। अस्मिन्=नृपे दुर्योधने अपि (इनपर भी) अनार्यः=दुष्टः । अनार्यम्=दुष्टत्वम् (धृष्टता)। आचरिष्यति=व्यवहरिष्यति (आचरण करेगा)।

त्वरिततरम्=अतिद्रुतम् (बहुत जल्दी-जल्दी)। सरसीसरोजविलोलन-सुरभिशीतलमातरिश्वसंवाहितसान्द्रकिसलयः—सरस्याः=तडागस्य सरोजानाम्=कमलानाम् विलोलनेन=कम्पनेन सुरभिः=सुगन्धिः शीतलः=शीतयुक्तः यो मातरिश्वाः=पवनः, तेन सम्वाहितानि=सञ्चालितानि सान्द्राणि=सघनानि किसलयानि=नूतनदलानि यस्य सः (तडाग के कमलों के हिलने के कारण सुगन्धित तथा शीतल वायु से संचालित सघन किसलय दलों वाला)। न्यग्रोध-

---

सूत—(सुनकर, भय सहित) अरे ! क्या वह दुष्ट कौरव-राजपुत्र रूपी महावन में उपद्रव करने वाले पवन जैसा पवनपुत्र (भीम) समीप ही आ गया है ? तथा यहाँ महाराज अब तक वेहोश हैं। अस्तु, रथ दूर लिये जा रहा हूँ। कदाचित् दुःशासन की भाँति इन पर भी यह अनार्य दुष्टता का व्यवहार न कर बैठे।

(अत्यन्त शीघ्रता से घूमकर तथा देखकर) अहा ! यह वहाँ पर तडाग के हिल रहे कमलों से सुगन्धित तथा शीतल पवन द्वारा संचालित किसलय-दलों वाला वटवृक्ष है।

विश्रामभूरियं समरव्यापारखिन्नस्य वीरजनस्य। अत्रस्थश्चायमयत्नोपवीजिततालवृन्तेन हरिचन्दनच्छटाशीतलेनाऽप्रयत्नसुरभिणा दशापरिणामयोग्येन सरसीसमीरणेनाऽमुना च गतक्लमो भविष्यति महाराजः। (ऊर्ध्वमवलोक्य) लूनकेतुश्चाऽयं रथोऽनिवारित एव प्रवेक्ष्यति छायामिति। (प्रवेशं रूपयित्वा।) कः कोऽत्र भोः। छत्रं व्यजनं चामरं च शीघ्रमुपनयतु। (समन्तादवलोक्य।) कथं न कश्चिदत्र परिजनः। नूनं तथाविधस्य वृकोदर-

---

पादपः = वटवृक्षः समरव्यापारखिन्नस्य—समरव्यापारेण = रणकर्मणा खिन्नस्य = दुःखिनः (युद्धकार्य से व्याकुल) वीरजनस्य=पराक्रमिणः (पराक्रमी व्यक्ति की) उचिता = उपयुक्ता। इयम् = एषा विश्रामभूमिः = विश्रामस्थली। अत्रस्थः = अत्रस्थितः (यहाँ ठहरे हुए) अयत्नोपवीजिततालवृन्तेन—अयत्नेन = प्रयासेन विनैव उपवीजितम् = चलितं यत् तालवृन्तम् = तालव्यजनम्, तेन (स्वाभाविक रूप से हिल रहे पत्तोंरूपी पंखे से)। हरिचन्दनच्छटाशीतलेन—हरिचन्दनस्य = श्वेतचन्दनस्य च्छटा=परम्परा, तया शीतलेन (हरिचन्दन की छटा से शीतल)। अप्रयत्नसुरभिणा = प्रयत्नेन विना सुगन्धिना (प्राकृतिक रूप से सुगन्धित)। दशापरिणामयोग्येन—दशायाः = मूर्च्छायाः परिणामः = परिणतिः तत्र योग्येन = समर्थेन (वेहोशी दूर करने में समर्थ)। अमुना = एतेन (इस) सरसीसमीरणेन=तडागपवनेन (तालाब की ओर से चलनेवाली वायु द्वारा)। महाराजः= दुर्योधनः गतक्लमः = गतश्रमः (थकावट रहित)। ऊर्ध्वम् = उपरि (ऊपर को)। अवलोक्य = दृष्ट्वा। लूनकेतुः—लूनः = च्छिन्नः केतुः = पताका यस्य सः (छिन्नध्वज वाला) अयम् = एषः रथः = स्यन्दनम् (रथ)। अनिवारितः = अप्रतिषिद्ध एव (रुके बिना ही)। छायाम् = आतपरहितस्थानम्। प्रवेक्ष्यति = प्रविष्टो भविष्यति (प्रविष्ट हो जायेगा)। छत्रम् = आतपत्रम्, व्यजनम् = तालवृन्तम् चामरञ्च (छत्र, पंखा तथा चामर) शीघ्रम् = आशु (शीघ्र) उपनयतु= उपाहरतु (ले आये)। समन्तात् = सर्वतः (चारों ओर)। परिजनः =

युद्ध-कर्म से व्याकुल वीरपुरुष के विश्राम करने योग्य यह स्थान है यहाँ रहने से बिना डुलाये पंखे के ही श्वेत चन्दन की छटा से शीतल इस बिना प्रयत्न के सुगन्धित, चैतन्यता प्राप्ति योग्य इस तडाग की ओर से चलने वाली वायु द्वारा महाराज की थकावट दूर हो जायेगी। (ऊपर को देख कर) तथा कटी ध्वजा वाला यह रथ बेरोक-टोक ही इस छाया में प्रविष्ट हो जायेगा। (प्रविष्ट होने का अभिनय कर) अरे! यहाँ कौन है? छत्र, पंखा तथा चामर तो शीघ्र ले आओ। (चारों ओर देख कर) क्या यहाँ कोई

स्य दर्शनादेवंविधस्य च स्वामिनस्त्रासेन शिविर-सन्निवेशमेव प्रविष्टः। कष्टं भोः ! कष्टम्।

दत्त्वा द्रोणेन पार्थादभयमपि न संरक्षितः सिन्धुराजः,
क्रूरं दुःशासनेऽस्मिन्हरिण इव कृतं भीमसेनेन कर्म।
दुःसाध्यामप्यरीणां लघुमिव समरे पूरयित्वा प्रतिज्ञाम्,
नाऽहं मन्ये सकामं कुरुकुलविमुखं दैवमेतावताऽपि॥ २॥

अनुचरः। तथाविधस्य = तादृशस्य (उस प्रकार के)। वृकोदरस्य = भीमस्य (भीम के)। दर्शनात् = अवलोकनात् (देखने से)। स्वामिनः = नृपस्य (महाराज के) त्रासेन = भयेन (भय से)। शिविरसन्निवेशम् = सैन्यसन्निकटमेव (शिविर के समीप ही) प्रविष्टः = आगतः (आ गया है)। कष्टं भो = महद्दुःखम् (अरे कष्ट है)।

अन्वयः—पार्थात् अभयं दत्त्वा अपि द्रोणेन सिन्धुराजः न संरक्षितः। भीमसेनेन हरिणे इव अस्मिन् दुःशासने क्रूरम् कर्म कृतम्। समरे अरीणां दुःसाध्याम् अपि प्रतिज्ञां लघुम् इव पूरयित्वा कुरुकुल-विमुखं दैवम् एतावता अपि सकामं न (इति) अहं मन्ये॥ २॥

दत्त्वेति। पार्थात् = पृथासुतादर्जुनात् (पार्थ से)। अभयम् = निर्भयम् दत्त्वा = प्रदाय अपि (अभयदान देकर भी) द्रोणेन = जामदग्नेयशिष्येण (द्रोणाचार्य द्वारा) सिन्धुराजः = जयद्रथः। न संरक्षितः = न सुरक्षितो जातः (नहीं बचाये जा सके)। भीमसेनेन = वृकोदरेण (भीमसेन द्वारा)। हरिणे = मृगे इव अस्मिन् = एतस्मिन् दुःशासने = दुर्योधनानुजे (हिरण के समान इस दुःशासन पर)। क्रूरम् = निर्दयम् कर्म = कार्यम्। कृतम् = विहितम् (निर्दयकर्म—मारकर रक्तपान—किया) समरे = रणे (युद्ध में) अरीणाम् = रिपूणाम् (शत्रुओं की)

भी परिजन नहीं है। अवश्य हां उस प्रकार (भयङ्कर) भीमसेन को देखने से ही तथा इस प्रकार महाराज के त्रास से सब शिविर के समीप चले गये हैं। हाय ! अतिकष्ट है।

पार्थ से बचाने के लिये कहकर भी द्रोणाचार्य सिन्धुराज जयद्रथ को न बचा सके। भीमसेन ने हिरण के समान (सिंह-से) इस दुःशासन पर क्रूर कर्म कर डाला। युद्ध में शत्रुओं की दुःसाध्य प्रतिज्ञा को भी तृणवत् पूर्ण कर कुरुवंश के विमुख बना दैव, मेरी समझ से तो इतना सब अनिष्ट करके भी अभी सफल नहीं हुआ है (अभी इससे बढ़कर और भी अनर्थ होना शेष है)॥ २॥

(राजानमवलोक्य) कथमद्याऽपि चेतनां न लभते महाराजः ? भोः, कष्टम् (निःश्वस्य)

मदकलितकरेणुभज्यमाने विपिन इव प्रकटैकशालशेषे ।
हतसकलकुमारके कुलेऽस्मिस्त्वमपि विधेरवलोकितः कटाक्षैः ॥३॥

दुःसाध्याम् = कठिनतराम् (अतिक्लिष्ट) प्रतिज्ञाम् = संकल्पम् लघुमिव = तुच्छमिव (तुच्छ-सी)। पूरयित्वा=संपाद्य (पूरी करके)। कुरुकुलविमुखम्=कौरववंशविरुद्धम् (कौरववंश के विपरीत) दैवम् = भाग्यम् । एतावताऽपि = एतत्कृतेन अपि (इतने से भी) सकामम् = सफलम् । इति = एवम् । अहम् = सूतः । मन्ये = जानामि (मैं यह समझता हूँ)। अत्र परिकरालङ्कारः । शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम् ॥ २ ॥

अद्यापि = इदानीमपि (अब भी)। महाराजः = नृपः (राजा)। चेतनाम् = विमूर्च्छनम् न लभते = न प्राप्नोति (नहीं पा रहे हैं)।

अन्वयः—मदकलितकरेणु-भज्यमाने प्रकटैकशालशेषे विपिने इव हतसकलकुमारके अस्मिन् कुले त्वम् अपि विधेः कटाक्षैः अवलोकितः ॥ ३ ॥

मदकलितेति । मदकलितकरेणुभज्यमाने—मदेन = दानेन कलितः = युक्ताः ये करेणवः = गजाः, तैः भज्यमाने = संमृद्यमाने (मतवाले गजकलभद्वारा तोड़े गये)। प्रकटैकशालशेषे—प्रकटः = स्फुटः एकः = अद्वितीयः शालः = शालवृक्षः शेषः = अवशिष्टो यत्र तादृशि (स्पष्टरूप से एकमात्र अवशिष्ट शाल वृक्ष वाले) विपिने=कानने इव (जङ्गल में जैसे)। हतसकलकुमारके—हताः = घातिताः सकलाः=सर्वे कुमारकाः=दुःशासनादिराजकुमाराः यस्मिन्, तथाविधे । अस्मिन् = एतस्मिन् कुले = कौरववंशे (समस्त राजकुमारों के मारे जाने के बाद बचे अकेले इस कुरुवंश में) त्वम् = महाराजः अपि (आप भी)। विधेः = भाग्यस्य (दुर्भाग्य के) कटाक्षैः = अपाङ्गैः (कटाक्षों द्वारा)। अवलोकितः=दृष्टः असि । अत्र पूर्णोपमालङ्कारः । पुष्पिताग्रा वृत्तम् ॥ ३ ॥

(राजा को देखकर) क्या अब भी महाराज होश में नहीं आ पाये हैं। हाय कष्ट है ! (गहरी साँस छोड़कर)

जिस प्रकार मतवाले हाथियों के द्वारा नष्ट किये गये वन में कोई एक मात्र शाल वृक्ष बचा हो, उसी प्रकार पाण्डवों द्वारा सभी कुमारों के नष्ट किये जाने से एक मात्र बचे हुए इस कौरवकुल में तुम भी दुर्भाग्य की कुदृष्टि से देखे गये हो ॥ ३ ॥

(आकाशे लक्ष्यं बद्ध्वा) ननु भो हतविधे ! भरतकुलविमुख !

अक्षतस्य गदापाणेरनारूढस्य संशयम् ।
एषाऽपि भीमसेनस्य प्रतिज्ञा पूर्यते त्वया ॥ ४ ॥

दुर्योधनः—(शनैरुपलब्धसंज्ञः ।) आः ! का शक्तिरस्ति पवनतनयस्य दुरात्मनो वृकोदरहतकस्य मयि जीवति दुर्योधने प्रतिज्ञां पूरयितुम्। वत्स दुःशासन ! न भेतव्यं न भेतव्यम् । अयमहमागतोऽस्मि । ननु, सूत ! प्रापय रथं तमेवोद्देशं यत्र वत्सो मे दुःशासनः ।

आकाशे=नभसि । लक्ष्यम् बद्ध्वा=उद्देश्यं कृत्वा (आकाश में लक्ष्य कर)। भो हतविधे = रे दुर्भाग्य ! भरतकुलविमुख—भरतकुलस्य = कुरुवंशस्य विमुखः = विरुद्धः, तत्सम्बुद्धौ (रे कौरववंश-विरुद्ध) !

अन्वयः—गदापाणेः अक्षतस्य संशयम् अनारूढस्य भीमसेनस्य एषा अपि प्रतिज्ञा त्वया पूर्यते ॥ ४ ॥

अक्षतस्येति । गदापाणेः—गदा पाणौ यस्य तस्य = गदाधारिणः वृकोदरस्य अक्षतस्य = प्रहारानभिहतस्य (घायल हुये बिना ही)। संशयम् = संदेहम् । अनारूढस्य = अप्राप्तस्य (संशय को न प्राप्त हुए)। भीमसेनस्य = भीमस्य । एषा इयम्=अपि (यह भी) प्रतिज्ञा=गदया सुयोधनोरुभङ्गस्य संकल्पः (उरुभंग प्रतिज्ञा) त्वया = भवता (आपके द्वारा)। पूर्यते = पूर्तिं नीयते (पूरी की जा रही है) । पथ्यावक्त्रं वृत्तम् ॥ ४ ॥

दुर्योधनः—शनैः = मन्दम् (धीरे से) उपलब्धसंज्ञः—उपलब्धा संज्ञा येन तथाविधः=प्राप्तचेतनः (होश में आया हुआ) । आः = अरे ! पवनतनयस्य=वायुसुतस्य दुरात्मनः = दुष्टस्य वृकोदरहतकस्य =भीमसेनस्य (पवनपुत्र दुष्ट भीम की) का शक्तिः = किं सामर्थ्यम् अस्ति । मयि दुर्योधने = अस्मद्दुर्योधनराजनि (मुझ दुर्योधन के) जीवति = जीवनं धारयति सति (जीवित रहते हुये)। प्रतिज्ञाम्

(आकाश की ओर देख कर) अरे हतभाग्य ! भरतकुल-विमुख !

गदा हाथ में लिये अक्षत (बिना घाव के ही) निश्चय रूप से भीमसेन की यह दूसरी प्रतिज्ञा भी तुम्हारे द्वारा पूरी की जा रही है (ऐसा प्रतीत हो रहा है) ॥ ४ ॥

दुर्योधन—(धीरे से होश में आकर) आः ! पवनतनय दुष्ट वृकोदर की क्या शक्ति है जो मुझ दुर्योधन के जीवित रहते अपनी प्रतिज्ञा पूरी कर सके । वत्स दुःशासन ! डर मत करो, डर मत करो । मैं आ गया हूँ । अरे सूत ! उसी स्थान पर रथ पहुँचाओ जहाँ मेरे प्रिय अनुज दुःशासन हैं ।

सूतः—आयुष्मन् ! अक्षमाः सम्प्रति वाहास्ते रथमेनमुद्वोढुम् (अपवार्य ।) मनोरथं च ।

दुर्योधनः—(रथादवतीर्य, सगर्वं, साकूतं च ।) कृतं स्यन्दनगमनकालातिपातेन ।

सूतः—(सवैलक्ष्यं, सकरुणं च ।) मर्षयतु, मर्षयत्वायुष्मन् !

दुर्योधनः—धिक्सूत ! किं रथेन ? केवलमरातिविमर्दसंघट्टसञ्चारी दुर्योधनः खल्वहम् । तद् गदामात्रसहायः समरभुवमवतरामि ।

पूरयितुम् = दुःशासनवक्षसः रक्तं पातुम् (प्रतिज्ञा पूरी करने की) । न भेतव्यम् = भयं मा कुरु (मत डरो) । अयम् = एषः अहम् = दुर्योधनः (यह मैं) आगतोऽस्मि (आ गया हूँ) प्रापय = नय (पहुँचाओ) । रथम् = स्यन्दनम् । तमेवोद्देशम् = तत्स्थानमेव (इसी स्थान को) । यत्र = यस्मिन् स्थाने (जहाँ पर) । मे = मम, वत्सः = प्रियानुजः दुःशासनः अस्ति ।

सूतः—अक्षमाः = असमर्थाः (असमर्थ हैं) । सम्प्रति = इदानीम् (अब) । ते = तव वाहाः = अश्वाः (घोड़े) । एनम् = एतम् रथम् = स्यन्दनम् । उद्वोढुम् = रथभारं धारयितुम् (रथ वहन करने को) । मनोरथम् = कामनाम् ।

दुर्योधनः—कालातिपातेन = वेलातिक्रमेण (देर करने से) ।

सूतः—मर्षयतु = क्षमां करोतु (क्षमा करो) ।

दुर्योधनः—केवलम् = मात्रम् । अरातिविमर्दसंघट्टसंचारी—अरातीनाम् = अरीणाम् विमर्देन मर्दनेन संघट्टः = संघर्षणम्, तस्मिन् चरितुं शीलं यस्य तादृशः (शत्रुओं के मर्दन करने वाला) । समरभुवम् = रणभूमिम् (युद्ध भूमि को) ।

सूत—हे आयुष्मन् ! अब तुम्हारे घोड़े इस रथ को वहन करने (छिपाकर) तथा मनोरथ पूरा करने में असमर्थ हैं ।

दुर्योधन—(रथ से उतरकर, सगर्व तथा साभिमान) रथ जाने का विलम्ब करना व्यर्थ है ।

सूत—(लज्जित होकर तथा करुणा के साथ) आयुष्मन् ! क्षमा कीजिये, क्षमा कीजिये ।

दुर्योधन—हे सूत ! धिक्कार है । रथ से क्या लाभ ! शत्रुओं का मर्दन कर संचरण करने वाला अकेला मैं दुर्योधन हूँ । अतः गदामात्र हाथ में लेकर मैं युद्धभूमि पर उतर रहा हूँ ।

सूतः—आयुष्मन् ! एवमेतत् ।

दुर्योधनः—यद्येव, किमेवं भाषसे । पश्य—

बालस्य मे प्रकृतिदुर्ललितस्य पापः,
पापं व्यवस्यति समक्षमुदायुधोऽसौ ।
अस्मिन्निवारयसि किं व्यवसायिनं मां ?
क्रोधो न नापि करुणा न च तेऽस्ति लज्जा ॥ ५ ॥

सूतः—(सकरुणं पादयोर्निपत्य ।) एतद्विज्ञापयामि । आयुष्मन् ! सम्पूर्ण-

---

दुर्योधनः—किं भाषसे = किं कथयसि (क्या कह रहे हो) ।

अन्वयः—उदायुधः असौ पापः मे समक्षम् प्रकृतिदुर्ललितस्य बालस्य पापम् व्यवस्यति । अस्मिन् व्यवसायिनं मां किं निवारयसि ? ते क्रोधः न नापि करुणा न च लज्जा अस्ति ॥ ५ ॥

बालस्येति । उदायुधः=उद्यतशस्त्रः (हथियार उठाये) । असौ = सः पापः= पापिष्ठः (वह पापी) मे = मम दुर्योधनस्य । समक्षम् = प्रत्यक्षम् (सामने) । प्रकृतिदुर्ललितस्य—प्रकृत्या = स्वभावेन दुर्ललितस्य = दुःखेन लालितस्य (स्नेह से पाले गये) । बालस्य = कुमारस्य (बालक के साथ) पापम् = पापाचरम् (अनर्थ) व्यवस्यति = विधास्यति अस्मिन् = एतस्मिन् (बालक दुःशासन को मारने वाले पर) व्यवसायिनम्=प्रयत्नशीलम् माम् = दुर्योधनम् (बदला लेने का प्रयत्न करने को मुझे) किं निवारयसि = कस्मात् अवरुणत्सि (क्यों रोक रहे हो) । ते = तव क्रोधः = कोपम् न अस्ति । नापि करुणा = दयापि नास्ति । च= तथा लज्जा = त्रपा नास्ति (क्रोध, करुणा तथा लज्जा नहीं है) । वसन्ततिलका वृत्तम् ॥ ५ ॥

सूतः—सकरुणम् = सदुःखम् (दुःखी होकर) । पादयोः = चरणयोः (पावों पर) निपत्य = पतित्वा (पड़ कर) । एतत् = इदम् (यह) विज्ञापयामि =

सूत—आयुष्मन् ! ऐसा ही है । (इसमें क्या सन्देह है) ।

दुर्योधन—यदि ऐसा है तो इस प्रकार क्यों कह रहे हो ? देखो—

आयुध उठाये हुये वह पापी मेरे सामने स्वभाव से कोमल बालक दुःशासन पर अत्याचार करे और उससे बदला लेने को उद्यम करने से तुम मुझे रोक रहे हो ! तुम्हें इस पर क्रोध, करुणा तथा लज्जा नहीं आती ॥ ५ ॥

सूत—(सकरुण पाँवों पर गिरकर) आयुष्मन् ! यह निवेदन कर रहा हूँ कि

प्रतिज्ञेन निवृत्तेन भवितव्यमिदानीं दुरात्मना वृकोदरहतकेन ! अत एवं ब्रवीमि ।

दुर्योधनः—(सहसा भूमौ पतन् ।) हा वत्स दुःशासन ! हा मदाज्ञा-विरोधितपाण्डव ! हा विक्रमैकरस ! हा मदङ्कदुर्ललित ! हा अरातिकुलगज-घटामृगेन्द्र ! हा युवराज ! क्वासि ? प्रयच्छ मे प्रतिवचनम् । (इति निःश्वस्य मोहमुपगतः ।)

सूतः—राजन् ! समाश्वसिहि, समाश्वसिहि ।

निवेदयामि (निवेदन कर रहा हूँ) सम्पूर्णप्रतिज्ञेन—सम्पूर्ण = पूर्तिंगता प्रतिज्ञा यस्य तेन (पूर्ण प्रतिज्ञा वाले) दुरात्मना = दुष्टेन । वृकोदरहतकेन = भीमेन नीचेन (दुष्ट नीच भीमसेन द्वारा) इदानीम् = सम्प्रति (अब) भवितव्यम् = स्यात् (होना चाहिये) । ब्रवीमि = कथयामि ।

दुर्योधनः—मदाज्ञाविरोधितपाण्डव—मम = दुर्योधनस्याज्ञया=आदेशेन विरोधिताः = विपरीताचरिताः पाण्डवाः येन तत्सम्बुद्धौ (मेरी आज्ञा से पाण्डवों से विरोध करने वाले) विक्रमैकरस !—विक्रमः = पराक्रम. एव एकरसः = एकमात्र-मानन्दो यस्य तत्सम्बुद्धौ (हे एक मात्र पराक्रम का आनन्द लेने वाले) । मदङ्क दुर्ललित—मदङ्के=ममाङ्के दुर्ललितम् = चाञ्चल्यरूपम् कुचेष्टितं यस्य तत्सम्बुद्धौ (हे मेरी गोद में चञ्चल कुचेष्टा करने वाले) । अरातिकुलगजघटामृगेन्द्र—अरातिकुलम् = शत्रुदलम् एव गजघटा = हस्तिसमूहः, तत्र मृगेन्द्रः = सिंहः, तत्सम्बुद्धौ (हे शत्रदलरूपी गज-घटा के सिंह के समान पराक्रमी) । क्व = कुत्र (कहाँ) मे = मम । प्रतिवचनम् = प्रत्युत्तरम् प्रयच्छ = देहि (मुझे उत्तर दो) । मोहम् = मूर्च्छाम् । उपगतः = प्रयातः ।

सूतः—समाश्वसिहि = धैर्यं धारय । (धीरज रखो) ।

अब उस दुरात्मा नीच वृकोदर द्वारा प्रतिज्ञा (दुःशासन का बधकर उरःरक्तपान) पूरी की जा चुकी हो । इसीलिये इस प्रकार मैं कह रहा हूँ ।

दुर्योधन—(**सहसा भूमि पर गिरता हुआ**) हा वत्स दुःशासन ! हा मेरी आज्ञा से पाण्डवों के साथ विरोध करने वाले ! हा एकमात्र पराक्रमी ! हा मेरी गोद में बड़ी कठिनता से पाले गये ! हा शत्रुदल रूपी गज समूह में सिंह सदृश ! युवराज ! कहाँ हो ? मुझे प्रत्युत्तर दो । (**यह कहकर लम्बी साँस छोड़ता हुआ मूर्च्छित हो जाता है**)

सूत—राजन् ! धैर्य धारण करो, धैर्य धारण करो ।

दुर्योधनः—(संज्ञां लब्ध्वा । निःश्वस्य)

युक्तो यथेष्टमुपभोगसुखेषु नैव,
त्वं लालितोऽपि हि मया न वृथाऽग्रजेन ।
अस्यास्तु वत्स ! तव हेतुरहं विपत्ते-
र्यत्कारितोऽस्यविनयं न च रक्षितोऽसि ॥ ६ ॥

(इति पुनः पतति ।)

सूतः—आयुष्मन् ! समाश्वसिहि, समाश्वसिहि ।

दुर्योधनः—धिक् सूत, किमनुष्ठितं भवता ।

अन्वयः—वत्स ! त्वं वृथा अग्रजेन मया यथेष्टम् उपभोगसुखेषु नैव युक्तः, न हि लालितः अपि । अस्याः तव विपत्तेः तु अहं हेतुः यत् अविनयं कारितः असि न च रक्षितः (असि) ॥ ६ ॥

युक्त इति । वत्स ! = हे भ्रातः ! त्वम् वृथाग्रजेन—वृथा = व्यर्थम् अग्रजेन = ज्येष्ठभ्राता । मया = दुर्योधनेन । यथेष्टम् = यथेच्छम् (मन चाहे) । उपभोग-सुखेषु—उपभोगस्य = सांसारिकसुखदविलासस्य सुखेषु = आनन्देषु (उपभोग सुखों में) नैव युक्तः = नैव नियुक्तः (नहीं लगाये गये) । न हि लालितः = नैव स्नेहेन पालितः (स्नेह से लालन-पालन नहीं किया गया) । अपि = परञ्च (बल्कि) । अस्याः = एतस्याः तव = ते विपत्ते = विपदायाः तु अहम् हेतुः = कारणभूतः (अस्मि) । यत् = यतः (जो कि) अविनयम् = दुष्टतरम् (दुष्टता को) कारितः = कर्तुं प्रेरितः (करने को प्रेरित किये) । असि । न च रक्षितः = त्रातः असि । अत्र विशेषोक्तिरलङ्कारः । वसन्ततिलका वृत्तम् ॥ ६ ॥

सूतः—समाश्वसिहि = धैर्यं धारय (धीरज रखो) ।

दुर्योधनः—भवता=श्रीमता (आपने) । अनुष्ठितम् = सम्पादितम् (किया) ।

दुर्योधन—(होश में आकर, गहरी साँस लेकर) ।

हे वत्स ! तुम्हें निष्फल अग्रज कहलाने वाले मुझ दुर्योधन ने उपभोगसुखों को भोगने का अवसर नहीं दिया तथा न (उचित ढंग से) लालन-पालन ही किया । बल्कि तुम्हारे इस विपत्ति का मैं ही तो कारण हूँ जो कि तुमसे द्रौपदी को निर्वसना करवाया, पर तुम्हारी रक्षा न कर सका ॥ ६ ॥

(इस प्रकार पुनः मूर्च्छित हो जाता है)

सूत—हे आयुष्मन् ! धैर्य धारण करो, धैर्य धारण करो ।

दुर्योधन—हे सूत धिक्कार है । आपने क्या किया ?

रक्षणीयेन सततं बालेनाऽऽज्ञानुवर्तिना।
दुःशासनेन भ्रात्राहमुपहारेण रक्षितः॥ ७॥

सूतः—महाराज! मर्मभेदिभिरिषुतोमरशक्तिप्रासवर्षैर्महारथानामपहृतचेतनत्वान्निश्चेतनः कृतो महाराज इत्यपहृतो मया रथः।

दुर्योधनः—सूत! विरूपं कृतवानसि—

तस्यैव पाण्डवपशोरनुजद्विषो मे,
क्षोदैर्गदाऽशनिकृतैर्न विबोधितोऽस्मि।

अन्वयः—सततम् रक्षणीयेन आज्ञानुवर्तिना बालेन उपहारेण भ्रात्रा दुःशासनेन अहम् रक्षितः॥ ७॥

रक्षणीयेनेति। सततम् = निरन्तरम् (सदैव)। रक्षणीयेन = रक्षणयोग्येन। (रक्षा के योग्य) आज्ञानुवर्तिना—आज्ञाम् अनुवर्तते यस्तेन = आदेशपालकेन (आज्ञा-पालक) बालेन = शिशुना। उपहारेण = उपहार-भूतेन। भ्रात्रा = बन्धुना। दुःशासनेन = तन्नाम्ना। अहम् = दुर्योधनः। रक्षितः = युद्धात् अपसार्य त्रातः। अत्र काव्यलिङ्गमलङ्कारः। अनुष्टुप् वृत्तम्॥ ७॥

सूतः—मर्मभेदिभिः—मर्म = जीवनस्थानम् भिन्दन्ति = विदारयन्तीति तैः (मर्मभेदी) इषुतोमरशक्तिप्रासवर्षैः—इषवः = बाणाः तोमराः = अस्त्रविशेषाः शक्तयः प्रासाः = भल्लाश्च, तेषां वर्षैः (बाण तोमर शक्ति भाला आदि की वर्षा करके)। महारथानाम्=योद्धृणाम् अपहृतचेतनत्वात्—अपहृता = नष्टा चेतना = संज्ञा तस्याः भावस्तस्मात् (चेतनाहीन होने के कारण)। निश्चेतनः=मूर्च्छितः। कृतः = विहितः। महाराजः = भवान्। इति = एवं विज्ञाय। मया = सूतेन। रथः स्यन्दनम्। अपहृतः = आनीतः (भगा लाया गया)।

दुर्योधनः—विरूपम् = अनुचितम्। कृतवान् = सम्पादितवान् (किया)।

अन्वयः—यत् तस्य एव मे अनुजद्विषः पाण्डवपशोः गदाऽशनिकृतैः क्षोदैः न

निरन्तर रक्षा करने योग्य, आज्ञापालन करने वाले भाई दुःशासन ने अपने प्राणों को भेंट देकर मेरी रक्षा की है॥ ७॥

सूत—महाराज! (शत्रुओं द्वारा) मर्मभेदी बाण तोमर शक्ति तथा भालों की वर्षा करके महारथियों के बेहोश कर दिये जाने के कारण (तथा) मूर्च्छित किये गये आपको मैं यहाँ ले आया हूँ।

दुर्योधन—हे सूत! तुमने ठीक नहीं किया है—

उसी पाण्डवपशु (भीम) के गदा रूपी वज्र से किये गये प्रहारों द्वारा मैं नहीं होश

तामेव नाधिशयितो रुधिरार्द्रशय्यां,
दौःशासनीं यदहमाशु वृकोदरो वा ॥ ८ ॥

(निःश्वस्य नभो विलोक्य ।) ननु भो हतविधे ! कृपाविरहित ! भरत-कुलविमुख !

अपि नाम भवेन्मृत्युर्न च हन्ता वृकोदरः ।

सूतः—शान्तं पापं, शान्तं पापम् । महाराज, किमिदम् ?

विबोधितः अस्मि ताम् एव दौःशासनीं रुधिरार्द्रशय्याम् अहं वृकोदरः वा आशु न अधिशयितः ॥ ८ ॥

तस्यैवेति । तस्य एव = तादृशस्यैव । मे = मम । अनुजद्विषः—अनुजं द्वेष्टीति तस्यः = दुःशासनशत्रोः । पाण्डवपशोः = नीचभीमस्य । गदाऽशनिकृतैः—गदा एवाशनिः = गदावज्रम् तेन कृतैः = विहितैः (गदा रूपी वज्र द्वारा किये गये) । क्षोदैः = निष्पेषैः आघातैः । न विबोधितः = न चैतन्यीकृतः अस्मि । ताम् एव = तथाविधाम् एव (उसी) दौःशासनीम् = दुःशासनसम्बन्धिनीम् (दुःशासन से सम्बन्धित) रुधिरार्द्रशय्याम्—रुधिरेण = रक्तेन आर्द्राम् = क्लिन्नाम् शय्याम् (रक्त से सनी शय्या को) । अहम् = दुर्योधनः । वृकोदरो वा = अथवा भीमः आशु = द्रुतम् (शीघ्र) न अधिशयितः = शयितुं न प्रेरितः । वसन्ततिलका वृत्तम् ॥ ८ ॥

हतविधे = दुष्टविधातः ! कृपाविरहित = निर्दय ! भरतकुलविमुख = भरतवंश-विरुद्ध !

अपीति । नाम = सम्भावनायाम् । मृत्युः = मरणम् अपि भवेत् = स्यात् (मृत्यु भले ही हो जाये) (परन्तु) मे = मम हन्ता = घातकः । वृकोदरः = भीमसेनः न भवेत् ।

सूतः—पापम् = अमङ्गलम् ! शान्तम् स्यात् (पाप शान्त हो) ।

मैं आ सका ! (अथवा) दुःशासन की उसी रुधिरसे भींगी शय्या पर मैं अथवा वृकोदर शीघ्र नहीं सुला दिये गये ॥ ८ ॥

(निःश्वास लेकर आकाश की ओर देखकर) अरे दुष्ट विधातः ! निर्दय ! भरत-कुल-विमुख !

मेरी मृत्यु भले ही हो जाये, पर मेरा हन्ता वृकोदर न बने ।

सूत—पाप शान्त होवे, पाप शान्त होवे । यह क्या है ?

दुर्योधनः—

घातिताऽशेषबन्धोर्मे किं राज्येन जयेन वा ॥ ९ ॥

(ततः प्रविशति शरप्रहारव्रणबद्धपट्टिकालङ्कृतकायः सुन्दरकः ।)

सुन्दरकः—अज्जा ! अवि णाम इमस्सिं उद्देसे सारहिदुइओ दिट्ठो तुम्हेहि महाराजदुज्जोहणो ण वेत्ति । (निरूप्य ।) कहं ण कोवि मन्तेदि । होदु । एदाणं बद्धपरिअराणं पुरिसाणं समूहो दीसइ । एत्थ गदुअ पुच्छिस्सम् । (परिक्रम्य विलोक्य च ।) कहं एदे क्खु ससामिणो गाढप्पहाराहदस्स घणसण्णाहजालदुब्भेज्जमुहेहिं कंकवदनेहि हिअआदो सल्लाइं उद्धरन्ति । ता ण क्खु एदे जाणन्ति । होदु । अण्णदो विचिणइस्सम् । (अग्रतोऽवलोक्य, किञ्चित्परिक्रम्य ।) इमे क्खु अवरेप्प हूददरा संगदा वीरमणुस्सा दीसन्ति । ता एत्थ गदुअ पुच्छिस्सम् (उपगम्य ।) हंहो ! जाणह तुम्हे कस्सिं उद्देसे कुरुणाहो वट्टइ त्ति । कहं एदे वि मं पेक्खिअ अहिअदरं रोअन्दि । ता ण क्खु एदे वि जाणन्ति । (दृष्ट्वा ।) हा अदिकरुणं क्खु एत्थ वट्टइ । [आर्याः ! अपि नामाऽस्मिन्नुद्देशे सारथिद्वितीयो दृष्टो युष्माभिर्महाराजदुर्योधनो न वेति । कथं न कोऽपि मन्त्रयते । भवतु । एतेषां बद्धपरिकराणां

दुर्योधनः—घातिताशेषबन्धोः—घातिताः = मारिताः अशेषाः = निखिलाः बन्धवः = भ्रातरः येन तादृशस्य (जिसने अपने सभी भाई मरवा डाले) मे = मम दुर्योधनस्य राज्येन = राज्यलाभेन किम् = कः लाभः । वा = अथवा जयेन = विजयेन किम् (राज्य या विजय पाने से क्या लाभ है) ॥ ९ ॥

शरप्रहारव्रणबद्धपट्टिकालङ्कृतकाय—शरप्रहारैः=बाणाघातैः यानि व्रणानि= आघातस्थानानि तेषु बद्धाभिः = सन्नद्धाभिः पट्टिकाभिः अलङ्कृतकायः = शोभित शरीरः (शरप्रहार से बने घावों पर बँधी पट्टियों से शोभित शरीर वाला) ।

सुन्दरकः—अस्मिन् उद्देशे=एतस्मिन् स्थले (इस स्थान पर) सारथिद्वितीयः = सूतसहितः दृष्टः=अवलोकितः (देखा है) । निरूप्य = लक्षयित्वा (देख

दुर्योधन—अपने समस्त भाइयों को मरवा डालने वाले मुझे (अब) राज्य अथवा विजय प्राप्त करने से क्या लाभ ॥ ९ ॥

(तब बाणाघात से घायल घावों पर पट्टियाँ बाँधे हुए सुन्दरक प्रवेश करता है)

सुन्दरक—आर्यो ! क्या आप लोगों ने इस स्थान पर सारथि-सहित महाराज दुर्योधन को देखा है अथवा नहीं ? (देखकर) क्या कोई भी नहीं बतला रहा है ? अच्छा, यह

पुरुषाणां समूहो दृश्यते। अत्र गत्वा प्रक्ष्यामि। कथमेते खलु स्वस्वामिनो गाढप्रहाराऽऽहतस्यघनसन्नाहजालदुर्भेद्यमुखैः कङ्कवदनैर्हृदयाच्छल्यान्युद्धरन्ति। तन्न खल्वेते जानन्ति। भवतु। अन्यतो विचेष्यामि। इमे खल्वपरे प्रभूततराः सङ्गता वीरमनुष्या दृश्यन्ते। तदत्र गत्वा प्रक्ष्यामि। हंहो, जानीथ यूयं कस्मिन्नुद्देशे कुरुनाथो वर्तते इति। कथमेतेऽपि मां प्रेक्ष्याधिकतरं रुदन्ति। तन्न खल्वेतेऽपि जानन्ति। हा, अतिकरुणं खल्वत्र वर्तते।]

एसा वीलमादा समलविणिहदं पुत्तअं सुणिअ रत्तंसुअणिवसणाए समग्गभूसणाए बहुए सह अणुमरदि। (सश्लाघम्।) साहु! वीरमादे साहु!

कर) कोऽपि = कश्चित् अपि। न मन्त्रयति = न कथयति (कोई नहीं बतलाता है)। बद्धपरिकराणाम् = सन्नद्धानाम् (कमर कसे हुये) पुरुषाणाम् = जनानाम् (लोगों का) समूहः = यूथः (झुण्ड) दृश्यते = अवलोक्यते (दिखलाई पड़ रहा है)। अत्र = अमुं स्थानम्। गत्वा = चलित्वा (जाकर) प्रक्ष्यामि (पूछूँगा)। गाढ़प्रहाराऽऽहतस्य—गाढप्रहारेण = सघनाघातेन आहतस्य = सुदृढ प्रहारव्यवस्थितस्य (सुदृढ प्रहार से आहत) घनसन्नाह-जालदुर्भेद्यमुखैः—घनः = निविडः यः सन्नाहः = कवचः, स एव जालम् तेन दुर्भेद्यानि = दुःप्रवेश्यानि मुखानि येषां तैः (सघन कवच रूपी जाल से दुर्भेद्य मुख वालों द्वारा)। कङ्कवदनैः = निष्कासनयन्त्रैः (बाण निकलने के यन्त्रों से)। उद्धरन्ति = निष्कासयन्ति (निकालते हैं)। जानन्ति = अवगच्छन्ति। अन्यतः = अन्यस्थानात्। विचेष्यामि = अन्विष्यामि (खोजूँगा)। प्रभूततरा = बहुतराः सङ्गताः = एकत्रिताः (बहुत से इकट्ठे) वीरमनुष्याः = वीरजनाः। दृश्यन्ते = अवलोक्यन्ते (दिखाई पड़ रहे हैं)। जानीथ = वित्थ (जानते हो)। उद्देशे = स्थाने। प्रेक्ष्य = अवलोक्य (देखकर)। अतिकरुणम् = महद्दुःखम् (अत्यन्त दुःख)।

युद्ध करने को सन्नद्ध पुरुषों का झुण्ड दिखलाई पड़ रहा है। यहाँ जाकर पूछता हूँ। (घूमकर और देखकर) अरे यह क्या? गहरी चोट खाये हुये अपने स्वामी के घने कवच-जाल के कारण दुर्भेद्य बाण निकालने वाले यन्त्रों से वक्षःस्थल से यह लोग बाण निकाल रहे हैं। तब तो यह नहीं जानते होंगे। अच्छा, अन्यत्र ढूँढता हूँ। (सामने देखकर) ये अन्य एकत्रित वीरपुरुष दिखलाई पड़ते हैं। तो यहाँ चलकर पूँछता हूँ। (समीप जाकर) अहो! क्या तुम लोग जानते हो—कुरुपति कहाँ हैं? क्या यह भी मुझे देखकर अत्यधिक रो रहे हैं। तब तो यह भी नहीं जानते हैं। (देखकर) हाय! यहाँ तो अत्यधिक करुण दृश्य है।

अण्णस्सि वि जम्मन्तरे अणिहदपुत्तआ हुविस्ससि। होदु। अण्णदो पुच्छिस्सम्। (अन्यतो विलोक्य।) अअं अवरो बहुप्पहारणिहदक्काओ अकिदव्वणवन्धो एव्व जोहसमूहो इमं सुण्णासणं तुलंगमं उवालहिअ रोइदि। णूणं एदाणं एत्थ एव्व सामी वावादिदो। ता ण क्खु एदे वि जाणन्दि। होदु, अण्णदो गदुअ पुच्छिस्सम्। (सर्वतो विलोक्य।) कहं सव्वो एव्व अवत्थाणुरूवं व्वसणं अणुभवन्तो भाअधेअविसमसीलदाए पज्जाउलो जणो। ता कं दाणीं एत्थ पुच्छिस्सम्। कं वा उवालहिस्सम्। होदु। सअं एव्व एत्थ विचिणइस्सम्। (परिक्रम्य) होदु। देव्वं दाणीं उवालहिस्सम्। हंहो देव्व! एआदसाणं अक्खोहिणीणं णाहो, जेट्ठो भादुसदस्स भत्ता गांगेअजयद्दथद्दोणअंगराअसल्लकिवकिदवम्मअस्सत्थामप्पमुहस्स राअचक्कस्स सअलप्पुहवीमण्डलेक्कणाहो महाराअदुज्जोहणो वि अण्णेसीअदि। अण्णेसीअन्तो वि ण जाणीअदि कस्सिं उद्देसे वट्टइ त्ति। (विचिन्त्य निःश्वस्य च।) अहवा किं एत्थ देव्वं उवालहामि। जदो तस्स क्खु एदं णिब्भच्छिअविउरवअणवीअस्स अवधीरिदपिदामहहिदोवदेसंकुरस्स सउणिहदअप्पोच्छाहणादिविरूढमूलस्स जदुगेहजूदविससाहिणो संभूदचिरआलसंबद्धवेरालवालस्स पाञ्चालीकेसग्गहणकुसुमस्स फलं परिणमदि। (अन्यतो विलोक्य) अम्मो! जहा एत्थ एसो विविहरदिणप्पहाससंबलिदसूरकिरणप्पसूदसक्कचावसहस्ससंपूरिदपूदिसामुहो लूणकेदुवंसो रहो दीसइ। ता अहं तक्केमि अवस्सं एदिणा महाराअदुज्जोहणस्स विस्सामुद्देसेण होदव्वम्। याव निरूपेमि। (उपगम्य दृष्ट्वा निःश्वस्य च।) कथं एआदहाणं अक्खोहिणीणं णाअको भविअ महाराओ दुज्जोहणो पइदपुरिसो विअ असलाइणीए भूमीए उवविट्ठो चिट्ठदि। अधवा तस्स क्खु एवं पंचालीकेसग्गहकुसुमस्स फलं परिणमदि। (उपसृत्य दृष्ट्वा च।) जअदु, जअदु महाराओ। [एषा वीरमाता समरविनिहतं पुत्रकं श्रुत्वा रक्तांशुकनिवसनया समग्रभूषणया वध्वा सहानुम्रियते। साधु वीर-

---

एषा = इयम्। वीरमाता = वीर प्रसविनी (गान्धारी)। समरविनिहतम् = रणनिहितम् (युद्ध में मारे गये)। पुत्रकम् = सुतम्। रक्तांशुकनिवसनया— रक्तांशुकम् = रक्तवस्त्रम् निवसनम् यस्यास्तया (रक्तवस्त्र, लाल साड़ी पहने

यह वीरमाता युद्ध में पुत्रों का मारा जाना सुनकर रक्तांशुकवस्त्र धारण किये समस्त आभूषणों से युक्त (श्रृंगार किये) वधू के साथ मरने जा रही है। (प्रशंसा करते हुये)

मातः ! साधु । अन्यस्मिन्नपि जन्मान्तरेऽनिहतपुत्रका भविष्यसि । भवतु । अन्यतः प्रक्ष्यामि । अयमपरो बहुप्रहारनिहतकायोऽकृतव्रणबन्ध एव योधसमूह इमं शून्यासनं तुरङ्गममुपालभ्य रोदिति । नूनमेतेषामत्रैव स्वामी व्यापादितः । तन्न खल्वेतेऽपि जानन्ति । भवतु, अन्यतो गत्वा प्रक्ष्यामि । कथं सर्व एवाऽवस्थानुरूपं व्यसनमनुभवन्भागधेयविषमशीलतया पर्याकुलो जनः । तत्कमिदानीमत्र प्रक्ष्यामि । कं वोपालप्स्ये ! भवतु, स्वयमेवात्र विचेष्यामि । भवतु, दैवमिदानीमुपालप्स्ये । हंहो दैव ! एकादशानामक्षौहिणीनां नाथो, ज्येष्ठो भ्रातृशतस्य, भर्ता गाङ्गेयजयद्रथद्रोणाङ्गराज-

---

हुये) समग्रभूषणया = सर्वाभरणया (समस्त आभूषणों से सजी) । वध्वा सह = वध्वा साकम् (वहू के साथ) । अनुम्रियते = मरणायानुगमनं क्रियते (मरने जा रही है) । अन्यस्मिन् = अपरस्मिन् । जन्मनि = उत्पत्तौ (दूसरे जन्म में) । अनहितपुत्रका—अनहिताः = अमारिताः पुत्रकाः = सुता यस्या सा (पुत्रमृत्यु का दुःख न सहने वाली) । प्रक्ष्यामि = अवलोकयिष्यामि (खोजूँगा) । बहुप्रहारनिहतकायः = अत्याघात-निहतशरीरः (अत्यधिक घायल) । अकृतव्रणबन्धः एव—न कृतः व्रणबन्धः = पट्टिकावन्धो येन तथा (घावों पर पट्टी बाँधे विना ही) योधसमूहः = सैनिकयूथः (योद्धाओं का झुण्ड) । शून्यासनम्—शून्यम् = रिक्तम् आसनम् = पर्याणम् यस्य तथाविधम् (खाली जीन वाले) । तुरङ्गम् = वाजिनम् । उपालभ्य = प्राप्य, उपालम्भं कृत्वा (उलाहना दे देकर) । व्यापादितः = निहतः (मार दिया गया है) । अवस्थानुरूपम् = दशानुसारम् । व्यसनम् = दुःखम् । भागधेयविषमशीलतया—भागधेयस्य = भाग्यस्य विषमम् = विरुद्धम् शीलम् = स्वभावः यस्य, तद्भावः (भाग्य की विषमता से) पर्याकुलः = आकुलितः (व्याकुल) । जनः = लोकः । विचेष्यामि = अन्वेषयिष्यामि । दैवम् = भागधेयम् (भाग्य को) । इदानीम् = सम्प्रति । राजचक्रस्य = नृपसमूहस्य (राजवर्ग का)

धन्य हो ! वीरमातः धन्य हो । दूसरे जन्म में अवश्य ही तुम्हें पुत्र-वध का शोक नहीं भोगना पड़ेगा । अच्छा, अन्यत्र पूँछता हूँ (दूसरी ओर देखकर) यह दूसरा अनेक प्रहारों से घायल-शरीर घावों पर पट्टी किये बिना ही योद्धाओं का दल इस शून्य आसन वाले घोड़े को उपालम्भ कर रो रहा है । अवश्यमेव इनका स्वामी यहाँ मारा गया है । तो क्या यह भी नहीं जानते हैं । अस्तु, अन्यत्र जाकर पूछता हूँ । (चारों ओर देखकर) क्या सभी लोग अवस्थानुरूप दुःखानुभव करते हुए प्रतिकूल दैव के कारण घबड़ाये हुए हैं । अतः यहाँ किससे पूछूँ ? अथवा किसे उलाहना दूँ । अस्तु, स्वयमेव (चलकर) यहाँ देखता हूँ । (घूमकर) अच्छा—अब भाग्य को ही कोसता हूँ । हा दैव ! एकादश अक्षौहिणियों के सेनाध्यक्ष सौ भाइयों में ज्येष्ठ, भीष्म-जयद्रथ-द्रोण-कर्ण-शल्य-कृप-कृतवर्मा-

शल्यकृपकृतवर्माऽश्वत्थामप्रमुखस्य राजचक्रस्य सकलपृथिवीमण्डलैकनाथो महाराज-दुर्योधनोऽप्यन्विष्यते । अन्विष्यमाणोऽपि न ज्ञायते कस्मिन्नुद्देशे वर्तत इति । अथवा किमत्र दैवमुपालभे । यतस्तस्य खल्विदं निर्भर्त्सितविदुरवचनबीजस्याऽवधीरित-पितामहहितोपदेशाङ्कुरस्य शकुनिहतकप्रोत्साहनादिविरूढमूलस्य जतुगृहद्यूतविष-शाखिनः सम्भूतचिरकालसम्बद्धवैरालवालस्य पाञ्चालीकेशग्रहणकुसुमस्य फलं परिण-मति । अम्मो ! यथाऽत्रैष विविधरत्नप्रभासंवलितसूर्यकिरणप्रसूतशक्रचापसहस्रसंपूरित-

---

सकलपृथ्वीमण्डलैकनाथः—सकलस्य = सम्पूर्णस्य पृथ्वीमण्डलस्य = भूमण्डलस्य एक-नाथः = एकमात्रः स्वामी (समस्त भूमण्डल के एक मात्र स्वामी) । अन्विष्यते = प्रेक्ष्यते (खोजे जा रहे हैं) । निर्भर्त्सितविदुरवचनबीजस्य—निर्भर्त्सितम् = निन्दितं यद् विदुरवचनम्, तदेव बीजम् यस्य तादृशस्य (विदुर के वचन-बीज का तिरस्कार करने वाले) । अवधीरित-पितामहहितोपदेशाङ्कुरस्य—अवधीरितः = अवज्ञातः पितामहस्य = भीष्मस्य यो हितोपदेशः तदेवाङ्कुरः यस्य तथाभूतस्य (भीष्म पितामह के हितोपदेश रूपी अङ्कुर की अवज्ञा करने वाले) । शकुनि-हतकप्रोत्साहनादिविरूढमूलस्य—शकुनिहतकेन = दुष्टशकुनिना कृतं यत्प्रोत्साहनादि-कर्म, तदेव विरूढम् = जातम् मूलम् = जडम् यस्य तथाभूतस्य (दुष्ट शकुनि के प्रोत्साहनादिरूपी उगी जड़वाले) । जतुगृह-द्यूतविषशाखिनः—जतुगृहम् = लाक्षा-गृहम् द्यूतम् = द्यूतक्रीडा विषशाखिनः = विषविटपिनः (जतुगृहद्यूतादि विष-वृक्ष के) । सम्भूत-चिरकालसम्बद्धवैरालवालस्य—सम्भूतम् = सञ्जातम् चिरकाल-सम्बद्धम् = अतिसमय-सम्बद्धम् यद् वैरम् = विद्वेषः, तदेव आलवालम् = सिक्तजल-खातम् यस्य तथाभूतस्य (चिरकाल से उत्पन्न वंधे वैरभावरूपी आलवाल वाले) पाञ्चालीकेशग्रहण-कुसुमस्य—पाञ्चाल्याः = द्रौपद्याः केशग्रहणम् = कचग्रहणम्, तदेव कुसुमम् तस्य (पाञ्चाली के केश खींचनेरूपी फूल का) फलम् = परिणामः । परिणमति = साफल्यं गच्छति (फल प्रकट हो रहा है) । विविधरत्नप्रभा-सम्वलित-

---

अश्वत्थामा आदि राजसमूह के भर्ता समस्त पृथ्वीमण्डल के एकमात्र स्वामी महाराज दुर्योधन भी खोजे जा रहे हैं । ढूँढे जाने पर भी न जाने वह किस स्थान पर हैं ? (सोचकर, लम्बी साँस लेकर) अथवा अब भाग्य को उलाहना देने से क्या लाभ है । यह तो विदुर के वचनों का तिरस्काररूपी बीज का, पितामह के हितोपदेश पर ध्यान न देने रूपी अङ्कुर का, दुष्ट शकुनि के प्रोत्साहनरूपी बढ़ने वाली जड़ का, जतुगृह तथा जुआ रूपी विषवृक्ष का, उत्पन्न हुये चिरकाल से सम्बद्ध वैररूपी आलवाल वाला, द्रौपदी केश ग्रहण रूपी फूल का फल है । (दूसरी ओर देखकर) अरे ! जो यहाँ अनेकों रत्नों की कान्ति से

दिङ्मुखो लूनकेतुवंशो रथो दृश्यते। तदहं तर्कयाम्यवश्यमेतेन महाराजदुर्योधनस्य विश्रामोद्देशेन भवितव्यम्। यावन्निरूपयामि। कथमेकादशानामक्षौहिणीनां नायको भूत्वा महाराजो दुर्योधनः प्राकृतपुरुष इवाऽश्लाघनीयायां भूमावुपविष्टस्तिष्ठति। अथ वा तस्य खल्विदं पाञ्चालीकेशग्रहकुसुमस्य फलं परिणमति। जयतु जयतु महाराजः।]

सूतः—(विलोक्य) आयुष्मन्! समरात् सुन्दरकः प्राप्तः।

दुर्योधनः—(विलोक्य।) अये सुन्दरक, कच्चित्कुशलमङ्गराजस्य।

सुन्दरकः—देव, कुशलं सरीरमेत्तेण [देव, कुशलं शरीरमात्रेण।]

सूर्यकिरण-प्रसूत-शक्रचापसहस्रपूरितदिङ्मुखः—विविधानि च तानि रत्नानि तेषां प्रभाभिः सम्वलिता ये सूर्यकिरणाः, तैः प्रसूतं यत् शक्रचापसहस्रम् तेन पूरितानि दिशानां मुखानि येन सः = अनेकमणिकान्तिमिलित-रविकरजनितेन्द्रधनुःसहस्रभृत-दिङ्मुखः (अनेकों रत्नों की कान्ति से युक्त सूर्यकिरणों से जनित हजारों इन्द्रधनुषों से पूरित दिशाओं वाला)। लूनकेतुवंशः = छिन्नपताकदण्डः (कटे ध्वज वाला) रथः = स्यन्दनम्। दृश्यते = अवलोक्यते (दिखलाई पड़ रहा है)। तर्कयामि = तर्कं करोमि। विश्रामोद्देशेन = विश्रामस्थलेन (विश्राम करने के स्थान पर) निरूपयामि = अवलोकयामि (देखता हूँ)। नायकः = सेनापतिः। प्राकृत-पुरुषः = साधारणजनः इव (सामान्य व्यक्ति सा)। अश्लाघनीयायाम् = असंस्कृतायाम्। भूमौ = स्थले (ऊबड़-खाबड़ भूमि पर)।

सूतः—समरात् = रणात्। प्राप्तः = समागतः।

दुर्योधनः—अङ्गराजस्य = कर्णस्य। कुशलम् = शम्।

सुन्दरकः—शरीरमात्रेण = देहमात्रेण।

युक्त सूर्यकिरणों से जनित सहस्रों इन्द्रधनुषों से दिशाओं को व्याप्त किये हुए खण्डित ध्वज दण्ड वाला रथ दिखाई पड़ रहा है, अतः मैं अनुमान करता हूँ कि अवश्य ही यह महाराज दुर्योधन का विश्रामस्थल होगा। तो देखूँ, (पास जाकर देखते हुए, निःश्वास लेकर) कैसे ग्यारह अक्षौहिणी सेना का स्वामी होकर महाराज दुर्योधन सामान्य व्यक्ति की भाँति अप्रशस्त भूमि पर बैठे हैं। अथवा यह उसी द्रौपदी के केश पकड़ने के फूल का फल प्रकट हो रहा है। (समीप जाकर, देखकर) जय हो, महाराज की जय हो।

सूत—(देखकर) हे आयुष्मन्! युद्धभूमि से सुन्दरक आया है।

दुर्योधन—(देखकर) अरे सुन्दरक! अङ्गराज की कुशल तो है?

सुन्दरक—महाराज! शरीर मात्र से कुशल है।

दुर्योधनः—(ससम्भ्रमम् ।) सुन्दरक ! किं किरीटिनाऽस्य निहता धौरेयकाः हतः सारथिर्भग्नो वा रथः ।

सुन्दरकः—देव, ण भग्गो रहो । से मणोरहो वि । [देव, न भग्नो रथः । अस्य मनोरथोऽपि ।]

दुर्योधनः—(सरोषम् ।) अरे ! किमेवमस्पष्टकथितैराकुलमपि मे मनः पर्याकुलयसि । तदलं सम्भ्रमेण । अशेषतो विस्पष्टं कथ्यताम् ।

सुन्दरकः—जं देवो आणवेदि । अए दिट्ठिआ देवस्स मुउडमणिप्पहावेण अवणीदा मे रणप्पहारवेअणा (इति साटोपं परिक्रम्य ।) सुणादु देव । अत्थि दाणीं कुमालदुस्सासणवह—(इत्यर्धोक्ते मुखमाच्छाद्य शङ्कां नाटयति ।) [यद्देव आज्ञापयति । अये दिष्ट्या देवस्य मुकुटमणिप्रभावेणापनीता मे रणप्रहार-वेदना । शृणोतु देवः । अस्तीदानीं कुमारदुःशासनवध—]

दुर्योधनः—किरीटिना = अर्जुनेन । अस्य = कर्णस्य । धौरेयकाः—धुरं = भारं वहन्तीति धौरेयाः, त एव धौरेयकाः = अश्वाः । निहताः = घातिताः (मार डाले) । सारथिः = रथवाहकः । हतः = मारितः । भग्नः = नष्टः ।

सुन्दरकः—मनोरथः = अभिलाषः ।

दुर्योधनः—अस्पष्टम् = अस्फुटम् (अस्पष्ट) कथितैः=भाषितैः (कहने से) । आकुलम् = व्याकुलम् । मे = मम । मनः = चेतः (हृदय) । पर्याकुलयसि = व्याकुलयसि (व्याकुल बना रहे हो) । अशेषतः = सम्पूर्णम् विस्पष्टम् = स्फुटम् (साफ-साफ) । कथ्यताम् = भण (कहो) ।

सुन्दरकः—आज्ञापयति = आदिशति (आज्ञा है) । दिष्ट्या = सौभाग्येन (सौभाग्य से) मुकुटमणिप्रभावेन—मुकुटमणीनाम् = किरीटजटितरत्नानाम् प्रभा-वेण = माहात्म्येन (मुकुटमणि के प्रभाव से) । अपनीता = दूरीकृता । रणप्रहार-वेदना=रणस्थलप्रहारपीड़ा (युद्धभूमि में लगी चोट की पीड़ा) । साटोपम्=सावेगम्

दुर्योधन—(घबड़ा कर) सुन्दरक ! क्या अर्जुन ने इनके घोड़े मार दिये, सारथी मार डाला ! अथवा रथ नष्ट कर डाला ?

सुन्दरक—देव ! रथ नहीं, उनका मनोरथ भी नष्ट कर दिया ।

दुर्योधन—(क्रोध के साथ) अरे ! इस प्रकार अस्पष्ट कहकर आकुल मेरे हृदय को अधिक व्याकुल क्यों कर रहा है । घबड़ा मत । सम्पूर्ण बात स्पष्ट कह ।

सुन्दरक—जो महाराज की आज्ञा । अरे ! सौभाग्य से महाराज के मुकुटमणियों के प्रताप से मेरी रण-प्रहार पीड़ा दूर हो गई है । (यह कहकर तेजी से घूमकर) सुनिये महाराज ! आज कुमार दुःशासन के वध...... । (आधा कहकर मुँह ढक लेता है) ।

सूतः—सुन्दरक, कथय । कथितमेव दैवेन ।

दुर्योधनः—कथ्यताम् । श्रुतमस्माभिः ।

सुन्दरकः—(स्वगतम् ।) कहं दुस्सासणवहो सुदो देवेण । (प्रकाशम् ।) सुणादु देवो । अज्ज दाव कुमालदुस्सासणवहामरिसिदेण सामिणा अङ्गराएण किदकुडिलभिउडीभंगभीसणललाडवट्टेण अविण्णादसंधाणमोक्खेण सिलीमुहसंघादवरिसिणा अभिजुत्तो सो दुराआरो दुस्सासणवैरिओ मज्झमपण्डवो । भीमसेणहदओ । [कथं दुःशासनवधः श्रुतो देवेन । शृणोतु देवः । अद्य तावत्कुमारदुःशासनवधामर्षितेन स्वामिनाऽङ्गराजेन कृतभृकुटीभङ्गभीषणललाटपट्टेनाऽविज्ञातसन्धानमोक्षेण शिलीमुखसङ्घातवर्षिणाभियुक्तः स दुराचारो दुःशासनवैरी मध्यमपाण्डवः भीमसेनहतकः ।

(जोर से) । शृणोतु = आकर्णयतु । देवः = स्वामी । अर्द्धोक्ते = अपूर्ण-कथने (अधूरी बात में) मुखम् = वदनम् आवृणोति = आच्छादयति (मुँह ढँक लेता है) ।

सूतः—दैवेन = भाग्येन । कथितम् = उक्तम् । (भाग्य ने ही बता दिया) ।

दुर्योधनः—श्रुतम् = आकर्णितम् ।

सुन्दरकः—दुःशासनवधः—दुःशासनस्य = कुरुराजानुजस्य वधः = हननम् (दुःशासन का मारा जाना) कुमारदुःशासनवधामर्षितेन—कुमारस्य दुःशासनस्य वधस्यामर्षितम् = क्रुद्धः, तेन (कुमार दुःशासन के मारे जाने से क्रुद्ध) । स्वामिना = महाराजेन । अङ्गराजेन = कर्णेन । कृतकुटिलभृकुटिभङ्गभीषणललाटपट्टेन—कृतः = विहितः कुटिलः = वक्रः यः भृकुटिभङ्गः = भ्रूवक्रता, तेन भीषणम् = भयङ्करम् ललाटपट्टम् = भालपट्टम् यस्य तेन (कुटिल भौंहों के कारण भयङ्कर ललाट वाले) । अविज्ञातसन्धानमोक्षेण—अविज्ञातं = अज्ञातम् सन्धानम् मोक्षणञ्च यस्य तथाभूतेन (जिनका वाण चढ़ाना तथा चलाना भी ज्ञात नहीं हो पाता था) । शिलीमुखसङ्घातवर्षिणा—शिलीमुखाः=बाणाः, तेषां सङ्घातः = समूहम्, वर्षतीति,

---

सूत—सुन्दरक । कहो (यह तो) भाग्य ने ही कह दिया है ।

दुर्योधन—कहिये । हमने सुन लिया ।

सुन्दरक—(मन ही मन) क्या दुःशासन-वध का समाचार महाराज ने सुन लिया है । (प्रकट) महाराज सुनिये । अब कुमार दुःशासन-वध के कारण क्रुद्ध, भौंहें टेढ़ी करने के कारण भयङ्कर ललाट वाले महाराज अङ्गराज (कर्ण) ने ऐसे वाण समूह की वर्षा कर उस दुःशासन-शत्रु दुराचारी मध्यमपाण्डव दुष्ट भीमसेन पर आक्रमण किया जिनका धनुष चढ़ाना तथा छोड़ा जाना तक दिखलाई नहीं पड़ रहा था ।

उभौ—ततस्ततः ।

सुन्दरकः—तदो देव ! उहअबलमिलन्तदीप्पन्तकरितुरअपदादिसमुद्भूद-धूलिणिअरेण पज्जत्थगअघडासंघादेण अ वित्थरन्तेण अन्धआरेण अन्धीकिदं उहअबलम् । ण खु गगणतलं लक्खीअदि । [ततो देव, उभयबलमिलद्दीप्यमान-करितुरगपदातिसमुद्भूतधूलिनिकरेण पर्यस्तगजघटासंघातेन च विस्तीर्यमाणेनाऽन्ध-कारेणाऽन्धीकृतमुभयबलम् । न खलु गगनतलं लक्ष्यते ।]

उभौ—ततस्ततः ।

सुन्दरकः—तदो देव ! दूराकड्ढिअधणुग्गुणाच्छोडणटंकारगम्भीरभीसणेण अंधआरेण जाणाअदि—गज्जिदं पलअजलहरेण त्ति । [ततो देव, दूरा-कृष्टधनुर्गुणाच्छोटनटङ्कारगम्भीरभीषणेनाऽन्धकारेण ज्ञायते—गर्जितं प्रलयजलधरे-णेति ।]

तेन (बाणसमूह की वर्षा करने वाले)। अभियुक्तः = आक्रान्तः (आक्रमण किया)। दुराचारः = दुष्टः ।

सुन्दरकः—उभयबल-मिलद्दीप्यमान-करितुरगपदाति-समुद्भूत-धूलिनिकरेण—उभयबलस्य = कौरवपाण्डव-सैन्यस्य ये मिलन्तः दीप्यमानाः = प्रकाश्यमानाः करिणः = गजाः, तुरगाः = अश्वाः पदातयश्च = पदचारिणश्च, तेभ्यः समुद्भूतः = समुत्थितः यो धूलिनिकरः = रजःसमूहस्तेन (दोनों ओर की सेनाओं के मिल जाने से दीप्यमान हाथी घोड़े तथा पदाति वर्ग से उत्पन्न धूलिसमूह द्वारा)। पर्यस्तगज-घटासङ्घातेन—पर्यस्ताः = विस्तृताः याः गजघटाः = करिश्रेण्यः, तासाम् सङ्घातेन = समूहेन (विस्तृत गजघटा समूह से)। विस्तीर्यमाणेन = उत्थापितेन (उठाये गये)। अन्धकारेण = तमसा । अन्धीकृतम् = अन्धतां नीतम् । गगनतलम् = अम्बरतलम् (आकाश)। न लक्ष्यते = न दृश्यते (दिखलाई नहीं पड़ रहा था)।

सुन्दरकः—दूराकृष्टधनुर्गुणाच्छोटनटङ्कारगम्भीरभीषणेन—दूरं = कर्णान्तम् आकृष्टम् यद्धनुर्गुणम् = प्रत्यञ्चा, तस्याच्छोटनम् = विमोकः, तस्य टङ्कारस्तेन

दोनों—तदनन्तर क्या हुआ ?

सुन्दरक—हे देव ! तदनन्तर दोनों सेनाओं के मिल जाने से दीप्यमान हाथी, घोड़ों तथा पैदलों द्वारा उठाये गये धूलि समूह से विस्तृत गजघटा-समूह के द्वारा फैलाये गये अन्धकार द्वारा अन्धा बनाया गया गगन तल दिखलाई तक नहीं पड़ रहा था ।

दोनों—तदनन्तर क्या हुआ ?

सुन्दरक—हे देव ! तदनन्तर कर्णपर्यन्त खींचे गये धनुष की डोरी को छोड़ने से

दुर्योधनः—ततस्ततः ।

सुन्दरकः—तदो देव ! दोह्णिं वि ताणं अण्णोण्णसिंहणादगज्जिदपिसुणं विविहपरिमुक्कप्पहरणाहद कवअ संगलिदज्जलण विज्जुल्लअं बहललुहिलविन्दुखज्जोअभासुरगम्भीरत्थणिअचापजलहरप्पसरन्तसरधारासहस्सवरिसदुद्दंस्सं जादं समरदुद्दिणं । [ततो देव, द्वयोरपि तयोरन्योऽन्यसिंहनादगर्जितपिशुनं विविधपरिमुक्तप्रहरणाहतकवचसङ्गलितज्वलनविद्युल्लतं बहलरुधिरबिन्दुखद्योतभासुरगम्भीरस्तनितचापजलधरप्रसरच्छरधारासहस्रवर्षदुर्दर्शं जातं समरदुर्दिनम् ।]

गभीरभीषणेन = घनभयङ्करेण (कान पर्यन्त खींचो गई धनुष की डोर को छोड़ने कारण हुई टङ्कार से अत्यन्त भयङ्कर)। अन्धकारेण = तमिस्रा ज्ञायते = अवगम्यते । प्रलयजलधरेण = प्रलयङ्करेण पयोदेन (प्रलय मेघ ने) गर्जितम् = गर्जनं कृतम् (गर्जन किया हो) ।

सुन्दरकः—द्वयोः=भीमकर्णयोः (भीम तथा कर्ण दोनों में) । अन्योऽन्यसिंहनादगर्जितपिशुनम्—अन्योऽन्यम् = परस्परम् सिंहनाद इव = सिंहगर्जनमिव गर्जितेन पिशुनम् (आपस में सिंहगर्जन जैसा मालूम पड़ने वाला) । विविधपरिमुक्तप्रहरणाहतकवचसङ्गलितज्वलनविद्युल्लतम्—विविधानि = अनेकानि परिमुक्तानि= परित्यक्तानि यानि प्रहरणानि = शस्त्राणि तैः आहतम् = ताडितम् यत् कवचम् = वर्म, तस्मात् सङ्गलितः = निःसृतः यः ज्वलनः = दहनः, स एव विद्युल्लता = तडित्कान्तिस्तथाभूतम् (अनेक प्रकार चलाये गये शस्त्रों से आहत कवच से निकली हुई अग्नि रूपी विद्युत्कान्ति के समान) । बहलरुधिरबिन्दुखद्योतभासुरगम्भीरस्तनितचापजलधरप्रसरच्छरजलधारासहस्रवर्षदुर्दर्शम्—बहलं यद्रुधिरम् = अधिकं रक्तम् तस्य बिन्दवः एव खद्योताः = ज्योतिरिङ्गणाः (जुगनू), तैः भासुरम् = प्रदीप्तम् गम्भीरम् = सघनम् स्तनितं = गर्जितम् यस्य तादृशः चापः =

उत्पन्न टङ्कार द्वारा हुये गम्भीर भीषण अन्धकार से प्रतीत होने लगा मानों प्रलयकालीन मेघ गरज रहा हो ।

दुर्योधन—तदनन्तर ?

सुन्दरक—देव ! तदनन्तर उन दोनों के परस्पर में सिंहनाद सदृश भयङ्कर गर्जन करने वाला विविध प्रकार के छोड़े गये शस्त्रों से आहत कवचों से निकल रही अग्नि रूपी विद्युल्लता वाला, अत्यधिक रुधिरबिन्दु रूपी जुगनुओं से प्रकाशित, गम्भीर ध्वनि से युक्त चाप रूपी घनों से निकलने वाली हजारों बाणों रूपी धाराओं से वर्षा के कारण दिखलाई पड़ने में कठिन समरदुर्दिन उपस्थित हो गया ।

दुर्योधनः—ततस्ततः ।

सुन्दरकः—तदो देव ! एदस्सिं अन्तरे जेट्ठस्स भादुणो परिभअसंकिणा धणंजएण वज्जणिग्घादणिग्घोसविसमरसिदधअग्गट्ठिदमहावाणरो तुरंगमसंवाहणवापिदवासुदेवसंखचक्कासिगदालंच्छिदचटुलचउब्बाहुदण्डदुद्दंसणो आपूरिअपंचजण्णदेअत्ततताररसिदप्पदिरवभरिददसदिसामुहकुहरो धाविदो तं उद्देसं रहवरो । [ततो देव, एतस्मिन्नन्तरे ज्येष्ठस्य भ्रातुः परिभवशङ्किना धनञ्जयेन वज्रनिर्घातनिर्घोषविषमरसितध्वजाग्रस्थितमहावानरस्तुरङ्गमसंवाहनव्यापृतवासुदेवशङ्खचक्रासिगदालाञ्छितचटुलचतुर्बाहुदण्डदुर्दर्शन आपूरितपाञ्चजन्यदेवदत्ततारारसितप्रतिरवभरितदशदिशामुखकुहरो धावितस्तमुद्देशं रथवरः ।]

धनुः एव जलधरः = मेघः यस्मिन्, तादृशम् प्रसरताम् = निःसरताम् शराणाम् = वाणानाम् एव जलधारासहस्रम्, तन्मयं यद् वर्षम् = वृष्टिस्तेन दुर्दर्शम् = दुष्प्रेक्ष्यम् (बहुत से रुधिर विन्दु रूपी खद्योतों से प्रकाशित गंभीर गर्जन वाले धनुषरूपी जलधरों जैसे निकल रहे बाणरूपी जलधारा सहस्र की वर्षा के कारण कठिनता से दिखलाई पड़ने वाला)। समरदुर्दिनम्—समरस्य = युद्धस्य दुर्दिनम् = दुर्दिवसः । जातम् = सम्भूतम् (हो गया) ।

सुन्दरकः—एतस्मिन् = अस्मिन् । अन्तरे = मध्ये (इसी बीच में) । ज्येष्ठस्य भ्रातुः = अग्रजस्य (बड़े भाई की) परिभवशङ्किना—परिभवस्य = पराजयस्य शङ्का = सन्देहः यस्मिन् सः तेन (पराजय की शङ्का करने वाले) । धनञ्जयेन = किरीटिना (अर्जुन ने) । वज्रनिर्घातनिर्घोषविषमरसितध्वजाग्रस्थितमहावानरः—वज्रस्य = पवेः निर्घातनिर्घोषः = निरभ्रवज्रपातशब्दः, तद्वत्विषमम् = भीषणम् यत् रसितम् = गर्जनम् यस्य, तादृशः ध्वजाग्रे = पताकाग्रभागे स्थितः = विद्यमानः महावानरः = विशालकपिर्हनुमान् यस्य तथाविधः (निरभ्र वज्रपात शब्दसदृशभयङ्कर गर्जन वाला पताका के ऊपर बैठे महावानर हनुमान् वाला) ।

दुर्योधन—तदनन्तर क्या हुआ ?

सुन्दरक—हे देव ! तत्पश्चात् इसी बीच में ज्येष्ठ भ्राता भीम के पराजय की शङ्का से धनञ्जय ने अनभ्र वज्रपातध्वनि जैसा विषमध्वनि करने वाला जिसके ध्वज के अग्रभाग पर विशाल वानर (हनूमान्) अवस्थित था, शंख, चक्र, असि तथा गदा से शोभित चतुर चारों भुजदंडों वाले वासुदेव जिसके घोड़ों को हांक रहे थे, ऐसा पाञ्चजन्य तथा देवदत्त शंखों की उच्चध्वनि की प्रतिध्वनि से दशों दिशाओं के मुख गह्वरों को भरता हुआ उत्तम-रथ उधर को ही दौड़ाया ।

दुर्योधनः—ततस्ततः ।

सुन्दरकः—तदो भीमसेणधणंजएहिं अभिजुत्तं पिदरं पेक्खिअ ससंभमं विअलिअं अवधूणिअ रअणसीसअं आकण्णाकड्ढिदकठिणकोदण्डजीओ दाहिणहत्तुक्खित्तसरपुंखविघट्टणतुवराइदसारहीओ तं देसं उवगदो कुमालविससेणो । [ततो भीमसेनधनञ्जयाभ्यामभियुक्तं पितरं प्रेक्ष्य ससम्भ्रमं विगलितमवधूय रत्नशीर्षकमाकर्णाकृष्टकठिनकोदण्डजीवो दक्षिणहस्तोत्क्षिप्तशरपुङ्खविघट्टनत्वरायितसारथिकस्तं देशमुपगतः कुमारवृषसेनः ।]

तुरङ्गमसम्वाहनव्यापृतवासुदेवशंखचक्रासिगदालाञ्छितचटुलचतुर्बाहुदण्डदुर्दर्शनः—तुरङ्गमाणाम् = घोटकानाम् सम्वाहने = संचालने व्यापृताः = संलग्नाः वासुदेवस्य = कृष्णस्य शङ्खचक्रासिगदालाञ्छिताः—शङ्खेन=पाञ्चजन्यशङ्खेन चक्रेण= सुदर्शनेन असिना = खड्गेन गदया च लाञ्छिताः = शोभिताः ये चटुलाः = चतुराः चत्वारः-चतुःसंख्याकाः बाहुदण्डाः = भुजदण्डाः, तैः दुर्दर्शनं = दुष्प्रेक्ष्यः (घोड़े हाँकने में लगे वासुदेव के शख चक्र असि तथा गदा से शोभित चतुर चार बाहुदण्डों से शोभित होने के कारण कठिनता से दिखलाई पड़ने वाला)। आपूरितपाञ्चजन्यदेवदत्ततारसितप्रतिरवभरितदशदिशामुखकुहरः—आपूरितौ = आध्मातौ यौ पाञ्चजन्यदेवदत्तौ = तन्नामकृष्णार्जुनशङ्खौ, तयोः यत्ताररसितम् = उच्चैः ध्वनिः, तस्य यः प्रतिरवः = प्रतिध्वनि-शब्दः, तेन भरितानि = पूरितानि दशदिशानाम् = दशककुभानाम् ('दिशस्तु ककुभः काष्ठाः' इत्यमरः) मुखानि = अग्रभागानि एव कुहराणि = गह्वराणि येन तथाविधः (पाञ्चजन्य तथा देवदत्त शंखों की ऊँची ध्वनि की प्रतिध्वनि से दशों दिशाओं के मुखगह्वरों को भरने वाला) रथवरः = स्यन्दनश्रेष्ठम् (उत्तमरथ) तम् उद्देशम् = तत्स्थानम् (उस स्थान पर) धावितः = द्रुतं गन्तुं प्रेरित. (तेज दौड़ाया) ।

सुन्दरकः—भीमसेन-धनञ्जयाभ्याम्—भीमसेनेन धनञ्जयेन च (भीम तथा धनञ्जय द्वारा) । अभियुक्तम् = आक्रान्तम् (आक्रान्त) पितरम् = जनकम् (पिता को) प्रेक्ष्य = दृष्ट्वा (देखकर) ससम्भ्रमम् = सवेगम् (शीघ्रता से) ।

दुर्योधन—तदनन्तर ?

सुन्दरक—तब भीमसेन तथा धनञ्जय से घिरे पिता को देखकर सवेग सिर से खिसके हुये रत्नजटित मुकुट का तिरस्कार कर कानपर्यन्त कठोर धनुष की प्रत्यञ्चा को खींचे, दाहिने हाथ से उठाये हुये बाणों की पूँछों से कुरेद करके सारथी को शीघ्रता से प्रेरित कर कुमार वृषसेन उस स्थान पर आ गये ।

दुर्योधनः—(सावष्टम्भम् ।) ततस्ततः ।

सुन्दरकः—तदो अ देव ! तेण आअच्छन्तेण एव्व कुमालविससेणेणविद-लिदासिलदासामलसिणिद्धपुंखेहि कठिणकंकवत्तेहिं किसणवण्णेहिं साण-सिलणिसिदसामलसल्लबन्धेहिं कुसुमिदो विअ तरु मुहुत्तएण सिलीमुहेहिं पच्छादिदो धणंजअस्स रहवरो । [ततश्च देव, तेनाऽऽगच्छतैव कुमारवृषसेनेन विदलिताऽसिलताश्यामलस्निग्धपुङ्खैः कठिनकङ्कपत्रैः कृष्णवर्णैः शाणशिलानिशित-श्यामलशल्यबन्धैः कुसुमित इव तरुर्मुहूर्तेन शिलीमुखैः प्रच्छादितो धनञ्जयस्य रथवरः ।]

विगलितम् = स्वस्थानात् भ्रष्टम् (अपने स्थान से भ्रष्ट) रत्नशीर्षकम् = रत्नजटितं मुकुटम् । अवधूय = तिरस्कृत्य (तिरस्कार करके) । आकर्णाकृष्टकठिनकोदण्ड-जीवः—आकर्णम् = श्रोत्रपर्यन्तम् आकृष्टा कठिनस्य = कठोरस्य कोदण्डस्य = धनुषः जीवा = प्रत्यञ्चा येन सः (कानों तक कठोर धनुष की प्रत्यञ्चा खींचे हुए) । दक्षिणहस्तोत्क्षिप्तशरपुंखविघट्टनत्वरायितसारथिकः—दक्षिणेन हस्तेन = सव्यकरेण उत्क्षिप्तानाम्—उत्थापितानाम् शराणाम् = बाणानाम् पुंखैः = पुच्छभागैः यद् विघ-ट्टनम् = प्रेरणम्, तेन त्वरायितः = त्वरां गतिं प्राप्तः सारथिकः = सूतो येन तादृशः (दाहिने हाथ से उठाने वाले बाणों की पूँछों से रगड़ने से सारथी को तेजी पकड़ता हुआ) । कुमार-वृषसेनः—कुमारः = राजपुत्रः. वृषसेनः = कर्णपुत्रः । तं देशम् = तत्स्थानम् (उस जगह) उपगतः = प्राप्तः (आ गये) ।

दुर्योधनः—सावष्टम्भम् = सगर्वम् ।

सुन्दरकः—आगच्छता = आगतेन एव (आते ही) । विदलितासिलता-श्यामलस्निग्धपुङ्खैः—विदलिताः = खण्डिताः या असिलताः = खड्गलताः, तद्वद् श्यामलाः = हरिताः स्निग्धाः = चिक्कणाः पुङ्खाः = बाणमूलानि तैः (टूटी असिलता के समान श्यामल स्निग्ध बाणपुंखों द्वारा) । कठिनकङ्कपत्रैः—कठिनानि = कठोराणि कङ्कनामकपक्षिणः पुंखानि येषां तैः (कङ्कपक्षी के कठोर पंखों वाले), कृष्णवर्णैः = श्यामरङ्गैः (काले रंग के) शाणशिलानिशितश्यामल-

---

दुर्योधन—(सगर्व) तदनन्तर क्या हुआ ?

सुन्दरक—देव ! तदनन्तर कुमार वृषसेन ने आते ही खण्डित असिलता के समान श्यामल स्निग्ध पुंखों से कठोर कंकपत्र वाले काले रंग के कसौटी पत्थर पर घिसे बाण-फलकों से क्षण भर में धनञ्जय का रथ उसी प्रकार आच्छादित हो गया जैसे पुष्पों से लदा पेड़ भौरों के कारण काला दिखलाई पड़ने लगता है ।

उभौ—(सहर्षम् ।) ततस्ततः ।

सुन्दरकः—तदो देव ! तीक्खविक्खित्तणिसिदभल्लबाणवरिसिणा धणंजएण ईसि विहसिअ भणिदम्—'अरे रे विससेण ! पिदुणो वि दाव दे ण जुत्तं मह कुविदस्स अभिमुहं ठादुं । किं उण भवदो बालस्स । ता गच्छ । अवरेहिं कुमारेहिं सह गदुअ आओधेहि ।' एव्वं वाअं णिसमिअ गुरुअणाहिक्खेवेण उद्दीविअकोवोवरत्तमुहमंडलविअम्भिअभिउडिभंगभीसणेण चावधारिणा कुमालविससेणेण मम्मभेदएहिं परुसविसमेहिं सुदिवहकिंदप्पणएहिं णिब्भच्छिदो गंडीवी बाणेहिं ण उण टुट्ठवअणेहिं । [ततो देव, तीक्ष्णनिक्षिप्तनिशितभल्लबाणवर्षिणा धनञ्जयेनेषद्विहस्य भणितम्—'अरे रे वृषसेन ! पितुरपि, तावत्ते न युक्तं मम कुपितस्याऽभिमुखं स्थातुम् । किं पुनर्भवतो बालस्य । तद् गच्छ । अपरैः कुमारैः सह गत्वा युध्यस्व ।' एवं वाचं निशम्य गुरु-

---

शल्यबन्धैः—शाणशिलायाम् = निकषप्रस्तरे निशिताः = निर्घर्षिताः श्यामलाः = श्यामवर्णाः शल्यबन्धाः = बाणफलकबन्धाः येषां तैः (सान रखने वाले पत्थर पर घिसे श्यामल बाणफलकों से)। कुसुमितः = पुष्पितः इव (पुष्पित-सा) तरुः = पादपः । मुहूर्त्तेन = क्षणेन (थोड़ी ही देर में) शिलीमुखैः = भ्रमरैः बाणैश्च । धनञ्जयस्य = अर्जुनस्य । प्रच्छादितः = आवृतः (ढंक गया) ।

सुन्दरकः—तीक्ष्णनिक्षिप्तनिशितभल्लबाणवर्षिणा—तीक्ष्णम् = वेगेन निक्षिप्ताः = प्रक्षिप्ताः निशिताः = शाणिताः ये भल्लाः = कुन्ताः बाणाः = शराश्च, तान् वर्षतीति तेन (जोर से फेंके हुए पैने भालों तथा बाणों वाले)। ईषद् = किञ्चित् (थोड़ा सा)। विहस्य = हसित्वा (मुस्करा कर)। भणितम् = गदितम् (कहा)। पितुः = तातस्य अपि । ते = तव वृषसेनस्य (तुम्हारे पिता का) कुपितस्य = क्रुद्धस्य । मम = मे गाण्डीविनः (मेरे) अभिमुखम् = सम्मुखम् (सामने)। स्थातुम् = स्थिरीभवितुम् (ठहरने को)। न युक्तम् = समीचीनं नास्ति (ठीक नहीं है)। बालस्य = शिशोः (बालक का)। तत् = तेन (अतः)। गच्छ = याहि (जाओ)। अपरैः = अन्यैः कुमारैः = राजपुत्रैः सह = साकम् । (दूसरे

दोनों—(प्रसन्नता के साथ) तदनन्तर क्या हुआ ?

सुन्दरक—तब तो महाराज ! तेजी से फेंके गये पैने भालों तथा बाणों की वर्षा करने वाले धनञ्जय ने कुछ-कुछ मुस्करा कर कहा—अरे ओ वृषसेन ! तुम्हारे पिता का तो क्रोध में मेरे समक्ष ठहर पाना मुश्किल है फिर तुम बालक का कहना ही क्या ? अतः जाओ । जाकर दूसरे कुमारों के साथ युद्ध करो । इस बात को सुनकर गुरुजनों (पिता) की निन्दा

जनाधिक्षेपेणोद्दीप्तकोपोपरक्तमुखमण्डलविजृम्भितभृकुटीभङ्गभीषणेन चापधारिणा कुमारवृषसेनेन मर्मभेदकैः परुषविषमैः श्रुतिपथकृतप्रणयैर्निर्भर्त्सितौ गाण्डीवी बाणैर्न पुनर्दुष्टवचनैः ।]

दुर्योधनः—साधु, वृषसेन ! साधु । सुन्दरक ! ततस्ततः ।

सुन्दरकः—तदो अ देव ! णिसिदसराभिघादवेअणोपजादमण्णुणा किरीटिणा चण्डगण्डीवजीआसद्ददणिज्जिदवज्जणिग्घादघोसेण वाणणिपडणपडिसिद्धदंसणप्पसरेण पत्थुदं सिक्खावलाणुरूवं किं वि अच्चरिअम् । [ततश्च देव ! निशितशराभिघातवेदनोपजातमन्युना किरीटिना चण्डगाण्डीवजीवाशब्द-

---

कुमारों के साथ)। युद्धस्व = युद्धं कुरु (लड़ो)। वाचम् = वाक् (वाणी)। निशम्य = श्रुत्वा (सुनकर)। गुरुजनाधिक्षेपेण—गुरुजनस्य = तातस्य अधिक्षेपेण = निन्दनेन (पिता की निन्दा से)। उद्दीप्तकोपोपरक्तमुखमण्डलविजृम्भितभृकुटीभङ्गभीषणेन—उद्दीप्तः = वृद्धिं गतः यः कोपः = क्रोधः, तेन उपरक्तम् = रक्तीभूतम् यन्मुखमण्डलम् = आननवृत्तम्, तेन विजृम्भितः = प्रसारं गतः यो भृकुटिभङ्गः = भ्रूकौटिल्यम् तेन भीषणः = भयङ्करस्तेन (उद्दीप्त क्रोध से लाल मुखमण्डल व भ्रकुटिवक्रता के फैल जाने के कारण भयङ्कर) चापधारिणा = धनुर्धारिणा (धनुर्धारी)। मर्मभेदकैः = मर्मान्तकैः। परुषविषमैः—परुषैः = कठोरैः विषमैः = कुटिलैश्च (कठोर तथा कुटिल) श्रुतिपथकृतप्रणयैः—श्रुतेः = कर्णस्य पन्थाः = मार्गः, तत्र कृतः = विहितः प्रणयः = प्रीतिर्यैस्तादृशैः (कान पर्यन्त खींच खींचकर) वाणैः = शरैः। गाण्डीवी = अर्जुनः। निर्भर्त्सितः = निन्दितः (बाणों की वर्षा की)। पुनः = भूयः। दुष्टवचनैः = निन्दावचनैः अपशब्दैर्वा। न निर्भर्त्सितः (अपशब्दों द्वारा निन्दा नहीं की)।

दुर्योधनः—साधु = धन्यवादार्हं ! (शाबास) वृषसेन ! = कर्णात्मज !

सुन्दरक.—निशितशराभिघातवेदनोपजातमन्युना—निशितानां शराणाम् =

से उद्दीप्त क्रोध के कारण लाल-लाल मुखमण्डल तथा भृकुटि बक्रता के बढ़ जाने के कारण भयङ्कर लगने वाले धनुर्धारी कुमार वृषसेन ने मर्मभेदी कठोर तथा विषम बाणों को कानों तक खींच कर (बड़े जोर से) वर्षा कर गाण्डीवी अर्जुन की भर्त्सना की, अपशब्दों द्वारा निन्दा नहीं की।

दुर्योधन—शाबास वृषसेन ! शाबास। हे सुन्दरक ! तदनन्तर ?

सुन्दरक--तदनन्तर हे देव ! पैने बाणों के प्रहार से हो रही पीड़ा से उत्पन्न क्रोध वाले किरीटी (अर्जुन) ने प्रचण्ड गाण्डीव की प्रत्यञ्चा शब्द से वज्रपात शब्द को तिरस्कृत

निर्जितवज्रनिर्घातघोषेण बाणनिपतनप्रतिषिद्धदर्शनप्रसरेण प्रस्तुतं शिक्षाबलानुरूपं किमप्याश्चर्यम् ।]

दुर्योधनः—(साकूतम् ।) ततस्ततः ।

सुन्दरकः—तदो अ देव ! तं तारिसं पेक्खिअ सत्तुणो समरव्वावारचउरत्तणं । अविभाविअतूणीरमुहधणुग्गुणगमणागमणसरसंधाणमोक्खचडुलकरअलेण कुमालविससेणेण वि सविसेसं पत्थुदं समलकम्म । [ततश्च देव, तत्तादृशं प्रेक्ष्य शत्रोः समरव्यापारचतुरत्वमविभाविततूणीरमुखधनुर्गुणगमनाऽऽगमनशरसंधानमोक्षचटुलकरतलेन कुमारवृषसेनेनाऽपि सविशेषं प्रस्तुतं समरकर्म ।]

तीक्ष्णबाणानाम् अभिघातेन = प्रहारेण या वेदना = पीड़ा तयोपजातः = उत्पन्नः मन्युः यस्य सः, तेन (पैने बाणों के प्रहार से हुई पीडा से उत्पन्न क्रोध वाले) । किरीटिना = धनञ्जयेन । चण्डगाण्डीवजीवाशब्दनिर्जितवज्रनिर्घातघोषेण—चण्डः = भीषणः यः गाण्डीवः = तन्नामधनुः, तस्य या जीवा = प्रत्यञ्चा, तस्याः शब्देन निर्जितः = तिरस्कृतः वज्रनिर्घातस्य = कुलिशपातस्य घोषः = शब्दो येन तथाविधेन (तीक्ष्ण गाण्डीव की डोरी के शब्द से वज्रपात ध्वनि को तिरस्कृत करने वाले) । बाणनिपतनप्रतिषिद्धदर्शनप्रसरेण—बाणानां निपतनम् = शरवृष्टिः, तेन प्रतिषिद्धः = अवरुद्धः दर्शनस्य=अवलोकनस्य प्रसरः = प्रसारो येन तादृशेन (बाण वर्षा से अवरुद्ध हुए दृष्टि प्रसार से) । शिक्षाबलानुरूपम्—शिक्षायाः=धनुर्विद्यायाः बलस्य = पराक्रमस्य अनुरूपम् = अनुकूलम् (शिक्षा एवं पराक्रम के अनुरूप) । किमपि=किञ्चिदपि । आश्चर्यम् = अद्भुतं कर्म । प्रस्तुतम् = प्रारब्धम् (आरम्भ किया) ।

दुर्योधनः—साकूतम् = सभयम् (डरकर) ।

सुन्दरकः—तादृशम् = तथाविधम् । प्रेक्ष्य = अवलोक्य (देखकर) । शत्रोः = अरेः समरव्यापारचतुरत्वम्—समर-व्यापारस्य = युद्धकर्मणः चतुरत्वम् = कौशलम् अविभाविततूणीरमुखधनुर्गुणगमनाऽऽगमनशरसन्धानमोक्षचटुलकरतलेन—

करने वाले बाणों की निरन्तर वृष्टि से कुछ भी न दिखलाई पड़ने वाला धनुर्विद्या तथा पराक्रम के अनुरूप आश्चर्यजनक युद्ध-कर्म आरम्भ कर दिया ।

दुर्योधन—(घबड़ा कर) तदनन्तर क्या हुआ ?

सुन्दरक—तदन्तर हे देव ! शत्रु के इस प्रकार युद्ध कार्य को देख कर युद्ध व्यापार के चातुर्य को (जिसमें) धनुष पर कब बाण चढ़ाया तथा कब उसे छोड़ा यह न दिखलाई पड़ने वाला बाण चढ़ाने और छोड़ने में चञ्चल हाथ वाले कुमार वृषसेन ने भी विशेष युद्ध-कौशल आरम्भ कर दिया ।

दुर्योधनः—ततस्ततः ।

सुन्दरकः—तदो अ देव ! एत्थन्तरे विमुक्कसमरव्वावारो मुहुत्तविस्सामिदवेराणुबन्धो दोणं वि कुरुराअपण्डवबलाणं 'साहु कुमालविससेण, साहु' त्ति किदकलअलो वीरलोओ अवलोइदुं पउत्तो । [ततश्च देव ! अत्रान्तरे विमुक्तसमरव्यापारो मुहूर्तविश्रामितवैरानुबन्धो द्वयोरपि कुरुराजपाण्डवबलयोः 'साधु कुमारवृषसेन ! साधु' इति कृतकलाकलो वीरलोकोऽवलोकयितुं प्रवृत्तः ।]

दुर्योधनः—(सविस्मयम् ।) ततस्ततः ।

सुन्दरकः—तदो अ देव ! अवहीरिदसअलधाणुक्कचक्कपराक्कमसालिणो सुदस्स तहाविहेण समलकम्मालम्भेण हरिसरोसकरुणासंकासंकडे बट्टमाणस्स

अविभावितम् = अविदितम् तूणीरमुखधनुर्गुणयोः गमनाऽऽगमने शरसन्धाने मोक्षे च = गुणारोपणे त्यागे च चटुलम् = चञ्चलम् करतलम् = हस्ततलम् यस्य तेन (धनुष पर कब बाण चढ़ाया तथा कब छोड़ा, यह सब शीघ्रता के कारण नहीं ज्ञात हो रहा था ऐसे चञ्चल करतल वाले) । कुमारवृषसेनेन = कर्णसुतेन अपि (कुमार वृषसेन ने भी) सविशेषम् = विशिष्टप्रकारकम् ।

सुन्दरकः—अत्रान्तरे = अस्मिन्नवसरे (इसी बीच में) । विमुक्तसमरव्यापारः—विमुक्तः = परित्यक्तः समरव्यापारः = रणकर्म येन तथाभूतः (युद्ध कर्म करना बन्द कर दिया है जिसने) मुहूर्तविश्रामितवैरानुबन्धः—मुहूर्तं = क्षणमात्रम् विश्रामितः = उपशान्तः वैरानुबन्धः = शत्रुभावो येन सः (थोड़ी देर के लिए वैर भाव शान्त किया हुआ) । कुरुराजपाण्डवबलयोः = कौरवपाण्डव-सेनयोः (कौरवों तथा पाण्डवों की सेनाओं का) कृतकलकलः = कृतकलरवः (कोलाहल करता हुआ) वीरलोकः = वीरसमूहः । अवलोकयितुम् = द्रष्टुम् (देखने को) प्रवृत्तः = संलग्नः (लग गया) ।

दुर्योधनः—सविस्मयम् = साश्चर्यम् ।

सुन्दरकः—अवधीरितसकलधानुष्कचक्रपराक्रमशालिनः—अवधीरितम् = तिर-

दुर्योधन—तदनन्तर क्या हुआ ।

सुन्दरक—हे देव ! इसी बीच में युद्ध व्यापार छोड़ कर क्षण भर को वैर भाव भुला कर कौरव तथा पाण्डव दोनों सेनाओं के वीर-पुरुष—'धन्य है कुमार वृषसेन ! धन्य हो' । इस प्रकार कोलाहल करने लगे ।

दुर्योधन—(आश्चर्य के साथ) तदनन्तर ?

सुन्दरक—हे राजन् ! तदनन्तर समस्त धनुर्धारिवर्ग को तिरस्कृत करने वाले पराक्रमी

सामिणो अंगराअस्स णिबडिआ सरपद्धइ भीमसेणे बाप्पपज्जाउला दिट्ठी कुमालविससेणे। [ततश्च देव ! अवधीरितसकलधानुष्कचक्रपराक्रमशालिनः सुतस्य तथाविधेन समरकर्मारम्भेण हर्षरोषकरुणाशङ्कासङ्कटे वर्तमानस्य स्वामिनोऽङ्गराजस्य निपतिता शरपद्धतिर्भीमसेने बाष्पपर्याकुला दृष्टिः कुमारवृषसेने।]

दुर्योधनः—(सभयम्।) ततस्ततः।

सुन्दरकः—तदो अ देव ! उभअबलप्पउत्तसाहुकारामरिसिदेण सरवरिसज्जलिदेण गण्डीविणा तुरगेसु सारहिं वि रहवरे धणु वि जीआइं विं णलिदलाञ्छणे सिदादवत्ते अ व्वावारिदो समं सिलीमुहासारो। [ततश्च देव ! उभयबलप्रयुक्तसाधुकारामर्षितेन शरवर्षज्वलितेन गाण्डीविना तुरगेषु सारथावपि रथवरे धनुष्यपि जीवायामपि नरेन्द्रलाञ्छने सितातपत्रे च व्यापारितः समं शिलीमुखासारः।]

स्कृतम् सकलम् = अखिलम् धानुष्कचक्रम् = धनुर्धारिवर्गः येन तथाविधस्य पराक्रमशालिनः = वीरस्य (समस्तधनुर्धारियों के समुदाय को तिरस्कृत करने वाले बलशाली) सुतस्य = वृषसेनस्यात्मजस्य (पुत्र का) समरकर्मारम्भेण = रणकार्यारम्भेण हर्षरोषकरुणाशङ्कासङ्कटे—हर्षस्य = आनन्दस्य, रोषस्य = क्रोधस्य करुणायाः = दयायाः, शाङ्कायाश्च सङ्कटः = विपत्तिस्तस्मिन् (हर्ष रोष तथा करुणा के संकट में) वर्तमानस्य = विद्यमानस्य। स्वामिनः = नृपस्य। अङ्गराजस्य=कर्णस्य। शरपद्धतिः=बाणपरम्परा (बाणों का तारतम्य)। भीमसेने= वृकोदरे। निपतिता = पतिता। बाष्पपर्याकुला—बाष्पैः = अश्रुभिः पर्याकुला = व्याकुला। दृष्टिः = अवलोकनत्वम् (दृष्टि) निपतिता।

सुन्दरकः—उभयबलप्रयुक्तसाधुकारामर्षितेन—उभयबलयोः = कौरवपाण्डवदलयो प्रयुक्तः = समुद्भूतः यः साधुकारः = साधुवादस्तेनामर्षितः = क्रुद्धो यस्तेन (दोनों सेनाओं द्वारा प्रयुक्त साधुवाद–शाबासी से कुपित)। तुरगेषु = अश्वेषु।

पुत्र के उस प्रकार युद्ध कौशल को देखकर हर्ष, रोष, करुणा तथा शंका (सुत पराक्रम से हर्ष, शत्रुवर्ग पर रोष पुत्र दशा पर करुणा पुत्र के प्राणसंकट की आशंका) के संकट में पड़े नृपति अंगराज के बाणों की वर्षा भीमसेन पर तथा अश्रुपूर्ण व्याकुल दृष्टि कुमार वृषसेन पर पड़ी।

दुर्योधन—(भयभीत होकर) तदन्तर क्या हुआ ?

सुन्दरक—महाराज ! तब दोनों (कौरव-पाण्डव) सेनाओं द्वारा दिये गये साधुवाद से क्रुद्ध बाण-वृष्टि से प्रज्वलित गाण्डीवी ने अश्व, सारथी, रथ, धनुष, राजचिह्न श्वेत छत्र पर एकदम बाण-वृष्टि आरम्भ कर दी।

दुर्योधनः—(सभयम् ।) ततस्ततः ।

सुन्दरकः—तदो अ देव ! विरहो लूणगुणकोदण्डो परिब्भमणव्वावार-मेत्तपडिसिद्धशरसंपादो मण्डलग्गेण विअरिदुं पउत्तो कुमालविससेणो । [ततश्च देव ! विरथो लूनगुणकोदण्डः परिभ्रमणव्यापारमात्रप्रतिषिद्धशरसम्पातो मण्डलाग्रेण विचरितुं प्रवृत्तः कुमारवृषसेनः ।

दुर्योधनः—(साशङ्कम् ।) ततस्ततः ।

सुन्दरकः—तदो अ देव ! सुदरहबिद्धंसेणामरिसिदेण सामिणा अङ्गराएण अगणिअभीमसेणाभिजोएण पडिमुक्को धणंजअस्स उवरि सिलीमुहासारो । कुमालविससेणो वि परिजणोवणीदं अण्णं रहं आरुहिअ पुणो वि पउत्तो धणंजएण सह आओधेदुम् । [ततश्च देव ! सुतरथविध्वंसेनामर्षितेन स्वामिना-

---

सारथौ = सूते । रथवरे = स्यन्दने । धनुषि = कोदण्डे । जीवायाम् = प्रत्यञ्चायाम् अपि । नरेन्द्रलाञ्छने—नरेन्द्रस्य = नृपतेः, लाञ्छने = चिह्ने । सितातपत्रे—सितम् = शुभ्रं यदातपत्रम् = छत्रम्, तस्मिन् (श्वेतछत्र पर) । समम् = युगपत् । शिलीमुखासारः = बाणवर्षणम् । व्यापारितः = प्रारब्धः ।

सुन्दरकः—विरथः = रथहीनः । लूनगुणकोदण्डः—लूनः = छिन्नः गुणः = जीवा कोदण्डः = धनुश्च यस्य सः (प्रत्यञ्चा तथा धनुष जिसका कट चुका है ।) परिभ्रमणव्यापारमात्रप्रतिषिद्धशरसम्पातः—परिभ्रमणव्यापारमात्रेण=केवलं परिभ्रमणकर्मणा प्रतिषिद्धः = निषिद्धः शरसम्पातः = बाणवर्षणम् येन सः (केवल पैंतरा बदलकर बाणवृष्टि बचाता हुआ) । मण्डलाग्रेण = कृपाणेन ('कौक्षेयको मण्डलाग्रः करवालः कृपाणवत्' इत्यमरः) । विचरितुम् = भ्रमितुम् । प्रवृत्तः = सम्वृत्तः (लग गया) ।

सुन्दरकः—सुतरथविध्वंसेनामर्षितेन–सुतरथस्य = पुत्र-विषसेनस्यन्दनस्य विध्वंसनम् = विनाशः, तेनामर्षितः = कुपितः यस्तेन (पुत्र के रथ के नष्ट हो जाने के

दुर्योधन--(समय) तत्पश्चात् क्या हुआ ?

सुन्दरक--हे देव ! तदन्तर रथहीन, धनुष की प्रत्यञ्चा कटा हुआ कुमार वृषसेन केवल पैंतरे बदल कर युद्ध में बाण-वृष्टि को बचाता हुआ मण्डल बना कर घूमने लगा ।

दुर्योधन--(शंकित होकर) तदन्तर ?

सुन्दरक--राजन् ! तदनन्तर पुत्र के रथ के नष्ट होने से क्रुद्ध स्वामी अंगराज कर्ण भीमसेन के आक्रमण की परवाह न कर धनञ्जय के ऊपर बाणों की वर्षा करने में जुट गये ।

ङ्गराजेनागणितभीमसेनाभियोगेन परिमुक्तो धनञ्जयस्योपरि शिलीमुखासारः। कुमारवृषसेनोऽपि परिजनोपनीतमन्यं रथमारुह्य पुनरपि प्रवृत्तो धनञ्जयेन सहाऽऽयोधितुम्।]

उभौ—साधु वृषसेन! साधु। ततस्ततः।

सुन्दरकः—तदो देव। भणिदं अ कुमालेण—'रे रे तादाहिक्खेवमुहल मज्झमपण्डव! मह सरा तुह सरीरं उज्झिअ अण्णस्सिं ण णिवडन्ति' त्ति भणिअ सरसहस्सेहिं पण्डवसरीरं पच्छादिअ सिंहणादेण गज्जिदुं पउत्तो। [ततो देव, भणितं च कुमारेण—'रे रे ताताधिक्षेपमुखर मध्यमपाण्डव! मम शरास्तव शरीरमुज्झित्वाऽन्यस्मिन्न निपतन्ति' इति भणित्वा शर सहस्रैः पाण्डवशरीरं प्रच्छाद्य सिंहनादेन गर्जितुं प्रवृत्तः।]

कारण कुपित) स्वामिना = नृपतिना। अङ्गराजेन = कर्णेन। अगणितभीमसेनाभियोगेन—अगणितः = अविचारितः भीमसेनस्य = वृकोदरस्याभियोगः = आक्रमणम् येन तथाविधेन (भीमसेन के आक्रमण की परवाह न करके)। धनञ्जयस्य = अर्जुनस्य उपरि = ऊर्ध्वम्। शिलीमुखासारः = बाणवृष्टिः। परिमुक्तः = परित्यक्तः (छोड़ दी)। परिजनोपनीतम्—परिजनेन = सेवकेन उपनीतम् = प्रापितम्। अन्यम् = अपरम्। रथम् = स्यन्दनम्। आरुह्य = आरोहणं कृत्वा (सवार होकर) पुनरपि = भूयोऽपि। आयोधितुम् = युद्धं कर्त्तुम्। प्रवृत्तः = संलग्नः (युद्ध करने में लग गया)।

सुन्दरकः—भणितम् = कथितम् (कहा)। ताताधिक्षेपमुखर—तातस्य = पितुः अधिक्षेपे = तिरस्कारे मुखरः = वाचालस्तत्सम्बुद्धौ (रे पिता पर आक्षेप के बकवादी) मध्यमपाण्डव = अर्जुन। मम = मे वृषसेनस्य। शराः = बाणाः। तव = तेऽर्जुनस्य। शरीरम् = देहम् उज्झित्वा = त्यक्त्वा (तुम्हारे शरीर को छोड़कर)। अन्यस्मिन् = परस्मिन्पुरुषे (दूसरे पर) न निपतन्ति = नैव पतन्ति (नहीं गिरते हैं)। इति = एवम् (ऐसा) भणित्वा = कथयित्वा (कहकर) शरसहस्रैः =

कुमार वृषसेन भी सेवक द्वारा लाये गये दूसरे रथ पर चढ़ कर पुनः धनञ्जय के साथ युद्ध करने लगा।

दोनों—धन्य हो वृषसेन (तुम) धन्य हो! तदनन्तर?

सुन्दरक—हे राजन्! तब कुमार ने कहा-"रे पिताजी पर आक्षेप करने में मुखर! मध्यम पाण्डव! मेरे बाण तेरे शरीर को छोड़ कर दूसरे पर नहीं गिरेंगे"। यह कहकर हजारों बाणों से अर्जुन के शरीर को आच्छादित कर सिंहनाद-सा गर्जने लगा।

दुर्योधनः—(सविस्मयम् ।) अहो ! बालस्य पराक्रमो मुग्धस्वभावस्यापि । ततस्ततः ।

सुन्दरकः—तदो अ देव ! तं समलसंपादं समवधूणिअ णिसिदसराभिघादजातमण्णुणा किरीटिणा गहिदा रहुच्छङ्गादो कणन्तकणअकिंकिणीजालझंकारविराइणी मेहोवरोहविमुक्कणहत्थलणिम्मला णिसिदसामलसिणिद्धमुही विविहरअणप्पहाभासुरभीसणरमणिज्जदंसणा सत्ती विमुक्का कुमालाहिमुही । [ततश्च देव ! तं समरसम्पातं समवधूय, निशितशराभिघातजातमन्युना किरीटिना गृहीता रथोत्सङ्गात्क्वणत्कनककिङ्किणीजालझङ्कारविराविणी मेघोपरोधविमुक्तनभस्तलनिर्मला निशितश्यामलस्निग्धमुखी विविधरत्नप्रभाभासुरभीषणरमणीयदर्शना शक्तिर्विमुक्ता कुमाराभिमुखी ।]

बाणसहस्रैः (हजारों वाणों से)। पाण्डवशरीरम् = अर्जुनदेहम् । प्रच्छाद्य = आच्छाद्य (ढंक कर) सिंहनादेन = सिंहगर्जनवत् तारस्वरेण, गर्जितुम् = गर्जनं कर्त्तुम् (गर्जना) प्रवृत्तः = संलग्नः (लग गया) ।

दुर्योधनः—अहो = आश्चर्येऽव्ययम् । बालस्य = शिशोः कुमारस्य । मुग्धस्वभावस्य—मुग्धः स्वभावः = प्रकृतिर्यस्य तस्य (मुग्ध प्रकृति वाले) । पराक्रमः = वीरत्वम् ।

सुन्दरकः—तम् = तथाविधम् । समरसम्पातम्—समरे = युद्धे सम्पातम् = बाणवर्षणम् समवधूय = तिरस्कृत्य (तिरस्कार कर) । निशितशराभिघातजातमन्युना—निशितशराणाम् = तीक्ष्णबाणानाम् अभिघातेन = प्रहारेण जातः = उत्पन्नः मन्युः क्रोधो यस्य तेन (पैने बाणों के प्रहार से कुपित) । किरीटिना = गाण्डीविना । रथोत्सङ्गात् = स्यन्दनमध्यात् (रथ में से) । क्वणत्कनककिङ्किणीजालझङ्कारविराविणी—क्वणन्तीनाम् = शब्दायमानानाम् कनककिङ्किणीनाम् = स्वर्णक्षुद्रघंटिकानाम् जालम् = समूहः तस्य झंकारेण = 'झन्-झन्' इति ध्वनिना विराविणी = शब्दायमाना (बज रही क्षुद्र स्वर्ण घंटियों के जाल से झन्-झन् शब्द

दुर्योधन—(साश्चर्य) मुग्ध प्रकृति वाले बालक का भी पराक्रम धन्य है । तदनन्तर ?

सुन्दरक—हे देव ! तब उस बाणों की वर्षा की परवाह न कर पैने बाणों के प्रहार से कुपित हुये किरीटी ने रथ के अन्दर से बजती हुई स्वर्ण घंटियों के जाल से झन-झनाहट करती हुई घनावरण से रहित नभस्तल के समान निर्मल, पैने, श्यामल, स्निग्ध फलक वाली, विविधरत्नों की प्रभा से प्रदीप्त भयङ्कर तथा मनोरम लगने वाली शक्ति उठाई तथा कुमार वृषसेन के सामने को उसे फेंका ।

दुर्योधनः—(सविषादम्)—अहह । ततस्ततः ।

सुन्दरकः—तदो देव ! पज्जलन्तीं सत्तिं पेक्खिअ विअलिअं अंगराअस्स हत्थादो ससरं धणु, हअआदो बीरसुलहो उच्छाहो, णअणादो बाप्पसलिलं पि । रसिदं अ सिंहणादं विओदलेण । 'दुक्कलं दुक्कलं' त्ति आक्कन्दिदं कुरुवलेण । [ततो देव, प्रज्वलन्तीं शक्तिं प्रेक्ष्य विगलितमङ्गराजस्य हस्तात्सशरं धनुर्हृदयाद्वीरसुलभ उत्साहो नयनाद्बाष्पसलिलमपि । रसितं च सिंहनादं वृकोदरेण । 'दुष्करं दुष्कर'मित्याक्रन्दितं कुरुबलेन ।]

करती हुई)। मेघोपरोधविमुक्तनभस्तलनिर्मला—मेघैः = घनैः यः उपरोधः = आच्छादनम् तेन विमुक्तम् = परित्यक्तम् नभस्तलम् = गगनतलम्, तद्वत् निर्मला= उज्ज्वला (मेघावरण से मुक्त गगनतल के समान निर्मल)। निशितश्यामलस्निग्धमुखी—निशितम् = तीक्ष्णम् श्यामलम्=कृष्णम् स्निग्धश्च = चिक्कणश्च मुखम्= अग्रभागः यस्याः सा (पैनी काली चिकनी अग्रभागवाली)। विविधरत्नप्रभाभासुरभीषणरमणीयदर्शना—विविधरत्नानाम्=बहुविधमणीनाम् प्रभया=दीप्त्या भासुरा= प्रकाशिता अत एव भीषणरमणीयं = भयङ्करं मनोरमं च दर्शनं यस्याः सा (अनेक रत्नों की प्रभा से प्रदीप्त भयङ्कर तथा मनोरम लगने वाली)। कुमाराभिमुखी—कुमारस्य = वृषसेनस्य अभिमुखम् = सम्मुखम् या सा (कुमार की ओर को मुख किये) शक्तिः = शक्तिनामायुधम् । विमुक्ता = परित्यक्ता (छोड़ी)।

दुर्योधनः—सविषादम्=सखेदम् (दुःख सहित)। 'अहह' इति दुःखेऽव्ययम् ।

सुन्दरकः—प्रज्ज्वलन्तीम् = प्रदीप्ताम् । शक्तिम् = शक्त्यायुधम् । प्रेक्ष्य = दृष्ट्वा (देखकर)। विगलितम् = विस्रस्तम् (गिर गया)। सशरम्—शरैः = बाणैः सहितम् (बाणों सहित) धनुः = कोदण्डम् । हृदयात् वक्षसः (हृदय से)। वीरसुलभः = वीरोचितः । उत्साहः = धैर्यम् । नयनात् = चक्षुषः । वाष्पसलिलम् = अश्रुजलम् । रसितम् = ध्वनितम् (गर्जन किया)। वृकोदेरण = भीमेन । दुष्करम् = अतिकठिनम् । कुरुबलेन = कौरवसैन्येन आक्रन्दितम् = क्रन्दनं कृतम् (क्रन्दन किया)।

दुर्योधन—(सविषाद) हाय हाय ! फिर क्या हुआ ?

सुन्दरक—देव ! तब चमचमाती शक्ति को देख कर अंगराज के हाथ से बाणों समेत धनुष, हृदय से वीर-सुलभ उत्साह तथा नयनों से अश्रुजल गिर पड़ा तथा वृकोदर सिंहके समान गर्जने लगा । कौरव सेना 'दुष्कर दुष्कर' कहकर चिल्लाने लगी ।

दुर्योधनः—(सविषादम्) ततस्ततः ।

सुन्दरकः—तदो देव ! कुमालविससेणेण आकण्णपूरिदेहिं णिसिदक्खुरप्पवाणेहिं सुचिरं णिज्झइअ अद्धपहे एव्व भाईरही विअ आअच्छन्ती जधा भअवदा विसमलोअणेण तधा तिधा किदा सत्ती । [ततो देव, कुमारवृषसेनेनाऽऽकर्णपूरितैर्निशितक्षुरप्रवाणैः सुचिरं निध्यायाऽर्धपथ एव भागीरथीवाऽऽगच्छन्ती यथा भगवता विषमलोचनेन तथा त्रिधा कृता शक्तिः ।]

दुर्योधनः—साधु वृषसेन, साधु । ततस्ततः ।

सुन्दरकः—तदो अ देव ! एदस्सिं अन्तले किदकलकलमुहरेण वीरलोअसाहुवादेण अन्तरिदो समरतूरणिग्घोसो । सिद्धचालणगणविमुक्ककुसुमप्पअरेण घच्छादिदं समालांगणम् । [ततश्च देव ! एतस्मिन्नन्तरे कृतकलकलमुखरेण

सुन्दरकः—आकर्णपूरितैः = कर्णान्तिकृष्टैः (कानों तक खींचे) । निशितक्षुरप्रवाणैः—निशितैः = तीक्ष्णैः क्षुरप्रवत् = घासच्छेदनास्त्रवत् सफलकबाणैः (पैने खुरपी जैसे चौड़े फलक वाले बाणों से) । सुचिरम् = बहुकालपर्यन्तम् (बहुत देर तक) । निध्याय = चिन्तयित्वा (सोचकर) अर्द्धपथ एव = मध्यमार्गमेव (बीच में ही) आगच्छन्ती = आयान्ती (आती हुई) । भागीरथी = जाह्नवी इव (गंगा की भाँति) । यथा = येन प्रकारेण भगवता विषमलोचनेन—विषमानि = विषमसंख्यकानि त्रीणि लोचनानि = नयनानि सन्ति यस्य तथाविधेन = त्रिलोचनेन (भगवान शिव ने) त्रिधा = त्रिषु भागेषु कृता = विहिता तथा शक्तिः = शक्त्यस्त्रमपि त्रिधा खण्डितम् । (तीन टुकड़े कर दिये) ।

सुन्दरकः—अन्तरे = मध्ये । कृतकलकलमुखरेण = कृतकोलाहलध्वनिना ।

दुर्योधन --(दुःख के सहित) तदनन्तर क्या हुआ ?

सुन्दरक--राजन् ! तब कुमार वृषसेन ने थोड़ी देर ध्यान करके, कान पर्यन्त प्रत्यञ्चा खींच पैने खुर्पी के समान फाल वाले बाणों से बीच में ही उस शक्ति के तीन टुकड़े उसी प्रकार कर दिये जैसे त्रिनेत्री भगवान् शिव ने बीच में ही भागीरथी गंगा को तीन भागों में बाँट दिया था ।

दुर्योधन—शाबास वृषसेन ! शाबास । फिर क्या हुआ ?

सुन्दरक—हे राजन् ! (तदनन्तर) इसी बीच में वीरों द्वारा दिये गये साधुवाद

टिप्पणी --अत्यन्त तीव्रता से ब्रह्म-कमण्डलु से बहकर आती भागीरथी गंगा को भगवान् शिव ने अपने शिर पर धारण कर तीन भागों में विभक्त कर दिया था । इनमें स्वर्ग में बहने वाली आकाशगंगा (मन्दाकिनी), भूतल पर बहने वाली भागीरथी तथा शिव के जटाजूट में विचरण करने वाली भ्रान्त गंगा कहलाई । इसी कारण गंगा को त्रिपथगा भी कहा जाता है ।

वीरलोकसाधुवादेनाऽन्तरितः समरतूर्यनिर्घोषः । सिद्धचारणगणविमुक्तकुसुम-प्रकरेण प्रच्छादितं समराङ्गणम् ।]

दुर्योधनः—अहो ! बालस्य पराक्रमः । ततस्ततः ।

सुन्दरकः—तदो अ देव ! भणिअं सामिणा अङ्गराएण—'भो वीर विकोदल ! असमत्तो तुह मह वि समलव्वावारो । ता अणुमण्ण मं मुहुत्तअम् । पेक्खामहे दाव मह वस्सस्स तुह भादुणो अ धणुव्वेदविद्दाचउरत्तणम् । तुह वि एदं पेक्खणिज्जं' त्ति । [ततश्च देव ! भणितं च स्वामिनाऽङ्गराजेन—'भो वीर वृकोदर ! असमाप्तस्तव ममापि समरव्यापारः । तदनुमन्यस्व मां मुहूर्तम् । प्रेक्षावहे तावत्मम वत्सस्य तव भ्रातुश्च धनुर्वेदविद्याचतुरत्वम् । तवाऽप्येतत्प्रेक्षणीयम्' इति ।]

वीरलोकसाधुवादेन = वीरजनप्रशंसाकथनेन (वीरों की शाबासी कहने से) । समरतूर्यघोषः = युद्धवाद्यनादः (रणभेरी का घोष) । अन्तरितः = तिरोहितः (गायब हो गया) । सिद्धचारणगणविमुक्तकुसुमप्रकरेण—सिद्धानाम् चरणानाञ्च गणैः = सिद्धचारणयूथैः (सिद्धों तथा चारणों के झुण्डों द्वारा) मुक्तानाम् = त्यक्तानाम् कुसुमानाम् = सुमनानाम् प्रकरः=समूहस्तस्मिन् (छोड़े—फेंके—गये फूलों के ढेर में) । समराङ्गणम् = रणक्षेत्रम् । प्रच्छादितम् = व्यापृतम् (ढँक गया) ।

दुर्योधनः—बालस्य = शिशोः वृषसेनस्य । पराक्रमः = रणकौशलम् । अहो = आश्चर्येऽव्ययम् ।

सुन्दरकः—स्वामिना = नृपेण । अङ्गराजेन = कर्णेन । भणितम्=कथितम् । (नृप कर्ण ने कहा) । असमाप्तः = अपूर्णः (अधूरा) । समरव्यापारः = युद्धकर्म । तत् = अतः । मुहूर्त्तम् = क्षणमात्रम् । माम् = अङ्गराजम् । अनुमन्यस्व = अनुमतिं देहि । तावत् = किञ्चित्कालम् । मम वत्सस्य = ममात्मजस्य वृषसेनस्य (मेरे पुत्र वृषसेन का) तव भ्रातुं = त्वद्वन्धोः अर्जुनस्य च (और तुम्हारे भाई

(शाबासी) के कोलाहल से युद्ध की वाद्य ध्वनि छिप गई । सिद्ध चारणों के समूह द्वारा बरसाये गये फूलों के ढेर से रणस्थल आच्छादित हो गया ।

दुर्योधन—धन्य है बालक का पराक्रम ! तदनन्तर क्या हुआ ?

सुन्दरक—हे देव ! तब नृप अंगराज ने कहा—हे वीर वृकोदर ! तुम्हारा और हमारा युद्ध तो अभी समाप्त ही नहीं हुआ है । अतः क्षण भर को मुझे (युद्ध रोकने की) अनुमति दो । थोड़ी देर अपने पुत्र (वृषसेन) तथा तुम्हारे भाई (अर्जुन) के धनुर्विद्या कौशल को हम दोनों देख लें । तुम्हें भी यह देखना चाहिये ।

दुर्योधनः—ततस्ततः ।

सुन्दरकः—तदो देव ! विस्समिदाओधनव्वावारा मुहुत्तविस्समिदणिअ-वेराणुबन्धा दुवे वि पेक्खआ जादा भीमसेणांगराआ । [ततो देव ! विश्रमितायोधनव्यापारौ मुहूर्तविश्रमितनिजवैरानुबन्धौ द्वावपि प्रेक्षकौ जातौ भीमसेनाऽङ्गराजौ ।]

दुर्योधनः—(साभिप्रायम्) ततस्ततः ।

सुन्दरकः—तदो अ देव ! एदस्सिं अन्तरे सत्तिखण्डणामरिसिदेण गण्डीविणा एवं भणिअम्—अरे रे दुज्जोहणप्पमुहा—(इत्यर्धोक्तौ लज्जां नाटयति ।) [ततश्च देव ! एतस्मिन्नन्तरे शक्तिखण्डनामर्षितेन गाण्डीविना एवं भणितम्—अरे रे दुर्योधनप्रमुखाः—]

अर्जुन का)। धनुर्वेदविद्याचतुरत्वम्—धनुर्वेदस्य = शस्त्रास्त्र-संचालनस्य विद्यायाम् = ज्ञाने चतुरत्वम् = दाक्षिण्यम् (धनुर्वेद शिक्षा में प्रवीणता) प्रेक्षावहे = अवलोकयाव (हम दोनों देख लें)। तव = भीमस्य अपि (तुम्हें भी) एतत् = अर्जुनवृषसेनयुद्धम् । प्रेक्षणीयम् = द्रष्टव्यम् (देखना चाहिये)।

सुन्दरकः—विश्रमितायोधनव्यापारौ—विश्रमितः = शान्तः आयोधनस्य = युद्धस्य व्यापारः = कर्म याभ्यां तौ (युद्ध कर्म को शान्त किये हुये दोनों—कर्ण तथा भीम) मुहूर्त्तविश्रमितवैरानुबन्धौ—मुहूर्त्तम् = क्षणम् विश्रमितः = उपशान्तः वैरानुबन्धः = शत्रुतासम्बन्धो ययोस्तौ (क्षण भर को जिन दोनों की शत्रुता शान्त हो गई हो) द्वौ = उभौ भीमसेनाङ्गराजौ = वृकोदरकर्णौ अपि (भीम और कर्ण दोनों ही)। प्रेक्षकौ = दर्शकौ जातौ = सम्भूतौ (दोनों दर्शक बन गये)।

दुर्योधनः—साभिप्रायम् = सोत्कण्ठम् (उत्सुकता के साथ)।

सुन्दरकः—एतस्मिन्नन्तरे = अत्रान्तरे (इसी बीच में)। शक्तिखण्डनामर्षि-

---

दुर्योधन—तत्पश्चात् क्या हुआ ?

सुन्दरक—देव ! तब रणकार्य बन्द कर क्षण भर को वैरभाव भुलाकर भीमसेन तथा अंगराज दोनों ही दर्शक (तमाशबीन) बन गये ।

दुर्योधन—(उत्सुकता के साथ) तब फिर क्या हुआ ?

सुन्दरक—हे देव ! इसी अन्तर में शक्ति के टुकड़े हो जाने के कारण क्रुद्ध अर्जुन ने इस प्रकार कहा—अरे रे दुर्योधनादि प्रमुखो !........................। (उस अपूर्ण बात में लज्जा का अभिनय करने लगता है)

दुर्योधनः—सुन्दरक ! कथ्यताम् । परवचनमेतत् ।

सुन्दरकः—सुणादु देवो ! 'अरे दुज्जोहणप्पमुहा कुरुबलसेणापहुवो ! अविणअणोकण्णधार कण्ण ! तुह्मेहिं मह परोक्खं बहुहिं महारहेहिं पडिवारिअ एआई मह पुत्तओ अहिमण्णु व्वावादिदो । अहं उण तुह्माणं पेक्खन्ताणं एव्व एदं कुमालविससेणं सुमरिदव्वसेसं करोमि'त्ति भणिअ सगव्वं आप्फालिदं णेण वज्जणिग्घादघोसभीसणजीआरवं गण्डीवम् । सामिणावि सज्जीकिदं कालपुट्ठम् । [शृणोतु देवः । अरे, दुर्योधनप्रमुखाः कुरुबलसेनाप्रभवः अविनयनौकर्णधार कर्ण ! युष्माभिर्मम परोक्षं बहुभिर्महारथैः परिवृत्यैकाकी मम पुत्रकोऽभिमन्युर्व्यापादितः । अहं पुनर्युष्माकं प्रेक्षमाणानामेवैतं कुमारवृषसेनं

तेन—शक्तिखण्डनेन = शक्तिच्छेदेन अमर्षितः = कुपितस्तेन (शक्ति कट जाने से कुपित) । गाण्डीविना = अर्जुनेन एवम् = इत्थम् (इस प्रकार) भणितम् = उक्तम् (कहा) । अरे रे दुर्योधनप्रमुखाः = अयि भोः दुर्योधनादयमुख्याः (अरे दुर्योधनादि प्रमुखो !) ।

दुर्योधनः—कथ्यताम् = उच्यताम् (कहिये) । एतत् = इदम् । परवचनम्= अन्यत्कथनम् (दूसरे के द्वारा कहा हुआ) ।

सुन्दरकः—दुर्योधनप्रमुखाः—दुर्योधनः = कुरुपतिः प्रमुखः = प्रधानः येषां तत्सम्बुद्धौ । कुरुबलसेनाप्रभवः = कौरवसेनापतयः । अविनयनौकर्णधार !—अविनयरूपया नौः = अन्यायनौका, तस्याः कर्णधारः = नाविकस्तत्सम्बुद्धौ (अविनय-नौका के कर्णधार) कर्ण = अङ्गराज ! युष्माभिः = कर्णादिकौरवपक्षपातिभिः (तुम सबने) मम = मे । परोक्षम् = अप्रत्यक्षम् (पीछे) । बहुभिः = अनेकैः महारथैः = महाभटैः (अनेक महारथियों ने) परिवृत्य = आवृत्य (घेरकर) एकाकी = एकलः (अकेला) मम पुत्रकः = मत्सुतोऽभिमन्युः (मेरा पुत्र अभिमन्यु) । व्यापादितः = मारितः (मार डाला) । अहम् = अर्जुनः । पुनः = भूयः । युष्माकम् = दुर्योधनादीनाम् । प्रेक्षमाणानाम् = दर्शकानाम् एव (तुम लोगों के देखते हुये ही) एतम् = इमम् । कुमारवृषसेनम् = कर्णात्मजम् । स्मर्तव्यशेषम्= स्मर्तव्यः शेषो यस्य सः, तथाविधम् = समाप्तम् करोमि = विदधामि (समाप्त

दुर्योधन—सुन्दरक ! कहो, कहो । यह तो दूसरे का कथन है ।

सुन्दरक—सुनिये राजन् ! "अरे दुर्योधन प्रमुख कौरव सेनाध्यक्षो ! अविनय रूपी नौका के कर्णधार कर्ण ! तुम सबने मेरे परोक्ष में अनेकों महारथियों ने घेर कर अकेला मेरा पुत्र अभिमन्यु मार डाला परन्तु मैं तुम सबके देखते-देखते कुमार वृषसेन को समाप्त

स्मर्तव्यशेषं करोमि।' इति भणित्वा सगर्वमास्फालितमनेन वज्रनिर्घातघोषभीषणजीवारवं गाण्डीवम्। स्वामिनाऽपि सज्जीकृतं कालपृष्ठम्।

दुर्योधनः—(सावहित्थम्) ततस्ततः।

सुन्दरकः—तदो अ देव, पडिसिद्धभीमसेणसमलकम्मालम्भेण गाण्डीविणा विरइदा अङ्गराअविससेणरहकूलंकसाओ दुवे बाणणदीओ। तेहिं वि दुवेहिं अण्णोण्णदंसिदसिक्खाविसेसेहिं अभिजुत्तो सो दुराआरो मज्झमपण्डवो [ततश्च देव! प्रतिषिद्धभीमसेनसमरकर्मारम्भेण गाण्डीविना विरचिते अङ्गराजवृषसेतरथकूलंकषे द्वे बाणनद्यौ। ताभ्यामपि द्वाभ्यामन्योन्यदर्शितशिक्षाविशेषाभ्यामभियुक्तः स दुराचारो मध्यमपाण्डवः।]

कर रहा हूँ)। इति = एवम्। भणित्वा = कथयित्वा सगर्वम् = साहङ्कारम् (अभिमान के साथ)। आस्फालितम् = टङ्कारितम् (फैलाया, खींचा) तेन = अर्जुनेन। वज्रनिर्घातघोषभीषणजीवारवम्—वज्रनिर्घातस्य = कुलिशपातस्य यः घोषस्तेन भीषणम् = भयङ्करम् जीवारवम् = प्रत्यञ्चाध्वनिर्यस्य तम् (वज्रपात जैसी भयंकर डोर की टंकार करने वाले)। गाण्डीवम् = तन्नामकं धनुः। स्वामिना = अङ्गराजेन अपि (अंगराज ने भी) सज्जीकृतम् = सन्नद्धम् (सुधार लिया) कालपृष्ठम् = कालपृष्ठनामकं स्वधनुः।

दुर्योधनः—सावहित्थम् = सभयम् (भय के साथ)।

सुन्दरकः—प्रतिषिद्ध-भीमसेन-समरकर्मारम्भेण—प्रतिषिद्धम् = निषिद्धो भीमसेनस्य समर कर्मारम्भः = रणव्यापारारम्भो येन, तादृशेन (भीमसेन के युद्ध को रुकवा देने वाले) गाण्डीविना = अर्जुनेन। विरचिते = रचिते (बना दीं)। अङ्गराजवृषसेनरथकूलंकषे—अङ्गराजवृषसेनयोः यौ रथौ = स्यन्दने, तावेव कूले ते कषतः = विदार्य प्रवहतः (कर्ण तथा वृषसेन के रथ तटों को फाड़कर बहने वाली)। द्वे = द्विसंख्ये। बाणनद्यौ = शरसरिते (बाणों की दो नदियाँ)।

कर रहा हूँ"। यह कह कर साभिमान उन्होंने वज्रपात शब्द सदृश भयङ्कर शब्द करने वाले गाण्डीव धनुष को टङ्कारा। अङ्गराज ने भी अपना कालपृष्ठ धनुष सुधार लिया।

दुर्योधन—(सभय) फिर क्या हुआ?

सुन्दरक—हे देव! तब भीमसेन के युद्ध कर्म को रोक देने वाले अर्जुन ने अंगराज कर्ण तथा वृषसेन के रथ रूपी तटों पर प्रवाहित होने वाली दो बाण नदियाँ बहा दीं। उन दोनों (कर्ण तथा वृषसेन) ने भी पारस्परिक स्नेह के कारण अपने धनुर्विद्या कौशल के साथ मध्यमपाण्डव दुष्ट अर्जुन पर आक्रमण किया।

दुर्योधनः—ततस्ततः ।

सुन्दरकः—तदो अ देव ! गण्डीविणा ताररसिदजीआणिग्घोसमेत्त-विण्णादबाणवरिसेण तह आअरिदं पत्तिहिं जह ण णहत्तलं, ण सामी, ण रहो, ण धरणी, ण कुमालो, ण केदुवंसो, ण बलाइं, ण सारही, ण तुलंगमा, ण दिसाओ, ण वीरलोओ अ लक्खीअदि । [ततश्च देव, गाण्डीविना ताररसित-ज्यानिर्घोषमात्रविज्ञातवाणवर्षेण तथाऽऽचरितं पत्रिभिर्यथा न नभस्तलं, न स्वामी, न रथो, न धरणी, न कुमारो, न केतुवंशो न बलानि, न सारथिः, न तुरङ्गमा, न दिशो, न वीरलोकश्च लक्ष्यते ।]

दुर्योधनः—(सविस्मयम् ।) ततस्ततः ।

अन्योन्यस्नेहदर्शितशिक्षाविशेषाभ्याम्—अन्योन्यम्=परस्परं स्नेहेन=प्रेम्णा दर्शितः =प्रदर्शितः शिक्षाविशेषः=धनुर्वेदवैशिष्ट्यम् याभ्यां ताभ्याम् (आपस में स्नेह से अपने धनुर्वेद कौशल दिखलाने वालों ने) अभियुक्तः=आक्रान्तः (आक्रमण किया) सः=असौ । दुराचारः=दुष्टः मध्यमपाण्डवः=अर्जुनः ।

सुन्दरकः—ताररसितज्यानिर्घोषमात्रविज्ञातवाणवर्षेण—तारम्=अतिदीर्घम् रसितम्=गर्जनम् यस्याः, तादृशी ज्या=प्रत्यञ्चा, तस्याः निर्घोषमात्रेण विज्ञातम्=सूचितम् बाणवर्षम्=शरवृष्टिः यस्य तादृशेन (जोर से हुई गर्जन वाली प्रत्यञ्चा के टंकार मात्र से बाणों की वर्षा सूचित करने वाले) तथा= तादृशम् । आचरितम्=व्यवहृतम् । पत्रिभिः=बाणैः (बाणों द्वारा) यथा=येन प्रकारेण । न नभस्तलम्=न गगनतलम् । न स्वामी=नैवाङ्गराजः । न रथः= न स्यन्दनम् । न धरणी=न धरा । न कुमारः=नैव वृषसेनः । न केतुवंशः= न रथध्वजदण्डम् । न बलानि=न सेनाः । न सारथिः=न रथवाहकः । न तुरङ्गमाः=न अश्वाः । न दिशः=न काष्ठाः । न वीरलोकः=वीरसमूहः । लक्ष्यते=दृश्यते (दिखलाई पड़ रहा था) ।

दुर्योधनः—साश्चर्यम्=सकौतुकम् (आश्चर्य सहित) ।

दुर्योधन—तदनन्दर ?

सुन्दरक—हे देव ! तदनन्तर जोर का शब्द करने वाली प्रत्यञ्चा के निर्घोषमात्र से बाण-वृष्टि बतलाने वाले अर्जुन ने ऐसा घमासान युद्ध किया कि बाणों से ढंक जाने के कारण गगनतल, अंगराज, रथ, धरणी, कुमार, ध्वजदण्ड, सेनायें, सारथी, घोड़े, दिशायें तथा वीरों का समुदाय कुछ भी दिखलाई नहीं पड़ रहा था ।

दुर्योधन—(आश्चर्य के साथ) तदनन्तर ?

सुन्दरकः—तदो अ देव ! क्खणमेत्तं एव्व अदिक्कन्ते सरवरिसे सहरिस-सिंहणादे पण्डवसेण्णे सविसादमुक्काक्कन्दे कौरवबले समुत्थिदो महन्तो कलअलो हा हदो कुमालविससेणो हा हदो त्ति। [ततश्च देव, क्षणमात्रमेवातिक्रान्ते शरवर्षे सहर्षसिंहनादे पाण्डवसैन्ये सविषादविमुक्ताक्रन्दे कौरवबले समुत्थितो महान् कलकलो 'हा हतः कुमारवृषसेनो हा हत' इति ।]

दुर्योधनः—(सबाष्परोधम्) ततस्ततः ।

सुन्दरकः—तदो देव ! महन्तीए बेलाए पेक्खिअ हदसारहितुलंगं लूणादवत्तचावचामरकेदुवंसं सग्गप्पब्भट्टं विअ सुलकुमालं एक्केण ज्जेव हिअअमम्मभेदिणा सिलीमुहेण भिण्णदेहं रहमज्झे पल्लत्थं कुमालं प्पेक्खे । [ततो देव, महत्या वेलया प्रेक्ष्य हतसारथितुरंगं लूनातपत्रचापचामरकेतुवंशं स्वर्गप्रभ्रष्टमिव सुरकुमारमेकेनैव हृदयमर्मभेदिना शिलीमुखेन भिन्नदेहं रथमध्ये पर्यस्तं कुमारं प्रेक्षे ।]

सुन्दरकः—क्षणमात्रम् = निमिषमात्रम् (थोड़ी देर को) अतिक्रान्ते = व्यतीते । शरवर्षे = बाणवर्षे (बाणवर्षा समाप्त होने पर) सहर्षसिंहनादे = सानन्दसिंहगर्जने । पाण्डवसैन्ये = पाण्डवदले । सविषादमुक्ताक्रन्दे—सविषादम् = सखेदम् मुक्तः = आरब्धः आक्रन्दः = क्रन्दनं येन तस्मिन् (दुःख के सहित चिल्लाते) । कौरवबले = धार्तराष्ट्रसैन्ये (कौरवों की सेना में) । समुत्थितः = सञ्जातः (उठा) महान्कलकलः = अतिकोलाहलः (महान् कोलाहल) । हतः = मारितः ।

दुर्योधनः—सबाष्परोधम्—बाष्पानाम् = अश्रूणाम् रोधः = अवरोधः, तेन सहितम् (आँसू रोककर) ।

सुन्दरकः—हतसारथितुरगम्—हतः सारथिः तुरङ्गाश्च यस्य तादृशम् (जिसका सारथी तथा घोड़े, सब मार दिये गये हों) । लूनातपत्रचापचामरकेतुवंशम्—लूनम् = छिन्नम् आतपत्रम् = राजछत्रम् चापम् = धनुः चामरम् केतुवंशः

सुन्दरक—हे राजन् ! तदनन्तर क्षणमात्र में ही बाणवर्षा समाप्त होने पर, पाण्डव दल में सहर्ष सिंहनाद तथा कौरवदल में सविषाद महान् हाहाकार उठ खड़ा हुआ—हाय मारा गया, कुमार वृषसेन मारा गया ।

दुर्योधन—(रोते हुये) फिर क्या हुआ ?

सुन्दरक—हे देव ! तब सारथी व घोड़ों से रहित, आतपत्र-चाप-चामर तथा ध्वज-दण्डहीन स्वर्ग से गिरे देवकुमार के समान एक ही हृदय मर्मभेदी बाणद्वार छिन्न शरीर कुमार वृषसेन को रथ में पड़ा हुआ मैंने देखा ।

दुर्योधनः—सुन्दरक ! अलमिदानीं कथितेन । (सास्रम्) हा वत्स वृषसेन ! क्वासि ? देहि मे प्रतिवचनम् । (इति मोहमुपगतः)

सूतः—समाश्वसिहि, समाश्वसिहि ।

दुर्योधनः—(उत्थाय सकरुणम्) हा वत्स वृषसेन ! हा मदङ्कदुर्ललित ! हा मदाज्ञाकारक ! हा गदायुद्धप्रिय ! हा शौर्यसागर ! हा राधेयकुलप्ररोह ! हा प्रियदर्शन ! हा दुःशासननिर्विशेष ! हा सर्वगुरुवत्सल ! प्रयच्छ मे प्रतिवचनम् ।

=ध्वजदण्डश्च यस्य तम् = (छत्र-चाप-चामर तथा ध्वजदण्ड छिन्न) । स्वर्गप्रभृष्टम् इव—स्वर्गात् प्रभृष्टम् = पतितम् इव (जैसे स्वर्ग से गिरे) सुरकुमारकम् = देवपुत्रकम् (देवकुमार के समान) एकेन = अद्वितीयेन हृदयसमर्मभेदिना—हृदयस्य मर्म = प्राणस्थानम् भिनत्तीति तेन (हृदयमर्म भेदी) शिलीमुखेन = वाणेन (वाण द्वारा) भिन्नदेहम् = छिन्नशरीरम् रथमध्ये = स्यन्दनान्तरे (रथ के अन्दर) । पर्यस्तम् = पतितम् (पड़ा हुआ) । प्रेक्षे = अवलोकयामास (देखा) ।

दुर्योधनः—इदानीम् = साम्प्रतम् (अब) कथितेन=कथनेन । अलम्=निषेधेऽव्ययम् । सास्रम् = साश्रुः (रोते हुये) । क्व = कुत्र (कहाँ) । प्रतिवचनम् = प्रत्युत्तरम् (जवाब) देहि = प्रयच्छ (दो) । मोहम् = मूर्च्छाम् उपगतः = प्राप्तः (बेहोश हो गया) ।

सूतः—समाश्वसिहि = धैर्यं धारय (धीरज रखो) ।

दुर्योधनः—राधेयकुलप्ररोह—राधेयस्य = राधासम्बन्धिनः कुलस्य = वंशस्य प्ररोहः = अङ्कुरस्तत्सम्बुद्धौ (हे राधेयकुलाङ्कुर) । हा प्रियदर्शन ! = हा नयनाभिराम ! दुःशासननिर्विशेष !—दुःशासनेन = दुःशासनापेक्षया निर्गतः विशेषः = वैशिष्ठ्यम् यस्मात् सः, तत्सम्बुद्धौ । प्रयच्छ = देहि (दो) । प्रतिवचनम् = प्रत्युत्तरम् ।

दुर्योधन—सुन्दरक ! अब कहना वन्द करो । (रोते हुए) हा वत्स वृषसेन ! कहाँ हो, मुझे प्रत्युत्तर दो । (यह कहकर मूर्च्छित हो जाता है) ।

सूत—धैर्य धारण करो, धैर्य धारण करो ।

दुर्योधन—(उठकर, दुःखी होकर) हा वत्स वृषसेन ! हा मेरी गोद में कठिनता से पले । हा मेरी आज्ञा का पालन करने वाले ! हा गदायुद्ध-प्रिय ! हा पराक्रम के सागर ! हा राधेयकुलाङ्कुर ! हा प्रियदर्शन ! हा दुःशासन से भी अधिक प्रिय ! हा सर्व गुरुजनों के प्रिय ! मुझे प्रत्युत्तर दो ।

पर्याप्तनेत्रमचिरोदितचन्द्रकान्त-
मुद्भिद्यमाननवयौवनरम्यशोभम् ।
प्राणापहारपरिवर्तितदृष्टि दृष्टं
कर्णेन तत्कथमिवाऽऽननपङ्कजं ते ॥ १० ॥

सूतः—आयुष्मन् ! अलमत्यन्तदुःखावेगेन ।

दुर्योधनः—सूत ! पुण्यवन्तो हि दुःखभाजो भवन्ति । अस्माकं पुनः—

अन्वयः—कर्णेन ते पर्याप्तनेत्रम् अचिरोदितचन्द्रकान्तम् उद्भिद्यमानयौवन-रम्यशोभम् तत् (ते) आननपङ्कजम् प्राणापहारपरिवर्तितदृष्टिः (सत्) कथम् इव दृष्टम् ॥ १० ॥

पर्याप्तेति । कर्णेन = अंगराजेन । ते = तव । पर्याप्तनेत्रम्—पर्याप्ते = सुविशाले नेत्रे = नयने यस्मिस्तथाविधम् (बड़ी-बड़ी आँखोंवाले) अचिरोदितचन्द्रकान्तम्—अचिरम् = तत्कालम् उदितः = निर्गतः चन्द्रः = सोमः स इव कान्तम् = मनोरमम् (शीघ्र उदित चन्द्रमा के समान मनोरम)। उद्भिद्यमाननवयौवनरम्यशोभम्—उद्भिद्यमानम् = उद्गच्छत् यन्नवं = नूतनम् यौवनम् = तारुण्यम्, तेन रम्या = रमणीया शोभा = सुन्दरता यस्मिस्तम् (उदित हो रहे नवीन यौवन से रम्य शोभा वाले)। तत् = तादृशम् आननपङ्कजम्—आननम् = मुखमेव पङ्कजम् = कमलम् (मुखकमल को) प्राणापहारपरिवर्तितदृष्टिः—प्राणानाम् = असूनाम् अपहारेण = मृत्युना परिवर्तिता = विपरीता दृष्टिः = लोचनम् यत्र तत् (मारे जाने पर विपरीत दिखलाई पड़ने वाला) कथम् इव = केन प्रकारेण (किस प्रकार)। दृष्टम् = अवलोकितम् (देख पाया होगा)। अत्रोपमालङ्कारः । वसन्ततिलका-वृत्तम् ॥ १० ॥

सूतः—आयुष्मन्=चिरजीविन् । अत्यन्तम्=महत् । दुःखावेगेन=खेदायासेन ।

दुर्योधनः—हि = यतः । पुण्यवन्तः = सुकृतिनः (पुण्य करने वाले)। दुःख-भाजः—दुःखं खेदं भजन्तीति (दुःखी)।

कर्ण ने तुम्हारा बड़ी-बड़ी आँखों वाला, शीघ्र उदित चन्द्रमा के समान मनोरम, प्रस्फुटित हो रहे नवयौवन से रम्यशोभायुक्त व मर जाने पर विपरीत दिखलाई पड़ रहा मुख किस प्रकार देख पाया होगा ॥ १० ॥

सूत—आयुष्मन् ! अत्यन्त दुःख मत करो ।

दुर्योधन—हे सूत ! पुण्यवान् व्यक्ति ही दुःखभागी होते हैं । फिर—

प्रत्यक्षं हतबन्धूनामेतत्परिभवाग्निना ।
हृदयं दह्यतेऽत्यर्थं कुतो दुःखं कुतो व्यथा ॥ ११ ॥

(इति मोहमुपगतः ।)

सूतः—समाश्वसितु समाश्वसितु महाराजः । (इति पटान्तेन वीजयति ।)

दुर्योधनः—(लब्धसंज्ञः ।) भद्र सुन्दरक ! ततो वयस्येन किं प्रतिपन्नमङ्गराजेन ।

अन्वयः—प्रत्यक्षं हतबन्धूनाम् परिभवाग्निना एतत् हृदयम् अत्यर्थं दह्यते कुतः दु खम् कुतः व्यथा ॥ ११ ॥

प्रत्यक्षमिति । प्रत्यक्षम्=सम्मुखम् (सामने ही) हतबन्धूनाम्—हताः=मारिताः बान्धवाः येषां तेषाम् (जिनके बन्धु बान्धव मार डाले गये हैं ऐसे हमारा) परिभवाग्निना—परिभवः = पराभवः एवाग्निस्तेन (पराभव रूपी अग्नि से) एतत् = इदम् (यह) हृदयम् = चेतः (हृदय) अत्यर्थम् = अत्यन्तम् । दह्यते = दाहवत् क्रियते (जलाया जा रहा है) । (अस्माद्धेतोः) कुतः = कस्मात् दुःखम् = खेदम् (कहाँ से दुःख) तथा कुतः व्यथा = पीड़ा । (दुःख तथा पीड़ा कहाँ से संभव है) अत्र रूपकालङ्कारः । पथ्यावक्त्रं वृत्तम् ॥ ११ ॥

सूतः—समाश्वसितु = धैर्यं धारयतु (धीरज धारण कीजिये) । पटान्तेन = वस्त्रप्रान्तेन (कपड़े के छोर से) । वीजयति=व्यजनं करोति (पंखा झलता है) ।

दुर्योधनः—लब्धसंज्ञः—लब्धा संज्ञा येन सः = प्राप्तसंज्ञः (होश में आया हुआ) । वयस्येन = मित्रेण । अंगराजेन = कर्णेन । किं प्रतिपन्नम् = किमङ्गीकृतम् (क्या निश्चय किया) ।

आँखों के सामने ही मारे गये भाई बान्धवों वाले हम लोगों का पराभव रूपी अग्नि से यह हृदय अत्यन्त जला जा रहा है । ऐसे में दुःख और पीड़ा की बात ही क्या ॥ ११ ॥

(यह कहकर मूर्च्छित हो जाता है)

सूत—महाराज धीरज रखें, धीरज रखें । (यह कहकर वस्त्र के छोर से वायु करता है)

दुर्योधन—(होश में आकर) भाई सुन्दरक ! तब मित्र कर्ण ने क्या निश्चय किया ?

सुन्दरकः—तदो अ देव ! तधाविधस्स पुत्तस्स दंसणेण संगलिदं अस्सुजादं उज्झिअ अणवेक्खिदपरप्पहरणाभिजोएण सामिणा अभिजुत्तो धणंजओ। तं अ सुतवहामरिसुद्दीविदपरक्कमं विमुक्कजीविदासं तह परिक्कमन्तं पेक्खिअ णउलसहदेवपञ्चालप्पमुहेहिं अन्तरिदो घणंजअस्स रहवरो। [ततश्च देव ! तथाविधस्य पुत्रस्य दर्शनेन संगलितमश्रुजातमुज्झित्वाऽनपेक्षितपरप्रहरणाभियोगेन स्वामिनाऽभियुक्तो धनञ्जयः। तं च सुतवधामर्षोद्दीपितपराक्रमं विमुक्तजीविताशं तथा परिक्रामन्तं प्रेक्ष्य नकुलसहदेवपाञ्चालप्रमुखैरन्तरितो धनञ्जयस्य रथवरः।]

दुर्योधनः—ततस्ततः।

सुन्दरकः—तथाविधस्य = प्रत्यक्षहतस्य (आँखों के सामने ही मारे गये)। पुत्रस्य=सुतस्य वृषसेनस्य (पुत्र वृषसेन के) दर्शनेन=अवलोकनेन (देखने से)। संगलितम्=सम्पतितम् (गिर रहे) अश्रुजातम्=नयनजलम्। उज्झित्वा = त्यक्त्वा (छोड़कर, पोंछकर) अनपेक्षितपरप्रहरणाभियोगेन—अनपेक्षिताः = अगणिताः परेषाम् = शत्रूणाम् प्रहरणानाम् = आयुधानाम् अभियोगाः = उद्यमाः येन तथाविधेन (शत्रुओं के आयुधों की परवाह न किये हुये) स्वामिना = प्रभुणा (महाराज कर्ण से)। धनञ्जयः = अर्जुनः। अभियुक्तः = आक्रान्तः (आक्रमण किया गया)। सुतवधामर्षोद्दीपितपराक्रमम्—सुतस्य वधः=पुत्रवधस्तेन योऽमर्षः = क्रोधः, तेनोद्दीपितः=वृद्धिगतः पराक्रमः=बलम् यस्य सः, तम् (पुत्रवध से उत्पन्न क्रोध से बढ़े पराक्रम वाले)। विमुक्तजीविताशम्—विमुक्ता = त्यक्ता जीविताशा= जीवनाभिलाषा येन सः तम् (जीवन की आशा का परित्याग किये हुये)। तथा = तादृशम् (उस प्रकार भयङ्कर)। परिक्रामन्तम् = प्रहरन्तम् (आक्रमण करते हुये) प्रेक्ष्य = अवलोक्य (देखकर) नकुलसहदेवपाञ्चालप्रमुखैः = नकुलसहदेवपाञ्चालप्रभृतिमुख्यैः (नकुल-सहदेव-पाञ्चाल आदि प्रमुखों द्वारा) अन्तरितः = आवृतः (घेर लिया)।

सुन्दरक—तदनन्तर हे देव ! उस प्रकार आंखों के सामने ही पुत्र को मारा गया देखकर बह रहे आँसुओं को पोंछकर शत्रुओं के आयुधों की परवाह न कर महाराज कर्ण ने अर्जुन पर आक्रमण किया। पुत्रवध से क्रोध के कारण बढ़े पराक्रम वाले तथा जीवित रहने से निराश कर्ण को उस प्रकार आक्रमण करते देख नकुल-सहदेव, पाञ्चाल आदि वीरों ने अर्जुन के रथ को चारों ओर से घेर लिया।

दुर्योधन—तदनन्तर क्या हुआ ?

सुन्दरकः—तदो देव ! अज्जुण चावमहाप्पलअपओहरणिस्स रिदसरधारासहस्सेहिं पूरिदेसु दिसामुहेसु सल्लेण भणिदो सामी अंगराओ जहा—'अंगिराअ ! हदतुलगंमो मथिद चक्कणेमिकूवरो दे रहो। ता ण जुतं भीमाज्जुणेहिं अहिजोदिअम्।' त्ति भणिअ पडिवट्टिदो रहो, ओदारिदो सामी सन्दणादो बहुप्पहारं अ समस्सासिदो। [ततो देव ! अर्जुनचापमहाप्रलयपयोधर-निःसृतशरधारासहस्र-पूरितेषु दिशामुखेषु शल्येन भणितः स्वाम्यङ्गराजो यथा—'अङ्गराज ! हततुरङ्गमो मथितचक्रनेमिकूबरस्ते रथः। तन्न युक्तं भीमार्जुनाभ्यामभियोक्तुम्।' इति भणित्वा परिवर्तितो रथोऽवतारितः स्वामी स्यन्दनाद् बहुप्रकारं च समाश्वासितः।]

दुर्योधनः—ततस्ततः।

सुन्दरकः—ततः = तदनन्तरम्। अर्जुनचापमहाप्रलयपयोधरनिःसृतिशरधारासहस्रपूरितेषु—अर्जुनस्य चापः= धनञ्जयधनुः स एव महाप्रलयपयोधरः=महाप्रलयकालीनघनः, तस्मात् निःसृताः याः शरधाराः = वाणधारास्तासां यत्सहस्रम् तैः पूरितानि, तेषु (अर्जुन के धनुष रूपी महाप्रलयपयोधर से निकली हजारों वाणधाराओं से पूरित)। दिशामुखेषु = काष्ठामुखेषु (दिशाओं में)। शल्येन = शल्यनृपेण। भणितः=कथितः (कहा)। हततुरङ्गमः—हताः=नष्टास्तुरङ्गमाः = अश्वाः यस्य सः (नष्ट हुये घोड़ों वाला)। मथितचक्रमेमिकूबरः—मथितौ = विनष्टौ चक्रनेमिः कूवरः = युगन्धरश्च यस्य सः (जिस रथ की धुरी तथा कूवर नष्ट हो गया है)। युक्तम् = उचितम्। भीमार्जुनाभ्याम्—भीमेन = वृकोदरेण अर्जुनेन = धनञ्जयेन सह, (भीम तथा अर्जुन के साथ)। अभियोक्तुम् = युद्धं कर्त्तुम् (युद्ध करने को)। इति = एवम्। भणित्वा = कथयित्वा (कहकर)। परिवर्तितः = परावर्तितः (लौटा दिया)। स्यन्दनात् = रथात् (रथ से) स्वामी = कर्णः अवतारितः=अवतरणं कारितः (उतार लिया)। बहुप्रकारम् = अनेकविधम् (अनेक प्रकार)। समाश्वासितः=धैर्यं धारितः (ढाढस बँधाया)।

सुन्दरक—हे देव ! तव अर्जुन के धनुष रूपी महाप्रलय कालिक मेघ से निकली हजारों बाणधाराओं से दिशाओं के भर जाने पर शल्य ने कर्ण से कहा—"हे अंगराज ! तुम्हारे रथ के घोड़े मारे जा चुके हैं, रथ की धुरी तथा कूबर भी नष्ट हो चुके हैं। अतः भीमसेन एवं अर्जुन के साथ युद्ध करना ठीक नहीं है।" यह कह कर रथ लौटा दिया तथा स्वामी अंगराज को रथ से उतार कर अनेक प्रकार से धैर्य दिलाया।

दुर्योधन—फिर क्या हुआ ?

सुन्दरकः—तदो अ समिणा सुइरं विलपिअ परिअणोवणीदं अण्णं रहं पेक्खिअ दीहं निस्ससिअ मइ दिट्ठी विणिक्खिविदा। 'सुन्दरअ! एहि'त्ति भणिदं अ। तदो अहं उवगदो सामिसमीवम्। तदो अवणीअ सीसठ्ठाणादो पट्टिअंसरीर संगलिदेहिं सोणिअबिदुहिं दिद्धवअणं बाणं कदुअ अहिलिहिअ प्पेसिदो देवस्स सन्देसो। [ततश्च स्वाभिना सुचिरं विलप्य परिजनोपनीतमन्यं रथं प्रेक्ष्य दीर्घं निः-श्वस्य मयि दृष्टिर्विनिक्षिप्ता—'सुन्दरक! एही'ति भणितं च। ततोऽहमुपगतः स्वामिसमीपम्। ततोऽपनीय शीर्षस्थानात् पट्टिकां शरीरसंगलितैः शोणितबिन्दुभिर्दिग्धवदनं बाणं कृत्वाऽभिलिख्य प्रेषितो देवस्य सन्देशः।]

(इति पट्टिकामर्पयति दुर्योधनो गृहीत्वा वाचयति)

सुन्दरकः—स्वामिना = कर्णेन। सुचिरम् = बहुकालम् (बहुत देर तक)। विलप्य = रोदनं कृत्वा (विलाप कर)। परिजनोपनीतम्—परिजनेन = सेवकेनोपनीतम् = प्रापितम् (सेवक द्वारा लाये गये)। अन्यम् = अपरम् (दूसरे) रथम् = स्यन्दनम् (रथ को)। प्रेक्ष्य = दृष्ट्वा (देखकर) दीर्घम् = गुरुम् निःश्वस्य = निःश्वसनं कृत्वा (लम्बी साँस लेकर)। मयि = सुन्दरके (मेरे ऊपर) दृष्टिः = चक्षुः। विनिक्षिप्ता = प्रक्षिप्ता (फेंकी)। एहि = आगच्छ (आओ)। इति = एवम्। भणितम् = कथितम् (ऐसा कहा)। स्वामिसमीपम् स्वामिनः = कर्णस्य समीपम् = पार्श्वम् उपगतः = अगच्छम् (गया)। शीर्षस्थानात् = शिरःस्थानात् (शिर पर के) पट्टिकाम् = व्रणबन्धनम् (पट्टी को)। अपनीय = दूरीकृत्य (हटाकर)। शोणितबिन्दुभिः = रक्तबिन्दुभिः (रक्त बिन्दुओं से)। दिग्धवदनम्—दिग्धम् = लिप्तम् वदनम् = शरीरम् यस्य तम् (डुबोकर) बाणम् = शरम् (बाण को)। कृत्वा = विधाय (करके) अभिलिख्य = लिखित्वा (लिखकर)। देवस्य = भवतः (आपका) सन्देशः = समाचारः प्रेषितः = प्रहितः (भेजा)।

पट्टिकाम् = व्रणबन्धनम् (पट्टी) अर्पयति = ददाति (देता है)। गृहीत्वा = अङ्गीकृत्य (लेकर)। वाचयति = पठति (पढ़ता है)।

सुन्दरक—तब स्वामी ने बड़ी देर तक विलाप कर सेवक द्वारा लाये गये दूसरे रथ को देखकर लम्बी श्वाँस खींचकर मेरी ओर दृष्टि डाली तथा—'सुन्दरक, आओ'। ऐसा कहा। तब मैं स्वामी के पास गया। तदनन्तर उन्होंने शिर पर से घाव की पट्टी को हटा कर टपक रहे रक्त बिन्दुओं से बाण भिगोकर आप के लिए सन्देश लिखकर भेजा—

(यह कहकर चिट्ठी देता है। दुर्योधन लेकर बाँचता है) यथा—

यथा—'स्वस्ति, महाराजदुर्योधनं समराङ्गणात्कर्णं एतद् वृत्तं कण्ठे गाढमालिङ्ग्य विज्ञापयति—

"अस्त्रग्रामविधौ कृती न समरेष्वस्याऽस्ति तुल्यं पुमान् ।
भ्रातृभ्योऽपि ममाऽधिकोऽयममुना जेयाः पृथासूनवः ।"
यत्सम्भावित इत्यहं न च हतो दुःशासनारिर्मया
त्वं दुःखप्रतिकारमेहि भुजयोर्वीर्येण बाष्पेण वा ॥ १२ ॥

समराङ्गणात् = युद्धस्थलात् । कण्ठे = गलदेशे । गाढम् = दृढम् । विज्ञापयति = निवेदयति ।

अन्वयः—"अयम् अस्त्रग्रामविधौ कृती, समरेषु अस्य तुल्यः पुमान् न अस्ति, भ्रातृभ्यः अपि अयं मम अधिकः, अमुना पृथासूनवः जेयाः" इति यत् अहम् (त्वया) सम्भावितः, दुःशासनारिः च मया न हतः, (तत्) त्वम्, भुजयोः वीर्येण, बाष्पेन वा दुःख-प्रतिकारम् एहि ॥ १२ ॥

अस्त्रग्रामेति—अयम् = एषः (यह) अस्त्रग्रामविधौ–अस्त्राणाम्=आयुधानाम् ग्राम = समूहः, तस्य विधौ = विधाने (अस्त्रसमूह के प्रयोग में) कृती=कुशलः । समरेषु = रणेषु (युद्ध में) । अस्य = एतस्य तुल्यः = समानः । पुमान् = पुरुषः नास्ति (इसकी बराबरी का मनुष्य नहीं है) । भ्रातृभ्यः = बन्धुभ्यः अपि (भाई बान्धवों से भी) । अयम् = एषः । मम = मे । अधिकः = विशिष्टः (बढ़कर है) । अमुना = एतेन । पृथासूनवः = कुन्तीपुत्राः पाण्डवाः । जेयाः = जेतुम् शक्याः (जीते जा सकते हैं) । इति = इत्थम् अहम् = कर्णः । (त्वया) सम्भावितः = अनुमितः (सम्भावना की थी) । दुःशासनारिः—दुःशासनस्य अरिः = शत्रुः । मया = कर्णेन । न हतः = न मारितः (नहीं मार पाया) । अतः त्वम् भुजयोः = बाह्वोः वीर्येण = पराक्रमेण । बाष्पेन = अश्रुणा वा । दुःखप्रतिकारम् = प्रतियातनम् । एहि = गच्छ । शार्दूल-विक्रीडितं वृत्तम् ॥ १२ ॥

'स्वस्ति, महाराज दुर्योधन को युद्धभूमि से कर्ण गाढ आलिंगन कर यह निवेदन करता है कि—

'यह (कर्ण) अस्त्रप्रहार में बड़ा कुशल है, युद्ध में इसकी तुलना का दूसरा व्यक्ति नहीं है । भाइयों से भी यह मुझे अधिक प्रिय है । इसी द्वारा कुन्तीपुत्र पाण्डवों को जीता जा सकता है ।' इस प्रकार आपने मुझसे सम्भावना की थी परन्तु मैं दुःशासन के शत्रु का वध न कर सका । अतः (अब) आप स्वयम् अपनी भुजाओं के पराक्रम से अथवा आँसू बहाकर इस दुःख का प्रतिकार करें ॥ १२ ॥

दुर्योधनः—वयस्य कर्ण ! किमिदं भ्रातृशतवधदुःखितं मामपरेण वाक्शल्येन घट्टयसि ? भद्र सुन्दरक ! अथेदानीं किमारम्भोऽङ्गराजः ?

सुन्दरकः—देव, अज्ज वि आरम्भो पुच्छीअदि । अवणीदसरीरावरणो अप्पवहकिदणिच्चओ पुणो वि पत्थेण सह समलं मग्गदि । [देव ! अद्याऽप्यारम्भः पृच्छ्यते ! अपनीतशरीरावरण आत्मवधकृतनिश्चयः पुनरपि पार्थेन सह समरं मार्गयते ।]

दुर्योधनः—(आवेगादासनादुत्तिष्ठन् ।) सूत, रथमुपनय ! सुन्दरक ! त्वमपि मद्वचनात् त्वरिततरं गत्वा वयस्यमङ्गराजं प्रतिबोधय । अलमति-

---

दुर्योधनः—वयस्य कर्ण=हे मित्र कर्ण ! भ्रातृशतवधदुःखितम्—भ्रातृशतस्य=शतवन्धूनाम् बधेन=घातेन दुःखितम्=खिन्नम् (सौ भाइयों के मारे जाने से दुःखी) माम् = दुर्योधनम् (मुझे) । अपरेण = अन्येन (दूसरे) । वाक्शल्येन = वाक्कण्टकेन (वाणीरूपी काँटे से) घट्टयसि=योजयसि, पीडयसि वा । इदानीम्=साम्प्रतम् (इस समय) । अङ्गराजः = कर्णः । किमारम्भः—क आरम्भो यस्य सः (क्या कर रहे हैं) ।

सुन्दरकः—देव !=राजन् ! अद्यापि=सम्प्रत्यपि (अब भी) पृच्छ्यते = पृच्छा क्रियते (पूछा जा रहा है) । अपनीतशरीरावरणः—अपनीतम् = दूरीकृतम् शरीरस्य = देहस्य आवरणम् = कवचम् येन सः (शरीर से कवच उतार कर) । आत्मवधकृतनिश्चयः—आत्मवधस्य = निजहत्यायाः कृतः = विहितः निश्चयः = संकल्पः येन सः (आत्महत्या का निश्चय किये हुये) । पुनरपि = भूयोऽपि । पार्थेन सह = अर्जुनेन साकम् । समरम् = रणम् । मार्गयते = अन्वेषयति (ढूँढ रहे हैं) ।

दुर्योधनः—आवेगात् = उद्वेगात् (जोश से) आसनात् = स्थानात् (आसन से) उत्तिष्ठन् = उद्गच्छन् (उठते हुये) । उपनय = आहर (ले आओ) । मद्वचनात्=मम कथनात् (मेरी आज्ञा से) । त्वरिततरम्=अतिशीघ्रम् (तुरन्त) ।

दुर्योधनः—मित्र कर्ण ! यह सौ भाइयों के वध से दुःखी मुझे वाक्शल्य द्वारा और क्यों पीडित कर रहे हो ? भद्र सुन्दरक ! अब अङ्गराज क्या कर रहे हैं ?

सुन्दरक—हे देव ! आज भी आरम्भ पूँछ रहे है ! शरीर से कवच उतार कर आत्मवध का निश्चय किये हुये (वह) पुनः पार्थ के साथ युद्ध करने की बाट जोह रहे हैं ।

दुर्योधन—(जोश में आकर आसन से उठता हुआ) हे सूत ! रथ लाओ ! सुन्दरक ! तुम भी जाकर मेरे वचनों से मित्र अंगराज को ढाढस बँधाओ । अधिक साहस

साहसेन। अभिन्न एवाऽयमावयोः संकल्पो न खलु भवानेको जीवितपरित्यागाकाङ्क्षी किन्तु—

हत्वा पार्थान्सलिलमशिवं बन्धुवर्गाय दत्त्वा,
मुक्त्वा बाष्पं सह कतिपयैर्मन्त्रिभिश्चाऽरिभिश्च।
कृत्वाऽन्योऽन्यं सुचिरमपुनर्भावि गाढोपगूढं,
सन्त्यक्ष्यावो हततनुमिमां दुःखितौ निर्वृतौ च ॥ १३ ॥

गत्वा = यात्वा (जाकर) वयस्यम् = मित्रम्। प्रतिबोधय = धैर्यं ज्ञापय (ढाढस दो)। अभिन्नः = समानः, एव (एक-सा ही) संकल्पः = निश्चयः। जीवितपरि-परित्यागाकांक्षी—जीवितस्य = जीवनस्य परित्यागाय = नाशायाकांक्षते यः सः (जीवनत्याग करने का इच्छुक)।

अन्वयः—पार्थान् हत्वा बन्धुवर्गाय अशिवं सलिलं दत्त्वा कतिपयैः मन्त्रिभिः अरिभिः च सह बाष्पम् मुक्त्वा अन्योन्यम् अपुनर्भावि सुचिरम् गाढोपगूढम् कृत्वा दुःखितौ निवृत्तौ च (सन्तौ) इमाम् हततनुं सन्त्यक्ष्यावः ॥ १३ ॥

हत्वेति। पार्थान् = पृथासुतान् पाण्डवान्। हत्वा = मारयित्वा (मारकर)। बन्धुवर्गाय = भ्रातृवर्गाय (भाइयों के लिए)। अशिवम् = अमङ्गलम् सलिलम् = जलम् (जलदान) दत्त्वा = प्रदाय (देकर)। कतिपयैः = हतशेषैः मन्त्रिभिः = अमात्यैः (मारे जाने से बचे मन्त्री)। अरिभिः = रिपुभिः च सह = समम् (शत्रुओं सहित)। बाष्पम् = नयननीरम् (आँसू) मुक्त्वा = त्यक्त्वा (बहाकर)। अन्योऽन्यम् = परस्परम् (एक दूसरे को)। अपुनर्भावि—न पुनर्भवितुं शीलं यस्य तत् (पुनर्जन्म न होने का) सुचिरम् = बहुकालं यावत् (बहुत समय तक) गाढोपगूढम्—गाढम् = दृढम् उपगूढम् = आलिंगनम्। कृत्वा = विधाय (करके) दुःखितौ = बान्धवनिधनेन सन्तप्तहृदयौ (दुःखी) निवृत्तौ = शत्रुनाशेन सन्तोषमनुभवन्तौ (सन्तुष्ट) (सन्तौ) इमाम् = एताम्। हततनुं = अधमशरीरम्। सन्त्यक्ष्यावः = आवां संत्यागं करिष्यावः (त्याग करेंगे)। मन्दाक्रान्ता वृत्तम् ॥ १३ ॥

न करें। केवल आप ही नहीं बल्कि हम दोनों का एक सा ही विचार है। (हम दोनों ही प्राण त्याग करने के इच्छुक हैं, अकेले आप ही नहीं।) किन्तु—

पाण्डवों का संहार कर, बन्धुवर्ग को अशिव जल (जलाञ्जलि) देकर मारे जाने से बचे कतिपय मन्त्रियों तथा शत्रुओं के साथ आँसू बहा कर आपस में पुनर्जन्म न होने विषयक चिरकाल तक गाढ आलिंगन कर (बान्धवों में मारे जाने के कारण हम दो) दुःखी तथा शत्रु वध से सुखी होते हुये इस अधम शरीर का परित्याग करेंगे ॥ १३ ॥

अथवा शोकं प्रति मया न किञ्चित्सन्देष्टव्यम् ।

वृषसेनो न ते पुत्रो न मे दुःशासनोऽनुजः ।
त्वां बोधयामि किमहं त्वं मां संस्थापयिष्यसि ॥ १४ ॥

सुन्दरकः—जं देवो आणवेदि । [यद्देव आज्ञापयति ।] (इति निष्क्रान्तः)

दुर्योधनः—तूर्णमेव रथमुपस्थापय ।

सूतः—(कर्णं दत्त्वा ।) आयुष्मन् ! ह्लेषासंवलितो नेमिध्वनिः श्रूयते ।

शोकं प्रति = दुःखं प्रति । मया = दुर्योधनेन । किञ्चित् = किमपि । न सन्देष्टव्यम् = सन्देशः प्रेषितव्यम् न अस्ति (मुझे क्या सन्देश भेजना है) ।

अन्वयः—वृषसेनः ते पुत्रः न, दुःशासनः मे अनुजः न । अहं त्वां किं बोधयामि त्वं (वा) मां (किम्) संस्थापयिष्यसि ॥ १४ ॥

वृषसेन इति । वृषसेनः = तन्नामकः कुमारः । ते = तव (तुम्हारा) पुत्रः = सुतः न (आसीत्) । दुःशासनः = तन्नामकः कौरवः । मे = मम दुर्योधनस्य । अनुजः = कनिष्ठः भ्राता न (आसीत् इति मन्यावहे) । अहम् = दुर्योधनः । त्वाम् = कर्णम् । किं बोधयामि = किं ज्ञानं ददामि (क्या समझाऊँ) । अथवा त्वम् = कर्णः । माम् = दुर्योधनम् किं संस्थापयिष्यसि = धैर्यं धारयिष्यसि (ढाढ़स बँधाओगे) । अनुष्टुब् वृत्तम् ॥ १४ ॥

सुन्दरकः—यत् = यथा । देवः = स्वामी । आज्ञापयति = आदिशति ।

दुर्योधनः—तूर्णम् = द्रुतम् एव (शीघ्र ही) । रथम् = स्यन्दनम् । उपस्थापय = आनय (ले आओ) ।

सूतः—ह्लेषासम्वलितः—ह्लेषया = ह्लेषाध्वनिना (हिनहिनाहट से) सम्वलितः = युक्तः । नेमिध्वनिः = नेमिरवः (रथ के पहिये की आवाज) । श्रूयते = आकर्ण्यते (सुनाई पड़ रही है) ।

अथवा शोभ प्रकट करने के लिए मुझे कोई सन्देश नहीं भेजना है ।

(हम दोनों को समझ लेना चाहिये कि) वृषसेन तुम्हारा पुत्र नहीं था और नहीं दुःशासन मेरा अनुज था । इस विषय में मैं तुम्हें क्या समझाऊँ और तुम क्या मुझे धैर्य बँधा सकोगे ॥ १४ ॥

सुन्दरक—जो महाराज की आज्ञा । (यह कहकर निकल जाता है ।)

दुर्योधन—शीघ्र रथ ले आओ ।

सूत—(कान लगाकर) आयुष्मन् ! घोड़ों की हिनहिनाहट से युक्त रथ के पहियों की ध्वनि सुनाई पड़ रही है ।

दुर्योधनः—तथा तर्कयामि यत् नूनं परिजनोपनीतो रथः । गच्छ त्वं रथं सज्जीकुरु ।

सूतः—यदाज्ञापयति देवः । (इति निष्क्रम्य, पुनः प्रविशति ।)

दुर्योधनः—(विलोक्य ।) किमिति नारूढोऽसि ?

सूतः—एष खलु तातोऽम्बा च सञ्जयाधिष्ठितं रथमारुह्य देवस्य समीपमुपगतौ ।

दुर्योधनः—किं नाम तातोऽम्बा च सम्प्राप्तौ । कष्टम् ! अतिबीभत्समाचरितं दैवेन । सूत ! गच्छ त्वं स्यन्दनं तूर्णमुपहर । अहमपि तातदर्शनं परिहरन्नेकान्ते तिष्ठामि ।

दुर्योधनः—तर्कयामि = मन्ये (मैं समझता हूँ) । नूनम् = खलु (अवश्य ही) । परिजनोपनीतः—परिजनेन = सेवकेन उपनीतः = आहृतः (अनुचर द्वारा लाया गया) । सज्जीकुरु = उपकल्पय (तैयार करो) । निष्क्रम्य = निर्गत्य (निकल कर) ।

दुर्योधनः—न आरूढ = अनारूढः (रथ पर नहीं बैठते हो) ।

सूतः—सञ्जयाधिष्ठितम्—सञ्जयेनाधिष्ठितम्=अवस्थिततम् (संजय के साथ बैठे) देवस्य=भवतः । समीपम्=पार्श्वम् (पास) । उपगतौ=प्राप्तौ (आये हैं) ।

दुर्योधनः—सम्प्राप्तौ = अधिगतौ (आये हैं) । कष्टम् = दुःखम् । दैवेन = विधिना । अतिबीभत्सम्=अतिघृणितम् (अत्यन्त बीभत्स) आचरितम्=व्यवहृतम् (आचरण किया है) । तातदर्शनम् = जनकावलोकनम् (पिताजी को देखना) । परिहरन् = परित्यजन् (छोड़ते हुये) एकान्ते = एकान्तस्थाने ।

दुर्योधन—इससे ज्ञात होता है कि अवश्य ही परिजन द्वारा रथ ले आया गया है । जाओ, तुम रथ तैयार करो ।

सूत—जैसी आज्ञा महाराज । (यह कहकर निकल कर, पुनः प्रवेश करता है ।)

दुर्योधन—(देखकर) क्यों रथ पर नहीं चढ़े ?

सूत—यह संजय के साथ पिता जी माताजी को लेकर आपके समीप रथ पर बैठकर आये हैं ।

दुर्योधन—क्या माता-पिता जी आये हैं ? दुःख है । विधाता ने बड़ा ही भयङ्कर कर्म किया है । हे सूत ! जाओ, तुम शीघ्र रथ तैयार करके आओ । मैं भी पिता जी के दर्शन से अपने को बचाता हुआ एकान्त में बैठता हूँ ।

सूतः—देव ! त्वमेकशेषबान्धवावेतौ कथमिव न समाश्वासयसि ।

दुर्योधनः—सूत ! कथमिव समाश्वासयामि विमुखभागधेयः ? पश्य—

अद्यैवाऽऽवां रणमुपगतौ तातमम्बां च दृष्ट्वा,
घ्रातस्ताभ्यां शिरसि विनतोऽहं च दुःशासनश्च ।
तस्मिन्बाले प्रसभमरिणा प्रापिते तामवस्थां,
पार्श्वं पित्रोरपगतघृणः किन्नु वक्ष्यामि गत्वा ॥ १५ ॥

सूतः—तथाऽप्यवश्यं वन्दनीयौ गुरू ।

(इति निष्क्रान्तौ)

इति चतुर्थोऽङ्कः ।

सूतः—त्वमेकशेषबान्धवौ—त्वम् एकम् एव अशेषबान्धवेषु = समस्तबान्धवेषु ययोस्तौ (समस्त बान्धवों में अकेले तुम्हीं जिनके रह गये हो) एतौ = पितरौ (इन माता पिता को) समाश्वासयसि = धैर्यं धारयसि (धैर्य बँधाते हो) ।

दुर्योधनः—विमुखभागधेयः—विमुखम् = विपरीतम् भागधेयम् यस्य तथाविधः (प्रतिकूल भाग्यवाला) ।

अन्वयः—अद्य एव रणम् उपगतौ आवां तातम् अम्बां च दृष्ट्वा विनतः (सन्) अहं दुःशासनः च ताभ्यां शिरसि घ्रातः । तस्मिन् बाले अरिणा प्रसभं ताम् अवस्थां प्रापिते अपगतघृणः पित्रोः पार्श्वं गत्वा किं नु वक्ष्यामि ॥ १५ ॥

अद्यैवेति—अद्य एव = अस्मिन् दिन एव (आज ही) रणम् = युद्धम् । उपगतौ = प्रस्थितौ । आवाम् = दुर्योधन-दुःशासनौ (हम दोनों) । तातम् = पितरम् अम्बाम् = मातरम् च दृष्ट्वा = अवलोक्य (माता और पिताजी को देखकर) विनतः = नम्रः (सन्) अहम् = दुर्योधनः, दुःशासनः = ममानुजश्च । ताभ्याम् = पितृभ्याम् (माता-पिता द्वारा) शिरसि = मूर्ध्नि घ्रातः = आघ्रातः

सूत—देव ! आप ही अकेले परिवार भर में इनके शेष रह गये हैं अतः इन्हें आप धैर्य क्यों नहीं बँधाते हैं ?

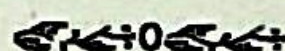
दुर्योधन—सूत ! विरुद्ध भाग्यवाला मैं किस प्रकार माता-पिता को धैर्य बँधा सकूँगा । देखो—

आज ही हम दोनों माता जी तथा पिता जी के दर्शन कर युद्ध को चले थे और उन दोनों ने नम्र मेरा व दुःशासन का शिर सूँघ कर मंगल कामना की थी । उस बालक

(शिर सूँघकर) तस्मिन् बाले = तस्मिन् शिशौ दु:शासने । अरिणा = शत्रुणा । प्रसभम् = बलात् (जबर्दस्ती) ताम् = तादृशीम् अवस्थाम् = दशाम् (मृत्युम्) प्रापिते = गमिते (पहुँचा देने पर) । अपगतघृण:—अपगता = परित्यक्ता घृणा येन तादृशः (अहम्) पित्रो: = जनकमात्रो (माता और पिता जी के) पार्श्वम् = समीपम् गत्वा = चलित्वा (जाकर) वक्ष्यामि = कथयिष्यामि (कहूँगा) । मन्दाक्रान्ता वृत्तम् ।। १५ ।।

सूत:—तथापि = एतत्कृतेऽपि (फिर भी) अवश्यम् = नूनम् । गुरू = पितरौ । वन्दनीयौ = अभिवादनार्हौ स्त: (प्रणाम करने चाहिये) ।

निष्क्रान्तौ = निर्गतौ (दोनों निकल जाते हैं) ।



दुःशासन को शत्रु द्वारा बलात् इस दशा (मृत्यु) को पहुँचा देने पर निर्लज्ज मैं माता-पिता के पास जाकर क्या कहूँगा ? ।। १५ ।।

सूत—तब भी माता-पिता की वन्दना अवश्य करनी चाहिए ।

(यह कहकर दोनों निकल जाते हैं)





अथ पञ्चमोऽङ्कः

(ततः प्रविशति रथयानेन गान्धारी सञ्जयो धृतराष्ट्रश्च ।)

धृतराष्ट्रः—वत्स सञ्जय ! कथय कथय कस्मिन्नुद्देशे कुरुकुलकाननैक-शेषप्रवालो वत्सो मे दुर्योधनस्तिष्ठति । कच्चिज्जीवति वा न वा ।

गान्धारी—जाद ! जइ सच्चं जीवदि मे वच्छो ता कधेहि कस्सिं देसे वट्टदि । [जात ! यदि सत्यं जीवति मे वत्सस्तत्कथय कस्मिन्देशे वर्तते ।]

सञ्जयः—नन्वेष महाराज एक एव न्यग्रोधच्छायायामुपविष्टस्तिष्ठति ।

ततः = तदनन्तरम् । रथयानेन = स्यन्दनेन (रथ पर बैठा हुआ) । गान्धारी = दुर्योधन-माता सञ्जयः = सञ्जयाभिधः जनः । धृतराष्ट्रः = दुर्योधन-पिता ।

धृतराष्ट्रः—कथय = वद (कहो) । उद्देशे = प्रदेशे (स्थान पर) । कुरु-कुलकाननैकशेष-प्रवालः—कुरुकुलमेव काननम् = कौरववंश-वनम् तस्यैकः = एकलः शेषः=अवशिष्टः प्रवाल=अङ्कुरः इव ('प्रवालमङ्कुरेऽस्त्रियाम्' इत्यमरः) । वत्सः = सुतः (कौरववंश-रूपी वन का अकेला बचा हुआ अंकुर जैसा पुत्र) मे = मम । तिष्ठति = वर्तते (है) । जीवति = सजीवोऽस्ति न वा = अथवा नैव (जीवित है अथवा नहीं) ।

गान्धारी—जात = पुत्र (बेटे) । यदि=चेत् । सत्यम्=तथ्यम् (सचमुच) । मे = मम गान्धार्याः वत्सः = सुतः दुर्योधनः । जीवति = जीवितोऽस्ति । कस्मिन् देशे = कस्मिन् स्थाने (किस स्थान पर) । वर्तते = तिष्ठति (है) ।

सञ्जयः—ननु = खलु (निश्चय ही) एषः = अयम् । महाराजः = प्रभुर्दुर्योधनः (महाराजा) । न्यग्रोधच्छायायाम्—न्यग्रोधस्य = वटस्य छायायाम् = प्रच्छाये (बरगद की छाँह में) ।

(तदनन्तर रथयान द्वारा गान्धारी, सञ्जय तथा धृतराष्ट्र प्रवेश करते हैं ।)

धृतराष्ट्र—वत्स सञ्जय ! बताओ, कौरव वंश रूपी वन के एक मात्र बचे अङ्कुर के समान मेरा बेटा दुर्योधन कहाँ है ? क्या जीवित है अथवा नहीं ?

गान्धारी--बेटे ! यदि सचमुच मेरा पुत्र दुर्योधन जीवित है तो बतलाओ—कहाँ है ?

सञ्जय--वास्तव में यह महाराज अकेले ही वटवृक्ष की छाँह में बैठे हैं ।

गान्धारी—(सकरुणम् ।) जाद ! एआइ त्ति भणासि । किं णु क्खु संपदं भादुसदं से पास्से भविस्सदि । [जात ! एकाकीति भणसि । किं नु खलु साम्प्रतं भ्रातृशतमस्य पार्श्वे भविष्यति ।]

संजय—तात ! अम्ब ! अवतरतां स्वैरं रथात् ।

(उभाववतरणं नाटयतः ।)

(ततः प्रविशति सव्रीडमुपविष्टो दुर्योधनः ।)

सञ्जयः—(उपसृत्य ।) विजयतां महाराजः । नन्वेष तातोऽम्बया सह प्राप्तः, किं न पश्यति महाराजः ।

(दुर्योधनो वैलक्ष्यं नाटयति ।)

गान्धारी—जात ! = पुत्रक ! एकाकी = एकलः (अकेले) इति = एवम् । भणसि = कथयसि (कह रहे हो) । साम्प्रतम् = सम्प्रति (इस समय) अस्य = एतस्य (इसके) पार्श्वे = समीपे (पास में) भ्रातृशतम्—भ्रातृणाम् = बन्धूनाम् शतम् (भाइयों का सैकड़ा, सौ भाई) ।

संजयः—स्वैरम् = शनैः-शनैः (धीरे-धीरे) । रथात्=स्यन्दनात् (रथ से) अवतरतम् = अवतरण कुरुताम् । (उतरें) ।

उभौ = गान्धारी-धृतराष्ट्रौ (दोनों) । नाटयतः = अभिनयतः (अभिनय करते हैं ।)

सव्रीडम्—व्रीडया = लज्जया सहितम् (लज्जा के साथ) ।

सञ्जयः—उपसृत्य = पार्श्वे गत्वा (पास जाकर) । विजयताम् = जयतु (जय हो) । एषः = अयम् । तातः = जनकः । अम्बया सह = मात्रा गान्धार्या साकम् (माता जी के साथ) । प्राप्तः = आगतः (आये हैं) । पश्यति = अवलोकयति (देखते हैं) ।

वैलक्ष्यम्=भ्रातृशतबधात् सलज्जम् (सलज्ज) ।

गान्धारी—(करुणा के साथ) हे पुत्र ! 'अकेले ही' ऐसा कह रहे हो । क्या इस समय इसके पास सौ भाई नहीं हैं ?

सञ्जय—हे तात ! अम्ब ! रथ से धीरे-धीरे उतरिये ।

(दोनों उतरने का अभिनय करते हैं ।)

(तदनन्तर लज्जा सहित बैठा दुर्योधन प्रवेश करता है ।)

सञ्जय—(आगे बढ़कर) जय हो महाराज ! निश्चय ही यह माता के साथ तात आये हैं, क्या महाराज इन्हें देख नहीं रहे हैं ?

(दुर्योधन लज्जा का अभिनय करता है ।)

धृतराष्ट्रः—

शल्यानि व्यपनीय कङ्कवदनैरुन्मोचिते कङ्कटे
बद्धेषु व्रणपट्टकेषु शनकैः कर्णे कृतापाश्रयः।
दूरान्निर्जितशात्रवान्नरपतीनालोकयँल्लीलया,
'सह्या पुत्रक ! वेदने'ति न मया पापेन पृष्टो भवान् ॥ १ ॥

(धृतराष्ट्रो गान्धारी च स्पर्शेनोपेत्याऽऽलिङ्गतः।)

अन्वयः—कङ्कवदनैः शल्यानि व्यपनीय कङ्कटे उन्मोचिते व्रणपट्टकेषु बद्धेषु (सत्सु) शनकैः कर्णे कृतापाश्रयः निर्जितशात्रवान् नरपतीन् दूरात् लीलया आलोकयन् पुत्रक ! वेदना सह्या ? इति पापेन मया भवान् न पृष्टः ॥ १ ॥

शल्यानिति। कङ्कवदनैः—कङ्कैः = गृध्रविसदृशैः वदनैः = मुखैः, शल्य-निःसारणयन्त्रैर्वा (गीध की मुखाकृति के बने बाण निकालने के यन्त्रों द्वारा) शल्यानि = बाणफलकानि (बाणफलक)। व्यपनीय = निःसार्य (निकाल कर)। कङ्कटे = कवचे ('कङ्कटोऽजगरः कवचोऽस्त्रियाम्' इत्यमरः)। उन्मोचिते = शरीराद् अपसारिते (शरीर पर से उतार देने पर)। व्रणपट्टकेषु = व्रणबन्धकेषु (घावों पर पट्टियों में) बद्धेषु = संयोजितेषु सत्सु (भली प्रकार बँधे होने पर)। शनकैः = शनैः (धीरे से)। कर्णे = राधेये (कर्ण में)। कृतापाश्रयः—कृतः = विहितः अपाश्रयः = आश्रयो येन सः (आश्रय लिये हुये)। निर्जितशात्रवान्—शत्रूणां समूहः शात्रवम्, निर्जितम् = पराजितम् शात्रवं यैस्तान् (शत्रुसमूह को पराजित किये) नरपतीन् = भूपतीन् (राजाओं को)। दूरात् = विप्रकृष्टात् (दूर से)। लीलया = हेलया (मजे से)। आलोकयन् = पश्यन् (देखते हुये)। पुत्रक = हे जात (हे बेटे) वेदना = पीडा। सह्या = सोढुं योग्या (सहने योग्य है)। इति = एवम्। पापेन = पापात्मना (पापी) मया = धृतराष्ट्रेन (मैंने) भवान् = मम पुत्रस्त्वम्। न पृष्टः = नाऽऽकथितः (नहीं पूछा)। शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम् ॥ १ ॥

स्पर्शेन = करस्पर्शेन (हाथ से टटोल कर) उपेत्य = उपगत्य (समीप जाकर) आलिङ्गतः = आश्लिश्यतः (चिपटा लेते हैं)।

धृतराष्ट्र—बाण निकलने के कङ्कमुख यन्त्रों द्वारा बाण-फलक निकाल कर कवच उतार कर औषधि से सनी घावों पर पट्टियाँ बँधी होते हुये धीरे से कर्ण का आश्रय लिये, शत्रु समूह को पराजित करने वाले नरपतियों को दूर से लीला दृष्टि से देख रहे, 'हे बेटे! क्या पीडा सह्य है ?' यह बात भी मुझ पापी ने आपसे नहीं पूछ पायी ॥ १ ॥

(धृतराष्ट्र तथा गान्धारी हाथों से टटोल कर समीप जाकर दुर्योधन को चिपटा लेते हैं।)

गान्धारी—वच्छ ! अदिगाढप्पहारवेअणापज्जाउलस्य अम्हेसु सण्णिहिदेसु वि ण प्पसरदि दे वाणी। [वत्स ! अतिगाढ़प्रहारवेदनापर्याकुलस्याऽस्मासु सन्निहितेष्वपि न प्रसरति ते वाणी ।]

धृतराष्ट्रः—वत्स दुर्योधन ! किमकृतपूर्वः सम्प्रति मय्यप्ययं व्यवहारः ।

गान्धारी—(सकरुणम्) वच्छ ! जइ तुमं वि अम्हे णालबसि ता किं संपदं वच्छो दुस्सासणो दुम्मरिसणो अण्णो वा आलविस्सदि। (इति रोदिति।) [वत्स, यदि त्वमप्यस्मान्नालपसि तत्कि साम्प्रतं वत्सो दुःशासनो दुर्मर्षणोऽन्यो वा आलपिष्यति ।]

गान्धारी—वत्स = पुत्रक ! अतिगाढप्रहारवेदनापर्याकुलस्य—अतिगाढः = अतिप्रबलः यः प्रहारः = आघातः, तस्य वेदनया = पीडया पर्याकुलः = व्यथितस्तस्य (गहरे प्रहार की पीडा से व्याकुल) ते=तव (तुम्हारी) वाणी=वाक् (वाणी) । अस्मासु सन्निहितेषु अपि = अस्मत्समीपवर्तिष्वपि (हम लोगों के समीप होते हुये भी) न प्रसरति = भणितुं नोपक्रमते (नहीं फैल रही है) ।

धृतराष्ट्रः—अकृतपूर्वः—न कृतं = विहितं पूर्वम् = प्राक् यादृशस्तथा (इससे पूर्व न किया गया) व्यवहारः = आचरणम् (व्यवहार) सम्प्रति = इदानीम् (इस समय) मयि = पितरि अपि (मुझ पर भी) ।

गान्धारी—सकरुणम्—करुणया = दुःखेन सहितम् (दुःख के साथ) अस्मान् = पितृजनान् (हमसे) न आलपसि = न भणसि (नहीं बोलते हो) वत्सः = सुतः दुःशासनः = दुःशासन-नामकः दुर्मर्षणः वा = अथवा दुर्मर्षण-नामकः । अन्यः = अपरः सुतः । किम् आलपिष्यति = आलापं करिष्यति (क्या बात कर सकेगा) ?

गान्धारी—हे पुत्र ! अतिप्रबल प्रहार की पीड़ा से व्याकुल तुम्हारी वाणी हम लोगों के समीप होने पर भी कुछ नहीं कह पा रही है ।

धृतराष्ट्र—पुत्र दुर्योधन ! इस समय तुम मेरे साथ भी ऐसा व्यवहार कर रहे हो जो कि इससे पूर्व कभी नहीं किया था !

गान्धारी—(दुःख के साथ) वत्स ! यदि तुम भी हमसे बात नहीं करते हो तो क्या दुःशासन अथवा दुर्मर्षण या दूसरे बेटे बात करेंगे ! (यह कह कर रोने लगती है ।)

दुर्योधनः—

पापोऽहमप्रतिकृतानुजनाशदर्शी,
तातस्य बाष्पपयसां तव चाम्ब ! हेतुः ।
दुर्जातमत्र विमले भरतान्वये वः,
किं मां सुतक्षयकरं सुत इत्यवैषि ॥ २ ॥

गान्धारी—जाद ! अलंमलं परिदेविदेण । तुमं वि दाव एको इमस्स अन्धजुअलस्स मग्गोवदेसको । ता चिरं जीव । किं मे रज्जेण जएण वा । [जात ! अलमलं परिदेवितेन । त्वमपि तावदेकोऽस्याऽन्धयुगलस्य मार्गोपदेशकः तच्चिरञ्जीव । किं मे राज्येन जयेन वा ।]

अन्वयः—अम्ब ! अप्रतिकृताऽनुजनाशदर्शी अहं पापः तातस्य तव च बाष्पपयसां हेतुः । विमले अत्र भरतान्वये दुर्जातं वः सुतक्षयकरं मां सुत इति किम् अवैषि ? ॥ २ ॥

पापोऽहमिति । अम्ब = मातः । अप्रतिकृताऽनुजनाशदर्शी—अप्रतिकृतः = अप्रतिकार-विषयीकृतः यः अनुजानाम् = लधुभ्रातॄणाम् नाशः = विनाशस्तस्य दर्शी = दर्शकः (बदला लिये बिना ही भाइयों का विनाश देखने वाला) अहम् = दुर्योधनः । पापः = पापिष्ठः (पापी) । तातस्य = पितुः । तव = अम्बायाश्च (पिताजी के तथा तुम्हारे) बाष्पपयसाम्=अश्रुजलानाम् (आँसू रूपी जल का) हेतुः = कारणभूतः (कारण बना हुआ) अस्मि । विमले = उज्ज्वले । अत्र = अस्मिन् भरतकुले = कौरववंशे (भरतवंश में) दुर्जातम्—दुःखेन जातम् = उत्पन्नम् (दुःख से उत्पन्न हुये) । वः = युष्माकम् (तुम्हारे) । सुतक्षयकरम्—सुतानाम् = पुत्राणाम् क्षयकरम् = नाश-कारकम् (विनाश कराने वाले) माम् = दुर्योधनम् (मुझे) सुतः = पुत्रः इति=एवम् । किम् अवैषि=जानासि किम् (जान रही हो) । 'नाहं पुत्रकथनयोग्योऽस्मि' इत्याशयः । वसन्ततिलका वृत्तम् ॥ २ ॥

गान्धारी—परिदेवितेन=विलापेन ('विलापः परिदेवनम्' इत्यमरः) (रोने

दुर्योधन—हे मातः ! बदला लिये बिना भाइयों का विनाश देखते रहने वाला मैं पापी पिता जी तथा आपके अश्रुजल का कारण हूँ। इस उज्ज्वल भरत कुल में दुःख से जन्मे तुम्हारे पुत्रों का विनाश कराने वाले मुझ दुर्योधन को अपना पुत्र मान रही हो, वास्तव में मैं तुम्हारे पुत्र कहलाने योग्य नहीं हूँ ॥ २ ॥

गान्धारी—हे पुत्र ! अत्यन्त विषाद मत करो । तुम्हीं अकेले इस अन्ध जोड़ी के पथप्रदर्शक हो । अतः चिरजीवी बनो । मुझे राज्य अथवा विजय से क्या ?

दुर्योधनः—

मातः ! किमप्यसदृशं कृपणं वचस्ते,
सुक्षत्रिया क्व भवती ? क्व च दीनतैषा ?
निर्वत्सले ! सुतशतस्य विपत्तिमेतां
त्वं नाऽनुचिन्तयसि रक्षसि मामयोग्यम् ॥ ३ ॥

नूनं विचेष्टितमिदं सुतशोकस्य ।

से)। अन्धयुगलस्य = नेत्रहीनयुग्मस्य (अन्धे जोड़े का)। मार्गोपदेशकः— मार्गस्य = वाटस्योपदेशकः=प्रदर्शकः (मार्गोपदेशक) चिरञ्जीव = आयुष्मान् भव (बहुत समय तक जियो)। राज्येन = राज्यलाभेन (राज्य प्राप्ति से) जयेन = विजयेन वा (अथवा विजय प्राप्त करने से)।

अन्वयः—मातः ! ते असदृशं किम् अपि कृपणं वचः (अस्ति)। सुक्षत्रिया भवती क्व ? एषा दीनता च क्व ? हे निर्वत्सले ! सुतशतस्य एताम् विपत्तिम् त्वं न अनुचिन्तयसि ? अयोग्यम् माम् च रक्षसि ॥ ३ ॥

मात इति। मातः = हे अम्ब ! ते = तव। असदृशम् = प्रतिकूलम् (विरुद्ध) किमपि=किञ्चिदपि। कृपणम्=दीनम्। वचः=वचनम् (अस्ति)। सुक्षत्रिया = उत्तम-क्षत्रियकुलजाता (उत्तम क्षत्राणी) भवती = श्रीमती (आप)। क्व = कुत्र ! (कहाँ तो आप उत्तम क्षत्राणी ?) एषा = इयम् (यह) दीनता = दैन्यम् च क्व (और कहाँ यह दीनता)। हे निर्वत्सले=हे सुतस्नेहरहिते ! सुतशतस्य = पुत्रशतस्य (सौ पुत्रों की) एताम् = इमाम् विपत्तिम् = विनाश-संकटम् (नाश रूपी संकट को) त्वम् = भवती। न अनुचिन्तयसि = न विचारयसि (नहीं सोच रही हो) च = तथा। अयोग्यम् = अनुत्तमम् (अयोग्य) माम्=नीचम् दुर्योधनम् (मुझे) रक्षसि = रक्षितुं कामयसे (रक्षा की सोच रही हो)। वसन्ततिलका वृत्तम् ॥ ३ ॥

इदम् = एतत् (यह)। सुतशोकस्य = पुत्रनाशदुःखस्य (पुत्रनाश के दुःख का) विचेष्टितम् = कृतम् (दैन्यम् इत्याशयः)।

दुर्योधन—हे मातः ! इस प्रकार कायरता की बात करना तुम्हारे अनुकूल नहीं है। कहाँ तो आप उत्तम कुल की क्षत्राणी हो और कहाँ इस प्रकार दीनता की बातें कर रही हो ? हे सुतस्नेह रहिते ! सौ-सौ पुत्र मारे जाने की इस विपत्ति को तुम नहीं सोच रही हो बल्कि मुझ अयोग्य को बचाने की चिन्ता है ॥ ३ ॥

निश्चय ही पुत्रशोक से उत्पन्न यह दीनता है।

सञ्जयः—महाराज ! किं वाऽयं लोकवादो वितथः 'न घटस्य कूपपतने रज्जुस्तत्रैव प्रक्षेप्तव्य' इति ।

दुर्योधनः—अपुष्कलमिदम् । उपक्रियमाणाऽभावे किमुपकरणेन । (इति रोदिति ।)

धृतराष्ट्रः—(दुर्योधनं परिष्वज्य ।) वत्स ! समाश्वसिहि । समाश्वासय-चाऽस्मानिमामतिदीनां मातरं च ।

दुर्योधनः—तात ! दुर्लभः समाश्वास इदानीं युष्माकम् । किन्तु—

कुन्त्या सह युवामद्य मया निहतपुत्रया ।
विराजमानौ शोकेऽपि तनयाननुशोचतम् ॥ ४ ॥

सञ्जयः—अयम् = एषः (यह) लोकवादः = जनकथनम् (लोक कहावत) वितथम् = असत्यम् (झूठ) घटस्य = कुम्भस्य (घड़े के) कूपपतने = कूपे पतनकाले (कुँये में गिर जाने पर) । तत्र = तस्मिन् कूपे (कुँये में) न प्रक्षेप्तव्या = न पातितव्या (नहीं फेंक देनी चाहिये) ।

दुर्योधनः—अपुष्कलम् = अपर्याप्तम् (थोड़ा) । उपक्रियमाणाभावे—उपक्रियमाणानाम् = उपकारिणां बान्धवानाम् अभावे = न्यूनतायाम् (उपकारी भाइयों के अभाव में) उपकरणेन = राजसुखसाधनेन (उपकरणों–राजसुख साधनों से) किम् = को लाभः (क्या ?)

धृतराष्ट्र—परिष्वज्य = आलिङ्ग्य (आलिंगन करके) । समाश्वासय = धैर्यं धारय (ढाढस बंधाओ) अस्मान् = हतसुतबान्धवान् (हमें) अतिदीनाम् = अतिव्याकुलाम् (अत्यन्त दुःखी) मातरम् = जननीम् (माता को) ।

दुर्योधनः—दुर्लभः = कठिनः । समाश्वासः = धैर्यम् । इदानीम् = साम्प्रतम् ।

सञ्जय—महाराज ! क्या यह कहावत झूठी है—'घड़े के कुयें में गिर जाने पर बची हुई रस्सी भी कुयें में नहीं डाल देनी चाहिये"।

दुर्योधन—यह पर्याप्त नहीं है। वास्तव में उपकार करने वाले बान्धवों के अभाव में उपकरण राज्य सुख साधन से क्या लाभ ? (यह कह कर रोने लगता है ।)

धृतराष्ट्र—(दुर्योधन को गले लगा कर) वत्स ! धैर्य धारण करो । हमें तथा अति दीन अपनी माता को धीरज दिलाओ ?

दुर्योधन—हे तात ! अब तुम्हें समझाना बड़ा कठिन है । किन्तु—

आज मेरे द्वारा मारे गये पुत्रों वाली कुन्ती के साथ शोकाकुल होने पर भी आप दोनों पुत्रों का शोक कर लें ॥ ४ ॥

गान्धारी—जाद ! एदं एव्वं सम्पदं प्पभूदं जं तुमं वि दाव एक्को जीवसि। कं अण्णं अणुसोचिस्सम् । ता जाद ! अकालो दे समरस्स । प्पसीद । एसो दे अञ्जली । णिवट्टहि समरव्वावारादो । अपच्छिमं करेहि पिदुणो वअणम् । [जात ! एतदेव साम्प्रतं प्रभूतं यत्त्वमपि तावदेको जीवसि । कमन्यमनुशोचिष्यामि । तज्जात ! अकालस्ते समरस्य । प्रसीद । एष तेऽञ्जलिः । निवर्तस्व समरव्यापारात् । अपश्चिमं कुरु पितुर्वचनम् ।]

धृतराष्ट्रः—वत्स ! शृणु वचनं तवाम्बाया मम च निहताऽशेषबन्धुवर्गस्य । पश्य—

अन्वयः—अद्य मया निहतपुत्रया कुन्त्या सह शोके अपि विराजमानौ युवाम् तनयान् अनुशोचतम् ॥ ४ ॥

कुन्त्येति । अद्य = अस्मिन् दिने (आज) । मया=दुर्योधनेन । निहतपुत्रया—निहता = मारिताः पुत्राः = सुताः यस्यास्तया (जिसके पुत्र मार डाले गये हों) । कुन्त्या = पृथया सह = साकम् (कुन्ती के साथ) शोके = दुःखे अपि (शोक में भी) विराजमानौ = वर्तमानौ युवाम् = अम्बातातौ (आप दोनों) तनयान् = सुतान् (पुत्रों को) । अनुशोचतम् = चिन्तयतम् (सोच करो) । अत्र सहोक्तिरलङ्कारः । अनुष्टुब् वृत्तम् ॥ ४ ॥

गान्धारी—साम्प्रतम् = इदानीम् । प्रभूतम्=पर्याप्तम् । त्वम् = दुर्योधनः अपि (तुम भी) जीवसि = जीवनं धारयसि (जीवित हो) । अन्यम् = अपरम् । कम् = कं पुरुषम् (दूसरे किसको) । अनुशोचिष्यामि = चिन्तयिष्यामि (शोक कर सकूँगी) । अकालः = असमयः । समरस्य = युद्धस्य । प्रसीद = प्रसन्नो भव (प्रसन्न हो जाओ) । एषः = अयम् । ते = तव अञ्जलिः = करञ्जलिः (मैं यह तुम्हारे हाथ जोड़ रही हूँ) । समरव्यापारात् = युद्धकर्मणः (युद्ध कार्य से) । निवर्तस्व = परावर्तितो भव (हट जाओ) । पितुः = तातस्य । वचनम् = कथनम् । अपश्चिमम् = अनुल्लंघनीयम् । कुरु = विधेहि (उल्लंघन मत करो) ।

धृतराष्ट्रः—वचनम् = वाक्यम् । शृणु = आकर्णय (सुनो) । तव = ते

गान्धारी—हे बेटे ! यदि तुम अकेले भी जीवित रहते हो तो यह सब पर्याप्त है । और किसकी चिन्ता करूँगी । अतः बेटे ! तुम्हें युद्ध करने का समय नहीं है । प्रसन्न हो जाओ । मैं यह हाथ जोड़ रही हूँ । युद्ध कार्य से अलग हो जाओ । पिता के वचनों का उल्लंघन मत करो ।

धृतराष्ट्र—वत्स ! अपनी माता के तथा सम्पूर्ण मारे गये बान्धवों वाले मेरे वचनों को सुनो । देखो—

दायादा न ययोर्बलेन गणितास्तौ द्रोणभीष्मौ हतौ,
कर्णस्याऽऽत्मजमग्रतः शमयतो भीतं जगत्फाल्गुनात् ।
वत्सानां निधनेन मे त्वयि रिपुः शेषप्रतिज्ञोऽधुना,
मानं वैरिषु मुञ्च तात ! पितरावन्धाविमौ पालय ॥ ५ ॥

अम्बायाः = मातुः (अपनी माता के)। मम = मे । निहताऽशेषबन्धुवर्गस्य—निहताः = मारिताः अशेषाः = समस्ताः बान्धवाः यस्य तादृशस्य (जिसके समस्त बान्धव मार डाले गये)। पश्य = अवलोकय ।

अन्वयः—दायादाः ययोः बलेन न गणिताः तौ द्रोणभीष्मौ हतौ कर्णस्य आत्मजम् अग्रतः शमयतः फाल्गुनात् जगत् भीतम् । मे वत्सानां निधनेन रिपुः अधुना त्वयि शेषप्रतिज्ञः (अस्ति)। हे तात ! वैरिषु मानम् मुञ्च । इमौ अन्धौ पितरौ पालय ॥ ५ ॥

दायादा इति । दायादाः = अंशदायिनः बान्धवाः (हिस्सेदार) ययोः = भीष्मद्रोणयोर्बलेन (जिन भीष्म तथा द्रोण की शक्ति से)। न गणिताः = न ज्ञाताः (नहीं समझे) तौ = तथाविधौ (वे) द्रोणभीष्मौ—द्रोणश्च भीष्मश्च तौ । हतौ = मारितौ (मार डाले गये)। कर्णस्य राधेयस्य (कर्ण के) आत्मजम् = सुतम् वृषसेनम् अग्रतः = प्रत्यक्षम् (सामने ही) शमयतः = नाशयतः (मारते हुये) फाल्गुनात् = पार्थात् (अर्जुन से)। जगत् = संसारम् । भीतम् = त्रस्तम् (वर्तते) (भयभीत हो गया है) मे = मम (मेरे) वत्सानाम् = सुतानाम् (पुत्रों के) निधनेन = मृत्युना (निधन से) रिपुः = अरिः (शत्रु)। अधुना = इदानीम् (अब)। त्वयि = दुर्योधने (तुम पर) शेषप्रतिज्ञः—शेषा = अवशिष्टा प्रतिज्ञा = संकल्पो यस्य सः (अधूरी प्रतिज्ञा वाला) (अस्ति)। हे तात = हे वत्स ! वैरिषु = अरिषु (शत्रुओं पर) मानम् = सम्मानम् (मान को) मुञ्च = त्यज (छोड़ दो)। इमौ = एतौ आवाम् । अन्धौ = नेत्रहीनौ (अन्धे) पितरौ = जननीजनकौ (माता-पिता को)। पालय = रक्ष (बचाओ)। शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम् ॥ ५ ॥

जिन दो पराक्रमियों के बल से अंश भागी (हिस्सेदार) पाण्डवों को नहीं माना, वह भीष्म तथा द्रोण मारे गये । कर्ण के पुत्र को सबके देखते-देखते मारने वाले फाल्गुन (अर्जुन) से संसार भयभीत है । मेरे पुत्रों के निधन से शत्रु को अब तुम पर अपनी प्रतिज्ञा पूरी करनी है । हे तात ! मानापमान को शत्रुओं पर छोड़ दो तथा इन (हम) अन्धे माता-पिता का पालन करो ॥ ५ ॥

दुर्योधनः—तात ! अम्ब ! समरात् प्रतिनिवृत्य किं मया कर्त्तव्यम् ?

गान्धारी—जाद ! जं पिदा दे विउरो वा भणिस्सदि तं अनुचिट्ठ ।

[जात ! यत्पिता ते विदुरो वा भणिष्यति तदनुतिष्ठ ।]

सञ्जयः—राजन् ! एवमिदम् ।

दुर्योधनः—सञ्जय ! अद्याऽप्युपदेष्टव्यमस्ति ?

सञ्जयः—राजन् ! यावत्प्राणिति तावदुपदेष्टव्यभूमिर्विजिगीषुः प्रज्ञावताम् ।

दुर्योधनः—(सक्रोधम्) शृणुमस्तावद्भवत एव प्रज्ञावतोऽस्मान्प्रति प्रतिरूपमुपदेशम् ।

दुर्योधनः—समरात् = युद्धात् । प्रतिनिवृत्य = परावृत्य (युद्ध से हट कर) मया = दुर्योधनेन । किं कर्त्तव्यम् = किं करणीयं वर्तते (क्या करने योग्य है) ।

गान्धारी—भणिष्यति = कथयिष्यति (कहेंगे) । अनुतिष्ठ = वर्तस्व (वही करो) ।

दुर्योधनः—अद्यापि = इदानीमपि (अब भी) । उपदेष्टव्यम् = शिक्षणीयम् (उपदेश देने योग्य) ।

सञ्जयः—यावत् = यावत्कालम् । प्राणिति = जीवति (जीवित है) । विजिगीषुः = विजेतुमिच्छुः (जीत चाहने वाला) । प्रज्ञावताम् = बुद्धिमताम् (बुद्धिमान् पुरुषों का) । उपदेष्टव्यभूमिः = शिक्षणीयभाजनम् (शिक्षा का पात्र) ।

दुर्योधनः—भवतः = श्रीमतः एव (आपका ही) । प्रज्ञावतः = बुद्धिमतः (प्रज्ञावान् का) अस्मान् प्रति = अस्मदर्थम् (हमारे प्रति) प्रतिरूपम् = अनुकूलम् (अनुरूप) । उपदेशम् = शिक्षणम् ।

दुर्योधन—हे तात, अम्ब ! युद्ध से हट कर हमें क्या करना चाहिये ?

गान्धारी—हे पुत्र ! जो तुम्हारे पिता जी अथवा विदुर कहें, वही करो ।

सञ्जय—राजन् ! यही ठीक है ।

दुर्योधन—सञ्जय ! क्या अब भी उपदेश देना रह गया है ?

सञ्जय—राजन् ! जब तक विजय प्राप्त करने का अभिलाषी जीवित रहता है तब तक बुद्धिमान् पुरुषों को वह शिक्षणीय है ।

दुर्योधन—(क्रोध करके) तब तो आप सरीखे बुद्धिमान् का ही अनुकूल उपदेश सुन लें ।

धृतराष्ट्रः—वत्स ! युक्तवादिनि सञ्जये किमत्र क्रोधेन ! यदि प्रकृतिमापद्यसे तदहमेव भवन्तं ब्रवीमि। श्रूयताम्—

दुर्योधनः—कथयतु तातः।

धृतराष्ट्रः—वत्स ! किं विस्तरेण ! संधत्तां भवानिदानीमपि युधिष्ठिरमीप्सितपणबन्धेन।

दुर्योधनः—तात ! तनयस्नेहवैक्लव्यादम्बा, बालिशत्वेन सञ्जयश्च काममेवं ब्रवीतु। युष्माकमप्येवं व्यामोहः। अथ वा प्रभवति पुत्रनाश-

---

धृतराष्ट्रः—युक्तवादिनि—युक्तम् = अनुरूपम् वदतीति तस्मिन् (उचित कहने वाले) क्रोधेन = कोपेन (क्रोध करने से)। प्रकृतिम् = स्वभावितम्। आपद्यसे = भूयसे (यदि साधारण हो जाओ—क्रोध शान्त कर लो)। अहम् = धृतराष्ट्र एव। भवन्तम् = त्वाम्। ब्रवीमि = कथयामि (कहता हूँ)। श्रूयताम् = आकर्ण्यताम् (सुनो)।

दुर्योधनः—कथयतु = भणतु (कहें)। तातः = जनकः (पिता जी)।

धृतराष्ट्रः—विस्तरेण = विस्तारपूर्वकं वर्णनेन (विस्तार से कहने से) किम् = कः लाभः (क्या लाभ)। इदानीम् अपि = सम्प्रत्यपि (अब भी)। ईप्सितपणबन्धेन = वाञ्छितसमयबन्धेन (वांछित शर्त से) युधिष्ठिरम् = पाण्डवज्येष्ठम् (युधिष्ठिर के साथ) सन्धत्ताम् = सन्धिं करोतु (सन्धि कर लो)।

दुर्योधनः—तात = हे पितः। तनयस्नेहवैक्लव्यात्—तनयानाम् = पुत्राणाम् स्नेहस्य = प्रेम्णः यद् वैक्लव्यम् = व्याकुलता, तस्मात् (पुत्रों के स्नेह की व्याकुलता से) अम्बा = जननी। बालिशत्वेन = मूर्खतया च सञ्जयः (और मूर्खता वश संजय)। एवम् = सन्धि कर्तुम् कामम् = इष्टम्। ब्रवीतु = कथयतु। युष्माकम् अपि = भवतामपि (आपको भी) एवम् = ईदृशः (ऐसा) व्यामोहः = मतिभ्रमः (ऐसा व्यामोह)। पुत्रनाशजन्मा—पुत्रनाशेन जन्म यस्य सः (पुत्रनाश से

धृतराष्ट्र—वत्स ! ठीक बात कहने वाले सञ्जय पर क्रोध करने से क्या लाभ है ? यदि शान्त हो जाओ तो मैं ही कहता हूँ। सुनो—

दुर्योधन—कहिये पिताजी।

धृतराष्ट्र—वत्स ! विस्तार से क्या ? अब भी आप वांछित (पाँच गाँव वाली) शर्त को मान कर युधिष्ठिर के साथ सन्धि कर लें।

दुर्योधन—हे तात ! माताजी पुत्रों के स्नेह से व्याकुलता के कारण तथा सञ्जय मूर्खता से ही ऐसा कह रहे हैं। आपको भी इस प्रकार व्यामोह है ? अथवा पुत्र नाश से

जन्मा हृदयज्वरः। अन्यच्च। तात! अस्खलितभ्रातृशतोऽहं यदा तदाऽवधीरितवासुदेवसामोपन्यासः। सम्प्रति हि दृष्टपितामहाऽऽचार्याऽनुज-राजचक्रविपत्तिः स्वशरीरमात्रस्नेहादुदात्तपुरुषव्रीडावहमसुखावसानं च कथमिव करिष्यति दुर्योधनः सह पाण्डवैः सन्धिम्? अन्यच्च। नयवेदिन्सञ्जय,

हीयमानान् किल रिपुन् नृपाः संदधते कथम्।
दुःशासनेन हीनोऽहं सानुजः पाण्डवोऽधुना॥ ६॥

उत्पन्न हुआ)। हृदयज्वरः = हृदयतापः (हृदय का बुखार) अन्यत् = अपरम् अपि (और भी)। अस्खलितभ्रातृशतः—अस्खलितम् = अविनष्टम् भ्रातृशतम् = बन्धुशतम् यस्य सः (अविनष्ट सौ भाइयों वाला) अहम् = दुर्योधनः यदा = यस्मिन् काले (आसम्) तदा = तत्काले। अवधीरितवासुदेवसामोपन्यासः—अवधीरितः = तिरस्कृतः वासुदेवस्य = कृष्णस्य सामोपन्यासः = शान्तिप्रस्तावो येन सः (कृष्ण के शान्ति प्रस्ताव को ठुकरा देने वाला मैं)। सम्प्रति = साम्प्रतम् (अब)। दृष्टपितामहाचार्यानुजराजचक्रविपत्तिः—दृष्टा = अवलोकिता पितामहस्य = भीष्मस्य आचार्यस्य = गुरुद्रोणस्यानुजानाम् = भ्रातृणाम् राजचक्रस्य = नृपमण्डलस्य विपत्तिः = विनाशो येन तथाविधः (भीष्म द्रोण बन्धु तथा राजमण्डल की विनाश-विपत्ति को देखा हुआ)। स्वशरीरमात्रस्नेहात्—स्वस्य = आत्मनः शरीरमात्रे = केवलशरीरे स्नेहः = प्रेम, तस्मात् (अपने शरीर मात्र का स्नेह होने से)। उदात्तपुरुषव्रीडावहम्—उदात्तपुरुषाणाम् = उत्तमजनानाम् व्रीडाम् = लज्जाम् आवहति = धारयति यस्तम् (उत्तम जनों की लज्जा धारण करने वाले) असुखावसानम्—असुखम् = दुःखम् अवसाने = समाप्तौ यस्य तादृशम् (अन्त में दुःख परिणाम वाली) पाण्डवैः सह = पाण्डवैः समम् (पाण्डवों के साथ)। सन्धिम् = सन्धानम् (सन्धि को) कथम् इव = केन प्रकारेण। करिष्यति = विधास्यति (करेगा)। नयवेदिन्! = हे नीतिज्ञ!

अन्वयः—किल हीयमानान् रिपून् नृपाः कथं सन्दधते। अहं दुःशासनेन हीनः अधुना पाण्डवः सानुजः॥ ६॥

उत्पन्न हृदय-ज्वर आपको प्रभावित कर रहा है। अन्यथा जब मैं सौ भाइयों से सम्पन्न था उसी समय वासुदेव के शान्ति प्रस्ताव का तिरस्कार कर चुका था। अब भीष्मपितामह आचार्य द्रोण अनुजों तथा कर्णादि नृपसमूह के विनाश का संकट देख चुकने वाला (मैं) दुर्योधन अपने शरीरमात्र के स्नेह से महापुरुषों की लज्जाधारण करने वाली तथा परिणाम में दुःखदायी पाण्डवों के साथ सन्धि कैसे कर सकेगा। और भी, हे नीतिज्ञ सञ्जय!—

वास्तव में क्षीणबल वाले शत्रुओं के साथ राजा लोग किस प्रकार सन्धि कर सकते हैं?

धृतराष्ट्रः—वत्स ! एवं गतेऽपि मत्प्रार्थनया न किञ्चिन्न करोति युधिष्ठिरः । अन्यच्च सर्वमेवाऽपकृतं नानुमन्यते ।

दुर्योधनः—कथमिव ।

धृतराष्ट्रः—वत्स ! श्रूयतां प्रतिज्ञा युधिष्ठिरस्य 'नाऽहमेकस्याऽपि भ्रातुर्विपत्तौ प्राणान् धारयामी'ति । बहुच्छलात्वात्सङ्ग्रामस्याऽनुजनाशमाशङ्कमानो यदैव भवते रोचते तदैवाऽसौ सज्जः सन्धातुम् ।

हीयमानानिति । किल = खलु । हीयमानान् = क्षीयमानान् (क्षीण हो रहे) रिपून् = शत्रून् (शत्रुओं के साथ) । नृपाः = राजानः (राजा) कथम् सन्दधते = कथं सन्धिं कुर्वन्ति (कैसे सन्धि कर सकते हैं) । अहम् = कुरुपतिः (मैं) दुःशासनेन = अनुजेन हीनः = रहितः (दुःशासन-अनुज से हीन हूँ) । अधुना = सम्प्रति (अब) पाण्डवः = युधिष्ठिरः सानुजः—अनुजैः = बन्धुभिः सहितः अस्ति । अतः सः कथमपि सन्धि प्रस्तावं न स्वीकरिष्यति, इत्याशयः । अत्र काव्यलिङ्गमलङ्कारः । अनुष्टुब् वृत्तम् ॥ ६ ॥

धृतराष्ट्रः—एवं गतेऽपि = इत्थं क्षीयमाणबलेऽपि (इस प्रकार निर्बल हो जाने पर भी) मत्प्रार्थनया = मन्निवेदनेन (मेरी प्रार्थना से) । सर्वम् = निखिलम् एव (सभी) अपकृतम् = अप्रियमनुष्ठितम् (अप्रिय किया गया) न अनुमन्यते = नानुसन्धत्ते (सन्धि करने का अनुमान नहीं कर सकता है) ।

धृतराष्ट्रः—एकस्य = एकलस्य अपि भ्रातुः = बन्धोः (एक भाई की भी) । विपत्तौ = संकटे (विपत्ति में) । प्राणान् न धारयामि = नैव जीवामि (जीवित नहीं रह सकता हूँ) । बहुच्छलत्वात् = अतिकपटत्वात् (अत्यन्त छल के कारण) संग्रामस्य = युद्धस्य (रण के) अनुजनाशम् = बन्धुविनाशम् (भाइयों के नाश

मैं अब दुःशासनादि अनुज रहित हूँ तथा युधिष्ठिर भाइयों से युक्त है (वह हमसे अब किसी प्रकार सन्धि करने को सहमत नहीं होगा) ॥ ६ ॥

धृतराष्ट्र—वत्स ! ऐसा होने पर भी मेरी प्रार्थना से क्या युधिष्ठिर सन्धि नहीं करेंगे ? दूसरी बात यह भी है कि इस सब अपकार को भी वह नहीं मानने वाला है (क्योंकि वह भाग्यवादी है) ।

दुर्योधन—किस प्रकार ?

धृतराष्ट्र—बेटे ! युधिष्ठिर की प्रतिज्ञा सुन लो—'मैं एक भी (किसी भी) भाई पर संकट आते ही प्राण त्याग दूँगा' । अत्यधिक छल प्रपञ्च के कारण युद्ध से भाइयों के विनाश की शङ्का करता हुआ युधिष्ठिर तुम जब चाहोगे तभी सन्धि करने को तैयार हो जायेगा ।

सञ्जयः—एवमिदम् ।

गान्धारी—जाद ! उपपत्तिजुत्तं पडिवज्जस्स पिदुणो वअणम् । [जात ! उपपत्तियुक्तं प्रतिपद्यस्व पितुर्वचनम् ।]

दुर्योधनः—तात ! अम्ब ! सञ्जय !

एकेनाऽपि विनाऽनुजेन मरणं पार्थः प्रतिज्ञातवान्,
भ्रातॄणां निहते शते विषहते दुर्योधनो जीवितुम् ।
तं दुःशासनशोणिताशनमरिं भिन्नं गदाकोटिना
भीमं दिक्षु न विक्षिपामि कृपणः सन्धिं विदध्यामहम् ॥ ७ ॥

को) आशङ्कमानः = सन्देहं कुर्वाणः (सन्देह करते हुये) यदैव = यस्मिन्नेव क्षणे (जभी) भवते = तुभ्यम् (तुम्हें) रोचते = रुचिरम् भवतु (रुचिकर हो) । असौ = युधिष्ठिर (वह) सन्धातुम् = सन्धिं कर्त्तुम् (सन्धि करने को) सज्जः = सन्नद्धः (तैयार) ।

गान्धारी—उपपत्तियुक्तं=सप्रमाणम् । प्रतिपद्यस्व=स्वीकुरुष्व (मान लो) ।

अन्वयः—एकेन अपि अनुजेन विना पार्थः मरणम् प्रतिज्ञातवान् । भ्रातॄणां शते निहते अपि दुर्योधनः जीवितुं विषहते । दुःशासनशोणिताशनं तम् अरिं भीमं गदाकोटिना भिन्नं (सन्तम्) दिक्षु न विक्षिपामि ? कृपणः अहं सन्धिं विदध्याम् ॥ ७ ॥

एकेनेति । एकेन अपि = एकलेनापि (अकेले भी) अनुजेन विना = लघुभ्रात्रा विना (अनुज के न रहने से) । पार्थः=युधिष्ठिरः । मरणम्=निधनम् (मर जाने की) प्रतिज्ञातवान् = सङ्कल्पितवान् (प्रतिज्ञा की है) । (परञ्च) भ्रातॄणाम् शते= शतभ्रातृसमूहे निहते = मारिते अपि (सौ भाइयों के मारे जाने पर भी) । दुर्योधनः = शतभ्रातृनाशकर्ता जीवितुम् = प्राणान्धारयितुम् (जीवित रहने को) विषहते = सहतुं शक्नोति (सहन कर सकता है) दुःशासनशोणिताशनम्—

सञ्जय—हाँ ऐसा ही है ।

गान्धारी—पुत्र ! सप्रमाण कहे गये पिता के वचनों का पालन करो ।

दुर्योधन—पिताजी ! माताजी ! सञ्जय !

एक भी अनुज के न रहने पर पार्थ युधिष्ठिर ने मर जाने की प्रतिज्ञा की है और सौ सौ भाइयों के मारे जाने पर भी दुर्योधन जीवित रह सकेगा (यह असम्भव है) । अनुज दुःशासन का रक्तपान करने वाले उस शत्रु भीम को गदा के अग्रभाग से नष्ट हुआ क्या मैं चारों ओर न फेंकूँ ।'

गान्धारी—हा जाद दुस्सासण! हा दुम्मरिसण! हा विकण्ण! हा वीरसदप्पसविणी गान्धारी, दुक्खसदं प्पसूदा ण सुदसदम्। [हा जात दुःशासन! हा दुर्मर्षण! हा विकर्ण! हा वीरशतप्रसविनि गान्धारि, दुःखशतं प्रसूता न सुतशतम्।]

(सर्वे रुदन्ति।)

सञ्जयः—(बाष्पमुत्सृज्य।) तात! अम्ब! प्रतिबोधयितुं महाराजमिमां भूमिं युवामागतौ। तदात्माऽपि तावत्संस्तभ्यताम्।

धृतराष्ट्रः—वत्स दुर्योधन! एवं विमुखेषु भागधेयेषु त्वयि चाऽमुञ्चति

दुःशासनस्य = तन्नामानुजस्य शोणितम् = रुधिरम् अशनम् = भोजनम् यस्य तम् (दुःशासन का रक्तपान करने वाले)। तम् = अमुम् (उस) अरिम् = रिपुम् (शत्रु) भीमम् = भीमसेनम्। गदाकोटिना = गदाप्रान्तेन (गदा के अग्रभाग से) भिन्नम् = छिन्नम् (नष्ट हुये) (सन्तम्) दिक्षु=काष्ठासु (चारों ओर) न विक्षिपामि = न विकिरामि (न फेंकूँ)। कृपणः = दीनः भिक्षुकः। अहम् = दुर्योधनः। सन्धिम् = सन्धानम् (सन्धि को) विदध्याम् = कुर्याम् (करूँ)। शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम्॥ ७॥

गान्धारी—वीरशतप्रसविनि—वीरशतं प्रसूते या सा तत्सम्बुद्धौ = हे वीर शतजननी (सौ-सौ वीर पुत्रों को जन्म देने वाली)। दुःखशतम् = दुःखानां शतम् (सौ दुःख) प्रसूता = जनयित्री (जन्म देने वाली)।

सञ्जयः—वाष्पम् = अश्रूणि (आँसू) उत्सृज्य = प्रमृज्य (पोंछकर) प्रतिबोधयितुम् = सान्त्वनां दातुम् (धीरज बँधाने को)। महाराजम् = कुरुनृपम् (दुर्योधन को) इमां भूमिम् = एतत्स्थानम् (इस स्थान को)। आगतौ = समायातौ (आये हो)। संस्तभ्यताम् = स्थिरीक्रियताम्। (धैर्य धारण करो)।

धृतराष्ट्रः—विमुखेषु = विपरीतेषु (विरुद्ध)। भागधेयेषु = भाग्येषु (भाग्य वालों में) त्वयि = दुर्योधने (तुम पर)। अमुञ्चति = अत्यजति। सहजम् =

गान्धारी—हा पुत्र दुःशासन! हा दुर्मर्षण! हा विकर्ण! हा वीर प्रसविनी गान्धारी! तूने सौ पुत्र नहीं जन्मे बल्कि सौ दुःखों को पैदा किया था।

(सभी रोते हैं।)

सञ्जय—(आँसू पोंछकर) हे तात! हे अम्बा! आप दोनों महाराज को धैर्य बँधाने इस स्थान पर आये हो। अतः स्वयम् तो धैर्य धारण करो।

धृतराष्ट्र—वत्स दुर्योधन! भाग्य के विरुद्ध होने पर तुम्हारे शत्रु पर स्वाभिमान

सहजं मानबन्धमरिषु त्वदेकशेषजीविताऽऽलम्बनेयं तपस्विनी गान्धारी कमवलम्बतां शरणमहं च।

दुर्योधनः—श्रूयतां यत्प्रतिपत्तुमिदानीं प्राप्तकालम्—

कलितभुवना भुक्तैश्वर्यास्तिरस्कृतविद्विषः,
प्रणतशिरसां राज्ञां चूडासहस्रकृतार्चनाः।
अभिमुखमरीन्सङ्ख्ये घ्नन्तो हताः शतमात्मजाः,
वहतु सगरेणोढां तातो धुरं सहितोऽम्बया॥ ८॥

स्वाभाविकम्। मानबन्धम् = स्वाभिमानम्। अरिषु = शत्रुषु। त्वदेकशेषजीविता-लम्बना—त्वयि एकशेषे = एकावशिष्टे जीवितस्य=जीवनस्य आलम्बनम्=आधारो यस्याः सा (एक मात्र जिसके तुम्ही आधार रह गये हो)। इयम् = एषा। तपस्विनी = त्यक्ताखिला कम् = अन्यम् कम् (किसको) अवलम्बताम् = आधारं करोतु (सहारा बनाये)। शरणम् = रक्षकम् (रक्षक बनाऊँ)।

दुर्योधनः—इदानीम् = साम्प्रतम् (अब) यत्प्रतिपत्तुम् = यद् विधातुम् (जो कार्य करने को) प्राप्तकालम् = लब्धावसरः (समय प्राप्त हुआ)। श्रूयताम् = आकर्ण्यताम् (सुनिये)।

अन्वयः—कलितभुवनाः भुक्तैश्वर्याः तिरस्कृतविद्विषः प्रणतशिरसां राज्ञां चूडासहस्रकृतार्चनाः संख्ये अरीन् घ्नन्तः अभिमुखं शतम् आत्मजाः हताः। (अतः) अम्बयासहितः तातः सगरेण ऊढां धुरं वहतु॥ ८॥

कलितेति। कलितभुवनाः—कलितानि = आक्रान्तानि भुवनानि = त्रिलोकम् यैस्तेः (त्रिभुवन को आक्रान्त किये हुये)। भुक्तैश्वर्याः—भुक्तम् = सेवितम् ऐश्वर्यं = वैभवम् यैस्ते (ऐश्वर्य भोग किये हुये)। तिरस्कृतविद्विषः—तिरस्कृताः = अवमानिताः विद्विषो यैस्ते (शत्रुओं का तिरस्कार किये हुये) प्रणतशिरसाम्—प्रणतानि = अवनतानि शिरांसि = उत्तमाङ्गानि यैस्तेषाम् (सिर झुकाये हुये) राज्ञाम् = नृपाणाम् (राजाओं के)। चूडासहस्रकृतार्चनाः—चूडानाम्=शिखानाम्

न्योछावर न करने पर एक मात्र तुम्हीं जिसका जीवन का आधार रह गये हो ऐसी यह तपस्विनी, गान्धारी और किसका सहारा पकड़े तथा मैं किसकी शरण जाऊँ?

दुर्योधन—सुनो जो करने को अब समय है—

समस्त संसार की रक्षा करने वाले, ऐश्वर्यों का भोग करने वाले, शत्रुओं का तिरस्कार करने वाले, नतमस्तक राजाओं के हजारों चूड़ामणियों से अर्चन कराने वाले, युद्ध में शत्रुओं का संहार करते हुये आप के समक्ष ही सौ पुत्र मार डाले गये। (अतः) माता सहित

विपर्यये त्वस्याऽधिपतेरुल्लङ्घितः क्षात्रधर्मः स्यात् ।

(नेपथ्ये महान्कलकलः ।)

गान्धारी—(आकर्ण्य । सभयम् !) सञ्जय ! कहिं एदं हाहाकारमिस्सं तूररसिदं सुणीअदि । [सञ्जय ! कुत्रैतत् हाहाकारमिश्रं तूर्यरसितं श्रूयते ।]

सञ्जयः—अम्ब ! भूमिरियमेवंविधानां भीरुजनत्रासजननी महानिनादानाम् ।

सहस्रैः = अतिसंख्यैः कृतम् = विहितम् अर्चनम् = पूजनम् यैस्ते (हजारों शिरों से पूजित)। संख्ये=सङ्गरे (युद्ध में)। अरीन् = रिपून् (शत्रुओं को) घ्नन्तः = प्रहरन्तः (मारते हुये)। अभिमुखम् = सम्मुखम् (सामने) शतम् आत्मजाः = शतसुताः (सौ पुत्र) हताः=मारिताः (मार डाले)। (अतः) अम्बया=मात्रा सहितः=संयुक्त (माता सहित)। तातः=जनकः (पिताजी)। सगरेण = सगरनाम्ना पूर्वजेन ऊढाम् = धृताम् (धारण की गई)। धुरम् = भारम् (बोझ को) बहतु = धारयतु (धारण करें)। हरिणी वृत्तम् । तद्यथा—नसमरसलागाः षड्वेदैर्हयैर्हरिणी स्मृता ॥ ८ ॥

विपर्यये = विपरीतदशायाम् (इससे विपरीत स्थिति में) अस्य = एतस्य । अधिपतेः = नृपस्य क्षात्रधर्मः = क्षत्रियोचितमार्गः (क्षत्रियों का धर्म) उल्लङ्घितः स्यात् = लङ्घितो भूयात् (उल्लंघित हो जायेगा)।

गान्धारी—आकर्ण्य=श्रुत्वा (सुनकर) हाहा-कारमिश्रम् = हाहेतिशब्दयुक्तम् (हाहाकार मिश्रित)। तूर्यरसितम् = तूर्यध्वनिम् (तुरुही की आवाज) श्रुयते = अकर्ण्यते (सुनाई पड़ रहा है)।

सञ्जयः—एवंविधानाम्=ईदृशानाम् (ऐसों की)। भूमिः = स्थली (स्थान)

पिता जी सगर नृप के द्वारा धारण किये गये भार के समान ही आप पृथ्वी के भार को धारण करें ॥ ८ ॥

इसके विपरीत कार्य करने पर इनका क्षात्र धर्म का उल्लंघन हो जायेगा ।

(नेपथ्य में महान् कोलाहल होता है)।

गान्धारी—(सुनकर, भय के साथ) सञ्जय ! क्या यह हाहाकारयुक्त तुरुही की आवाज सुनाई पड़ रही है ?

सञ्जय—अम्ब ! इस प्रकार हाहाकारों की यह भूमि कायर लोगों को भयभीत करने वाली होती ही है ।

टिप्पणी—राजा सगर के साठ हजार पुत्रों का कपिल मुनि के शाप से विनाश हो गया था । तत्पश्चात् सगर ने स्वयम् इस दशा में शासन व्यवस्था सुधारी थी ।

धृतराष्ट्रः—वत्स सञ्जय ! ज्ञायतामतिभैरवः खलु विस्तारी हाहारवः । कारणेनाऽस्य महता भवितव्यम् ।

दुर्योधनः—तात ! प्रसीद । पराङ्मुखं खलु दैवमस्माकम् । यावदपरमपि किञ्चिदत्याहितं न श्रावयति तावदेवाऽऽज्ञापय मां सङ्ग्रामाऽऽवतरणाय ।

गान्धारी—जाद ! मुहुत्तअं दाव मं मन्दभाइणीं समस्सासिहि । [जात ! मुहूर्तकं तावन्मां मन्दभागिनीं समाश्वासय ।]

धृतराष्ट्रः—वत्स ! यद्यपि भवान्समराय कृतनिश्चयस्तथापि रहः परप्रतीघातोपायश्चिन्त्यताम् ।

भीरुजनत्रासजननी = कातरजनभयोत्पादिनी (कायरों को भय उत्पन्न करने वाली) । महानिनादानाम् = घोरशब्दानाम् (घमाशान शोर की) ।

धृतराष्ट्रः—ज्ञायताम् = जानाहि (मालूम करो) । अतिभैरवः = महद्भयङ्करः (अति डरावना) हाहारवः = हाहाकारः । अस्य = एतस्य हाहाकारस्य । महता कारणेन = महद्हेतुना (बड़ा कारण) ।

दुर्योधनः—खलु = किल (निश्चय ही) अस्माकम् = कौरवाणाम् (हमारा) पराङ्मुखम् = विपरीतम् दैवम् = भाग्यम् । अपरम् = अन्यत् । अत्याहितम् = अत्यनिष्टम् (बहुत खराब) । न श्रावयति = कर्णपथं न प्रापयति (सुना नहीं देता) । माम् = दुर्योधनम् (मुझे) संग्रामावतरणाय—संग्रामे = रणे अवतरणाय = उत्तरणाय (युद्ध भूमि में उतरने के लिए) । आज्ञापय = आदिश (आदेश दो) ।

गान्धारी—मुहूर्त्तकम् = क्षणम् (थोड़ी देर) मन्दभागिनीम् = अभागिनीम् (भाग्यहीना को) । समाश्वासय = धैर्यं धारय (धीरज दिलाओ) !

धृतराष्ट्रः—वत्स = पुत्र ! समराय = युद्धाय । कृतनिश्चयः—कृतः = विहितः निश्चयः = संकल्पो येन सः (निश्चय किये हुये) । रहः = एकान्तम् । परप्रतीघातो-

---

धृतराष्ट्र—वत्स सञ्जय ! ज्ञात करो यह अतिभयङ्कर विशाल हाहाकार कैसा है ? इसका कारण भी कोई बड़ा ही होगा ।

दुर्योधन—पिताजी ! प्रसन्न हो जाओ । वास्तव में भाग्य हमारे प्रतिकूल है । जब तक कोई दूसरी अनिष्ट सूचना नहीं सुना देता है उससे पूर्व ही आप मुझे युद्धभूमि पर उतरने के लिये आज्ञा दीजिये ।

गान्धारी—पुत्र ! क्षण भर मुझ मन्दभागिनी को तो धैर्य बँधा लो ।

धृतराष्ट्र—वत्स ! यद्यपि तुम युद्ध में जाने का निश्चय कर चुके हो तथापि एकान्त में बैठकर शत्रु-संहार का उपाय सोचना चाहिये ।

दुर्योधनः--

प्रत्यक्षं हतबान्धवा मम परे हन्तुं न योग्या रहः,
किं वा तेन कृतेन तैरिह कृतं यन्न प्रकाश्यं रणे ।

गान्धारी--जाद ! एआइ तुमम् । को दे सहाअत्तणं करिस्सदि । [जात ! एकाकी त्वम् । कस्ते सहायतां करिष्यति ।]

एकोऽहं जगतीत्रय क्षयकरो मातः ! कियन्तोऽरयः,
साम्यं केवलमेतु दैवमधुना निष्पाण्डवा मेदिनी ।। ९ ।।

पायः—परेषाम् = शत्रूणाम् प्रतीघातस्य = प्रतीकारस्योपायः (शत्रुओं के प्रतीघात का उपाय) चिन्त्यताम् = विचार्यताम् (विचार किया जाय) ।

अन्वयः—प्रत्यक्षम् हतबान्धवाः परे रहः मम हन्तुं न योग्याः । इह रणे तैः प्रकाश्यं यत् कृतं (तद् यदि मया प्रकाश्यम्) न कृतं तेन कृतेन वा किम् ?

प्रत्यक्षमिति । प्रत्यक्षम् = समक्षम् (सामने ही) । हतबान्धवाः—हताः = मारिताः बान्धवाः = भ्रातरो यैस्ते (जिन्होंने हमारे बान्धवों को मार डाला) परे = शत्रवः (शत्रु) मम = मे (मेरे) हन्तुम्= घातितुम् (मारने को) योग्याः न = अर्हाः न सन्ति (योग्य नहीं हैं) । इह=अत्र । रणे=युद्धे (युद्ध में) तैः = शत्रुभिः (शत्रुओं द्वारा) प्रकाश्यम् यत् कृतम् = भीष्मद्रोणादि-वधरूप-पौरुषं यत् प्रकटितम् (जो कार्य प्रकटित किया) तत् प्रकाश्यम् न कृतम् = तत् पौरुष-प्रकटनरूपकार्यम् न कृतम् (यदि मैंने वैसा कोई पौरुष नहीं दिखला पाया) । तेन = तथाविधेन कृतेन = करणेन (वैसा करने से) वा = अथवा किम् ?

गान्धारी—एकाकी = एकलः (अकेले) त्वम् = दुर्योधनः (तुम) सहायताम् = सहयोगम् ।

अन्वयः—मातः ! एकः अहं जगतीत्रयक्षयकरः अरयः कियन्तः ! अधुना केवलं दैवं साम्यम् एतु मेदिनी निष्पाण्डवा ।। ९ ।।

एकोऽहमिति । मातः = जननि ! एकः = अद्वितीयः । अहम् = दुर्योधनः ।

दुर्योधन—मेरे सामने ही शत्रुओं ने मेरे भाइयों को मार डाला पर मैं उन्हें मारने में समर्थ न हो सका । इस युद्ध में उन शत्रुओं ने भीष्मद्रोणादि वीरों का संहार कर जो पौरुष दिखलाया यदि वैसा मैं नहीं दिखला पाया तो इससे क्या ?

गान्धारी—बेटे ! तुम अकेले हो, तुम्हारी सहायता कौन करेगा ?

दुर्योधन—हे मातः ! अकेला ही मैं त्रिभुवन का विनाश कर सकता हूँ । शत्रु कितने ही हों । पर भाग्य अनुकूल हो जाये तो पृथ्वी पाण्डवों से हीन ही समझ लो ।। ९ ।।

(नेपथ्ये । कलकलानन्तरम् ।)

भो भो योधाः ! निवेदयन्तु भवन्तः कौरवेश्वराय, इदं महत्कदनं प्रवृत्तम् । अलमप्रियश्रवणपराङ्मुखतया । यतः कालानुरूपं प्रतिविधातव्यमिदानीम् । तथा हि—

त्यक्तप्राजनरश्मिरङ्किततनुः पार्थाङ्कितैर्मार्गणै-
वहैः स्यन्दनवर्त्मनां परिचयादाकृष्यमाणः शनैः ।
वार्तामङ्गपतेर्विलोचनजलैरावेदयन्पृच्छतां
शून्येनैव रथेन याति शिविरं शल्यः कुरूञ्छल्ययन् ॥ १० ॥

जगतीत्रयक्षयकरः—जगतीत्रयस्य = त्रिभुवनस्य क्षयकरः = नाशकः (त्रिभुवन का संहार करने वाला) (अस्मि)। अरयः = शत्रवः (शत्रु) कियन्तः = कियन्मात्राः सन्तु (कितने भी हों) अधुना = साम्प्रतम् । केवलम् । दैवम् = भागधेयम् (भाग्य) साम्यम्=अनुकूलम् । एतु=गच्छतु (भाग्य अनुकूल हो जाय) (तर्हि) मेदिनी = पृथ्वी । निष्पाण्डवा = पाण्डवहीना (पाण्डवों से रहित हो जाये) शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम् ॥ ९ ॥

कौरवेश्वराय—कुरुनृपाय दुर्योधनाय (कौरवराज के लिए)। निवेदयन्तु = कथयन्तु (निवेदन कर दें)। इदम् = एतत् (यह) महत्कदनम् = अतिभीषणम् ('कदनं भीषणे पापे' इति विश्वः)। प्रवृत्तम्=सम्वृत्तम् (हो रहा है)। अप्रियश्रवणपराङ्मुखतया—अप्रियस्य=अनभीप्सितस्य श्रवणात् = आकर्णनात् पराङ्मुखः = प्रतिकूलस्तस्य भावस्तया (अप्रिय बात सुनने से मुख मोड़ने से) । यतः = यस्मात् (क्योंकि)। कालानुरूपम् = समयानुसारम् प्रतिविधातव्यम् = आचरणीयम् (करना चाहिये)।

अन्वयः—त्यक्तप्राजनरश्मिः पार्थाङ्कितैः मार्गणैः अङ्कितततनुः स्यन्दनवर्त्मनां परिचयात् वाहैः शनैः आकृष्यमाणः पृच्छताम् विलोचनजलैः अङ्गपतेः वार्ताम् आवेदयन् शल्यः कुरून् शल्ययन् शून्येन एव रथेन शिविरं याति ॥ १० ॥

त्यक्तेति । त्यक्तप्राजनरश्मिः—त्यक्तम् = उज्झितम् प्राजनम् = तोत्रम् रश्मिः

(नेपथ्य में कोलाहल होने के अनन्तर)

अरे रे योधाओ ! आप कौरवेश्वर को बता दें। अप्रिय समाचार सुनने से मुख मोड़ना व्यर्थ है क्योंकि कालानुरूप ही अब कार्य करना चाहिये। क्योंकि—

चाबुक तथा लगाम छोड़ा हुआ, अर्जुन के नाम से अंकित बाणों से चिह्नित शरीर वाला रथ के मार्गों से परिचित होने के कारण घोड़ों द्वारा धीरे-धीरे रथ ले जाता हुआ, कर्ण की

दुर्योधनः—(श्रुत्वा । साशङ्कम् ।) आः ! सूत ! केनेदमविस्पष्टमशनिपातदारुणमुद्घोषितम् । ज्ञायताम् । कः कोऽत्र भोः ।

(प्रविश्य सम्भ्रान्तः ।)

सूतः—हा ! हताः स्मः । (इत्यात्मानं पातयति ।)

=प्रग्रहश्च येन सः ('प्राजनं तोदनं तोत्रम्' 'किरणप्रग्रहौ रश्मी' इत्यमरः) (जिसकी चाबुक तथा लगाम छूट गई हो) । पार्थाङ्कितैः = अर्जुननामाङ्कितैः (अर्जुन नाम से अङ्कित) । मार्गणैः=शरैः (बाणों से) । अङ्कितततनुः—अङ्कितः= चिह्नितः तनुः = शरीरम् यस्य सः (चिह्नित शरीर वाला) । स्यन्दनवर्त्मनाम्—स्यन्दनस्य = रथस्य वर्त्मनाम् = मार्गाणाम् (रथ के मार्गों के) परिचयात् = अभिज्ञानात् (परिचय होने से) वाहैः = अश्वैः (घोड़ों द्वारा) । शनैः = मन्दं मन्दम् (धीरे-धीरे) आकृष्यमाणः = नीयमानः (खींचा जा रहा) । पृच्छताम् = जिज्ञासमानानाम् (पूँछे जा रहों को) विलोचनजलैः = अश्रुभिः (आँसुओं से) । अङ्गपतेः = कर्णस्य (अङ्गराज के) वार्ताम् = वृत्तम् (समाचार) आवेदयन् = निवेदयन् (बतलाते हुये) शल्यः = कर्णसारथिः (शल्य) कुरुन् = कौरवपक्षीयान् (कौरवों को) शल्ययन्=पीडयन् (पीड़ित करते हुये) । शून्येन एव = रिक्तेनैव (खाली) रथेन = स्यन्दनेन (रथ द्वारा) शिविरम् = सैन्यस्थलम् (शिविर को) याति=गच्छति (जा रहा है) । अत्र यमकालङ्कारः । शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम् ॥ १० ॥

दुर्योधनः—केन = केन पुरुषेण (किसके द्वारा) अविस्पष्टम् = अस्फुटम् (अस्पष्ट) अशनिपातदारुणम्—अशनेः = वज्रस्य पातः = पतनं, तद्वद् दारुणम्= कठोरम् (वज्रपात जैसा कठोर) उद्घोषितम् = उच्चैः घोषितम् (ऊँचा उद्घोष किया है) । ज्ञायताम् = जानातु (मालूम करो) ।

सूतः—हताः स्मः = घातिताः स्मः (हम मार डाले गये) आत्मानम् = स्वम् (अपने को) पातयति = पतनं करोति (गिरा देता है) ।

बात पूछे जाने पर आँसू बहाता हुआ समाचार बतलाता हुआ शल्य कौरवों को पीडित करता हुआ शल्य खाली रथ लेकर शिविर को जा रहा है ॥ १० ॥

दुर्योधन—(सुनकर, सशंक) अरे सूत ! यह वज्रपात-सा भयङ्कर उद्घोष किसने किया । मालूम करो । अरे ! कोई यहाँ है ।

(प्रवेश कर, सभय)

सूत—हाय ! हम लोग मारे गये । (यह कहकर अपने को गिरा देता है ।)

दुर्योधनः—अयि ! कथय, कथय ।

धृतराष्ट्रसञ्जयौ—कथ्यतां कथ्यताम् ।

सूतः—आयुष्मन् ! किमन्यत् ।

शल्येन यथा शल्येन मूर्च्छितः प्रविशता जनौघोऽयम् ।
शून्यं कर्णस्य रथं मनोरथमिवाधिरूढेन ॥ ११ ॥

दुर्योधनः—हा वयस्य कर्ण ! (इति मोहमुपगतः ।)

गान्धारी—जाद, समस्सस समस्सस ! [जात ! समाश्वसिहि, समाश्वसिहि ।]

दुर्योधनः—कथय = भण (कहो) ।

धृतराष्ट्रसञ्जयौ—कथ्यताम् = उच्यताम् (कहिये) ।

सूतः—आयुष्मन् = चिरञ्जीविन् (हे दीर्घ जीविन्) । अन्यत् = अपरम् किम् (और क्या) ।

अन्वयः—प्रविशता शल्येन यथा (शून्यं) मनोरथम् इव शून्यं कर्णस्य रथम् अधिरूढेन (प्रविशता) शल्येन अयं जनौघः मूर्च्छितः (अभूत्) ॥ ११ ॥

शल्येनेति । प्रविशता = प्रवेशं विदधता (प्रवेश करते हुये) शल्येन = विषवाणेन (शल्य ने) यथा = येन प्रकारेण (जैसा) शून्यम् = रिक्तम् । मनोरथम् = अभीप्सितम् इव (शून्य मनोरथ जैसा) । कर्णस्य = अङ्गराजस्य (कर्ण का) । रथम् = स्यन्दनम् (रथ) । अधिरूढेन = आरूढेन (आरूढ) शल्येन = कर्णसारथिना अयम् = एषः । जनौघः—जनानाम् = लोकानाम् ओघः = समूहः (लोगों का झुण्ड) मूर्च्छितः = विसंज्ञः अभूत् (बेहोश हो गया) । अत्रोपमायमकालङ्कारौ । आर्या वृत्तम् । तद्यथा—यस्याः पादे प्रथमे द्वादशमात्रा तथा तृतीयेऽपि । अष्टादश द्वितीये चतुर्थके पञ्चदश साऽऽर्या ॥ ११ ॥

दुर्योधनः—वयस्य = मित्र ! मोहम् = मूर्च्छाम् (बेहोशी को) उपगतः = सम्प्राप्तः ।

दुर्योधन—अरे—कहु, कहु ।

धृतराष्ट्र तथा सञ्जय—कहिये, कहिये ।

सूत—आयुष्मन् ! और क्या ?

प्रवेश कर रहे विषैले बाण के समान शून्य मनोरथ जैसा कर्ण के रथ (कर्ण से शून्य) पर अधिरूढ़ प्रवेश कर रहे शल्य से यह जन समूह मूर्च्छित हो गया ॥ ११ ॥

दुर्योधन—हा मित्र कर्ण ! (यह कहकर बेहोश हो जाता है ।)

गान्धारी—पुत्र ! धैर्य रखो, धैर्य रखो ।

सञ्जयः—समाश्वसितु देवः, समाश्वसितु ।

धृतराष्ट्रः—भो कष्टं कष्टम्—

भीष्मे द्रोणे च निहते य आसीदवलम्बनम् ।
वत्सस्य च सुहृच्छूरो राधेयः सोऽप्ययं गतः ॥ १२ ॥

वत्स, समाश्वसिहि समाश्वसिहि । ननु भो हतविधे !

अन्धोऽनुभूतशतपुत्रविपत्तिदुःखः
शोच्यां दशामुपगतः सह भार्ययाऽहम् ।
अस्मिन्नशेषितसुहृत्गुरुबन्धुवर्गे
दुर्योधनेऽपि हि कृतो भवता निराशः ॥ १३ ॥

सञ्जयः—समाश्वसितु = धैर्यं धारयतु (धैर्य धारण करें) ।

अन्वयः—भीष्मे द्रोणे च निहते यः अवलम्बनम् आसीत् । वत्सस्य शूरः सुहृत् च (आसीत्) । सः अयं राधेयः अपि गतः ॥ १२ ॥

भीष्म इति । भीष्मे = पितामहगाङ्गेये (भीष्म) द्रोणे = द्रोणाचार्ये (द्रोण के) निहते = मृत्युं प्रापिते (मारे जाने पर) यः = कर्णः (जो कर्ण) । अवलम्बनम् = आश्रयः (सहारा) आसीत् (था) । वत्सस्य = सुतस्य दुर्योधनस्य (पुत्र का) शूरः = वीरः । सुहृत् = सखा आसीत् । सः अयम् = एषः (यह) राधेयः = राधासुतः अपि (राधेय कर्ण भी) गतः = प्रयातः (चल बसा) । अनुष्टुब् वृत्तम् ॥ १२ ॥

हतविधे = दुष्टविधातः ! (हे दुर्भाग्य) ।

अन्वयः—अन्धः अनुभूतशतपुत्रविपत्ति-दुःखः अहं भार्यया सह शोच्यां दशाम् उपगतः । हि अशेषितसुहृद्-गुरु-बन्धुवर्गे अस्मिन् दुर्योधने अपि भवता निराशः कृतः (अस्मि) ॥ १३ ॥

अन्ध इति । अन्धः = विगतनयनः (अन्धे) । अनुभूत-शतपुत्र-विपत्ति-दुःखः—अनुभूतम् = अनुभवविषयीकृतम् शतपुत्राणाम् = शतसंख्यसुतानाम् विपत्तिः =

सञ्जय—धैर्य रखें । महाराज ! धैर्य रखें ।

धृतराष्ट्र—हाय ! कष्ट है, कष्ट है ।

भीष्म तथा द्रोण के मारे जाने पर जो सहारा बना हुआ था और जो मेरे बेटे का मित्र तथा वीर योद्धा था, ऐसा यह राधेय कर्ण भी चल बसा ॥ १२ ॥

वत्स ! धैर्य रखो, धैर्य रखो । अरे दुर्भाग्य !

अन्धा, सौ पुत्रों के विनाश दुःख का अनुभव किया हुआ मैं पत्नी सहित शोचनीय

वत्स दुर्योधन ! समाश्वसिहि । समाश्वासय तपस्विनीं मातरं च ।

दुर्योधनः—(लब्धसंज्ञः ।)

अयि कर्ण ! कर्णसुखदां प्रयच्छ मे
गिरमुद्गिरन्निव मुदं मयि स्थिराम् ।
सतताऽवियुक्तमकृताऽप्रियं कथं
वृषसेनवत्सल ! विहाय यासि माम् ॥ १४ ॥

मरणमेवदुःखम् = कष्टं येन सः (सौ पुत्र के निधन दुःख का अनुभव किये हुये) अहम्=धृतराष्ट्रः । भार्यया सह=पत्न्या गान्धार्या समम् (पत्नी सहित) शोच्याम् =शोचनीयाम् दशाम् = अवस्थाम् (शोचनीय दशा को) उपगतः = सम्प्राप्तः (पहुँच गया हूँ) । हि=यतः अशेषित-सुहृद्गुरुबन्धुवर्गे—अशेषितः=निःशेषं गतः सुहृदाम् = मित्राणां बन्धूनाञ्च = भ्रातृणाम् च वर्गः = समूहो यस्य तस्मिन् (मित्र तथा बन्धु वर्ग जिसका नष्ट हो चुका है, ऐसे) भवता = त्वया (तूने) । निराशः कृतः = आशाहीनो विहितः (निराश कर दिया है) । काव्यलिङ्गमलङ्कारः । बसन्ततिलका वृत्तम् ॥ १३ ॥

समाश्वासयः=धैर्यं धारय (धैर्य बँधाओ) । तपस्विनी = तपावृताम् । मातरम् = जननीम् ।

अन्वयः—अयि कर्ण ! मयि स्थिराम् मुदम् उद्गिरन् इव मे कर्णसुखदाम् गिरं प्रयच्छ । हे वृषसेनवत्सल ! सतताऽवियुक्तम् अकृताऽप्रियं मां विहाय कथं यासि ॥ १४ ॥

अयि कर्णेति । अयि कर्ण = भोऽङ्गराज ! मयि = दुर्योधने ! स्थिराम् = चिरस्थायिनीम् मुदम् = प्रसन्नताम् । उद्गिरन् इव = प्रकटीकुर्वन्निव (प्रकट-सी करते हुये) मे = मम कर्णसुखदाम्—कर्णयोः = श्रोत्रयोः सुखं ददातीति ताम् = आनन्द-

---

उस दशा को प्राप्त हो चुका हूँ कि समस्त मित्र तथा बन्धुवर्ग हीन इस दुर्योधन पर भी तूने मुझे निराश कर दिया है ॥ १३ ॥

हे वत्स दुर्योधन ! धैर्य धारण करो, धैर्य धारण करो तथा तपस्विनी माता को भी धीरज बँधाओ ।

दुर्योधन—(होश में आकर) हे कर्ण ! मेरे मन में चिरस्थायिनी प्रसन्नता प्रकट-सी कर रही मेरे कानों को सुख देने वाली वाणी में मुझे उत्तर दो । हे वृषसेन-वत्सल ! निरन्तर साथ रहने वाले तथा कभी भी अप्रियकार्य न करने वाले मुझ दुर्योधन को छोड़कर तुम कहाँ जा रहे हो, बोलो ॥ १४ ॥

(इति पुनर्मोहमुपगतः । सर्वे समाश्वासयन्ति ।)

दुर्योधनः—

मम प्राणाधिके तस्मिन्नङ्गानामधिपे हते।
उच्छ्वसन्नपि लज्जेऽहमाश्वासे तात ! का कथा ? ॥ १५ ॥

अपि च—

शोचामि शोच्यमपि शत्रुहतं न वत्सं
दुःशासनं तमधुना न च बन्धुवर्गम् ।

दायिनीम् (कानों को सुख देने वाली) । गिरम् = वाचम् (वाणी को) । प्रयच्छ = देहि (दो) । हे वृषसेनवत्सल = अयि वृषसेनप्रिय ! सततावियुक्तम्—सततम् = निरन्तरम् अवियुक्तम्=अपृथग्भूतम् (सदा साथ रहने वाले) । अकृताऽप्रियम्—अकृतम् = अविहितम् अप्रियम् = अरुचिकरम् कर्म येन तथाविधम् (कभी भी अप्रिय न करने वाले) माम् = दुर्योधनम् (मुझे) विहाय = परित्यज्य (छोड़कर) । कथम् = किमिति (कैसे) । यासि = गच्छसि (जा रहे हो) । अत्रोपमायमकालङ्कारौ । मञ्जुभाषिणी वृत्तम् । तद्यथा—सजसाजगौ च यदि मञ्जुभाषिणी ॥ १४ ॥

अन्वयः—तात ! मम प्राणाधिके अङ्गानाम् अधिपे तस्मिन् हते अहम् उच्छ्वसन् अपि लज्जे । आश्वासे (पुनः) का कथा ? ॥ १५ ॥

ममेति । तात = पितः ! मम = दुर्योधनस्य (मेरे) प्राणाधिके—प्राणेभ्यः अपि अधिके = महति (प्राणों से भी बढ़कर) अङ्गानामधिपे = अङ्गराजे कर्णे । हते = मारिते (उस अंगराज के मारे जाने पर) अहम् = दुर्योधनः (मैं) उच्छ्वसन् अपि = श्वासं गृह्णन्नपि (उच्छ्वास लेते हुये भी) लज्जे = लज्जामनुभवामि (लज्जा कर रहा हूँ) । आश्वासे=धैर्यम् धारयामि (ढाढस बाँधू) । (पुनः) का कथा = जीवनस्य तु वार्तैव का (जीवित रहने की तो बात ही क्या ?) । अनुष्टुब् वृत्तम् ॥ १५ ॥

अन्वयः—अधुना शत्रुहतं शोच्यम् अपि वत्सं तं दुःशासनं बन्धुवर्गं च

(यह कह कर पुनः मूर्च्छित हो जाता है । सभी लोग धैर्य बँधाते हैं ।)

दुर्योधन—हे तात ! मेरे प्राणों से भी अधिक प्रिय अङ्गराज कर्ण के मारे जाने पर मैं श्वास लेने में भी लज्जा का अनुभव कर रहा हूँ । धैर्य धारण कर जीवित रहने की तो बात ही क्या ? ॥ १५ ॥

और भी—अब शत्रुओं द्वारा मारे गये शोचनीय पुत्र, प्रिय अनुज दुःशासन तथा अन्य

येनाऽतिदुःश्रवमसाधुकृतं तु कर्णे
कर्ताऽस्मि तस्य निधनं समरे कुलस्य ॥ १६ ॥

गान्धारी—जाद ! सिढिलेहि दाव क्खणमेत्तं बाप्पमोक्खम् । [जात ! शिथिलय तावत्क्षणमात्रं बाष्पमोक्षम् ।]

धृतराष्ट्रः—वत्स ! क्षणमात्रं परिमार्जयाऽश्रूणि ।

दुर्योधनः—

मामुद्दिश्य त्यजन्प्राणान् केनचिन्न निवारितः ।
तत्कृते त्यजतो बाष्पं किं मे दीनस्य वार्यते ॥ १७ ॥

शोचामि किन्तु येन कर्णे अतिदुःश्रवम् असाधुकृतम्, तस्य कुलस्य समरे निधनं कर्ता अस्मि ॥ १६ ॥

शोचामिति । अधुना = साम्प्रतम् (अव) । शत्रुहतम्—शत्रुभिः = रिपुभिः हतम् = मारितम् (शत्रुओं द्वारा मारे गये) । शोच्यम् = शोचनीयम् । वत्सम् = सुतम् (शोचनीय पुत्र को) । तम् = तथाविधम् । दुःशासनम् = अनुजम् । बन्धुवर्गम् = भ्रातृवर्गम् च (और बन्धुवर्ग को) । न शोचामि = नैव चिन्तयामि (शोक नहीं कर रहा हूँ) । किन्तु येन = येन शत्रुणा (जिसने) कर्णे = राधेये (कर्ण पर) । अतिदुःश्रवम् = बहुदुःखश्राव्यम् (अत्यन्त दुःख के साथ सुना जा सकने वाला) । असाधु = अमङ्गलकर्म कृतम् = विहितम् (किया है) । तस्य कुलस्य = तस्य वंशस्य (उसके कुल का) समरे = रणे (युद्ध में) निधनम् = विनाशम् । कर्ता अस्मि=कारकोऽस्मि (विनाश करने वाला हूँ) । वसन्ततिलका वृत्तम् ॥ १६ ॥

गान्धारी—शिथिलय = शैथिल्यं नय (शिथिल कर लो, रोक लो) । क्षणमात्रम्=निमिषमात्रम् (थोड़ी देर) वाष्पमोक्षम्=अश्रुमोचनम् (आँसू बहाना) ।

धृतराष्ट्रः—आश्रूणि = अश्रुजलम् (आँसू) । परिमार्जय = प्रोञ्छय (पोंछ लो) ।

बन्धुवर्ग का मुझे शोक नहीं है किन्तु जिस दुष्ट ने कर्ण के साथ अति दुःख से सुना जा सकने वाला अमङ्गल कार्य (संहार) किया है मैं उसके वंश का संग्राम में विनाश करने वाला हूँ ॥ १६ ॥

गान्धारी—बेटे ! थोड़ी देर को आँसू बहाना रोक लो ।

धृतराष्ट्र—वत्स ! क्षणभर को आँसू पोंछ लो ।

सूतः ! केनैतदसम्भावनीयमस्मत्कुलान्तकरं कर्म कृतं स्यात्।

सूतः—आयुष्मन् ! एवं किल जनः कथयति ।

भूमौ निमग्नचक्रश्चक्रायुधसारथेः शरैस्तस्य ।
निहतः किलेन्द्रसूनोरस्मत्सेनाकृतान्तस्य ॥ १८ ॥

अन्वयः—माम् उद्दिश्य प्राणान् त्यजन् (यः) केनचित् न निवारितः । तत्कृते बाष्पम् त्यजतः दीनस्य मे किं वार्यते ॥ १७ ॥

मामिति । माम् = दुर्योधनम् (मुझको) उद्दिश्य = अभिलक्ष्य (लक्ष्य करके) प्राणान् = जीवनम् (प्राण) त्यजन् = मुञ्चन् (छोड़ते हुये) (यः) केनचित् = केनचिदपि जनेन (किसी भी व्यक्ति के द्वारा)। न निवारितः (नहीं रोका गया) तत्कृते = तस्य हेतौ (उसके लिये)। बाष्पम् = अश्रूणि (आँसू)। त्यजतः = मुञ्चतः (बहा रहे) । दीनस्य = शोकार्तस्य मे = मम (मुझे) किम् = किमर्थम् (क्यों) वार्यते = निवार्यते (मना किया जा रहा है)। अनुष्टुब् वृत्तम् ॥ १७ ॥

सूतः ! = अयि सारथि ! एतत् = इदम् (यह) असम्भावनीयम् = असम्भाव्यम् (जिसकी संभावना नहीं की जा सकती)। अस्मत्कुलान्तकरम्—अस्माकम् = कौरवाणाम् कुलस्य = वंशस्यान्तकरम् = नाशकम् (हमारे वंश का अन्त करने वाला)। कर्म = कर्णवधम् (काम) कृतम् = विहितं स्यात् (किया हो)।

अन्वयः—भूमौ, निमग्नचक्रः (कर्णः) चक्रायुधसारथेः तस्य अस्मत्सेना-कृतान्तस्य, इन्द्रसूनोः शरैः निहतः किल ॥ १८ ॥

भूमाविति । भूमौ = पृथिव्याम् (भूमि में) निमग्नचक्रः—निमग्नम् = प्रविष्टम् चक्रम् = रथचक्रम् यस्य सः (जिसके रथ का पहिया धँस गया था) (कर्णः) चक्रायुधसारथेः—चक्रम् आयुधम् = शस्त्रम् यस्य सः चक्रायुधः, चक्रा-युधः = कृष्णः सारथिः=रथवाहको यस्य सः (कृष्ण द्वारा रथ हाँके जाने वाले)। तस्य = तथाविधस्य (उस)। अस्मत्सेनाकृतान्तस्य—अस्माकम् = कौरवाणाम्

दुर्योधन—मेरे लिये प्राण देते हुये जिस कर्ण को किसी भी व्यक्ति ने नहीं रोका, (तो फिर) उसी कर्ण के लिये आँसू बहा रहे मुझ दुःखी को क्यों रोका जा रहा है ॥ १७ ॥

सूत ! यह असम्भव कर्म (कर्णवध) किसने किया ?

सूत—आयुष्मन् ! लोग ऐसा कहते हैं कि—

भूमि में रथ का पहिया धँस जाने पर कर्ण चक्रधारी कृष्ण के द्वारा हाँके जा रहे रथ वाले उस हमारी सेना का विनाश करने वाले शक्रसुत अर्जुन के बाणों से मारे गये ॥ १८ ॥

दुर्योधनः—

कर्णाननेन्दुस्मरणात् क्षुभितः शोकसागरः।
वाडवेनेव शिखिना पीयते क्रोधजेन मे ॥ १९ ॥

तात ! तम्ब ! प्रसीदतम् ।

ज्वलनः शोकजन्मा मामयं दहति दुःसहः ।
समानायां विपत्तौ मे वरं संशयितो रणः ॥ २० ॥

सेनायाः = बलस्य कृतान्त इव = यमराजसमः योऽसौ (हमारी सेना के लिए यमराज बने हुये)। इन्द्रसूनोः—इन्द्रस्य = शक्रस्य सूनोः = सुतस्यार्जुनस्य (शुक्रसुत अर्जुन के) शरैः = बाणैः (बाणों द्वारा)। निहतः = मारितः (मारा गया)। किल = नूनमिति। आर्या वृत्तम् ॥ १८ ॥

अन्वयः—कर्णाननेन्दुस्मरणात् क्षुभितः मे शोकसागरः वाडवेन शिखिना इव क्रोधजेन (शिखिना) पीयते ॥ १९ ॥

कर्णाननेति। कर्णाननेन्दुस्मरणात्—कर्णस्य = राधेयस्याननमेवेन्दुः=चन्द्रस्तस्य स्मरणात् (कर्ण के मुखचन्द्र के स्मरण से)। क्षुभितः = क्षुब्धः (उफनाया हुआ) मे = मम (मेरा) शोकसागरः = दुःखसिन्धुः। वाडवेन शिखिना इव = वडवानलेनेव (वडवानल के समान)। क्रोधजेन = कोपजातेन (क्रोध से उत्पन्न) शिखिना = वह्निना (अग्नि द्वारा) पीयते = शोष्यते (सोखा जा रहा है)। अत्रोपमाऽलङ्कारः। अनुष्टुब् वृत्तम् ॥ १९ ॥

प्रसीदतम् = प्रसन्नौ भवतम् (प्रसन्न रहो)।

अन्वयः—दुःसह शोकजन्मा अयं ज्वलनः मां दहति। मे विपत्तौ समानायां संशयितः (अपि) रणः वरम् ॥ २० ॥

ज्वलन इति। दुःसहः = असह्यः (असह्य)। शोकजन्मा—शोकात् = दुःखात् जन्म यस्य सः=दुःखजातः (शोक से उत्पन्न हुआ) अयम् = एषः (यह) ज्वलनः = अग्निः (अग्नि)। माम् = दुर्योधनम् (मुझे)। दहति = ज्वलयति

दुर्योधन—(मित्र) कर्ण के मुखचन्द्र का स्मरण करने से व्याकुल हुआ (उफनाया हुआ) मेरा शोक-सागर वडवानल के समान क्रोध से उत्पन्न हुई अग्नि द्वारा सोखा जा रहा है ॥ १९ ॥

हे पिताजी, माताजी ! आप प्रसन्न रहें।

असह्य शोक से उत्पन्न यह अग्नि मुझे जला रही है। (युद्ध न करने तथा युद्ध करने दोनों दशाओं में) समान विपत्ति होने के कारण मुझे युद्ध करना ही उत्तम है ॥ २० ॥

धृतराष्ट्रः—(दुर्योधनं परिष्वज्य रुदन् ।)

भवति तनय ! लक्ष्मीः साहसेष्वीदृशेषु,
द्रवति हृदयमेतद्भीममुत्प्रेक्ष्य भीमम् ।
अनिकृतिनिपुणं ते चेष्टितं मानशौण्ड !
छलबहुलमरीणां सङ्गरं हा हतोऽस्मि ॥ २१ ॥

(जला रही है)। मे = मम (मेरी) विपत्तौ = सङ्कटे । समानायाम् = समानतायाम् (एक-सा ही संकट होने पर) संशयितः अपि = संशयालुरपि (संदिग्ध होने पर भी) रणः = युद्धं कर्त्तुम् (युद्ध) वरम् = श्रेष्ठम् (उत्तम है)। अनुष्टुब् वृत्तम् ॥ २० ॥

अन्वयः—तनय ! ईदृशेषु साहसेषु लक्ष्मीः भवति । (परं) भीमं भीमम् उत्प्रेक्ष्य एतत् हृदयं द्रवति । हे मानशौण्ड ! ते चेष्टितम् अनिकृतिनिपुणम्, अरीणां सङ्गरं छलबहुलम् (इति)। हा ! हतः अस्मि ॥ २१ ॥

भवतीति । तनय = वत्स ! ईदृशेषु = एतादृशेषु साहसेषु = रणसाहसकार्येषु (इस प्रकार के साहसों में) लक्ष्मीः = श्रीः । भवति = वसति (होती है, रहती है)। किन्तु भीमम् = भयङ्करम् । भीमम् = वृकोदरम् (भयङ्कर भीम को)। उत्प्रेक्ष्य = विचिन्त्य (सोचकर) एतत् = इदम् (यह) हृदयम् = चेतः (हृदय) द्रवति = आकुलं भवति (व्याकुल हो जाता है)। मानशौण्ड !—मानम् = अभिमानम् शौण्डम् = विख्यातं यस्य तत् सम्बुद्धौ=हेऽभिमानप्रसिद्ध ! ('शौण्डो मत्ते च विख्याते' इति विश्वः)। ते=तव (तुम्हारा) चेष्टितम् = आकांक्षितम् (चेष्टित-कर्म) अनिकृतिनिपुणम्—निकृतौ = परवञ्चने निपुणं न भवतीति तत् (शत्रु को न छल पाने वाला) अरीणाम् = शत्रूणाम् (शत्रुओं का) सङ्गरम् = युद्धम् (रण)। छलवहुलम् = छलपूर्णम् (कपट पूर्ण) इति = एवम् । हा = धिगिति हतोऽस्मि = विनष्टोऽस्मि (हाय मैं मारा गया)। मालिनी वृत्तम् ॥ २१ ॥

धृतराष्ट्र—(दुर्योधन को गले लगाकर रोते हुये)

वत्स ! इस प्रकार के साहस के कार्यों में ही लक्ष्मी (विजय) रहती है । (परन्तु) भयङ्कर भीम को सोचकर यह हृदय व्याकुल हो उठता है । हे अभिमान प्रसिद्ध ! तुम्हारा कर्म शत्रुवञ्चना से रहित है तथा शत्रुओं के साथ संग्राम करना छल प्रपञ्च से पूर्ण है । हाय मैं तो मारा गया, लुट गया ॥ २१ ॥

गान्धारी—जाद ! तेण एव सु दसदकदन्तेण विओदलेण समं समलं मग्गसि । [जात ! तनैव सुतशतकृतान्तेन वृकोदरेण समं समरं मार्गयसे ।]

दुर्योधनः—अम्ब ! तिष्ठतु तावद् वृकोदरः ।

पापेन येन हृदयस्य मनोरथो मे,
सर्वाङ्गचन्दनरसो नयनाऽमलेन्दुः ।
पुत्रस्तवाम्ब ! तव तात नयैकशिष्यः,
कर्णो हतः सपदि तत्र शराः पतन्तु ॥ २२ ॥

गान्धारी—सुतशवकृतान्तेन—सुतशतस्य = शतपुत्रसमूहस्य कृतान्तः = यमः, तेन समम् (सौ पुत्रों के हन्ता) वृकोदरेण समम् = भीमसेनेन साकम् (भीम के साथ) समरम् = युद्धम् (युद्ध) मार्गयसे = अन्वेषयसि (ढूँढते हो) ।

अन्वयः—येन पापेन मे हृदयस्य मनोरथः सर्वाङ्गचन्दनरसः नयनाऽमलेन्दुः अम्ब ! तव पुत्रः, तात ! तव नयैकशिष्यः कर्णः हतः । तत्र सपदि शराः पतन्तुः ॥ २२ ॥

पापेनेति । येन पापेन = येन दुष्टात्मना (जिस पापी ने) मे = मम । हृदयस्य = चित्तस्य (हृदय का) मनोरथः = अभीष्टः । सर्वाङ्गचन्दनरसः—सर्वाङ्गेषु = निखिलशरीरभागेषु चन्दनरस इव = मलयजरस इव । नयनाऽमलेन्दुः—नयनयोः = नेत्रयोः अमलः = निर्मलः इन्दुः = विधुः (नेत्रों का निर्मल चन्द्रमा-सा) । अम्ब = मातः ! तव = ते । पुत्रः = सुतः । तात = पितः ! तव = ते । नयैकशिष्यः—नये = नीतौ एकः = मुख्यः शिष्यः (राजनीति में प्रमुख शिष्य) कर्णः = राधेयः । हतः = मारितः (मार डाला) । तत्र = तस्मिन् । सपदि = शीघ्रम् । शराः = बाणाः । पतन्तु = स्रवन्तु (गिरें) । अत्र रूपकालङ्कारः । वसन्ततिलका वृत्तम् ॥ २२ ॥

गान्धारी—पुत्र ! सौ पुत्रों का नाश करने वाले भीमसेन के साथ युद्ध करना चाहते हो ।

दुर्योधन—मातः ! तब तक भीम तो अलग रहे—

जिस दुष्ट ने मेरे हृदय को मनोरथ, समस्त अङ्गों को चन्दन रस के समान आनन्दित करने वाले, नयनों को निर्मल चन्द्र के समान तुम्हारे पुत्र तथा हे पितः ! तुम्हारे राजनीति के प्रमुख शिष्य कर्ण को मारा है, मेरे बाण शीघ्रता से उस पर गिरेंगे ।। २२ ।।

सूत ! अलमिदानीं कालातिपातेन । सज्जं मे रथमुपहर । भयं चेत्पाण्डवेभ्यस्तिष्ठ । गदामात्रसहाय एव समरभुवमवतरामि ।

सूतः—अलमन्यथा सम्भावितेन । अयमहमागत एव । (इति निष्क्रान्तः ।)

धृतराष्ट्रः—वत्स दुर्योधन ! यदि स्थिर एवास्मान्दग्धुमयं ते व्यवसायस्तद्यथासन्निहितेषु वीरेषु सेनापतिः कश्चिदभिषिच्यताम् ।

दुर्योधनः—नन्वभिषिक्त एव ।

कालातिपातेन=समययापनेन (देर करने से) मे = मम दुर्योधनस्य (मेरा) सज्जम् = अलङ्कृतम् (तैयार) रथम् = स्यन्दनम् (रथ) उपहर = आनय (ले आओ) चेत् = यदि । पाण्डवेभ्यः = युधिष्ठिरादिभ्यः (पाण्डवों से) भयम् = त्रासः (डर हो) । गदामात्रसहायः—गदामात्रम् = केवलं गदैव सहायम् = सहायकरं शस्त्रं यस्य सः (गदामात्र साथ लिया हुआ) । समरभुवम् = रणाङ्गणम् (युद्धभूमि को) । अवतरामि = गच्छामि (जा रहा हूँ) ।

सूतः—अन्यथासम्भावितेन = विरुद्ध-सम्भावनया (विपरीत सम्भावना करने से) अहम् = सूतः । आगतः = आयातः (आ गया हूँ) ।

धृतराष्ट्रः—अस्मान् = कौरवान् (हम लोगों को) दग्धुम् = ज्वलयितुम् (भस्म करने को) अयम् = एषः । व्यवसायः = उद्यमः । स्थिर एव = दृढ़ एव (स्थिर ही है) । यथासन्निहितेषु = यथोपस्थितेषु (जो भी उपस्थित हैं उन्हीं में) वीरेषु = योद्धाषु (वीरों में) कश्चित् = कोऽपि । सेनापतिः = सेनानायकः (सेनापति) । अभिषिच्यताम् = नियोज्यताम् (अभिषिक्त कर दो) ।

दुर्योधनः—ननु = खलु (निश्चय ही) । अभिषिक्तः = नियुक्तः एव (नियुक्त ही है) ।

सूत ! अब देर करना व्यर्थ है । मेरा रथ तैयार कर ले आओ । यदि पाण्डवों से डर हो तो, यहीं ठहरो । मैं केवल गदा लेकर ही युद्ध भूमि में उतर रहा हूँ ।

सूत—विपरीत सम्भावना करना व्यर्थ है । मैं यहाँ अभी आ रहा हूँ ।

(यह कहकर निकल जाता है)

धृतराष्ट्र—बेटे दुर्योधन ! यदि हमें जलाने को यह तुम्हारा दृढ़ निश्चय है तो उपस्थित वीरों में से ही किसी को सेनापति पद पर अभिषिक्त कर दो ।

दुर्योधन—अभिषिक्त किया जा चुका है ।

गान्धारी—जाद ! कदरो उण सो जस्सिं हदासं ओलम्बिस्सम् । [जात ! कतरः पुनः सः, यस्मिन् हताशामवलम्बिष्ये ।]

धृतराष्ट्रः—किं वा शल्य उत वाऽश्वत्थामा ।

सञ्जयः—हा कष्टम् !

हते भीष्मे हते द्रोणे कर्णे च विनिपातिते ।
आशा बलवती राजञ्छल्यो जेष्यति पाण्डवान् ॥ २३ ॥

दुर्योधनः—किं वा शल्येनोत वाऽश्वत्थाम्ना ।

कर्णालिङ्गनदायी वा पार्थप्राणहरोऽपि वा ।
अनिवारितसम्पातैरयमात्माऽश्रुवारिभिः ॥ २४ ॥

गान्धारी—सः = असौ सेनापतिः (वह सेनापति) । यत्र = यस्मिन् (जिस पर) । हताशाम् = नष्टामिलाषाम् (नष्ट हुई आशा को) । अवलम्बयिष्ये = अवलम्बनं करिष्यामि (सहारा लूँगी) ।

धृतराष्ट्रः—उत वा = अथवा ।

अन्वयः—राजन् ! भीष्मे हते द्रोणे हते कर्णे च विनिपातिते (केवलम्) आशा (एव) बलवती । शल्यः पाण्डवान् जेष्यति ॥ २३ ॥

हत इति । भीष्मे = भीष्मपितामहे हते = मारिते (भीष्मपितामह के मारे जाने पर) विनिपातिते = विनाशिते (नष्ट किये जाने पर) । आशा एव = अभिलाषैव । बलवती = प्रबला शल्यः = कर्णसारथिः (कर्ण का रथ हाँकने वाला शल्य) । पाण्डवान् = युधिष्ठिरादीन् (पाण्डवों को) जेष्यति = विजयं करिष्यति (जीत लेगा) । दुराशामात्रमेवैतत् । काकुवक्रोक्तिः । अनुष्टुब् वृत्तम् ॥ २३ ॥

अन्वयः—कर्णालिङ्गनदायी वा पार्थप्राणहरः अपि वा अनिवारितसम्पातैः अश्रुवारिभिः अयम् आत्मा (एव मया अभिषिक्तः) ॥ २४ ॥

कर्णेति । (किन्तु) कर्णालिङ्गनदायी—कर्णस्य = राधेयस्यालिङ्गनं ददातीति

गान्धारी—पुत्र ! वह कौन-सा व्यक्ति है जिस पर मैं नष्ट हुई आशा लगाऊँ ।

धृतराष्ट्र—शल्य है अथवा अश्वत्थामा ?

सञ्जय—हाय कष्ट है !

राजन् ! भीष्मपितामह, द्रोणाचार्य, कर्ण जैसे महारथियों के युद्ध में मारे जाने पर (अब केवल) आशा बढ़ रही है कि शल्य पाण्डवों पर विजय पा सकेगा ॥ २३ ॥

दुर्योधन—शल्य अथवा अश्वत्थामा से क्या ?

कर्ण को आलिंगन देने वाला अथवा पार्थ के प्राण हरने वाला अथवा निरन्तर आँसू बहाने वाला यह मैं स्वयम् अभिषिक्त हूँ ॥ २४ ॥

(नेपथ्ये कलकलं कृत्वा)

भो भोः कौरवबलप्रधानयोधाः ! अलमस्मानवलोक्य भयादितस्ततो गन्तुम् । कथयन्तु भवन्तः कस्मिन्नुद्देशे सुयोधनस्तिष्ठतीति ।

(सर्वे ससम्भ्रममाकर्णयन्ति ।)

(प्रविश्य सम्भ्रान्तः ।)

सूतः—आयुष्मन् !

प्राप्तावेकरथारूढौ पृच्छन्तौ त्वामितस्ततः ।

(कर्ण का आलिङ्गन करने वाला) वा = अथवा । पार्थप्राणहरः अपि—पार्थस्य = अर्जुनस्य प्राणहरः = प्राणनाशकः (अथवा अर्जुन के प्राण हरने वाला) अनिवारितसम्पातैः—अनिवारितम् = अजस्रम् सम्पातः = प्रवाहः येषां तैः (निरन्तर बहने वाले) अश्रुवारिभिः = नयनाम्बुभिः (आँसुओं से) । अयम् = एषः (यह) आत्मा = अहमेव (मैं ही स्वयम्) (अभिषिक्तः) । अत्र रूपकालङ्कारः । अनुष्टुब् वृत्तम् ॥ २४ ॥

कौरवबल प्रधान-योधाः—कौरवबलस्य=कुरुसैन्यस्य प्रधानाः=प्रमुखाः योधाः =वीराः तत्सम्बुद्धौ (कौरव सेना के प्रधान योद्धाओ !) अस्मान् = पाण्डवान् (हमें) अवलोक्य = दृष्ट्वा (देखकर) । भयात् = त्रासात् (डर से) इतस्ततः (इधर-उधर) गन्तुम्=यातुम् (जाने को) । कथयन्तु = वदन्तु (कहें) कस्मिन् उद्देशे = कुत्र स्थाने (कहाँ पर) सुयोधनः = दुर्योधनः । तिष्ठति = वर्तते (है) ।

सर्वे - निखिलजनाः (सभी) । ससम्भ्रमम् = सभयम् (डर कर) । आकर्णयन्ति = शृण्वन्ति (सुनते हैं) ।

अन्वयः—एकरथारूढौ, इतस्ततः त्वाम् पृच्छन्तौ प्राप्तौ ।

प्राप्ताविति । एकरथारूढौ—एकरथम्=एकस्यन्दनम् आरूढौ = स्थितौ (एक रथ पर बैठे हुये) इतस्ततः (इधर-उधर) त्वाम् = कुरुपतिम् (आपको) पृच्छन्तौ = पृच्छां कुर्वन्तौ (पूँछते हुये) । प्राप्तौ = समागतौ (आये) ।

(नेपथ्य में कोलाहल करके)

अरे अरे कौरव सेना के प्रमुख योधाओ ! हमें देखकर भय से इधर-उधर मत भागो । आप बतलायें—सुयोधन किस स्थान पर है ?

(सभी लोग डर के साथ सुनते हैं)

(प्रवेश कर, डरा हुआ)

सूत—हे आयुष्मन् ! एक ही रथ पर बैठे हुये इधर-उधर तुम्हें पूँछते खोजते हुये,

सर्वे—कश्च कश्च ।

सूतः—

स कर्णारिः स च क्रूरो वृककर्मा वृकोदरः ॥ २५ ॥

गान्धारी—(सभयम् ।) जाद ! किं एत्थ सम्पत्तं पडिपज्जिदव्वं ? [जात ! किमत्र साम्प्रतं प्रातिपत्तव्यम् ?]

दुर्योधनः—अम्ब ! ननु सन्निहितैवेयं गदा ।

गान्धारी—हा ! हदम्हि मन्दभाइणी । [हा ! हताऽस्मि मन्दभागिनी ।]

दुर्योधनः—अम्ब, अलमिदानीं कार्पण्येन । सञ्जय ! रथमारोप्य पितरौ शिविरं प्रतिष्ठस्व । समागतोऽस्माकं शोकाऽपनोदी जनः ।

अन्वयः—सः कर्णारिः, सः क्रूरः वृककर्मा वृकोदरः च ॥ २५ ॥

स इति । सः = असौ (वह) कर्णारिः—कर्णस्यारिः = शत्रुरर्जुनः (कर्ण-शत्रु अर्जुन) । वृककर्मा—वृक=ईहामृगः तद्वत्कर्म यस्य सः (भयङ्कर कर्म करने वाला) क्रूरः = भयङ्करः वृकोदरः = भीमसेनः । अनुष्टुब् वृत्तम् ॥ २५ ॥

गान्धारी—अत्र = अस्मिन् स्थाने (यहाँ) किं प्रतिपत्तव्यम् = किं करणीयम् (क्या करना है) ।

दुर्योधनः—सन्निहिता = सन्नद्धा (तैयार है) ।

गान्धारी—हता = नष्टा (मारी गई) । मन्दभागिनी = अभागिनी ।

दुर्योधनः—कार्पण्येन = कातरत्वेन (दुःखी होने से) । रथम् = स्यन्दनम् । आरोप्य=अधिरोहणं कृत्वा (बैठा कर) पितरौ = जननीजनकौ (माता-पिता को) शिविरम् = सैन्यस्थलम् (शिविर को) प्रतिष्ठस्व = प्रस्थानं कुरु (ले जाओ) । शोकापनोदी—शोकम् = दुःखम् अपनुदति = अपहरति इति सः (शोक दूर करने वाला) जनः = व्यक्तिः । समागतः = सम्प्राप्तः (आ गया है) ।

सब लोग—कौन कौन ?

सूत—कर्ण-शत्रु अर्जुन तथा क्रूरकर्म करने वाला क्रूर वृकोदर (दोनों ही) आ गयें ॥ २५ ॥

गान्धारी—(डरकर) वत्स ! अब क्या करना चाहिये ?

दुर्योधन—हे अम्ब ! यह गदा तो तैयार ही है ।

गान्धारी—हाय, मैं मन्दभागिनी अब मारी गई ।

दुर्योधन—हे अम्ब ! अब कातरता करने से कोई लाभ नहीं । सञ्जय ! रथ पर चढ़ा कर माता-पिता जी को शिविर को ले जाओ । हमारे शोक को दूर करने वाला आ गया है ।

धृतराष्ट्रः—वत्स ! क्षणमेकं प्रतीक्षस्व यावदनयोर्भावमुपलभे ।

दुर्योधनः—तात ! किमनेनोपलब्धेन । तद् गम्यताम् ।

(धृतराष्ट्रो गान्धारी च किञ्चिद् गत्वा तिष्ठतः)

(ततः प्रविशतौ रथाऽऽरूढौ भीमार्जुनौ ।)

भीमः—भो भोः सुयोधनानुजीविनः ! किमिति सम्भ्रमादयथातथं सञ्चरन्ति भवन्तः । कथयत तावदिदमावयोरागमनं स्वामिनस्तस्य कुरुपतेः । अलमावयोः शङ्कया ।

कर्ता द्यूतच्छलानां जतुमयशरणोद्दीपनः सोऽभिमानी
कृष्णाकेशोत्तरीयव्यपनयनमरुत्पाण्डवा यस्य दासाः ।

धृतराष्ट्रः—एकं क्षणम् = निमिषमेकम् (एक क्षण) प्रतीक्षस्व = प्रतीक्षां कुरु (प्रतीक्षा करो) अनयोः = एतयोः (इन दोनों का) भावम् = आशयम् (आशय) उपलभे = प्राप्नोमि (प्राप्त करता हूँ)

दुर्योधनः—उपलब्धेन = प्राप्तेन (पाने से) ।

भीमः—सुयोधनाऽनुयायिनः—सुयोधनस्य = कुरुपतेः अनुयायिनः = पक्षपातिनः तत्सम्बुद्धौ (हे कौरव पक्षपतियो) । सम्भ्रमात् = भयात् (डर से) । यथावथम् = इतस्ततः (इधर-उधर) । सञ्चरन्ति = सञ्चरणं कुर्वन्ति (घूम रहे हैं) । कथयत = आख्यात (बतलाओ) । स्वामिनः कुरुपतेः = महाराजदुर्योधनस्य । आवयोः = भीमार्जुनयोः (भीम तथा अर्जुन पर) । शङ्कया = सन्देहेन । अलम् = निषेधेऽव्ययम् ।

अन्वयः—द्यूतच्छलानां कर्ता जतुमयशरणोद्दीपनः अभिमानी कृष्णाकेशोत्तरीय-व्यपनयनमरुत्, सः पाण्डवाः यस्य दासाः दुःशासनादेः अनुजशतस्य गुरुः

धृतराष्ट्र—वत्स ! एक क्षण प्रतीक्षा करो, जब तक मैं इन दोनों का भाव (आशय) समझ लूँ ।

दुर्योधन—तात ! भाव समझने से क्या ? अतः जाइये ।

(धृतराष्ट्र तथा गान्धारी कुछ दूर जाकर रुक जाते हैं ।)

(तदनन्तर रथ पर बैठे हुये भीम तथा अर्जुन प्रवेश करते हैं ।)

भीम—अरे रे सुयोधन-पक्षपातियो ! आप लोग इधर-उधर डर के कारण क्यों घूम रहे हैं अपने स्वामी कुरुराज को हम दोनों के आने की बात बतला दो । हम दोनों पर सन्देह करना व्यर्थ है ।

जुयें के छलों को करने वाले लाक्षामय भवन को जलाने वाले अभिमानी वह द्रौपदी के केश तथा उत्तरीय (साड़ी) को खींचने में वायु के समान, हम पाण्डव जिसके दास बने

राजा दुःशासनादेर्गुरुरनुजशतस्याऽङ्गराजस्य मित्रं
क्वाऽऽस्ते दुर्योधनोऽसौ, कथयत न रुषा द्रष्टुमभ्यागतौ स्वः ॥२६॥

धृतराष्ट्रः—सञ्जय ! दारुणः खलूपक्षेपः पापस्य ।

सञ्जयः—तात ! कर्मणा कृतनिःशेषविप्रियाः सम्प्रति वाचा व्यवस्यन्ति ।

अङ्गराजस्य मित्रं राजा असौ दुर्योधनः क्व आस्ते, कथयत रुषा न, द्रष्टुम् अभ्यागतौ स्वः ॥ २६ ॥

कर्तेति । द्यूतच्छलानाम्—द्यूतमेव छलानि, तेषाम् (जुआ रूपी छल के) कर्त्ता=कारकः (करने वाले) । जतुमयशरणोद्दीपनः—जतुमयम्=लाक्षा-निर्मितम् शरणम्=भवनम् ('शरणं गृह रक्षित्रोः' इत्यमरः) । तस्योद्दीपनः=दाहकः (लाक्षागृह को जलाने वाला) । अभिमानी=अहंकारी सः=असौ (वह) । कृष्णाकेशोत्तरीयव्यपनयनमरुत्—कृष्णायाः=द्रौपद्याः केशाः=शिरोरुहाणि, उत्तरी-यञ्च=ऊर्ध्ववस्त्रञ्च, तेषां व्यपनयने=दूरीकरणे मरुत् इव=वायुरिव ! पाण्डवाः =युधिष्ठिरादयः यस्य दासाः=यस्यानुचराः (द्रौपदी के केश तथा उत्तरीय खींचने में वायु सदृश पाण्डव जिसके दास हैं) । दुःशासनादेः—दुःशासनः आदौ यस्य तस्य, अनुजशतस्य=शतबन्धोः (दुःशासनादि सौ भाइयों के) गुरुः=ज्येष्ठः (बड़े) अङ्गराजस्य=कर्णस्य । मित्रम्=सखा । नृपः=राजा । क्वास्ते= कुत्रास्ति । कथयत=ब्रूत (बतलाओ) । रुषा न=क्रोधेन नहि (क्रोध से नहीं) । द्रष्टुम्=अवलोकितुम् (देखने को) अभ्यागतौ स्वः=आयातौ स्वः (हम दोनों आये हैं) । स्रग्धरा वृत्तम् ॥ २६ ॥

धृतराष्ट्रः—दारुणः=भयङ्करः । पापस्य=पापात्मनः (पापी का) उपक्षेपः= आक्षेपः (आक्षेप) ।

सञ्जयः—कर्मणा=दुःशासनादिवधेन (दुःशासनादि के वध कर्म से) । कृतनिःशेषविप्रियः—कृतानि=सम्पादितानि निःशेषाणि=निखिलानि विप्रियाणि= अप्रियाणि यैस्ते (समस्त अप्रियकार्य किये हुये) । सम्प्रति=इदानीम् (अब) । वाचा=वाण्या (वाणी द्वारा) व्यवस्यन्ति=करिष्यन्ति ।

हुये चुपचाप देख रहे थे, दुःशासनादि सौ भाइयों में सबसे बड़े, अङ्गराज का मित्र दुर्योधन कहाँ है, बतलाओ । हम दोनों क्रुद्ध होकर नहीं बल्कि यों ही देखने के लिये आये हैं ॥२६॥

धृतराष्ट्र—सञ्जय ! वास्तव में यह पापी का आक्षेप भयङ्कर है ।

सञ्जय—तात ! कर्म से समस्त अप्रिय कार्य करके अब वाणी से आक्षेप करेंगे ।

दुर्योधनः—सूत ! कथय गत्वोभयोः—'अयं तिष्ठती'ति ।

सूतः—यथाऽऽज्ञापयति देवः । (तावुपसृत्य) ननु भो वृकोदराऽर्जुनौ ! एष महाराजस्तातेनाऽम्बया च सह न्यग्रोधच्छायायामुपविष्टस्तिष्ठति ।

अर्जुनः—आर्य ! प्रसीद । न युक्तं पुत्रशोकोपपीडितौ पितरौ पुनरस्मद्दर्शनेन भृशमुद्वेजयितुम् । तद् गच्छावः ।

भीमः—मूढ ! अनुल्लङ्घनीयः सदाचारः । न युक्तमनभिवाद्य गुरून् गन्तुम् । (उपसृत्य ।) सञ्जय ! पित्रोर्नमस्कृतिं श्रावय । अथवा तिष्ठ । स्वयं विश्राव्य नामकर्मणी वन्दनीया गुरवः ।

दुर्योधनः—गत्वा = एत्य (जाकर) । उभयोः = भीमार्जुनयोः (भीम तथा अर्जुन को) ।

सूतः—तातेन = पित्रा । अम्बया = जनन्या गान्धार्या च सह । न्यग्रोधच्छायायाम्—न्यग्रोधस्य = वटवृक्षस्य छायायाम् = प्रच्छाये (बरगद की छाँह में) ।

अर्जुनः—प्रसीद = प्रसन्नो भव (प्रसन्न रहो) । पुत्रशोकोपपीडितौ—पुत्रशोकेन = सुतवधदुःखेन उपपीडितौ = व्याकुलौ (पुत्रों के शोक से दुःखी) । अस्मद्दर्शनेन—आवयोः दर्शनेन = अवलोकनेन (हम दोनों को देखने से) । भृशम् = अत्यन्तम् । उद्वेजयितुम् = आकुलयितुम् (दुःखी करने को) न युक्तम्=नोचितम् (ठीक नहीं है) । तद् = अतः । गच्छावः = चलावः (हम दोनों जा रहे हैं) ।

भीमः—अनुल्लङ्घनीयः = उल्लङ्घनयोग्यो नास्ति । सदाचारः=सदाचरणम् । अनभिवाद्य = अभिवादनेन विनैव (विना प्रणाम किये) । गुरून् = वन्दनीयान् (गुरुजनों को) । गन्तुम्=यातुम् (जाने को) । उपसृत्य = पार्श्वं गत्वा (समीप जाकर) । पित्रोः = जननीजनकयोः (माता-पिताजी को) नमस्कृतिम् = प्रणतिम् (प्रणाम करना) श्रावय=निवेदय (सुना दो) । विश्राव्य = श्रावयित्वा (सुनाकर) ।

दुर्योधन—सूत ! जाकर दोनों से कह दो—यह यहाँ हैं ।

सूत—जैसी महाराज की आज्ञा (दोनों के पास जाकर) हे वृकोदर तथा अर्जुन ! यह महाराज पिताजी तथा माता जी के साथ वह वृक्ष की छाया में बैठे हैं ।

अर्जुन—आर्य ! प्रसन्न रहो । पुत्रशोक से व्याकुल माता-पिता को पुनः दिखलाई देकर अधिक व्याकुल करना ठीक नहीं है । अतः चलो चलें ।

भीम—मूढ ! सदाचार का उल्लंघन नहीं करना चाहिये । गुरुजनों को अभिवादन किये विना चले जाना ठीक नहीं है । (समीप जाकर) सञ्जय ! माता-पिताजी को हमारा प्रणाम सुना दो । अथवा ठहरो । स्वयं ही हम दोनों जाकर सुना देते हैं ।

(इति रथादवतरतः)

अर्जुनः—(उपगम्य ।) तात ! अम्ब !

सकलरिपुजयाऽऽशा यत्र बद्धा सुतैस्ते
तृणमिव परभूतो यस्य गर्वेण लोकः ।
रणशिरसि निहन्ता तस्य राधासुतस्य
प्रणमति पितरौ वां मध्यमः पाण्डवोऽयम् ॥ २७ ॥

भीमः—

चूर्णिताशेषकौरव्यः क्षीबो दुःशासनाऽसृजा ।
भङ्क्त्वा सुयोधनस्योर्वोर्भीमोऽयं शिरसाऽञ्चति ॥ २८ ॥

अन्वयः—ते सुतैः सकलरिपुजयाशा यत्र बद्धा, यस्य गर्वेण लोकः तृणम् इव परिभूतः, रणशिरसि तस्य राधासुतस्य निहन्ता अयं मध्यमः पाण्डवः पितरौ वां प्रणमति ॥ २७ ॥

सकलरिप्विति । ते = तव । सुतैः = पुत्रैः (तुम्हारे पुत्रों द्वारा) । सकलरिपुजयाशा—सकलानाम् = सर्वेषाम् रिपूणाम् = शत्रूणाम् जयस्य = विजयस्याशा = अभिलाषा (सभी शत्रुओं को जीतने की आशा) यत्र = यस्मिन् (जिसपर) । बद्धा = निबद्धा (बाँधी गई थी) । यस्य गर्वेण = अहङ्कारेण (गर्व से) लोकः = संसारः तृणम् इव = अतितुच्छम् । परिभूतः = तिरस्कृतः (तिरस्कार किया गया था) । रणशिरसि = युद्धभूमौ तस्य = तादृशस्य राधासुतस्य = कर्णस्य । निहन्ता—घातकः (संहारक) । अयम् = एषः मध्यमः पाण्डव = अर्जुनः । पितरौ वां = जननीजनकौ युवाम् (आप दोनों को) । प्रणमति = नमस्करोति । मालिनी वृत्तम् । तथा—ननमयययुतेयं मालिनी भोगिलोकैः ॥ २७ ॥

अन्वयः—चूर्णिताशेषकौरव्यः, दुःशासनासृजा क्षीबः सुयोधनस्य ऊर्वोः भङ्क्त्वा अयं भीमः शिरसा अञ्चति ॥ २८ ॥

चूर्णितेति । चूर्णिताशेषकौरव्यः—चूर्णिताः = विनष्टाः अशेषाः = समस्ताः

(यह कहकर रथ से दोनों उतर पड़ते हैं)

अर्जुन—(समीप जाकर) हे तात ! हे अम्ब !

तुम्हारे पुत्रों द्वारा समस्त शत्रुओं को जीतने की जिस पर आशा बाँधी गई थी। जिसके गर्व से तिनके के समान संसार को मान कर तिरस्कार किया जाता था। युद्ध-भूमि में उस राधेय कर्ण का निहन्ता यह मझला पाण्डव अर्जुन आप दोनों को प्रणाम कर रहा है ॥ २७ ॥

भीम—समस्त कौरवों को नष्ट कर देने वाला, दुःशासन के रुधिर को पीने के कारण

धृतराष्ट्रः—दुरात्मन्वृकोदर ! न तावद् विकत्थयाऽऽत्मानम्। न खल्विदं भवतैव केवलं सपत्नानामपकृतम्। यावत्क्षत्रं तावत्समरविजयिनो जिता हताश्च वीराः। तत्किमेवं विकत्थनाभिरस्मानुद्वेजयसि।

भीमः—तात, अलमलं मन्युना।

कृष्णा केशेषु कृष्टा तव सदसि पुरः पाण्डवानां नृपैर्यैः
सर्वे ते क्रोधवह्नौ कृतशलभकुलाऽवज्ञया येन दग्धाः।

कौरव्याः=कुरुवंशोद्भवाः दुर्योधनादयः येन तादृशः (समस्त कौरव वंश को पीस डालने वाला) दुःशासनाऽसृजा—दुःशानस्य असृजा = वक्षसः शोणितपानेन (दुःशासन के वक्ष से रक्तपान करने के कारण) क्षीवः = मदमत्तः सुयोधनस्य= कुरुपतेः (दुर्योधन की) ऊर्वोः=जघनद्वयोः (दोनों जाँघों का) भङ्क्ता = भङ्ग-कर्त्ता (फाड़ने वाला)। अयम् = एषः। भीमः = वृकोदरः। शिरसा = मूर्ध्ना (शिर से) अञ्चति = पूजयति, प्रणमतीति भावः.(प्रणाम कर रहा है) अनुष्टुब् वृत्तम् ॥ २८ ॥

धृतराष्ट्रः—आत्मानम्=स्वम् (अपने को) न विकत्थय=आत्मश्लाघां न कुरु (आत्मप्रशंसा न कर)। सपत्नानाम् = शत्रूणाम् (शत्रुओं का) न अपकृतम् = अपकारं न कृतम् (अपकार नहीं किया)। यावत् = यावत्कालम् (जब तक) क्षत्रम्=क्षत्रिय जातिः। समरविजयिनः = रणजेतारः (युद्ध जीतने वाले) जिताः = विजिताः (जीते) हताः = मारिताः (मारे गये)। वीराः=शूराः। विकत्थ-नाभिः = आत्मप्रशंसाभिः। अस्मान् = कौरवपक्षीयान् (हम कौरवों को)। उद्-वेजयसि = पीडयसि (कष्ट पहुँचा रहा है)।

अन्वयः—पाण्डवानाम् वधूः कृष्णा यैः नृपैः तव सदसि केशेषु कृष्टा, येन कृतशलभ कुलावज्ञया सर्वे ते क्रोधवह्नौ दग्धाः, एतस्मात् अहम् श्रावये, न खलु भुज-

---

मतवाला बना, सुयोधन की जाँघों को फाड़ने वाला यह भीम शिर झुकाकर आपको प्रणाम कर रहा है ॥ २८ ॥

धृतराष्ट्र—अरे दुष्ट वृकोदर ! अपनी अधिक तारीफ मत कर। केवल तूने ही अकेले शत्रुओं का अपकार (संहार) नहीं कर डाला। जब तक क्षत्रिय जाति है तब तक युद्ध-विजयी वीर जीते और मारे जाते रहे हैं।

भीम—हे तात ! क्रोध मत करो।

पाण्डव वधू द्रौपदी जिन राजाओं द्वारा तुम्हारी सभा में बाल पकड़ कर खींची गई जिस (अर्जुन) ने तुच्छ पतिंगों के समान अवज्ञाकर वे सभी (कर्णादि) क्रोध रूपी अग्नि

एतस्माच्छ्रावयेऽहं न खलु भुजबलश्लाघया नापि दर्पात्,
पुत्रैः पौत्रैश्च कर्मण्यतिगुरुणि कृते तात! साक्षी त्वमेव ॥ २९ ॥

दुर्योधनः—अरे रे मरुत्तनय! किमेवं वृद्धस्य राज्ञः पुरतो निन्दितव्यमात्मकर्म श्लाघसे ? अपि च—

बलश्लाघया, न अपि दर्पात् । तात! पुत्रैः पौत्रैः च कृते अति गुरुणि कर्मणि त्वम् एव साक्षी ॥ २९ ॥

कृष्णेति । पाण्डवानाम् = युधिष्ठिरादीनाम् वधूः = भार्या । कृष्णा = द्रौपदी । यैः नृपैः = यैः भूपालैः (जिन राजाओं द्वारा) । तव = ते । सदसि = सभायाम् (तुम्हारी भरी सभा में) केशेषु = शिरोरुहेषु (बाल पकड़कर) कृष्टा = आकृष्टा । येन = अर्जुनेन (जिसने) । कृशशलभकुलावज्ञया—कृशम् = दुर्बलम् यत् शलभकुलम् = पतङ्गसमूहम्, तद्वत् अवज्ञया = अपमानेन (दुर्बल पतिंगे के समान अवज्ञा करके) सर्वे = समस्ताः ते = भीष्मकर्णादयः । क्रोधवह्नौ = कोपाग्नौ (क्रोधरूपी आग में) दग्धाः = प्रज्वलिताः (भस्म कर दिये गये) । एतस्मात् = अतः एव । अहम् = भीमः । श्रावये = श्रावयामि (सुना रहा हूँ) । खलु = किल (वास्तव में) । भुजबलश्लाघया—भुजयोः = बाह्वोः बलम् = सामर्थ्यम् तस्य श्लाघा = प्रशंसा तया (भुजबल की प्रशंसा से) न श्रावये, नापि दर्पात् = गर्वात् (अभिमान से) श्रावये । तात! पुत्रैः = सुतैः पौत्रैः=तत्पुत्रैश्च (लड़कों तथा पोतों से) कृते = विहिते (किये गये) अतिगुरुणि = अतिमहति । कर्मणि = कृत्ये (कार्य में) त्वम् = भवान् (आप) । साक्षी = प्रत्यक्षद्रष्टा । स्रग्धरा वृत्तम् ॥ २९ ॥

दुर्योधनः—हे मरुत्तनय = अयि पवनपुत्र भीम! एवम् = इत्थम् (इस प्रकार) वृद्धस्य = जठरस्य राज्ञः = नृपस्य तातस्य । पुरतः = समक्षम् (सामने) निन्दितव्यम् = निन्दनीयम् । आत्मकर्म = निजकौशलम् । श्लाघसे = प्रशंससि (प्रशंसा कर रहा है) ।

में भस्म कर डाले । इस कारण से मैं आपको यह सुना रहा हूँ, वास्तव में भुजबल की प्रशंसा अथवा अभिमान से नहीं सुना रहा हूँ । तात! आप के पुत्रों, पौत्रों द्वारा किये गये शत्रुवध आदि महान् कार्य के तो आप ही साक्षी हैं ॥ २९ ॥

दुर्योधन—रे पवनपुत्र भीम! इस प्रकार वृद्ध महाराज के सामने निन्दनीय कर्म की प्रशंसा क्यों कर रहा है ? और भी—

कृष्टा केशेषु भार्या तव तव च पशोस्तस्य राज्ञस्तयोर्वा
प्रत्यक्षं भूपतीनां मम भुवनपतेराज्ञया द्यूतदासी ।
अस्मिन्वैरानुबन्धे वद किमपकृतं तैर्हता ये नरेन्द्राः,
बाह्वोर्वीर्यातिरेकद्रविणगुरुमदं मामजित्वैव दर्पः ॥ ३० ॥

आः । दुरात्मन् ! एष न भवसि ।

अन्वयः—भुवनपतेः मम आज्ञया द्यूतदासी तव पशोः तव, तस्य च राज्ञः तयोः वा भार्या भूपतीनाम् प्रत्यक्षम् केशेषु कृष्टा अस्मिन् वैरानुबन्धे ये नरेन्द्राः हताः तैः किम् अपकृतं वद बाह्वोः वीर्यातिरेकद्रविणगुरुमदं माम् अजित्वा एव दर्पः ॥ ३० ॥

कृष्टेति । भुवनपतेः—भुवनानां पतिस्तस्य = निखिल-लोक-नायकस्य । मम = मे । आज्ञया = आदेशेन । द्यूते = द्यूतकर्मणि जिता दासी = सेविका (जुये में जीती गई दासी) । तव = ते भीमस्य पशोः = नीचस्य (तुझ नीच की) तव = ते तस्यराज्ञः = तथाविधस्य नृपस्य युधिष्ठिरस्य (तुम्हारे उस राजा की) । तयोः वा = अथवा नकुल-सहदेवयोः । भार्या = पत्नी । भूपतीनाम् = राज्ञाम् (राजाओं के) प्रत्यक्षम् = समक्षम् (सामने) केशेषु = कचेषु गृहीत्वा । कृष्टा = आकृष्टा (बाल पकड़ कर खींची गई) । अस्मिन् = एतस्मिन् (इस) वैरानुबन्धे—वैरस्य = शत्रुतायाः अनुबन्धे = प्रसङ्गे (शत्रुता के प्रसङ्ग में) ये नरेन्द्राः = ये राजानः (जो राजा) हताः = मारिताः (मारे गये) तैः किम् = तेषां वधेन कः लाभः (उनको मारने से क्या) (तैः) किम् अपकृतम् = किमनिष्टमाचरितम् (उन्होंने क्या बिगाड़ा) । वद = ब्रूहि (बता) बाह्वोः = भुजयोः (भुजाओं के) वीर्यातिरेकद्रविणगुरुमदम्—वीर्यस्य = बलस्यातिरेक एव द्रविणम् = धनम् तेन गुरुः = महान् मदः = दर्पो यस्य तम् (बलाधिक्यरूपी धन मदवाले) । माम् = दुर्योधनम् (मुझे) अजित्वा = विना जित्वैव (बिना जीते ही) दर्पः = अहङ्कारः अस्ति । स्रग्धरा वृत्तम् ॥ ३० ॥

एषः = अयम् । न भवसि = न जीवसि (इस प्रकार तू जीवित नहीं रह सकता है) ।

समस्त लोकों के अधिपति मेरी आज्ञा से जुये में जीती हुई तेरी पत्नी को दासी समझ कर पशु सदृश नीच तेरे, अर्जुन के, उस राजा युधिष्ठिर के और नकुल सहदेव के सामने बाल पकड़ कर खींचा गया। इस शत्रुता के प्रसंग में जो राजा मारे गये उन्होंने क्या अपकार किया था ? बतलाओ। भुजाओं के बल रूपी धनाभिमान से मत्त मुझे जीते बिना ही तुम्हारा गर्व करना व्यर्थ है ॥ ३० ॥

अरे दुरात्मन् ! इस प्रकार तू जीवित नहीं रह सकता है ।

(इति सक्रोधमुत्थाय हन्तुमिच्छति ।)
(धृतराष्ट्रो धृत्वोपवेशयति ।)
(भीमः क्रोधं नाटयति ।)

अर्जुनः—(निवारयन्) आर्य, प्रसीद । किमत्र क्रोधेन ।

अप्रियाणि करोत्येष वाचा शक्तो न कर्मणा ।
हतभ्रातृशतो दुःखी प्रलापैरस्य का व्यथा ॥ ३१ ॥

भीमः—अरे रे भरतकुलकलङ्क !

सक्रोधम् = सरोषम् (क्रोध के साथ)। हन्तुम् = मारितुम् (मारने को)। इच्छति = वाञ्छति (चाहता है)।

धृत्वा=गृहीत्वा (पकड़ कर) उपवेशयति=स्थिरीकरोति (बैठा लेता है)।

क्रोधम् = कोपम् । नाटयति = अभिनयति (अभिनय करता है)।

अर्जुनः—निवारयन् = वारयन् (मना करता हुआ)। प्रसीद = प्रसन्नो भव (प्रसन्न रहो)।

अन्वयः—हत-भ्रातृशतः दुःखी एषः वाचा अप्रियाणि करोति, कर्मणा न शक्तः । अस्य प्रलापैः का व्यथा ॥ ३१ ॥

अप्रियाणीति । हतभातृशतः—हतम् = मारितम् भ्रातृणाम् = बन्धूनाम् शतम् यस्य सः (जिसके सौ भाई मार डाले गये)। दुःखी = शोकाकुलः । एषः = दुर्योधनः । वाचा = कथनेन अप्रियाणि = अरुचिकराणि (अप्रिय)। करोति = विदधाति (कर रहा है) कर्मणा=क्रियारूपेण (कर्त्तुम्) न शक्तः=नैव समर्थः । अस्य = एतस्य (इसके) प्रलापैः = मिथ्यालापैः (प्रलाप करने से) का व्यथा = कीदृशी पीडाऽस्ति । अनुष्टुब् वृत्तम् ॥ ३१ ॥

भीमः—रे भरतकुलकलङ्क—भरतकुलस्य = कुरुवंशस्य कलङ्कम् इव = पाप-मिव यस्तत्सम्बुद्धौ ।

(यह कहकर क्रोध के साथ उठकर मारना चाहता है)
(धृतराष्ट्र पकड़कर बिठला देते हैं)
(भीम क्रोध करने का अभिनय करता है ।)

अर्जुन—(रोकते हुए) आर्य ! प्रसन्न हो जाओ । क्रोध करने से क्या लाभ है ।

सौ भाइयों के मारे जाने के कारण दुःखी यह (दुर्योधन) वाणी द्वारा ही अप्रिय बकवाद कर रहा है । कर्म करने में समर्थ नहीं है । इसके प्रलापों से दुःख ही क्या ? ॥३१॥

भीम—अरे भरतकुल-कलङ्क !

अत्रैव किं न विशसेयमहं भवन्तं
दुःशासनानुगमनाय कटुप्रलापिन् !
विघ्नं गुरुर्न कुरुते यदि मद्गदाग्र-
निर्भिद्यमानरणिताऽस्थनि ते शरीरे ॥ ३२ ॥

अन्यच्च मूढ !

शोकं स्त्रीवन्नयनसलिलैर्यत्परित्याजितोऽसि
भ्रातुर्वक्षःस्थलविघटने यच्च साक्षी कृतोऽसि ।

अन्वयः—हे कटुलापिन् ! (यदि) मद्गदाऽग्रनिर्भिद्यमानरणिताऽस्थनि ते शरीरे गुरुः विघ्नं न कुरुते, तर्हि अत्रैव भवन्तं दुःशासनानुगमनाय अहं न विशसेयं किम् ॥ ३२ ॥

अत्रैवेति । कटुप्रलापिन्—कटु = अप्रियः प्रलापो यस्य तत्सम्बुद्धौः = हेऽप्रिय भाषक ! (यदि) मद्गदाग्रनिर्भिद्यमानरणिताऽस्थनि—ममगदायाः अग्रेण = अग्रभागेन निर्भिद्यमानानि = छिद्यमानानि रणितानि = शब्दायमानानि अस्थीनि= कुल्यानि ('कीकसं कुल्यमस्थि च' इत्यमरः ।) यत्र तादृशे (मेरी भुजा की नोक से तोड़ी गई, शब्द करती हुई हड्डियों वाले) ते=तव दुर्योधनस्य । शरीरे = देहे । गुरुः = श्रेष्ठजनः, माता-पिता । विघ्नम् = अन्तरायं न कुरुते = न विदधाति (रुकावट नहीं डालते) । तर्हि = तदा । अत्र एव = अस्मिन्नेव दिवसे (आज ही) भवन्तम् = त्वां दुर्योधनम् (तुम्हें) । दुःशासनानुगमनाय—दुःशासनस्य = तवानुजस्य अनुगमनाय = अनुसरणाय (अनुसरण करने के लिए) । अहम् = भीमः न विशसेयम् किम् = किं न हन्याम् (क्या मार नहीं डालता) । वसन्ततिलका वृत्तम् ॥ ३२ ॥

अन्वयः—युष्मत्कुलकमलिनीकुञ्जरे भीमसेने क्रुद्धे यत् स्त्रीवन्नयनसलिलैः शोकं परित्याजितः असि, यत् च भ्रातुः वक्षःस्थल-विघटने साक्षीकृतः असि, एतत् कुनृपतेः तव जीवितस्य कारणम् आसीत् ॥ ३३ ॥

शोकमिति । युष्मत्कुलकमलिनीकुञ्जरे—युष्मत्कुलम् = तव वंशः एव कम-

---

यदि मेरी गदा के अग्र भाग से तोड़ी गई चरमराती हुई हड्डियों वाले तेरे शरीर पर गुरुजन विघ्न न डालते तब तो आज ही तुझे दुःशासन का अनुगमन करने के लिए मैं क्या मार नहीं चुका होता ॥ ३२ ॥

और भी मूर्ख !—तेरे वंशरूपी कमलिनी लता के लिये मतवाले हाथी के समान मुझ भीम के क्रुद्ध होने पर जो स्त्रियों के समान आँसू बहाकर तूने अपने शोक को हल्का

आसीदेतत्तव कुनृपतेः कारणं जीवितस्य
क्रुद्धे युष्मत्कुलकमलिनीकुञ्जरे भीमसेने ॥ ३३ ॥

दुर्योधनः—दुरात्मन् ! भरतकुलापसद ! पाण्डवपशो ! नाऽहं भवानिव विकत्थनाप्रगल्भः । किन्तु—

द्रक्ष्यन्ति नचिरात्सुप्तं बान्धवास्त्वां रणाङ्गणे ।
मद्गदाभिन्नवक्षोऽस्थिवेणिकाभीमभूषणम् ॥ ३४ ॥

लिनी तस्याः कुञ्जरे = मत्तगजे (तेरे वंशरूपी कमलिनी के मतवाले हाथी जैसे) भीमसेने = वृकोदरे (भीम के) क्रुद्धे = कुपिते सति (क्रुद्ध होने पर) यत् स्त्रीवत् = यन्नारीसमम् (जो स्त्री की भाँति) नयनसलिलैः = नेत्रजलैः (आँसुओं द्वारा) शोकम् = दुःखम् परित्याजितः = मोचितः असि (शोक हल्का किया है) । यत् च = अपरश्च । भ्रातुः = दुःशासनस्य (भाई दुःशासन के) वक्षःस्थलविघटने—वक्षःस्थलस्य = उरःस्थलस्य विघटने = विदारणे (वक्षःस्थल फाड़ने में) साक्षीकृतः असि = प्रत्यक्षद्रष्टः असि (सामने देखते रहे हो) एतत् = द्वयम् एव कुनृपतेः = निन्दनीयभूपतेः (नीच राजा) तव = ते (तेरे) जीवितस्य = जीवनस्य (जीवन का) कारणम् = हेतुः । आसीत् = अभूत् । मन्दाक्रान्ता वृत्तम् । तद्यथा—मन्दाक्रान्ताऽम्बुधिरसनगैर्मोभनौ गौ ययुग्मम् ॥ ३३ ॥

दुर्योधनः – दुरात्मन् = रे दुष्ट ! भरतकुलापसद = भरतकुलकलङ्क ! पाण्डवपशो = नीचपाण्डव ! भवान् इव = त्वत्समः (तुम्हारे समान) विकत्थनाप्रगल्भः—विकत्थनायाम् = आत्मश्लाघायाम् प्रगल्भः = दक्षः (अपनी प्रशंसा करने में कुशल) अहम् = दुर्योधनः न = नास्मि (नहीं हूँ) । किन्तु = परश्च—

अन्वयः—(ते) बान्धवाः त्वां रणाङ्गणे मद्गदाभिन्नवक्षोऽस्थिवेणिकाभीमभूषणं नचिरात् सुप्तं द्रक्ष्यन्ति ॥ ३४ ॥

द्रक्ष्यन्ति इति । (ते) बान्धवाः = भ्रातरः (बान्धव) । रणाङ्गणे = युद्धक्षेत्रे (युद्ध के मैदान में) मद्गदाभिन्नवक्षोऽस्थि-वेणिकाभीम-भूषणम्—मम =

किया है तथा भाई दुःशासन के वक्षःस्थल को फाड़ने में तू साक्षी रहा है इन्हीं दोनों कारणों से तू अब तक जीवित रह सका है ॥ ३३ ॥

दुर्योधन—रे दुष्ट ! भरतकुल-कलंक ! नीचपाण्डव । मैं तेरे समान आत्मश्लाघा करने में कुशल नहीं हूँ किन्तु—

तेरे बान्धव रणाङ्गण में मेरी गदा से छिन्न वक्षःस्थल की हड्डियों की माला से अलङ्कृत तुझे शीघ्र ही देखेंगे ॥ ३४ ॥

भीमः—(विहस्य) यद्येवं श्रद्धत्ते भवांस्तदा प्रत्यासन्नमेव कथयामि ।

पीनाभ्यां मद्भुजाभ्यां भ्रमितगुरुगदाऽऽघातसञ्चूर्णितोरोः,
क्रूरस्याऽऽधाय पादं तव शिरसि नृणां पश्यतां श्वः प्रभाते ।
त्वन्मुख्यभ्रातृचक्रोद्दलनगलदसृक्चन्दनेनाऽऽनखाग्रं
स्त्यानेनाऽऽर्द्रेण चाऽऽक्तः स्वयमनुभविता भूषणं भीममस्मि ॥३५॥

दुर्योधनस्य गदया भिन्नम् = भग्नम् वक्षः = उरः, तस्य यान्यस्थीनि तेषां वेणिका= मालिका, सैव भीमम् = भयङ्करम् भूषणम् = अलङ्करणम् यस्य तम् (मेरी गदा से भग्न वक्षःस्थल की हड्डियों की पंक्तिरूपी भयंकर आभूषणों से सजे) त्वाम् । नचिरात् = अचिरात् (शीघ्र ही) सुप्तम् = चिरनिद्रांगतम् (सोया, मरा हुआ) द्रक्ष्यन्ति = अवलोकयिष्यन्ति (देखेंगे) । अनुष्टुब् वृत्तम् ॥ ३४ ॥

भीमः—विहस्य = हसित्वा (हँसकर) । श्रद्धत्ते = श्रद्धालुरस्ति (ऐसी श्रद्धा रखते हो) प्रत्यासन्नम् = सन्निकटम् एव (समीप ही है) । कथयामि = वदामि (मैं कहता हूँ) ।

अन्वयः—श्वः प्रभाते नृणां पश्यतां पीनाभ्यां मद्भुजाभ्यां भ्रमितगुरुगदाऽऽघातसञ्चूर्णितोरोः क्रूरस्य तव शिरसि पादम् आधाय स्त्यानेन आर्द्रेण च त्वन्मुख्यभ्रातृचक्रोद्दलनगलदसृक्-चन्दनेन आनखाग्रम् आक्तः (सन्) स्वयं भीमं भूषणम् अनुभविता अस्मि ॥ ३५ ॥

पीनाभ्यामिति । श्वः=आगामिदिवसे (कल) प्रभाते=प्रत्यूषे (प्रातःकाल) । नृणाम् = नराणाम् (लोगों के) पश्यताम्=समक्षाणाम् (देखते-देखते) पीनाभ्याम् =स्थूलाभ्याम् मद्भुजाभ्याम् = मद्बाहुभ्याम् (मेरी स्थूल भुजाओं द्वारा) भ्रमित-गुरुगदाऽऽघातसञ्चूर्णितोरोः—भ्रमिता = संचालिता या गुरुगदा = महतीगदा, तस्याः आघातेन = ताडनेन सञ्चूर्णितौ = भग्नौ ऊरू = सक्थिनी यस्य तादृशस्य (घुमाई गई विशाल गदाके आघात से भग्न जंघाओं वाले) क्रूरस्य = कुटिलस्य

भीम—(हँस कर) यदि आप ऐसी श्रद्धा रखते हैं तब तो जो शीघ्र ही होने जा रहा है वह बतलाता हूँ ।

कल प्रातःकाल ही लोगों के देखते-देखते, मेरी स्थूल भुजाओं द्वारा चलाई गई गुर्वी गदा से चकनाचूर हुई जाँघों वाले क्रूर तेरे शिर पर पाँव रखकर पिण्डीभूत तथा गीले, जिस सौ भाइयों के समूह में अकेला तू ही शेष रह गया है ऐसे तेरे टपक रहे रुधिररूप चन्दन से नाखूनों के अग्रभाग पर्यन्त (नाखून घुसेड़कर) रक्त से सना हुआ मैं भयङ्कर भूषण पहने होने का अनुभव करने जा रहा हूँ ॥ ३५ ॥

(नेपथ्ये) भो भो भीमसेनार्जुनौ ! एष खलु निहताऽशेषाऽरातिचक्रः आक्रान्तपरशुरामाऽभिरामयशाः, प्रतापतपितदिङ्मण्डलः स्थापितस्वजनः श्रीमानजातशत्रुर्देवो युधिष्ठिरः समाज्ञापयति ।

उभौ—किमाज्ञापयत्यार्यः ।

(क्रूर) तव=दुर्योधनस्य (तेरे) शिरसि=मूर्ध्नि (शिर पर) पादम्=चरणम् (पाँव) आधाय=धृत्वा (रखकर) । स्त्यानेन=पिण्डीभूतेन (पिण्डवत् बने हुये) आर्द्रेण=क्लिन्नेन (गीले) त्वन्मुख्य-भ्रातृचक्रोद्दलनगलदसृक्-चन्दनेन—त्वम्= दुर्योधनः मुख्यः=प्रधानः यस्य तादृशस्य भ्रातॄणाम्=वान्धवानाम् चक्रस्य= समूहस्य भ्रातृशतस्येत्यर्थः, उद्दलनेन=विखण्डनेन गलद्=विगलद् यद् असृक्= रक्तम्, तदेव चन्दनम्=मलयजस्तेन (जिसमें तुम्हीं एक अवशिष्ट हो ऐसे सौ भाइयों के समूह को नष्ट करने के कारण टपक रहे रक्तरूपी चन्दन से) । आन-खाग्रम्—आ=समन्तात् नखाग्रम्=नखाग्रभागपर्यन्तम् (नाखूनों के अग्रभाग पर्यन्त) । आक्तः=व्याप्तः सन् (व्याप्त होते हुये) स्वयम्=आत्मनैव (अपने आप) भीमम्=भयङ्करम् भूषणम्=अलङ्करणम् अनुभविताऽस्मि=अनुभवकर्ता भविष्यामि (अनुभव करूँगा) । स्रग्धरा वृत्तम् ।। ३५ ।।

निहताऽशेषारातिचक्रः—निहतम्=मारितम् अशेषम्=निखिलम् अराति-चक्रम्=शत्रुसमुदायः यस्य सः (समस्त शत्रु-समुदाय का विनाश किये हुये) । आक्रान्तपरशुरामाभिरामयशाः—आक्रान्तम्=अभिभूतम् परशुरामस्य=जाम-दग्नेयस्याभिरामम्=मनोरमम् यशः=प्रतापः येनाऽसौ (परशुराम के मनोरम प्रताप से अभिभूत) प्रतापतापितदिङ्मण्डलः—प्रतापेण=यशसा तापितम्= आकुलितम् दिङ्मण्डलम्=ककुभमण्डलम् येन तथाविधः (अपनी कीर्ति से दशों दिशाओं को आकुल करने वाले) स्थापितस्वजनः—स्थापितः=स्थिरीकृतः स्वजनः-आत्मजनो येन सः (स्वजनों को स्थापित करने वाला) । अजातशत्रुः— न जातः शत्रुर्यस्य सः=अनुत्पन्नरिपुः (अजातशत्रु) । समाज्ञापयति= समादिशति (आदेश दे रहे हैं) ।

(नेपथ्य में) हे भीम तथा अर्जुन ! यह समस्त शत्रुसमूह को मारकर परशुराम के समान मनोरम यश से अभिभूत, अपने पराक्रमसे समस्त दिशामण्डल को प्रतप्त करने वाले स्वजनों को स्थिर करने वाले अजातशत्रु श्रीमान् महाराज युधिष्ठिर समादेश दे रहे हैं ।

दोनों—आर्य क्या आज्ञा दे रहे हैं ?

(पुनर्नेपथ्ये ।)

कुर्वन्त्वाप्ता हतानां रणशिरसि जना वह्निसाद्देहभारा-
नश्रून्मिश्रं कथञ्चिद्ददतु जलममी बान्धवा बान्धवेभ्यः ।
मार्गन्तां ज्ञातिदेहान् हतनरगहने खण्डितान्गृध्रकङ्कै-
रस्तं भास्वान्प्रयातः सह रिपुभिरयं संह्रियन्तां बलानि ॥ ३६ ॥

अन्वयः—आप्ताः जनाः रणशिरसि हतानां देहभारान् वह्निसात् कुर्वन्तु, अमी बान्धवाः बान्धवेभ्यः अश्रून्मिश्रं जलं कथञ्चिद् ददतु, गृध्रकङ्कैः खण्डितान् ज्ञातिदेहान् हतनरगहने मार्गन्ताम् । अयं भास्वान् रिपुभिः सह अस्तं प्रयातः बलानि संह्रियन्ताम् ॥ ३६ ॥

कुर्वन्त्विति । आप्ताः जनाः = आप्तपुरुषाः (माननीय लोग) । रणशिरसि= युद्धभूमौ (युद्धभूमि में) हतानाम् = मारितानाम् (मारे गये लोगों के) । देह-भारान् = मृतशवान् (लाशों को) वह्निसात् कुर्वन्तु=अग्निसंस्कारं कुर्वन्तु (आग में जला दें) । अमी = एते बान्धवाः = बन्धुजनाः (यह बान्धव) बान्धवेभ्यः = स्वभ्रातृभ्यः (बान्धवों के लिए) अश्रून्मिश्रम् = नयनवारियुक्तम् (आँसुओं से मिश्रित) जलम्=पानीयम् (जल) कथञ्चित्=केनापि प्रकारेण (किसी प्रकार) ददतु = तर्पयन्तु (तर्पण करें) । गृध्रकङ्कैः = गृध्रकङ्कादि-मांस-भक्षिपक्षिभिः (गीधों तथा कङ्कपक्षियों द्वारा) खण्डितान् = खण्डशः कृतान् (टुकड़े-टुकड़े किये गये) ज्ञातिदेहान् = बान्धवशरीराणि (बान्धवों के शरीरों को) हतनर-गहने—हतानाम् = घातितानाम् नराणाम् = लोकानाम् गहने = सङ्कुलिते (मारे गये लोगों की भीड़ में) । मार्गन्ताम् = अन्विष्यन्ताम् (खोजें) । अयम् = एषः (यह) भास्वान् = सविता (सूर्य) । रिपुभिः सह = अरिभिः समम् (शत्रुओं के साथ) । अस्तम् = अस्ताचलम्, समाप्तिम् वा (अस्त होने को) प्रयातः = प्रस्थितः (जा रहे हैं) । सूर्यास्तकालः संजात इत्याशयः । बलानि = सैन्यानि (सेनायें) संह्रियन्ताम् = उपह्रियन्ताम् (वापस कर ली जायें) । सहोक्तिर-लङ्कारः । स्रग्धरा वृत्तम् ॥ ३६ ॥

(पुनः नेपथ्य में)

माननीय लोग युद्धभूमि में मारे गये व्यक्तियों के शवों का अग्नि संस्कार करें, वह बान्धव बन्धुजनों को अश्रुमिश्रित जलाञ्जलि किसी प्रकार देवें, गीधों तथा कङ्क पक्षियों द्वारा टुकड़े टुकड़े किये गये बान्धव-शरीरों को मारे गये व्यक्तियों की लाशों के ढेर में तलाश किया जाय । अब यह सूर्य भगवान् शत्रुओं के अन्त के साथ ही स्वयं भी अस्त होने जा रहे हैं अतः सेनाओं को (रणक्षेत्र से) वापस कर लिया जाय ॥ ३६ ॥

उभौ—यदाज्ञापयत्यार्यः। (इति निष्क्रान्तौ।)

(नेपथ्ये।)

अरे रे गाण्डीवाकर्षणबाहुशालिन्! अर्जुन, अर्जुन! क्वेदानीं गम्यते?

कर्णक्रोधेन युष्मद्विजयि धनुरिदं त्यक्तमेतान्यहानि,
प्रौढं विक्रान्तमासीद्वन इव भवतां शूरशून्ये रणेऽस्मिन्।
स्पर्शं स्मृत्वोत्तमाङ्गे पितुरनवजितन्यस्तहेतेरुपेतः
कल्पाग्निः पाण्डवानां द्रुपदसुतचमूघस्मरो द्रौणिरस्मि॥ ३७॥

उभौः—यत् = यथाप्रकारम् (जैसा) आर्यः = अग्रजः (आर्य) आज्ञापयतिः = आदिशति।

गाण्डीवाकर्षणबाहुशालिन्—गाण्डीवस्य = गाण्डीव-धनुषः आकर्षणे यौ बाहू = भुजे ताभ्यां शालते = शोभते इति तत्सम्बुद्धौ (गाण्डीव धनुष को खींचने में प्रसिद्ध भुजाओं वाले) इदानीम् = साम्प्रतम् (अब) क्व = कुत्र (कहाँ) गम्यते = गन्तुमुपक्रमते (जा रहा है)।

अन्वयः—युष्मद्विजयि इदं धनुः कर्णक्रोधेन (मया) एतानि अहानि त्यक्तम्। अस्मिन् शूरशून्ये वने इव रणे भवतां प्रौढं विक्रान्तम् आसीत्। अनवजित न्यस्तहेतेः पितुः उत्तमाङ्गे स्पर्शं स्मृत्वा पाण्डवानां कल्पाग्निः द्रुपदसुतचमूघस्मरः द्रौणिः उपेतः अस्मि॥ ३७॥

कर्णक्रोधेनेति। युष्मद्विजयि—युष्मान् विजेतुं शीलं यस्य तत् (तुम लोगों पर विजय पाने वाला) इदम् = एतत् धनुः = आज्यम् (यह धनुष)। कर्णक्रोधेन—कर्णे = राधेये क्रोधः = रोषः, तेन (कर्ण पर क्रोध करने के कारण) (मया) एतानि अहानि = एतावद्दिनान्तम् (इतने दिनों तक) त्यक्तम् = परित्यक्तम् (छोड़ दिया था)। अस्मिन् = एतस्मिन्। शूरशून्ये—शूरैः शून्ये = वीर-

---

दोनों—जैसी महाराज की आज्ञा है। (यह कहकर दोनों निकल जाते हैं)।

(नेपथ्य में) अरे गाण्डीव धनुष को खींचने में प्रख्यात बाहुवाले! अर्जुन! अर्जुन! तू अब कहाँ जा रहा है।

तुम लोगों पर विजय प्राप्त करने वाला यह धनुष कर्ण पर क्रुद्ध मैंने इतने दिनों तक छोड़ रखा था। इस वीरों से शून्य वन के समान रण में तुम्हारा प्रबल पौरुष था। अपराजित परित्याग किये हुये अस्त्र वाले पिताजी के शिर पर किये गये स्पर्श का स्मरण कर पाण्डवों की प्रलयाग्नि के समान धृष्टद्युम्न की सेना का विनाश करने वाला द्रोणपुत्र मैं आ गया हूँ॥ ३७॥

धृतराष्ट्रः—(आकर्ण्य, सहर्षम् ।) वत्स दुर्योधन ! द्रोणवधपरिभवोद्दीपितक्रोधपावकः पितुरपि समधिकबलः शिक्षावानमरोपमश्चायमश्वत्थामा प्राप्तः । तत्प्रत्युपगमनेन तादवयं सम्भाव्यतां वीरः ।

गान्धारी—जाद ! पच्चुग्गच्छ एदं महाभाअम् । [जात ! प्रत्युद्गच्छैनं महाभागम् ।]

रहिते (वीरों से शून्य) वने इव = कानने इव । रणे = युद्धे (युद्ध में) भवताम् = युष्माकम् (आपलोगों का) प्रौढम् = प्रबलम् । विक्रान्तम् = पौरुषम् आसीत् (प्रबल पराक्रम था) । अनवजितन्यस्तहेतेः—अनवजिता = अपराजिता न्यस्ता = परित्यक्ता हेतिः = अस्त्रम् येन तस्य (पुत्रशोक के कारण अपराजित अस्त्र त्याग किये हुये) । पितुः = तातस्य द्रोणाचार्यस्य (पिता जी के) उत्तमाङ्गे = शिरसि (शिर पर) स्पर्शम् = शत्रुभिः परिस्पर्शम् (शत्रुओं द्वारा छुआ जाना) स्मृत्वा = चेतसि कृत्वा (स्मरण कर) । पाण्डवानाम् = युधिष्ठिरादीनाम् (पाण्डवों की) कल्पाग्निः—कल्पस्य = प्रलयस्याग्निः = वह्निः इव (प्रलयाग्नि के समान) । द्रुपदसुतचमूघस्मरः—द्रुपदसुतस्य = धृष्टद्युम्नस्य चमूनाम् = सेनानाम् घस्मरः = नाशकः (द्रुपदपुत्र की सेना का नाश करने वाला) । द्रौणिः = द्रोणस्यापत्यं पुमान् द्रौणिः = अश्वत्थामा । उपेतः = प्राप्तः अस्मि । स्रग्धरा वृत्तम् ॥ ३७ ॥

धृतराष्ट्रः—आकर्ण्य = श्रुत्वा (सुनकर) । सहर्षम् = प्रसन्नतया (हर्ष के साथ) । द्रोणवधपरिभवोद्दीपित-क्रोधपावकः—द्रोणस्य = स्वजनकस्य वधः = नाशः एव परिभवः = अपमानम् तेनोद्दीपितः = प्रदीपितः क्रोधः = कोपः एव पावकः = वह्निः यस्य सः (द्रोण के वध रूपी अपमान से उद्दीपित क्रोधानल वाले) । पितुः अपि = जनकादपि (पिता से भी) समधिकबलः—समधिकम् = महद् बलम् = शक्तिर्यस्मिन् सः (अधिक शक्तिशाली) । शिक्षावान् = विद्वान् (धनुर्वेदज्ञ) अमरोपमः = देवसमः । अयम् = एषः । अश्वत्थामा = द्रोणसुतः । प्राप्तः = समागतः (आये हैं) । प्रत्युद्गमनेन = प्रत्युत्थानादिना (उठकर अगवानी करके) । सम्भाव्यताम् = सत्क्रियताम् (सत्कार किया जाय) ।

गान्धारीः—जात = वत्स । महाभागम् = महाशयम् (महाशय को) । प्रत्युद्गच्छ = प्रत्युच्चल (उठकर आगे बढ़कर) ।

धृतराष्ट्र—(सुनकर, प्रसन्नता के साथ) वत्स दुर्योधन ! द्रोण के वधरूपी अपमान से उत्तेजित क्रोधानल वाले, अपने पिता से भी अधिक बलशाली, धनुर्वेदज्ञ, देवोपम यह अश्वत्थामा आये हैं । अतः अगवानी कर इस वीर का स्वागत करना चाहिये ।

गान्धारी—वत्स ! इन महाशय को आगे बढ़कर स्वागत करो ।

दुर्योधनः—तात ! अम्ब ! किमनेनाङ्गराजवधाऽऽशंसिना वृथायौवन-शस्त्रबलभरेण ?

धृतराष्ट्रः—वत्स ! न खल्वस्मिन्काले पराक्रमवतामेवंविधानां वाङ्मात्रेणाऽपि विरागमुत्पादयितुमर्हसि ।

(प्रविश्य)

अश्वत्थामा—विजयतां कौरवाऽधिपतिः ।

दुर्योधनः—(उत्थाय) गुरुपुत्र ! इत आस्यताम् । (इत्युपवेशयति ।)

अश्वत्थामा—(सास्रम्) राजन् दुर्योधन !

दुर्योधनः—अङ्गराजवधाशंसिना—अङ्गराजस्य = कर्णस्य वधम् = हननम् आशंसते, इति तेन (अंगराज के वध को चाहने वाले) वृथायौवनशस्त्रबल-भरेण—वृथा = व्यर्थम् यौवनस्य = तारुण्यस्य शस्त्राणाम् = आयुधानाम् बलस्य = शक्तेश्च भरः = भारो यस्य तथाविधेन (व्यर्थ ही तरुणाई तथा शस्त्रबल के भार को ढोने वाले से) । किम् = कः लाभः ।

धृतराष्ट्रः—अस्मिन् काले = एतस्मिन्समये (इस समय) । पराक्रमवताम् = बलशालिनाम् (वीरों का) एवंविधानाम् = ईदृशानाम् (ऐसे) वाङ्मात्रेण = कथनमात्रेण (कहने मात्र से) विरागम् = विरक्तिम् (वैराग्य) उत्पादयितुम् = जनयितुम् (उत्पन्न करने को) अर्हसि = समर्थोऽसि ।

अश्वत्थामा—विजयताम् = जयतु (जय हो) । कौरवाधिपतिः = कुरुराजः (कौरवराज) ।

दुर्योधनः—आस्यताम् = आसनं गृह्यताम् (बैठिये) ।

दुर्योधन—हे तात ! अम्ब ! अंगराज का वध चाहने वाले, व्यर्थ ही यौवन तथा शस्त्रबल का बोझ लादने वाले इस व्यक्ति से क्या लाभ ?

धृतराष्ट्र—वत्स ! वास्तव में ऐसे समय में इस प्रकार पराक्रमशाली व्यक्तियों को कटु वचनों द्वारा विरक्त करना ठीक नहीं है ।

(प्रवेश कर)

अश्वत्थामा—कौरवराज की जय हो ।

दुर्योधन—(उठकर) गुरुपुत्र ! इधर बैठिये । (यह कहकर बिठलाता है ।)

अश्वत्थामा—(आँसू बहाते हुये) राजन् ! दुर्योधन !

कर्णेन कर्णसुभगं बहु यत्तदुक्त्वा,
यत्सङ्गरेषु विहितं विदितं त्वया तत् ।
द्रौणिस्त्वधिज्यधनुरापतितोऽभ्यमित्र-
मेषोऽधुना त्यज नृप ! प्रतिकारचिन्ताम् ॥ ३८ ॥

दुर्योधनः—(साभ्यसूयम्) आचार्यपुत्र !

अवसानेऽङ्गराजस्य योद्धव्यं भवता किल ।
ममाऽप्यन्तं प्रतीक्षस्व कः कर्णः कः सुयोधनः ॥ ३९ ॥

अन्वयः—कर्णेन यत् कर्णसुभगं तद् बहु उक्त्वा यत् सङ्गरेषु विहितं तत् त्वया विदितम् । एषः द्रौणिः तु अधिज्यधनुः (सन्) अभ्यमित्रम् आपतितः । नृप ! अधुना प्रतिकारचिन्तां त्यज ॥ ३८ ॥

कर्णेनेति । कर्णेन = राधेयेन (कर्ण ने) यत् कर्णसुभगम् = श्रोत्रसुन्दरम् (कानों को अच्छा लगने वाला) तत् = पूर्वप्रकारकम् (वैसा) वहु = अधिकम् (वहुत) उक्त्वा = कथयित्वा (कह कर) यत् सङ्गरेषु = रणेषु (युद्ध में) । विहितम् = कृतम् (किया) तत् त्वया = कुरुराजेन (तुमने) विदितम् = ज्ञातम् (समझ लिया) । एषः = अयम् द्रौणिः = अश्वत्थामा तु अधिज्यधनुः—अधिज्यम् = ज्यामधिगतम्, सज्जम् धनुः = नाराचम् यस्य सः (धनुष खींचे हुये) । अभ्यमित्रम्—अमित्राणाम् = शत्रूणाम् अभि = अभिमुखम् (शत्रुओं के सामने) आपतितः = अभ्यागतः (आया है) । नृप = राजन् ! अधुना = साम्प्रतम् (अब) प्रतिकारचिन्ताम्—प्रतिकारस्य चिन्तनम् (बदला लेने की चिन्ता) त्यज = मुञ्च (छोड़ दो) । वसन्ततिलका वृत्तम् ॥ ३८ ॥

दुर्योधनः—साभ्यसूयम् = ईर्ष्यया सहितम् (ईर्ष्या के साथ) ।

अन्वयः—अङ्गराजस्य अवसाने किल भवता योद्धव्यम्, मम अपि अन्तं प्रतीक्षस्व । कः कर्णः कः सुयोधनः ॥ ३९ ॥

अवसान इति । अङ्गराजस्य = कर्णस्य । अवसाने = समाप्तौ (अंगराज का

कर्ण ने कानों को प्रिय लगने वाली मीठी-मीठी बातें कहकर युद्ध में जो किया, वह तो तुम्हें ज्ञात ही है । यह अश्वत्थामा धनुष खींचकर शत्रुओं के सम्मुख आ पहुँचा है । हे नाथ ! अब शत्रुओं बदला लेने की चिन्ता छोड़ दो (मैं बदला चुका दूँगा) ॥ ३८ ॥

दुर्योधन—(ईर्ष्या के साथ) आचार्यपुत्र !

अङ्गराज कर्ण के मारे जाने के पश्चात् ही यदि आपको युद्ध करना अभीष्ट था तब तो मेरे अन्त की भी प्रतीक्षा कर लीजिये । मेरे लिये कर्ण सुयोधन जैसे ही थे ॥ ३९ ॥

अश्वत्थामा—(स्वगतम्) कथमद्याऽपि स एव कर्णपक्षपातः, अस्मासु च परिभवः। (प्रकाशम्) राजन्! कौरवेश्वर! एवं भवतु। (इति निष्क्रान्तः।)

धृतराष्ट्रः—वत्स! क एष ते व्यामोहो यदस्मिन्नपि काले एवंविधस्य महाभागस्याऽश्वत्थाम्नो वाक्पारुष्येणाऽपरागमुत्पादयसि।

दुर्योधनः—किमस्याऽप्रियमनृतं च मयोक्तम्? किं वा नेदं क्रोधस्थानम्? पश्य—

अन्त हो जाने पर) किल=खलु। भवता=त्वया (आपके द्वारा)। योद्धव्यम्=युद्धं करणीयमासीत् (युद्ध किया जाना था)। (तर्हि) मम=दुर्योधनस्य अपि (मेरा भी) अन्तम्=समाप्तिम् (अन्त को) प्रतीक्षस्व=प्रतीक्षां कुरु (प्रतीक्षा करो)। कः कर्णः कः सुयोधन=कर्णसुयोधनयोः भेदः मम मनसि नासीत् (मैं तो कर्ण और सुयोधन में अन्तर नहीं समझता था)। अनुष्टुब् वृत्तम्॥ ३९॥

अश्वत्थामा—स्वगतम्=आत्मगतम् (मन में) अद्यापि=सम्प्रत्यपि (आज भी)। स एव=पूर्वोक्त एव (वही) कर्णपक्षपातः—कर्णस्य=राधेयस्य पक्षे पतनम् (कर्ण का पक्षपात) अस्मासु=अस्मादृशेषु जनेषु (हमारे जैसे वीरों पर) परिभवः=तिरस्कारः। प्रकाशम्=प्रकटयित्वा (प्रकट रूप में) एवं भवतु=एवं स्यात् (ऐसा ही हो)।

धृतराष्ट्रः—ते=तव। एषः=ईदृशः (यह) व्यामोहः=मतिभ्रमः। अस्मिन्नपि काले=ईदृशे सकटेऽपि (ऐसे संकटकाल में भी)। वाक्पारुष्येण=कटुवचनेन (कठोर वचनों से) अपरागम्=वैराग्यम् (विरक्ति) उत्पादयसि=जनयसि (उत्पन्न कर रहे हो)।

दुर्योधनः—अस्य=एतस्याश्वत्थाम्नः (इसका) अप्रियम्=अरुचिकरम् (अप्रिय) अनृतम्=असत्यम् (झूठ)। मया=दुर्योधनेन (मैंने) किमुक्तम्=किं

अश्वत्थामा—(मन में) यह आज भी कर्ण के प्रति पक्षपात तथा हम लोगों पर तिरस्कार कैसा? (प्रकट रूप में) राजन्! कौरवेश्वर! ऐसा ही हो। (यह कहकर निकल जाता है)।

धृतराष्ट्र—वत्स! कैसा यह तुम्हारा व्यामोह है जो कि ऐसे घोर संकट में भी इस प्रकार के वीर अश्वत्थामा को कटुवचन कहकर विराग उत्पन्न कर रहे हो?

दुर्योधन—मैंने इसका अप्रिय या असत्य क्या कह दिया? क्या यह क्रोध का कारण नहीं है? देखो—

अकलितमहिमानं क्षत्रियैरात्तचापैः
समरशिरसि युष्मद्भाग्यदोषाद्विपन्नम् ।
परिवदति समक्षं मित्रमङ्गाधिराजं
मम खलु कथयास्मिन्को विशेषोऽर्जुने वा ॥ ४० ॥

धृतराष्ट्रः—अथवा ! तवापि कोऽत्र दोषः । अवसानमिदानीं भरतकुलस्य । सञ्जय ! किमिदानीं करोमि मन्दभाग्यः ? (विचार्य ।) भवत्वेवं तावत् । सञ्जय ! मद्वचनाद् ब्रूहि भारद्वाजमश्वत्थामानम् ।

कथितम् (क्या कहा) । वा = अथवा इदम् = एतम् (यह) क्रोधस्थानम् = कोपहेतुः (क्रोध का स्थान) न = नास्ति ।

अन्वयः—आत्तचापैः क्षत्रियैः अकलितमहिमानं युष्मद्भाग्यदोषात् समरशिरसिविपन्नं मित्रम् अङ्गराजं मम समक्षं परिवदति अस्मिन् अर्जुने वा कः विशेषः (इति) खलु कथय ॥ ४० ॥

अकलितेति । आत्तचापैः—आत्ताः = गृहीताः चापाः = धनूंषि यैस्तैः (धनुष खींचे हुये) क्षत्रियैः = क्षत्रवीरैः (क्षत्रियों द्वारा) अकलितमहिमानम्—अकलितः = अगणितः, सम्यगविज्ञातः, महिमा = माहात्म्यम् यस्य तथाविधम् (महिमा को न जानने वाले) युष्मद्भाग्यदोषात् = युष्माकं भाग्यस्य = अदृष्टस्य दोषात् = विपरीतात् (तुम्हारे भाग्यदोष से) समरशिरसि = रणमूर्ध्नि (युद्ध में) विपन्नम् मृतम् (मारे गये) मित्रम् = सखायम् । अङ्गराजम् = कर्णम् (मित्र कर्ण को) समक्षम् = प्रत्यक्षम् (सामने) परिवदति = निन्दति (निन्दा कर रहा है) । अस्मिन् = एतस्मिन् द्रौणौ (इस अश्वत्थामा में) अर्जुने च = किरीटिनि च (और अर्जुन में) को विशेषः = किं वैशिष्ट्यम् (क्या अन्तर है) खलु = नूनम् । कथय = भण (कहो) । न कोऽपि भेदः इत्याशयः । मलिनी वृत्तम् ॥ ४० ॥

धृतराष्ट्रः—तव = ते अपि (तुम्हारा भी) अत्र = अस्मिन् (इसमें) कः दोषः = कोऽपराधः (क्या दोष) इदानीम् = सम्प्रति । भरतकुलस्य = भरत-

---

धनुष खींचे क्षत्रियों ने जिसकी महिमा नहीं समझ पाई, तुम सबके दुर्भाग्य से युद्ध-भूमि में मारे गये ऐसे मित्र अंगराज कर्ण की मेरे समक्ष ही निन्दा कर रहे उस अश्वत्थामा अथवा अर्जुन में कोई अन्तर नहीं दिखाई पड़ रहा है । आप ही कहें ॥ ४० ॥

धृतराष्ट्र—अथवा वत्स ! इसमें तुम्हारा भी क्या दोष है ? अब भरत कुल का अवसान ही है । सञ्जय ! मन्दभागी मैं अब क्या करूँ ? (सोचकर) अच्छा तो ऐसा ही हो । सन्जय ! मेरे आदेश से भारद्वाजगोत्री अश्वत्थामा से कहो—

स्मरति न भवान्पीतं स्तन्यं विभज्य सहाऽमुना,
मम च मृदितं क्षौमं बाल्ये त्वदङ्गविवर्तनैः।
अनुजनिधनस्फीताच्छोकादतिप्रणयाच्च यद्
विकृतवचने माऽस्मिन् क्रोधश्चिरं क्रियतां त्वया ॥ ४१ ॥

वंशस्थ। अवसानम् = समाप्तिः (भरतवंश का अन्त ही है) मद्वचनात् = ममाज्ञया (मेरे आदेश से) भारद्वाजम् = भरद्वाजगोत्रोत्पन्नम्। अश्वत्थामानम् = द्रौणायनिम् (भारद्वाज अश्वत्थामा को) ब्रूहि = कथय (कहो)।

अन्वयः—बाल्ये अमुना सह विभज्य पीतं स्तन्यं भवान् न स्मरति ? त्वदङ्गविवर्तनैः मृदितं मम क्षौमं च (न स्मरति)। तत् अनुजनिधनस्फीतात् शोकात् अतिप्रणयात् च विकृतवचने अस्मिन् त्वया चिरं क्रोधः मा क्रियताम् ॥ ४१ ॥

स्मरतीति। बाल्ये = बाल्यावस्थायाम्। अमुना = एतेन दुर्योधनेन सह = समम् (इसके साथ) विभज्य = विभागं कृत्वा (बाँट कर) पीतम् = पानं कृतम्। स्तन्यम्—स्तनयोः जातं स्तन्यम्=मातृदुग्धम् (दूध) भवान् = श्रीमान्। न स्मरति = स्मृतिपथं नानयति (याद नहीं कर रहे हो)। त्वदङ्गविवर्तनैः—तव अङ्गस्य = शरीरस्य विवर्तनैः = परिवर्तनैः (तुम्हारे शरीर को लोटने पोटने से)। मृदितम् = मलिनीकृतम् (मैला किये हुये)। मम = मे (मेरा) क्षौमम् = पट्टवस्त्रम् (रेशमी वस्त्र को) (न स्मरति)। तत् = तस्मात् (इस कारण से) अनुजनिधनस्फीतात्—अनुजानाम् = शतभ्रातृणाम्, निधनेन=मरणेन (निधन से) स्फीतात् = वर्धनात् (बढ़ने से)। शोकात् = दुःखात् अतिप्रणयात् = अतिप्रेम्णः च (अत्यधिक प्रेम के कारण)। विकृतवचने—विकृतम् = विरुद्धम् वचनम् = कथनं यस्य तादृशे (विरुद्ध वचन कहनेवाले)। अस्मिन्=दुर्योधने (इस दुर्योधन पर)। त्वया = अश्वत्थाम्ना (तुम्हें) चिरम्=बहुकालम् (अधिक समय तक) क्रोधः = कोपः मा क्रियताम् = मा विधीयताम् (मत करें)। हरिणी वृत्तम्। तद्यथा—न समरसलागा षड् वेदैर्हयैर्हरिणी स्मृता ॥ ४१ ॥

बाल्यावस्था में इसके साथ बाँटकर पिये माँ के दूध की तथा अपने आप शरीर लोट-पोट कर हमारे रेशमी वस्त्रों को रौंदकर मलिन करने वाली बात क्यों नहीं आप याद करते हैं ? इस कारण भाइयों के मारे जाने से बढ़े शोक से तथा अत्यन्त प्रेम के कारण विरुद्ध वचन बोलने वाले इस दुर्योधन पर तुम्हें अधिक देर तक क्रोध नहीं करना चाहिए ॥ ४१ ॥

सञ्जयः—यदाज्ञापयति तातः । (इत्युत्तिष्ठति ।)

धृतराष्ट्रः—अपि चेदमन्यत्त्वया वक्तव्यम्—

यन्मोचितस्तव पिता वितथेन शस्त्रं,
यत्तादृशः परिभवः स तथाविधोऽभूत् ।
एतद्विचिन्त्य बलमात्मनि पौरुषं च,
दुर्योधनोक्तमपहाय विधास्यतीति ॥ ४२ ॥

सञ्जयः—यदाज्ञापयति तातः । (इति निष्क्रान्तः ।)

सञ्जयः— यत् = यथा । तातः = महाराजः । आज्ञापयति = आदिशति ।

धृतराष्ट्रः—अन्यत् = अपरम् (और भी) त्वया = सञ्जयेन (तुम्हें) वक्तव्यम् = कथनीयम् (कहना चाहिये) ।

अन्वयः—यत् तव पिता वितथेन शस्त्रं मोचितः, यत् तादृशः सः तथाविधः परिभवः अभूत् । एतद् विचिन्त्य आत्मनि पौरुषं बलं च (विचिन्त्य) दुर्योधनोक्तम् अपहाय विधास्यति ॥ ४२ ॥

यन्मोचित इति । यत्=यस्मात् हेतोः (जो कि) तव=तेऽश्वत्थाम्नः (तुम्हारे) पिता = जनकः (पिता ने) वितथेन = असत्यभाषणेन (युधिष्ठिर द्वारा असत्य बोलने से) । शस्त्रम् = आयुधम् (शस्त्र) मोचितः = त्याजितः (छुड़ाये गये) । तादृशः = तथाविधः सः=असौ । तथाविधः=लोकविख्यातः । परिभवः = अपमानम् (तिरस्कार) अभूत् = बभूव (हुआ) । एतद्विचिन्त्य इदं विचार्य (यह सोच कर) आत्मनि = स्वे (अपने में) पौरुषम् = पुरुषत्वम् । बलं च = पराक्रमं च (विचिन्त्य) । दुर्योधनम् = कुरुपतिम् (दुर्योधन को) अपहाय = विहाय (छोड़कर) (प्रतिकारम्) विधास्यसि = करिष्यसि । वसन्ततिलका वृत्तम् ॥ ४२ ॥

सञ्जय—जैसी आपकी आज्ञा । (यह कहकर उठ खड़ा होता है ।)

धृतराष्ट्र—(और) यह भी तुम्हें कह देना चाहिये—

जो तुम्हारे पिता द्रोण ने युधिष्ठिर के द्वारा असत्य-भाषण ('अश्वत्थामा मारा गया' यह) से शस्त्र का परित्याग किया एवम् उस प्रकार प्रख्यात (तुम्हारे पिता) का वैसा लोकप्रसिद्ध अपमान (मृत्यु) हुआ यह विचार कर तथा अपने बल-पौरुष को विचार कर दुर्योधन की बात भुलाकर जो उचित हो वही तुम्हें करना चाहिये ॥ ४२ ॥

सञ्जय—जैसी महाराज की आज्ञा । (यह कहकर निकल जाता है ।)

दुर्योधनः—सूत ! साङ्ग्रामिकं मे रथमुपकल्पय ।

सूतः—यदाज्ञापयत्यायुष्मान् । (इति निष्क्रान्तः)

धृतराष्ट्रः—गान्धारि ! इतो वयं मद्राधिपतेः शल्यस्य शिबिरमेव गच्छावः । वत्स ! त्वमप्येवं कुरु ।

(इति परिक्रम्य निष्क्रान्ताः सर्वे ।)

इति पञ्चमोऽङ्कः ।



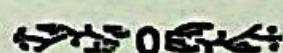
दुर्योधनः—साङ्ग्रामिकम् = संङ्ग्रामसम्बन्धिनम् (युद्ध विषयक) मे = मम दुर्योधनस्य (मेरा) रथम् = स्यन्दनम् (रथ)। उपकल्पय = सज्जय (तैयार करो) ।

सूतः—आयुष्मान् = चिरजीवी ।

धृतराष्ट्रः—गान्धारि = हे कौरवाधीशमातः । इतः = अस्मात् स्थानात् (यहाँ से) मद्राधिपते = मद्रनृपतेः (मद्रराज) शल्यस्य = तदभिधस्य (शल्य के) शिविरम् = सैन्यस्थलम् एव । गच्छावः = चलावः (चलें)। एवम् = इत्थम् (ऐसा) कुरु = विधेहि (करो) ।

परिक्रम्य = परिक्रमण कृत्वा (घूमकर) ।

इति 'सुधा'-संस्कृत-हिन्दी-टीकाद्वयोपेतस्य वेणीसंहार-
नाटकस्य पञ्चमोऽङ्कः ।



दुर्योधन—सूत ! युद्धसम्बन्धी मेरा रथ तैयार करो ।

सूत—जैसी आयुष्मान् की आज्ञा । (यह कहकर निकल जाता है ।)

धृतराष्ट्र—हे गान्धारी ! यहाँ से हम लोग मद्रराजशल्य के शिविर को ही चलें । वत्स दुर्योधन ! तुम भी ऐसा ही करो ।

(यह कहकर घूमकर सब निकल जाते हैं ।)

पञ्चम अङ्क समाप्त ।



अथ षष्ठोऽङ्कः

(ततः प्रविशत्यासनस्थो युधिष्ठिरो, द्रौपदी, चेटी पुरुषश्च ।)

युधिष्ठिरः—(विचिन्त्य निःश्वस्य च ।) कष्टं भोः, कष्टम् ।

तीर्णे भीष्ममहोदधौ कथमपि द्रोणानले निर्वृते
कर्णाऽऽशीविषभोगिनि प्रशमिते शल्ये च याते दिवम् ।
भीमेन प्रियसाहसेन रभसात्स्वल्पाऽवशेषे जये
सर्वे जीवितसंशयं वयममी वाचा समारोपिताः ॥ १ ॥

युधिष्ठिरः—विचिन्त्य = विचार्य (सोचकर) कष्टम् = दुःखम् (कष्ट है) ।

अन्वयः—भीष्ममहोदधौ तीर्णे द्रोणानले कथम् अपि निर्वृते कर्णाशीविषभोगिनि प्रशमिते शल्ये च दिवं याते, जये स्वल्पावशेषे, प्रियसाहसेन भीमेन रभसात् अमी सर्वे वयं वाचा जीवितसंशयं समारोपिताः ॥ १ ॥

तीर्णे इति । भीष्ममहोदधौ—भीष्मः = गाङ्गेयः एव महोदधिः = महासागरस्तस्मिन् (भीष्मरूपी महासागर में) तीर्णे = पारं गते (पार पाने पर) । द्रोणानले—द्रोणः = द्रोणाचार्यः एव अनलः = वह्निस्तस्मिन् (द्रोण के क्रोधानल में) कथम् अपि = केनापि प्रकारेण (किसी तरह) । निर्वृते—उपशान्ति गते (मिट जाने पर) कर्णाशीविषभोगिनि = कर्ण एव आशीविषभोगि = सर्पस्तस्मिन् (कर्ण रूपी कृष्ण सर्प के) प्रशमिते = शान्ति गते (शान्त हो जाने पर) शल्ये = मद्राधिपतौ (शल्य के) दिवम् = स्वर्गम् याते = प्रस्थिते (स्वर्ग चले जाने पर) । जये = विजये । स्वल्पावशेषे—स्वल्पम् = न्यूनम् अवशेषः = अवशिष्टम् यत्र तस्मिन् (विजय का कुछ भाग ही शेष रहने पर) । प्रियसाहसेन—प्रियम्=इष्टम् साहसम् यस्य तेन (साहसप्रेमी) भीमेन = वृकोदरेण (भीमसेन द्वारा) रभसात् = वेगात् (शीघ्रता से) । अमी = एते सर्वे = समस्ताः वयम् (यह हम सब) वाचा = वाण्या (वाणी द्वारा) जीवितसंशयम्—जीवितस्य = जीवनस्य संशयम् = सन्दे-

---

(तदनन्तर आसनस्थ युधिष्ठिर, द्रौपदी, चेटी तथा पुरुष प्रवेश करते हैं)

युधिष्ठिर—(सोचकर तथा निःश्वास छोड़कर) हाय कष्ट है, कष्ट है ।

भीष्मरूपी महासागर को पारकर, द्रोण के क्रोधानल किसी प्रकार शान्त हो जाने पर, कर्णरूपी काले नाग के मिट जाने पर तथा मद्रनरेश शल्य के स्वर्गवासी हो जाने पर (जब) नाममात्र को विजय शेष रह गई थी (इस दशा में) प्रिय साहसी भीम ने शीघ्रता से (दुर्योधन के साथ युद्ध में फँसकर) हम सब लोगों को वाणी से जीवन का संशय उत्पन्न कर दिया है ॥ १ ॥

द्रौपदी—(सबाष्पम् ।) महाराज ! पंचालिए त्ति किं ण भणिदम् ? [महाराज ! पाञ्चाल्येति किं न भणितम् ।]

युधिष्ठिरः—कृष्णे ! ननु मया । (पुरुषमवलोक्य ।) बुधक !

पुरुषः—देव ! आज्ञापय ।

युधिष्ठिरः—उच्यतां सहदेवः—क्रुद्धस्य वृकोदरस्याऽपर्युषितां प्रतिज्ञामुपलभ्य प्रनष्टस्य मानिनः कौरवराजस्य पदवीमन्वेष्टुमतिनिपुणमतयस्तेषु तेषु स्थानेषु यथार्थाऽभिज्ञाश्चराः, सुसचिवाश्च भक्तिमन्तः पटुपटहरवव्यक्त-

हम् जीविष्यामो न वेति (जीवित रह पायेंगे या नहीं—इस सन्देह को) समारोपिताः=प्रापिताः । अत्र रूपकालङ्कारः । शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम् । तद्यथा—सूर्याश्वैर्मसजास्ततः स गुरवः शार्दूलविक्रीडितम् ।। १ ।।

द्रौपदी—सबाष्पम् = रुदती (आँसू बहाती हुई) पाञ्चाल्या = द्रौपद्या, इति, किं न भणितम् = किं न कथितम् (क्यों नहीं कहा) ।

युधिष्ठिरः—कृष्णे ! = अयि द्रौपदि ! (हे द्रौपदी !) मया = युधिष्ठिरेण (मैंने) । पुरुषम् = जनम् (व्यक्ति को) अवलोक्य = दृष्ट्वा (देखकर) ।

पुरुषः—देव = महाराज । आज्ञापय = आदिश (आज्ञा दीजिये) ।

युधिष्ठिरः—उच्यताम् = कथ्यताम् (कहा जाय) । क्रुद्धस्य = कोपयुक्तस्य (कुपित) वृकोदरस्य = भीमसेनस्य (भीम की) । अपर्युषिताम्—तद्दिनमतिक्रम्योषिता = पर्युषिता, न पर्युषिता अपर्युषिता, ताम् = तद्दिनमेव पूर्यमाणाम् (उसी दिन पूर्ण होने वाली) प्रतिज्ञाम्=प्रतिश्रुतम् (प्रतिज्ञा को) । उपलभ्य= प्राप्य (पाकर) प्रनष्टस्य = अदर्शनं गतस्य (दिखलाई न पड़नेवाले) । मानिनः = गर्वितस्य (मानी) कौरवराजस्य = कुरुपतेर्दुर्योधनस्य (कुरुराज का) । पदवीम् = पदपद्धतिम् (पैरों के चिह्न) अन्वेष्टुम् = अनुसन्धातुम् (खोजने को) अतिनिपुणमतयः=अतिकुशलबुद्धिनः (अतिमेधावी) । तेषु तेषु स्थानेषु=तत्तत्स्थलेषु (उन-उन स्थानों पर) । यथार्थाऽभिज्ञाः—यथार्थम्=वास्तविकम् अभिजान-

द्रौपदी—(रोती हुई) महाराज ! 'पाञ्चाली ने' वह क्यों नहीं कहते ?

युधिष्ठिर—कृष्णे ! वास्तव में मैंने । (पुरुष को देखकर) बुधक !

पुरुष—देव ! आज्ञा दीजिये ।

युधिष्ठिर—सहदेव से कह दो कि क्रुद्ध वृकोदर की आज प्रतिज्ञा पूर्ण होने का समाचार जानकर छिपे नष्ट हुये अभिमान वाले कौरवराज के पदचिह्नों को खोजने के लिये अतिमेधावी, उन-उन स्थानों का वास्तविक ज्ञान रखने वाले गुप्तचर योग्य सचिव तथा हमारे

घोषणाः सुयोधनपदसञ्चारवेदिनः प्रतिश्रुतधनपूजाप्रत्युपक्रियाश्चरन्तु समन्तात्समन्तपञ्चकम् । अपि च—

पङ्के वा सैकते वा सुनिभृतपदवीवेदिनो यान्तु दाशाः,
कक्षेषु क्षुण्णवीरुन्निचयपरिचया वल्लवाः सञ्चरन्तु ।
नागव्याघ्राटवीषु श्वपचपुरविदो ये च रन्ध्रेष्वभिज्ञाः,
ये सिद्धव्यञ्जना वा प्रतिमुनिनिलयं ते च चाराश्चरन्तु ॥ २ ॥

न्तीत्यभिज्ञाः (यथार्थं ज्ञाता) । चराः=अनुचराः (दूत) सुसचिवाः = सुमन्त्रिणः (योग्य मन्त्री) । भक्तिमन्तः = अस्मास्वनुरागिणः (भक्त लोग) । पटुपटहरवव्यक्तघोषणः—पटुः = सुस्पष्टः यः पटहरवः = दुन्दुभिनादः, तेन व्यक्ता = प्रकटिता घोषणा = उच्चैः कथनम् यैस्ते (स्पष्ट दुन्दुभि ध्वनि से घोषणा करने वाले) सुयोधनपदसञ्चारवेदिनः—सुयोधनस्य = कुरुपतेः पदसञ्चारम् = चरणगतिम् (पद सञ्चार को) विदन्तीति वेदिनः (जानने वाले) । प्रतिश्रुतधनपूजाप्रत्युपक्रियाः—प्रतिश्रुता = प्रतिज्ञाता धनेन = वित्तदानेन प्रत्युपक्रिया=प्रत्युपकरणं यैस्ते (इनाम की घोषणा जानने वाले गुप्तचर) । समन्तपञ्चकम् = स्थानविशेषम् (समन्तपञ्चक स्थान के) समन्तात् = परितः (चारों ओर) चरन्तु = विचरन्तु (घूमें) ।

अन्वयः—सुनिभृतपदवीवेदिनः दाशाः पङ्के वा सैकते वा यान्तु । क्षुण्णवीरुन्निचयपरिचयाः वल्लवाः कक्षेषु सञ्चरन्तु, नागव्याघ्राटवीषु श्वपचपुरविदः ये च रन्ध्रेषु अभिज्ञाः ये वा सिद्धव्यञ्जनाः ते चाराः प्रतिमुनिनिलयं चरन्तु ॥ २ ॥

पङ्क इति । सुनिभृतपदवीवेदिनः—सुनिभृता = अतिगुप्ता या पदवी = पद्धतिः तस्याः वेदिनः = ज्ञातारः (अति गुप्त पद्धति के जानकार) दाशाः = धीवराः (कहार) पङ्के = कर्दमे । वा = अथवा । सैकते = बालुकमयप्रदेशे वा । यान्तु =

अनुरागी लोग, स्पष्ट दुन्दुभि ध्वनि से घोषणा करने वाले दुर्योधन के पद चिह्नों के जानकार गुप्तचर बड़े-बड़े इनामों की घोषणायें सुनकर समन्तपञ्चक नामक स्थान के चारों ओर चले जायें । और भी—

अत्यन्त गोपनीय चिह्नों को जानने वाले कहार (मछुआरे) कीचड़ अथवा बालू में ढूढने जायें । पैरों से रौंदी लताओं से परिचित ग्वाले झाड़ियों के झुरमुटों में घूमें । हाथियों व्याघ्रों आदि वाले जङ्गलों में चाण्डाल बस्तियों के जानकार जायें तथा जो गुफाओं अथवा भूगर्भगृह (सुरंगों) का ज्ञान रखते हैं अथवा जो सिद्ध पुरुषों का वेश धारण करने वाले हैं वे गुप्तचर प्रत्येक मुनि के आश्रम पर जाकर खोज करें ।। २ ।।

पुरुषः—यथाऽऽज्ञापयति देवः ।

युधिष्ठिरः—तिष्ठ । एवं च वक्तव्यः सहदेवः ।

ज्ञेया रहः शङ्कितमालपन्तः सुप्ता रुगार्ताश्च मदिराविधेयाः ।
त्रासो मृगाणां वयसां विरावो नृपाङ्कपादप्रतिमाश्च यत्र ॥ ३ ॥

गच्छन्तु (जायें) । क्षुण्णवीरुन्निचयपरिचयाः—क्षुण्णाः = मृदिताः याः वीरुधः = लताः तासां निचयेन-समूहेन परिचिताः = अभिज्ञाः (पाँवों से रौंदी हुई झाड़ियों के झुरमुटों से परिचित) वल्लवाः = गोपाः (ग्वाले) कक्षेषु = कुञ्जेषु (कुञ्जों में) सञ्चरन्तु = भ्रमन्तु (घूमें) । नागव्याघ्राटवीषु—नागव्याघ्रादीनाम् = गज-सिंहादीनाम् अटवीषु = अरण्येषु (हाथियों, सिंहों आदिके रहने वाले अरण्यों में) श्वपचपुरविदः = चाण्डालपुरवेदिनः (भंगियों की वस्तियों के जानकार) । ये च = अन्ये च (और जो) रन्ध्रेषु = कन्दरासु भूगर्भगुहासु वा (कन्दराओं गुफाओं में) । अभिज्ञाः = ज्ञातारः (जानकार) । वा = अथवा । ये सिद्धव्यञ्जनाः—सिद्धानाम् = सिद्धपुरुषाणाम् व्यञ्जनम्-चिह्नम् येषां ते (जो सिद्ध पुरुष हैं) ते चाराः—चरा एव चाराः = गुप्तचराः (ऐसे गुप्तचर) प्रतिमुनिनिलयम् = प्रति-यति-निवासस्थानम् (एक-एक मुनि के निवासस्थान को) चरन्तु = भ्रमन्तु (घूमें) । स्रग्धरा वृत्तम् ॥ २ ॥

पुरुषः—यथा = यद्विधम् (जैसा) देवः = महाराजः । आज्ञापयति = आदि-शति (आदेश देते हैं) ।

युधिष्ठिरः—एवम् = इत्थम् (इस प्रकार) वक्तव्यः = कथनीयः (कह देना) ।

अन्वयः—रहः शङ्कितम् आलपन्तः ज्ञेयाः सुप्ताः रुगार्ताः मदिराविधेयाः च ज्ञेयाः यत्र मृगाणां त्रासः वयसां विरावः नृपाङ्कपादप्रतिमाः (सन्ति तत्र ज्ञेयाः) । ३ ॥

ज्ञेया इति । रहः = एकान्तम् (एकान्त में) । शङ्कितम् = सशङ्कम् (शङ्कित) आलपन्तः = वार्तां कुर्वन्तः (बातचीत करते हुये) ज्ञेयाः = वेद्याः

पुरुष—जो महाराज की आज्ञा ।

युधिष्ठिर—ठहरो । यह भी सहदेव से कह देना—

एकान्त में शङ्कित होकर वार्तालाप कर रहे, सो रहे, रोग से पीड़ित तथा मदिरा से से मतवाले लोगों की जानकारी कर लें । जहाँ पशु भयभीत हो रहे हों, पक्षियों का जहाँ जहाँ कोलाहल हो रहा हो तथा जहाँ राजा दुर्योधन के राजचिह्नाङ्कित पैरों के निशान दिखलाई पड़ रहे हों वहाँ भी अवश्य ढूँढ लें ॥ ३ ॥

पुरुषः—यदाज्ञापयति देवः। (इति निष्क्रम्य, पुनः प्रविश्य, सहर्षम्।) देव ! पाञ्चालकः प्राप्तः।

युधिष्ठिरः—त्वरितं प्रवेशय।

पुरुषः—(निष्क्रम्य, पाञ्चालकेन सह प्रविश्य।) एष देवः। उपसर्पतु पाञ्चालकः।

पाञ्चालकः—जयतु जयतु देवः। प्रियमावेदयामि महाराजाय देव्यै च।

(समझने चाहिये)। सुप्ताः = शयानाः (सो रहे)। रुगार्ताः = रोगाक्रान्ताः (रोगी) मदिराविधेयाः = मदिरामत्ताः (शराब में मस्त) ज्ञेयाः। यत्र = यस्मिन् स्थाने (जहाँ पर) मृगाणाम् = पशूनाम् (पशुओं का) त्रासः = भीतिः (भय हो)। वयसाम् = पक्षिणाम् (पक्षियों का) विरावः = कोलाहलः (कोलाहल हो) नृपाङ्कपादप्रतिमाः—नृपस्य = भूपतेः अङ्काः = चिह्नानि येषु तादृशानां पादानाम् = चरणानाम् प्रतिमाः = प्रतिमूर्तयो यत्र तत्प्रदेशाः (राजचिह्नों से युक्त चरणों के निशानों वाले स्थान हों वहाँ) विचेयाः। जातिः वृत्तम्॥ ३॥

पुरुषः—देवः = महाराजो युधिष्ठिरः। निष्क्रम्य = निर्गत्य (निकल कर) पाञ्चालकः = धृष्टद्युम्नः (पाञ्चालराजपुत्र)। प्राप्तः = समागतः (आये हैं)।

युधिष्ठिरः—त्वरितम् = द्रुतम् (तुरन्त) प्रवेशय = प्रवेशं कारय (प्रविष्ट कराओ)।

पुरुषः—उपसर्पतु = पार्श्वं गच्छतु (समीप जायें)।

पाञ्चालकः—जयतु = विजयताम् (जय हो)। प्रियम् = मनोरमम् (प्रिय) आवेदयामि = कथयामि (बतला रहा हूँ)। महाराजाय = देवाय (आपके लिये)। देव्यै = पाञ्चाल्यै (देवी द्रौपदी के लिए)।

पुरुष—जैसी महाराज की आज्ञा। (यह कह कर, निकल कर पुनः प्रवेश कर, सहर्ष) देव ! पाञ्चालक धृष्टद्युम्न आये हैं।

युधिष्ठिर—शीघ्र प्रवेश कराओ !

पुरुष—(निकलकर, पाञ्चालक के साथ प्रवेश कर) यह महाराज हैं। पाञ्चालक (इनके) समीप जायें।

पाञ्चालक—महाराज विजय प्राप्त करें, जय हो। महाराज तथा देवी जी को प्रिय समाचार बतला रहा हूँ।

युधिष्ठिरः—भद्र पाञ्चालक ! कच्चिदासादिता तस्य दुरात्मनः कौरवाऽधमस्य पदवी ?

पाञ्चालकः—देव ! न केवलं पदवी । स एव दुरात्मा देवीकेशपाशस्पर्शपातकप्रधानहेतुरुपलब्धः ।

युधिष्ठिरः—(सहर्षं पाञ्चालकं परिष्वज्य) साधु, भद्र ! साधु । भवता प्रियमावेदितम् । अथ दर्शनगोचरं गतः ?

पाञ्चालकः—देव ! समरगोचरं पृच्छ ।

द्रौपदी—(सभयम्) कहं समरगोअरो वट्टइ मे णाहो ? [**कथं समरगोचरो वर्तते मे नाथः ?**]

युधिष्ठिरः—आसादिता = प्राप्ता (प्राप्त की) दुरात्मनः = दुष्टस्य तस्य = दुर्योधनस्य (दुष्ट दुर्योधन की) । पदवी = पदपद्धतिः (पैरों के चिह्न) । कौरवाधमस्य = नीचकौरवस्य ।

पाञ्चालकः—देवीकेशपाशस्पर्श-पातक-प्रधानहेतुः—देव्याः = द्रौपद्याः केशपाशस्य = कचजालस्य स्पर्शमेव पातकम् = अघम्, तस्य प्रधानः हेतुर्यः सः (देवी के केशजाल खींचनेरूपी पापका प्रमुख कारण) । उपलब्धः = सम्प्राप्तः (मिल गया है) ।

युधिष्ठिरः—परिष्वज्य = आलिङ्ग्य (आलिंगन कर) साधु = धन्यवादार्हः (शाबास) । भवता = त्वया (आपने) प्रियम् = रुचिकरम् (प्रिय समाचार) आवेदितम् = निवेदितम् (कह सुनाया है) । दर्शनगोचरं गतः = दृष्टिगोचरं प्राप्तः (दिखलाई पड़ गया) ।

पाञ्चालकः—समरगोचरम्—समरस्य = युद्धस्य गोचरम् = विषयम् (युद्ध में पहुँचे हुये को) पृच्छ = आख्याहि (पूँछो) ।

द्रौपदी—मे = मम द्रौपद्याः (मेरे) नाथः = स्वामी (भर्त्ता) ।

युधिष्ठिर—भद्र पाञ्चालक ! क्या उस दुष्ट के पाँवों का कोई चिह्न मिल पाया है ?

पाञ्चालक—देव ! केवल पद-चिह्न ही नहीं (बल्कि) वह दुष्ट देवी के केशपाश के स्पर्शरूपी पातक का प्रधान कारण (दुर्योधन) मिल गया है ।

युधिष्ठिर—(सहर्ष पाञ्चालक को आलिङ्गन कर) शाबास भाई, शाबास । आपने प्रिय समाचार बतलाया है । क्या दिखलाई भी पड़ गया है ?

पाञ्चालक—देव ! युद्ध में जाने की बात पूछिये ।

द्रौपदी—(डरकर) क्या मेरे स्वामी युद्ध में दिखलाई पड़ रहे हैं ?

युधिष्ठिरः—(साशङ्कम्) सत्यं समरगोचरो मे वत्सः ?

पाञ्चालकः—सत्यम् । किमन्यथा वक्ष्यते महाराजाय ?

युधिष्ठिरः—

त्रस्तं विनाऽपि विषयादुरुविक्रमस्य,
चेतो विवेकपरिमन्थरतां प्रयाति ।
जानामि चोद्यतगदस्य वृकोदरस्य,
सारं रणेषु भुजयोः परिशङ्कितश्च ॥ ४ ॥

(द्रौपदीमवलोक्य ।) अयि सुक्षत्रिये !

युधिष्ठिरः—साशङ्कम् = ससन्देहम् (शङ्का के साथ) सत्यम् = तथ्यम् (सत्य है) ।

पाञ्चालकः—अन्यथा = असत्यम् (झूठ) वक्ष्यते = कथ्यते (कहा जा सकता है) ।

अन्वयः—विषयात् विना अपि उरुविक्रमस्य चेतः त्रस्तं (सत्) विवेकपरिमन्थरतां प्रयाति । रणेषु उद्यतगदस्य वृकोदरस्य भुजयोः सारं जानामि च परिशङ्कितः (अस्मि) ॥ ४ ॥

त्रस्तमिति । विषयात् = निमित्तात् विना अपि (अकारण) । उरुविक्रमस्य= प्रबलपराक्रमस्य जनस्य (उरुविक्रमी पुरुष का) चेतः = चित्तम् (मन) त्रस्तम्= भीतम् (सत्) (डरा होते हुये) । विवेकपरिमन्थरताम्—विवेकस्य = यथार्थ-ज्ञानस्य परिमन्थरता = मन्दता, ताम् (विचार करने की शिथिलता को) प्रयाति = गच्छति (पहुँचता है) । रणेषु = युद्धेषु (युद्ध में) । उद्यतगदस्य—उद्यता= सन्नद्धा गदा यस्य तस्य (गदा उठाये हुये) । वृकोदरस्य = भीमसेनस्य (वृकोदर की) भुजयोः = बाह्वोः (भुजाओं का) । सारम् = तत्वम् । जानामि = वेद्मि (जानता हूँ) । च = तथा । परिशङ्कितः = आशङ्कितः (आशंकित) अस्मि । अत्र विशेषोक्तिरलङ्कारः । वसन्ततिलका वृत्तम् ॥ ४ ॥

युधिष्ठिर—(ससन्देह) क्या सचमुच मेरा भाई भीम युद्ध में है ?

पाञ्चालक—सच ! आपके लिये झूठ कैसे कहा जा सकता है ।

युधिष्ठिर—अकारण भी प्रबलपराक्रमी पुरुष का चित्त त्रस्त होते हुये विचार करने में शिथिल हो जाता है । युद्धक्षेत्र में गदा उठाये वृकोदर की भुजाओं का पराक्रम मैं जानता हूँ फिर भी मेरा मन शंकित हो रहा है ॥ ४ ॥

(द्रौपदी को देखकर) हे सुक्षत्रिये !

गुरूणां बन्धूनां क्षितिपतिसहस्रस्य च पुरः,
पुराऽभूदस्माकं नृपसदसि योऽयं परिभवः ।
प्रिये ! प्रायस्तस्य द्वितयमपि पारं गमयति,
क्षयः प्राणानां नः कुरुपतिपशोर्वाऽद्य निधनम् ॥ ५ ॥

अथवा कृतं सन्देहेन ।

नूनं तेनाऽद्य वीरेण प्रतिज्ञाभङ्गभीरुणा ।
बध्यते केशपाशस्ते स चाऽस्याऽऽकर्षणक्षमः ॥ ६ ॥

अन्वयः—प्रिये ! गुरूणां बन्धूनां क्षितिपतिसहस्रस्य च पुरः पुरा नृपसदसि यः अयम् अस्माकं परिभवः अभूत्, तस्य पारम् अद्य प्रायः द्वितयम् अपि गमयति, नः प्राणानां क्षयः कुरुपतिपशोः तस्य निधनं वा ॥ ५ ॥

गुरुणामिति । प्रिये = प्रियद्रौपदि ! गुरुणाम् = आचार्यादीनाम् (द्रोणाचार्यादि गुरुजनों के) बन्धूनाम् = भ्रातृणाम् (भाइयों के) क्षितिपतिसहस्रस्य—क्षितिपतीनाम् = भूपतीनाम् सहस्रम् = दशशतसंख्ययूथम्, तस्य (हजारों राजाओं के) च पुरः = समक्षम् (सामने) पुरा = आदौ (पहले) नृपसदसि = राजसभायाम् (राजसभा में) यः अयम् = यः एषः (जो यह) अस्माकम् = पाण्डवानाम् (हमारा) परिभवः = तिरस्कारः अभूत् = वभूव (हुआ) तस्य = तत्पराभवस्य (उसके) पारम् = अन्तम् (पार) अद्य = अस्मिन् दिने (आज) प्रायः = प्रायशः । द्वितयम् = द्वयम् अपि (दो प्रकार) गमयति = प्रापयति (पहुँचाता है) । नः = अस्माकम् (हमारे) प्राणानाम् = जीवनानाम् (प्राणों का) क्षयः = नाशः (नाश) । वा = अथवा । कुरुपतिपशोः = कुरुपतिश्चासौ पशुस्तस्य (नीच कुरुपति का) निधनम् = मरणम् (निधन) । शिखरिणी वृत्तम् ॥ ५ ॥

कृतं सन्देहन = सन्देहेनालम् (शङ्का करना व्यर्थ है) ।

अन्वयः—अद्य प्रतिज्ञाभङ्गभीरुणा तेन वीरेण ते केशपाशः नूनं बध्यते, अस्य आकर्षणक्षमः स च बध्यते ॥ ५ ॥

नूनमिति । अद्य = अस्मिन् दिवसे (आज) । प्रतिज्ञाभङ्गभीरुणा—प्रतिज्ञायाः=

प्रिये ! द्रोणादि गुरुजनों बान्धवों तथा हजारों राजाओं के समक्ष पहले राजसभा में जो यह हमारा परिभव (तिरस्कार) हुआ था उसके पार जाने के अब दो ही मार्ग हो सकते हैं—(भीम के मारे जाने पर) हमारे प्राणों का नाश अथवा उस नीच कुरुपति का निधन ॥ ५ ॥

अथवा सन्देह करना व्यर्थ है ।

आज प्रतिज्ञा भङ्ग होने की शङ्का से डरे हुये उस वीर वृकोदर द्वारा तुम्हारा केशपाश

पाञ्चालक ! कथय कथय, कथमुपलब्धः स दुरात्मा कस्मिन्नुद्देशे किं वाऽधुना प्रवृत्तमिति ।

द्रौपदी—भद्द ! कहेहि, कहेहि । [भद्र ! कथय, कथय ।]

पाञ्चालकः—शृणोतु देवो देवी च । अस्तीह देवेन हते मद्राऽधिपतौ शल्ये, गान्धारराजकुलशलभे सहदेवशस्त्राऽनलप्रविष्टे सेनापतिनिधननिराक्रन्दविरलयोधोज्झितासु समरभूमिषु, रिपुबलपराजयोद्धतवेल्लितविचित्र-

---

संकल्पस्य भङ्गेन = नाशेन भीरुः = कातरस्तेन (प्रतिज्ञा भङ्ग होने की शङ्का से भीत) तेन वीरेण = तेन वृकोदरेण (भाई भीमसेन द्वारा) ते = तव (तुम्हारा) केशपाशः—केशानाम् = कचानाम् पाशः = जालम् (केशजाल) नूनम् = निश्चयम् (अवश्य) बध्यते = संयम्यते (बाँधा जा रहा है) । अस्य = एतस्य (इसके) आकर्षणक्षमः—आकर्षणे = कर्षणे (खींचने में) । क्षमः = समर्थः । सः = असौ दुर्योधनश्च बध्यते = हन्यते (मारा जा रहा है) । अत्र तुल्ययोगिताऽलङ्कारः । अनुष्टुब् वृत्तम् ॥ ६ ॥

पाञ्चालक ! = अयि धृष्टद्युम्न ! कथय = वद (कहो) कथम् = केन प्रकारेण (कैसे) उपलब्धः = सम्प्राप्त (मिल पाया) । उद्देशे = स्थाने (स्थान पर) । अधुना = सम्प्रति (अब) किं प्रवृत्तम् = किं सम्वृत्तम् (क्या हो रहा है) ।

द्रौपदी—भद्र = भ्रातः (भाई) कथय = भण (बतला) ।

पाञ्चालकः—शृणोतु = आकर्णयतु (सुनिये) । इह = अस्मिन् रणे (इस युद्ध में) देवेन = भवता (आपके द्वारा) । मद्राधिपतौ = शल्ये । हते = घातिते (शल्य के मारे जाने पर) । गान्धारराजकुलशलभे—गान्धारराजकुलस्य=गान्धारराजवंशस्य शलभः = पतङ्गसदृशः (गान्धार कुल के पतिङ्गे के समान) सहदेवशस्त्रानलप्रविष्टे—सहदेवस्य = कनिष्ठपाण्डवस्य शस्त्राणि = आयुधान्येवानलः = वह्निः, तस्मिन् प्रविष्टे = प्रवेशंकृते (सहदेव के शस्त्रानल में प्रविष्ट हुये) ।

अवश्य बाँध दिया जायेगा तथा इस केशपाश को खींचने का साहस करने वाला वह (दुर्योधन) मार डाला जायेगा ॥ ६ ॥

पाञ्चालक ! कहो-कहो ! किस प्रकार वह दुरात्मा मिल पाया और किस स्थान पर क्या हो रहा है ?

द्रौपदी—भाई ! कहो कहो ।

पाञ्चालक—महाराज तथा महारानी सुन लें । इस युद्ध में महाराज द्वारा मद्रराज शल्य के मारे जाने पर, गान्धार राजकुलशलभ के सहदेव के शस्त्रानल में प्रविष्ट हो जाने पर

पराक्रमाऽऽसादितविमुखाऽरातिचक्रासु धृष्टद्युम्नाऽधिष्ठितासु च युष्मत्सेनासु, प्रनष्टेषु कृपकृतवर्माऽश्वत्थामसु तथा दारुणामपर्युषितां प्रतिज्ञामुपलभ्य कुमारवृकोदरस्य न ज्ञायते क्वाऽपि प्रलीनः स दुरात्मा कौरवाऽधमः।

युधिष्ठिरः—ततस्ततः।

सेनापति-निधननिराक्रन्दविरलयोधोज्झितासु—सेनापतेः = मद्रराजस्य शल्यस्य निधनेन = मरणेन निराक्रन्दाः = निरन्तराक्रन्दनपराः विरलाः = यत्र-तत्रस्थिताः योद्धाः = वीराः, तैरुज्झितासु=परित्यक्तासु (सेनापति शल्य के निधन से निरन्तर आक्रन्दन कर रहे जहाँ-तहाँ बचे वीरों से परित्यक्त) समरभूमिषु = रणस्थलेषु (युद्धभूमि में) रिपुबलपराजयोद्धतवेल्लितविचित्रपराक्रमाऽऽसादितविमुखाऽराति-चक्रासु—रिपुबलानाम् = शत्रुसैन्यानाम् पराजयेन = पराभवेन उद्धतम् = उद्दण्डम् वेल्लितम् = कूर्दनम् तेन विचित्रः- विविधविधः यः पराक्रमः = शौर्यम्, तेन आसादितम् = वशीकृतम् विमुखम् = विरुद्धम्, युद्धं त्यक्त्वा पलायितम् अरातिचक्रम् = शत्रुदलम् याभिस्तासु (शत्रुसैन्य के पराजय से उद्दण्ड कुटिलगति से विविध प्रकार के पराक्रम से वश में किये युद्ध छोड़ कर भाग रहे शत्रुदल वाली) धृष्टद्युम्नधिष्ठितासु—धृष्टद्युम्नेन = पाञ्चालराजपुत्रेण अधिष्ठितासु = सञ्चालितासु (धृष्टद्युम्न द्वारा सञ्चालित) युष्मत्सेनासु—युष्माकं = पाण्डवानाम् सेनासु=बलेषु (तुम्हारी सेनाओं में)। कृपकृतवर्माऽश्वत्थामसु—कृपाचार्यः कृतवर्मा अश्वत्थामा च यासु तासु (कृप कृतवर्मा तथा अश्वत्थामा जैसे महारथियों वाली) प्रनष्टेषु = अदृश्यतांगतेषु (नष्ट हो जाने पर)। दारुणाम् = भयङ्करीम्। अपर्युषिताम् = अपूरिताम् प्रतिज्ञाम् (भयंकर अधूरी प्रतिज्ञा को) उपलभ्य = प्राप्य (पाकर)। न ज्ञायते = नाभिगम्यते (नहीं ज्ञात है) सः = असौ। कौरवाधमः—कौरवेषु = कुरुजनेषु अधमः=नीचो दुर्योधनः। क्वापि = कुत्रापि (कहीं) प्रलीनः = गोपयित्वा स्थितः (छिप गया)।

सेनापति के निधन से हाहाकार कर रहे जहाँ-तहाँ स्थित योद्धाओं से युद्धभूमि परित्यक्त होने पर, शत्रु सैन्य के पराजय से उद्दण्ड कुटिलगति से विविध प्रकार पराक्रमयुक्त धृष्टद्युम्न के सेनापतित्व वाली आपकी सेनाओं द्वारा युद्ध विमुख शत्रु-समुदाय को वश में किये जाने पर कृपाचार्य, कृतवर्मा, अश्वत्थामा आदि वीरों से युक्त सेनाओं के नष्ट हो जाने पर तथा कुमार वृकोदर की भयङ्कर प्रतिज्ञा अधूरी (अपूर्ण रहने के कारण) न जाने वह दुरात्मा नीच कौरवपति दुर्योधन कहीं छिप गया है।

युधिष्ठिर—फिर क्या हुआ?

द्रौपदी—अयि ! परदो कहेहि । [अति ! परतः कथय ।]

पाञ्चालकः—अवधत्तां देवो देवी च । ततश्च भगवता वायुदेवेनाऽधिष्ठितमेकरथमारूढौ कुमारभीमार्जुनौ समन्तात्समन्तपञ्चकं पर्यटितुमारब्धौ तमनासादितवन्तौ च । अनन्तरं दैवमनुशोचति मादृशे भृत्यवर्गे, दीर्घमुष्णं च निःश्वसति कुमारबीभत्सौ जलधरसमयनिशासञ्चारिखद्योतप्रकरपिङ्गलैः कटाक्षैरादीपयति गदां वृकोदरे यत्किंचनकारितामधिक्षिपति

द्रौपदी—अयि=भोः (अरे) परतः=अग्रतः (आगे) कथय=ब्रूहि (कहो) ।

पाञ्चालकः—अवधत्ताम् = अवधानं दीयताम् (ध्यान दें) । वासुदेवेन—वसुदेवस्यापत्यं पुमान् वासुदेवः तेन (श्रीकृष्ण भगवान् से) अधिष्ठितम् =अवस्थितम् (अधिष्ठित) । एकरथम् = एकमेव स्यन्दनम् (एक ही रथ पर) आरूढौ = अवस्थितौ (आरूढ़) भीमार्जुनौ—भीमश्चार्जुनश्च तौ = वृकोदरगाण्डीविनौ (भीम तथा अर्जुन) समन्तपञ्चकम् = ह्रदपञ्चकम् (समन्तपञ्चक नामक स्थान के) समन्तात् = परितः (चारों ओर) पर्यटितुम् = भ्रमितुम् (पर्यटन करना) आरब्धौ = प्रारभेताम् (आरम्भ किया) । तम् = दुर्योधनम् (उसको) अनासादितवन्तौ = नैव प्राप्तवन्तौ (नहीं पाये) । दैवम् = भाग्यम् (दैव को) भृत्यवर्गे = सेवकगणे (सेवकवर्ग के) अनुशोचति = व्यचारयति सति (सोचने पर) । दीर्घम् = महत् (लम्बी) ऊष्णम् = तप्तम् (गर्म) निःश्वसति = निःश्वासं कुर्वति (श्वास छोड़ने पर) कुमारबीभत्सौ = कुमारार्जुने (कुमार अर्जुन में) । जलधरसमयनिशासञ्चारिखद्योतप्रकारपिङ्गलैः—जलधराणां समये = वर्षर्तौ निशायाम् = रात्रौ सञ्चारिणः ये खद्योताः = ज्योतिरिङ्गणाः, तेषां प्रकरेण = समूहेन पिङ्गलाः = पीतवर्णास्तैः (वर्षाकालीन रात में सञ्चरण कर रहे जुगनुओं के समूह से पिङ्गलवर्ण) कटाक्षैः = कटाक्षेपैः (कटाक्षों से) गदाम् = गदाशस्त्रम् (गदा को) आदीपयति = उद्योतयति (चमकाने पर) यत्किञ्चनकारिताम्—यत्किञ्चित्करोतीति, तस्य भावस्ताम् (जो कुछ करना चाहते हैं वैसे) अधिक्षि-

---

द्रौपदी—अरे ! आगे बतला ।

पाञ्चालक—महाराज तथा महारानी ध्यान से सुनें । तब भगवान् वासुदेव से अधिष्ठित एक ही रथ पर बैठे कुमार भीम तथा अर्जुन समन्तपञ्चक के चारों ओर घूमने लगे तथा उसे नहीं पा सके । तदनन्तर हमारे जैसे सेवकों के दैव को सोचनेपर तथा कुमार अर्जुन के लम्बी तप्त निःश्वास छोड़ने पर वर्षाकालीन रात्रि में घूमने वाले जुगनुओं के झुण्ड के समान पिङ्गलवर्ण कटाक्षों से महाराज भीमसेन के गदा चमकाने पर 'विधाता जाने अब

विधेर्भगवति नारायणे कश्चित्संविदितः कुमारस्य मारुतेरुज्झितमांसभारः प्रत्यग्रविशसितमृगलोहितलोहितचरणनिवसनस्त्वरमाणोऽन्तिकमुपेत्य पुरुषः परुषश्वासग्रस्तार्द्धश्रुतवर्णाऽनुमेयपदया वाचा कथितवान्—'देव कुमार! अस्मिन्महतोऽस्य सरसस्तीरे द्वे पदपद्धती समवतीर्णप्रतिबिम्बे। तयोरेका-स्थलमुत्तीर्णा न द्वितीया। परत्र कुमार प्रमाणम्' इति।

पति = अधिक्षेपं कुर्वति (आक्षेप करने पर) विधेः = भाग्यस्य (दैव का)। कुमारस्य = वृकोदरस्य (कुमार भीम के) संविदितः = अभिज्ञातः (समझा हुआ) उज्झितमांसभारः—उज्झितम् = परित्यक्तम् मांसभारम् = अमिषभारम् येन सः (मांसभार-रहित—सूखा दुर्बल)। प्रत्यग्रविशसितमृगलोहितलोहितचरणनिवसनः—प्रत्यग्रम् = सद्यः विशसितमृगस्य = हतहरिणस्य लोहितेन = रुधिरेण लोहितौ = रक्तवर्णौ चरणौ = पादौ निवसनञ्च = वस्त्रञ्च यस्य सः (ताजे मारे हुए हिरण के रक्त से सने चरणों तथा वस्त्रों वाला) त्वरमाणः = त्वरां क्रियमाणः (शीघ्रता करता हुआ) पुरुषः = जनः (मनुष्य) अन्तिकम् = पार्श्वम् (समीप) उपेत्य = आगत्य (आकर) परुषश्वासग्रस्तार्द्धश्रुतवर्णानुमेयपदया—परुष = कठोरः यः श्वासः = प्राणवायुः, तेन ग्रस्ताः = कवलिताः, अत. अर्द्धश्रुताः = अर्द्धाकर्णिताः ये वर्णाः = अक्षराणि, तैः, अनुमेयानि = ज्ञातव्यानि पदानि = शब्दाः यस्याः सा तया (कठिन श्वास से ग्रस्त अस्पष्ट वर्णों से ज्ञातव्य पदों वाली) वाचा = वाण्या (वाणी से) कथितवान् = उक्तवान् (कहा) महतः = विशालस्य अस्य = एतस्य सरसः = तडागस्य अस्मिन् तीरे = अस्मिंस्तटे (विशाल इस तडाग के इस कनारे पर) द्वे = द्विसंख्ये (दो) पदपद्धती = पदचिन्हे (पाँवों के निशान) समवतीर्णप्रतिबिम्बे—समवतीर्णे = उद्दिष्टे प्रतिबिम्बे = आकृती ययोस्ते (उतरी हुई परछाही वाले) एका = एका पदपद्धतिः (एक निशान) स्थलम् = भूमागम् (स्थल पर) उत्तीर्णा = उत्तीर्णतांगता (उत्तर आई है) द्वितीया = अन्या (दूसरी) नैवोत्तीर्णा (दूसरी नहीं पड़ती है)। परत्र = इतः परम् (इससे वढ़कर) कुमारः प्रमाणम् = कुमार एव ज्ञातुं शक्नोति, अहं तु न जानामि।

क्या करना चाहता है?' इस प्रकार भगवान् नारायण के आक्षेप करने पर कुमार भीमसेन के पास आकर किसी जानकार दुर्बल ताजे मारे गये मृग के रुधिर से सने पावों तथा वस्त्रों वाले पुरुष ने कठिन श्वास के कारण अस्पष्ट पदों वाली वाणी में शीघ्रता से आकार कहा—देव! कुमार! इस विशाल तड़ाग के इस तीर पर दो पैरों के चिह्न दिखलाई पड़ रहे हैं। उन दोनों में एक पदचिह्न जल में घुसने का तो है पर दूसरा निकलने का नहीं दिखलाई दे रहा है। इससे अधिक मुझे ज्ञात नहीं है, आप ही प्रमाण हैं।

ततः ससम्भ्रमं प्रस्थिताः सर्वे वयं तमेव पुरुषं पुरस्कृत्य गत्वा च सरस्तीरं परिज्ञायमानसुयोधनपदलाञ्छनां पदवीमासाद्य भगवता वासुदेवेनोक्तम्—

'भो वीर वृकोदर ! जानाति किल सुयोधनः सलिलस्तम्भनीं विद्याम् । तन्नूनं तेन त्वद्भयात्सरसीमेनामधिशयितेन भवितव्यम् ।' एतच्च वचनमुपश्रुत्य रामाऽनुजस्य सकलदिङ्निकुञ्जप्रपूरिताऽतिरिक्तमुद्भ्रान्तसकल-

---

ततः = तदनन्तरम् । ससम्भ्रमम् = सभयम् (डरकर) वयं सर्वे = निखिलाः (हम सब) तम् = पूर्वोक्तम् (उस) पुरुषम् एव = जनम् एव (मनुष्य को ही) पुरस्कृत्य = अग्रतः कृत्वा (आगे करके) । प्रस्थिताः = प्रयाताः (गये) । सरस्तीरम् = तडागतटम् (तालाब के किनारे) गत्वा = यात्वा (जाकर) । परिज्ञायमानसुयोधनपदलाञ्छनानि—परिज्ञायमानानि = अभिज्ञायमानानि सुयोधनस्य = दुर्योधनस्य पदलाञ्छनानि = चरणचिह्नानि यत्र तादृशीम् । (सुयोधन के पदचिह्न मालूम पड़ने वाली) पदवीम् = पदपद्धतिम् (पैरों की पंक्ति) असाद्य = प्राप्य (पाकर) भगवता = प्रभुणा वासुदेवेन = श्रीकृष्णेन (भगवान् कृष्ण ने) उक्तम् = कथितम् (कहा) ।

भो वीरवृकोदर = अयि वोरभीम ! किल = खलु । सुयोधनः = कुरुराजः । सलिलस्तम्भिनीं—सलिले = जले स्तम्भते अनया ताम् विद्याम् = ज्ञानम् (जलस्तम्भनविद्या को) जानाति = वेत्ति (जानता है) । तत् = अतः । नूनम् = निश्चयम् (अवश्य) । तेन = दुर्योधनेन । त्वद्भयात् = तव भिया (तुम्हारे डर से) सरसि = तडागे । अधिशयितेन = अधिशयानेन (लेटे हुये) भवितव्यम् = सम्भावनीयम् (होना चाहिए) । एतत् = इदम् वचनम् = कथनम् (यह कहना) उपश्रुत्य = श्रुत्वा (सुनकर) रामानुजस्य—रामस्य = बलरामस्यानुजः = लघुभ्राता, तस्य = वासुदेवस्य (बलराम के छोटे भाई के) सकलदिङ्निकुञ्जप्रपूरितातिरिक्तम्—सकलानाम् = निखिलानाम् दिङ्निकुञ्जानाम् = आशाकुञ्जानाम् प्रपूरितेन = प्रपूरणेन अतिरिक्तम् (सभी दिशाकुञ्जों में भरने के अतिरिक्त) । उद्भ्रान्त-

---

तदनन्तर डरकर हम सब उस पुरुष को आगे कर चल दिये तथा तडाग के किनारे जाकर पहिचानी हुई सुयोधन के पाँवों के चिह्नों वाली पदपंक्ति पाकर भगवान् वासुदेव ने कहा—

"हे वीर वृकोदर ! वास्तव में सुयोधन जल स्तम्भन विद्या जानता है । अतः अवश्य ही तुम्हारे भय से इस तडाग में ही वह लेटा होगा ।" श्रीकृष्ण के यह वचन सुनकर समस्त दिशाओं को भर देने से भी बढ़कर समस्त जलचर-समूह को व्याकुल कर देने वाली, नक्र-

सलिलचारिचक्रं त्रासोद्धतनक्रग्राहमालोडितं सरःसलिल भैरवं च गर्जित्वा कुमारवृकोदरेणाऽभिहितम्—'अरे रे वृथाप्रख्यापिताऽलीकपौरुषाऽभिमानिन् ! पाञ्चालराजतनयाकेशाम्बराऽऽकर्षणमहापातकिन् ! धार्तराष्ट्राऽपसद !

जन्मेन्दोर्विमले कुले व्यपदिशस्यद्यापि धत्से गदां
मां दुःशासनकोष्णशोणितसुराक्षीबं रिपुं मन्यसे ।

सकलसलिलचारिचक्रम्—उद्भ्रान्तम् = त्रस्तम् सकलानाम् = समस्तानाम् सलिलचारिणाम्=जलविहारिणाम् चक्रम् = समूहम् यत्र तथाभूतम् (समस्तजलचर चक्र को जानने वाले) त्रसोद्धतनक्रग्राहम्—त्रासेन = भयेन उद्धताः = उद्दण्डाः नक्राः ग्राहाश्च=मकरादयश्च यत्र तथाभूतम् (भय से उद्दण्ड नाकों तथा मगरों वाले) सरःसलिलम्—सरसः सलिलम् = तडागजलम् (तडाग के जल को) आलोडितम् = आलोडनं कृतम् (मथ डाला) । च = तथा । भैरवम् = भीषणम् । गर्जित्वा = गर्जनं कृत्वा (गरज कर) कुमारवृकोदरेण = कुमारभीमसेनेन (कुमार भीमसेन ने) अभिहितम् = कथितम् (कहा) वृथा = व्यर्थम् प्राख्यापिताऽलीकपौरुषाऽभिमानिन्—प्रख्यापितम् = प्रसिद्धि प्रापितम् अलीकपौरुषस्य = मिथ्यावलस्य अभिमानं येन तत्सम्बुद्धौ (हे व्यर्थ प्रसिद्ध किये असत्यपौरुष के अभिमानी !) पाञ्चालराजतनया-केशाम्वराकर्षणमहापातकिन् !—पाञ्चालराजस्य=द्रुपदस्य तनया =सुता द्रौपदी तस्याः केशानाम् अम्वरस्य = वस्त्रस्य चाकर्षणम् एव महापातकम् = घोरपापम् यस्य तत्सम्बुद्धौ (द्रुपदसुता के केश तथा वस्त्र खींचने के पातक की करने वाले) धार्तराष्ट्रापसद = नीचधार्तराष्ट्र दुर्योधन !

अन्वयः—हे नृपशो ! इन्दोः विमले कुले जन्म व्यपदिशसि, अद्य अपि गदां धत्से, मां दुःशासनकोष्णशोणितसुराक्षीवं रिपुं मन्यसे, दर्पान्धः (सन्) मधुकैटभद्विषि हरौ अपि उद्धतं चेष्टसे, अधुना मे त्रासात् समरं विहाय पङ्के लीयसे ॥ ७ ॥

जन्मेन्दोरिति । हे नृपशो = रे नीचनृप ! इन्दोः = चन्द्रस्य विमले = उज्ज्वले कुले = वंशे जन्म = उत्पत्तिम् व्यपदिशसि = कथयसि (चन्द्र के उज्ज्वल वंश

मकरादि को भयभीत कर देने वाली भयंकर गर्जन कर तडागजल को आलोडित कर डाला और कहा—अरे रे व्यर्थ प्रसिद्धि करने वाले मिथ्या बलाभिमानी ! पाञ्चालराजतनया द्रौपदी के केश तथा वस्त्र खींचने के महापातक को करने वाले ! नीच धृतराष्ट्रपुत्र दुर्योधन !—

अरे नीच नृप ! विमल चन्द्र वंश में अपना जन्म कहता है फिर भी (भाइयों सहयोगियों के मारे जाने पर भी) अब भी तू गदा-धारण किये हैं ? दुःशासन के गरम रुधीर

दर्पाऽन्धो मधुकैटभद्विषि हरावप्युद्धतं चेष्टसे,
मे त्रासान्नृपशो ! विहाय समरं पङ्केऽधुना लीयसे ॥ ७ ॥

अपि च । भो मानाऽन्ध ! कौरवाऽधम !

पाञ्चाल्या मन्युवह्निः स्फुटमुपशमितप्राय एव प्रसह्य
व्यामुक्तैः केशपाशैर्हतपतिषु मया कौरवान्तःपुरेषु ।
भ्रातुर्दुःशासनस्य स्रवदसृगुरसः पीयमानं निरीक्ष्य,
क्रोधात्किं भीमसेने विहितमसमये यत्त्वयाऽस्तोऽभिमानः ॥८॥

में अपना जन्म बताता है) (फिर भी) अद्य अपि = सम्प्रत्यपि (आज भी) गादाम् धत्से = धारयसि (गदा धारण कर रहा है) । माम् = वृकोदरम् (मुझे) दुःशासनकोष्णशोणितसुराक्षीबम्—दुःशासनस्य कोष्णम् = ईषदुष्णम् शोणितम् = रुधिरम् एवं सुरा = मदिरा तया क्षीबो यस्तम् (दुःशासन के गुनगुने रुधिररूपी सुरा को पीने से मत्त बने हुये) रिपुम् = शत्रुम् (शत्रु) मन्यसे = जानासि (मानता है) । दर्पान्धः—दर्पेण = गर्वेण अन्धः = नेत्रहीनः सन् (गर्वान्ध होते हुये) मधुकैटभद्विषि—मधुकैटभौ राक्षसौ द्वेष्टीति तस्मिन् (मधुकैटभ का नाश करने वाले में) हरौ = कृष्णे अपि (कृष्णजी के साथ भी) उद्धतम् = उद्दण्डताम् (धृष्टता) चेष्टसे = कामयसे (करना चाहता है) । अधुना = साम्प्रतम् (अब) मे = मम (मेरे) त्रासात् = भयात् (भय से) समरम् = युद्धम् (रण को) विहाय = त्यक्त्वा (छोड़कर) पङ्के = कर्दमे लीयसे = निलीनो भवसि (छिप रहा है) । शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम् ॥ ७ ॥

अन्वयः—यथा कौरवान्तःपुरेषु प्रसह्य हतपतिषु व्यामुक्तैः केशपाशैः पाञ्चाल्याः मन्युवह्निः स्फुटम् उपशमितप्रायः एव भ्रातुः दुःशासनस्य उरसः स्रवद् असृक् पीयमान (माम्) निरीक्ष्य क्रोधात् भीमसेने त्वया किं विहितं, यद् असमये अभिमानः अस्तः ॥ ८ ॥

पाञ्चाल्येति । मया = भीमेन । कौरवान्तःपुरेषु = कौरवाणाम् अन्तःपुरेषु अन्तःपुरवासि-स्त्रीषु (अन्तःपुर से रहनेवाली स्त्रियों में) प्रसह्य-बलात् (जबर्दस्ती)

रूपी सुरा का पान करने से मतवाले बने मुझको अपना शत्रु मान रहा है । गर्व से अन्धा बना हुआ (तू) मधु कैटभ का नाश करने वाले कृष्ण जी के साथ भी उद्दण्डता करने की चेष्टा कर रहा है । जब मेरे भय से तू युद्ध से भाग कर कीचड़ में छिप कर बैठा है ! ॥७॥

और भी—रे मानान्ध ! कौरवाधम !

मैंने कौरवान्तःपुर की हत-पतियों वाली स्त्रियों में जबर्दस्ती खुले केशपाश से पाञ्चाली

द्रौपदी—णाह ! अवणीदो मे मण्णू जइ पुणो वि सुलहं दंसणं भविस्सदि । [नाथ ! अपनीतो मे मन्युर्यदि पुनरपि सुलभं दर्शनं भविष्यति ।]

युधिष्ठिरः—कृष्णे ! नाऽमङ्गलानि व्याहर्तुमर्हस्यस्मिन्काले । भद्र ! ततस्ततः ।

पाञ्चालकः—देव ! ततश्चैवं भाषमाणेन वृकोदरेणाऽवतीर्य वीर्यक्रोधो-

---

हृतपतिषु—हताः = घातिताः पतयः = भर्तारः यासां तादृशासु सत्सु (जिनके पति मार डाले गये) व्यामुक्तैः = परित्यक्तैः केशपाशैः = कचपाशैः (खुले केश-पाश से) पाञ्चाल्याः = द्रौपद्याः (द्रौपदी का) मन्युवह्निः = क्रोधानलः (कोपानल) स्फुटम् = स्पष्टम् । उपशमितप्रायः = शान्तप्राय एव (लगभग शान्त ही कर दिया हैं)। भ्रातुः=बन्धोः दुःशासनस्य=कुरुनृपानुजस्य (भाई दुःशासन के) उरसः = वक्षःस्थलात् (वक्षःस्थल से) । स्रवत् = प्रवहमानम् (बहते हुये) असृक् = रुधिरम् (खून को) पीयमानम् = आचम्यमानम् (पी रहे) (माम्) निरीक्ष्य = अवलोक्य (देखकर) क्रोधात् = कोपात् (क्रोध से) भीमसेने = वृकोदरे । त्वया = दुर्योधनेन (तूंने) किं विहितम् = किं कृतम् (क्या किया) यद् असमये = अकाले (असमय में) अभिमानः = गर्वः अस्तः = समाप्तिमगात् (समाप्त हो गया) । अत्रोपमालङ्कारः । स्रग्धरा वृत्तम् ॥ ८ ॥

द्रौपदी—नाथ ! = स्वामिन् ! मे=मम द्रौपद्याः मन्युः = क्रोधः । अपनीतः = दूरीकृतः (दूर कर दिया) । यदि=चेत् पुनरपि = भूयोऽपि । सुलभम् = सुप्राप्यम् (सुलभ) दर्शनम् = अवलोकनम् । भविष्यति = स्यात् (हो जाये) ।

युधिष्ठिरः—कृष्णे = द्रौपदि ! अस्मिन् काले = एतस्मिन्नवसरे । अमङ्गलम् = अशुभम् (अशुभ) व्याहर्त्तुम् = वक्तुम् (कहने को) न अर्हसि = नोपयुक्ताऽसि (ठीक नहीं हो) ।

पाञ्चालकः—देव = राजन् ! ततः = तदनन्तरम् । एवं भाषमाणेन = एवं

के क्रोधानल को तो स्पष्ट रूप से शान्त ही कर दिया है । भाई दुःशासन के वक्षःस्थल से बह रहे खून को पीता मुझे देखकर क्रोध से (अपकारी मुझ) भीम के साथ (बदले में) तूने क्या किया जो असमय में ही (जीते जी) अभिमान समाप्त हो गया है ? ॥ ८ ॥

द्रौपदी—नाथ ! यदि आपका पुनः दर्शन मुझे सुलभ हो जाये, तो मेरा क्रोध दूर हो सकेगा ।

युधिष्ठिर—कृष्णे ! इस अवसर पर अशुभ कहना ठीक नहीं है । भद्र ! इसके बाद ।

पाञ्चालक—देव ! तब इस प्रकार कहते हुये वृकोदर ने क्रोधोद्धत परिघ के समान

द्धतं भ्रमितगदापरिघपाणिना सहसैवोल्लङ्घिततीरमुत्सन्ननलिनीवनम्, अपविद्धमूर्च्छितग्राहमुद्भ्रान्तमत्स्यशकुन्तमतिभैरवभ्रमितवारिसञ्चयमायतमपि तत्सरः समन्तादालोडितम्।

युधिष्ठिरः—भद्र ! तथाऽपि किं नोत्थितः ?

पाञ्चालकः—देव ! कथं नोत्थितः ?

कथ्यमानेन (इस प्रकार कहते हुये) वृकोदरेण = भीमेन (भीम ने) अवतीर्य = उत्तीर्य (उतरकर) क्रोधोद्धतम्—क्रोधेन = कोपेन उद्धतम् = उद्दण्डम् (क्रोध से पागल वने) भ्रमितगदापरिघपाणिना—भ्रमिताः = सञ्चालिता गदा परिघ इव पाणौ यस्य तेन (परिघ के समान गदा घुमाते हुये) सहसा एव = झटित्येव (अचानक ही) उल्लङ्घिततीरम्—उल्लङ्घितं तीरं येन तद् = उल्लङ्घिततटम् (तट का उल्लंघन किये हुये) उत्सन्ननलिनीवनम्—उत्सन्नम् = विनष्टम् नलिनीनाम् = कमलिनीनाम् वनम् = अरण्यम् यस्मिंस्तत् (नष्ट हुये नलिनीवन वाले) अपविद्धमूर्च्छितग्राहम्—अपविद्धाः = वहिः प्रक्षिप्ताः मूर्च्छिताः = विगतचेतनाः ग्राहाः = मकरादयः यस्मिन् तत् (बाहर फेंके जाने के कारण जहाँ मकरादि ग्राह मूर्च्छित हो गये थे।) उद्भ्रान्तमत्स्यशकुन्तं—उद्भ्रान्ताः = त्रस्ताः मत्स्याः = मीनाः शकुन्ताश्च जलपक्षिणश्च यस्मिन्, तत् (व्याकुल मछलियों तथा जलपक्षियों वाले) अतिभैरवभ्रमितवारिसञ्चयम्—अतिभैरवम् = अतिभयानकम् भ्रमितम् = भ्रमणम्, चङ्क्रमणम् वा वारिसञ्चयश्च = जलसङ्ग्रहश्च यस्मिन्, तत् (अति भयानक भंवर तथा जल सञ्चय वाले) आयतम् = विस्तृतम् अपि (विस्तृत होने पर भी) तत्सरःसमन्तात् = तस्य सरसः परितः (उस तड़ाग के चारों ओर) आलोडितम् = विक्षोभितम् (मथ डाला)।

युधिष्ठिरः—तथापि = एतत्कृतेऽपि (फिर भी) न उत्थितः किम् = किं सः नोदतिष्ठत् (नहीं उठा) ?

गदा हाथ से घुमाते हुये सहसा विशाल होते हुये भी उस तडाग को मथ डाला जिसका जल तट से बाहर तक उछल रहा था, नलिनी वन नष्ट हो गये थे तथा मकर आदि ग्राह वेहोश होकर जिसके बाहर पड़े हुये थे, मछलियाँ तथा जलपक्षी जिसमें अत्यन्त आकुल हो उठे थे और जिसमें अतिभयङ्कर भँवर एवं जलसंचय था।

युधिष्ठिर—भद्र ! क्या फिर भी वह नहीं उठा ?

पाञ्चालक—देव ! उठा क्यों नहीं !

त्यक्त्वोत्थितः सरभसं सरसः स मूल-
मुद्भूतकोपदहनोग्रविषस्फुलिङ्गः ।
आयस्तभीमभुजमन्दरवेल्लनाभिः
क्षीरोदधेः सुमथितादिव कालकूटः ॥ ९ ॥

युधिष्ठिरः—साधु ! सुक्षत्रिय ! साधु ।

द्रौपदी—पडिवण्णो समरो ण वा । [प्रतिपन्नो समरो न वा ।]

अन्वयः—सरसः मूलं सरभसं त्यक्त्वा उद्भूतकोपदहनोग्रविषस्फुलिङ्गः सः आयस्तभीमभुजमन्दरवेल्लनाभिः सुमथितात् क्षीरोदधेः कालकूटः इव उत्थितः ॥ ९ ॥

त्यक्त्वेति । सरसः = तडागस्य मूलम्=तलम् (तालाब के तल को) । सरभसम्=सहसा त्यक्त्वा=परित्यज्य (छोड़कर) । उद्भूतकोपदहनोग्रविपस्फुलिङ्गः—उद्भूताः = निर्गताः कोपदहनाः = क्रोधानलरूपाः उग्रविषस्य = तीव्रगरलस्य स्फुलिङ्गाः = अग्निकणाः यस्मात् सः (जिसके क्रोधानलरूपी उग्रविष की चिनगारियाँ निकल रही थीं) सः = असौ दुर्योधनः । आयस्तभीमभुजमन्दरवेल्लनाभिः—आयस्तौ = विस्तृतौ भीमस्य = वृकोदरस्य यौ भुजौ एव मन्दरः = मन्दराचलः, तस्य याः वेल्लनाः = मथनभ्रमणानि ताभिः (भीम की विशाल भुजाओंरूपी मन्दराचल को मथने से) समुत्थितात् = सुमन्थनकर्मणः (भली प्रकार मन्थन द्वारा) क्षीरोदधेः = क्षीरस्य उदधिस्तस्मात् = पयोधेः (क्षीर सागर से) कालकूट इव = कालकूटनामगरल इव उत्थितः = समुत्पन्नः (उठा) । उपमारूपकावलङ्कारावत्र । वसन्ततिलका वृत्तम् ॥ ९ ॥

युधिष्ठिरः—साधु = धन्यवादार्हः (धन्य है) । सुक्षत्रिय = भो उत्तमक्षत्रियकुमार ।

द्रौपदी—समरः = युद्धम् । प्रतिपन्नः = सञ्जातः । न वा = अथवा नैव प्रतिपन्नः (युद्ध हुआ या नहीं) ?

तालाब के तल को सहसा छोड़ कर क्रोधानल रूप उग्र विष की चिनगारियाँ निकालता हुआ वह (दुर्योधन) विस्तृत भीम के भुजारूपी मन्दराचल के मन्थनों से भली प्रकार मथे जाने से क्षीर-सागर से कालकूट विष के समान उठ खड़ा हुआ ॥ ९ ॥

युधिष्ठिर—शाबास सुक्षत्रिय शाबास !

द्रौपदी—समर हुआ अथवा नहीं ?

पाञ्चालकः—उत्थाय च तस्मात्सलिलाशयात्करयुगलोत्तम्भिततोरणीकृतभीमगदः कथयति स्म—'अरे रे मारुते! किं भयेन प्रलीनं दुर्योधनं मन्यते भवान्? मूढ! अनिहतपाण्डुपुत्रः प्रकाशं लज्जमानो विश्रमितुमध्यवसितवानस्मि पातालम्।'

एवं चोक्तवति वासुदेवकिरीटिभ्यां द्वावप्यन्तःसलिलं निषिद्धसमराऽऽरम्भौ स्थलमुत्तारितौ भीमसुयोधनौ। आसीनश्च कौरवराजः क्षितितले

पाञ्चालकः—सलिलाशयात् = जलाशयात् (तड़ाग से) उत्थाय = निर्गत्य (उठकर) करयुगलोत्तम्भिततोरणीकृतभीमगदः—करयुगलेन = हस्तद्वयेन उत्तम्भिता = उत्तोलिता अत एव तोरणीकृता = तोरणसदृशविहिता भीमा = भयङ्करी गदा येन सः (दोनों हाथों से उठाई गई अतः तोरण सदृश भीषण गदा किये हुये) (दुर्योधनः) कथयति स्म = वदति स्म (कहने लगा)। अरे रे मारुते = भो पवनात्मज भीम! किम् = किमिति (क्या) भयेन = त्रासेन प्रलीनम् = प्रच्छन्नम् (भय के कारण छिपे) दुर्योधनम् = मां कुरुपतिम् (दुर्योधन को)। भवान् = त्वम् (आप) मन्यते = अनुमानं करोति (मानते हो)। मूढ = मूर्ख! अनिहतपाण्डुपुत्रः—अनिहताः = न घातिताः पाण्डुपुत्राः = पाण्डवाः येन सः (पाण्डवों को बिना मारे) प्रकाशम् = स्पष्टम् (स्पष्टरूप से) लज्जमानः = त्रपमाणः (लज्जा करता हुआ) विश्रमितुम् = विश्रामम् कर्त्तुम् (विश्राम करने को) पातालम् = जलतलम् (पाताल को) अध्यवसितवान् अस्मि = प्रयत्नवान् अस्मि (प्रयत्न कर रहा था)।

एवम् = इत्थम् (ऐसा) उक्तवति = कथितवति (कहने पर)। वासुदेवकिरीटिभ्याम् = कृष्णार्जुनाभ्याम् (कृष्ण तथा अर्जुन ने) अन्तःसलिलम् = जलमध्ये (पानी के अन्दर) निषिद्धसमरारम्भौ—निषिद्धः = वर्जितः समरस्य = युद्धस्यारम्भः = प्रारम्भः ययोस्तौ (युद्ध प्रारम्भ करना निषिद्ध किये हुये) भीमसुयोधनौ = वृकोदरकुरुराजौ द्वावपि = उभावपि (दोनों ही) स्थलम् = अवनितलम् (भूतल पर)। उत्तारितौ = आनीतौ (ले आये) आसीनः = स्थितः।

पाञ्चालक—उस जलाशय से निकलकर दोनों हाथों को उठाकर अपनी भयंकर गदा को तोरण के समान करते हुये (दुर्योधन) कहने लगा—अरे रे मरुतपुत्र! क्या आप (मुझ) दुर्योधन को भय के कारण छिपा हुआ समझते हैं। मूढ! पाण्डुपुत्रों को मारे विना मैं सामने लज्जित होता हुआ पाताल में विश्राम करने चला गया था।

ऐसा कहने पर वासुदेव तथा अर्जुन ने दोनों को जल के अन्दर युद्ध करना मना कर भीम तथा सुयोधन को स्थल पर उतार दिया। आसीन कौरवराज (दुर्योधन) भूतल

गदां निक्षिप्य विशीर्णरथसहस्रं, निहतकुरुशतगजवाजिनरसहस्रकलेवरसम्मर्दसम्पतद्गृध्रकङ्कजम्बूकमुत्सन्नसुयोधनबलमस्मद्वीरमुक्तसिंहनादसंवलितसमरतूर्यमकौरवं रणस्थानमवलोक्याऽऽयतमुष्णं च निःश्वसितवान् । ततश्च वृकोदरेणाभिहितम्—'अयि भोः कौरवराज ! कृतं बन्धुनाशदर्शनमन्युना । मैवं विषादं कृथाः, पर्याप्ताः पाण्डवाः समरायाऽहमसहायः' इति । किञ्च—

कौरवराजः = कुरुपतिः (आसीन कौरवराज) । क्षितितले = भूतले (भूमि पर) गदाम् निक्षिप्य = गदां क्षिप्त्वा (गदा फेंककर) । विशीर्णरथसहस्रम्—विशीर्णम् भग्नम् रथानाम् = स्यन्दनानाम् सहस्रम् यत्र तादृशम् (हजारों रथ नष्ट हुये) । निहतकुरुशतगजवाजि-नरसहस्रकलेवर-सम्मर्दसम्पतद्-गृध्रकङ्कजम्बूकम्—निहतानि = घातितानि यानि कुरुशतानि गजानाम् = हस्तीनाम् वाजिनाम् = अश्वानाम् नराणाम् = जनानाम् च सहस्राणि, तेषाम् कलेवराणाम् सम्मर्दे = संघट्टने सम्पतन्तः = आपतन्तः गृध्राः, कङ्काः, जम्बूकाश्च = गृध्रकङ्कश्रृगालादि-मांसभक्षकाः पक्षिणश्च यत्र तथाभूतम् (मारे गये सैकड़ों कौरवों, हजारों हाथी घोड़े मनुष्यों के शरीरों को रगड़ने पर झपटकर गिर रहे गीध कङ्क तथा सियारोंवाले) उत्सन्नसुयोधनबलम्—उत्सन्नम् = नष्टम् सुयोधनस्य = कुरुपतेः बलम् = सैन्यम् यत्र तत्तथाभूतम् (जहाँ सुयोधन का बल नष्ट हो चुका है) अस्मद्वीरविमुक्तसिंहनादसंवलितसमरतूर्यम्—अस्माकं वीरैः = पाण्डवभटैः विमुक्तः = मुक्तः यः सिंहनादः = सिंहगर्जनम् तेन सम्वलितम् = सम्मिलितम् समरतूर्यम् = रणवाद्यध्वनिर्यत्र तत् तथाभूतम् (हमारे वीरों के सिंहनाद से मिश्रित रणवाद्यध्वनि वाले) अकौरवम् = कौरवैः रहितमकौरवम् (कौरवशून्य) रणस्थानम् = युद्धभूमिम् (रण स्थल को) अवलोक्य = दृष्ट्वा (देखकर) आयतम् = विस्तृतम् । उष्णम् = तप्तम् च निःश्वसितवान् = निःश्वासनं कृतवान् (लम्बो गर्म निःश्वास ली) । ततः = तदनन्तरम् च । वृकोदरेण = भीमेन (भीम ने) अभिहितम् = कथितम् (कहा) । अयि भोः कुरुराज

पर गदा फेंक कर हजारों रथ नष्ट हुये, सैकड़ों मारे गये कौरवों तथा हजारों हाथी घोड़े तथा मनुष्यों के पड़े शरीरों को खाने के लिये गिर रहे गीध कङ्क तथा श्रृगालों वाले, जहाँ सुयोधन का सैन्य बल नष्ट हो चुका था तथा जहाँ हमारे वीरों द्वारा सिंहनाद मिश्रित वाद्य ध्वनि की जा रही थी ऐसे कौरवों से रहित रणस्थल को देखकर दुर्योधन ने लम्बी, गर्म निःश्वास ली । तदनन्तर वृकोदर ने कहा—हे कुरुराज ! बन्धुनाश देखकर क्रोध मत करो । 'पाण्डव बहुत हैं तथा मैं युद्ध करने के लिये अकेला रह गया हूँ' ऐसा विषाद मत करो । क्योंकि—

पञ्चानां मन्यसेऽस्माकं यं सुयोधं सुयोधन ! ।
दंशितस्याऽऽत्तशस्त्रस्य तेन तेऽस्तु रणोत्सवः ॥ १० ॥

इत्थं श्रुत्वाऽसूयान्वितां दृष्टिं कुमारयोर्निक्षिप्योक्तवान् धार्तराष्ट्रः ।

कर्णदुःशासनवधात्तुल्यावेव युवां मम ।
अप्रियोऽपि प्रियो योद्धुं त्वमेव प्रियसाहसः ॥ ११ ॥

=भोः कुरुपते ! वन्धुनाशदर्शनमन्युना—वन्धूनाम् = भ्रातॄणाम् नाशस्य = विनाशस्य दर्शनेन=अवलोकनेन यन्मन्युः = क्रोधस्तेन (बान्धवों का नाश देखने से उत्पन्न क्रोध से) कृतम् = अलम् । एवम् = इत्थम् (इस प्रकार) विषादम् = खेदम् मा कृथाः = मा कुरु (मत करो) । समराय = युद्धाय (रण के लिए) पाण्डवाः = युधिष्ठिरादयः पर्याप्ताः = बहुसंख्यकाः (बहुत हैं) । अहम् = दुर्योधनः असहायः = एकलः अस्मि इति ।

अन्वयः—सुयोधन ! अस्माकं पञ्चानां (मध्ये) यं सुयोधं मन्यसे तेन दंशितस्य आत्तशस्त्रस्य ते रणोत्सवः अस्तु ॥ १० ॥

पञ्चानामिति । सुयोधन = हे कुरुराज ! अस्माकम् = पाण्डवानाम् पञ्चानाम् = पञ्चसंख्यकानाम् (मध्ये) । यम् सुयोधम् = सुखेन योधव्यम् (सुख से लड़ने योग्य) मन्यसे = जानासि (समझते हो) । तेन = तेन पाण्डवेन सह (उसी से) दंशितस्य = वर्मितस्य (कवचधारी) आत्तशस्त्रस्य = गृहीतायुधस्य (हथियार लिये हुये) । ते = तव (तेरा) रणोत्सवः = संग्रामोत्सवः (युद्धोत्सव) अस्तु = भवतु (होवे) । पथ्यावक्त्रं वृत्तम् ॥ १० ॥

इत्थम् = एवम् (ऐसा) श्रुत्वा = आकर्ण्य (सुनकर) । असूयान्विताम् दृष्टिम् = परोत्कर्षासहिष्णुतायुक्तां दृष्टिम् (दूसरे के उत्कर्ष को न सहने वाली दृष्टिको) । कुमारयोः = भीमार्जुनयोः । निक्षिप्य = प्रक्षिप्य (डालकर) । धार्तराष्ट्रः = दुर्योधनः । उक्तवान् = कथितवान् (बोला) ।

अन्वयः—कर्णदुःशासनवधात् युवां मम तुल्यौ एव, प्रियसाहसः त्वम् एव अप्रियः अपि योद्धुं प्रियः ॥ ११ ॥

हे सुयोधन ! हम पाँचों पाण्डवों में जिसे तुम लड़ने योग्य समझते हो उसी से कवच पहन कर अस्त्र धारण किये तुम्हारा रणोत्सव हो जाय ॥ १० ॥

यह सुनकर दूसरे के उत्कर्ष को न सह पाने की दृष्टि भीम तथा अर्जुन पर डालकर दुर्योधन कहने लगा—

कर्ण तथा दुःशासन के वध से तुम दोनों ही मेरे एक जैसे शत्रु हो । प्रिय साहसी होने के कारण तुम ही अप्रिय होकर भी युद्ध करने के लिये प्रिय हो ॥ ११ ॥

इत्युत्थाय च परस्परक्रोधाऽधिक्षेपपरुषवाक्कलहप्रस्तावितघोरसङ्ग्रामौ, विचित्रविभ्रमभ्रमितगदापरिभासुरभुजदण्डौ मण्डलैर्विचरितुमारब्धौ भीमदुर्योधनौ। अहं च देवेन चक्रपाणिना देवसकाशमनुप्रेषितः। आह च देवो देवकीनन्दनः—'अपर्युषितप्रतिज्ञे च मारुतौ प्रनष्टे कौरवराजे, महाना-

---

कर्णेति। कर्णदुःशासनवधात्—कर्णस्य = अङ्गराजस्य दुःशासनस्य = तन्नामाऽनुजस्य वधात् = वधकारणात्। युवाम् = द्वावपि (तुम दोनों ही)। मम = मे दुर्योधनस्य तुल्यौ = समानौ एव (एक से ही हो)। प्रियसाहसः—प्रियम् = अभीप्सितं साहसं यस्य सः (प्रियसाहसी) त्वम् एव = भीम एव। अप्रियः अपि = अरुचिकरोऽपि। योद्धम् = युद्धं कर्तुं प्रियः असि। अत्र विरोधाभासालङ्कारः। पथ्यावक्त्रं वृत्तम् ॥ ११ ॥

परस्पर क्रोधाधिक्षेपपरुष-वाक्कलहप्रस्तावितघोरसंग्रामौ — परस्परम् = अन्योन्यम् क्रोधेन योऽधिक्षेपः = तिरस्कारः, तेन परुषः = कठोरः यः वाक्कलहः = वाग्युद्धम् तेन प्रस्तावितः = प्रस्तुतः घोरः = भयङ्करः संग्रामः = युद्धो याभ्यां तौ (परस्पर में क्रुद्ध होकर आक्षेप करने के कारण कठिन वाणी विवाद से घोर युद्ध प्रारम्भ कर देने वाले) विचित्रविभ्रमभ्रमितगदापरिभासुरभुजदण्डौ—विचित्रेण = अद्भुतेन विभ्रमेण = विलासेन भ्रमिता = सञ्चालिता या गदा तया परिभासुरौ = परितः भासमानौ भुजदण्डौ = बाहुदण्डौ ययोस्तौ (विचित्रकौतुक से घुमाई गई गदा से चारों ओर शोभित भुजदण्ड वाले)। मण्डलैः = वृत्ताकारैः। भीमदुर्योधनौ—भीमश्च दुर्योधनश्च तौ = मारुतिकुरुराजौ। विचरितुम् = भ्रमितुम् (घूमना) प्रारब्धौ = आरम्भं कृतवन्तौ (आरम्भ किये)। अहम् = पाञ्चालकश्च (और मैं) देवेन चक्रपाणिना—चक्रं पाणौ यस्य सः तेन = माधवेन (महाराज चक्रपाणि द्वारा)। देवसकाशम्—देवस्य = भवतः सकाशम् = पार्श्वम् (आप के पास) अनुप्रेषितः = अनुप्रहितः (भेजा गया हूँ)। देवकीनन्दनः = वासुदेवः प्राह = उवाच च (और वासुदेव ने कहा है)। अपर्युषितप्रतिज्ञे—अपर्युषिता = अपूर्णा प्रतिज्ञा यस्य तस्मिन् (अधूरी प्रतिज्ञा वाले) मारुतौ = भीमे। कौरवराजे = कुरुपतौ। प्रनष्टे = प्रच्छन्ने सति (दुर्योधन के छिप जाने पर)। नः =

यह कहकर तथा उठकर परस्पर क्रोध से आक्षेप के कारण कठोर वाक् विवाद से घोर युद्ध प्रारम्भ कर देने वाले, विचित्र विलास से घुमाई गई गदा से शोभित भुजदण्डों वाले भीम तथा दुर्योधन ने घेरा बनाकर विचरण करना प्रारम्भ किया तथा भगवान् चक्रपाणि ने मुझे आपके पास भेजा है। महाराज देवकीनन्दन ने कहा है कि भीमसेन की शीघ्र पूरी

सीन्नो विषादः। सम्प्रति पुनर्भीमसेनेनाऽऽसादिते सुयोधने निष्कण्टकीभूतं भुननतलं परिकलयतु भवान्। अभ्युदयोचिताश्चानवरतमङ्गलसमारम्भाः प्रवर्त्यन्ताम्। कृतं सन्देहेन।

पूर्यन्तां सलिलेन रत्नकलशा राज्याऽभिषेकाय ते,
कृष्णाऽत्यन्तचिरोज्झिते च कबरीबन्धे करोतु क्षणम्।
रामे घोरकुठारभासुरकरे क्षत्रद्रुमोच्छेदिनि,
क्रोधान्धे च वृकोदरे परिपतत्याजौ कुतः संशयः॥ १२॥

अस्माकम्। महान् विषादः = अतिदुःखम्। आसीत् = अभूत् (महान् विषाद था)। सम्प्रति = साम्प्रतम् (अब)। पुनः = भूयः। भीमसेनेन = वृकोदरेण (भीम द्वारा) सुयोधने = कुरुराजे। आसादिते = सम्प्राप्ते (पा लेने पर)। निष्कण्टकीभूतम् = शत्रुहीनजातम् (निष्कण्टक बने)। भुवनतलम् = भूतलम् (भूतल को)। भवान् = युधिष्ठिरः (आप)। परिकलयतु (समझ लें)। अभ्युदयोचिताः = विजयोचिता (विजयकाल के योग्य) मङ्गलसमारम्भाः = मङ्गलोत्सवाः (मङ्गल उत्सव) अनवरतम् = निरन्तरम्। प्रवर्त्यन्ताम् = प्रारभ्यन्ताम् (मनाये जायें)। कृतं सन्देहेन = संशयेनालम्।

अन्वयः—रत्नकलशाः ते राज्याभिषेकाय सलिलेन पूर्यन्ताम्, अत्यन्तचिरोज्झिते च कवरीवन्धे कृष्णा क्षणं करोतु। घोरकुठारभासुरकरे क्षत्रद्रुमोच्छेदिनि रामे, क्रोधान्धे वृकोदरे च आजौ परिपतति (सति) संशयः कुतः॥ १२॥

पूर्यन्तामिति। रत्नकलशाः = मणिघटाः (रत्नकलश) ते = तव। राज्याभिषेकाय = राजतिलकाय (राज्याभिषेक के लिए) सलिलेन = वारिणा (जल से) पूर्यन्ताम् = भ्रियन्ताम् (भर दिये जायँ)। अत्यन्तचिरोज्झिते—बहुकालत्यक्ते (बहुत समय से खुले)। कवरीवन्धे = केशबन्धने (बाल, चोटी बाँधने में)

करने वाली प्रतिज्ञा के कारण दुर्योधन के गायब हो जाने पर हम सब को महान् विषाद हो गया था। अब पुनः भीमसेन के सुयोधन को पा लेने पर आप भूतल को निष्कण्टक हुआ समझ लें। विजय काल के योग्य मङ्गल उत्सव निरन्तर मनाये जाने आरम्भ कर दें। विजय के सम्बन्ध में सन्देह न करें।

रत्न कलश तुम्हारे राज्याभिषेक के लिये जल से भर लिये जायें, बहुत समय से खुले बालों को बाँधने में द्रौपदी उत्सव मनाये। कठोर परशु (फरसे) से प्रदीप्त हाथ वाले तथा क्षत्रिय रूपी वृक्ष को काटने वाले परशुराम तथा क्रोधान्ध वृकोदर के युद्धभूमि पर उतरने पर विजय में सन्देह कहाँ?॥ १२॥

द्रौपदी—(सबाष्पम्) जं देवो त्तिहुअणणाहो भणादि तं कहं अण्णहा भविस्सदि। [यद्देवस्त्रिभुवननाथो भणति तत्कथमन्यथा भविष्यति।]

पाञ्चालकः—न केवलमियमाशीः, असुरनिषूदनस्याऽऽदेशोऽपि।

युधिष्ठिरः—को हि नाम भगवता सन्दिष्टं विकल्पमपि ? कः कोऽत्र भोः।

(प्रविश्य)

कृष्णा = द्रौपदी। क्षणम् = उत्सवम् ('क्षण उद्धर्षो मह उद्धव उत्सवः' इत्यमरः) करोतु = विदधातु (करें)। घोरकुठारभासुरकरे—घोरेण = कठोरेण कुठारेण = परशुना भासुरः = प्रदीप्तः करः = पाणिर्यस्य तस्मिन् (कठोर फरसे से चमकते हुये हाथ वाले) क्षत्रद्रुमोच्छेदिनि—क्षत्रम् = क्षत्रियरूपम् द्रुमम् = पादपम् उच्छेत्तीति तस्मिन् (क्षत्रियरूपी वृक्ष को काट डालने वाले) रामे=जामदग्नौ (परशुराम में)। क्रोधान्धे—क्रोधेन = कोपेन अन्धस्तस्मिन् (क्रोधान्ध) वृकोदरे=भीमसेने च (भीम में) आजौ = समरे (युद्ध में) परिपतति—परितः पतति = अवतरति सति (कूद पड़ने पर) संशय = सन्देहः (विजयस्य) कुतः = कस्मात्। अवश्यंभावी विजय इत्याशयः। अत्र दीपकालङ्कारः। शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम् ॥ १२ ॥

द्रौपदी—त्रिभुवननाथः—त्रिभुवनस्य = त्रिलोकस्य नाथः = प्रभुः वासुदेवः (त्रिभुवननाथ)। यद् = यथा (जो) भणति = कथयति (कहते हैं)। अन्यथा = विपरीतम् (विरुद्ध)।

पाञ्चालकः—इयम् = एषा। आशीः = आशीर्वादवाक्। केवलं नास्ति। असुरनिषूदनस्य—असुराणाम् = राक्षसानाम् निषूदनः = नाशकः, तस्य (असुरनाशक प्रभु का)। आदेशः = आज्ञा अपि (आदेश भी है)।

युधिष्ठिरः—को हि नाम=कः समर्थः (कौन समर्थ है)। भगवता = प्रभुणा (वासुदेव द्वारा) सन्दिष्टम् = दत्तसन्देशम् (दिये गये सन्देश को) विकल्पयति = परिवर्तयति (बदल सकता है)।

द्रौपदी—(आँसू भर कर) जो देव त्रिभुवन नाथ कहते हैं वह विपरीत कैसे होगा।

पाञ्चालक—यह केवल आशीर्वाद ही नहीं है असुर-निषदन का आदेश भी है।

युधिष्ठिर—भगवान् के द्वारा दिये गये सन्देश को कौन बदल सकता है ? अरे यहाँ कौन है ?

(प्रवेश करके)

कञ्चुकी—आज्ञापयतु देवः ।

युधिष्ठिरः—कञ्चुकिन् ! देवस्य देवकीनन्दनस्य बहुमानाद्वत्सस्य मे विजयमङ्गलाय प्रवर्त्यन्तां तदुचिताः समारम्भाः ।

कञ्चुकी—यथाऽऽज्ञापयति देवः । (सोत्साहं परिक्रम्य) भो भोः संविधातॄणां पुरस्सराः, यथाप्रधानमन्तर्वेश्मिका दौवारिकाश्च ! एष खलु भुजबलपरिक्षेपोत्तीर्णकौरवपरिभवसागरस्य निर्व्यूढदुर्वहप्रतिज्ञाभारस्य सुयोधना-

---

कञ्चुकी—आज्ञापयतु=आदिशतु (आदेश दें) देवः=प्रभुः (महाराज)।

युधिष्ठिरः—कञ्चुकिन् = अन्तःपुरचारिन् (हे कञ्चुकी) ! देवस्य = प्रभोः देवकीनन्दनस्य = वासुदेवस्य (देव देवकीनन्दन के) बहुमानात् = आदरणीयत्वात् (आदरणीय होने से) मे = मम वत्सस्य = अनुजस्य भीमस्य (वत्स भीमसेन के) । विजयमङ्गलाय = विजयोत्सवाय (विजयोत्सव के लिए) उचिताः = उपयुक्ताः (उचित) समारम्भाः = सम्विधानानि (तैयारियाँ) प्रवर्त्तन्ताम् = प्रारभन्ताम् (आरम्भ कर दी जायें) ।

कञ्चुकी—सम्विधातॄणाम् = पुरोहितादीनाम् पुरःसराः = अग्रेसराः (पुरोहितादि में अग्रगण्य) । यथाप्रधानम् = प्रधानपुरुषानुक्रमेण । अन्तर्वेश्मिकाः = अन्तःपुरचारिणः (अन्तःपुर में रहने वालो) । दौवारिकाः = द्वारपालाश्च (तथा द्वारपालो) । एषः = अयम् । खलु = किल । भुजबलपरिक्षेपोत्तीर्णकौरवपरिभवसागरस्य—भुजबलस्य = बाहुबलस्य परिक्षेपेण = विक्षेपेण उपोत्तीर्णः = समुत्तीर्णः कौरवाणाम् = दुर्योधनादीनाम् परिभवः = तिरस्कार एव सागरः = सिन्धुर्येन तस्य (भुजबल को चारों ओर फेंकने से उत्तीर्ण कौरवों के द्वारा किये गये परिभवरूपी सागर वाले) । निर्व्यूढदुर्वहप्रतिज्ञाभारस्य—निर्व्यूढः=परिसमाप्तः दुर्वहः = वोढुमशक्यः प्रतिज्ञायाः = संकल्पस्य भारो येन तस्य (दुर्वह प्रतिज्ञाभार

कञ्चुकी—महाराज ! आज्ञा दीजिये ।

युधिष्ठिर—हे कञ्चुकी ! देव देवकीनन्दन के आदरणीय होने के कारण मेरे वत्स भीमसेन के विजय मङ्गल के लिए उचित तैयारियाँ प्रारम्भ कर दी जायें ।

कञ्चुकी—जैसी महाराज की आज्ञा । (सोत्साह घूमकर) अरे ओ कार्यकर्ताओं में अग्रगण्य ! अन्तपुर के प्रधान कर्मचारियो ! दौवारिको ! यह भुजबल से कौरवों द्वारा किये गये परिभव रूपी सागर को पार करने वाले, दुर्वह प्रतिज्ञा-भारको पूरा करने वाले

टिप्पणी—**कञ्चुकी**—राजान्तःपुर का वृद्ध ब्राह्मण सेवक । यह प्रायः नपुंसक ही रखे जाते थे ।

ऽनुजशतोन्मूलनप्रभञ्जनस्य दुःशासनोरःस्थलविदलननरसिंहस्य दुर्योधनोरुस्तम्भभङ्गविनिश्चितविजयस्य बलिनः प्राभञ्जनेर्वृकोदरस्य स्नेहपक्षपातिना मनसा मङ्गलानि कर्तुमाज्ञापयति देवो युधिष्ठिरः। (आकाशे।) किं ब्रूथ—'सर्वतोऽधिकतरमपि प्रवृत्तं किं नावलोकयसि' इति। साधु पुत्रकाः! साधु। अनुक्तहितकारिता हि प्रकाशयति मनोगतां स्वामिभक्तिम्।

को पूरा किये हुये) सुयोधनानुजशतोन्मूलनप्रभञ्जनस्य—सुयोधनस्य = कुरुपतेः अनुजानाम् = भ्रातॄणाम् शतम्, तस्योन्मूलने = उच्छेदे प्रभञ्जनः = भीषणवायुसमस्तस्य (दुर्योधन के सौ भाइयों को नष्ट करने के लिये आँधी जैसे) दुःशासनोरःस्थलविदलननरसिंहस्य—दुःशासनस्य = कुरुराजस्य वक्षःस्थलम् = वक्षोभागम् विदलने = विदारणे नरसिंहः = नृसिंहः रूपः, तस्य (दुःशासन के वक्षःस्थल को फाड़ने में नृसिंह के समान)। दुर्योधनोरुस्तम्भभङ्गविनिश्चितविजयस्य—दुर्योधनस्य = कुरुपतेः उरुस्तम्भभङ्गेन = जंघास्तम्भनाशेन विनिश्चितः = सुनियतः विजयः = जयो यस्य तस्य (सुयोधन की जंघा भंग होने से निश्चित हुई विजय वाले) बलिन = प्रबलस्य (प्रबल) प्राभञ्जनेः = प्रभञ्जनस्यापत्यं पुमान् प्राभञ्जनिस्तस्य (आँधी के समान भयंकर पवनसुत) वृकोदर = भीमस्य (भीमसेन के) स्नेहपक्षपातिना—स्नेहेन = प्रेम्णा पक्षपाती यस्तस्य (प्रेम में पक्षपात रखने वाले) मनसा = चेतसा (मन से) मङ्गलानि = शुभानि (मंगल) कर्त्तुम् = विधातुम् (करने को) देवः = महाराजः युधिष्ठिरः = ज्येष्ठपाण्डवः (महाराज युधिष्ठिर) आज्ञापयति = आदिशति (आज्ञा दे रहे हैं)। आकाशे = नभसि (आकाश की ओर देखकर)। किं ब्रूथ = किं कथयथ (क्या कहते हो)। सर्वतः—

सुयोधन के सौ भाईरूपी वृक्षों का उखाड़ फेंकनेवाली आंधी के सदृश, दुःशासन के वक्षःस्थल को फाड़ने में नृसिंह के समान, दुर्योधन के जंघाभङ्ग से सुनिश्चित विजय वाले प्रबल आँधी के समान भयंकर पवनपुत्र वृकोदर के स्नेह पक्षपाती मन से विजयोत्सव मनाने को महाराज युधिष्ठिर आज्ञा दे रहे हैं। (आकाश में) क्या कहते हो—'चारों ओर जोर से मनाये जा रहे महोत्सव को क्या नहीं देख रहे हो।' शाबास पुत्रो शाबास। बिना कहे स्वामी का हित करना हार्दिक स्वामिभक्ति को प्रकट करना है।

टिप्पणी—आकाशभाषितम्—'क्या कहते हो' इत्यादि बिना पात्र के ही जब कोई पात्र बड़बड़ाने लगता है तो वह आकाशभाषित कहलाता है—

किं ब्रवीष्येवमित्यादि विना पात्रं ब्रवीति यत्।
श्रुत्वेवानुक्तमप्येकस्तत्स्यादाकाशभाषितम् ॥ (साहित्यदर्पण)।

युधिष्ठिरः—आर्य जयन्धर !

कञ्चुकी—आज्ञापयतु देवः ।

युधिष्ठिरः—गच्छ ! प्रियख्यापकं पाञ्चालकं पारितोषिकेण परितोषय ।

कञ्चुकी—यदाज्ञापयति देवः (इति पाञ्चालकेन सह निष्क्रान्तः ।)

द्रौपदी—महाराज ! किं णिमित्तं उण णाहभीमसेणेण सो दुराआरो भणिदो—'पंचाणं वि अम्हाणं मज्झे जेण दे रोअदि तेण सह दे संगामो होदु'त्ति । जह मद्दीसुदाणं एकदरेण सह संगामो तेण पत्थिदो भवे तदो अच्चाहिदं भवे । [महाराज ! किं निमित्तं पुनर्नाथभीमसेनेन स दुराचारो

समन्ततः (चारों ओर, सर्वत्र) अधिकतरम् अपि = बहुतरमपि । अत्यधिक प्रवृत्तम् = सम्वृत्तम् (आरम्भ हो चुका है) । किं न आलोकयसि = किं न पश्यसि (क्या देख नहीं रहे हो) । पुत्रकाः = वत्साः (बेटो) । साधु = साधुवादनम् (शावास) । अनुक्तहितकारिता—अनुक्ता = अकथिता हितकारिता = स्वेच्छया कृतहितैषिता (बिना कहे हित करना) । मनोगताम् = मनःस्थिताम् (मानसिक) स्वामिभक्तिम् = प्रभुप्रेम (स्वामी की भक्ति को) । प्रकाशयति=प्रकटयति (प्रकट कर देता है) ।

युधिष्ठिरः—आर्य = श्रेष्ठ ! जयन्धर ।

कञ्चुकी—आज्ञापयतु = आदिशतु (आज्ञा दीजिये) ।

युधिष्ठिरः—गच्छ = याहि (जाओ) । प्रियख्यापकम्—प्रियस्य = आनन्ददायकस्य ख्यापकः = सूचकस्तम् (प्रिय सूचना देने वाले) । पारितोषिकेण=पुरस्कारदानेन (इनाम देकर) । परितोषय = सन्तोषय (प्रसन्न करो) ।

कञ्चुकी—निष्क्रान्तः = निर्गतः (निकल गया) ।

द्रौपदी—महाराज = देव ! किं निमित्तम् = किमर्थम् (किसलिये) नाथभीमसेनेन = स्वामिना वृकोदरेण (स्वामी भीम से) पुनः = भूयः (फिर)

युधिष्ठिर—आर्य जयन्धर !

कञ्चुकी—आज्ञा दीजिये महाराज !

युधिष्ठिर—जाओ प्रियसूचना देने वाले पाञ्चालक को पुरस्कार देकर सन्तुष्ट करो ।

कञ्चुकी—जैसी महाराज की आज्ञा । (यह कहकर पाञ्चालक के साथ निकल गया ।)

द्रौपदी—महाराज ! पुनः नाथ भीमसेन ने उस दुराचारी से यह कह दिया कि हम

भणितः—पञ्चानामप्यस्माकं मध्ये येन ते रोचते तेन सह ते सङ्ग्रामो भवतु' इति। यदि माद्रीसुतयोरेकतरेण सह सङ्ग्रामस्तेन प्रार्थितो भवेत्ततोऽत्याहितं भवेत्।]

युधिष्ठिरः—कृष्णे ! एवं मन्यते जरासन्धघाती। हतसकलसुहृद्बन्धुवीराऽनुजराजन्यासु कृपकृतवर्माऽश्वत्थामशेषास्वेकादशस्वक्षौहिणीष्वबान्धवः शरीरमात्रविभवः कदाचिदुत्सृष्टनिजाऽभिमानो धार्तराष्ट्रः परित्यजेदायुधं

सः=असौ। दुराचारः-दुष्टः दुर्योधनः (वह दुराचरी) भणितम्=कथितम् (कहा गया)। पञ्चानाम् अपि=पञ्चसंख्यकानामपि। अस्माकम्=पाण्डवानाम् मध्ये (हम पाँचों में) से येन=येन पाण्डवेन सह (जिसके साथ) ते=तुभ्यम् (तुम्हें) रोचते=रुचिकरं भवतु (रुचिकर हो)। तेन सह=तेन साकम् (उसके साथ)। ते=तव। संग्रामः=संगरः (युद्ध)। भवतु=अस्तु (होवे)। यदि=चेत् (कहीं) एतयोः=अनयोः माद्रीसुतयोः=नकुल सहदेवयोः (नकुल तथा सहदेव में)। एकतरेण=एकेन सह (किसी एक के साथ) प्रार्थितः=याचितः (मांग लिया)। ततः=तदनन्तरम् (तब तो) अत्याहितम्=अत्यनर्थम् भवेत्=स्यात् (अत्यन्त अनर्थ ही हो जाये)।

युधिष्ठिरः—कृष्णे=द्रौपदि ! जरासन्धघाती—जरासन्धस्य घाती=घातकः भीमः (जरासंघ को मारने वाले भीम) एवम्=इत्थम् (ऐसा) मन्यते=जानाति (मानते थे)। हतसकलसुहृद्बन्धुवीरानुजराजन्यासु—हताः=घातिताः सकलाः=समस्ताः सुहृदः=मित्राणि बन्धुवीराः=वीरभ्रातरः अनुजाः राजन्याः=राजकुमाराश्च यत्र तथाभूतासु (जहाँ मित्र बन्धु वीर अनुज तथा राजपुत्र मार डाले गये)। कृपकृतवर्माऽश्वत्थामशेषासु—कृपः=कृपाचार्यः, कृतवर्मा, अश्वत्थामा=द्रोणायनिः च शेषा यत्र तथाभूतासु (जिसमें कृपाचार्य, कृतवर्मा तथा अश्वत्थामा तीन ही शेष रह गये थे)। एकादशसु अक्षौहिणीषु=एकादशाक्षौहिणीपरिमितसेनासु (ग्यारह अक्षौहिणी सेनाओं में)। अबान्धवः—न सन्तिबान्धवाः यस्य सः (बन्धु-

---

पाँचों में से जो तुझे रुचिकर हो उसके साथ तेरा युद्ध होवे। कहीं इन माद्रीसुतों (नकुल सहदेव) में से किसी एक के साथ युद्ध करना माँग लिया होता, तब तो महान् अनर्थ ही हो जाता।

युधिष्ठिर—कृष्णे ! जरासन्धघाती भीम ऐसा सोचते थे कि समस्त मित्र बन्धु वीर बान्धव तथा राजाओं को जिसमें मारा जा चुका है। कृपाचार्य, कृतवर्मा तथा अश्वत्थामा तीन वीर ही जिसमें शेष रह गये हैं ऐसी एकादश अक्षौहिणी सेनाओं में बान्धव रहित

तपोवनं वा व्रजेत्सन्धिं वा पितृमुखेन याचेत। एवं सति सुदूरमतिक्रान्तः प्रतिज्ञाभारो भवेत्सकलरिपुजयस्येति। समरं प्रतिपत्तुं पञ्चानामपि पाण्डवानामेकस्याऽपि नैव क्षमः सुयोधनः। शङ्के चाऽहं गदायुद्धं वृकोदरस्यैवाऽनेन।

अयि सुक्षत्रिये ! पश्य—

क्रोधोद्गूर्णगदस्य नास्ति सदृशः सत्यं रणे मारुतेः,
कौरव्ये कृतहस्तता पुनरियं देवे यथा सीरिणि।

हीन)। शरीरमात्रविभवः—शरीरमात्रम् = देहमात्रम् विभवो यस्य सः (देहमात्र-वैभववाले)। कदाचित् = कदापि। (शायद)। उत्सृष्टनिजाभिमानः—उत्सृष्टः= परित्यक्तः निजस्य=आत्मनः अभिमानो येन सः (अपने अभिमान को छोड़े हुये)। धार्तराष्ट्रः = दुर्योधनः। आयुधम् = शस्त्रम्। परित्यजेत् = मुञ्चेत् (आयुध छोड़ दें)। वा = अथवा। तपोवनं—तपश्चरणार्थं वनम् = अरण्यम्। व्रजेत् = गच्छेत् (तप करने वन को चला जाय)। वा = अथवा। पितृमुखेन = तातेन (अपने पिता के मुँह से) सन्धिम् = सन्धिकरणम् (सन्धि) याचेत् = याचनां कुर्यात् (माँगे)। प्रतिज्ञाभारः=प्रतिज्ञापूरणम् (प्रतिज्ञा पूरा करना) सुदूरम् = अतिदूरम् अतिक्रान्तः भवेत् = गतो भवेत् (चला जायेगा)। सकलरिपुजयस्य = निखिलशत्रुजयस्य (समस्त शत्रुओं को जीतने की)। समरम् = युद्धम्। प्रतिपत्तुम् = विधातुम् (युद्ध करने को)। एकस्यापि=कस्यापि (किसी एक के भी) न क्षमः = समर्थः नास्ति (समर्थ नहीं है)। शङ्के = मन्ये (शायद) अनेन = एतेन दुर्योधनेन (इससे) वृकोदरस्य = भीमस्य एव गदायुद्धम् भवेत्।

अन्वयः—रणे क्रोधोद्गूर्णगदस्य मारुतेः सदृशः (अन्यः) नास्ति, सत्यम्। (तथापि) कौरव्ये पुनः देवे सीरिणि यथा इयं कृतहस्तता, उद्धतधार्तराष्ट्रनलिनी-

---

शरीरमात्र वैभव वाला दुर्योधन कदाचित् अपना अभिमान छोड़ दे या तपोवन को चला जाय अथवा अपने पिता के मुँह से सन्धि की याचना करे। ऐसा होने पर समस्त शत्रुओं की विजय की कठिन प्रतिज्ञा का भार उतारना बहुत दूर चला जायेगा। तथा पाँचों पाण्डवों में किसी एक के भी साथ सुयोधन युद्ध करने मे समर्थ नहीं है। मुझे तो सन्देह है कि वृकोदर के साथ ही इसका गदा युद्ध हो रहा है।

हे सुक्षत्रिये ! देखो—

युद्ध में क्रुद्ध होकर गदा उठाये मारुति (भीम) के समान कोई दूसरा पराक्रमी नहीं है यह सच है फिर भी दुर्योधन में भगवान् बलभद्र के समान यह शस्त्र चलाने का हस्त-

स्वस्त्यस्तूद्धतधार्तराष्ट्रनलिनीनागाय वत्साय मे
शङ्के तस्य सुयोधनेन समरं नैवेतरेषामहम् ॥ १३ ॥

(नेपथ्ये) तृषितोऽस्मि, भोस्तृषितोऽस्मि, सम्भावयतु कश्चित्सलिलच्छायाप्रदानेन माम् ।

युधिष्ठिरः—(आकर्ण्य ।) कः कोऽत्रः भोः ।

(प्रविश्य सत्वरम् ।)

नागाय मे वत्साय स्वस्ति अस्तु । अहं तस्य सुयोधनेन समरं शङ्के इतरेषां न एव ॥ १३ ॥

क्रोधोर्दितेति । रणे = समरे (युद्ध में) । क्रोधोद्गूर्णगदस्य—क्रोधेन = कोपेन उद्गूर्णा = उद्यता गदा येन सः तस्य (क्रोध से गदा उठाये हुये) । मारुतेः = भीमस्य सदृशः = समानः (भीम के समान) । अन्यः नास्ति । सत्यम् = तथ्यम् (यह सच है) । (तथापि) कौरव्ये = दुर्योधने । पुनः = भूयः । देवे सीरिणि = बलदेवे यथा = इव इयम् = एषा । कृतहस्तता = हस्तसञ्चालनलाघवम् (अस्त्र चलाने की सफाई) । उद्धतधार्तराष्ट्रनलिनीनागाय—उद्धतः = उद्दण्डः यः धार्तराष्ट्रः = दुर्योधनः, स एव नलिनी = कमलिनी, तस्यै नागः = गज इव तस्मै (उद्धत दुर्योधन रूपी नलिनी को हाथी जैसे) मे = मम । वत्साय = अनुजाय भीमाय (मेरे भाई भीम के लिये) स्वस्ति अस्तु = कल्याणं भवतु (कल्याण हो) । अहम् = युधिष्ठिरः (मैं) तस्य = भीमस्य (उसका) सुयोधनेन = दुर्योधनेन समम् = साकम् (दुर्योधन के साथ) । समरम् = युद्धम् (युद्ध को) शङ्के = सम्भावयामि (सोच रहा हूँ) । इतरेषाम् = अन्येषाम् (दूसरों के साथ युद्ध) । न एव = नैव शङ्के (नहीं सोचता हूँ) । अत्र रूपकालङ्कारः । शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम् ॥ १३ ॥

तृषितः = तृषार्त्तः (प्यासा) । कश्चित् = कोऽपि (कोई) माम् (मुझे) सलिलच्छायाप्रदानेन—सलिलस्य = जलस्य छायायाश्च प्रदानेन = दानेन (जल और छाया देकर) सम्भावयतु = उपकरोतु (उपकार कर दे) ।

लाघव है । उद्धत धार्तराष्ट्र रूपी कमलिनी लता के लिए हाथी जैसे मेरे अनुज भीम का कल्याण हो । मैं उस (भीम) के सुयोधन के साथ समर (गदायुद्ध) की आशङ्का करता हूँ दूसरों के नहीं ॥ १३ ॥

(नेपथ्य में) अरे प्यासा हूँ, प्यासा हूँ मुझे कोई पानी तथा छाया देने की कृपा करे ।

युधिष्ठिर—(सुनकर) अरे यहाँ कौन है ?

(प्रवेश कर, शीघ्र)

कञ्चुकी—आज्ञापयतु देवः ।

युधिष्ठिरः—ज्ञायतां किमेतत् ।

कञ्चुकी—यदाज्ञापयति देवः । (इति निष्क्रम्य, पुनः प्रविश्य ।) देव ! क्षुण्मानतिथिरुपस्थितः ।

युधिष्ठिरः—शीघ्रं प्रवेशय ।

कञ्चुकी—यदाज्ञापयति देवः । (इति निष्क्रान्तः ।)

(ततः प्रविशति मुनिवेषधारी चार्वाको नाम राक्षसः ।)

राक्षसः—(आत्मगतम्) एषोऽस्य चार्वाको नाम राक्षसः सुयोधनस्य मित्रं पाण्डवान्वञ्चयितुं भ्रमामि । (प्रकाशम् ।) तृषितोऽस्मि, तृषितोऽस्मि । सम्भावयतु मां कश्चिज्जलच्छायाप्रदानेन । (इति राज्ञः समीपमुपसर्पति ।)

युधिष्ठिरः—ज्ञायताम् = ज्ञानं क्रियताम् (मालूम किया जाय)। एतत् = इदम् (यह) ।

कञ्चुकी—निष्क्रम्य = निर्गत्य (निकल कर) । देव = राजन् ! क्षुण्मान् = क्षुधार्त्तः (भूखा) अतिथि = अभ्यागतः (अतिथि) । उपस्थितः = आगतः (उपस्थित हैं) ।

युधिष्ठिरः—शीघ्रम् = द्रुतम् (शीघ्र) प्रवेशय = आनय (प्रविष्ट करो) ।

मुनिवेषधारी = मुनिरूपधरः (कपटी मुनि का वेश बनाये) चार्वाकः नाम = तन्नामकः (चार्वाक नामक) राक्षसः = दैत्यः (राक्षस) ।

राक्षसः—मित्रम्=सुहृत् । पाण्डवान् = युधिष्ठिरादीन् (पाण्डवों को) वञ्च-

---

कञ्चुकी—देव ! आज्ञा दीजिये ।

युधिष्ठिर—मालूम करो—यह क्या है ?

कञ्चुकी—जैसी महाराज की आज्ञा । (यह कहकर, निकलकर, पुनः प्रवेश कर) देव ! भूख से पीडित अतिथि उपस्थित है ।

युधिष्ठिर—शीघ्र ले आओ ।

कञ्चुकी—जैसी महाराज की आज्ञा । (यह कहकर निकल जाता है ।)

(तदनन्तर मुनिवेशधारी चार्वाक नामक राक्षस प्रवेश करता है ।,)

राक्षस—(मन ही मन) यह मैं चार्वाक नामक राक्षस सुयोधन का मित्र पाण्डवों को छलने के लिये घूम रहा हूँ । (प्रकट रूप में) मैं प्यासा हूँ, मैं प्यासा हूँ । मुझे कोई पानी पिलाने तथा छाया देने की कृपा करें ।

(यह कहकर महाराज युधिष्ठिर के समीप जाता है ।)

(सर्वे उत्तिष्ठन्ति ।)

युधिष्ठिरः--(सहसोत्थाय) मुने ! अभिवादये ।

राक्षसः--अकालोऽयं समुदाचारस्य, जलप्रदानेन सम्भावयतु मां भवान् ।

युधिष्ठिरः--मुने ! इदमासनम् । उपविश्यताम् ।

राक्षसः--(उपविश्य ।) ननु भवताऽपि क्रियतामासनपरिग्रहः ।

युधिष्ठिरः--(उपविश्य ।) कः कोऽत्र भोः ! सलिलमुपनय ।

(प्रविश्य गृहीतभृङ्गारः ।)

यितुम् = छलयितुम् (छलने को) भ्रमामि = परिभ्रमामि (चक्कर काट रहा हूँ) । राज्ञः = युधिष्ठिरस्य । समीपम् = पार्श्वम् (राजा के समीप) उपसर्पति = गच्छति (पहुँचता है) ।

युधिष्ठिरः--मुने = ऋषे (हे मुने) । अभिवादये = प्रणमामि (मैं अभिवादन करता हूँ) ।

राक्षसः—समुदाचारस्य = सम्यक् सदाचारस्य (शिष्टाचार करने का) अयम् = एषः (यह) अकालः = असमयः (समय नहीं है) । जलप्रदानेन (पानी देकर) ।

युधिष्ठिरः—इदम् = एतत् (यह) आसनम् = विष्टरम् (आसन है) । उपविश्यताम् = आस्यताम् (बैठिये) ।

राक्षसः—भवता = श्रीमता (आप द्वारा) । आसनपरिग्रहः = स्थानग्रहणम् (आसनग्रहण) । क्रियताम् = विधीयताम् (किया जाय) ।

युधिष्ठिरः—सलिलम् = जलम् (पानी) उपनय = आहर (ले आओ) ।

गृहीतभृङ्गारः—गृहीतः = हस्ते कृतः भृङ्गारः = स्वर्णपात्रम् येन सः (स्वर्णनिर्मित जलपात्र लिये हुये) ।

(सब उठ खड़े होते हैं) ।

युधिष्ठिर—(सहसा उठकर) मुने ! मैं अभिवादन करता हूँ ।

राक्षस—यह शिष्टाचार करने का समय नहीं है । मुझे आप जल देने की कृपा करें ।

युधिष्ठिर—मुने ! यह आसन है । बैठ जाइये ।

राक्षस—(बैठकर) आप भी आसन ग्रहण कर लीजिये ।

युधिष्ठिर—(बैठकर) अरे यहाँ कौन है ? पानी ले आओ ।

(भृङ्गार—स्वर्ण-जलपात्र लिये हुये प्रवेश कर)

कञ्चुकी—(उपसृत्य ।) महाराज शिशिरसुरभिसलिलसम्पूर्णोऽयं भृङ्गारः, पानभाजनं चेदम् ।

युधिष्ठिरः—मुने ! निर्वर्त्यतामुदन्याप्रतीकारः ।

राक्षसः—(पादौ पक्षाल्योपस्पृशन्विचिन्त्य ।) भोः भोः, क्षत्रियस्त्वमिति मन्ये ।

युधिष्ठिरः—सम्यग्वेदी भवान् । क्षत्रिय एवाऽस्मि ।

राक्षसः—यद्येवं प्रतिदिनसुलभस्वजनविनाशनेषु सङ्ग्रामेषु युष्मत्तो नाऽऽदेयं सलिलादिकम् । भवतु, छाययैवाऽनया सरस्वतीशिशिरतरङ्गस्पृशा मरुता चानेन विगतक्लमो भविष्यामि ।

कञ्चुकीः—शिशिरसुरभिसलिलसम्पूर्णः—शिशिरम् = शीतलम् सुरभि = सुगन्धि च यज्जलम्, तेन सम्पूर्णः = भृतः (शीतल तथा सुगन्धित जल से भरा) भृङ्गारः = कनकालुकः (स्वर्णजलपात्र) । इदम् = एतत् । पानपात्रम् = पान-भाजनम् (पीने का वर्तन—लोटा आदि) ।

युधिष्ठिरः—उदन्याप्रतीकारः—उदन्यायाः = पिपासायाः प्रतीकारः = उपशमः (प्यास की शान्ति) । निर्वर्त्यताम् = सम्पाद्यताम् (कर लीजिये) ।

राक्षसः—पादौ=चरणौ (दोनों पैर) प्रक्षाल्य=क्षालनं कृत्वा (धोकर) । उपस्पृशन् = आचमनं कुर्वन् (आचमन करते हुये) विचिन्त्य = विचार्य (सोच कर) । क्षत्रियः = क्षात्रः (क्षत्रिय) । मन्ये = सम्भावयामि (मानता हूँ) ।

युधिष्ठिरः—सम्यग्वेदी—सम्यक्=समीचीनम् वेत्तीति (ठीक जानने वाले) ।

राक्षसः—प्रतिदिनसुलभस्वजनविनाशनेषु—स्वजनानाम् = आत्मीयानाम् विना-शनम्=नाशः यत्र तादृशेषु (जहाँ स्वबन्धु बान्धव मारे जा चुके हैं) । सङ्ग्रामेषु= रणेषु (युद्धों में) युष्मत्तः = भवत्तः (आप लोगों से) । न देयम्=नैवादातव्यम्

कञ्चुकी—(आगे बढ़कर) महाराज ! शीतल तथा सुगन्धित जल से भरा यह स्वर्ण जलपात्र तथा यह पानपात्र (पीने का वर्तन लोटा या ग्लास) है ।

युधिष्ठिर—मुने ! प्यास शान्त कर लीजिये ।

राक्षस—(पाँव धोकर आचमन करते हुये, सोचकर) अरे अरे ! मेरी समझ से तू क्षत्रिय है ।

युधिष्ठिर—आप ठीक समझते हैं । क्षत्रिय ही हूँ ।

राक्षस—यदि ऐसा है तब तो प्रतिदिन हो रहे स्वजन विनाश वाले युद्धों में तुमसे जल आदि ग्रहण नहीं करना चाहिये । अस्तु, इस छाया से ही सरस्वती नदी की शीतल तरङ्गों वाली वायु के स्पर्श से थकावट तथा प्यास दूर कर लूँगा ।

द्रौपदी—बुद्धिमदिए ! बीएहि महेसि इमिणा तालविन्तेण [बुद्धिमतिके ! वीजय महर्षिमेतेन तालवृन्तेन ।]

(चेटी तथा करोति ।)

राक्षसः—भवति, अनुचितोऽयमस्मासु समुदाचारः ।

युधिष्ठिरः—मुने, कथय कथमेवं भवान्परिश्रान्तः ।

राक्षसः—मुनिजनसुलभेन कौतूहलेन तत्रभवता महाक्षत्रियाणां द्वन्द्व-युद्धमवलोकयितुं पर्यटामि समन्तपञ्चकम् । अद्य तु बलवत्तया शरदाऽऽतपस्याऽपर्याप्तमेवाऽवलोक्य गदायुद्धमर्जुनसुयोधनयोरागतोऽस्मि ।

(नहीं लेना चाहिये) सलिलादिकम् = जलादिकम् (जल आदि) । अनया = एतया छायया एव (इस छाँह से ही) । सरस्वतीशिशिरतरङ्गस्पृशा = सरस्वती-नामनद्याः शिशिरतरङ्गान् = शीतलोर्मीः स्पृशतीति तच्छीलस्तेन (सरस्वती के शीतल तरङ्गों के स्पर्श वाले) मरुता = पवनेन (वायु से) विगतक्लमः—विगतः = समाप्तः क्लमः = क्लान्तिर्यस्य सः (थकावट रहित) ।

द्रौपदी—बुद्धिमतिके = तन्नाम्नी चेटि (हे बुद्धिमतिके !) वीजय = व्यजनं कुरु (पंखा करो) । महर्षिम् = मुनिम् (महर्षि को) । तालवृन्तेन = तालपत्र-व्यजनेन ।

राक्षसः—भवति = देवि ! अस्मासु = मुनिजनेषु (हम पर) समुदाचारः = शिष्टाचारः । अनुचितः = अनुपयुक्तः ।

युधिष्ठिरः—परिश्रान्तः = क्लान्तः (थके हैं) ।

राक्षसः—मुनिजनसुलभेन = महर्षिजन-सुप्राप्येन । कौतूहलेन = आश्चर्येण । द्वन्द्वयुद्धम् = युगल-रणम् (एक के साथ एक का लड़ना) । अवलोकयितुम् = द्रष्टुम् (देखने को) । पर्यटामि = भ्रमामि (घूम रहा हूँ) । बलवत्तया = आधिक्यतया (अधिकता से) । शरदातपस्य—शरदस्य = शरदृतोः आतपम् = उष्णत्वम्,

---

द्रौपदी—बुद्धिमतिके ! इस ताल पत्र से महर्षि के ऊपर पंखा झल ।

(चेटी वैसा करती है ।)

राक्षस—देवि ! हम मुनिजनों पर स्त्रियों द्वारा सेवा सुश्रूषा करना अनुचित है ।

युधिष्ठिर—हे मुने ! बतलाइये, आप थके कैसे हैं ?

राक्षस—मुनिजन सुलभ कौतूहल से आप महाक्षत्रियों का द्वन्द्व युद्ध देखने के लिए मैं समन्तपञ्चक क्षेत्र में घूम रहा था । आज तो शरद ऋतु के आतप से थोड़ा ही अर्जुन-सुयोधन का गदा युद्ध देखकर आया हूँ ।

(सर्वे विषादं नाटयन्ति ।)

कञ्चुकी—मुने, न खल्वेवम् । भीमसुयोधनयोरिति कथय ।

राक्षसः—आः ! अविदितवृत्तान्त एव कथं मामाक्षिपसि ।

युधिष्ठिरः—महर्षे ! कथय कथय ।

राक्षसः—क्षणमात्रं विश्रम्य सर्वं कथयामि भवतः न पुनरस्य वृद्धस्य ।

युधिष्ठिरः—भगवान् ! एतावदेव कथय—किमर्जुनसुयोधनयोरिति ।

राक्षसः—पूर्वमेव कथितं मया—प्रवृत्तं गदायुद्धमर्जुनसुयोधनयोरिति ।

युधिष्ठिरः—न भीमसुयोधनयोरिति ।

तस्य (शरद की गर्मी की) अपर्याप्तम् = अल्पम् एव (थोड़ा ही) । अवलोक्य = दृष्ट्वा (देखकर) । आगतः अस्मि = आयातः अस्मि (आ रहा हूँ) ।

विषादम् = खेदम् (दुःख को) नाटयन्ति = अभिनयन्ति (अभिनय करते हैं) ।

कञ्चुकी—एवम् = इत्थम् (अर्जुनसुयोधनयोः गदायुद्धं नास्ति) । भीमसुयोधनयोः = वृकोदरदुर्योधनयोः । कथय = भण (कहो) ।

राक्षसः—अविदितवृत्तान्तः—न विदितम् = अज्ञातम् वृतान्तम् येन सः (समाचार न जान कर) माम् = मुनिम् । कथम् आक्षिपसि = आक्षेपं कथं करोषि (कैसे आक्षेप कर रहा है) ।

राक्षसः—क्षणमात्रम् = निमिषमात्रम् (थोड़ी देर) विश्रम्य = विश्रामं कृत्वा (विश्राम करके) भवतः = श्रीमतः (आपको) । अस्य वृद्धस्य न = एतस्य जरठस्य न कथयामि (इस बूढ़े को नहीं कहूँगा) ।

राक्षसः—पूर्वम् एव = प्राग् एव (पहले ही) कथितम् = उक्तम् (कहा) प्रवृत्तम् = प्रारम्भम् (आरम्भ हुआ) ।

(सब लोग विषाद का अभिनय करते हैं)

कञ्चुकी—हे मुने ! वास्तव में ऐसा नहीं है । भीम तथा सुयोधन का कहो ।

राक्षस—अरे ! समाचार न जानने वाला तू इस प्रकार मुझे झूठ कहने का दोष क्यों दे रहा है ।

युधिष्ठिर—महर्षे ! कहिये, कहिये ।

राक्षस—क्षणमात्र विश्राम कर आपको सब कुछ बतलाता हूँ । इस वृद्ध को नहीं बतलाऊँगा ।

युधिष्ठिर—भगवन् ! यह ही कहिये—'क्या अर्जुन तथा सुयोधन में— ?'

राक्षस—पहले ही मैंने कहा—अर्जुन तथा सुयोधन में गदा-युद्ध आरम्भ हुआ ।

युधिष्ठिर—भीम तथा सुयोधन में नहीं हुआ ?

राक्षसः—वृत्तं तत् ।

(युधिष्ठिरो द्रौपदी च मोहमुपगतौ)

कञ्चुकी—(सलिलेनाऽभिषिच्य) समाश्वसितु देवो देवी च ।

चेटी—(देवीं प्रति) समस्ससदु समस्ससदु देवी । [समाश्वसितु समाश्वसितु देवी ।]

(उभौ संज्ञां लभेते)

युधिष्ठिरः—किं कथयसि मुने ! वृत्तं भीमसुयोधनयोर्गदायुद्धमिति ?

द्रौपदी—भअवं ! कहेहि, कहेहि; किं वृत्तं त्ति । [भगवान् ! कथय कथय किं वृत्तमिति ।]

राक्षसः—कञ्चुकिन् ! कौ पुनरेतौ ?

कञ्चुकी—एष देवो युधिष्ठिरः । इयमपि पाञ्चालतनया ।

राक्षसः—वृत्तम् = समाप्तम् तत् = भीमसुयोधनयोः गदायुद्धम् (वह समाप्त हो गया) ।

मोहमुपगतौ = मूर्च्छितौ अभवताम् (वेहोश हो जाते हैं) ।

कञ्चुकी—समाश्वसितु = धैर्यं धारयतु (धीरज रखो) ।

उभौ = युधिष्ठिरो द्रौपदी च ।

युधिष्ठिरः—वृत्तम् = समाप्तम् (समाप्त हो गया) ।

द्रौपदीः—किंवृत्तम् = कः समाचारः (क्या समाप्त हुआ) ।

राक्षसः—एतौ = इमौ (युधिष्ठिरं द्रौपदीश्चाभिलक्ष्य) ।

कञ्चुकी—एषः = अयम् (यह) युधिष्ठिरः = ज्येष्ठपाण्डवः । इयम् = एषा । पाञ्चालतनया = द्रौपदी ।

राक्षस—वह तो हो गया ।

(युधिष्ठिर तथा द्रौपदी बेहोश हो जाते हैं ।)

कञ्चुकी—(जल से छिड़ककर) महाराज तथा महारानी धैर्य धारण करें ।

चेटी—(द्रौपदी से) देवी धीरज रखें, धीरज रखें ।

(दोनों होश में आ जाते हैं)

युधिष्ठिर—हे मुने । क्या कह रहे हो ? भीम तथा सुयोधन में गदा-युद्ध हो चुका ?

द्रौपदी—भगवन् ! कहिये, कहिये—क्या हो चुका ?

राक्षस—हे कञ्चुकी ! यह दोनों कौन हैं ?

कञ्चुकी—यह महाराज युधिष्ठिर हैं । यह भी पाञ्चालपुत्री द्रौपदी हैं ।

राक्षसः—आः ! दारुणमुपक्रान्तं मया नृशंसेन ।

द्रौपदीः—हा णाह भीमसेण ! (इति मोहमुपगता ।) [हा नाथ भीमसेन !]

कञ्चुकी—किं नाम कथितम् ?

चेटी—समस्ससदु समस्ससदु देवी । [समाश्वसितु समाश्वसितु देवी ।]

युधिष्ठिरः—(सास्रम् ।) ब्रह्मन् !

पदे सन्दिग्ध एवास्मिन्दुःखमास्ते युधिष्ठिरः ।
वत्सस्य निश्चिते तत्त्वे प्राणत्यागादयं सुखी ॥ १४ ॥

राक्षसः—नृशंसेन = क्रूरेण मया (मुझ निर्दय ने) दारुणम् = दुःखदम् (दारुण) उपक्रान्तम् = प्रारब्धम् (कहना आरम्भ किया) ।

द्रौपदी—हा नाथ = हा स्वामिन् ! भीमसेन (हा नाथ वृकोदर) ।

कञ्चुकी—किं नाम कथितम् = भवता किं भणितम् (आपने क्या कहा ?)

चेटी—देवी = द्रौपदी ।

युधिष्ठिरः—ब्रह्मन् = हे तपस्विन् ।

अन्वयः—सन्दिग्ध एव अस्मिन् पदे युधिष्ठिरः दुःखम् आस्ते । वत्सस्य तत्त्वे निश्चिते (सति) अयं प्राणत्यागात् सुखी (भविष्यति) ॥ १४ ॥

पद इति । सन्दिग्ध एव = सन्देहयुक्त एव पदे = शब्दे (सन्दिग्ध पद में ही) युधिष्ठिरः = अयं ज्येष्ठपाण्डवोऽहम् (यह युधिष्ठिर) दुःखम् = पीडाम् आस्ते = वर्तते (दुःखी हैं) । वत्सस्य = भ्रातुर्भीमसेनस्य (भाई भीम के) तत्त्वे = जीवनाभावरूप तथ्ये । निश्चिते = निर्णीते सति (जीवनाभावरूपी तत्त्व के निर्णीत हो जाने पर) अयम् = युधिष्ठिरः (यह) प्राणत्यागात् = जीवननाशात् सुखी = सन्तुष्टः (भविष्यतीति) । अभीमे नाहं जीवितुं शक्त इत्याशयः । पथ्यावक्त्रं वृत्तम् ॥ १४ ॥

राक्षस—हाय ! मुझ निर्दय ने बड़ा दुःखद वृत्त कहना आरम्भ कर दिया ।

द्रौपदी—हा नाथ भीमसेन ! (यह कहकर मूर्च्छित हो जाती है ।)

कञ्चुकी—आपने क्या कहा ?

चेटी—देवी जी धीरज रखें, धीरज रखें ।

युधिष्ठिर—(रोते हुए) हे तपस्वी जी !

इस सन्दिग्ध पद को कहने पर तो युधिष्ठिर (मैं) दुःखी हूँ, वत्स भीम के न होने की बात निश्चित होने पर तो यह मैं प्राण देकर ही सुखी हो सकूँगा, बिना उसके जीवित न रह पाऊँगा ॥ १४ ॥

राक्षसः—(सानन्दमात्मगतम् ।) अयमेव मे यत्नः । (प्रकाशम् ।) यदि त्ववश्यं कथनीयं, तदा संक्षेपेतः कथयामि, न युक्तं बन्धुव्यसनं विस्तरेण वेदयितुम् ।

युधिष्ठिरः—(अश्रूणि मुञ्चन् ।)

सर्वथा कथय ब्रह्मन्संक्षेपाद्विस्तरेण वा ।
वत्सस्य किमपि श्रोतुमेष दत्तः क्षणो मया ॥ १५ ॥

राक्षसः—श्रूयताम् ।

तस्मिन्कौरवभीमयोर्गुरुगदाघोरध्वनौ संयुगे,

राक्षसः—सानन्दम् = सहर्षम् (प्रसन्न होकर) । मे=मम राक्षसस्य (मेरा) यत्नः = प्रयासः । कथनीयम् = वर्णनीयम् (कहना चाहिये) । तदा = तर्हि (तो) । संक्षेपतः = संक्षेपेण (संक्षेप से) । कथयामि = वदामि (कहता हूँ) । विस्तरेण = विस्तृतवर्णनेन । आवेदयितुम् = कथयितुम् (कहने को) युक्तं न = नोचितमस्ति (ठीक नहीं है) । बन्धुव्यसनम् = भ्रातृनाशम् (भाइयों के नाश को) ।

युधिष्ठिरः—अश्रूणि मुञ्चन् = रुदन् (रोते हुये) ।

अन्वयः—हे ब्रह्मन् ! सर्वथा संक्षेपात् विस्तरेण वा कथय । वत्सस्य किम् अपि श्रोतुम् एषः मया क्षणः दत्तः ॥ १५ ॥

सर्वथेति । ब्रह्मन् = हे तपस्विन् ! सर्वथा = सर्वप्रकारेण । संक्षेपात् = संक्षिप्त-रूपात् (संक्षेप से) वा = अथवा । विस्तरेण = विस्तारपूर्वकम् । कथय = वद (कहो) । वत्सस्य = प्रियभीमस्य (वत्स भीम का) किमपि = यत्किञ्चिदपि (जो कुछ हो, वह सब) । श्रोतुम्=आकर्णितुम् (सुनने के लिये) एष = अयम् । मया = युधिष्ठिरेण (मैंने) क्षणः=अवसरः । दत्तः=अदीयत (दिया) ॥ १५ ॥

अन्वयः—कौरवभीमयोः तस्मिन् गुरुगदाघोरध्वनौ संयुगे ।

तस्मिन्निति । कौरवभीमयोः = सुयोधन-वृकोदरयोः (भीम तथा दुर्योधन

राक्षस—(आनन्द से, मन ही मन) यही मेरा प्रयत्न था । (प्रकट रूप में) यदि ऐसा है तब तो अवश्य कहना चाहिये । अतः संक्षेप से कह रहा हूँ । बन्धुनाश को विस्तार से कहना ठीक नहीं है ।

युधिष्ठिर—(आँसू बहाते हुये) ब्रह्मन् ! संक्षेप से अथवा विस्तार से कैसे भी कहिये मैं वत्स भीम का जो कुछ भी (भला या बुरा) है, उसे सुनने के लिये तैयार हूँ ॥ १५ ॥

राक्षस—सुनिये—कौरवराज तथा भीम दोनों के भीषण गदायुद्ध शब्द वाले उस संग्राम के होने पर…… ।

द्रौपदी—(सहसोत्थाय ।) तदो तदो । [ततस्ततः ।]

राक्षसः—(स्वगतम्) कथं पुनरनयोर्लब्धसंज्ञतामपनयामि ।

(प्रकाशम्)

सीरी सत्वरमागतश्चिरमभूत्तस्याग्रतः सङ्गरः ।
आलम्ब्य प्रियशिष्यतां तु हलिना संज्ञा रहस्याहिता
यामासाद्य कुरूत्तमः प्रतिकृतिं दुःशासनारौ गतः ।। १६ ।।

के) गुरुगदाघोरध्वनौ—गुर्वी = महती या गदा, तस्याः घोरध्वनिः = भयङ्कर-शब्दः यत्र तादृशे (गरुई गदा के भयङ्कर शब्द वाले) संयुगे = युद्धे (सति) (युद्ध होने पर) ।

द्रौपदी—सहसा = सम्भ्रमेण । ततः = तदनन्तरं किमभवत् ?

राक्षसः—अनयोः = द्रौपदी-युधिष्ठिरयोः (इन दोनों की) लब्धसंज्ञताम् = प्राप्त-चैतन्यताम् (प्राप्त चैतन्यता को) । अपनयामि = नाशयामि (नष्ट कर रहा हूँ) ।

अन्वयः—सीरी सत्वरम् आगतः । तस्य अग्रतः चिरं सङ्गरः अभूत् । हलिना तु प्रियशिष्यताम् आलम्ब्य रहसि संज्ञा आहिता, याम् आसाद्य कुरूत्तमः दुःशासनारौ प्रतिकृतिं गतः ।। १६ ।।

सीरीति । सीरी—सीरम् = हलम् यस्यायुधमिति सः = बलरामः । सत्वरम् = शीघ्रम् । आगतः = आयातः (आ गये) । तस्य = बलरामस्य (उनके) अग्रतः = समक्षम् (सामने) चिरम् = बहुकालं यावत् (बहुत देर तक) सङ्गरः = संग्रामः (युद्धः) । अभूत् = अभवत् (हुआ) । हलिना = सीरिणा (बलराम ने) । प्रियशिष्यताम् = प्रियस्य शिष्यस्य भावः प्रियशिष्यता ताम् (प्रियशिष्यभाव को) आलम्ब्य = स्वीकृत्य (सहारा लेकर) रहसि = एकान्ते (एकान्त में) संज्ञा = संकेतः अहिताः = निर्दिष्टा (इशारा किया) । याम् = संज्ञाम् आसाद्य = प्राप्य (संकेत पाकर) । कुरूत्तमः = कुरुपतिः (दुर्योधन) । दुःशासनारौ—दुःशासनस्य शत्रौ, भीमसेने (दुःशासन के शत्रु भीम पर) प्रतिकृतिम् = प्रतीकारम्

द्रौपदी—(सहसा उठकर) तब क्या हुआ, तब क्या हुआ ?

राक्षस—(मन ही मन) इन दोनों की चैतन्यता पुनः कैसे दूर की जाय ?

(प्रकट रूप में) बलराम शीघ्र ही आ गये । उन (बलराम) के समक्ष बहुत समय तक उनका युद्ध होता रहा । तब बलराम ने प्रियशिष्य होने के नाते दुर्योधन को एकान्त में संकेत किया तथा उस संकेत को पाकर कुरुपति दुर्योधन ने दुःशासन शत्रु भीम से बदला ले लिया । अर्थात् भीमसेन का वध कर डाला ।। १६ ।।

युधिष्ठिरः—हा वत्स, वृकोदर ! (इति मोहमुपगतः ।)

द्रौपदी—हा णाह भीमसेण ! हा मह परिभवपडीआरपरिच्चत्तजीविअ ! जडासुर-बअ-हिडिम्ब-किम्मीर-कीचअ-जरासंध-णिसूदण ! सोअन्धिआहरण-चाडुआर ! देहि मे पडिवअणम् । (इति मोहमुपगता ।) [हा नाथ भीमसेन ! हा मम परिभवप्रतीकारपरित्यक्तजीवित ! जटासुर-बक-हिडिम्ब-किर्मीर-कीचक-जरासन्ध-निषूदन ! सौगन्धिकाहरण-चाटुकार ! देहि मे प्रतिवचनम् ।]

कञ्चुकी—(सास्रम्) हा कुमार भीमसेन ! धार्तराष्ट्रकुलकमलिनीप्रालेयवर्ष ! (ससम्भ्रमम्) समाश्वसितु महाराजः । भद्रे ! समाश्वासय स्वामिनीम् । महर्षे ! त्वमपि तावदाश्वासय राजानम् ।

गतः = प्राप्तः (बदला लिया) । (तस्य वधं कृतवानितिभावः ।) शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम् ॥ १६ ॥

युधिष्ठिरः—हा वत्स वृकोदर ! = हा भ्रातः भीमसेन । मोहम् = मूर्च्छाम् । गतः = प्राप्तः (वेहोश हो गये) ।

द्रौपदी—मम = मे द्रौपद्याः (मेरे) । परिभवप्रतीकारपरित्यक्तजीवित !—परिभवस्य = तिरस्कारस्य प्रतीकाराय = प्रतिकृत्यै परित्यक्तम् = विमुक्तम् जीवितम् = जीवनम् येन सः तत्सम्बुद्धौ (मेरे तिरस्कार का बदला लेने के लिए अपने प्राण दे देने वाले) । निषूदन ! = संहारक ! सौगन्धिकाहरणचाटुकार !—सौगन्धिकम् = गन्धमादनपर्वतभवं स्वर्णकल्हारम् तस्याहरणे = आनयने चाटुकारः = प्रियकरस्तत्सम्बुद्धौ (हे गन्धमादन पर्वत के स्वर्णकल्हार को लाकर प्रिय करने वाले) । मे = मह्यम् (मुझे) प्रतिवचनम् = प्रत्युत्तरम् । देहि = प्रयच्छ ।

कञ्चुकी—सास्रम् = रुदन् (रोते हुये) । धार्तराष्ट्रकुलकमलिनीप्रालेयवर्ष !—धार्त्तराष्ट्राणाम् = दुर्योधनादीनाम् कुलमेव कमलिनी = कमललता, तस्याम्

युधिष्ठिर—हा वत्स वृकोदर ! (यह कहकर मूर्च्छित हो जाते हैं ।)

द्रौपदी—हा नाथ भीमसेन ! हा मेरे तिरस्कार का बदला लेने के लिये अपने प्राण दे देने वाले ! हा जटासुर, बक, हिडिम्ब, किर्मीर कीचक तथा जरासन्ध का नाश करने वाले ! हा गन्धमादन पर्वतपर होने वाले स्वर्णकमल को लाकर मुझे प्रसन्न करने वाले ! मुझे प्रत्युत्तर दीजिये । (यह कहकर मूर्च्छित हो जाती है ।)

कञ्चुकी—(आँसू बहाता हुआ) हा कुमार भीमसेन ! धार्तराष्ट्र कुलकमलिनी पर पाले का वर्षा जैसे विनाशक ! (घबराकर) महाराज ! धैर्य रखिये ! भद्रे ! महारानी को धैर्य दिलाइये । हे मुने ! आप भी महाराज को धीरज बँधायें ।

राक्षसः—(स्वगतम् ।) आश्वासयामि प्राणान्परित्याजयितुम् । (प्रकाशम्) अयि भो भीमाग्रज ! क्षणमेकं चीयतां समाश्वासः । कथाऽवशेषोऽस्ति ।

युधिष्ठिरः—(समाश्वस्य) महर्षे ! किमस्ति कथाशेषः ?

द्रौपदी—(प्रतिबुद्धा ।) भअवं ! कहेहि, कीदिसो कहासेसो त्ति ? [भगवन् ! कथय कीदृशः कथाशेष इति ।]

कञ्चुकी—कथय कथय ।

चेटी—कहेहि कहेहि । [कथय कथय ।]

राक्षसः—ततश्च हते तस्मिन्सुक्षत्रिये वीरसुलभां गतिमुगते समग्रसंगलितं

प्रालेयवर्षः = हिमवर्षणसमः यस्तत्सम्बुद्धौ (धार्तराष्ट्र कुल-कमलिनी पर पाले के समान)। स्वामिनीम् = महाराज्ञीं द्रौपदीम् (महारानी को) समाश्वासय = धैर्यं धारय (धीरज बँधाइये)। राजानम् = युधिष्ठिरम् (महाराज को)।

राक्षसः—प्राणान् = जीवान् (जीव को)। परित्याजयितुम् = परित्यागं कारयितुम् (परित्याग कराने के लिए)। आश्वासयामि = धैर्यं धारयामि (ढाढस बँधाता हूँ)। भीमाग्रज—भीमस्य अजग्रः = ज्येष्ठभ्राता, तत्सम्बुद्धौ = भो युधिष्ठिर ! क्षणमेकम् = क्षणमात्रम् (थोड़ी देर)। चीयताम् = आधीयताम् (धारण कीजिये)। कथाशेषः—कथायाः = वार्तायाः शेषः = अवशेषः (कथा का शेष)।

युधिष्ठिरः—समाश्वस्य = धैर्यं धृत्वा (धैर्य बाँधकर)।

द्रौपदी—प्रतिबुध्वा = संज्ञायामागत्य (होश में आकर)। भगवन् = तपस्विन् ! कथय = वद (कहो)।

राक्षसः—ततः = तदनन्तरम् (तत्पश्चात्) सुक्षत्रिये = वीरे भीमसेने । हते = मारिते (मारे जाने पर)। वीरसुलमाम्—वीराणां सुलमा ताम् = वीरोचिताम् ।

राक्षस—(मन ही मन) प्राणत्याग कराने के लिए धीरज बँधाता हूँ। (प्रकट रूप में) अरे ओ भीम के बड़े भाई युधिष्ठिर ! क्षण भर को धीरज रखिये, अभी कुछ कथा शेष है ।

युधिष्ठिर—(धैर्य रखकर) महर्षे ! कथा शेष क्या है ?

द्रौपदी—(होश में आकर) भगवन् ! कहिये, कैसी कथा शेष है ?

कञ्चुकी—कहिये, कहिये ।

चेटी—कहिये, कहिये ।

राक्षस—तदनन्तर उस वीर के मारे जाने तथा वीरोचित गति प्राप्त कर लेने पर

भ्रातृवधशोकजं बाष्पं प्रमृज्य भ्रातृवधशोकादपहाय गाण्डीवं प्रत्यग्रक्षतजच्छटार्चचितां तामेव गदां भ्रातृहस्ताद् यत्नादाकृष्य निवार्यमाणोऽपि संधित्सुना भगवता वासुदेवेन, 'आगच्छाऽऽगच्छे'ति सोपहासं भ्रमितगदाझङ्कारमूर्च्छितगम्भीरवचनध्वनिनाऽऽहूयमानः कौरवराजेन तृतीयोऽनुजस्ते किरीटी योद्धुमारब्धः। अकृतिनस्तस्य गदाऽऽघातान्निधनमुत्प्रेक्षमाणेन कामपालेनाऽर्जुनपक्षपाती देवकीसूनुरतिप्रयत्नात् स्वरथमारोप्य द्वारकां नीतः।

गतिम् = अवस्थाम्। उपगते = प्राप्ते (वीरोचित दशा प्राप्त कर लेने पर) समग्रसंगलितम्—समग्रम् = सम्पूर्णम् संगलितम् = परिपतितम् (सम्पूर्ण पिघल उठे)। भ्रातृवधशोकजम्—भ्रातुः = अनुजस्य भीमस्य वधेन = घातेन जातः शोकः = दुःखम् तस्माज्जातम् (भाई बध से उत्पन्न शोक से बहने वाले) बाष्पम् = अश्रूणि प्रमृज्य = प्रोञ्छ्य (पोंछकर) गाण्डीवम् = स्वधनुः। अपहाय = विहाय (छोड़कर) प्रत्यग्रक्षतजच्छटार्चचिताम्—प्रत्यग्रम् = सद्यः निःसृतम् यत् क्षतजम् = रुधिरम्, तस्य च्छटया = शोभया चर्चिताम् = लिप्ताम् (ताजे निकले खून की छटा से लिप्त सने)। ताम् = भीमसम्बन्धिनीम् एव गदाम् (उसी गदा को) भ्रातृहस्तात्—भ्रातुः = भीमस्य हस्तात् = करात् (भाई के हाथ से) यत्नात् = प्रयत्नात् (यत्न से) आकृष्य = कृष्ट्वा (खींचकर) निवार्यमाणः अपि = प्रतिषेधित अपि (मना किये जाते हुये भी) सन्धित्सुना = सन्धातुमिच्छुना (सन्धि करने के इच्छुक)। भगवता वासुदेवेन = देवेन कृष्णेन (भगवान् वासुदेव ने)। आगच्छ = एहि (आओ) इति = इत्थम् (इस प्रकार)। सोपहासम्—उपहासेन सहितम् = सहेलम् (उपहास करते हुए)। भ्रमितगदाझङ्कारमूर्च्छितगम्भीरवचनध्वनिना—भ्रमितायाः = चक्रमितायाः गदायाः झङ्कारेण = झङ्कारध्वनिना मूर्च्छितम् = विसंज्ञितम् अस्पष्टम् वा यद् गम्भीरम् वचनम् = वाक्यम् तस्य ध्वनिना = रवेण

समस्त पिघले भ्रातृवध शोक से उत्पन्न आँसुओं को पोंछ कर भ्रातृवध शोक से गांडीव को त्याग कर ताजे बह रहे रुधिर की छटा से चर्चित (सनी) उसी गदा को भाई (भीम) के हाथ से खींचकर सन्धि के इच्छुक भगवान् वासुदेव के द्वारा मना किये जाने पर भी आजा, आजा, इस प्रकार उपहास कर रहे, घुमाई गई गदा की झंकार से अस्पष्ट गम्भीर वचनों की आवाज से कौरवराज द्वारा पुकारे जाने पर तुम्हारे तीसरे अनुज किरीटी (अर्जुन) ने लड़ना प्रारम्भ किया। तथा गदायुद्ध में अकुशल उस किरीटी का गदाघात से निधन चाह रहे कामपाल बलराम अर्जुन के पक्षपाती देवकीनन्दन को अत्यन्त प्रयत्न करके (बड़ी कठिनाई से) अपने रथ पर बैठा कर द्वारकापुरी ले गये।

युधिष्ठिरः—साधु ! भो अर्जुन ! तदैव प्रतिपन्ना वृकोदरपदवी गाण्डीवं परित्यजता । अहं पुनः केनोपायेन प्राणाऽपगमनमहोत्सवमुत्सहिष्ये ।

द्रौपदी—हा णाह भीमसेण ! ण जुत्तं दाणीं दे कणीअसं भादरं असिक्खिदं गदाये, दारुणस्स, सत्तुणो अहिमुहं गच्छन्तं उवक्खिदुम् । (इति मोहमुपगता ।) [हा नाथ भीमसेन ! न युक्तमिदानीं ते कनीयांसं भ्रातरमशिक्षितं गदायां, दारुणस्य शत्रोरभिमुखं गच्छन्तमुपेक्षितुम् ।]

(घुमाई गई गदा की झङ्कारध्वनि से अस्पष्ट गम्भीर वचन वाली ध्वनि से) आहूयमानः = कथ्यमानः (पुकारे गये) ते = तव (तुम्हारे) तृतीयानुजः = तृतीयः लघुभ्रातः किरीटी = अर्जुनः (तुम्हारे तीसरे अनुज अर्जुन) कौरवराजेन = सुयोधनेन सह (कौरवराज के साथ) योद्धुम् = युद्धं कर्त्तुम् आरब्धः = प्रारब्धः (आरम्भ किया) । अकृतिनः = अकुशलस्य (गदा युद्ध में अकुशल) तस्य = अर्जुनस्य गदाघातात् = गदाप्रहारात् (गदाघात से) निधनम् = मृत्युम् (निधन) । अपेक्षमाणेन = अभिलषता (चाह रहे) । कामपालेन = बलरामेण (हली ने) ('कामपालो हलायुधः' इत्यमरः) । देवकीसूनुः = वासुदेवः । अतिप्रयत्नात् = बहुप्रयासात् (अत्यन्त प्रयत्न से) रथम् = स्यन्दनम् आरोप्य = स्थाप्य (रथपर बैठा कर) द्वारकाम् = द्वारकापुरीम् (द्वारकापुरी को) नीतः = प्रापितः (ले गये) ।

युधिष्ठिरः—तदा = तस्मिन् काल एव (तभी) गाण्डीवम् = गाण्डीवधनुः । परित्यजता = मुञ्चता (छोड़ते हुये) त्वया वृकोदरपदवी = भीमसेनपद्धतिः (भीमसेन का मार्ग) प्रतिपन्ना = अङ्गीकृता (अङ्गीकार की) । प्राणापगमनमहोत्सवम्—प्राणानाम् अपगमनरूपो यो महोत्सवस्तम् = जीवनत्यागमहोत्सवम् (प्राणत्यागरूपी महान उत्सव को) । उत्सहिष्ये = उत्साहं करिष्ये (उत्साह करूँगा) ।

द्रौपदी—न युक्तम् = नोचितम् (ठीक नहीं है) । इदनीम् = साम्प्रतम् (अब) । ते = तव (तुम्हारे) कनीयांसम् = कनिष्ठम् भ्रातरम् = बन्धुम् ।

युधिष्ठिर—धन्य है अर्जुन ! उसी समय गाण्डीव का परित्याग करते हुये तुमने वृकोदर के मार्ग का अनुसरण किया । प्राणत्याग रूपी महोत्सव को मैं अब किस उपाय से सहन करूँगा ।

द्रौपदी—हा नाथ भीमसेन ! गदा युद्ध में अकुशल अपने छोटे भाई की दारुण शत्रु के सम्मुख जाने को अब उपेक्षा करना उचित नहीं है । (यह कहकर मूर्च्छित हो जाती है ।)

राक्षसः—ततश्चाहम्...

युधिष्ठिरः—भवतु मुने ! किमतः परं श्रुतेन। हा तात ! कान्तारव्यसनवान्धव ! हा मच्छरीरस्थितिविच्छेदकातर ! जतुगृहविपत्समुद्रतरणयानपात्र ! हा किर्मीरहिडिम्बाऽसुरजरासन्धविजयमल्ल ! हा कीचकसुयोधनाऽनुजशतकमलिनीकुञ्जर ! हा द्यूतपणप्रणयिन् ! हा मदाज्ञासम्पादक ! हा कौरववनदावानल !

अशिक्षितम् = अकुशलम्। दारुणस्य = भीषणस्य। शत्रोः = रिपोः अभिमुखम् = (भयंकर रिपु के सामने) गच्छन्तम् = प्रयान्तम् (जाते हुये)। उपेक्षितुम् = उपेक्षां कर्त्तुम् (उपेक्षा करने को)।

युधिष्ठिरः—अतः परम्=अस्माद् अधिकम् (इससे बढ़कर) श्रुतेन=आकर्णनेन। कान्तारव्यसनबान्धव—कान्तारे = वने यानि व्यसनानि = दुःखानि तेषु वान्धवः = सहायकः तत्सम्बुद्धौ (हे वन में दुःखों में सहायता करने वाले) मच्छरीरस्थितिविच्छेदकातर—मम = मे शरीरस्थितेः = देहदशायाः विच्छेदः = विनाशः, तस्मात् कातरः = दुःखी, तत् सम्बुद्धौ (हे मेरी शरीरस्थिति के विच्छेदक से दुःखी रहने वाले) जतुगृहविपतिसमुद्रतरणयानपात्र—जतुगृहरूपा = लाक्षागृहरूपा या विपत् सैवः समुद्रः, तस्य तरणे = पारगमने यानपात्रम् = पोतः, तत्सम्बुद्धौ (हे जतुगृहरूपी विपत्तिसागर को पार करने के पोत !) ('यानपात्रं तु पोतः' इत्यमरः)। कीचकसुयोधनानुजशतकमलिनीकुञ्जर—कीचकः = द्रुपदराजश्यालकः, सुयोधनानुजशतञ्च त एव कमलिनी = कमललता तस्यैः कुञ्जरः = हस्ती तत्सम्बुद्धौ (हा कीचक तथा दुर्योधन के सौ भाईरूपी कमलिनी के लिये हाथी के समान) हा द्यूतप्रणपणयिन् !—द्यूते = द्यूतक्रीडायाम् पणे = पणस्थाने प्रणयः = प्रीतिर्यस्यास्तीति तत्सम्बुद्धौ (जुयें में शर्त पूरी करने के प्रेमी)।

राक्षस—तदनन्तर...।

युधिष्ठिर—अस्तु, मुनि जी ! इससे अधिक क्या सुनना है। हा तात ! बन में दुःखों में सहायता करने वाले ! हा मेरे शरीरस्थिति में विच्छेद की चिन्ता से आतुर ! हा लाक्षागृह रूपी सागर को पार करने में पोतसदृश ! हा किर्मीर हिडिम्बासुर तथा जरासन्ध को जीतने में वीर ! हा कीचक तथा दुर्योधन के सौ भाइयों रूपी कमलिनी के लिए मतवाले हाथी सदृश ! हा जुयें की शर्त पालन करने के प्रेमी ! हा मेरी आज्ञा पालन करने वाले ! हा कौरव रूपी वन के लिए दावानल सदृश !

निर्लज्जस्य दुरोदरव्यसनिनो वत्स ! त्वया सीदता
भक्त्या मे समदद्विपाऽयुतबलेनाङ्गीकृता दासता ।
किं नामाऽपकृतं मया तदधिकं येनाद्य दूरं गतः
त्यक्त्वाऽनाथमबान्धवं सपदि मां प्रीतिः क्व ते साऽधुना ॥ १७ ॥

द्रौपदी—(संज्ञामुपलभ्योत्थाय च ।) महाराज किं एदं वट्टइ । [महाराज ! किमेतद्वर्तते ।]

अन्वयः—वत्स ! दुरोदरव्यसनिनः मे निर्लज्जस्य भक्त्या सीदता समदद्विपायुतबलेन त्वया दासता अङ्गीकृता । मया अद्य तदधिकं किं नाम अपकृतं येन अनाथम् अबान्धवम् माम् सपदि त्यक्त्वा दूरं गतः (असि) । सा ते प्रीतिः अधुना क्व (गता) ॥ १७ ॥

निर्लज्जस्येति । वत्स = भ्रातः । दुरोदरव्यसनिनः—दुष्टमुदरं यस्य तत् दुरोदरम् = द्यूतम् ('पणे द्यूते दुरोदरम्' इत्यमरः) यद्व्यसनं = आसक्तिः यस्य तस्य (जुये के व्यसनी) मे = मम युधिष्ठिरस्य । निर्लज्जस्य = त्रपाशून्यस्य (निर्लज्ज की) भक्त्या = प्रेम्णा (भक्ति से) सीदता = क्लिश्यता (दुःखी) समदद्विपायुतबलेन—समदाः = मदयुक्ताः ये द्विपाः = गजाः तेषामयुतस्य = दशसहस्रस्य बलम् = शक्तिः यस्य सः तेन (मदयुक्त दस हजार हाथियों के बल वाले) त्वया = भीमसेनेन (तुमने) दासता = दासभावः । अङ्गीकृता = स्वीकृता मया = युधिष्ठिरेण (मैंने) अद्य = अस्मिन् दिने (आज) तदधिकम् तस्मात् अधिकम् (उससे अधिक) किं नाम अपकृतम् = विरुद्धमाचरितम् (और अधिक क्या अपकार किया) । येन=येन कारणेन (जिससे) । अनाथम् = आश्रयहीनम् । अबान्धवम् = बन्धुहीनम् । माम् = युधिष्ठिरम् (मुझे) सपदि = शीघ्रम्(शीघ्र) त्यक्त्वा = परित्यज्य (छोड़कर) दूरं गतः = दूरं प्रस्थितः असि (दूर चले गये हो)। सा = ईदृशी ते प्रीतिः = भक्ति अधुना = साम्प्रतम् (अब) क्व = कुत्र गतेति । अत्र परिकरालङ्कारः । शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम् ॥ १७ ॥

द्रौपदी—संज्ञाम् = चेतनाम् । उपलभ्य = प्राप्य (होश में आकर) एतत् = इदम् (यह) किं वर्तते = किमस्ति (यह क्या है) ?

वत्स भीम ! जुयें के व्यसनी मुझ निर्लज्ज की भक्ति से व्याकुल मत्त दशसहस्र हाथियों का बल रखने वाले तुमने दासता स्वीकार कर ली थी मैंने आज उससे बढ़कर तुम्हारा कौन सा अपराध कर डाला था जिसके कारण अनाथ बन्धुरहित मुझे शीघ्र अकेला छोड़ कर दूर चले गये हो ? तुम्हारा वह प्रेम अब कहाँ चला गया ? ॥ १७ ॥

द्रौपदी—(होश में आकर तथा उठकर) महाराज ! यह क्या है ?

युधिष्ठिरः—कृष्णे ! किमन्यत् ?

स कीचकनिषूदनो बकहिडिम्बकिर्मीरहा
मन्दाऽन्धमगधाऽधिपद्विरदसंधिभेदाशनिः ।
गदापरिघशोभिना भुजयुगेन तेनान्वितः
प्रियस्तव ममाऽनुजोऽर्जुनगुरुर्गतोऽस्तं किल ॥ १८ ॥

द्रौपदी— (आकाशे दत्तदृष्टिः) णाह भीमसेण ! तुए किल मे केसा संज-

---

युधिष्ठिरः—कृष्णे = अयि द्रौपदि ! अन्यत् = अपरम् किम् (और क्या ?) ।

अन्वयः—सः कीचकनिषूदनः बकहिडिम्बकिर्मीरहा मदान्धमगधाऽधिपद्विरदसन्धिभेदाशनिः गदापरिघशोभिना तेन भुजयुगेन अन्वितः तव प्रियः मम अनुजः अर्जुनगुरुः अस्त गतः किल ॥ १८ ॥

स कीचक इति । सः = असौ (वह) कीचकनिषूदनः—कीचकं निषूदयतीति कीचकनिषूदनः = कीचकविनाशकः (कीचक का संहार करनेवाला) बकहिडिम्बकिर्मीरहा—बकम् हिडिम्बम् किर्मीरम् च हन्तीति (बक हिडिम्ब तथा किर्मीर के हन्ता) मन्दान्धमगधाधिपद्विरदसंधिभेदाशनिः—मदेन = क्षीवेन अन्धः = मूढः यो मगधाधिपः = मगधपति जरासन्धः स एव द्विरदः = मत्तगजः तस्य सन्धिभेदम् = सन्धिस्थानम् विदारणे अशनिः = वज्रः इव (मदान्ध मगधराज जरासन्धरूपी हाथी के सन्धिस्थान–जोड़–को फाड़ने में वज्र के समान) । गदापरिघशोभिना—परिघ इव, गदा तेन शोभिना (परिधा जैसी गदा से शोभित) । तेन = लोकप्रसिद्धेन भुजयुगेन = भुजद्वयेन । अन्वितः = युक्तः (प्रसिद्ध भुजाओं से युक्त) । तव = ते (तुम्हारा) प्रियः = रुचिरः । मम = मे अनुजः = कनिष्ठः भ्राता । अर्जुनगुरुः—अर्जुनाग्रजः भीमः । अस्तं गतः = समाप्तिमगात् । किल = नूनम् ! अत्रोपमालङ्कारः । पृथ्वीवृत्तम् । तद्यथा—सजौ जसयला वसुग्रह यतिश्च पृथ्वी गुरुः ॥१८॥

द्रौपदी—आकाशे = नभसि दत्तदृष्टिः = प्रक्षिप्तचक्षुः (आकाश की ओर देखते

युधिष्ठिर—कृष्णे ! और क्या ?

वह कीचक का वध करने वाले, बक, हिडिम्ब किर्मीर राक्षसों के हन्ता, मदान्ध मगधनृपति जरासन्ध रूपी हाथी का सन्धि भेद करने में वज्र के समान, गदारूपी परिघ की शोभा वाले उस प्रसिद्ध बाहुयुगल से युक्त तुम्हारे प्रिय मेरे अनुज तथा अर्जुन के अग्रज भीमसेन अस्त हो गये हैं (परलोकवासी हो गये हैं) ॥ १८ ॥

द्रौपदी—(आकाश की ओर देखते हुये) नाथ भीमसेन ! तुम्हीं ने तो मेरे बाल

मिदव्वा। ण जुत्तं वीरस्स खत्तिअस्स पडिण्णादं सिढिलेदुम्। ता पडिवालेहि मं जाव उवसप्पामि। (पुनर्मोहमुपगता।) [नाथ, भीमसेन! त्वया किल मे केशाः संयमयितव्याः। न युक्तं वीरस्य क्षत्रियस्य प्रतिज्ञातं शिथिलयितुम्। तत्प्रतिपालय मां यावदुपसर्पामि।]

युधिष्ठिरः—(आकाशे दत्तदृष्टिः।) अम्ब पृथे! श्रुतोऽयं तव पुत्रस्य समुदाचारः! मामेकमनाथं विलपन्तमुत्सृज्य क्वापि गतः। तात जरासन्धशत्रो! किं नाम वैपरीत्यमेतावता कालेनाऽल्पाऽयुषि त्वयि समालोकितं जनेन? अथवा मयैव बहूपलब्धम्।

हुये)। केशाः = कचाः (बाल) संयमितव्याः = बन्धने नीताः (बँधवाये थे)। वीरस्य = बलशालिनः (वीर का)। प्रतिज्ञातम् = प्रतिज्ञावचनम्। शिथिलयितुम् = श्लथं कर्तुम् (ढीला करनेको)। न युक्तम् = नोचितम् (ठीक नहीं है)। प्रतिपालय = रक्ष (रक्षा कीजिये)। माम् = द्रौपदीम् (मुझे)। उपसर्पामि = पार्श्वं गच्छामि (समीप चलती हूँ)।

युधिष्ठिरः—अम्ब पृथे = मातः, कुन्ति! अयम् = एषः। तव = ते। पुत्रस्य = सुतस्य। समुदाचारः = शिष्टाचारः। श्रुतः = आकर्णितः (सुन लिया)। एकम् = एकलम् (अकेला)। अनाथम् = अरक्षितम् (अनाथ)। विलपन्तम् = रुदन्तम् (रोते हुए को)। उत्सृज्य = परित्यज्य (छोड़कर)। क्वापि = कुत्रापि (कहीं) गतः = प्रस्थितः (चला गया है)! जरासन्धशत्रो = जरासन्धस्य शत्रुस्तत्सम्बुद्धौ (हे जरासन्ध के शत्रु!)। जनेन = लोकेन। एतावता कालेन = एतावता समयेन (इतने समय से)। अल्पायुषि = अल्पावस्थायाम् (थोड़ी आयु में)। त्वयि = भीमसेने (तुम पर) वैपरीत्यम् = लोकविरुद्धम्। समालोकितम् = आलोकितम् (देखा)। मया = युधिष्ठिरेण एव (मैंने ही)। बहूपलब्धम्—बहु = विपुलम् उपलब्धम् = प्राप्तम् (बहुत कुछ पा लिया)।

बाँधने थे वीर क्षत्रिय होकर आप को अपनी प्रतिज्ञा शिथिल करना ठीक नहीं है। अतः मेरी रक्षा कीजिये। तब तक मैं आ रही हूँ। (पुनः मूर्च्छित हो जाती है)।

युधिष्ठिर—(आकाश की ओर देख कर) हे माँ कुन्ति! तुमने अपने पुत्र का यह शिष्ट आचार देख लिया कि वह मुझ अकेले अनाथ को रोता बिलखता छोड़कर कहीं चला गया। हा वत्स जरासन्धशत्रु भीम! इतने ही समय में लोगों ने तुममें थोड़ी ही अवस्था में यह क्या विपरीत देख लिया। अथवा मैंने ही बहुत कुछ पा लिया।

दत्वा मे करदीकृताऽखिलनृपां यन्मेदिनीं लज्जसे,
द्यूते यच्च पणीकृतोऽपि हि मया न क्रुध्यसि प्रीयसे।
स्थित्यर्थं मम मत्स्यराजभवने प्राप्तोऽसि यत्सूदतां,
वत्सैतानि विनश्वरस्य सहसा दृष्टानि चिह्नानि ते ॥ १९ ॥

मुने ! किं कथयसि ! ('तस्मिन्कौरवभीमयोः' (६।१६) इत्यादि पठति ।)

अन्वयः—वत्स ! करदीकृताखिलनृपां मेदिनीं मे दत्वा यत् लज्जसे यत् च द्यूते मया पणीकृतः अपि न क्रुध्यसि, हि प्रीयसे। यत् मत्स्यराजभवने मम स्थित्यर्थं सूदतां प्राप्तः असि एतानि विनश्वरस्य ते चिह्नानि सहसा दृष्टानि ॥ १९ ॥

दत्वेति। वत्स = भ्रातः। करदीकृताखिलनृपाम्—करदीकृताः = वशीकृताः अखिलनृपाः = समस्तभूपाः यस्याः सा ताम् (वश में किये गये समस्तभूपालों वाली) मेदिनीम् = भूमिम् (पृथ्वी को)। मे = मह्यम् (मुझे)। दत्वा = प्रदाय (देकर)। लज्जसे = त्रपां करोषि (लज्जित हो रहे हो)। यच्च द्यूते = द्यूत-क्रीडनकाले (जुआ खेलने पर) मया = युधिष्ठिरेण (मैंने) पणीकृतः = मूल्यी-कृतः (दाँव लगा दिया)। अपि = तदर्थमपि। न क्रुध्यसि = न कुप्यसि (क्रोध नहीं कर रहे हो)। हि = यतः। प्रीयसे = प्रसन्नो भवसि (प्रसन्न होते हो)। यत् मत्स्यराजभवने—मत्स्यराजस्य = विराटनृपतेः भवने = प्रासादे (विराटराज के महल में) मम = मे (मेरी) स्थित्यर्थम् = एकान्तवाससिद्धये (एकान्तवास को सफल बनाने के लिये) सूदताम् = पाचकत्वम् प्राप्तोऽसि = गतोऽसि (रसोइया बन गये)। एतानि = इमानि (यह)। विनश्वरस्य = विनाशशीलस्य। ते = तव। चिह्नानि = लक्षणानि। सहसा = झटिति। दृष्टानि = अवलोकितानि (शीघ्र देख लिये)। शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम् ॥ १९ ॥

किं कथयसि = किं ब्रवीसि (क्या कहते हो) एतत् = एदस् (यह) एवम् = इत्थम् (ऐसा ही)।

हे वत्स ! अधीन बनाये गये समस्त राजाओं वाली पृथ्वी को मुझें सौंप कर भी तुम लज्जित ही बने रहे तथा जुआ खेलने में मैंने जो भी दाँव पर लगा दिया सके तुम क्रुद्ध नहीं हुये बल्कि प्रसन्न ही बने रहे। विराटराज के महल में जो मेरे एकान्त वास की सफलता के लिए तुम पाचक (रसोइया) भी बन गये। यह सब शीघ्र नष्ट होने वाले तुम्हारे लक्षण सहसा ही देख लिये ॥ १९ ॥

हे मुने ! क्या कहते हो—('तस्मिन्कौरवभीमयोः' (६।१६) इत्यादि पढ़ता है।)

राक्षसः—एवमेतत् ।

युधिष्ठिरः—धिगस्मद्भागधेयानि । (आकाशमवलोकयन्) भगवन्कामपाल ! कृष्णाऽग्रज ! सुभद्राभ्रातः ।

ज्ञातिप्रीतिर्मनसि न कृता क्षत्रियाणां न धर्मो,
रूढं सख्यं तदपि गणितं नाऽनुजस्याऽर्जुनेन ।
तुल्यः कामं भवतु भवतः शिष्ययोः स्नेहबन्धः,
कोऽयं पन्था यदसि विमुखो मन्दभाग्ये मयीत्थम् ॥ २० ॥

युधिष्ठिरः - अस्मद्भागधेयानि = अस्माकं भाग्यम् (हमारे भाग्य को) । धिक् = निन्दायामव्ययम् (धिक्कार है) । आकाशम् = वियद् । अवलोकयन् = पश्यन् (देखते हुये) भगवन् कामपाल = हे देव बलभद्र ! कृष्णाग्रज—कृष्णस्य = वासुदेवस्याग्रजः = ज्येष्ठभ्राता, तत्सम्बुद्धौ (हे कृष्ण के बड़े भाई !) सुभद्राभ्रातः !

अन्वयः—ज्ञातिप्रीतिः मनसि न कृता, क्षत्रियाणां धर्मः (मनसि) न (कृतः) अर्जुनेन अनुजस्य रूढम् तत् सख्यम् अपि न गणितम् । भवतः शिष्ययोः स्नेहबन्धः कामं तुल्यः भवतु कः अयम् पन्थाः यत् (त्वम्) मन्दभाग्ये मयि इत्थं विमुखः असि ॥ २० ॥

ज्ञातीति । ज्ञातिप्रीतिः—ज्ञातेः = स्वजनस्य प्रीतिः = रतिः (जाति प्रेम) मनसि = चेतसि (मन में) न कृता = न विहिता (नहीं की) । क्षत्रियाणाम् = वीराणाम् धर्मः = कर्तव्यम् । (मनसि) न = नैव कृतः (ध्यान नहीं दिया) । अर्जुनेन = किरीटिना (अर्जुन के साथ) । अनुजस्य = कृष्णस्य (अपने छोटे भाई कृष्ण की) रूढम् = प्रवृद्धम् तत् सख्यम् = मैत्री अपि न गणितम् = न चिन्तितम् (नहीं सोचा) । भवतः = तव (आपका) । शिष्ययोः = भीमसुयोधनयोः (गदायुद्ध के दोनों शिष्यों—भीम व दुर्योधन पर) स्नेहबन्धः = शिष्यप्रेम कामं = प्रकामम् (भले ही) । तुल्यः = समानः भवतु = स्यात् (समान हो) । कः अयम् =

राक्षस—यह ऐसा ही है ।

युधिष्ठिर—धिक्कार है हमारे भाग्य को । (आकाश को देखते हुये) भगवान् कामपाल ! कृष्णाग्रज ! सुभद्राबन्धो !

तुमने जाति प्रेम को भी मन में नहीं सोचा, क्षत्रिय धर्म पर भी विचार नहीं किया अर्जुन की अनुज से उस विख्यात मित्रता को भी नहीं गिना । आपका अपने दोनों भीम तथा दुर्योधन शिष्यों पर समान प्रेम होना चाहिये था । क्या यही समान प्रेम था जो कि तुम मुझ मन्दभाग्य पर इस प्रकार विमुख हो गये ॥ २० ॥

(द्रौपदीमुपगम्य ।) अयि पाञ्चालि! उत्तिष्ठोत्तिष्ठ। समानदुःखावेवाऽऽवां भवावः । मूर्च्छया किं मामेवमतिसन्धत्से ।

द्रौपदी—(लब्धसंज्ञा ।) बन्धेदु णाहो दुज्जोहणरुधिलाद्देण हत्थेण दुस्सासणविमुक्कं मे केसहत्थम् । हंजे वुद्धिमदिए! तव पच्चक्खं एव्व णाहेण पडिण्णादम् । (कञ्चुकिनमुपेत्य ।) अज्ज ! किं संदिट्ठं दाव मे देवेण देवकीणन्दणेण—'पुणो वि केसबन्धण आरम्भीअदु'त्ति। ता उवणेहि मे पुप्फदामाइं । विरएहि दाव कबरीम् । करेहि भअवदो पुरिसोत्तमस्स वअणम् । ण क्खु सो अलीअं संदिसदि । अहवा किं मएसंतत्ताए भणिदम् । अचिरगदं अज्जउत्तं अणुगमिस्सम् । (युधिष्ठिरमुपगम्य ।) महाराअ ! आदीवअ चिदाम् । तुमं वि खत्तधम्मं अणुबट्टन्तो एव्व णाहस्स जीविदहरस्स अहिमुहो होहि । अहवा जं दे रोअदि । [बध्नातु नाथ ! दुर्योधनरुधिरार्द्रेण हस्तेन दुःशासनविमुक्तं मे केशहस्तम् । हञ्जे बुद्धिमतिके ! तव प्रत्यक्षमेव नाथेन

क एषः तुल्यः = समः पन्थाः = मार्गः (यह कैसा समान मार्ग व्यवहार है) । यत् त्वम् मन्दभाग्ये = भाग्यहीने मयि = युधिष्ठिरे (मुझ भाग्यहीन पर) इत्थम् = अनेन प्रकारेण (इस प्रकार) विमुखः = विरुद्धः असि = भवसि (विमुख बन गये) । मन्दाक्रान्ता वृत्तम् ॥ २० ॥

द्रौपदीम् = पञ्चालीम् उपगम्य = समीपं गत्वा (द्रौपदी के पास जाकर) । समानदुःखौ = समानं दुःखं ययोस्तौ (एक-सा दुःख वाले) । आवाम् = द्रौपदी-युधिष्ठिरौ (हम दोनों) । भवावः = स्वः (हैं) । मूर्च्छया = अचेतनया (मूर्च्छा से) । माम् = युधिष्ठिरम् (मुझे) । एवम् = इत्थम् (इस प्रकार) । किमतिसन्धत्से = किमर्थम् व्याकुलयसि (आकुल क्यों कर रही हो) ।

द्रौपदी—नाथः = स्वामी । बध्नातु = संयतान् करोतु (बाँधे) । दुर्योधनरुधिरार्द्रेण—दुर्योधनस्य=कुरुपतेः रुधिरेण=रक्तेनार्द्रः=क्लिन्नस्तेन (दुर्योधन के खून से सने) हस्तेन = करेण (हाथ से) दुःशासनविमुक्तम्—दुःशासनेन = लघुकौरवेण विमुक्तं = विसंयतम् (दुःशासन द्वारा खोले गये) मे = मम द्रौपद्याः (मुझ द्रौपदी का) । केशहस्तम् = केशपाशम् कबरीम् वा (जूड़े को) । तव = ते (तेरे)

(द्रौपदी के समीप जाकर) हे पाञ्चालि ! उठो, उठो । हम दोनों को एक सा ही दुःख है । इस प्रकार बेहोशी से मुझे अत्यन्त व्याकुल क्यों कर रही हो ?

द्रौपदी—(होश में आकर) नाथ दुर्योधन के रुधिर से भीगे हाथ से दुःशासन द्वारा खोले गये मेरे जूड़े को बाँधिये । हञ्जे बुद्धिमतिके ! तेरे समक्ष ही स्वामी ने

प्रतिज्ञातम् । आर्य ! किं सन्दिष्टं तावन्मे देवेन देवकीनन्दनेन--'पुनरपि केशबन्धनमारभ्यतामि'ति । तदुपनय मे पुष्पदामानि । विरचय तावत्कबरीम् । कुरु भगवतो पुरुषोत्तमस्य वचनम् । न खलु सोऽलीकं संदिशति । अथवा किं मयाऽतिसन्तप्तया भणितम् । अचिरगतमार्यपुत्रमनुगमिष्यामि । महाराज ! आदीपय चिताम् । त्वमपि क्षात्रधर्ममनुवर्तमान नाथस्य जीवितहरस्याऽभिमुखो भव । अथवा यत्ते रोचते ।]

प्रत्यक्षम् = समक्षम् एव (सामने ही)। नाथेन = स्वामिना भीमेन (स्वामी ने) प्रतिज्ञातम् = दुःशासनरुधिरेण मम केशबन्धनार्थं प्रतिज्ञा कृताऽऽसीत् (प्रतिज्ञा की थी) । कञ्चुकिनम् = वृद्धसेवकम् (कञ्चुकी को)। उपसृत्य = पार्श्वंगत्वा (पास जाकर) आर्य = कञ्चुकिन् (हे आर्य !) देवेन देवकीनन्दनेन = भगवता श्रीकृष्णेन (भगवान् देवकीनन्दन ने) मे = मह्यम् (मेरे लिए)। किं संदिष्टम् = किं सूचितम् (क्या सन्देश दिया था)। पुनरपि = भूयोऽपि (फिर से)। केशबन्धनम् = कबरीबन्धनम् (जूड़ा बाँधना)। आरभ्यताम् = प्रारभ्यताम् (आरम्भ किया जाय)। तद् = अतः। पुष्पदामानि = प्रसूनमालाः (फूलमालायें) उपनय = आहर (ले आओ)। कबरीम् = वेणीम् (चोटी)। विरचय = कल्पय (बनाओ–गूँथो)। पुरुषोत्तमस्य = वासुदेवस्य (भगवान् कृष्ण का)। वचनम् = कथनम् (कहना) कुरु = विधेहि (करो)। सः = असौ पुरुषोत्तमः (देवकीनन्दन) अलीकम् = असत्यम् (झूठा)। न सन्दिशति = सन्देशं न ददाति (सन्देश नहीं देते हैं)। अतिसन्तप्तया = अतिव्याकुलितया। मया = द्रौपद्या (अत्यन्त व्याकुल मैंने) किं भणितम् = किं कथितम् (क्या कह डाला)। अचिरगतम्— न चिरम् = सम्प्रत्येव गतम् = प्रस्थितम् (अभी थोड़ा पहले ही गये हुये)। आर्यपुत्रम् = स्वामिनम् (आर्यपुत्र को) अनुगमिष्यामि = अनुगमनं करिष्यामि (अनुगमन करूँगी)। महाराज ! = स्वामिन् ! चिताम् प्रदीपय = चितां प्रज्वालय

प्रतिज्ञा की थी। (कञ्चुकी के पास जाकर) आर्य ! क्या महाराज देवकीनन्दन ने भी सन्देश मेरे लिये भेजा था कि—'पुनः केश बन्धन किया जाय' इत्यादि। अतः फूलमालायें मेरे लिए ले आओ। मेरा जूड़ा तो बाँध दो। भगवान् पुरुषोत्तम के वचन को पूर्ण करो। वास्तव में वह (पुरुषोत्तम) असत्य सन्देश नहीं देते हैं। अथवा मैंने अत्यन्त व्याकुल होकर क्या कह डाला। अभी अभी स्वर्ग को गये आर्यपुत्र का मैं अनुगमन करूँगी। (युधिष्ठिर के समीप आकर) महाराज ! चिता जला दीजिये। आप भी क्षात्रधर्म का पालन करते हुये स्वामी के प्राण हर्त्ता का सामना करें। अथवा जो आप को अच्छा लगे वह करें।

युधिष्ठिरः—युक्तमाह पाञ्चाली। कञ्चुकिन्! क्रियतामियं तपस्विनी चितासंविभागेन सह्यवेदना। ममाऽपि सज्जं धनुरुपनय। अलमथवा धनुषा—

तस्यैव देहरुधिरोक्षितपाटलाङ्गी-
मादाय संयति गदामपविध्य चापम्।
भ्रातृप्रियेण कृतमद्य यदर्जुनेन
श्रेयो ममाऽपि हि तदेव, कृतं जयेन॥ २१॥

(चिता जला दीजिये)। क्षात्रधर्मम् = क्षत्रियत्वम्। अनुवर्तमानः = अनुपाल्यमानः (क्षत्रिय धर्म का पालन करते हुये)। नाथस्य = स्वामिनः। जीवितहरस्य = प्राणहरस्य दुर्योधनस्य (स्वामी के प्राण हरने वाले दुर्योधन के)। अभिमुखः = सम्मुखः भव = युद्धं कर्तुं गच्छ (सामने लड़ने—बदला लेने जाओ)। अथवा = किं वा (या)। यत् ते = तुभ्यम्। रोचते = रुचिकरं स्यात् (अथवा जो आप को अच्छा लगे वह करें)।

युधिष्ठिरः—युक्तम् = उचितम् (ठीक) आह = प्राह (कहा)। इयम् = एषा। तपस्विनी = तपश्चारिणी। चिता-सम्विभागेन—चितायाः सम्बिभागेन = संरचनेन (चिता की रचना द्वारा)। सह्यवेदना—सह्या = सोढुं शक्या वेदना = पीडा (सहने योग्य पीड़ा)। सज्जम् = सन्नद्धम्। धनुः = कार्मुकम्। उपनय = आनय (ले आओ)। अथवा = वा। धनुषा = कार्मुकेण (धनुष से)। अलम् इति निषेधेऽव्ययम्।

अन्वयः—तस्य एव देहरुधिरोक्षितपाटलाङ्गीं गदाम् आदाय चापम् अपविध्य भ्रातृप्रियेण अर्जुनेन संयति यत् अद्य कृतम् तद् एव मम अपि हि श्रेयः जयेन कृतम्॥ २१॥

तस्येति। तस्य = भीमस्य एव। देहरुधिरोक्षितपाटलाङ्गीम्—देहस्य = शरीरस्य रुधिरेण = रक्तेन उक्षितम् = सिक्तम् पाटलम् = अरुणम् अङ्गम् यस्याः

युधिष्ठिर—पाञ्चाली ने ठीक कहा। हे कन्चुकिन्! इस तपस्विनी (बेचारी) चिता रचना करके पीडा सह सकने वाली बनाओ। मेरा भी तैयार धनुष ले आओ। अथवा धनुष से क्या?

उस (भीमसेन) की ही देह के रुधिर से लाल हुई गदा को लेकर धनुष-बाण को त्याग कर भ्रातृप्रिय अर्जुन ने युद्ध में जो आज किया वही मुझे भी श्रेयस्कर है विजय से क्या लाभ?॥ २१॥

राक्षसः—(सविषादमात्मगतम् ।) कथं गच्छति, भवत्वेवं तावत् (प्रकाशम्) राजन् ! रिपुजयविमुखं ते यदि चेतस्तदा यत्र तत्र वा प्राणत्यागं कुरु । वृथा तत्र गमनम् ।

कञ्चुकी—(सरोषम्) धिङ्, मुनिजनाऽसदृशं राक्षससदृशं भवता व्याहृतम् ।

सा ताम् (शरीर के रक्त से भीगे लाल अङ्गों वाली)। गादाम् आदाय = गदां गृहीत्वा (गदा लेकर)। चापम् = शरम् (बाण को)। अपविध्य = परित्यज्य (छोड़कर)। भ्रातृप्रियेण—भ्राता = बन्धुर्भीमः प्रियो यस्य तेन (भ्रातृप्रिय)। अर्जुनेन = किरीटिना (अर्जुन ने)। संयति = संगरे (युद्ध में)। यद् = यत्कर्म (जो)। अद्य = अस्मिन् दिने (आज)। कृतम् = विहितम् (किया)। तद् एव (वह ही)। मम = युधिष्ठिरस्यापि (मुझे भी)। श्रेयः = श्रेयस्करम् । जयेन = विजयेन कृतम् = अलम् (जीत से क्या लाभ)। अत्र काव्यलिङ्गमलङ्कारः । वसन्ततिलका वृत्तम् ॥ २१ ॥

राक्षसः—सविषादम् = सखेदम् (दुःख के साथ) आत्मगतम् = स्वगतम् (मन ही मन)। कथम् = किमिति । गच्छति = याति (क्या युद्धभूमि को जा रहा है)? रिपुजयविमुखम्—रिपोः = शत्रोः जयात् = विजयात् विमुखम् = पराङ्मुखम् (रिपुविजय से विरुद्ध)। ते = तव (तुम्हारा)। चेतः = मनः (मन है) तदा = तर्हि (तब तो) यत्र-तत्र वा = यत्र-कुत्रापि स्थाने (चाहे जहाँ) प्राणत्यागम् = जीवनत्यागम् (प्राणत्याग) कुरु = विधेहि (कर दो)। तत्र = समरे गमनम् = प्रयाणम् (युद्ध में जाना) वृथा = व्यर्थम् ।

कञ्चुकी—सरोषम् = सकोपम् (कोध के सहित) मुनिजनासदृशम्—मुनिजनानाम् = साधुजनानाम् असदृशम = विपरीतम् (मुनिजनों के असमान)। राक्षसस्य = दानवस्य । सदृशम् = समम् (राक्षस जैसा)। भवता = त्वया (आपने)। व्याहृतम् = उच्चारितम् (कह डाला है)।

राक्षस—(सविषाद, मन ही मन) क्या यह समर भूमि को जा रहा है ? अस्तु, ऐसा ही सही । (प्रकट रूप में) राजन् ! शत्रु की विजय से विमुख यदि आपका मन है तब तो जहाँ चाहे वहाँ प्राण त्याग कर दो । युद्धभूमि को जाना व्यर्थ है ।

कञ्चुकी—(रोष के साथ) धिक्कार है । मुनिजनों के प्रतिकूल राक्षस जैसा आपने कह डाला है ।

राक्षसः—(सभयं स्वगतम् ।) किं ज्ञातोऽहमनेन । (प्रकाशम् ।) भो कञ्चुकिन् ! एतद् ब्रवीमि तयोर्गदया खलु युद्धं प्रवृत्तमर्जुनदुर्योधनयोः । जानामि च तयोर्गदायां भुजसारम् । दुःखितस्य पुनरस्य राजर्षेरपरमनिष्ट-श्रवणं परिहरन्नेवं ब्रवीमि ।

युधिष्ठिरः—(बाष्पं विसृजन् ।) साधु, महर्षे ! साधु । सुस्निग्धमभि-हितम् ।

कञ्चुकी—महाराज ! किं नाम शोकान्धतया देवकल्पेनाऽपि देवेन प्राकृ-तेनेव त्यज्यते क्षात्रधर्मः ।

राक्षसः—अहम् = राक्षसः । अनेन = एतेन कञ्चुकिना (इसके द्वारा) ज्ञातः = अभिज्ञातः (पहिचान लिया गया हूँ) । एतत् = इदम् (यह) ब्रवीमि= कथयामि (कर रहा हूँ) । युद्धम् = रणम् । प्रवृत्तम् = आरब्धम् (आरम्भ हो गया है) । तयोः = अर्जुनदुर्योधनयोः (अर्जुन तथा दुर्योधन की) । भुजासारम् = बाहुबलम् (भुजाओं का बल) । जानामि = वेद्मि (जानता हूँ) । पुनः = भूयः । अस्य = एतस्य राजर्षेः = युधिष्ठिरस्य (इन राजर्षि का) । अपरम् = अन्यत् । अनिष्टश्रवणम् = अमङ्गलश्रवणम् (अनिष्ट सुनने को) । परिहरन् = परित्यजन् (बचाते हुये) । एवम् = इत्थम् (ऐसा) । ब्रवीमि = कथयामि (कह रहा हूँ) ।

युधिष्ठिरः—बाष्पम् = नयनाम्बु (अश्रुजल) । विसृजन् = मुञ्चन् (छोड़ते हुये) । सुस्निग्धम् = समधुरम् (बड़ा अच्छा) । अभिहितम् = कथितम् (कहा है) ।

कञ्चुकी—महारज = राजन् । शोकान्धतया = दुःखमौढ्येन (शोकान्धता के कारण) । देवकल्पेन = देवसमेन अपि (देव सदृश होकर भी) । देवेन =

राक्षस—(भय के सहित, मन ही मन) क्या मुझे इसने पहिचान लिया है ? (प्रकट रूप में) कञ्चुकिन् ! यह कहता हूँ कि उन दोनों अर्जुन तथा दुर्योधन की गदा द्वारा युद्ध प्रारम्भ हो चुका है तथा मैं उन दोनों का भुजबल जानता हूँ । फिर इन दुःखी राजर्षि का अन्य अनिष्ट सुनने से बचने के लिए इस प्रकार कह रहा हूँ ।

युधिष्ठिर—(आँसू बहाते हुये) धन्य हो महर्षि ! धन्य हो । आपने बहुत अच्छा कहा ।

कञ्चुकी—महाराज ! शोकान्धता के कारण देव सदृश आप से मूर्ख जैसे क्षात्रधर्म (युद्ध) छोड़ा जा रहा है ।

युधिष्ठिरः—आर्य जयन्धर !

शक्ष्यामि किं परिघपीवरबाहुदण्डौ,
वित्तेशशक्रपुरदर्शितवीर्यसारौ ।
भीमार्जुनौ क्षितितले प्रविचेष्टमानौ,
द्रष्टुं तयोश्च निधनेन रिपुं कृतार्थम् ॥ २२ ॥

भवता (आपसे) । प्राकृतेन इव = मूर्खेणेव (मूर्ख के समान) । क्षात्रधर्मः = क्षत्रियोचितम् । युद्धम् त्यज्यते = मुच्यते (छोड़ा जा रहा है) ।

युधिष्ठिरः—जयन्धर = कञ्चुकिन् !

अन्वयः—परिघपीवरबाहुदण्डौ वित्तेशशक्रपुरदर्शितवीर्यसारौ क्षितितले प्रविचेष्टमानौ भीमार्जुनौ द्रष्टुम् (तथा) तयोः निधनेन कृतार्थं च रिपुं (द्रष्टुं) शक्ष्यामि किम् ॥ २२ ॥

शक्ष्यामीति । परिघपीवरबाहुदण्डौ—परिघ इव = लौहमुद्गर इव पीवरौ = स्थूलौ बाहुदण्डौ = भुजदण्डौ ययोस्तौ (मुद्गर जैसे मोटे भुजदण्डों वाले) । वित्तेशशक्रपुरदर्शितवीर्यसारौ—वित्तेशः = कुबेरः शक्रः = इन्द्रः, तयोः पुरयोः = नगर्योः, अलकापुर्यमरावतीपुर्योः (कुवेर तथा शक्र की अलकापुरी एवं अमरावती नगरियों में) दर्शितः = प्रकटितः वीर्यस्य = बलस्य सारो याभ्याम् तौ (पराक्रम दिखलाने वाले) । क्षितितले = भूतले (भूतल पर) प्रविचेष्टमानौ = लुठन्तौ (छटपटाते हुये) भीमार्जुनौ = भीमश्च अर्जुनश्च, तौ भीमार्जुनौ = वृकोदरकिरीटिनौ (भीम तथा अर्जुन को) द्रष्टुम् = अवलोकितुम् (देखने को) (तथा) तयोः = भीमार्जुनयोः (उन दोनों के) निधनेन = मरणेन (मृत्यु से) कृतार्थम् = सफलम् रिपुम् = शत्रुम् च (द्रष्टुम्) शक्ष्यामि = समर्थो भविष्यामि किम् ? अत्र यथासंख्यमलङ्कारः । वसन्ततिलकावृत्तम् ॥ २२ ॥

युधिष्ठिर—आर्य जयन्धर !

लौह मुद्गर के समान स्थूल बाहुदण्ड वाले, कुबेर तथा इन्द्र की अलका पुरी एवम् अमरावती नगरियों में अपना पौरुष दिखलाने वाले, भूतलपर छटपटाते हुये भीम तथा अर्जुन को देखने को तथा उन दोनों के निधन से सफल मनोरथ हुये शत्रु को देखने की क्या मुझ में सामर्थ्य हो सकेगी ॥ २२ ॥

अयि पाञ्चालराजतनये ! मद्दुर्नयप्राप्तशोच्यदशे ! यथा संदीप्यते पावक-स्तथा सहितावेव बन्धुजनं सम्भावयावः ।

द्रौपदी—अज्ज ! करेहि दारुसंचअम् । पज्जलीअदु चिदा । तुवरदि मे हिअअं णाहं पेक्खिदुम् (सर्वतोऽवलोक्य ।) कहं ण को वि णाहेण विणा महाराअस्स वअणं करोदि । हा णाह भीमसेण ! तं एव्व एदं राअउलं तुए विरहिदं पडिअणो व संपदं परिहरदि । [आर्य ! कुरु दारुसञ्चयम् । प्रज्वाल्यतां चिता । त्वरते मे हृदयं नाथं प्रेक्षितुम् । कथं न कोऽपि नाथेन विना महाराजस्य वचनं करोति । हा नाथ भीमसेन ! तदेवेदं राजकुलं त्वया विरहितं परिजनोऽपि साम्प्रतं परिहरति ।]

मद्दुर्नयप्राप्तशोच्यदशे—मम दुर्नयेन = अन्यायेन प्राप्ता शोच्या = शोचनीया दशा यया सा तत्सम्बुद्धौ (हे मेरे अन्याय से शोचनीय दशा को पहुँची हुई) । यथा = यदैव (जैसे ही) पावकः = अग्निः । सन्दीप्यते = प्रदीप्यते (जलता है) तथा = तदैव (तभी) सहितौ एव = सहैव आवाम् (हम दोनों एक साथ ही) । बन्धुजनम् = भ्रातृ-जनम् (भाई बान्धवों को) । सम्भावयावः = अनुमरणेन सत्करिष्यावः (अपने प्राण देकर सत्कार करेंगे) ।

द्रौपदी —दारुसञ्चयम् = काष्ठसंग्रहम् । कुरु = विधेहि (लकड़ी इकट्ठी करो) । प्रज्वाल्यताम् = संदीप्यताम् (जलाइये) त्वरते = शीघ्रतां करोति (जल्दी कर रहा है) । हृदयम् = चेतः (हृदय) । नाथम् = स्वामिनं भीमसेनम् (स्वामी को) प्रेक्षितुम् = अवलोकितुम् (देखने को) । सर्वतः = सर्वासु दिक्षु (सभी ओर) महाराजस्य = पाण्डवज्येष्ठस्य (महाराज के) । वचनम् = कथनम् (वचन को) । करोति = पालयति (कर रहा है) । राजकुलम् = नृपकुलम् (राजवंश को) । विरहितम् = हीनम् (रहित, शून्य) । परिजनः = दासवर्गः अपि (परिजन भी) साम्प्रतम् = इदानीम् (अब) परिहरति = परित्यजति (छोड़ रहा है) ।

हे पाञ्चाल राजपुत्रि ! मेरे दुर्नय से शोचनीय दशा को पहुँची हुई ! जैसे ही अग्नि जले उसी समय हम दोनों को अपने प्राण देकर बन्धुजन का सम्मान करना चाहिये ।

द्रौपदी—आर्य ! काष्ठ सञ्चय कीजिये तथा चिता जलाइये । मेरा हृदय स्वामी को देखने के लिए शीघ्रता कर रहा है । (चारों ओर देखकर) स्वामी के बिना कोई भी महाराज के वचनों को क्यों नहीं कर रहा है । हा नाथ भीमसेन ! उसी राजकुल को तुमसे रहित होने पर परिजन भी अब छोड़ रहे हैं ।

राक्षसः—सदृशमिदं भरतकुलवधूनां यत्पत्युरनुमरणम्।

युधिष्ठिरः—महर्षे! न कश्चिच्छृणोति तावदावयोर्वचनम्। तदिन्धनप्रदानेन प्रसादः क्रियताम्।

राक्षसः—मुनिजनविरुद्धमिदम्। (स्वगतम्) पूर्णो मे मनोरथः। यादवनुपलक्षितः समीपेऽहं समिन्धयामि वह्निम्। (प्रकाशम्।) राजन्! न शक्नुमो वयं स्थातुम्। (इति निष्क्रान्तः।)

युधिष्ठिरः—कृष्णे! न कश्चिदस्मद्वचनं करोति। भवतु। स्वयमेवाऽहं दारुसञ्चयं कृत्वा चितामादीपयामि।

राक्षसः—भरतकुलवधूनाम्—भरतकुलस्य = भरतवंशस्य वधूनाम् = नारीणाम् सदृशम् = अनुकूलम् (भरतवंश की वधुओं के अनुकूल)। पत्युः = भर्तुः अनु = पश्चात् मरणम् = निधनम् (पति के पीछे प्राण त्याग करना)।

युधिष्ठिरः—कश्चित् = कोऽपि (कोई भी) वचनम् = कथनम् (कहना)। न शृणोति = न आकर्णयति (नहीं सुन रहा है)। तत् = अतः। इन्धनप्रदानेन = काष्ठदानेन (इंधन देकर)। प्रसादः क्रियताम् = अनुगृह्यताम् (कृपा कीजिये)।

राक्षसः—मुनिजनविरुद्धम्—मुजिननानाम् विरुद्धम् = प्रतिकूलम् (मुनिजनों के विरुद्ध) इदम् = एतत्कर्म (यह कार्य)। मे = मम। मनोरथः = अभिलाषः पूर्णः = सफलो जातः (मेरा मनोरथ पूर्ण हो गया है)। अनुपलक्षितः = अदृष्टः (छिपकर)। समिन्धयामि = सन्दीपयामि (जला देता हूँ)। अवस्थातुम् = स्थातुम् (ठहर पाने को)।

युधिष्ठिरः—कृष्णे = हे द्रौपदि! अस्मद्वचनम् = अस्माकं कथनम् (हमारा कहना)। दारुसञ्चयम् = काष्ठसंग्रहम् (दारुसंचय) कृत्वा = विधाय (करके)। आदीपयामि = प्रज्वालयामि (जलाता हूँ)।

राक्षस—पति का अनुगमन करना भरतवंश की वधुओं के अनुकूल ही है।

युधिष्ठिर—हे महर्षि! हम दोनों का कहना कोई भी सुन नहीं रहा है। अतः ईंधन देने की कृपा कीजिये।

राक्षस—यह मुनिजनों के विरुद्ध कार्य है। (मन में) मेरा मनोरथ पूर्ण हुआ तब तक समीप ही छिप कर मैं आग जला देता हूँ (प्रकट रूप में) राजन्! हम (अब) ठहर नहीं सकते हैं। (यह कह कर निकल जाता है)।

युधिष्ठिर—कृष्णे! कोई हमारा कहना नहीं कर रहा है। अच्छा, स्वयम् मैं ही काष्ठ इकट्ठा करके चिता जला रहा हूँ।

द्रौपदी—तुवरदु तुवरदु महाराओ। [त्वरतां त्वरतां महाराजः।]

(नेपथ्ये कलकलः।)

द्रौपदी—(सभयमाकर्ण्य।) महाराअ! कस्स वि एसो तेजोबलदप्पिदस्स विसमो संखणिग्घोसो सुणीअदि। अवरं वि अप्पिअं सुणिदुं अत्थि णिब्बन्धो? तदो विलम्बीअदु। [महाराज! कस्याप्येष तेजोबलर्पितस्य विषमः शङ्खनिर्घोषः श्रूयते। अपरमप्यप्रियं श्रोतुमस्ति निर्बन्धस्ततो बिलम्ब्यताम्।]

युधिष्ठिरः—न खलु विलम्ब्यते। उत्तिष्ठ।

(सर्वे परिक्रामन्ति।)

द्रौपदी—त्वरताम् = शीघ्रता क्रियताम् (जल्दी करें)। महाराजः = देवः (महाराज)।

द्रौपदी—आकर्ण्य = श्रुत्वा (सुनकर)। तेजोबलदर्पितस्य—तेजसः बलम् तेजोबलम् तेन उद्दीपितस्तस्य = ओजोबलाभिमानिनः (तेजोबल से गर्वित का)। विषमः = भयानकः शङ्खनिर्घोषः = शंखध्वनिः (शंखनाद)। श्रूयते = आकर्ण्यते (सुनाई पड़ रहा है)। अपरम् = अन्यत् अपि (दूसरे) अप्रियम् = अनिष्टम् (अप्रिय समाचार को) श्रोतुम् = आकर्णितुम् (सुनने को)। निर्बन्धः = अभिनिवेशः (तैयारी है)। यतः = यस्मात् कारणात् (जिससे) विलम्ब्यते = बेलातिक्रमणं क्रियते (देर की जा रही है)।

युधिष्ठिरः—खलु = किल (वास्तव में) न विलम्ब्यते = न विलम्बीक्रियते (देर नहीं की जा रही है)।

परिक्रामन्ति = परिभ्रमन्ति (चारों ओर घूमने लगते हैं)।

द्रौपदी—महाराज शीघ्रता करें, शीघ्रता करें।

(नेपथ्य में कोलाहल होता है)

द्रौपदी—(सभय सुनकर) महाराज! यह किसी तेजस्वी तथा बलशाली व्यक्ति का भयङ्कर शंखनाद सुनाई पड़ रहा है कुछ और अप्रिय सुनने की क्या तैयारी है जो विलम्ब किया जा रहा है।

युधिष्ठिर—देर नहीं कर रहा हूँ। उठो!

(सब घूमते हैं)

युधिष्ठिरः—अयि ! पाञ्चालि ! अम्बायाः सपत्नीजनस्य च किञ्चित् संदिश्य निवर्तय परिजनम् ।

द्रौपदी—महाराअ ! अम्बाए एवं संदिसिस्सम्—'जो सो बअहिडिम्ब-किम्मीरजडासुरजरासंधविजअमल्लो वि दे मज्झमपुत्तो मम हदासाए पक्खवादेण परलोअं गदो त्ति' । [महाराज ! अम्बायै एवं संदेक्ष्यामि—'यः सः वकहिडिम्बकिर्मीरजटासुरजरासन्धविजयमल्लोऽपि ते मध्यमपुत्रो मम हताशायाः पक्षपातेन परलोकं गतः' इति ।]

युधिष्ठिरः—भद्रे बुद्धिमतिके ! उच्यतामस्मद्वचनादम्बा—

युधिष्ठिरः—अम्बायाः = जनन्याः । सपत्नीजनस्य = सपत्नीवर्गस्य (सौतों को) किञ्चित् = किमपि (कुछ) संदिश्य = संदेशं दत्वा (सन्देश देकर) परिजनम् = सेवकजनम् (परिजनों को) । निवर्तय = परावर्तय (वापस कर दो) ।

द्रौपदी—सन्देक्ष्यामि = सन्देशं दास्यामि (सन्देश भेजूँगी) । वक-हिडिम्ब-किर्मीर-जटासुर-जरासन्ध-विजयमल्ल.—वकस्य हिडिम्बस्य किर्मीरस्य जटासुरस्य-जरासन्धस्य च विजये = जये मल्लः=वाहुयोद्धा अपि (बक-हिडिम्वादि को वाहु-युद्ध में जीतने वाले भी) । ते = तव पृथायाः मध्यमपुत्रः = भीमसेनः (तुम्हारे मध्यम पुत्र) । मम = मे द्रौपद्याः (मेरे) हताशायाः=निराशायाः (हताश के) पक्षपातेन=सहयोगेन (पक्षपात के कारण) । परलोकम् = दिवम् गतः = प्रयातः (परलोकवासी हुये हैं) ।

युधिष्ठिरः—अस्मद्वचनात् = मम कथनात् (मेरे कहने से) । अम्बा = जननी (माताजी से) । उच्यताम् = कथ्यताम् (कह दिया जाय) ।

युधिष्ठिर—हे द्रौपदि ! माताजी तथा सपत्नीजन को कुछ सन्देश देकर परिजनों को लौटा दो ।

द्रौपदी—महाराज ! माता जी के लिए इस प्रकार का सन्देश भेजूँगी—जो वह बक, हिडिम्ब, किर्मीर जटासुर तथा जरासन्ध को मल्ल युद्ध में जीतने वाले आपके मध्यम पुत्र थे, वह मुझ निराश (मन्दभाग्या) के अपमान का बदला लेने के कारण परलोकवासी हो गये हैं ।

युधिष्ठिर—बुद्धिमतिके ! हमारे कहने से तुम माताजी को बता देना—

येनाऽसि तत्र जतुवेश्मनि दीप्यमाने,
उत्तारिता सह सुतैर्भुजयोर्बलेन।
तस्य प्रियस्य बलिनस्तनयस्य पाप-
माख्यामि तेऽम्ब! कथयेत्कथमीदृगन्यः॥ २३॥

आर्य जयन्धर! त्वं सहदेवसकाशं गच्छ। वक्तव्यश्च तत्रभवान्माद्रेयः कनीयान्सकलकुरुकुलकमलाऽऽकरदावानलो युधिष्ठिरः परलोकमभिप्रस्थितः प्रियाऽनुजमप्रतिकूलं सततमाशंसनीयसम्मूढं व्यसनेऽभ्युदये च भवन्तमविरलमालिङ्ग्य शिरसि चाघ्रायेदं प्रार्थयते—

अन्वयः—हे अम्ब! येन भुजयोः बलेन तत्र जतुवेश्मनि दीप्यमाने (सति) सुतैः सह (त्वम्) उत्तारिता तस्य बलिनः प्रियस्य तनयस्य पापं ते आख्यामि, अन्यः ईदृक् कथं कथयेत्॥ २३॥

येनासीति। हे अम्ब = हे मातः। येन = येन पुत्रेण (जिन्होंने) भुजयोः = बाह्वोः बलेन = पराक्रमेण (बाहुबल से)। तत्र = ते जतुवेश्मनि = लाक्षागृहे (लाक्षागृह में) दीप्यमाने = प्रज्वाल्यमाने सति (जला देने पर) सुतैः सह = पुत्रैः समम् (पुत्रों के साथ)। (त्वम्) उत्तारिता = पारं प्रापिता (तुम बचा ली गई थीं)। तस्य = तथाविधस्य बलिनः = पराक्रमिणः (ऐसे पराक्रमी) प्रियस्य तनयस्य = प्रियसुतस्य (प्रिय पुत्र का)। पापम् = अमङ्गलम् (पाप)। ते = तुभ्यम् (तुम्हारे लिये) आख्यामि = कथयामि (बता रहा हूँ)। अन्यः = अपरः (दूसरा व्यक्ति) ईदृक् = ईदृशं वचनम् (ऐसा मर्मवचन)। कः कथयेत् = कः वदेत् (कौन कह सकता है)। अत्रार्थान्तरन्यासोऽलङ्कारः। वसन्ततिलका वृत्तम्॥ २३॥

जयन्धर = कञ्चुकिन्। सहदेवसकाशम् = सहदेवस्य पार्श्वम् (सहदेव के समीप) गच्छ = याहि (जाओ) कनीयान् = लघुः माद्रेयः = सहदेवः (माद्री

हे मातः! जिसने अपने भुजबल से लाक्षागृह जलाये जाने पर पुत्रों सहित तुम्हें (आग से) निकाला बचाया था, उस बलशाली प्रिय पुत्र का अमङ्गल मैं तुम्हें बता रहा हूँ। अन्य व्यक्ति ऐसा अमङ्गल वचन कैसे कह सकता है?॥ २३॥

आर्य जयन्धर! तुम भी सहदेव के पास जाओ तथा कनिष्ठमाद्रेय सहदेव से कह देना कि समस्त कुरुकुलरूपी सागर में दावानल सदृश युधिष्ठिर परलोक को प्रस्थान कर गये हैं। उन्होंने सदैव अनुकूल रहने वाले प्रिय अनुज, प्रशंसनीय, विपत्ति तथा सम्पत्ति में कभी मुग्ध न होने वाले आपको अविरल आलिंगन कर तथा माथा चूमकर यह प्रार्थना की है—

मम हि वयसा दूरेणाल्पः, श्रुतेन समो भवान्,
सहजकृपया बुद्धया ज्येष्ठो, मनीषितया गुरुः।
शिरसि मुकुलौ पाणी कृत्वा भवन्तमतोऽर्थये,
'मयि विरलतां नेयः स्नेहः, पितुर्भव वारिदः' ॥ २४ ॥

सुत) वक्तव्यः=कथनीयः (कह देना चाहिये)। सकलकुरुकुलकमलाकरदावानलः—सकलस्य=सम्पूर्णस्य कुरुकुलस्य=कुरुवंशस्य कमलाकरः=सागरः, तत्र दावानलसमानो योऽसौ (समस्त कुरुकुलरूपी सागर में दावानल सदृश) युधिष्ठिरः=पाण्डवज्येष्ठः (मैं, युधिष्ठिर) परलोकम्=स्वर्गम्। अभिप्रस्थितः=प्रयातः (चले गये)। सततम्=निरन्तरम् (सदा)। प्रियानुजम्=प्रियम् लघुभ्रातम् (प्रिय अनुज को)। अप्रतिकूलम्=अविरुद्धम् (अनुकूल)। सततम्=निरन्तरम् (सदैव) आशंसनीयम्=आशास्यम् (प्रशंसनीय) व्यसने=विपत्तौ (विपत्ति में) अभ्युदये=उन्नतौ च (और उन्नतिकाल में) असम्मूढम्=अमुग्धम् (मुग्ध न होने वाले)। भवन्तम्=त्वाम् (आपको) अविरलम्=अनवरतम् (अनवरत) आलिङ्ग्य=आश्लिष्य (आलिंगन कर) शिरसि=मूर्ध्नि च आघ्राय=घ्रात्वा (तथा शिर सूँघ कर) इदम्=एतत् (यह) प्रार्थयते=निवेद्यते (प्रार्थना की है)।

अन्वयः—भवान् हि मम वयसा दूरेण अल्पः श्रुतेन समः सहजकृपया बुद्धया ज्येष्ठः मनीषितया गुरुः, अतः शिरसि मुकुलौ पाणी कृत्वा भवन्तम् अर्थये 'मयि स्नेहः विरलतां नेयः, पितुः वारिदः भव' ॥ २४ ॥

ममेति। भवान्=श्रीमान् सहदेवः (आप) हि=यतः (क्योंकि) मम=मे वयसा=आयुषा (आयु से) दूरेण अल्पः=अधिकं हीनः (बहुत छोटे), श्रुतेन=ज्ञानेन (ज्ञान से) समः=समानः (बराबर) सहजकृपया—सहजा=स्वाभाविकी या कृपा=दया, तया (स्वाभाविक कृपावाली) बुद्धया=मत्या (बुद्धि से) ज्येष्ठः=श्रेष्ठः (बड़े)। मनीषितया=विद्वत्तया (विद्वता से) गुरुः=गरीयान् (और भी बड़े) अस्ति। अतः=अस्मात् हेतोः (इसलिए) शिरसि=मूर्ध्नि मुकुलौ=मुकुल सदृशौ पाणी=हस्तौ। कृत्वा=विधाय (हाथ

आप चूँकि अवस्था में मुझसे बहुत छोटे, ज्ञान में बराबर, स्वाभाविकी दया तथा बुद्धि से बड़े तथा विद्वता में मुझसे बहुत बड़े हैं। अतः हाथ जोड़ कर आप से प्रार्थना है कि मेरे प्रति किया गया स्नेह भुला देना तथा पिताजी को जलदान (तर्पण) करने के लिए अपना जीवन बनाये रखना ॥ २४ ॥

अपि च, बालिशचरितस्य नित्याऽभिमानिनोऽश्मसदृशहृदयसारस्याऽपि नकुलस्य ममाऽज्ञया वचने स्थातव्यम् । नाऽनुगन्तव्याऽस्मत्पदवी ।

त्वया हि वत्स !

विस्मृत्यास्मान्श्रुतिविशदया प्रज्ञया साऽनुजांश्च,
पिण्डान् पाण्डोरुदकपृषतानश्रुगर्भान् प्रदातुम् ।

जोड़कर) भवन्तम् = श्रीमन्तम् (आपको) अर्थये = प्रार्थये (प्रार्थना करता हूँ) (यत्) मयि = युधिष्ठिरे (मुझपर) स्नेहः = प्रीतिः (प्रेम) विरलताम् = स्वल्पताम् नेयः = प्रापणीयः (कम कर देना) । पितुः = तातस्य (पिता जी को) वारिदः—वारि = जलम् ददातीति = पितृतर्पणकर्त्ता भव, अर्थात् निवापाञ्जलिदानाय प्राणान् धारय । हरिणी वृत्तम् । तद्यथा नसमरसलागाः षड्वेदैर्हयैर्हरिणी स्मृता ॥ २४ ॥

बालिशचरितस्य—बालिशस्य = मूर्खस्य चरितम् = चरित्रम् इव, चरितं यस्य तस्य (मूर्खों जैसे चरित्रवाले) । नित्याभिमानिनः—नित्यम् = सदैव अभिमानिनः = अभिमानयुक्तस्य । अश्मसदृशहृदयसारस्य—अश्मसदृशम् = पाषाणसमम् हृदयसारम् = हृत्तत्वम् यस्य तस्य (पाषाणहृदय) नकुलस्य = सहदेवाग्रजस्यापि (नकुल को भी) मम = मे (मेरी) आज्ञया = अनुज्ञया (आज्ञा से) वचने = कथने (कहने पर) स्थातव्यम् = वर्तितव्यम् (स्थिर रहना चाहिये) ।

त्वया = नकुलेन (तुम्हें) अस्मत्पदवी = मम पद्धतिः, परलोकगमनम् । नानुगन्तव्या = नानुसरणीया (अनुगमन नहीं करना चाहिये) ।

अन्वयः—श्रुतिविशदया प्रज्ञया सानुजान् अस्मान् विस्मृत्य पाण्डोः अश्रुगर्भान् उदकपृषतान् पिण्डान् प्रदातुं दायादानाम् अपि तु भवने यादवानां कुले वा कान्तारे वा कृतवसतिना (त्वया) शरीरं रक्षणीयम् ॥ २५ ॥

विस्मृत्येति । श्रुतिविषदया—श्रुत्या = शास्त्रज्ञानेन विशदा = निर्मला, तया (शात्रज्ञान से विमल) प्रज्ञया = बुद्धया (बुद्धि से) सानुजान् = अनुजैः सहि-

---

और भी—मूर्खों जैसे चरित्र वाले, नित्य अभिमानी, पाषाणहृदय नकुल को भी मेरी आज्ञा से मेरे वचन पर ही स्थिर रहना चाहिये मेरे समान प्राणत्याग नहीं कर देना चाहिये ।

हे वत्स ! तुम्हें—

शास्त्रों के अध्ययन से निर्मल बनी बुद्धि द्वारा अनुज सहित हमें भुला कर जल विन्दुओं से युक्त अश्रपूर्ण पिण्डों को पिता पाण्डु को देने के लिए दायादों (सपिण्डियों) के घर में

दायादानामपि तु भवने, यादवानां कुले वा,
कान्तरे वा कृतवसतिना रक्षणीयं शरीरम् ॥ २५ ॥

गच्छ जयन्धर! अस्मच्छरीरस्पृष्टिकया शापितोऽसि—त्वयाऽकालहीन-मिदमवश्यमावेदनीयम्।

द्रौपदी—हला बुद्धिमदिए! भणाहि मह वअणेण पिअसहीं सुभद्दाम्—'अज्ज वच्छाए उत्तराए चउत्थो मासो पडिवण्णस्स गब्भस्स। तुमं एव्व कुलपडिट्ठाअवं सावहाणं रक्खत्ति। सव्वधा णाविउले तं णिक्खिवसि। कदा वि इदो लोआदो गदस्स ससुर उलस्स अम्हाणं व सलिलविन्दुदो भवि-स्सदि' त्ति। [हला बुद्धिमतिके! भण मम वचनेन प्रियसखीं सुभद्राम्—'अद्य

तान् अस्मान् = पाण्डवान् विस्मृत्य = विस्मरणं कृत्वा (अनुजों सहित मुझे भुला-कर) पाण्डोः = पाण्डुनृपस्य तातस्य (पिता पाण्डु के) अश्रुगर्भान्—अश्रूणि = नयनवारीणि गर्भे=अन्तरि येषां ते तान् (अश्रुपूर्ण) उदकपृषतान् = जलविन्दून् (जलविन्दु युक्त) पिण्डान् = श्राद्धपिण्डान् (पिण्डों को) प्रदातुम् = वितरितुम् (देने को)। दायादानाम् = सपिण्डानाम् अपि (सपिण्डिओं के भी) भवने = प्रासादे (भवन में)। तु = किन्तु यादवानाम् = यदुवंशीयानाम् (यदुकुल वालों के) कुले = वंशे। वा = अथवा। कान्तारे = अरण्ये (वन में)। कृतवसतिना—कृता = विहिता वसतिः = वासो येन तथाविधेन (आवास बनाये हुये) भवता = त्वया (आपको) शरीरम् = कायः (शरीर) रक्षणीयम् = पालनीयम् (रक्षा करनी चाहिये)। अत्र काव्यलिङ्गमलङ्कारः। मन्दाक्रान्ता वृत्तम्। तद्यथा—मन्दाक्रान्ताऽम्बुधिरसनगैर्मोभनौ गौ य युग्यम् ॥ २५ ॥

अस्मच्छरीरस्पृष्टिकया—मम शरीरस्य स्पृष्टिकया = शपथेन शापितः असि = दत्तशापः असि (तुम्हें शाप दिया गया है)। त्वया=कञ्चुकिना (तुम्हारे द्वारा) अकालहीनम् = अविलम्बम् (शीघ्र) इदम् = एतत्कथनम् (यह) अवश्यम् = नूनम्। आवेदनीयम् = निवेदनीयम् (कह देना चाहिये)।

द्रौपदी—हला बुद्धिमतिके=सखि बुद्धिमतिके! मम = मे द्रौपद्याः। वचनेन= वाक्येन (कहने से) प्रियसखीम्=प्रियसपत्नीम्। सुभद्राम्=कृष्णभगिनीम् (प्रिय

यादवों के कुल में, अथवा जङ्गल मे (कहीं भी) तुम्हें अपने शरीर की रक्षा करते रहना चाहिये ॥ २५ ॥

जाओ, जयन्धर! मेरे शरीर की सौगन्ध है, तुम यह बात अवश्य कह देना।

द्रौपदी—सखि बुद्धिमतिके! मेरे कहने से प्रिय सखी सुभद्रा को बता देना कि आज

वत्साया उत्तरायाश्चतुर्थो मासः प्रतिपन्नस्य गर्भस्य । त्वमेव कुलप्रतिष्ठापकं सावधानं रक्षेति । सर्वथा नाभिकुले तां निक्षिपसि । कदापीतः लोकाद् गतस्य श्वशुरकुलस्याऽस्माकञ्च सलिलबिन्दुदो भविष्यति' इति ।]

युधिष्ठिरः—(सास्रम् ।) भो कष्टम् !

शाखारोधस्थगितवसुधामण्डले मण्डिताशे
पीनस्कन्धे सुसदृशमहामूलपर्यन्तबन्धे ।

सखी बृहन सुभद्रा से) भण = वद (कहना) अद्य = अस्मिन् दिवसे (आज) । वत्सायाः उत्तरायाः = पुत्रवध्वा उत्तराया (बहू उत्तरा का) चतुर्थो मासः = गर्भधारणात् चतुर्थसंख्यको मासः (चौथा महीना) । प्रतिपन्नस्य = परिपूर्णस्य धृतस्य वा गर्भस्य = गर्भाधानस्य (गर्भ को धारण किये) । त्वम् = सुभद्रा एव (तुम्हीं) कुलप्रतिष्ठापकम्—कुलस्य = वंशस्य प्रतिष्ठापकम् = वंशधरम् (कुल बनाये रखने वाले को) । सावधानम् = ध्यानपूर्वकम् (ध्यान से) रक्ष = पालय (रक्षा करो) । सर्वथा = सर्वप्रकारेण (हर प्रकार से) नाभिकुले = स्वपितृकुले । तम् = जातकम् (बच्चे को) निक्षिपसि = निक्षेपं करोसि (धरोहर रख देना) । कदापि = कदाचित् । इतः = अस्मात् । लोकात् = संसाराद् गतस्य = यातस्य, मृतस्येत्यर्थः । श्वसुरकुलस्य=पाण्डुवंशस्य (पाण्डुकुल का) अस्माकम् = पाण्डवानाञ्च (पाण्डवों का) । सलिलबिन्दुदः = जलाञ्जलिदाता (तर्पण करने वाला) भविष्यति ।

अन्वयः—शाखारोधस्थगितवसुधामण्डलेमण्डिताशे पीनस्कन्धे सुसदृशमहामूलपर्यन्तबन्धे सुमहतितरौ दैवात् दग्धे (सति) अयं छायया अर्थी जनः तस्य अस्मिन् सूक्ष्माङ्कुरे कम् अपि आशाबन्धं कुरुते ॥ २६ ॥

शाखारोधेति । शाखारोधस्थगितवसुधामण्डले—शाखानाम् = पादपानाम् रोधेन = अवरोधेन स्थगितम् = व्याप्तम् वसुधायाः = पृथिव्याः मण्डलं = वलयम्

बहू उत्तरा के गर्भ को पूरा हुये चार मास हुये हैं । तुम कुल का नाम बनाये रखने वाले इस गर्भ की रक्षा किये रहना । उसे तुम अपने पिता के घर रख देना । कदाचित् इस लोक से प्रस्थान किये (स्वर्गवासी) पाण्डुवंश का तथा हम सबका जलदान करने वाला वही बने ।

युधिष्ठिर—(रोते हुये) हाय कष्ट है ।

शाखाओं के फैलाव से भूमण्डल को आच्छादित कर देने वाले, दिशाओं को अलंकृत करने वाले, स्थूल तने वाले, भली प्रकार विशाल जड़ों तक थलहे बँधे हुये विशाल वृक्ष के

दग्धे दैवात्सुमहति तरौ तस्य सूक्ष्माङ्कुरेऽस्मि-

न्नाशाबन्धं कमपि कुरुते छाययाऽर्थी जनोऽयम् ॥ २६ ॥

साधु। इदानीमध्यवसितं करणीयम्। (कञ्चुकिनमवलोक्य।) आर्य जयन्धर ! स्वशरीरेण शापितोऽसि, तदाऽपि न गम्यते।

येन सः, तस्मिन् (शाखाओं के अवरोध से भूमण्डल को छा देने वाले)। मण्डिताशे—मण्डिताः = अलङ्कृता आशाः = दिशः येन सः, तस्मिन् (दिशाओं को शोभित किये)। पीनस्कन्धे—पीनः = पुरिपुष्टः स्कन्धः = तरुकाण्डः तस्य तस्मिन् (मोटे तने वाले) सुसदृशमहामूलपर्यन्तबन्धे—सुसदृशानि = सुयोग्यानि महामूलानि = विशालजडानि, तेषां पर्यन्तेषु बन्धः = अन्तर्बन्धः आलवालरचना यस्य सः, तस्मिन् (सुयोग्य विशाल जड़ों के चारों ओर बँधे थलहों वाले) तरौ = पादपे (वृक्ष) दैवात् = संयोगात् (दैवयोग से)। दग्धे = ज्वलिते सति (जल जाने पर)। अयम् = एषः छायया = अनातपेनार्थी = आकांक्षी (छाया का इच्छुक) जनः = लोकः तस्य (व्यक्ति) अस्मिन् = एतस्मिन् सूक्ष्माङ्कुरे = क्षीणाङ्कुरे गर्भस्थे शिशो (इस गर्भस्थ बच्चे पर)। कम् अपि = विशिष्टम् (कोई) आशाबन्धम्—आशायाः बन्धम् = बन्धनम्। कुरुते = करोति (कह रहा है)। अत्र रूपकालङ्कारः। मन्दाक्रान्ता वृत्तम् ॥ २६ ॥

इदानीम् = साम्प्रतम् (अब)। अध्यवसितम् = यन्निश्चितम् (तत्) करणीयम् = सम्पादनीयम् (निश्चित कार्य करना चाहिये)। कञ्चुकिनम् = जयन्धर-नामानम् (कञ्चुकी को) अवलोक्य = दृष्ट्वा (देखकर) स्वशरीरेण = आत्म-देहेन शापितः = दत्तशपथः असि (अपनी देह की सौगन्ध दिलाई है) तथापि = एतत्कृतेऽपि (फिर भी) न गम्यते = गमनं न क्रियते (नहीं जा रहे हो)।

दैवात् नष्ट हो जाने पर उसके सूक्ष्म अंकुर पर यह कोई छाया चाहने वाला व्यक्ति विचित्र आशा बाँध रहा है। अर्थात् यह द्रौपदी इतने विशाल पाण्डुवंश के नष्ट हो चुकने पर अब चार मास के गर्भस्थ भ्रूण पर आशा लगा रही है ॥ २६ ॥

अच्छा ! तो अब अपना निश्चय (आत्मदाह) पूरा करना चाहिये। (कञ्चुकी को देखकर) आर्य जयन्धर ! अपने शरीर की सौगन्ध तुम्हें दी है फिर भी तुम जा नहीं रहे हो।

कञ्चुकी—(साक्रन्दम् ।) हा देव पाण्डो ! तव सुतानामजातशत्रुभीमार्जुननकुलसहदेवानामयं दारुणः परिणामः ।

हा । देवि कुन्ति ! भोजराजभवनपताके !

भ्रातुस्ते तनयेन शौरिगुरुणा श्यालेन गाण्डीविन-
स्तस्यैवाऽखिलधार्तराष्ट्रनलिनीव्यालोलने दन्तिनः ।
आचार्येण वृकोदरस्य हलिनोन्मत्तेन मत्तेन वा,
दग्धं त्वत्सुतकाननं, ननु मही यस्याऽऽश्रयाच्छीतला ॥ २७ ॥

कञ्चुकी—साक्रन्दम् = आक्रन्दनेन सह (चिल्लाते हुये) हा देव पाण्डो = हा पाण्डुराज ! तव = ते सुतानाम् = पुत्राणाम् । अजातशत्रुभीमार्जुननकुलसहदेवानाम् = युधिष्ठिरादिपञ्चपाण्डवानाम् (युधिष्ठिरादि तुम्हारे पाँचों पुत्रों का) । अयम् = एषः (यह) दारुणः = भीषणः परिणामः = फलम् (भयंकर परिणाम है) ।

भोजराजभवनपताके—भोजराजस्य = कुन्तिभोजस्य भवने = प्रासादे पताका इव या तत्सम्बुद्धौ (हे भोजराज के भवन में पताका का सदृश) कुन्ति !

अन्वयः—ते भ्रातुः तनयेन शौरिगुरुणा गाण्डीविनः श्यालेन तस्य एव अखिलधार्तराष्ट्रनलिनीव्यालोलने दन्तिनः वृकोदरस्य आचार्येण हलिना उन्मत्तेन मत्तेन वा त्वत्सुतकाननं दग्धं यस्य आश्रयात् मही शीतला ननु ॥ २७ ॥

भ्रातुरिति । ते = तव भ्रातुः = बन्धोः तनयेन = सुतेन (तुम्हारे भाई के पुत्र) शौरिगुरुणा—शौरे = कृष्णस्य गुरुणा = अग्रजेन बलरामेण (कृष्ण के अग्रज) गाण्डीविनः = अर्जुनस्य श्यालेन = सुभद्राभ्रात्रा (सुभद्रा के भाई—अर्जुन के साले ने) तस्य = एतस्य एव (उसी) अखिलधार्तराष्ट्रनलिनीव्यालोलने—अखिलाः ये धार्तराष्ट्राः = निखिलधृतराष्ट्रसुताः दुर्योधनादयः, त एव नलिन्यः = कमलिन्यः तासां व्यालोलनम् = मन्थनम् तस्मिन् (समस्त धार्तराष्ट्ररूपी नलिनी

कञ्चुकी—(रोता चिल्लाता हुआ) हा देव पाण्डो ! तुम्हारे युधिष्ठिरादि पाँचों पुत्रों की यह दारुण दशा है ।

हा देवि कुन्ति ! भोजराजभवन की पताकासदृश !

तुम्हारे भाई (वसुदेव) के पुत्र, कृष्ण के अग्रज, गाण्डीवी अर्जुन के श्यालक (साले) बलभद्र ने उसी अखिल धार्तराष्ट्रकुल (कौरववंश) रूपी नलिनी को मथ डालने में हाथी के समान वृकोदर के उन्मत्त अथवा मदयुक्त होकर तुम्हारे पुत्ररूपी कानन को भस्म कर डाला, जिस (भीम) के आश्रय से पृथ्वी शान्त बनी हुई थी ॥ २७ ॥

(इति रुदन्निष्क्रान्तः ।)

युधिष्ठिरः—जयन्धर, जयन्धर !

(प्रविश्य ।)

कञ्चुकी—आज्ञापयतु देवः ।

युधिष्ठिरः—वक्तव्यमिति ब्रवीमि । न पुनरेतावन्ति भागधेयानि नः, यदि कदाचिद्विजयी स्याद्वत्सोऽर्जुनस्तद्वक्तव्योऽमद्वचनाद्भवता ।

को मथने में) दन्तिनः = करिण इव (हाथी के समान) वृकोदरस्य = भीमसेनस्य (भीम का) आचार्येण = गुरुणा । हलिना = बलरामेण (आचार्य बलभद्र ने) । उन्मत्तेन = मदयुक्तेन मत्तेन = क्षीबेन वा (मदयुक्त अथवा पागल बनकर) त्वत्सुतकाननम्—तव सुताः=पुत्रा एव काननम्=अरण्यम् तत् (तुम्हारे सुतरूपी कानन को) दग्धम् = भस्मसात्कृतम् (जला डाला) । यस्य = भीमस्य (जिसके) आश्रयात्=आश्रयणात् (सहारे से) । मही = भूः । शीतला = शान्ता (आसीत्) । ननु = खलु । सर्वथाऽनुचितं तेन कृतमिति । अत्र विषमालङ्कारः । शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम् ॥ २७ ॥

युधिष्ठिरः—जयन्धर = कञ्चुकिन् (हे जयन्धर) ।

कञ्चुकी—देवः = महाराजः (आप) आज्ञापयतु = आदिशतु (आज्ञा दीजिये) ।

युधिष्ठिरः—वक्तव्यम् = कथनीयम् (कहने योग्य बात) । ब्रवीमि = कथयामि (कहता हूँ) । नः = अस्माकम् (हमारे) । एतावन्ति भागधेयानि = भाग्यानि (इतने बड़े भाग्य) । न=न सन्ति (नहीं हैं) । कदाचित् = कदापि । सः = असौ वत्सोऽर्जुनः = प्रियकिरीटी (वह अर्जुन) विजयी स्यात् = जयी भवेत् (जीत जाये) तत् = तदा (तो) अस्मद्वचनात् = मम कथनात् (मेरे कहने में) भवता = त्वया । सः वक्तव्यः = कथनीयः (उनसे कह देना) ।

(इस प्रकार रोता हुआ निकल जाता है ।)

युधिष्ठिर—जयन्धर ! जयन्धर !

(प्रवेश कर)

कञ्चुकी—देव ! आज्ञा दीजिये ।

युधिष्ठिर—कहने योग्य बात कह रहा हूँ । पहले तो इतने बड़े हमारे भाग्य ही नहीं हैं (कि हम जीत पायें) । यदि कदाचित् वत्स अर्जुन विजयी हो जाये तो हमारे कहने से आप उनसे कह देना—

हली हेतुः सत्यं भवति मम वत्सस्य निधने,
तथाऽप्येष भ्राता सहजसुहृदस्ते मधुरिपोः।
अतः क्रोधः कार्यो न खलु मयि चेत्प्रेम भवतो,
वनं गच्छेर्मा गाः पुनरकरुणां क्षात्रपदवीम् ॥ २८ ॥

कञ्चुकी—यदाज्ञापयति देवः । (इति निष्क्रान्तः ।)

अन्वयः—मम वत्सस्य निधने हली सत्यं हेतुः भवति तथाऽपि एषः ते सहज-सुहृदः मधुरिपोः भ्राता । अतः क्रोधः न कार्यः । चेत् भवतः मयि प्रेम (तर्हि) वनं गच्छेः पुनः अकरुणां क्षात्रपदवीं मा गाः ॥ २८ ॥

हलीति । मम = मे युधिष्ठिरस्य (मेरे) । वत्सस्य = अनुजस्य भीमसेनस्य (अनुज के) निधने = मृत्यौ (निधन में) हली = बलभद्रः । सत्यम् = तथ्यम् (सचमुच) हेतुः भवति = कारणं भवति (कारण बने हैं) । तथापि=एवत्कृतेऽपि (फिर भी) एषः=अयम् हली (यह) ते सहजसुहृदः=सहजमित्रस्य (स्वाभाविक मित्र) मधुरिपोः—मधोः = मधुदैत्यस्य रिपोः = शत्रोः श्रीकृष्णस्य (मधुरिपु कृष्ण के) भ्राताः = अग्रजः (भाई हैं) । अतः = अस्माद् हेतोः (इसलिए) । क्रोधः = कोपः । न कार्यः = न विधेयः (नहीं करना चाहिये) । चेत् = स्यात् (यदि) । भवतः = श्रीमतः (आपका) । मयि = ममोपरि (मुझ पर) । प्रेम = प्रीतिः (प्रेम है) । (तर्हि) वनम् = अरण्यम् (वन को) । गच्छेः = व्रजेः (चले जाना) । पुनः = भूयः । अकरुणाम् = निष्ठुराम् (निष्करुण) । क्षात्रपदवीम् = क्षत्रियोचितां पद्धतिम् युद्धं कर्तुमिति भावः (क्षत्रियोचित आचरण को) । मा गाः = मा गमिष्यति (मत जाना) । अत्र काव्यलिङ्गमलङ्कारः । शिखरिणी वृत्तम् ॥ २८ ॥

कञ्चुकी—यत् = यथा । आज्ञापयति = आदिशति (आज्ञा देते हैं) । देवः = महाराजः ।

मेरे अनुज भीम के निधन में हली (बलराम) वास्तव में कारण होते हैं । फिर भी यह तुम्हारे स्वाभाविक मित्र मधुरिपु श्रीकृष्ण के भ्राता हैं । अतः तुम्हें उन पर क्रोध नहीं करना चाहिये । यदि तुम्हें मुझ पर प्रेम है तो वन को भले ही चले जाओ पर (बदला लेने) क्षत्रिय आचरण (संग्राम) करने मत जाना ॥ २८ ॥

कञ्चुकी—जैसी महाराज की आज्ञा । (यह कह कर निकल जाता है ।)

युधिष्ठिरः—(अग्निं दृष्ट्वा, सहर्षम् ।) कृष्णे ! ननूद्धतशिखाहस्ताऽऽहूताऽस्मद्विधव्यसनिजनः समिद्धो भगवान्हुताशनस्तत्रेन्धनीकरोम्यात्मानम् ।

द्रौपदी—प्पसीददु प्पसीददु महाराओ इमिणा अपच्छिमेण पणएण । अहं दाव अग्गदो प्पविसामि । [प्रसीदतु, प्रसीदतु महाराजोऽनेनाऽपश्चिमेन प्रणयेन । अहं तावदग्रतः प्रविशामि ।]

युधिष्ठिरः—यद्येवं सहितावेवाभ्युदयमुपभोक्ष्यावहे ।

चेटी—हा भअवन्तो लोअवाला ! परित्ताअह, परित्ताअह । एसो क्खु सोमवंसराएसी राअसूअसंतप्पिदहव्ववाहो खंडवसंतप्पिदहुदवहस्स किरीडिणो जेट्ठो भादा सुग्गहीदणामहेओ महाराअजुहिट्ठिरो । एसा वि पांचाल-

---

युधिष्ठिरः—अग्निम् = वह्निम् (आग को) दृष्ट्वा = अलोक्य (देखकर) सहर्षम् = सानन्दम् । कृष्णे = द्रौपदि ! ननु = किल । उद्धतशिखाहस्ताऽऽहूताऽस्मद्विधव्यसनिजनः—उद्धताः = प्रौढाः याः शिखाः, ताः एव हस्ताः = कराः, तैः आहूताः = आकारिताः अस्मद्विधाः = मादृशाः व्यसनिजनाः = दुःखितजनाः येन सः तथोक्तः (उठ रहे अग्निशिखा रूपी हाथों से मेरे जैसे दुःखी व्यक्तियों को बुलाने वाले) भगवान् हुताशनः = भगवान् अग्निदेवः । तत्र = तस्मिन् (उसमें) आत्मानम् = एवम् (अपने को) । इन्धनीकरोमि = भस्मसात् करोमि (भस्म किये देता हूँ) ।

द्रौपदी—प्रसीदतु = प्रसन्नो भवतु (प्रसन्न हो जायें) महाराजः = देवः (आप) । अनेन = एतेन (इस) अपश्चिमेन = प्रथमेन प्रणयेन = प्रेम्णा वाञ्छया वा (प्रथम अभिलाषा से) । अहम् = द्रौपदी । अग्रतः = प्राक् (पहले) ।

युधिष्ठिरः—सहितौ = समौ (एक साथ दोनों) । अभ्युदयम् = अग्निप्रवेशानन्दम् उपभोक्ष्यावहे = उपभोगमनुभविष्यावहे (उपभोग करेंगे) ।

चेटी—भगवन्तः = देवाः लोकपालाः = लोकरक्षकाः (हे भगवान् लोक

युधिष्ठिर—(अग्नि को देखकर, सहर्ष) कृष्णे ! यह भगवान् अग्निदेव अपने शिखा रूपी हाथों को उठाकर हमारे जैसे दुःखी लोगों को बुला रहे हैं । उसमें अपने को भस्म किये देता हूँ ।

द्रौपदी—महाराज मेरी पूर्व (प्रथम) प्रार्थना को स्वीकार करने की कृपा कीजिये, प्रसन्न हो जाइये । मैं प्रथम प्रवेश करूँगी ।

युधिष्ठिर—यदि ऐसा है तो हम दोनों एक साथ ही सुख का उपभोग करें ।

चेटी—हाय देव लोकपालो ! बचाओ । यह सोमवंशी राजर्षि राजसूय यज्ञ में अग्नि-

राअतणआ देवी वेदिमज्जसंभवा जण्णसेणी। दुवे वि सरीरेण णिक्करुणजलणस्स प्पवेसेण इन्धणीहोन्ति। ता परित्ताअह अज्जा! परित्ताअह। कधं ण को वि परित्ताअदि। (तयोरग्रतः पतित्वा।) किं ववसिदं देवीए देवेण अ। [हा भगवन्तो लोकपालः! परित्रायध्वं परित्रायध्वम्। एष खलु सोमवंशराजर्षी राजसूयसन्तर्पितहव्यवाहः खाण्डवसन्तर्पितहुतवहस्य किरीटिनो ज्येष्ठो भ्राता सुगृहीतनामधेयो महाराजयुधिष्ठिरः। एषाऽपि पाञ्चालराजतनया देवी वेदिमध्यसम्भवा याज्ञसेनी। द्वावपि शरीरेण निष्करुणज्वलनस्य प्रवेशेनेन्धनीभवतः। तत्परि-

---

पालो!)। परित्रायव्वम् = त्रायध्वम् (बचाओ)। सोमवंशराजर्षिः = सोमवंशजातः राजर्षिः राजसूयसन्तर्पितहव्यवाहः—राजसूययज्ञे सन्तर्पितः = तृप्तिं गमितः हव्यवाड् = अग्निः येन सः (राजसूय यज्ञ में अग्निदेव को तृप्त किये हुये)। खाण्डवसन्तर्पितहुतवहस्य खाण्डवेन = खाण्डववनेन सन्तर्पितः = तृप्तिं प्रापितः, हुतवहः = अग्निः येन स, तस्य (खाण्डववन से अग्निदेव को सन्तुष्ट किये हुये)। किरीटिनः = अर्जुनस्य (अर्जुन के)। ज्येष्ठो भ्राता = अग्रजो युधिष्ठिरः (बड़े भाई)। सुगृहीतनामधेयः—सुगृहीतम् = सुधन्यं भूतम् नामधेयम् = अभिधानम् यस्य सः = प्रातःस्मरणीयः। एषा = इयम् पाञ्चालराजतनया—पाञ्चालराजस्य= = द्रुपदस्य तनया = दुहिता। देवी = महाराज्ञी वेदिमध्यसम्भवा—वेदिमध्यात् = यज्ञवेद्याः सम्भवा = समुत्पन्ना। याज्ञसेनी = द्रौपदी (याज्ञवेदी से उत्पन्न हुई याज्ञसेनी द्रौपदी)। द्वावपि = द्रौपदीयुधिष्ठिरावपि। शरीरेण = देहेन (शरीर से)। निष्करुणज्वलनस्य—निष्करुणः = निर्दयः यः ज्वलनः = वह्निः, तस्य (निर्दय अग्नि के)। प्रवेशेन = अन्तर्वेशेन (प्रवेश करके)। इन्धनीभवतः =

देव को प्रसन्न किये हुये खाण्डव वन से अग्निदेव को प्रसन्न करने वाले किरीटी (अर्जुन) के ज्येष्ठ भ्राता स्वनामधन्य महाराज युधिष्ठिर हैं। और यह पांचाल राजपुत्री देवी, यज्ञवेदी से उत्पन्न हुई याज्ञसेनी (द्रौपदी) हैं। यह दोनों ही निर्दय अग्नि में प्रवेश करने, अपने को भस्म करने जा रहे हैं। अतः आप बचा लें, बचा लें। ऐं! क्या कोई भी रक्षा नहीं कर रहा है? (उन दोनों के आगे गिरकर) महारानी तथा महाराज ने यह क्या करने का निश्चय किया है?

टिप्पणी—खाण्डववन०—कुरुक्षेत्र में एक वन भाग जो कि इन्द्र का मित्र माना जाता था। इसे अर्जुन तथा कृष्ण के सहयोग से अग्नि ने जला डाला था। यह कथा महाभारत आदि पर्व में मिलती है।

यज्ञवेदिमध्यसम्भवा—याज्ञसेनी। एक बार द्रोणाचार्य ने अपने परमवीर शिष्य अर्जुन से गुरु दक्षिणा के बदले में अपने पुराने वैर का बदला लेने के लिए द्रुपद (विराट

त्रायध्वमार्याः ! परित्रायध्वम् । कथं न कोऽपि परित्रायते ? किं व्यवसितं देव्या देवेन च ।

युधिष्ठिरः—अयि बुद्धिमतिके ! यन्नाथेन प्रियाऽनुजेन विना सदृशं तत् । उत्तिष्ठोत्तिष्ठ, भद्रे ! उदकमुपानय ।

चेटी—जं देवो आणवेदी । (इति निष्क्रम्य, पुनः प्रविश्य च) जेदु जेदु महाराओ । [यद्देव आज्ञापयति । जयतु जयतु महाराजः ।]

युधिष्ठिरः—पाञ्चालि ! त्वमपि तावत् स्वपक्षपातिनो वृकोदरस्य प्रियस्याऽर्जुनस्योदकक्रियां कुरु ।

आत्मानौ भस्मसात् कुरुतः (अपने को भस्म करने जा रहे हैं) । कोऽपि = कश्चिदपि जनः (कोई भी) । न परित्रायते = न रक्षते (नहीं बचा रहा है) । तयोः = उभयोः (उन दोनों के) । अग्रतः = सम्मुखम् (आगे) । पतित्वा = पतनं कृत्वा (गिरकर) । देव्या = महाराज्ञ्या (देवी ने) । देवेन = महाराजेन च (तथा महाराज ने) । किं व्यवसितम् = किं निश्चितम् (क्या करने को निश्चय किया है) ।

युधिष्ठिरः—बुद्धिमतिके = तन्नाम चेटि ! नाथेन = स्वामिना विना द्रौपद्या । प्रियानुजेन = प्रियभीमेन विना मया च यद् उचितम् तत् सदृशम् = तदनुकूलम् निश्चितम् । भद्रे = कल्याणिनि ! उदकम् = जलम् । उपानय = आहर (ले आ) ।

चेटी—निष्क्रम्य = निर्गत्य (निकल कर) । जयतु = विजयताम् (जय हो) ।

युधिष्ठिरः—पाञ्चालि = हे द्रौपदि ! स्वपक्षपातिनः = निजपक्षपातकारिणः ।

युधिष्ठिर—अरी बुद्धिमतिके ! जो स्वामी के बिना द्रौपदी को करना चाहिये तथा जो प्रिय अनुज के बिना मुझे करना चाहिये वही उचित कार्य कर रहा हूँ । उठ, उठ । भद्रे ! जल ले आ ।

चेटी—जो महाराज की आज्ञा । (यह कहकर निकल कर तथा पुनः प्रवेश कर) जय हो, महाराज की जय हो ।

युधिष्ठिर—हे पान्चालि ! तब तक तुम भी अपने पक्षपाती वृकोदर तथा प्रिय अर्जुन का तर्पण कर लो ।

नरेश) को बाँध कर लाने की आज्ञा दी थी । तदनुसार अर्जुन ने किया । अपमनित राजा द्रुपद ने 'याज' तथा 'अनुयाज' ऋषियों की सहायता से द्रोणाचार्य का संहार करने वाले पुत्र तथा अर्जुन को ब्याही जाने वाली पुत्री की प्राप्ति-कामना से यज्ञ किया । उसी यज्ञ की शिखाओं (लपटों) से द्रोणाचार्य का वध करने वाला धृष्टद्युम्न पुत्र तथा यज्ञवेदी के मध्य भाग से द्रौपदी पुत्री उत्पन्न हुई थी । यह कथा महाभारत के आदि पर्व में आती है ।

द्रौपदी—महाराओ एव्व करेदु। अहं उण जलणं पविसिस्सम्। [महाराज एव करोतु। अहं पुनर्ज्वलनं प्रवेक्ष्यामि।]

युधिष्ठिरः—अनतिक्रमणीयं लोकवृत्तम्। भद्रे! उदकमुपानय।

(चेटी तथा करोति।)

युधिष्ठिरः—(पादौ प्रक्षाल्योपस्पृश्य च।) एष तावत्सलिलाञ्जलिर्गाङ्गेयाय भीष्माय गुरवे। अयं प्रपितामहाय शान्तनवे। अयमपि पितामहाय विचित्रवीर्याय। (सास्रम्) तातस्याऽधुनाऽवसरः। अयं तावत्स्वर्गस्थिताय सुगृहीतनाम्ने पित्रे पाण्डवे।

वृकोदरस्य = भीमसेनस्य। प्रियस्यार्जुनस्य = प्रियकिरीटिनः। उदकक्रियाम् = जलाञ्जलिदानम् (तर्पणम्) कुरु = विधेहि (तर्पण कर लो)।

द्रौपदी—महाराज एव = देव युधिष्ठिर एव (महाराज ही)। करोतु = विदधातु (करें)। ज्वलनम् = वह्निम् (अग्नि को) प्रवेक्ष्यामि = प्रवेशं करिष्यामि (प्रवेश करूँगी)।

युधिष्ठिरः—लोकवृत्तम् = लोकाचारः। अनतिक्रमणीयम् = अनुल्लंघनीयम् (उलंघन नहीं करना चाहिये)।

युधिष्ठिरः—पादौ = चरणौ (पाँव) प्रक्षाल्य = प्रधाव्य (धोकर) उपस्पृश्य = आचम्य (आचमन कर) एषः=अयम् (यह) सलिलाञ्जलिः = जलाञ्जलिः (जल की अंजलि) गाङ्गेयाय = गङ्गापुत्राय। भीष्माय = भीष्मपितामहाय गुरवे = वृद्धाय। प्रपितामहाय = पितुः पितामहाय। शान्तनवे = शान्तनुनृपाय (परदादा शान्तनु के लिए)। पितामहाय—पितुः = पाण्डोः पित्रे=विचित्रवीर्याय सास्रम् = अश्रुपातं कुर्वन् (रोते हुये)। अधुना = सम्प्रति (अब) तातस्य = जनकस्य (पिताजी का) अवसरः = जलदानावसरः (जलाञ्जलि देने का अवसर है)। स्वर्गस्थिताय = स्वर्गवासिने (स्वर्गगामी) सुगृहीतनाम्ने=प्रातःस्मरणीयाय पित्रे = जनकाय। पाण्डवे = पाण्डुनृपाय (महाराज पाण्डु के लिए)।

द्रौपदी—महाराज ही करें। मैं पुनः अग्नि में प्रवेश करूँगी।

युधिष्ठिर—लोकाचार का उल्लंघन नहीं करना चाहिये। जल ले आ।

(चेटी वैसा ही करती है)

युधिष्ठिर—(पैर धोकर तथा आचमन कर) यह जलांजलि गंगापुत्र भीष्म को, तथा यह वृद्ध प्रपितामह शान्तनु के लिये है। यह पितामह विचित्रवीर्य के लिये भी दे रहा हूँ। (आँसू भरकर) अब पिताजी का अवसर है। यह जलांजलि स्वर्ग में स्थित स्वनामधन्य पिता पाण्डुजी के लिये है।

अद्य प्रभृति वारीदमस्मत्तो दुर्लभं पुनः ।
तात ! माद्रयाऽम्बया सार्धं मया दत्तं निपीयताम् ।। २९ ।।

एतज्जलं जलजनीलविलोचनाय,
भीमाय भोस्तव ममाऽप्यविभक्तमस्तु ।
एकं क्षणं विरम वत्स ! पिपासितोऽपि
पातुं त्वया सह जवादयमागतोऽस्मि ।। ३० ।।

अन्वयः—तात ! अद्य प्रभृति अस्मत्तः पुनः दुर्लभम् इदं वारि, (तत्) इदं मया दत्तम् (वारि) अद्य अम्बया सार्धं निपीयताम् ।। २९ ।।

अद्येति । तात = पितः (हे पिता जी) । अद्यप्रभृति = अद्य दिनादारभ्य (आज से) अस्मत्तः = मम पार्श्वात् (मुझ से) पुनः = भूयः । दुर्लभम् = दुष्प्राप्यम् (दुर्लभ) इदम् = एतत् वारि = जलम् (यह जल दुर्लभ है) (तत्) इदम् = एतत् । मया = युधिष्ठिरेण तव सुतेन (मेरे द्वारा) दत्तम् = समर्पितम् (दिया गया) अद्य = अद्य दिनम् (आज) । अम्बया सार्धम् = जनन्या माद्रया सहितम् (माताजी के साथ) निपीयताम् = त्वया पीयताम् (पिया जाये) । अत्र काव्यलिङ्गमलङ्कारः । पथ्यावक्त्रं वृत्तम् ।। २९ ।।

अन्वयः—एतत् जलं जलजनीलविलोचनाय भीमाय (ददामि) भोः ! तव मम अपि अविभक्तम् अस्तु । पिपासितः अपि (त्वम्) एकं क्षणं विरम । वत्स ! त्वया सह पातुम् अयम् अहम् जवात् आगतः अस्मि ।। ३० ।।

एतदिति । एतत् = इदम् (यह) । जलम् = वारि (जल) । जलजनीलविलोचनाय—जलज इव नीले विलोचने यस्य सः, तस्मै=कमलनीलनयनाय (नीलकमल के समान नेत्रों वाले) भीमाय = वृकोदराय (भीम के लिए) (ददामि) भोः = हे भीम ! तव = ते (तुम्हारा) मम अपि = मे युधिष्ठिरस्यापि (मेरा भी) अविभक्तम् = अपृथक्, सम्मिलितमिति (मिला-जुला) (अस्तु) । पिपासितः = तृषार्तः अपि (प्यासे होकर भी) । (त्वम्) एकं क्षणम् = निमिषमात्रम्

हे तात ! आज से मुझ से आप को यह जल नहीं मिल सकेगा । अतः यह मेरे द्वारा दिया गया जल आज माता माद्री के साथ (स्वर्ग में) प्राप्त कीजिये ॥ २९ ॥

यह जलाञ्जलि कमल के समान नीले नयनों वाले भीमसेन के लिये दे रहा हूँ । हे भीम (यह) तुम्हें तथा मुझे एक साथ ही प्राप्त हो (अतः) प्यासे होते हुये भी तुम क्षण भर मेरी प्रतीक्षा करो । वत्स ! मैं तुम्हारे साथ जलांजलि लेने को यह अभी (शीघ्र ही) आ रहा हूँ ॥ ३० ॥

अथवा सुक्षत्रियाणां गतिमुपगतं वत्समहं मृतोऽप्यक्ती द्रष्टुम्। वत्स भीमसेन !

मया पीतं पीतं तदनु भवताऽम्बास्तनयुगं,
मदुच्छिष्टैर्वृत्तिं जनयसि रसैर्वत्सलतया।
वितानेष्वप्येवं तव मम च सोमे विधिरभू-
न्निवापाऽम्भः पूर्वं पिबसि कथमेवं त्वमधुना ॥ ३१ ॥

(क्षण भर को) विरम = प्रतीक्षस्व (ठहरो, प्रतीक्षा करो)। वत्स = तात ! त्वया सह = त्वत्साकम् (तुम्हारे साथ) पातुम् = पानं कर्तुम् (पीने को)। जवात् = द्रुतम् (शीघ्रता से)। अयम् = एषः (यह) अहम् = युधिष्ठिरः (मैं) आगतः अस्मि = आयातः अस्मि। वसन्ततिलका वृत्तम् ॥ ३० ॥

सुक्षत्रियाणाम् = उत्तमक्षत्रियवीराणाम् (उत्तम क्षत्रियों की)। गतिम् = दशाम् (दशा को) उपगतम् = प्राप्तम् (पहुँचे हुये)। वत्सम् = प्रियानुजम् भीमम् (प्रिय भीम को) द्रष्टुम् = अवलोकितुम् (देखने को)। (अहम्) मृतः अपि अलम् अक्ती = व्यर्थं असमर्थः (अस्मि)।

अन्वयः—अम्बास्तनयुगं मया पीतं तदनु भवता पीतम्। वत्सलतया मदुच्छिष्टैः रसैः वृत्तिं जनयसि, वितानेषु अपि सोमे तव मम च एवं विधिः अभूत्। अधुना त्वम् एवं कथं निवापाम्भः पूर्वं पिबसि ॥ ३१ ॥

मयेति । अम्बास्तनयुगम्—अम्बायाः = जनन्याः स्तनयोः = पयोधरयोः

अथवा क्षत्रियों की उत्तम गति को प्राप्त हुये (स्वर्गगामी) भीमसेन को अग्नि में जल कर भी नहीं देख पा सकूँगा। वत्स भीमसेन !

माता जी के स्तनयुगल को मेरे द्वारा पी लिये जाने के बाद ही तुम पिया करते थे। वात्सल्य भाव से मेरे खाने के पश्चात् बचे (जूठे) दूध आदि रसों से तुम अपना निर्वाह कर लिया करते थे। यज्ञों में भी सोमरस पान करने में तुम्हारी तथा हमारी यही परिपाटी (क्रम) रहती थी। अब तुम इस प्रकार निवापाञ्जलि पहले कैसे पीने लगे हो क्रमानुसार तो यह प्रथम मुझे ही लेनी चाहिये थी ॥ ३१ ॥

टिप्पणी—वितानों में सोम—सोमरस सोमलता को कूट कर एक प्रकार के निकाले गये रस (औषधि) को यज्ञ कार्य में पीने की अतिप्राचीन (वैदिक) प्रथा रही होगी। सोम का तात्पर्य मद्य से कदापि नहीं है। सम्भवतः प्रकृतनाटक के रचना-काल मे भी यह प्रथा पाई जाती होगी। अतः नाटककार ने इसका वर्णन किया है। अब यज्ञों में सोम पान का विधान नहीं है। कदाचित् 'संश्रव-प्रास' से यही तात्पर्य रहा हो जो कि यज्ञान्त में ही किया जाता है।

कृष्णे ! त्वमपि देहि सलिलाञ्जलिम् ।

द्रौपदी—हञ्जे बुद्धिमदिए ! उवणेहि मे सलिलम् । [हञ्जे बुद्धिमतिके ! उपनय मे सलिलम् ।]

(चेटी तथा करोति)

द्रौपदी—(उपसृत्य, जलाञ्जलिं पूरयित्वा) महाराअ ! कस्स सलिलं देम्हि । [महाराज, कस्य सलिलं ददामि ।]

युगम् = युगलम् (माताजी के दोनों स्तनों को) मया = युधिष्ठिरेण (मेरे द्वारा) पीतम् = कृतपानम् (पी लेने पर) तदनु = तदनन्तरम् (उसके बाद) भवता = त्वया भीमेन (आपने) पीतम् (पिया) । वत्सलतया = वात्सल्यभावेन (वत्सलता के कारण) । मदुच्छिष्टैः = मद्भुक्तावशिष्टैः (मेरे खाने से बचे) रसैः = दुग्धादिपदार्थैः (दूध आदि रसों से) । वृत्तिम् = जीवनम् जनयसि = धारयसि (निर्वाह किया करते थे) ('वृत्ति वर्तनजीवने' इत्यमरः) । वितानेषु = यज्ञेषु (यज्ञों में) अपि । सोमे = सोमरसपाने (सोमरस पान करने में) । तव = ते । मम = मे च (तुम्हारी तथा मेरी) । एवं विधिः = एषा परिपाटी (यही पद्धति) । अभूत् = आसीत् (रही) । अधुना = साम्प्रतम् (अब) । त्वम् = भीमः एवम् = इत्थम् (इस प्रकार) कथम् (कैसे) । निवापाम्भः = निवापजलम् (निवापांजलि) । पूर्वम् = प्रथमम् (पहले) पिबसि = पानं करोसि (पी रहे हो) । अनुपानपद्धतिः भवता कथं परित्यक्तेत्यर्थः । अत्र काव्यलिङ्गमलङ्कारः । शिखरिणी वृत्तम् ।। ३१ ।।

कृष्णे = द्रौपदि ! । सलिलाञ्जलिम् = जलाञ्जलिम् (जलाञ्जलि) देहि = वतर (दो) ।

द्रौपदी—मे = मम (मेरे लिए) । सलिलम् = जलम् । उपनय = आहर (ले आ) ।

उपसृत्य = पार्श्वं गत्वा (समीप जाकर) । पूरयित्वा = भृत्वा (भर कर) ।

हे कृष्णे ! तुम भी जलाञ्जलि प्रदान करो ।

द्रौपदी—अरी बुद्धिमतिके ! मेरे लिए जल ले आ ।

(चेटी जल ले आती है)

द्रौपदी—(आगे बढ़ कर, जलाञ्जलि भरकर) महाराज ! किसे जल दूँ ?

युधिष्ठिरः—

तस्मै देहि जलं कृष्णे ! सहसा गच्छते दिवम् ।
अम्बाऽपि येन गान्धारीरुदितेन सखीकृता ॥ ३२ ॥

द्रौपदी—णाह भीमसेण ! परिअणोवणीदं उदअं सग्गगदस्स दे पादोदअं भेदु । [**नाथ भीमसेन ! परिजनोपनीतमुदकं स्वर्गंगतस्य ते पादोदकं भवतु ।**]

युधिष्ठिरः—फाल्गुनाऽग्रज !

असमाप्तप्रतिज्ञेऽपि याते त्वयि महाभुजे ।
मुक्तकेश्यैव दत्तस्ते प्रियया सलिलाञ्जलिः ॥ ३३ ॥

अन्वयः—हे कृष्णे ! सहसा दिवं गच्छते तस्मै (भीमाय) जलं देहि येन अम्बा अपि गान्धारीरुदितेन सखीकृता ॥ ३२ ॥

तस्य इति । हे कृष्णे = द्रौपदि ! सहसा = झटिति । दिवम् = स्वर्गम् गच्छते = प्रस्थिताय तस्मै = भीमाय (स्वर्ग को गये उन भीम के लिए) जलम् = निवापाञ्जलिम् । देहि = प्रयच्छ (दो) । येन = भीमसेनेन (जिन्होंने) अम्बा अपि = जननी कुन्त्यपि (माँ कुन्ती को भी) । गान्धारीरुदितेन—गान्धार्याः = दुर्योधनजनन्याः रुदितेन = रोदनेन (गान्धारी के रोदन ने) । सखीकृता = समीकृता (अपने जैसी रोने वाली बना लिया) । पथ्यावक्त्रं वृत्तम् ॥ ३२ ॥

द्रौपदी—नाथ = स्वामिन् ! भीमसेन = वृकोदर ! परिजनोपनीतम्—परिजनेन = भृत्येन उपनीतम् = आहृतम् (परिजन द्वारा लाया गया) उदकम् = जलम् (जल) ते = तव (तुम्हारा) पादोदकम् = चरणप्रक्षाल्यजलम् (पाँव धोने का पानी) भवतु = अस्तु ।

युधिष्ठिरः—फाल्गुनाग्रज—फाल्गुनस्य = अर्जुनस्य अग्रजः, तत्सम्बुद्धौ (हे अर्जुन) ।

अन्वयः—असमाप्तप्रतिज्ञे अपि महाभुजे त्वयि याते मुक्तकेश्याः एव ते प्रियया सलिलाञ्जलिः दत्तः ॥ ३३ ॥

समाप्तेति । असमाप्तप्रतिज्ञे अपि—न समाप्ता = पूरिता प्रतिज्ञा येन सः,

---

युधिष्ठिर—हे कृष्णे ! सहसा स्वर्ग को गये उन भीमसेन के लिए जल दो जिन्होंने माता कुन्ती को भी गान्धारी के रोदन के समान रोने वाला बन दिया है ॥ ३२ ॥

द्रौपदी—नाथ भीमसेन ! परिजन द्वारा लाया गया जल तुम्हारा पादोदक होवे ।

युधिष्ठिर—हे फाल्गुन (अर्जुन के) अग्रज !

प्रतिज्ञा पूरी न कर पाने पर भी महा बलशाली तुम्हारे स्वर्गवासी होने पर मुक्तकेशों वाली तुम्हारी प्रिया द्रौपदी द्वारा ही सलिलाञ्जलि दी जा रही है ॥ ३३ ॥

द्रौपदी—उट्ठेहि महाराअ ! दूरं गच्छदि दे भादा । [उत्तिष्ठ महाराज ! दूरं गच्छति ते भ्राता ।]

युधिष्ठिरः—(दक्षिणाऽक्षिस्पन्दनं सूचयित्वा ।) पाञ्चालि ! निमित्तानि मे कथयन्ति सम्भावयिष्यसि वृकोदरमिति । भवतु शीघ्रं दहनमुपसर्पावः ।

द्रौपदी—महाराअ ! सुणिमित्तं भोदु । [महाराज ! सुनिमित्तं भवतु ।]

(नेपथ्ये कलकलः ।)

(प्रविश्य संभ्रान्तः ।)

कञ्चुकी—परित्रायतां परित्रायतां महाराजः । एष खलु दुरात्मा

तस्मिन् (प्रतिज्ञा पूरी न कर पाने वाले भी) महाभुजे—महान्तौ भुजौ यस्य सः तस्मिन् = परमवीरे । त्वयि = भीमसेने । याते = स्वर्गं प्रस्थिते (स्वर्गवासी हो हो जाने पर) मुक्तकेश्याः—मुक्ताः = उन्मुक्ताः केशाः = कचाः यस्यास्तस्या (खुले वालों वाली) एव । ते = तव (तुम्हारी) प्रियया = प्रेयस्या द्रौपद्या (प्रिया द्रौपदी द्वारा) सलिलाञ्जलिः = जलाञ्जलिः दत्तः = प्रदत्तः (सलिलाञ्जलि दी गई है) । पथ्यावक्त्रं वृत्तम् ॥ ३३ ॥

द्रौपदी—ते = तव युधिष्ठिरस्य (तुम्हारे) भ्राता = बन्धुः (भाई भीम) दूरं गच्छति = दूरं स्वर्गं याति (दूर जा रहे हैं) ।

युधिष्ठिरः—निमित्तानि = मंगलसूचकानि (मांगलिक शकुन) मे = मह्यम् (मुझे) कथयन्ति = सूचयन्ति (सूचित कर रहे हैं) । वृकोदरम् = भीमम् (भीम को) सम्भावयिष्यसि = मिलिष्यसि (मिलोगी) । शीघ्रम् = द्रुतम् (शीघ्र) दहनम् = वह्निम् (अग्नि को) ।

द्रौपदी—सुनिमित्तम् = शुभशकुनम् (शुभ सगुन) भवतु = अस्तु (होवें) ।

कञ्चुकी—परित्रायताम् = रक्षताम् (बचाइये, रक्षा कीजिये) । दुरात्मा

द्रौपदी—उठो महाराज ! तुम्हारे भाई दूर जा रहे हैं ।

युधिष्ठिर—(दाहिनी आँख का फड़कना सूचितकर) हे पान्चालि ! शकुन मुझे बता रहे हैं कि तुम्हारा भीमसेन से मिलना होगा । अच्छा, शीघ्र अग्नि के समीप हम दोनों चलें ।

द्रौपदी—महाराज ! शुभ शकुन होवे ।

(नेपथ्य में कोलाहल होता है ।)

(प्रवेश कर, घबराया हुआ)

कञ्चुकी—महाराज ! बचाइये, बचाइये । यह दुरात्मा नीच कौरव रक्त से सराबोर

कौरवाऽपसदः क्षतजाऽभिषेकपाटलिताम्बरशरीरः समुच्छ्रितदिग्धभीषण-गदाऽशनिरुद्यतकालदण्ड इव कृतान्तोऽत्रभवतीं पाञ्चालराजतनयामितस्ततः परिमार्गमाण इत एवाऽभिवर्तते।

युधिष्ठिरः—हा दैव! तेन निर्णयो जातः। हा गाण्डीवधन्वन्! (इति मुह्यति।)

द्रौपदी—हा अज्जउत्त! हा मम सअम्बरसअंगाहदुल्ललिद! धनंजय! पिअं भादुअं अणुगदोसि। ण उण महाराअं, इमं दासजणं अ। (इति मोहमुपगता।) [हा आर्यपुत्र! हा मम स्वयंवरस्वयंग्राहदुर्लंलित! धनञ्जय! प्रियं भ्रातरमनुगतोऽसि। न पुनर्महाराजमिमं दासजनं च।]

=दुष्टः आत्मा यस्य सः (दुष्ट)। कौरवापसदः=कुरुनीचः (नीच कौरव)। क्षतजाभिषेकपाटलिताम्बरः—क्षतजेन=रुधिरेण यः अभिषेकः=स्नानम् तेन पाटलितानि=रक्तानि अम्बराणि=वस्त्राणि शरीरं च यस्य सः (खून से सरावोर होने के कारण लाल वस्त्रों व शरीर वाला)। समुच्छ्रितदिग्धभीषणगदापाणिः—समुच्छ्रिता=उत्थापिता दिग्धा=रक्तरंजिता भीषणा=भयङ्करी गदैवाशनिः=वज्रम् यस्य तथाविधः (खून से सनी भीषण गदारूपी वज्र उठाये हुये)। उद्यतकालदण्डः इव—उद्यतः=उत्तोलितः कालदण्डः=यमदण्ड इव (उठाये गये कालदण्ड के समान)। कृतान्तः=यमसदृशः (यमराज-सा)। भवतीम्=श्रीमतीम्। पाञ्चालराजतनयाम्=द्रौपदीम् (पाञ्चाली को) इतस्ततः=सर्वासु दिक्षु (इधर-उधर)। परिमार्गमाणः=अन्विष्यमाणः (ढूँढता हुआ)। इत एव=अमूं स्थानमेव (इधर को ही)। अभिवर्तते=आगच्छति (आ रहा है)।

युधिष्ठिरः—हा दैव=अहः भाग्य! तेन=तर्हि (तब तो) निर्णयो जातः=अर्जुनोऽपि निधनं गतः (फैसला हो गया)। हा गाण्डीवधन्वन्=हा किरीटिन्! इति=इत्थम् मुह्यति=मूर्च्छितो भवति (यह कहकर वेहोश हो जाते हैं)।

द्रौपदी—हा स्वयंवरस्वयंग्राहदुर्लंलित—स्वयंवरे=वरवरणपद्धतौ यः स्वयम्

लालवस्त्र तथा लाल शरीर वाला भीषण गदा रूपी वज्र को उठाये हुये कालदण्ड उठाये यमराज के समान देवी पाञ्चालराजतनया द्रौपदी को ढूँढता हुआ इधर ही आ रहा है।

युधिष्ठिर—हा दैव! इससे तो निर्णय हो चुका है? हा गाण्डीवधारिन्! (यह कहकर वेहोश हो जाते हैं)।

द्रौपदी—हा आर्यपुत्र! हा मेरे स्वयंवर में स्वयं मुझ दुर्लभ्या को ग्रहण करने वाले!

युधिष्ठिरः—हा वत्स सव्यसाचिन् ! हा त्रिलोचनाऽङ्गनिष्पेषमल्ल ! हा निवातकवचोद्धरणनिष्कण्टकीकृताऽमरलोक ! हा बदर्याश्रममुनिद्वितीय-तापस ! हा द्रोणाचार्यप्रियशिष्य ! हा अस्त्रशिक्षाबलपरितोषितगाङ्गेय !

=आत्मना ग्रहः=ग्रहणम् तत्र दुर्ललितः=दुराग्रहग्रहिलो यस्तत्सम्बुद्धौ (स्वयंवर में दुराग्रह कर स्वयं मुझे ग्रहण करने वाले)। धनञ्जय=अर्जुन ! प्रियम्= स्निग्धम् । भ्रातरम्=बन्धुं भीमसेनम् (प्रिय बन्धु को)। अनुगतोऽसि—अनु= पश्चात् गतः=प्रयातः असि (अनुगमन कर गये हो)। महाराजम्=पाण्डवज्येष्ठम् (युधिष्ठिर को)। इमम्=एतम् । दासजनम्=परिजनम् माम् नानुगतोऽसि । (इस सेवक जन मुझ द्रौपदी का साथ नहीं किया है)। मोहम्=मूर्च्छाम् । उपगता=प्राप्ता (वेहोश हो गई)।

युधिष्ठिरः—हा वत्स=हा तात ! सव्यसाचिन्=अर्जुन ! हा त्रिलोचनाङ्ग-निष्पेषमल्ल—त्रिलोचनस्य=शिवस्य अङ्गनिष्पेषे=अङ्गमर्दने मल्लस्तत्सम्बुद्धौ (हा शिव के अङ्ग को मर्दन करनेवाले वीर)! हा निवातकवचोद्धरणनिष्कण्टकी-कृतामरलोक !—निपातकवचौ=तन्नाम राक्षसौ, तयोरुद्धरणम्=नाशम्, तेन निष्कण्टीकृतः=निर्वैरिकृतः अमरलोकः=स्वर्गलोकः येन सः, तत्सम्बुद्धौ (हा निवात तथा कवचनामक राक्षसों के विनाश से अमरलोक को निष्कण्टक कर

धनञ्जय ! प्रियभाई भीम का अनुगमन किया है परन्तु महाराज तथा इस दासजन (मुझ सेविका) की ओर ध्यान तक नहीं दिया। (यह कहकर मूर्च्छित हो जाती है।)

युधिष्ठिर—हा भ्रातः अर्जुन ! हा शिवजी का अङ्गमर्दन करने वाले वीर ! हा निवात तथा कवच नामक राक्षसों के संहार से अमरलोक को निष्कण्टक कर देने वाले ! हा बदरी

टिप्पणी—सव्यसाची—बायें हाथ से भी अति द्रुतगति से बाण चलाने के कारण अर्जुन का सव्यसाची कहा जाता था।

त्रिलोचनाङ्गनिष्पेषमल्ल—पाशुपत अस्त्र प्राप्त करने से पूर्व अर्जुन का शिवजी के साथ घमासान युद्ध हुआ था तथा उस युद्ध में अर्जुन ने शिवजी का अपने पराक्रम से प्रसन्न कर लिया था।

निवात-कवच—भगवान् शिव से पाशुपत अस्त्र प्राप्त कर लौटते समय अर्जुन ने अपने पिता इन्द्र से स्वर्ग लोक में दिव्यास्त्रों की भी शिक्षा प्राप्त की तथा गुरु दक्षिणा में इन्द्र शत्रु निपात तथा कवच नामक राक्षसों का संहार किया था। यह कथा महाभारत के वन पर्व में आती है।

वदर्याश्रम तापस—पूर्व जन्म में वदरिकाश्रम पर अर्जुन तथा श्रीकृष्ण ने नरनारायण के रूप में तपस्या की थी।

हा राधेयकुलकमलिनीप्रालेयवर्ष ! हा गन्धर्वनिर्वासितदुर्योधन ! हा पाण्डव-कुलकमलिनीराजहंस !

तां वत्सलामनभिवाद्य विनीतमम्बां
गाढं च मामनुपगृह्य मयाऽप्यनुक्तः ।
एतां स्वयंवरवधूं दयितामपृष्ट्वा
दीर्घप्रवासमयि तात ! कथं गतोऽसि ॥ ३४ ॥

(इति मोहमुपगतः ।)

देने वाले !) हा अस्त्रशिक्षाबलपरितोषितगाङ्गेय—अस्त्रशिक्षाबलेन = धनुर्वेदबलेन परितोषितः = सन्तुष्टीकृतः गाङ्गेयः = भीष्मपितामहो येन सः तत्सम्बुद्धौ (हा अस्त्रशिक्षा के बल से भीष्मपितामह को सन्तुष्ट कर देने वाले) ! हा राधेयकुल-कमलिनीप्रालेयवर्ष—राधेयकुलम् = सूतकुलम् एव कमलिनी तत्र प्रालेयम् = हिमम् वर्षतीति तत्सम्बुद्धौ (हा कर्णवंशरूपी कमलिनी को नष्ट करने में पाले की वर्षा के समान) ! हा गन्धर्वनिर्वासितदुर्योधन—गन्धर्वात् = चित्ररथात् निर्वासितः = निष्क्रान्तः, परिमोचितो वा दुर्योधनो येन सः, तत्सम्बुद्धौ (हा गन्धर्व चित्ररथ से दुर्योधन को छुड़ाने वाले) !

अन्वयः—अयि तात ! वत्सलां ताम् अम्बाम् अनभिवाद्य विनीतं च मां गाढम् अनुपगृह्य मया अपि अनुक्तः एतां स्वयंवरवधूं दयिताम् अपृष्ट्वा दीर्घप्रवासं कथं गतः असि ॥ ३४ ॥

तां वत्सलेति । अयि तात = भो भ्रातः । वत्सलाम् = स्निग्धाम् (स्नेह करने वाली) ताम् = तथाविधां दुःखिताम् (उस प्रकार दुखिया) अम्बाम् = जननीम् (माता को) । विनीतम् = विनयसम्पन्नं माम् = युधिष्ठिरम् । अनभिवाद्य = अभि-वादनं विनैव कृत्वा (प्रणाम किये बिना ही) । च = तथा । गाढम् = घनम् । अनुपगृह्य = अनालिङ्ग्य (गाढ आलिगन किये बिना) । मया = ज्येष्ठेन भ्रात्रा

आश्रमवासी मुनिजनों में द्वितीय तपस्वी ! हा द्रोणाचार्य के प्रिय शिष्य ! हा अस्त्र शिक्षाबल से गाङ्गेय भीष्म को सन्तुष्ट कर देने वाले ! हा कर्णवंशरूपी कमलिनी पर पड़ने वाले पाले सदृशविनाशक ! हा गन्धर्व चित्ररथ से दुर्योधन को छुड़ाने वाले ! हा पाण्डवकुल कमलिनी में राजहंस सदृश !

हा तात ! सुतवत्सला उस दुखिया माँ को, विनीत मुझको प्रणाम किये बिना तथा गाढ आलिङ्गन किये बिना, और मुझसे बिना कहे, इस स्वयंवर वधू प्रिया द्रौपदी से भी बिना पूछे तुम दीर्घ प्रवास (सदा के लिए विलग) कैसे चले गये हो ॥ ३४ ॥

(यह कहकर मूर्च्छित हो जाते हैं)

कञ्चुकी—(चेटीं प्रति ।) इदानीं भोः कष्टम् । एष कौरवाऽधमो यथेष्टमितएवाऽभिवर्तते । सर्वथाऽयं प्रवेशकालः । चितासमीपमुपनयाम्यत्रभवतीं पाञ्चालराजतनयाम् । अहमप्येवमेवाऽनुगच्छामि । भद्रे ! त्वमपि देव्या भ्रातरं धृष्टद्युम्नं नकुलसहदेवौ वाऽवाप्नुहि । अथवा एवमवस्थिते महाराजेऽस्तमितयोर्भीमार्जुनयोः कुतोऽत्र परित्राणाऽऽशा ।

चेटी—परित्ताअह, परित्ताअह अज्जा । [परित्रायध्वं, परित्रायध्वमार्याः ।]

(नेपथ्य कलकलानन्तरम् ।)

भोः भोः समन्तपञ्चकसञ्चारिणः क्षतजास्वादमत्तयक्षराक्षसपिशाचभूत-

---

अपि (मुझ बड़े भाई से भी)। अनुक्तः = अपृष्टः (बिना पूछे, आज्ञा लिये बिना)। एताम् = इमाम् (इस)। स्वयंवरवधूम् = स्वयंवरे जितां पत्नीम् । दयिताम् = प्रियाम् द्रौपदीम् (स्वयंवर वधू प्रिया द्रौपदी को) अपृष्ट्वा = विनैव पृच्छया (बिना पूछे, कहे ही)। दीर्घप्रवासम् = चिरवासयात्राम् मृत्युम् (दीर्घ-प्रवास—सदा के लिये बिछुड़ना)। कथम् = केन प्रकारेण । गतः = प्रयातः असि (चले गये हो)। अत्र परिकरालङ्कारः । वसन्ततिलका वृत्तम् ॥ ३४ ॥

कञ्चुकी—कौरवाधमः—कौरवेषु अधमः=नीच दुर्योधनः । यथेष्टम्=यथेच्छम् (इच्छानुसार) इत एवाभिवर्तते = अत्रैवागच्छति (इधर को ही आ रहा है)। सर्वथा = सर्वप्रकारेण अयम् = एषः । प्रवेशकालः = अग्निप्रवेशसमयः । अवाप्नुहि = प्राप्नुहि (प्राप्त करो)। परित्राणाशा—परित्राणस्य = रक्षायाः आशा (रक्षा की आशा)।

क्षतजास्वादमत्तयक्षराक्षसपिशाचभूतवेतालङ्ककगृध्रजम्बुकोलूकवायसभूयिष्ठाः—क्षतजस्य = रुधिरस्यास्वादेन = पानेन मत्ताः = क्षीवा ये यक्षाः राक्षसाः पिशाचाः

कञ्चुकी—(चेटी से) अरे अब तो बड़ा कष्ट है। यह नीच कौरव (दुर्योधन) इच्छानुसार इधर को ही आ रहा है। यह सर्वथा अग्नि-प्रवेश का समय है। हे कल्याणि बुद्धिमतिके ! श्रीमती द्रौपदी जी को चिता के पास ले आओ। मैं भी इनका अनुसरण कर रहा हूँ। भद्रे ! तुम भी महारानी के भाई धृष्टद्युम्न अथवा नकुल-सहदेव के पास चली जाओ। अथवा इस प्रकार महाराज के अवस्थित होने पर तथा भीम एवम् अर्जुन के न रहने पर यहाँ परित्राण की आशा कहाँ से की जा सकती है।

चेटी—बचायें आर्य बचायें।

(नेपथ्य में कोलाहल होता है, तदनन्तर)

हे समन्तपञ्चक क्षेत्र में घूमने वालो ! रुधिर पान से मत बने यक्ष, राक्षस, पिशाच,

वेतालकङ्कगृध्रजम्बुकोलूकवायसभूयिष्ठा अवशिष्टविरलाश्च योधाः ! कृतम-स्मद्दर्शनत्रासेन। कथयत भवन्तः कस्मिन्नुद्देशे याज्ञसेनी सन्निहितेति। कथयामि लक्षणं तस्याः—

ऊरू करेण परिघट्टयतः सलीलं
दुर्योधनस्य पुरतोऽपहृताऽम्बरा या।
दुःशासनस्य करकर्षणभिन्नमौलिः
सा द्रौपदी कथयत क्व पुनः प्रदेशे ॥ ३५ ॥

भूताः वेतालाः कङ्काः गृध्राः जम्बुकाः उलूकाः वायसाः च भूयिष्ठाः = बहवः, ये, तथाभूताः। अवशिष्टाः = हतावशेषाः (रुधिरपान से मत्त यक्ष-राक्षसादि बहुत से युद्ध में मरे योद्धाओ) ! अस्मद्दर्शनत्रासेन कृतम्—अस्माकं दर्शनम्, तस्य त्रासेन= भयेन कृतम् = अलम् (हमें देखकर डर करना व्यर्थ है)। भवन्तः = श्रीमन्तः। कथयत = वदत (कहें) उद्देशे = स्थाने (स्थान पर) याज्ञसेनी = द्रौपदी। सन्निहिता=उपस्थिता वर्तते। तस्याः = द्रौपद्याः (उसका)। लक्षणम् = परिचय-चिह्नम् (लक्षण)।

अन्वयः—सलीलं करेण ऊरू परिघट्टयतः दुर्योधनस्य पुरतः या अप-हृताम्बरा, सा द्रौपदी दुःशासनस्य करकर्षणभिन्नमौलिः पुनः क्व प्रदेशे, कथयत ॥ ३५ ॥

ऊरू इति। सलीलम् = सकौतुकम् (हाव-भाव के साथ)। करेण = हस्तेन (हाथ से) ऊरू = जघनद्वयम् (दोनों जाँघों को)। परिघट्टयतः = ताडयतः (ठोकते हुये)। दुर्योधनस्य = कुरुपतेः (दुर्योधन के)। पुरतः = समक्षम् (सामने) या अपहृताम्बरा—अपहृतम् = अपनीतम् अम्बरम् = वस्त्रम् यस्याः सा (जिसको साड़ी खींची गई थी)। सा = तथाविधा द्रौपदी = पाञ्चाली दुःशा-सनस्य = दुर्योधनानुजस्य (दुःशासन के)। करकर्षणभिन्नमौलिः—कराभ्याम् हस्ताभ्याम् कर्षणेन = आकर्षणेन भिन्नः = प्रकीर्णः मौलिः = कबरीबन्धो यस्या-

---

भूत बेताल, कंक गीध श्रृगाल वायस आदिको ! युद्ध में मरने से अवशिष्ट विरल योद्धाओ ! हमें देख कर भय मत करो। आप सब बतलाये कि याज्ञसेनी किस स्थान पर है। मैं उसका लक्षण बतला रहा हूँ—

बड़े हाव-भाव से अपनी दोनों जाघों को ठोकते हुये दुर्योधन के समक्ष जिसके वस्त्र (दुःशासन द्वारा) खींचे गये थे, ऐसी द्रौपदी जिसके दुःशासन के हाथों से खींचे जाने के कारण बालों की चोटी की खुल गई थी अब कहाँ है, बतलाओ ॥ ३५ ॥

कञ्चुकी—हा देवि यज्ञवेदिसम्भवे ! परिभूयसे सम्प्रत्यनाथा कुरुकुल-कलङ्केन ।

युधिष्ठिरः—(सहसोत्थाय ।) पाञ्चालि ! न भेतव्यम् । न भेतव्यम् । (ससम्भ्रमम् ।) कः कोऽत्र भोः । सनिषङ्गं मे धनुरुपनय । दुरात्मन् दुर्योधनहतक ! आगच्छागच्छ । अपनयामि ते गदाकौशलसम्भृतं भुजदर्पं शिलीमुखासारेण । अन्यच्च रे कुरुकुलाङ्गार !

स्तथाभूता द्रौपदी । पुनः । क्व = कस्मिन् प्रदेशे = स्थाने तिष्ठति इति । कथयत (वतलाओ) । वसन्ततिलका वृत्तम् ॥ ३५ ॥

कञ्चुकी—यज्ञवेदिसम्भवे—यज्ञवेद्याः = यज्ञमण्डपवेदिकायाः सम्भवः = जन्म यस्यास्तत्सम्वुद्धौ (हे यज्ञवेदी से जन्मी) ! सम्प्रति = इदानीम् (इस समय) । अनाथा = पत्या विरहिता । कुरुकुलकलङ्केन—कुरुकुलस्य = कुरुवंशस्य कलङ्कमिव यस्तेन (कुरुकुल के कलंक दुर्योधन द्वारा) परिभूयसे = तिरस्कृता भवसि (अपमानित हो रही हो) ।

युधिष्ठिरः—सहसा = झटिति (शीघ्र) न भेतव्यम् = भयं न करणीयम् । सनिषङ्गम् = सतूणीरम् (तरकस सहित) 'तूणोपासङ्गतूणीरनिषङ्गा इषुधिर्द्वयोः' इत्यमरः) मे = मम । धनुः=प्राज्यम् । उपनय = आनय (ले आ) । आगच्छ= आयाहि (आ) । गदाकौशलसम्भृतम् = गदायाः कौशलेन सम्भृतम् = प्रवृद्धम् (गदा कौशल से बढ़े) भुजदर्पम् = भुजाभिमानम् (भुजाओं के अभिमान को) । शिलामुखासारेण—शिलीमुखानाम् = वाणानाम् आसारेण = सम्पातेन (वाणों की वर्षा से) । अपनयामि = दूरीकरोमि, नाशयामि वा । कुरुकुलाङ्गार = कुरुवंश-नाशक !

कञ्चुकी—हा देवि ! यज्ञवेदी से जन्मी ! इस समय अनाथ होकर तुम कुरुकुलकलंक दुर्योधन द्वारा अपमानित की जा रही हो ।

युधिष्ठिर—(सहसा उठकर) हे पाञ्चालि ! डर मत करो, डर मत करो । (आवेश से) अरे यहाँ कोई है ? तरकस सहित मेरा धनुष ले आओ । दुरात्मन् ! नीच दुर्योधन ! आ, आ । तेरे गदा से बढ़े कौशल वाले भुजाभिमान को बाणों की वर्षा से नष्ट किये देता हूँ । हे कुरुकुलाङ्गार !

प्रियमनुजमपश्यंस्तं जरासन्धशत्रुं
कुपितहरकिरातद्वेषिणं तं च वत्सम् ।
त्वमिव कठिनचेताः प्राणितुं नास्मि शक्तो
ननु पुनरपहर्तुं बाणवर्षैस्तवाऽसून् ॥ ३६ ॥

(ततः प्रविशति गदापाणिः क्षतजसिक्तसर्वाङ्गो भीमसेनः ।)

भीमसेनः—(उद्धतं परिक्रामन् ।) भो भोः समन्तपञ्चकसञ्चारिणः, सैनिकाः ! कोऽयमावेगः—

अन्वयः—प्रियं तम् अनुजं जरासन्धशत्रुं तं च वत्सं कुपितहरकिरातद्वेषिणम् अपश्यन् (अहम्) कठिनचेताः त्वम् इव प्राणितुं (यद्यपि) शक्तः न अस्मि (तथापि) बाणवर्षैः तव असून् अपहर्त्तुं पुनः शक्तः एव ननु ॥ ३७ ॥

प्रियमिति । प्रियम् = स्निग्धम् । तम् = प्रसिद्धम् । अनुजम् = लघुभ्रातरम् (प्रिय उस छोटे भाई को) जरासन्धशत्रुम्—जरासन्धस्य = तन्नामराक्षसस्य शत्रुः = रिपुस्तम् (जरासन्ध के शत्रु को) तम् = उक्तम् च । वत्सम् = तातम् । कुपितहरकिरातद्वेषिणम्—कुपितस्य = क्रुद्धस्य हरस्य एव किरातस्य = किरातरूपधारिणः शिवस्य (किरात रूप धारण किये हुए शिव के) । द्वेषिणम् = शत्रुम् अर्जुनम् (अर्जुन को) । अपश्यन् = अनवलोकयन् (न देखते हुये) । (अहम्) कठिनचेताः = कठोरहृदयः । त्वम् इव = त्वत्समः । यद्यपि । प्राणितुम् = जीवितुं (जीवित रह पाने को) शक्तः = समर्थः न अस्मि (समर्थ नहीं हूँ) (तथापि) बाणवर्षैः = शराघातैः (बाणों की वर्षा से) । तव = ते । असून् = प्राणान् (प्राणों को) अपहर्त्तुम् = नाशयितुम् (नष्ट करने को) । पुनः = भूयः । शक्तः एव ननु = अवश्यमेव समर्थः अस्मि । अत्र रूपकालङ्कारः । मालिनी वृत्तम् ।

प्रिय प्रसिद्ध जरासन्ध के शत्रु अनुज भीम को तथा क्रुद्ध किरात वेषधारी शिव के शत्रु वत्स अर्जुन को न देखकर मैं कठोर हृदय वाले तुम्हारे समान यद्यपि जीवित नहीं रह सकता हूँ तथापि बाणवर्षा द्वारा तुम्हारे प्राण नष्ट करने को तो मैं समर्थ हूँ ही ॥ ३६ ॥

(तब हाथ में गदा लिये रक्त से सराबोर भीमसेन प्रवेश करते हैं)

भीमसेन—(अभिमान से युक्त झूमता हुआ) हे समन्तपञ्चक क्षेत्र में विचरण करने वाले सैनिको यह आवेग (घबराहट) कैसी है ?

नाहं रक्षो न भूतो रिपुरुधिरजलप्लाविताङ्गः प्रकामं,
निस्तीर्णोरुप्रतिज्ञाजलनिधिगहनः क्रोधनः क्षत्रियोऽस्मि ।
भो भो राजन्यवीराः ! समरशिखिशिखादग्धशेषाः ! कृतं व-
स्त्रासेनानेन लीनैर्हतकरितुरगान्तर्हितैरास्यते यत् ॥ ३७ ॥

अन्वयः—अहं न रक्षः न भूतः प्रकामं रिपुरुधिरजलप्लाविताङ्गः, निस्तीर्णोरुप्रतिज्ञाजलनिधिगहनः, क्रोधनः क्षत्रियः अस्मि । भोः भोः राजन्यवीरा ! समरशिखिशिखादग्धशेषाः ! कृतं वः अनेन त्रासेन यत् हतकरितुरगान्तर्हितैः लीनैः (युष्माभिः) आस्यते ॥ ३७ ॥

नाहमिति । अहम् न रक्षः = राक्षसो नास्मि । न भूतः = न पिशाचः अस्मि ('पिशाचो गुह्यकः सिद्धो भूतोऽमी देवयोनयः' इत्यमरः) । प्रकामम् = अत्यन्तम् । रिपुरुधिरजलप्लाविताङ्गः—रिपोः = शत्रोः दुर्योधनस्य रुधिरजलेन = रक्तवारिणाऽऽप्लावितानि = सिक्तानि अङ्गानि = शरीराङ्गानि यस्य सः (शत्रु दुर्योधन के रुधिरजल से भीगे अङ्गों वाला) । निस्तीर्णोरुप्रतिज्ञाजलनिधिगहनः—निस्तीर्णम् = उत्तीर्णम् उरुप्रतिज्ञायाः = जघनभङ्गसंकल्पस्य जलनिधेः = सागरस्य गहनम् = गाम्भीर्यं येन तथाविधः (उरुभंग करने की प्रतिज्ञारूपी सागर की गम्भीरता को पार किये हुये) । क्रोधनः = क्रोधयुक्तः क्षत्रियः = क्षत्रीपुत्रः अस्मि (मैं क्रोधी क्षत्रिय हूँ) । भोः भोः राजन्यवीराः = हे क्षत्रियवीराः (हे वीर क्षत्रियो) । समरशिखिशिखादग्धशेषाः—समरशिखिनः = युद्धाग्नेः शिखाभिः = अर्चिभिः दग्धाः = भस्मीभूताः, तेषु ये शेषाः = अवशिष्टाः, तत्सम्बुद्धौ (हे युद्धाग्नि की शिखाओं से जलने से बचे वीर) ! कृतम् = अलम् । वः = युष्माकम् । त्रासेन = भयेन (तुम्हारा त्रास करना व्यर्थ है) । यत् हतकरितुरगान्तर्हितैः—हताः = घातिताः करिणः = हस्तिनः तुरगाः = अश्वाश्च, तैः अन्तर्हिताः = अच्छन्नशरीराः, तैः (मारे गये हाथी घोड़ों के शरीरों से आच्छादित) लीनैः = विलयं गतैः (विलीन हुये) युष्माभिः आस्यते = स्थीयते । अत्र रूपकालङ्कारः । स्रग्धरा वृत्तम् ॥ ३७ ॥

मैं न राक्षस हूँ और न भूत हूँ । (वल्कि) अत्यन्त शत्रुरक्त से सने अङ्गों वाला, उरुभंग करने की प्रतिज्ञा रूपी सागर की गम्भीरता को पार करने वाला मैं क्रोधी क्षत्रिय हूँ । हे हे क्षत्रिय वीरो ! युद्धाग्नि की लपटों से जलने से बच रहे वीरो ! तुम्हें अब त्रास नहीं करना चाहिये कि हाथियों तथा घोड़ों से आच्छन्न शरीर (शवों से छिपे) होकर छिपकर बैठे हो ॥ ३७ ॥

कथयन्तु भवन्तः, कस्मिन्नुद्देशे पाञ्चाली तिष्ठति।

द्रौपदी—(लब्धसंज्ञा।) परित्ताअदु, परित्ताअदु महाराओ। [परित्रायतां परित्रायतां महाराजः।]

कञ्चुकी—देवि पाण्डुस्नुषे! उत्तिष्ठोत्तिष्ठ। झटिति सम्प्रति चिताप्रवेश एव श्रेयान्।

द्रौपदी—(सहसोत्थाय।) कहं ण संभावेमि अज्जवि चिदासमीवम्। [कथं न सम्भावयाम्यद्यापि चितासमीपम्।]

युधिष्ठिरः—कः कोऽत्र भोः। सनिषङ्गं धनुरुपनय। (परिवृत्याऽवलोक्य च) कथं न कश्चित्परिजनः। भवतु, बाहुयुद्धेन सम्भावनविहस्तम् गाढमालिङ्ग्य ज्वलनमभिपातयामि। (इति परिकरं बध्नाति।)

कथयन्तु = ब्रुवन्तु। भवन्तः = श्रीमन्तः (आप लोग बतलाये)। कस्मिन् उद्देशे = कुत्र स्थाने (किस जगह पर)। पाञ्चाली = द्रौपदी। तिष्ठति = वर्तते (है)।

द्रौपदी—लब्धसंज्ञा = विमूर्च्छिता (होश में आई हुई)। परित्रायताम् = रक्षताम् (बचाओ)।

कञ्चुकी—पाण्डुस्नुषे = हे पाण्डुपुत्रवधु! सम्प्रति = इदानीम् (अब)। झटिति = शीघ्रम्। चिताप्रवेशः—चितायां = ज्वलनम् प्रवेश एव श्रेयान् = श्रेयस्करः अस्ति (चिता-प्रवेश ही उत्तम है)।

द्रौपदी—सम्भावयामि = गच्छामि (जाती हूँ)। अद्यापि = सम्प्रत्यपि (अब भी) चितासमीपम् = चितायाः पार्श्वम् (चिता के समीप)।

युधिष्ठिरः—सनिषङ्गम् = सतूणीरम् (तरकस सहित) धनुः = कार्मुकम्। उपनय = आनय (ले आ)। परिजनः = सेवकः (नौकर)। बाहुयुद्धेन =

आप लोग बतलायें, पाञ्चाली किस स्थान पर है।

द्रौपदी—(होश में आकर) महाराज! बचाइये, बचाइये।

कञ्चुकी—देवि! पाण्डु पुत्रवधु! अब शीघ्र चिता-प्रवेश करना ही श्रेयस्कर है।

द्रौपदी—(सहसा उठकर) क्या अब भी चिता के समीप नहीं जाऊँगी (अवश्य जाऊँगी)।

युधिष्ठिर—अरे! यहाँ कौन है। तरकस सहित धनुष ले आओ। (घूमकर तथा देखकर) क्या कोई भी सेवक नहीं है? अच्छा, बाहुयुद्ध के द्वारा इस दुर्योधन को व्यापार शून्य कर कसकर आलिंगन कर अग्नि में डाले देता हूँ। (यह कहकर कमर कस लेता है)।

कञ्चुकी—देवि पाण्डुस्नुषे ! संयम्यन्तामिदानीं नयनपथावरोधिनो दुःशासनापकृष्टा मूर्धजाः । अस्तमिता सम्प्रति प्रतीकाराशा । द्रुतं चितासमीपं सम्भावय ।

युधिष्ठिरः—कृष्णे ! न खल्वनिहते तस्मिन्दुरात्मनि दुर्योधनहतके संहर्तव्याः केशाः ।

भीमसेनः—पाञ्चालि ! न खलु मयि जीवति संहर्तव्या दुःशासनविलुलिता वेणिरात्मपाणिना । तिष्ठ तिष्ठ । अहमेव संहरामि ।

भुज-सङ्घर्षेण (बाहुयुद्ध से)। सम्भावनविहस्तम्——सम्भावनम् = व्यापारः तेन विहस्तम् = हस्तरहितम्, शून्यम् (व्यापार शून्य)। एनम् = एतम् (इससे) गाढम् = सुदृढम् आलिंग्य = आलिंगनं कृत्वा (अच्छी तरह से दबाकर) ज्वलनम् = अग्निम् पातयामि = पतनार्थं प्रेरयामि (आग से गिराये देता हूँ)। इति = इति कथयित्वा परिकरम् बध्नाति = बद्धकटिर्भवति (कमर कस लेता है)।

कञ्चुकी—इदानीम् = साम्प्रतम् (अब) नयनपथावरोधिनः—नयनपथि= अवलोकने अवरोधिन = बाधकाः (देखने में बाधा डालने वाले) दुःशासनापकृष्टाः—दुःशासनेन = दुर्योधनानुजेन अपकृष्टाः (दुःशासन द्वारा खींचे गये)। मूर्धजाः = शिरोरुहाणि (बालों को) संयम्यन्ताम् = बध्यन्ताम् (बाँध लो)। अस्तमिता = समाप्ता । प्रतीकाराशा = अपमाननिर्यातनाशा ।

युधिष्ठिरः—कृष्णे = हे द्रौपदि ! अनिहते = अमारिते (बिना मारे हुये)। दुरात्मनि = दुष्टे दुर्योधने । केशाः = कचाः (बाल) न संहर्तव्याः = न नियन्त्रयितव्याः (बाँधने चाहिये)।

भीमसेनः—मयि = भीमसेने । जीवति = जीवनं धारयति सति (जीवित रहते हुये)। दुःशासनविलुलिताः—दुःशासनेन = दुर्योधनानुजेन विलुलिता = विसंयता । वेणिः = केशश्रेणी (चोटी)। आत्मपाणिना—आत्मनः पाणिस्तेन = स्वहस्तेन (अपने हाथ से)। अहम् = भीमः एव (मैं, भीम ही) संहरामि = संहरणं करोमि (संहरण करता हूँ)।

कञ्चुकी—हे देवि ! पाण्डु-पुत्रवधू ! अब देखने में बाधा डालने वाले दुःशासन द्वारा खींचे गये बालों को बाँध लो । अब शत्रु से बदला लिये जाने की आशा समाप्त हो चुकी है । शीघ्र चिता के समीप पहुँचो ।

युधिष्ठिर—हे कृष्णे ! उस दुष्ट दुर्योधन के मारे बिना बाल नहीं बाँधने चाहिये ।

भीमसेन—हे पाञ्चालि ! वास्तव में मेरे जीवित रहते हुये दुःशासन द्वारा खोली गई वेणी अपने हाथ से नहीं बाँधनी चाहिये । ठहरो, ठहरो । मैं ही बाँधे देता हूँ ।

(द्रौपदी भयादपसर्पति ।)

भीमसेनः—तिष्ठ तिष्ठ, भीरु ! क्वाधुना गम्यते ? (इति केशेषु ग्रहीतुमिच्छति) ।

युधिष्ठिरः—(बलाद् भीममालिङ्ग्य) दुरात्मन् ! भीमार्जुनशत्रो ! दुर्योधनहतक ! क्वेदानीं यास्यसि ।

आशैशवादनुदिनं जनितापराधो,
मत्तो बलेन भुजयोर्हतराजपुत्रः ।
आसाद्य मेऽन्तरमिदं भुजपञ्जरस्य,
जीवन्प्रयासि न पदात्पदमद्य पाप ॥ ३८ ॥

भयात् = त्रासात् (डर से) अपसर्पति = अपगच्छति (हट जाती है) ।

भीमसेनः—भीरु = हे कातरे (अरी कातरे) ! अधुना = साम्प्रतम् (अव) क्व = कुत्र (कहाँ) । गम्यते = गमनं क्रियते (जा रही है) ।

युधिष्ठिरः—बलात् = हठात् । भीमम् = भीमसेनम् । आलिंग्य = आलिगनं कृत्वा (जवर्दस्ती भीम को चिपटा कर) । इदानीम् = साम्प्रतम् (अव) क्व = कुत्र (कहाँ) । यास्यसि = गमिष्यसि (जा सकेगा) ।

अन्वयः—पाप ! आशैशवात् अनुदिनं जनितापराधः भुजयोः बलेन मत्तः हतराजपुत्रः (त्वं) अद्य मे भुजपञ्जरस्य इदम् अन्तरम् आसाद्य जीवन् पदात् पदं न प्रयासि ॥ ३८ ॥

आशैशवादिति । हे पाप = अयि पापिष्ठ ! (रे पापी) आशैशवात् = आबाल्यात् (वचपन से) अनुदिनम् = प्रतिदिनम् (नित्य) । जनितापराधः = जनितः = उत्पादितः अपराधः = परस्याहितम् येन सः (दूसरे का अपकार किये हुये) । भुजयोः = बाह्वोः बलेन = शक्त्या मत्तः = क्षीबः (भुजवल से मतवाले

(द्रौपदी भय से हट जाती है) ।

भीमसेन—ठहरो, ठहरो । अव कहाँ जा रही हो । (यह कहकर बाल पकड़ना चाहता है) ।

युधिष्ठिर—(जवर्दस्ती भीम को कस कर) रे दुरात्मन् ! भीमार्जुन शत्रु ! दुष्ट दुर्योधन ! अब कहाँ जायेगा ?

रे पापी ! बचपन से नित्य अपराध करता हुआ, भुजाओं के बल से मतवाला बना हुआ जिसके भाई भी मारे जा चुके हैं ऐसा तू आज मेरे भुजपाश के मध्य पड़ कर जीवित रहता हुआ (बचकर) कदम भर भी नहीं जा सकेगा ॥ ३८ ॥

भीमसेनः—अये कथमार्यः सुयोधनशङ्कया क्रोधान्निर्दयं मामालिङ्गति ! आर्य ! प्रसीद, प्रसीद ।

कञ्चुकी—(निरूप्य, सहर्षम् ।) कथं कुमारो भीमसेनः ! महाराज ! दिष्ट्या वर्धसे । अयं खल्वायुष्मान्भीमसेनः सुयोधनक्षतजारुणीकृतसकलशरीरो दुर्लक्ष्यव्यक्तिः । अलमधुना सन्देहेन ।

बने) हतराजपुत्रः—हताः = मारिताः राजपुत्राः=राजकुमारा यस्य सः (जिसके राजकुमार, भाई मार डाले गये हैं) । (त्वम्) अद्य = अस्मिन् दिवसे (आज) मे = मम (मेरे) भुजपञ्जरस्य = बाहुजालस्य (बाहु जाल के) । इदम् = एतत् अन्तरम् = मध्यभागम् (मध्यभाग को) । आसाद्य = प्राप्य (पाकर) जीवन् = जीवितः सन् (जीवित रहते हुये) । पदात्पदम् = पदमात्रमपि (एक कदम भर भी) । न प्रयासि = न गमिष्यसि (नहीं जा सकते) । अत्र रूपकालङ्कारः । वसन्ततिलका वृत्तम् ॥ ३८ ॥

भीमसेनः—आर्यः = श्रीमान् युधिष्ठिरः (आर्य) । सुयोधनशङ्कया—सुयोधनस्य = कुरुपतेः शङ्कया = सन्देहेन (सुयोधन की शंका से) । क्रोधात् = कोपात् (रोष से) । निर्दयम् = निष्करुणम् (निष्ठुरता से) । माम् = भीमम् (मुझे) । आलिङ्गति = अश्लिषति (चिपटा रहे हैं) । प्रसीद = प्रसन्नो भव (प्रसन्न हो जाओ) ।

कञ्चुकी—निरूप्य = विलोक्य (देखकर) सहर्षम् = सानन्दम् (प्रसन्नता के साथ) । दिष्ट्या = सौभाग्येन वर्धसे = वृद्धिङ्गतोऽसि (सौभाग्य की बात है) अयम् = एषः (यह) आयुष्मान् = दीर्घजीवी । भीमसेनः = वृकोदरः । सुयोधनक्षतजारुणीकृतसकलशरीरः—सुयोधनस्य = कुरुपतेः क्षतजेन = रुधिरेणारुणीकृतम् = रञ्जितम् सकलम् = निखिलम् शरीरम् = देहः यस्य सः (सुयोधन के रुधिर से लाल किये शरीर वाले) । दुर्लक्ष्यव्यक्तिः—दुर्लक्ष्या = कष्टेन प्रेक्ष्या व्यक्तिः = रूपम् यस्य सः (बड़ी कठिनाई से पहिचाने जा सकने वाले) ।

भीमसेन—अरे क्या यह आर्य (महाराज युधिष्ठिर) दुर्योधन की शंका से क्रोध से बड़ी निर्दयता से मुझे चिपटा रहे हैं ? महाराज ! प्रसन्न हो जाइये, प्रसन्न हो जाइये ।

कञ्चुकी—(देखकर, प्रसन्न होकर) क्या कुमार भीमसेन हैं ? महाराज । सौभाग्य की बात है—यह दुर्योधन के रक्त से लाल शरीर वाले, बड़ी कठिनता से पहिचाने जा सकने वाले आयुष्मान् भीमसेन हैं । अब सन्देह करना व्यर्थ है ।

चेटी—देवि ! णिवट्टीअदु, णिवट्टीअदु। एसो क्खु पूरिदपडिण्णाभारो णाहो दे वेणीसंहारं कादुं तुमं एव्व अण्णेसेदि। [देवि ! निवर्त्यताम्, निवर्त्यताम्। एष खलु पूरितप्रतिज्ञाभारो नाथस्ते वेणीसंहारं कर्तुं त्वामेवान्विष्यति।]

द्रौपदी—हंजे ! किं मं अलीअवअणेहिं आसासेसि। [हञ्जे ! किं मामलीकवचनैराश्वासयसि।]

युधिष्ठिरः—जयन्धर ! किं कथयसि, नायमनुजद्वेषी दुर्योधनहतकः ?

भीमसेनः—देव अजातशत्रो ! भीमार्जुनगुरो ! कुतोऽद्यापि दुर्योधनहतकः ? मया हि तस्य दुरात्मनः पाण्डुकुलपरिभाविणः—

चेटी—पूरितप्रतिज्ञाभारः—पूरितः = पूर्णतां नीतः प्रतिज्ञायाः = संकल्पस्य भारः येन सः (प्रतिज्ञाभार को पूर्ण किये हुये) नाथः = स्वामी भीमसेनः। ते = तव वेणीसंहारम्—वेण्याः = कबर्याः संहारः = संयमनम् (जूड़ाबन्धन) कर्त्तुम् विधातुम् (करने को)। त्वाम् = द्रौपदीम् एव (तुम्हें ही)। अन्विष्यति = गवेषयति (ढूंढ रहे हैं)।

द्रौपदी—हञ्जे = चेटि। माम् = दुःखिनीम् द्रौपदीम् (मुझे)। अलीकवचनैः = असत्यववाक्यैः (असत्य वचनों से)। किम् आश्वासयसि = किं धैर्यं धारयसि। (धीरज क्यों बँधा रही है)।

युधिष्ठिरः—अनुजद्वेषी = भीमशत्रुः। दुर्योधनहतकः = दुष्टदुर्योधनः। न = नास्ति ?

भीमसेनः—अजातशत्रो—न जातः शत्रुर्यस्य सः तत्सम्बुद्धौ = अनुत्पन्नरिपो ! (हे अजातशत्रो !) अद्यापि = सम्प्रत्यपि (आज भी) दुर्योधनहतकः = नीचः दुर्योधन कुतः = कस्मात् (अब भी नीच दुर्योधन कहाँ से बच सकता है)। पाण्डुकुलपरिभाविणः—पाण्डुकुलस्य = पाण्डववंशस्य परिभाविणः = अपकारिणः (पाण्डवकुल का अपकार करने वाले)।

चेटी—(द्रौपदी का आलिंगन कर) हे देवि ! लौट आइये, लौट आइये। वास्तव में प्रतिज्ञाभार को पूर्ण किये हुये स्वामी (भीमसेन) तुम्हारा वेणी संहार करने (चोटी बाँधने) को तुम्हें ही ढूँढ रहे हैं।

द्रौपदी—री चेटी ! मुझे असत्य वचनों से ढाँढस क्यों बँधा रही है ?

युधिष्ठिर—जयन्धर ! क्या कहते हो—यह भीमशत्रु दुष्ट दुर्योधन नहीं है ?

भीमसेन—देव, अजातशत्रो ! भीम तथा अर्जुन के अग्रज ! क्या अब भी दुष्ट दुर्योधन शेष है ? क्योंकि मैंने उस दुष्ट पाण्डुवंश का अपकार करने वाले—

भूमौ क्षिप्तं शरीरं निहितमिदमसृक्चन्दनाभं निजाङ्गे,
लक्ष्मीरार्ये निषण्णा चतुरुदधिपयः सीमया सार्धमुर्व्या ।
भृत्या मित्राणि योधाः कुरुकुलमखिलं दग्धमेतद्रणाग्नौ
नामैकं यद् ब्रवीषि क्षितिप ! तदधुना धार्तराष्ट्रस्य शेषम् ॥ ३९ ॥

(युधिष्ठिरः स्वैरं मुक्त्वा भीममवलोक्यन्नश्रूणि प्रमार्जयति ।)

अन्वयः—शरीरं भूमौ क्षिप्तम्, इदं चन्दनाभम् असृक् निजाङ्गे निहितम्, चतुरुदधिपयः सीमया उर्व्या सार्धं लक्ष्मीः आर्ये निषिक्ता, भृत्याः मित्राणि योद्धाः अखिलम् एतत् कुरुकुलं रणाग्नौ दग्धम् । क्षितिप ! एकं नाम यत् धार्तराष्ट्रस्य ब्रवीषि यत् अधुना शेषम् ॥ ३९ ॥

भूमाविति । (तस्य दुरात्मनः) शरीरम् = देहम् । भूमौ = पृथिव्याम् (भूमि पर) क्षिप्तम् = प्रक्षिप्तम् (पड़े) इदम् = एतत् (यह) । चन्दनाभम् = चन्दन-युक्तम् । असृक् = रक्तम् । निजाङ्गे = स्वशरीरे (अपने शरीर में) । निहितम् = स्थापितम् (रखा है) । चतुरुदधिपयःसीमया—चतुर्णाम् = चतुसंख्यानाम् उद-धीनाम् = सागराणाम् पयांसि = वारीणि, सीमानो यस्यास्तया (चार समुद्रों के जल की सीमा वाली) । उर्व्या=पृथिव्या (भूमि से) सार्धम् = समम् (साथ) । लक्ष्मीः = राजलक्ष्मी, आर्ये = नृपे युधिष्ठिरे भवति (आप में) । निषिक्ता = अर्पिता (अर्पित है) । भृत्या = परिजनाः (नौकर) । मित्राणि = सुहृदः (मित्र) । योधाः = वीराः । अखिलम् = सर्वम् (सब) । एतत् कुरुकुलम् = एषः कुरुवंश (सम्पूर्ण यह कुरुवंश) रणाग्नौ = युद्धाग्नौ (युद्ध की आग में) । दग्धम् = भस्मसात्कृतम् (जला दिये) । क्षितिप = राजन् ! एकं नाम = केवलं नाम । यत् । धार्तराष्ट्रस्य = दुर्योधनस्य । ब्रवीषि = कथयसि यद् अधुना = साम्प्रतम् (अब) शेषम् = अवशिष्टम् वर्तत इति । अत्र रूपकालङ्कारः । स्रग्धरा वृत्तम् ॥ ३९ ॥

स्वैरम् = शनैः (धीरे से) मुक्त्वा = परित्यज्य (छोड़कर) । अवलोकयन् =

(उस दुष्ट का) शरीर भूमि पर फेंक दिया है, यह चन्दन युक्त रक्त अपने शरीर पर लगा रखा है, चारों समुद्रों के जल की सीमा वाली भूमि की लक्ष्मी आप में अर्पित कर दी है । नौकर, मित्र, योधा यह सम्पूर्ण कौरववंश युद्ध की आग में भस्म हो चुके हैं । हे राजन् ! अब तो केवल उसका नाम ही बच रहा है जिसका आप उच्चारण कर रहे हैं ॥ ३९ ॥

(युधिष्ठिर धीरे-धीरे छोड़कर भीमसेन को देखते हुये आँसू पोंछ लेते हैं)

भीमसेनः—(पादयोः पतित्वा ।) जयत्वार्यः ।

युधिष्ठिरः—वत्स ! बाष्पजलान्तरितनयनत्वान्न पश्यामि ते मुखचन्द्रम् । कथय कच्चिज्जीवति भवान्समं किरीटिना ।

भीमसेनः—निहतसकलरिपुपक्षे त्वयि नराधिपे जीवति भीमोऽर्जुनश्च ।

युधिष्ठिरः—(सस्नेहं पुनर्गाढमालिङ्ग्य ।) तात भीम !

रिपोरास्तां तावन्निधनमिदमाख्याहि शतशः,
प्रियो भ्राता सत्यं त्वमसि मम योऽसौ बकरिपुः ।

पश्यन् (देखते हुये) । अश्रूणि = नयनवारीणि (आँसू) प्रमार्जयति = प्रोञ्छति (पोंछता है) ।

भीमसेनः—पादयोः = चरणयोः (पाँवों पर) पतित्वा = नत्वा (प्रणाम कर) आर्यः = महाराजः । जयतु = विजयताम् (महाराज की जय हो) ।

युधिष्ठिरः—वत्स = तात । वाष्पजलान्तरितनयनत्वात्—वाष्पजलेन = अश्रुवारिणा अन्तरिते = आच्छादिते नयने = नेत्रे, तयोर्भावस्तस्मात् (अश्रुजल से नयन आच्छादित होने के कारण) ते = तव । मुखचन्द्रम्—मुखमेवचन्द्रस्तम् = चन्द्राननम् (चन्द्रमुख को) । न पश्यामि = नावलोकयामि (नहीं देख पा रहा हूँ) । किरीटिना समम् = अर्जुनेन सह (अर्जुन के साथ) । जीवति = जीवनं धारयति (जीवित हो) ।

भीमसेनः—निहतसकलरिपुपक्षे—निहतम् = घातितम् सकलम् = सम्पूर्णः रिपुपक्षम् = शत्रुपक्षम् येन तस्मिन् (सम्पूर्ण शत्रु पक्ष को मारे हुये) । त्वयि = भवति (तुम्हारे) नराधिपे = नृपे । भीमः = भीमसेनः । अर्जुनः = किरीटी च । जीवति = सजीवो वर्तते ।

युधिष्ठिरः—सस्नेहम् = सप्रेम । गाढम् = घनम् । आलिङ्ग्य = आलिङ्गनं कृत्वा (गले लगाकर) । तात भीम = वत्स वृकोदर !

भीमसेन—(पाँवों पर गिरकर) महाराज की जय हो ।

युधिष्ठिर—वत्स ! आंसुओं से नेत्र आच्छादित होने के कारण तुम्हारा मुखचन्द्र नहीं देख पा रहा हूँ । बतलाओ—क्या अर्जुन के साथ आप भी जीवित हैं ?

भीमसेन—समस्त शत्रु का संहार कर आप के राजा बन जाने पर भीम तथा अर्जुन दोनों ही जीवित हैं ।

युधिष्ठिर—(प्रेम से पुनः गाढ आलिंगन कर) तात भीम !

शत्रु के निधन वाली बात को तो अलग रखो, बारबार मुझे यह बतलाओ कि जिन्होंने बक का वध किया, तुम वही हमारे प्रिय भाई (भीम) हो, यह सच है ?

भीमसेनः—आर्य ! सोऽहम् ।

युधिष्ठिरः—

जरासन्धस्योरःसरसि रुधिरासारसलिले
तटाघातक्रीडाललितमकरः संयति भवान् ॥ ४० ॥

भीमसेनः—आर्य ! स एवाहम् । मुञ्चतु मुञ्चतु मामार्यः क्षणमेकम् ।

अन्वयः—रिपोः निधनं तावत् आस्ताम्, इदं शतशः आख्याहि । यः असौ बकरिपुः (स एव) मम प्रियः भ्राता त्वम् असि सत्यम् ।

रिपोरास्तामिति । रिपोः = शत्रोः । निधनम् = मरणम् । तावत् आस्ताम् = ध्रियताम् (अलग रखिये) । इदम् = एतत् (यह) शतशः = भूयशः (बहुत वार) आख्याहि = कथय (बताओ) । यः असौ = सुप्रसिद्धः सः । बकरिपुः = बकारिः (बक का वध करने वाला) । (स एव वृकोदरः) । मम = मे युधिष्ठिरस्य । प्रियः भ्राता = स्निग्धो बन्धुः (प्रिय भाई) त्वम् = भीमसेनः असि । (इति) सत्यम् = अवितथम् (सच है) ।

भीमसेनः—सः = तथाविधः । अहम् = भीमसेनः (अस्मि) ।

अन्वयः—संयति रुधिरासारसलिले जरासन्धस्य उरःसरसि तटाघातक्रीडाललितमकरः भवान् ॥ ४० ॥

संयति = संयुगे (युद्ध में) । रुधिरासारसलिले—रुधिरस्य = रक्तस्य आसारः = प्रवाहः एव सलिलम् तस्मिन् (रक्तप्रवाह रूपी जल में) । जरासन्धस्य मगधनृपस्य (मगधराज के) उरःसरसि—उरः = वक्षःस्थलम् एव सरः, तस्मिन् (वक्षःस्थलरूपी तडाग में) । तटाघातक्रीडाललितमकरः—तट = तटचाम् आघातस्य = प्रहारस्य या क्रीडा = लीला, तया ललितः = मनोहरः मकरः = ग्राहरूपः (तट पर प्रहार की क्रीडा के कारण मनोहर मकर के समान) भवान् = श्रीमान् अस्ति । अत्र रूपकालङ्कारः । शिखरिणी वृत्तम् ॥ ४० ॥

भीमसेनः—मुञ्चतु = त्यजतु (छोड़ दो) माम् = भीमसेनम् । एकं क्षणम् = क्षणमात्रम् (क्षणभर को) ।

भीमसेन—आर्य ! मैं वही हूँ ।

युधिष्ठिर—युद्ध में रक्त प्रवाह रूपी जल में मगधराज जरासन्ध के वक्षःस्थल रूपी तडाग में तट पर प्रहार की लीला से मनोहर मकर के समान लगने वाले भी तुम्हीं हो ॥ ४० ॥

भीमसेन—आर्य ! मैं वही हूँ । मुझे आप क्षण भर के लिये छोड़ दें, छोड़ दें ।

युधिष्ठिरः—किमपरमवशिष्टम् ।

भीमसेनः—आर्य ! सुमहदवशिष्टम् । संयमयामि तावदनेन सुयोधन-शोणितोक्षितेन पाणिना पाञ्चाल्या दुःशासनावकृष्टं केशहस्तम् ।

युधिष्ठिरः—सत्वरं गच्छतु भवान् । अनुभवतु तपस्विनी वेणीसंहार-महोत्सवम् ।

भीमसेनः—(द्रौपदीमुपसृत्य ।) देवि पाञ्चालराजतनये ! दिष्ट्या वर्धसे रिपुकुलक्षयेण ।

द्रौपदी—(उपसृत्य) जेदु जेदु णाहो । [जयतु जयतु नाथः ।] (इति भयादपसर्पति ।)

युधिष्ठिरः—अपरम्=अन्यत् (और कुछ) । अवशिष्टम्-शिष्टम् (शेष है) ।

भीमसेनः—अनेन = एतेन । सुयोधनशोणितोक्षितेन—सुयोधनस्य शोणितेन= रुधिरेण उक्षितः = लिप्तः, तेन (सुयोधन के रक्त से सने) पाणिना = हस्तेन (हाथ से) पाञ्चाल्याः = पाण्डुस्नुषायाः (द्रौपदी का) दुःशासनावकृष्टम्— दुःशासनेन अवकृष्टं = आकृष्टम् (दुःशासन द्वारा खींचा गया)। केशहस्तम् = कचपाशम् (केशजाल) संयमयामि = बध्नामि (बाँध रहा हूँ) ।

युधिष्ठिरः—सत्वरम् = शीघ्रम् । भवान् = श्रीमान् (आप) गच्छतु = व्रजतु (जायें) । तपस्विनी = व्रतचारिणी द्रौपदी वेणीसंहारमहोत्सवम्— वेण्याः संहारः = कवरीबन्धनम्, तस्य महोत्सवः = समारोहस्तम् (वेणीबन्धन के महान् उत्सव को) । अनुभवतु = अनुभवं करोतु (अनुभव प्राप्त करें) ।

भीमसेनः—रिपुकुलक्षयेन = शत्रुवंशनासेन (शत्रुकुल के विनाश से) ।

द्रौपदी—नाथः = स्वामी । जयतु = विजयताम् (जय हो) ।

युधिष्ठिर—क्या और भी कुछ करना शेष रह गया है ?

भीमसेन—आर्य ! बहुत बड़ा कार्य रह गया है । इस सुयोधन के रक्त से सने हाथ से तब तक पाञ्चाली के दुःशासन द्वारा खींचे गये केश पाश को बाँध दूँ ।

युधिष्ठिर—आप शीघ्र जायें । तपस्विनी अपने वेणीबन्धन-महोत्सव का अनुभव करे ।

भीमसेन—(द्रौपदी के समीप जाकर) देवि ! पाञ्चालराजपुत्रि ! सौभाग्य से रिपुकुल के विनाश से तुम बच गई हो ।

द्रौपदी—(आगे बढ़कर) स्वामी की जय हो, जय हो । (यह कहकर भय से हट जाती है ।)

भीमसेनः—राजपुत्रि! अलमलमेवंविधं मामालोक्य त्रासेन।

कृष्टा येनासि राज्ञां सदसि नृपशुना तेन दुःशासनेन,
स्त्यानान्येतानि तस्य स्पृश मम करयोः पीतशेषाण्यसृञ्जि।
कान्ते! राज्ञः कुरूणामतिसरसमिदं मद्गदाचूर्णितोरो-
रङ्गेऽङ्गेऽसृङ्निषक्तं तव परिभवजस्यानलस्योपशान्त्यै ॥ ४१ ॥

अन्वयः—कान्ते! येन नृपशुना तेन दुःशासनेन राज्ञां सदसि कृष्टा असि तस्य एतानि स्त्यानानि मम करयोः (विद्यमानानि) पीतशेषाणि असृञ्जि स्पृश। मद्गदाचूर्णितोरोः कुरूणां राज्ञः इदम् अङ्गे अङ्गे निषिक्तम् असृक् तव परिभवजस्य अनलस्य उपशान्त्यै अलम् ॥ ४१ ॥

कृष्टेति। कान्ते = दयिते! येन नृपशुना—नृषु पशुः, तेन = नीचनृपेण। तेन = तथाविधेन दुःशासनेन = दुर्योधनानुजेन (दुःशासन ने)। राज्ञाम् = नृपाणाम् (राजाओं की)। सदसि = सभायाम् (सभा में)। कृष्टा असि = आकृष्टा असि (खींची गई हो)। तस्य = तद्दुष्टस्य एतानि = इमानि (यह) स्त्यानानि = निविडानि। मम = मे भीमस्य। करयोः = हस्तयोः (विद्यमानानि) पीतशेषाणि—पीतेन = पानेन शेषाणि = अवशिष्टानि (पीने से बचे हुये) असृञ्जि = रुधिराणि (रक्त को)। स्पृश = स्पर्शं कुरु (छुओ)। मद्गदाचूर्णितोरोः—मम गदया चूर्णितौ = भग्नौ ऊरू = जघनौ यस्य तस्य (मेरी गदा से नष्ट जंघाओं वाले)। कुरूणाम् = कौरवाणाम्। राज्ञः = नृपस्य दुर्योधनस्य। इदम् = एतत् (यह) अङ्गे अङ्गे = प्रत्यङ्गे निषिक्तम् = संसक्तम् (लगे हुये)। अतिसरसम् = महत्सुन्दरम् (अतिसुन्दर)। असृक् = रुधिरम्। तव = ते। परिभवजस्य = अपमानजातस्य (अपमान से उत्पन्न) अनलस्य = वह्नेः (अग्नि की) उपशान्त्यै = शमनार्थम्। अलम् = निषेधेऽव्ययम्। स्रग्धरा वृत्तम् ॥ ४१ ॥

भीमसेन– हे राज पुत्रि! इस प्रकार मुझे देखकर डरने की आवश्यकता नहीं है।

हे प्रिये! जिस दुष्ट राजा दुःशासन ने राजाओं की भरी सभा में तुम्हें खींचा था उसी के यह गाढे मेरे दोनों हाथों में लगे पीने से बचे हुये रक्त का स्पर्श करो। मेरी गदा से भग्न जंघाओं वाले कौरवों के राजा का यह अङ्ग-अङ्ग में लगा अत्यन्त सुन्दर रुधिर तुम्हारे पराभव से उत्पन्न अनल की उपशान्ति के लिये पर्याप्त है ॥ ४१ ॥

बुद्धिमतिके ! क्व सम्प्रति भानुमती योपहसति पाण्डवदारान् । भवति यज्ञवेदिसम्भवे ! याज्ञसेनि !

द्रौपदी—आणवेदु णाहो । [आज्ञापयतु नाथः ।]

भीमसेनः—स्मरति भवती यत्तन्मयोक्तम् । ['चञ्चद्भुज—' (१।२१) इत्यादि पठति ।]

द्रौपदी—णाह ! ण केवलं सुमरामि, अणुहवामि अ णाधस्स प्पसादेण । [नाथ ! न केवलं स्मरामि, अनुभवामि च नाथस्य प्रसादेन ।]

भीमसेनः—(वेणीमवधूय ।) भवति ! सयम्यतामिदानीं धार्तराष्ट्रकुल-कालरात्रिर्दुःशासनविलुलितेयं वेणी ।

सम्प्रति = इदानीम् (इस समय) सा = असौ । भानुमती = दुर्योधनपत्नी । क्व = कुत्रास्ति । या पाण्डवदाराम् = पाण्डवपत्नीम् द्रौपदीम् । उपहसति = उपहासं करोति स्म (हँस रही थी) ।

द्रौपदी—नाथः = भर्ता । आज्ञापयतु = अदिशतु (आज्ञा दें) ।

भीमसेनः—भवती = देवी (आप) स्मरति = स्मृतिं करोति (याद है) । मयोक्तम् = मत्कथितम् (मेरा कहा हुआ) ।

द्रौपदी—नाथ = स्वामिन् ! स्मरामि=स्मरणं करोमि (याद है) । नाथस्य= भवतः प्रसादेन = कृपया (आपकी कृपा से) अनुभवामि = अनुभवं करोमि (अनुभव कर रही हूँ) ।

भीमसेनः—वेणीम् = शिखाम् (जूड़े को) । अवधूय = वियुज्य (खोलकर, झाड़कर) । धार्तराष्ट्रकुलकालरात्रिः—धार्तराष्ट्रस्य कुलम्=कुरुवंशः, तस्य काल-रात्रिः = नाशकरी निशा इव (कौरववंश के लिए कालरात्रि के समान) । दुःशासनविलुलिता—दुःशासनेन = दुर्योधनानुजेन विलुलिता विश्लेषमासादिता

हे बुद्धिमतिके ! वह भानुमती इस समय कहाँ है जो कि पाण्डव पत्नी का उपहास कर रही थी । देवि ! यज्ञवेदी से उत्पन्न हुई याज्ञसेनि !

द्रौपदी—स्वामी ! आज्ञा दीजिये ।

भीमसेन—आप को याद है जो मैंने कहा था ? ('चञ्चद्भुजभ्रमित'……१।२१ इत्यादि पढ़ता है) ।

द्रौपदी—नाथ ! केवल याद ही नहीं है बल्कि आपकी कृपा से अनुभव भी कर रही हूँ ।

भीमसेन—(वेणी को झाड़कर) देवि ! अब कुरुकुल के लिए काल रात्रि के समान दुःशासन द्वारा बिखेरी गई यह वेणी बाँध लो ।

द्रौपदी—णाह ! विसुमरिदम्हि एदं वावारम् । णाहस्स प्पसादेण पुणो वि सिक्खिस्सम् । [नाथ ! विस्मृताऽस्म्येतं व्यापारम् । नाथस्य प्रसादेन पुनरपि शिक्षिष्ये ।]

(भीमसेनो वेणीं बध्नाति ।)

(नेपथ्ये ।) महासमरानलदग्धशेषाय स्वस्ति भवतु राजन्यकुलाय ।

क्रोधान्धैर्यस्य मोक्षात् क्षतनरपतिभिः पाण्डुपुत्रैः कृतानि,
प्रत्याशं मुक्तकेशान्यतुलभुजबलैः पार्थिवान्तःपुराणि ।
कृष्णायाः केशपाशः कुपितयमसखो धूमकेतुः कुरूणां,
दिष्ट्या बद्धः प्रजानां विरमतु निधनं स्वस्ति राज्ञां कुलेभ्यः ॥४२॥

(दुःशासन द्वारा खोली गई)। इयम् = एषा वेणी = केशशिखा (चोटी)। इदानीम् = (अब) संयम्यताम् = वध्यताम् (बाँध लो)।

द्रौपदी—व्यापारम् = कार्यम् (इस कार्य को)। विस्मृताऽस्मि = विस्मृतिं गताऽस्मि (भूल गई थी) शिक्षिष्ये = ज्ञास्यामि (सीखूँगी)।

महासमरानलदग्धशेषाय—महासमरम् एव अनलः = महारणाग्निः, तस्मिन् दग्धेन = भस्मीभूतेन शेषः = अवशिष्टः (महायुद्धरूपी अग्नि में जलने से बचे) राजन्यकुलाय = राजवंशाय (राजवंश का) स्वस्ति = कल्याणं भवतु (कल्याण होवे)।

अन्वयः—यस्य मोक्षात् क्रोधान्धैः अतुलभुजबलैः क्षतनरपतिभिः पाण्डुपुत्रैः प्रत्याशम् पार्थिवान्तःपुराणि मुक्तकेशानि कृतानि । सः अयम् कुपितयमसखः कुरूणां धूमकेतुः कृष्णायाः केशपाशः बद्धः प्रजानाम् निधनं विरमतु राज्ञां कुलेभ्यः स्वस्ति ॥ ४२ ॥

क्रोधान्धैरिति । यस्य = द्रौपद्याः केशपाशस्य । मोक्षात् = मोक्षणात् (जिस केशपाश के मोक्ष से)। क्रोधान्धैः = कोपविमूढैः (क्रोधान्ध) अतुलभुजबलैः—

द्रौपदी—नाथ ! मैं तो यह व्यापार (चोटी बाँधना) भूल ही गई थी। स्वामी की कृपा से पुनः सीख लूँगी।

(भीमसेन वेणी बाँधता है।)

(नेपथ्य में) महासमररूपी अनल में जलने से बचे राजकुल का कल्याण होवे।

जिस चोटी को खोलने से क्रोधान्ध अतुलित बाहुबली नष्ट किये भूपालों वाले पाण्डुपुत्रों द्वारा सभी दिशाओं में राजान्तःपुर की स्त्रियों की वेणियाँ खोल दी गईं। वही यह क्रुद्ध यमराज सदृश, कौरववंश के लिये धूमकेतु जैसा विनाशक द्रौपदी का केशपाश बँध गया है। (अतः) प्रजा का निधन शान्त हो जाये। राजकुलों का कल्याण हो ॥ ४२ ॥

युधिष्ठिरः—देवि ! एष ते वेणीसंहारोऽभिनन्द्यते नभस्तलसञ्चारिणा सिद्धजनेन।

(ततः प्रविशतः कृष्णार्जुनौ ।)

अतुलम् = अनुपमं भुजवज्रम् = वाहुवलम् येषां तैः (अतुल भुजवल वाले)। क्षतनरपतिभिः—क्षताः = नष्टाः नतपतयः = राजानः यैस्तैः (नरपतियों का संहार किये) पाण्डुपुत्रैः = पाण्डवैः (पाण्डुपुत्रों द्वारा)। प्रत्याशम् = प्रतिदिशम् (चारों ओर)। पार्थिवान्तःपुराणि—पार्थिवानाम् = नृपाणाम् अन्तःपुराणि = स्त्रीजनवासभवनानि (राजाओं के अन्तःपुर)। मुक्तकेशानि = वेणीविरहितानि (खुली वेणी वाले)। कृतानि = विहितानि (कर दिये)। सः = असौ। अयम् = एष (वह यह)। कुपित-यम-सखः—कुपितः = क्रुद्धः यो यमः = मृत्युस्तस्य सखा = मित्रम् = क्रुद्धयमसदृशः (क्रुद्ध यमराज के समान)। कुरूणाम् = कौरवाणाम्। धूमकेतुः = उत्पातग्रहः (धूमकेतु नामक उत्पाती ग्रह) कृष्णायाः = पाञ्चाल्याः (द्रौपदी का)। केशपाशः = वेणीजालम् (चोटी)। बद्धः = संयमितः (बँधा हुआ)। (अतः) प्रजानाम् = जनानाम्। निधनम् = मरणम्। विरमतु = शान्तं भवतु (प्रजा का निधन शान्त हो जावे)। राज्ञाम् = नृपाणाम् कुलेभ्यः = भूपालवंशेभ्यः। स्वस्ति = कल्याणं भवतु। अत्र पर्यायोक्तमलङ्कारः। स्रग्धरा वृत्तम् ॥ ४२ ॥

युधिष्ठिरः—देवि = हे द्रौपदि ! एषः = अयम् (यह) ते = तव (तुम्हारा) वेणीसंहारः—वेण्या संहारः = वेणीवन्धनम् (चोटी बाँधा जाना)। अभिनन्द्यते = सत्क्रियते (स्वागत-सत्कार किया जा रहा है)। नभस्तलसंचारिणा = गगनमण्डलविचरिणा (आकाशतल में विचरण करने वाले)। सिद्धजनेन = सिद्धपुरुषेण (सिद्धजन द्वारा)।

कृष्णार्जुनौ—कृष्णश्चार्जुनश्च = वासुदेवगाण्डीविनौ (कृष्ण तथा अर्जुन)। प्रविशतः = प्रवेशं कुरुतः (प्रवेश करते हैं)।

युधिष्ठिर—देवि ! तुम्हारे इस वेणीबन्धन का स्वागत आकाश तल में विचरण करने वाले सिद्ध जनों द्वारा किया जा रहा है।

(तदनन्तर कृष्ण तथा अर्जुन प्रवेश करते हैं।)

कृष्णः—(युधिष्ठिरमुपगम्य ।) विजयतां निहतसकलाऽरातिमण्डलः सानुजः पाण्डवकुलचन्द्रो महाराजो युधिष्ठिरः ।

अर्जुनः—जयत्वार्यः ।

युधिष्ठिरः—(विलोक्य ।) अये ! कथं भगवान् वासुदेवः किरीटी च । भगवन् ! अभिवादये । (किरीटिनं प्रति) एह्येहि वत्स ! परिष्वजस्व माम् ।

(अर्जुनः प्रणमति ।)

युधिष्ठिरः—(वासुदेवं प्रति) देव ! कुतस्तस्य विजयादन्यद्यस्य खलु भगवान्पुराणपुरुषो नारायणः स्वयं मङ्गलमाशास्ते ।

कृष्णः—निहतसकलारातिमण्डलः—निहतम् = घातितम् सकलम् = सम्पूर्णम् अरातिमण्डलम् = शत्रुदलम् येन सः (सम्पूर्ण शत्रुमण्डल को नष्ट करने वाले) सानुजः = सलघुवन्धुः (छोटे भाइयों सहित) । पाण्डवकुलचन्द्रः—पाण्डवकुलस्य चन्द्रः = इन्दुसदृशः (पाण्डववंश के चन्द्रमासदृश) । महाराजः = देवः ! युधिष्ठिरः = धर्मराजः । विजयताम् = जयतु (जय हो) ।

युधिष्ठिरः—विलोक्य = दृष्ट्वा (देखकर) । वासुदेवः = देवकीनन्दनः । किरीटी = अर्जुनः । अभिवादये = प्रणामं करोमि (प्रणाम करता हूँ) । एहि = आगच्छ (आओ) माम् = युधिष्ठिरम् । परिष्वजस्व = अलिङ्ग (आलिंगन करो) ।

युधिष्ठिरः—विजयादन्यत् = विजयम् विहाय, अमङ्गलमिति भावः (विजय के अतिरिक्त) । आशास्ते = कामयते (कामना करते हैं) ।

कृष्ण—(युधिष्ठिर के समीप जाकर) समस्त शत्रु दल का संहार किये हुए, अनुजों सहित पाण्डव कुल के चन्द्रमा सदृश महाराज युधिष्ठिर की जय हो ।

अर्जुन—महाराज की जय हो ।

युधिष्ठिर—(देखकर) अये ! क्या भगवान् वासुदेव और अर्जुन हैं ? भगवान् ! मैं प्रणाम करता हूँ । (अर्जुन से) आओ, आओ वत्स ! मुझे आलिंगन करो ।

(अर्जुन प्रणाम करता है)

युधिष्ठिर—(कृष्ण से) भगवन् ! उसके लिए विजय के अतिरिक्त कुछ हो ही कैसे सकता है जिसका भगवान् पुराणपुरुष नारायण (आप) स्वयं मंगल चाहते हैं ।

कृतगुरुमहदादिक्षोभसम्भूतमूर्ति,
गुणिनमुदयनाशस्थानहेतुं प्रजानाम् ।
अजममरमचिन्त्यं चिन्तयित्वाऽपि न त्वां,
भवति जगति दुःखी किं पुनर्देव दृष्ट्वा ॥ ४३ ॥

(अर्जुनमालिङ्ग्य ।) वत्स ! परिष्वजस्व माम् ।

कृष्णः—महाराज युधिष्ठिर ! एते खलु भगवन्तो व्यासवाल्मीकिजाम-

अन्वयः—देव ! कृतगुरुमहदादिक्षोभसम्भूतमूर्तिः गुणिनं प्रजानाम् उदयनाश-स्थानहेतुम् अजम् अमरम् अचिन्त्यम् त्वां चिन्तयित्वा अपि जगति (जनः) दुःखी न भवति । दृष्ट्वा पुनः किम् ? ॥ ४३ ॥

कृतेति । देव = भगवन् ! कृतगुरुमहदादिक्षोभसम्भूतमूर्तिः—कृताः = स्व-परिणामेन उत्पादिताः ये गुरवः = महान्तः महदादय = महत्तत्वादयश्च तेषां क्षोभेण = स्पन्दनेन सम्भूतः = सञ्जातः मूर्तिः = स्वरूपो यस्य तम् । (अपने से उत्पन्न किये महान् महत्तत्वादि के स्पन्दन से उत्पन्न हुये स्वरूप वाले) गुणिनम् = सत्वदिगुणत्रययुक्तम् (सत्व रज तथा तमोगुण युक्त) प्रजानाम् = जीवानाम् (जीवों के) । उदयनाशस्थानहेतुम्—उदयस्य = उत्पत्तेः नाशस्य = संहारस्य च यो हेतुः = कारणभूतस्तम् (सृष्टि की उत्पत्ति तथा नाश के हेतु) अजम्—न जः = जातः, अजस्तम् = अजन्मानम् (अज) । अमरम् = शाश्वतम् मृत्युरहितं वा (मरणधर्म रहित) । अचिन्त्यम्—न चिन्तितुं योग्यमचिन्त्यम् = अचिन्त-नीयम् । त्वाम् = भवन्तम् (तुम्हें) चिन्तयित्वा = ध्यात्वा (ध्यान कर) अपि (भी) । जगति = लोके । जनः दुःखी = दैहिकदैविकभौतिकदुःखत्रयप्रभावितः न भवति । दृष्ट्वा-दर्शनं कृत्वा तु पुनः किम्-किन्नाम दुःखम् (कहना ही क्या) ! अत्र विरोधार्थापत्ती अलङ्कारौ । मालिनी वृत्तम् ॥ ४३ ॥

कृष्णः—महाराज = राजन् ! एते = इमे । व्यास-वाल्मीकि-जामदग्न्य-

---

हे प्रभो ! अपने से ही उत्पन्न किये महान् महत्तत्वादि के क्षोभ से उत्पन्न आकार वाले, त्रिगुणी, प्राणिजन के जन्म तथा नाश के हेतु, अजन्मा, अमर तथा अचिन्तनीय आपको ध्यान गोचर करके भी संसार में प्राणी दुःखी नहीं होता है, दर्शन करके तो दुःखी होने की बात ही क्या ? ॥ ४३ ॥

(अर्जुन का आलिङ्गन कर) वत्स ! मुझसे मिलो ।

कृष्ण—महाराज युधिष्ठिर ! यह व्यास वाल्मीकि जामदग्न्य जाबालि यदि महर्षि,

दग्न्यजाबालिप्रभृतयो महर्षयः कल्पिताभिषेकमङ्गला नकुलसहदेवसात्यकिमुखाश्च सेनापतयो यादवमत्स्यमागधकूलसम्भवाश्च राजकुमाराः स्कन्धोत्तम्भिततीर्थवारिकलशास्तवाभिषेकं धारयन्ति ।

व्यासोऽयं भगवानमी च मुनयो वाल्मीकिरामादयो-
धृष्टद्युम्नमुखाश्च सैन्यपतयो माद्रीसुताधिष्ठिताः ।
प्राप्ता मागधमत्स्ययादवकुलैराज्ञाविधेयैः समं,
स्कन्धोत्तम्भिततीर्थवारिकलशा राज्याभिषेकाय ते ॥ ४४ ॥

जाबालिप्रभृतयः—व्यासः = कृष्णद्वैपायनः, वाल्मीकिः = आदिकविः, जामदग्न्यः = परशुरामः जाबालिः प्रभृतयः = आदयः (व्यासादिक) महर्षयः = मुनयः । कल्पिताभिषेकमङ्गलाः—कल्पितम् = संकल्पितम् अभिषेकस्य = राजतिलकस्य मङ्गलम् = महोत्सवम् यैस्ते (अभिषेकोत्सव मनाने की कल्पना किये हुये)। नकुलसहदेवसात्यकिमुखाः—नकुलः सहदेवः सात्यकिः मुखाः = प्रमुखा येषां ते (नकुल सहदेव सात्यकि आदि प्रमुख) सेनापतयः = सेनाध्यक्षाः । यादवमत्स्यमागधकुलसम्भवाः—यादवानाम् मत्स्यानां मागधानाञ्च कुलेषु = वंशेषु सम्भवाः = समुत्पन्नाः । राजकुमाराः = राजपुत्राः स्कन्धोत्तम्भिततीर्थवारिकलशाः—स्कन्धेषु = अंसदेशेषु उत्तम्भिताः = ऊढ़ाः तीर्थवारिकलशाः = तीर्थजलघटाः यैस्ते (अपने कन्धों पर तीर्थजल के घड़े रखे हुये)। तव = ते (तुम्हारा) अभिषेकम् = राज्याभिषेकम् (राजतिलक को)। धारयन्ति = गृह्णन्ति (धारण कर रहे हैं)।

अन्वयः—अयं भगवान् व्यासः अमी वाल्मीकिरामादयः स्कन्धोत्तम्भिततीर्थवारिकलशाः मुनयः माद्रीसुताधिष्ठिताः धृष्टद्युम्नप्रमुखाः सैन्यपतयः आज्ञाविधेयैः मागधमत्स्ययादवकुलैः समं ते राज्याभिषेकाय प्राप्ताः ॥ ४४ ॥

व्यास इति । अयम् = एषः । भगवान् व्यासः = देवः कृष्णद्वैपायनः । अमी = एते । वाल्मीकिरादयः - वाल्मीकिभार्गवप्रभृतयः । स्कन्धोत्तम्भिततीर्थवारिकलशाः—

नकुल सहदेव सात्यकि आदि सेनापति, यादवमत्स्य मागधादि वंशों में उत्पन्न हुये राजकुमार तुम्हारे राज्याभिषेक महोत्सव की कामना से तीर्थजल के घड़े अपने कन्धों पर रखे हुए उपस्थित हैं ।

यह भगवान् व्यास, यह वाल्मीकि परशुराम आदि अपने कन्धों पर तीर्थजलपूर्ण कलश रखे हुए मुनि माद्रीसुतों सहित धृष्टद्युम्नादि प्रमुख सेनापति, आज्ञापालन करने वाले मागध, मत्स्य तथा यादव कुलों के साथ तुम्हारा राज्याभिषेक करने के लिये आये हैं ॥४४॥

अहं पुनश्चार्वाकेण रक्षसा व्याकुलीकृतं भवन्तमुपलभ्यार्जुनेन सह त्वरिततरमायातः ।

युधिष्ठिरः—कथं चार्वाकेण रक्षसा वयमेवं विप्रलब्धाः ?

भीमसेनः—(सरोषम् ।) क्वासौ धार्तराष्ट्रसखो राक्षसः पुण्यजनापसदो येनार्यस्य महांश्चित्तविभ्रमः कृतः ।

स्कन्धदेशे धृततीर्थजलपूर्णघटाः ! मुनयः = ऋषयः (अपने कन्धों पर तीर्थजल पूर्ण घड़े रखे हुये) । माद्रीसुताधिष्ठिताः = माद्रीसुतयुक्ताः । धृष्टद्युम्नप्रमुखाः = धृष्टद्युम्नादिमुख्याः । सैन्यपतयः = सेनाध्यक्षाः । आज्ञाविधेयैः = आदेशपालकैः । मागधमत्स्ययादवकुलैः = तत्तन्नामवंशजातैः । समम् = साकम् । ते = तव । राज्याभिषेकाय = राज्याभिषेकं कर्तुम् । प्राप्ताः = समागताः सन्ति । शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम् ।। ४४ ।।

चार्वाकेण = चार्वाकनाम्ना । राक्षसा = राक्षसेन । व्याकुलीकृतम् = सन्त्रासितम् (व्याकुल किये गये) । भवन्तम् = त्वाम् (आपको) । उपलभ्य = प्राप्य (पाकर) अर्जुनेन सह = किरीटिना साकम् (अर्जुन के साथ) । त्वरिततरम् = द्रुततरम् (अतिशीघ्र) आयातः = समागतः (आया) ।

युधिष्ठिरः—एवम् = इत्थम् (इस प्रकार) विप्रलब्धा = छलिताः (धोखा दिये गये हैं) ?

भीमसेन—सरोषम् = सक्रोधम् (क्रोध के साथ) । असौ = सः । धार्तराष्ट्रसखः = दुर्योधनसुहृत् (दुर्योधन का मित्र) । पुण्यजनापसदः = राक्षसाधमः । येन = येन रक्षसा (जिसने) । आर्यस्य = युधिष्ठिरस्य (महाराज का) महान् चित्तविभ्रमः = अत्यन्तमनोभ्रमः । कृतः = विहितः (कर डाला) ।

और में चार्वाक राक्षस द्वारा व्याकुल किये गये आप को पाकर अर्जुन के साथ अति शीघ्र आ गया हूँ ।

युधिष्ठिर—क्या मैं चार्वाक-राक्षस द्वारा ठगा गया हूँ ?

भीमसेन—(रोष के साथ) वह दुर्योधन का मित्र राक्षसाधम कहाँ है जिसने महाराज का महान् चित्त-विभ्रम किया ?

कृष्णः—निगृहीतः स दुरात्मा नकुलेन। तत्कथय महाराज! किमस्मात्परं समीहितं सम्पादयामि।

युधिष्ठिरः—पुण्डरीकाक्ष! न किञ्चिन्न ददाति भगवान्प्रसन्नः। अहं तु पुरुषसाधारणयवुद्धया सन्तुष्यामि। न खल्वतः परमभ्यर्थयितुं क्षमः। पश्यतु देवः—

क्रोधान्धैः सकलं हतं रिपुकुलं पञ्चाक्षतास्ते वयं,
पाञ्चाल्या मम दुर्नयोपजनितस्तीर्णो निकारार्णवः।

कृष्णः—सः = असौ दुरात्मा = दुष्टः (वह दुष्ट) कुमारनकुलेन = अनुजेन नकुलेन। निगृहीतः = धृतः (पकड़ लिया है)। कथय = भण (कहो) अस्मात्=एतस्मात् परम्=अधिकम् (इससे बढ़कर)। समीहितम् = अभिलषितम् (चाहा हुआ)। किं सम्पादयामि = किं करोमि (क्या करूँ)।

युधिष्ठिरः—पुण्डरीकाक्ष—पुण्डरीकमिव अक्षिणी यस्य तत्सम्बुद्धौ = हे कमलनयन! प्रसन्नः = प्रसादीभूतः (प्रसन्न) भगवान् = प्रभुः। परमम् = अधिकम् अपि। प्रियम् = रुचिकरम्। पुरुषसाधारणया—पुरुषाणाम् साधारणा = सामान्या, तया (पुरुषों की साधारण) बुद्धया = मत्या (बुद्धि से) सन्तुष्यामि = सन्तुष्टः भविष्यामि (सन्तुष्ट रहूँगा)। खलु = नूनम्। अतः परम् = अस्माद् अधिकम् (इससे अधिक) अभ्यर्थयितुम् = याचितुम् (माँगने को)। न क्षमः = न समर्थः अस्मि। (मैं समर्थ नहीं हूँ)।

अन्वयः—क्रोधान्धैः (अस्माभिः) सकलं रिपुकुलं हतम्, ते पञ्च वयम् अक्षताः, मम दुर्नयोपजनितः पाञ्चाल्याः निकारार्णवः तीर्णः देवः पुरुषोत्तमः त्वम्

कृष्ण—वह दुष्ट राक्षस कुमार न कुल के द्वारा पकड़ लिया गया है। अतः महाराज! कहिये, इससे अधिक और क्या आपका प्रिय कार्य करूँ?

युधिष्ठिर—हे पुण्डरीकाक्ष! ऐसा कुछ भी नहीं है जो कि प्रसन्न होकर प्रभु न दे सकें। क्या इससे भी बढ़ कर मुझे कोई वस्तु प्रिय है? मैं तो मनुष्य की साधारण बुद्धि से सन्तुष्ट रहूँगा। वास्तव में इससे बढ़कर मैं और कुछ याचना करने में समर्थ नहीं हूँ।

आप देखें—

क्रोधान्ध हम लोगों ने सम्पूर्ण शत्रुकुल का संहार कर डाला और हम पाँचों पाण्डव सकुशल हैं। मेरे जुआ आदि दुर्व्यवहारों से जनित द्रौपदी का परिभव रूपी सागर भी

त्वं देवः पुरुषोत्तमः सुकृतिनं मामादृतो भाषसे
किं नामान्यदतः परं भगवतो याचे प्रसन्नादहम् ॥ ४५ ॥
तथापि प्रीततरश्चेद् भगवतास्तदिदमस्तु—
अकृपणमतिः कामं जीव्याज्जनः पुरुषायुषम्,
भवतु च भवद्भक्तिर्द्वैधं विना पुरुषोत्तम !

आदृतः (सन्) सुकृतिनं मां भाषसे। अतः अन्यत् परं किं नाम (यत्) प्रसन्नात् भगवतः अहं याचे ॥ ४५ ॥

क्रोधान्धैरिति। क्रोधान्धैः = कोपमूढैः (अस्माभिः) सकलम् = सम्पूर्णम्। रिपुकुलम् = शत्रुकुलम् (पूर्ण शत्रुकुल) हतम् = नाशितम् (नष्ट कर डाला)। ते = तथाविधाः पञ्च = पञ्चसंख्यकाः वयम् = पाण्डवाः (हम पाँचों पाण्डव)। अक्षताः = अनष्टाः कुशलिनः। मम = मे। दुर्नयोपजनितः—दुर्नयेन = द्यूताद्यविनयेन उपजनितः = उत्पादितः (जुआ आदि अविनयों से उत्पन्न) पाञ्चाल्याः = द्रौपद्याः। निकारार्णवः—निकारस्य = परिभवस्य अर्णवः = सागरः (परिभव सागर को) तीर्णः = उत्तीर्णः (पार कर लिया) देवः = भगवान् पुरुषोत्तमः = आदिपुरुषः त्वम् = भवान् कृष्णः। आदृतः = सम्मानितः (सम्मान किये गये) सुकृतिनम् = पुण्यात्मानम् (पुण्यवान्) माम् = युधिष्ठिरम् (मुझको)। भाषसे = कथयसि (कह रहे हो)। अतः परम् = अस्मादधिकम् (इससे बढ़कर) अन्यत् = अपरम् (और) किं नाम = किं वस्तु। यत् = यस्मात्। प्रसन्नात् = प्रीत्या। भगवतः = प्रभोः। अहं याचे = अहं याचनां करोमि (मैं माँगूँ)। शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम् ॥ ४५ ॥

चेत् = यदि। तथापि = एतत्कृतेऽपि (फिर भी) भगवान् = देवः। प्रीततरः = अतिप्रसन्नः तत् = तर्हि। इदम् = एतत्। अस्तु = भवतु।

अन्वयः—पुरुषोत्तम ! अकृपणमतिः जनः कामं पुरुषायुषं जीव्यात् भवद्भक्तिः द्वैधं विना भवतु। भूपः दयितभुवनः विद्वद्बन्धुः गुणेषु विशेषवित् सततसुकृती प्रसाधितमण्डलः भूयात् ॥ ४६ ॥

पार कर लिया तथा आप पुरुषोत्तम भगवान् आदृत होकर मुझसे और माँगने के लिये कह रहे हैं। धन्य हूँ मैं। अब इससे भी अधिक और क्या हो सकता है जिसे प्रसन्नता से भगवान् से मैं माँग लूँ ॥ ४५ ॥

फिर भी यदि प्रभु अधिक प्रसन्न हैं तो यह हो कि—

हे पुरुषोत्तम ! उदार पुरुष यथेष्ट शतायु बनें, आपकी भक्ति संशय-रहित होवे, राजा

दयितभुवनो विद्वद्बन्धुर्गुणेषु विशेषवित्
सततसुकृती भूयाद् भूपः प्रसाधितमण्डलः ॥ ४६ ॥

कृष्णः—एवमस्तु । (इति निष्क्रान्ताः सर्वे ।)

इति षष्ठोऽङ्कः ।

अकृपणमतिरिति । पुरुषोत्तम = हे भगवन् ! अकृपणमतिः—अकृपणा = अदीना मतिः = बुद्धिर्यस्य सः = उदारहृदयः । जनः = नरः । कामम् = यथेष्टम् (जी भरकर) । पुरुषायुषम् = शतवर्षम् (सौ वर्ष तक) जीव्यात् = जीवतु (जीवित रहे) (शतायुर्वै पुरुषः इति श्रुत्या) । भवद्भक्तिः—भवतः = श्रीमतः भक्तिः = अनुरागः (आपकी भक्ति) द्वैधम् = संशयं, विना (सन्देह के बिना) भवतु = अस्तु (होवे) । भूपः = नृपः (राजा) । दयितभुवनः—दयितम् = प्रियम् भुवनम् = लोकम् यस्य सः = लोकप्रियः (जनप्रिय) विद्वद्बन्धुः—विदुषाम् = विद्योपासकानाम् बन्धुः = सुहृद् (विद्वानों के मित्र) गुणेषु = विशेषतासु (गुणों में) विशेषवित्—विशिष्टम् वेत्तीति = विशेषवेत्ता (विशेष जानकार) सततसुकृती—सततम् = अनवरतम् सुकृती = पुण्यकर्त्ता (सदैव पुण्य करनेवाला) । प्रसाधितमण्डलः—प्रसाधितम् = व्यवस्थापितम् मण्डलम् = भूमण्डलम् (व्यवस्थित भूमण्डल वाला) । भूयात् = स्यात् (होवे) । हरिणीवृत्तम् । तद्यथा—नसमरसलागा षड्वेदैर्हयैर्हरिणी स्मृता ॥ ४६ ॥

कृष्णः—एवम् = इत्थम् (ऐसा) अस्तु = भवतु (हो) ।

सर्वे = सर्वे जनाः (सब) निष्क्रान्ताः = निर्गताः (निकल गये) ।

इति शाहजहाँपुरमण्डलान्तर्वर्तिनो नाहिलवास्तव्यस्य आचार्य-परमेश्वरदीनपाण्डेयस्य सुधासंस्कृतहिन्दीटीकाद्वयोपेतस्य वेणीसंहारनाटकस्य षष्ठोऽङ्कः ।

लोक-प्रिय, विद्वानों को बन्धुवत् मानने वाला, गुणों का विशेष पारखी (गुणग्राही), निरन्तर पुण्यकर्म करने वाला तथा व्यवस्थित मण्डल वाला बने ॥ ४६ ॥

कृष्ण—ऐसा होवे ।

(यह कहकर सब निकल जाते हैं ।)

छठा अंक समाप्त ।

इदं च विदग्धस्निग्धवियोगदुर्मनसा विप्रलपितं तेन कविना—

काव्यालापसुभाषितव्यसनिनस्ते राजहंसा गता-
स्ता गोष्ठ्यः क्षयमागता गुणलवश्लाघ्या न वाचः सताम् ।
सालङ्कारसप्रसन्नमधुराकाराः कवीनां गिरः
प्राप्ता नाशमयं तु भूमिवलये जीयात्प्रबन्धो महान् ॥ ४७ ॥

समाप्तमिदं वेणीसंहारं नाम नाटकम् ।



संस्कृतव्याख्या । इदञ्चेति—विदग्धाः = काव्यप्रणयनादिकर्मसु चतुराः, अतएव स्निग्धाः = सर्वजनप्रियाः, तेषां यो वियोगः = विप्रलम्भः, तेन दुर्मनसा = दुःखितेन चेतोवता, कविना भट्टनारायणेन, विप्रलपितम् = एवम् उच्छ्वसितम् । यतो हि आगामिनि काले मद्रचितनाटकरसमर्मज्ञः को भविष्यतीति तस्य विप्रलपने कारणम् । विप्रलापप्रकारमेवं प्रतौति नाटककृत्—

अन्वयः—ते काव्यालापसुभाषितव्यसनिनः, राजहंसाः गताः, ताः गोष्ठ्यः क्षयम् आगताः सतां वाचः गुणलवश्लाघ्याः न, कवीनां सालङ्कारसप्रसन्नमधुराकाराः गिरः नाशं प्राप्ताः भूमिवलये अयन्तु महान् प्रयत्नः जीयात् ।

काव्यलापेति । ते=भोजप्रभृतयः प्रसिद्धा राजानः, काव्यालापसुभाषितव्यसनिनः = निर्दुष्टभावभरितिवैदर्भीरीतिप्रचुरशब्दार्थसम्पन्नसूक्तपठनपाठनव्यापारनिरताः, राजहंसाः = राजसु विद्यावदातमुखत्वेन हंससदृशाः सुधीजुषः किंवा जलरूपं काव्यमनादृत्य दुग्धरूपमुत्तमोत्तमं काव्यं पिपासवो राजहंसा, राजान एव हंसा विवेकशीलत्वाद् गताः = न साम्प्रतं विलसन्ति, ताः = समये समये विद्वद्भिः, राजभिर्वा आकार्यमाणाः, गोष्ठ्यः = तद्विद्यसम्भाषारूपाः सभाः, क्षयमागताः = ह्रासतां गताः, इदानीन्तु सतां = काव्यरससुधासन्दोहसमृद्धानां, वाचः = गिरः, गुणलवश्लाघ्याः = गुणस्य लवेन=कणेनापि श्लाघ्याः=समादरणीयाः स्तुत्या वा न भवन्तीति, कवीनां कालिदासप्रभृतिरससिद्धानां, सालङ्कारसप्रसन्नमधुराकाराः—सालङ्काराः = विविधालङ्कारसमृद्धा, रसप्रसन्नाः = शृङ्गारादिरससम्पन्नाः प्रसादगुणपूर्णाश्च, अतएव मधुराकाराः = पठनश्रवणाभ्यामेव मनोहराः, गिरः = सूक्तयः, अत्र कविना सूक्तिरमणीस्वरूपवर्णनं समासोक्त्यलङ्कारमुखेन स्थाने प्रतिपादितम् । नाशम् =

अदर्शनं, प्राप्ताः = गताः, तथापि भूमिवलये = आसमुद्रम्, अयन्तु = प्रस्तुतवेणीसंहारनाटकाख्यः, महान् = आकृत्या रसालङ्कारगुणैश्च स्फीतीकृतः, प्रवन्धः = प्रस्तुतोऽयं ग्रन्थः, जीयात् = सर्वोत्कर्षेण वर्ततां, मम कीर्तिलाभाय च स्यादिति कवेरभिलषितोऽर्थः ।

हिन्दी—काव्यरसमर्मज्ञ कविजनों के वियोग (सम्प्रति अभाव) से खिन्न होकर कवि (भट्टनारायण) ने यह विलाप (खेद प्रकट) किया है—

वे काव्यपाठ, सुभाषित चर्चा के शौकीन हंसों के समान गुणवाले राजा आज नहीं रह गये हैं। शास्त्रों, काव्यों के विषयों में चर्चा के लिये आयोजित होने वाली गोष्ठियाँ (सभायें) समाप्त हो गयी हैं। साहित्य सुधा सरस सज्जनों की सूक्तियों की अब नाममात्र भी प्रशंसा नहीं हो रही है, कविजनों के सरस, सालंकार, प्रसादगुणपूर्ण अतएव मनोहर वचन अब सुनने के लिये उपलब्ध नहीं हो रहे हैं। कवि की प्रस्तुत नाटक के प्रति शुभकामना है कि यह (साहित्यिक गुणगणों से पूर्ण होने के कारण) महान् प्रवन्ध (वेणोसंहार नाटक) सर्वश्रेष्ठ हो, अर्थात् इसकी रचना से मुझे सुयश की प्राप्ति हो ॥ ४७ ॥



परिशिष्टम्–१

वेणीसंहारान्तर्गतानि सुभाषितानि

अकुशलदर्शनाः स्वप्ना देवतानां प्रशंसया कुशलपरिणामा भवन्ति ।

अनुक्तहितकारिता हि प्रकाशयति मनोगतां स्वामिभक्तिम् ।

अनुल्लङ्घनीयः समुदाचारः ।

अप्रमत्तसञ्चरणीयानि रिपुबलानि श्रूयन्ते ।

अहो मुग्धत्वमबलानाम् ।

आशाबलवती राजन् ! शल्यो जेष्यति पाण्डवान् ।

उपक्रियमाणाभावे किमुपकरेणन ।

उपेक्षितानां मन्दानां धीरसत्त्वैरवज्ञया ।
अत्रासितानां क्रोधान्धैर्भवत्येषा विकत्थना ॥

कालानुरूपं प्रतिविधातव्यम् ।

कुतस्तस्य विजयादन्यद् यस्य भगवान् पुराणपुरुषो नारायणः स्वयं मङ्गलान्याशास्ते ।

को हि नाम भगवता सन्दिष्टं विकल्पयति ।

गुप्त्या साक्षान्महानल्पः स्वयमन्येन वा कृतः ।
करोति महतीं प्रीतिमपकारोपकारिणाम् ॥

ग्रहाणां चरितं स्वप्नो निमित्तान्युपयाचितम् ।
फ़लन्ति काकतालीयं तेन प्राज्ञा न विभ्यति ॥

तं मोहान्धः कथमयममुं वेत्तु देवं पुराणम् ।

तेजस्वी रिपुहतबन्धुदुःखपारं बाहुभ्यां व्रजति धृतायुधप्लवाभ्याम् ।

त्रस्तं विनापि विषयादुरुविक्रमस्य चेतो विवेकपरिमन्थरतां प्रयाति ।

दैवायत्तं कुले जन्म मदायत्तं तु पौरुषम् ।

न किञ्चिन्न ददाति भगवान् प्रसन्नः ।

न घटस्य कूपपाते रज्जुरपि तत्र प्रक्षेप्तव्या ।

न युक्तमनभिवाद्य गुरून् गन्तुम् ।

न युक्तं पराक्रमवतां वाङ्मात्रेणापि विरागमुत्पादयितुम् ।

न युक्तं बन्धुव्यसनं विस्तरेणावेदयितुम् ।

न युक्तं वीरस्य क्षत्रियस्य प्रतिज्ञातं शिथिलयितुम् ।

पुण्यवन्तो हि दुःखभाजो भवन्ति ।

प्रकृतिर्दुस्त्यजा ।

बन्द्याः खलु गुरवः ।

ब्राह्मणशोणितं खल्वेतद्गलं दहद्दहत्प्रविशति ।

भवति तनय ! लक्ष्मीः साहसेष्वीदृशेषु ।

यदि समरमपास्य नास्ति मृत्योर्भयमिति युक्तमितोऽन्यतः प्रयातुम् ।
अथ मरणमवश्यमेवजन्तोः किमिति मुधा मलिनं यशः कुरुध्वे ।

यद्देवस्त्रिभुवननाथो भणति तत्कथमन्यथा भविष्यति ।

यावत्क्षत्रं तावत्समरविजयिनो जिताः हताश्च वीराः ।

यावत्प्राणिहि तावदुपदेष्टव्यभूमिर्विजिगीषुः प्रज्ञावताम् ।

यावदयं संसारस्तावत्प्रसिद्धैवेयं लोकयात्रा यत्पुत्रैः पितरो लोकद्वयेऽप्यनुवर्तनीयाः ।

वक्तुं सुकरं दुष्करमध्यवसितुम् ।

विश्राव्य नामकर्मणी वन्दनीयाः गुरवः ।

स एव स्निग्धो जनो यः पृष्टः परुषमपि हितं भणति ।

स्त्रीणां हि साहचर्याद् भवन्ति चेतांसि भर्तृसदृशानि ।
मधुरापि हि मूर्च्छयते विषविटपिसमाश्रिता वल्ली ।।

स्वपञ्जनाः किं न खलु प्रलपति ।

हीयमानाः किल रिपोर्नृपाः सन्दधते परान् ।



परिशिष्टम्–२

वेणीसंहारान्तर्गतप्रयुक्तानि वृत्तानि तल्लक्षणानि च

(१) शिखरिणी—रसै रुद्रैश्छिन्ना यमनसभलागाः शिखरिणी ।
प्रथमाङ्के—१, १०, ११ । तृतीयाङ्के—१६, १९, २२, २५, ३८, ४५ । षष्ठाङ्के—५, २८, ३१, ४० = १३ श्लोकाः ।

(२) शार्दूलविक्रीडितम्—सूर्याश्वैर्मसजस्ततः सगुरवः शार्दूलविक्रीडितम् ।
प्रथमाङ्के—२, १२, २४, २५ । द्वितीयाङ्के—१, २, ९, १३, १७, २०, २५ । तृतीयाङ्के—५, ९, ३३, ३५, ४७ । चतुर्थाङ्के—१, १२ ।

पञ्चमाङ्के—१, ५, ७, ९, १०। षष्ठाङ्के—१, ७, १२, १३, १६, १७, १९, २७, ४४, ४५ = ३३ श्लोकाः।

(३) स्रग्धरा—म्रभ्नैर्याणां त्रयेण त्रिमुनियतियुतं स्रग्धरा कीर्तितेयम्।

प्रथमाङ्के—३, २२, २७। द्वितीयाङ्के—१९, २२, २७। तृतीयाङ्के—७, ३२। चतुर्थाङ्के—२। पञ्चमाङ्के—२६, २९, ३०, ३५, ३६, ३७। षष्ठाङ्के—२, ८, ३७, ३९, ४१, ४२ = २१ श्लोकाः।

(४) आर्या—यस्याः पादे प्रथमे द्वादश मात्रा तथा तृतीयेऽपि। अष्टादश द्वितीये चतुर्थके पञ्चदश साऽऽर्या॥

प्रथमाङ्के—४, ५, ६, २०। पञ्चमाङ्के—११, १८ = ६ श्लोकाः।

(५) वसन्ततिलका—उक्ता वसन्ततिलका तभजाजगौ गः।

प्रथमाङ्के—७, ८, १५, २१। द्वितीयाङ्के—७, १२, २३, २६, २८। तृतीयाङ्के—१०, १२, १३, १५, २१, २९, ३०, ४०, ४४। चतुर्थाङ्के—५, ६, ८, १०। पञ्चमाङ्के—२, ३, १३, १६, २२, ३२, ३८, ४२। षष्ठाङ्के—४, ९, २१, २२, २३, ३०, ३४, ३५, ३८ = ३९ श्लोकाः।

(६) पथ्यावक्त्रम्—युजोश्चतुर्थतो येन पथ्यावक्त्रं प्रकीर्तितम्।

प्रथमाङ्के—९, १३, १४, १६, १७, १८, १९। द्वितीयाङ्के—१४, १५, २४। तृतीयाङ्के—१४, १७, १८, २६, २८, ३१, ३६, ३७, ४१, ४२, ४८। चतुर्थाङ्के—११। षष्ठाङ्के—१०, ११, १४, २९, ३२, ३३ = २८ श्लोकाः।

(७) मन्दाक्रान्ता—मन्दाक्रान्ताम्बुधिरसनगैर्मोभनौगौ य युग्मम्।

प्रथमाङ्के—२३। द्वितीयाङ्के—८, ११, १८। तृतीयाङ्के—८, ११, २०, २३। चतुर्थाङ्के—१३, १५। पञ्चमाङ्के—३३। षष्ठाङ्के—२०, २५, २६ = १४ श्लोकाः।

(८) अनुष्टुप्—श्लोके षष्ठं गुरु ज्ञेयं सर्वत्र लघुपञ्चमम्। द्विचतुष्पादयोर्ह्रस्वं सप्तमं दीर्घमन्ययोः॥

प्रथमाङ्के—२६,। द्वितीयाङ्के—३, ४। तृतीयाङ्के—४३, ४६, ४९। चतुर्थाङ्के—७, ९, १४। पञ्चमाङ्के—४, ६, १२, १५, १७, १९, २०, २३, २४, २५, २८, ३१, ३४, ३९। षष्ठाङ्के—६, १५ = २५ श्लोकाः।

(९) **ललिता**—ससजा विषये यदा गुरुः समरा स्याल्ललिता समे लगौ ।
द्वितीयाङ्के—५, ६ = २ श्लोकौ ।

(१०) **औपच्छन्दसिकम्**—षड्विषयेऽष्टौ समे कलास्ताश्च समे स्युर्नो निरन्तराः । न समात्र पराश्रिता कला वैतालीयेऽन्ते रलौ गुरुः ॥
द्वितीयाङ्के—१० = १ श्लोकः ।

(११) **मालिनी**—ननमयययुतेयं मालिनी भोगिलोके ।
द्वितीयाङ्के—१६ । तृतीयाङ्के—४० । पञ्चमाङ्के—२१, २७, ४० । षष्ठाङ्के—३६, ४३ = ७ श्लोकाः ।

(१२) **द्रुतविलम्बितम्**—द्रुतविलम्बितमाह नभौ भरौ ।
द्वितीयाङ्के—२१ = १ श्लोकः ।

(१३) **प्रहर्षिणीयम्**—त्र्यासाभिर्मनजरगाः प्रहर्षिणीयम् ।
द्वितीयाङ्के—२९ = १ श्लोकः ।

(१४) **पृथ्वी**—असौ असवला वसुग्रहगतिश्च पृथ्वी गुरुः ।
तृतीयाङ्के—४, ३४ । षष्ठाङ्के—१८ = ३ श्लोकाः ।

(१५) **पुष्पिताग्रा**—अयुजि न युगरेफतो यकारो युजि च नजौ जरगाश्च पुष्पिताग्रा ।
तृतीयाङ्के—६ । चतुर्थाङ्के—३ = २ श्लोकौ ।

(१६) **हरिणी**—न समर सलागाः षड्वेदैर्हयैर्हरिणीस्मृता ।
तृतीयाङ्के—२४ । पञ्चमाङ्के—८, ४१ । षष्ठाङ्के—२४, ४६ = ५ श्लोकाः ।

(१७) **प्रहर्षिणी**—त्र्याशाभिर्मनजरगाः प्रहर्षिणीयम् ।
तृतीयाङ्के—२७ = १ श्लोकः ।

(१८) **मञ्जुभाषिणी**—सजसा जगौ च यदि मञ्जुभाषिणी ।
तृतीयाङ्के—३९ । पञ्चमाङ्के—१४ = २ श्लोकौ ।

(१९) **उपजाति**—उपेन्द्रवज्रा अथ इन्द्रवज्रा एतद् द्वयं यत्र हि सोपजातिः ।
षष्ठाङ्के—३ = १ श्लोकः ।



श्लोकानुक्रमणिका


तिथी..........
पु०सं०..........
भारती पुस्तकालय



टीकाकर्तुर्वंशवर्णनम्

अस्त्युत्तरप्रदेशोऽत्र, राज्येषु भारतस्य वै।
हृदयमिव सुराष्ट्रस्य, तत्राऽऽस्ते शाहजीपुरम् ॥ १ ॥
कठिनी-गोमती-गङ्गाः देवहूत्यादिभिः समम्।
पुनन्ति सरितो यस्य भूमिममृतोपमैर्जलैः ॥ २ ॥
यत्र देवो विश्वनाथो दुर्गा दुर्गार्तिहारिणी।
'वनखण्डीनाथ'रूपोऽसौ, शङ्करः शन्तनोति नः ॥ ३ ॥
तस्मिन् मण्डले लोक-विश्रुतः 'नाहिल'ऽभिधः।
ग्रामो विप्रप्रमुखाणां विदुषां व्यापारिणामपि ॥ ४ ॥
पाण्डित्ये कर्मकाण्डे च ज्योतिष्कर्मणि वैद्यके।
वयने च विदुर्लोकाः 'लघुकाशी'ति प्रागमुम् ॥ ५ ॥
यस्योत्तरस्यां दिशि तोयराशौ राशीकृता कीर्तिरिव द्विजानाम्।
महोर्मिभिः पूत-पतत्रिपद्मैरशेषशोभां विकची-करोति ॥ ६ ॥
सनाढ्येषु च तत्रैव सत्सु पाराशरान्वये।
'पाण्डेयो'पाह्व विप्रोऽभू'च्छिवचरण' इतीरितः ॥ ७ ॥
शिवस्य चरणयोर्यस्य भक्तिरासीन्निरन्तरम्।
शिव-प्रसादात् तस्याऽभूद्रेवतीरामः विश्रुतः ॥ ८ ॥
चत्वारश्चाभवंस्तस्य पुत्राः पङ्क्ति-पावनाः।
जगन्नाथोऽथ जयलालो रामलालस्तथैव च ॥ ९ ॥
प्यारेलाल इति ख्यातः गीत-वाद्य-विशारदः।
द्वितीयश्च तुरीयश्च तेषु यातावपुत्रिणौ ॥ १० ॥
तृतीये विदुरो जातः कथा-कीर्तन-कोविदः।
सुदामादेविगर्भाद्यस्याऽभवतां सुतौ ॥ ११ ॥

ज्येष्ठो ज्येष्ठगुणोपेतः रामचन्द्रः प्रतापवान् ।
परमेश्वरदीनश्च कनिष्ठो वागुपासकः ॥ १२ ॥
यस्य च 'श्यामा'ऽश्यामापापहृदयाभिरामा सुगृहिणी ।
यस्याः सुधीः 'सुधीरः' 'अवनिकुमार'श्चापि सुतौ जातौ ॥ १३ ॥
तस्य च शिशुमति-रुचिरा, चतुरमतिस्फुटभित्तिचारुचित्रा ।
हृद्या भूयात् सदैव, वेणीसंहारस्य कृता 'सुधा'टीका ॥ १४ ॥
सद्त्रिंशत्युत्तर-द्विसहस्र-मिते विक्रमे वर्षे ।
पुण्ये मकरे पर्वणि बुधदिवसे पूर्णतां याता ॥ १५ ॥

शुभं भूयात् ।




महर्षि-पाणिनि-प्रज्ञा-अनुसन्धान
तिथी
पु०सं० 1053
भारती पुस्तकालय


महर्षि-पाणिनि-प्रज्ञा-अनुसंधान
तिथी..........
पु०सं०...1253
भारती पुस्तकालय

१ रघुवंशमहाकाव्य प्र० सर्ग । 'चन्द्रकला' सं० हि० व्या०–
२ रघुवंशमहाकाव्यम् । 'विमला' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या
द्वितीय २-५० तृतीय ३-००, ४-५ ५-००, ६-
३ हितोपदेश : मित्रलाभ । 'चन्द्रकला' सं० हि० टीका
४ लघुसिद्धान्तकौमुदी । 'शिवाख्य' सं० हि० टीका–गो
५ तर्कसंग्रह—पदकृत्य । हिन्दी टीका सहित–श्री शेषर
६ दशकुमार-पूर्वपीठिका । परीक्षोपयोगि 'विमला' संस्
सहित । व्याख्याकार— पं० श्रीकृष्णमणि त्रिपाठी
७ कुमारसम्भव । 'विमला' संस्कृत-हिन्दी टीका–श्रीकृ
१–२ सर्ग ५–५० तृ० सर्ग २–२५ चतुर्थ सर्ग २-
८ स्वप्नवासवदत्ता । 'चन्द्रकला' सं० हि० टीका–श्रीशे
९ नीतिशतकम् । 'विमला' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या सहित-
१० पञ्चतन्त्र । अपरीक्षितकारक । 'विमला' सं. हि. टीका ।
११ संस्कृत-व्याकरणम् । (अनु० खंड-निबन्ध खण्ड सहित)–पं० रामचन्द्र झा १०–००
१२ सांख्यकारिका । 'सांख्यप्रकाश' सं.हि. टीका सहित । श्रीकृष्णमणित्रिपाठी ६–००
१३ वेदान्तसार । 'भावबोधिनी' सं० हि० टीका–श्रीरामशरण त्रिपाठी ६–००
१४ मेघदूत । 'चन्द्रकला' सं० हि० टीका–श्रीशेषराज शर्मा रेग्मी १४–००
१५ रामाभ्युदययात्रा । सं० हि० टीका सहित–श्रीरुद्रप्रसाद अवस्थी ७–००
१६ शिशुपालवध । सं० हि० टीका सहित । रामजीलाल शर्मा १-४ सर्ग १५–००
१७ दशरूपक । 'चन्द्रकला' हि० टीका सहित–डॉ० भोलाशंकर व्यास २०–००
१८ साहित्यदर्पण । 'शशिकला' हिन्दी टीका १-६ परि० ३५-००, ७-१० परि २०–००
१९ काव्यप्रकाश । 'चन्द्रकला' हिन्दी टीका–डॉ० सत्यव्रत सिंह ४०–००
२० भट्टिमहाकाव्य । सान्वय संस्कृत-हिन्दी व्याख्या सहित । श्रीगोपालशास्त्री
'दर्शनकेशरी' १–४ सर्ग १०–०० ५–८ सर्ग १०–०० एवं १४–२२ सर्ग १०–००
२१ नैषधमहाकाव्य । 'चन्द्रकला' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या सहित । श्रीशेषराजशर्मा
प्र० सर्ग ७-५०, १-३ सर्ग १५–०० १-५ सर्ग २४–०० १-९ सर्ग ४०–००
२२ छन्दोमञ्जरी । (प्रमाणिक-संस्करण) । 'सुषमा'-'सफला' संस्कृत-
हिन्दी व्याख्या युक्त । व्याख्याकार—डॉ० ब्रह्मानन्द त्रिपाठी ५–००
२३ किरातार्जुनीयम् । 'विजया' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या, परीक्षापयोगि
संस्करण । डॉ० ब्रह्मानन्द त्रिपाठी । द्वितीय सर्ग २-२५ ३–६ सर्ग ७–००
२४ प्रस्तावरत्नाकर । परीक्षोपयोगि निबन्ध संग्रह । डॉ० ब्रह्मानन्दत्रिपाठी ७-२०
२५ अनुवादचन्द्रिका । (सर्वांगपूर्ण संस्करण) डॉ० ब्रह्मानन्द त्रिपाठी १५ ००